

धर्मशास्त्रीयन्यायव्याससंग्रहः

सम्पादकः

श्रीसुभद्रशर्मा

राजकीयसरस्वतीभवनपुस्तकालयाध्यक्षः

प्रतिष्ठानम्—
उत्तरप्रदेशशासकीयमुद्रणालयाभ्यन्तः
इलाहाबाद

मूल्यम्

समर्पणपद्यानि

राजनीतिनिपुणोऽपि श्रत्याख्यातप्रियानृतन्याजः ॥
प्रेमोल्लसितसमाजः समाजनीयः समासद्भिः ॥ १ ॥
आधुनिकोऽपि निबद्धश्रद्धः प्राचीनपद्धतौ सुकृती ॥
ष्टतसंस्कृतसाहित्योद्धरणधुरश्चि द्विलासरसमधुरः ॥ २ ॥
श्रीसम्पूर्णानन्दोऽप्यानन्दतु मत्समर्पितं विन्दन् ॥
धर्मोत्तमव्यवस्थासंग्रहमुज्जासितं सखः ॥ ३ ॥
भयदादेशमहिम्ना ग्रन्थोऽयं वै प्रकाशितः रत्नाभ्यः ॥
स्फुरतु मयस्करतलयोः सहस्रपत्रश्रिया निहितः ॥ ४ ॥
रान्यधुराभिर्भवतः सुवन्धुराभिर्न शान्तिमनुभवतः ॥
वस्त्वन्तरे लघुन्यापि प्रवृत्तिर्यैरुदाहार्या ॥ ५ ॥

इति श्रीसुभद्रस्य

वक्तव्य -

सन् १९५४ ई० में काशिक राजकोष संस्कृत महाविद्यालय के उपाधिवितरणोत्सव के अवसर पर सरस्वती-भवन के कुछ चुने हुए हस्त-लिखित ग्रन्थों को प्रदर्शनी हुई थी। उसमें इस राज्य के मुख्य मन्त्री डाक्टर श्री सगुणानन्दजी तथा भूतपूर्व शिक्षामन्त्री ठाकुर श्री हरगोविन्द सिंह जी ने धर्मशास्त्रोपनयन-संग्रह की तीन-पुस्तकें देकर इन्हें प्रकाशित कराने की इच्छा व्यक्त की। तदनन्तर शीघ्र ही प्रशासकीय आदेश हुआ कि इस ग्रन्थ के अविलम्ब प्रकाशन की व्यवस्था की जाय। अतः इसे जनता के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है।

यह बात सर्वविदित है कि भारतवर्ष में अग्नेजी राज्य की स्थापना के आरम्भिक दिनों में न्यायालयों की यह व्यवस्था थी कि वहाँ धर्मशास्त्र के ज्ञाता पण्डित तथा शरियत के जानकार मौलवी इस कार्य के लिये नियुक्त थे कि वे व्यवहार-निर्णयाधिकारियों की सहायता सबद्ध धर्मशास्त्र की दृष्टि से किया करें। सन् १८२४ ई० के आरम्भ से लेकर सन् १८२६ साल तक की कलन्त्ते की सदर दीवानी अदालत द्वारा उससे सबद्ध प्रधानतया पण्डित वैद्यनाथ मिश्र से धर्मशास्त्र के विषय में जितनी जिज्ञासयें की गयी थीं तथा उन्होंने जो परामर्श दिये थे वे ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किये जा रहे हैं। इस प्रसंग में यह भी ज्ञातव्य है कि आरम्भिक धर्मों में पण्डित रामतनुशर्मविद्यावागीश भी पण्डित वैद्यनाथ मिश्र के साथ परामर्श दिया करते थे, तथा मिश्रजी की अस्वस्थता की अवधि में उनके इस कार्य का सम्पादन पण्डित हीरानन्द मिश्र ने किया था।

पण्डितजी के पास अदालत से जो प्रश्न आते थे, प्रमाण सहित उनका जो उत्तर वे देते थे, उनकी प्रतिलिपि पण्डितजी अपने पास रख लेते थे। इन्हीं प्रतिलिपियों के आधार पर यह ग्रन्थ संग्रहित हुआ है। एक प्रति के आरम्भ में लिखा हुआ है 'श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य पुस्तकमिदम्।'।

इस व्यवस्था संग्रह में अदालतों द्वारा की गयी बिहासाओं की भाषा बङ्गला है तथा परिद्धतों ने उनके उत्तर संस्कृत में दिये हैं। अनेक अपोल के मुकदमों में ऐसा भी हुआ था कि छोटी अदालतों से परिद्धतों की तथा वादियों एवं प्रतिवादियों द्वारा उपस्थापित स्वतन्त्र परिद्धतों की व्यवस्थाओं भी पुनर्निरीक्षण के हेतु सदर दीवानी अदालत के परिद्धत के पास भेजी जाती थी। इस प्रकार की व्यवस्थाओं में भाषा विषयक नियमों में कुछ परिवर्तन भी हुआ है। व्यवस्थाएँ बङ्गाल में लिखी गयी हैं, यहाँ तक कि हिन्दी के वाक्य भी उसी लिपि में हैं। हाँ, परिद्धत वैद्यनाथ मिश्र के हस्ताक्षर देवनागरी में हैं।

हिन्दुओं के उत्तराधिकार आदि से संबंधित विषयों के नियम आज तक बहुत बदल चुके हैं, तथा इन व्यवस्थाओं के निर्णय बहुत अंशों में अमान्य हो गये हैं, पर इनका निजी महत्व कई दृष्टियों से स्पष्ट है। सर्वप्रथम तो १९वीं शताब्दी के पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत के समाज की स्थिति का बहुत कुछ परिचय हमे विश्वसनीय रूप से इसकी सहायता से प्राप्त होता है। बङ्गभाषा में उस समय का इतना बड़ा गद्य ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हमें इसकी सहायता से इस भाषा की ध्वनियों तथा पदों का विवरण बहुत-कुछ शायद हो सकता है। इनके अतिरिक्त भारतीय न्याय-व्यवस्था के इतिहास के अध्ययन के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री इस ग्रन्थ में निहित है।

इस प्रकार के इस ग्रन्थ से अधिक से अधिक विद्वान् लाभ उठावें इस ध्येय से इसे बङ्गला लिपि में नहीं छापकर देवनागरी लिपि में मुद्रित कराया गया है। बङ्गला भाषा की भाषा में कुछ भी परिवर्तन नहीं किया गया, पर संस्कृत अंशों में जो बहुत सी अशुद्धियाँ थी उनका संशोधन कर दिया गया है। बङ्गलिपि में अथवा मूलकोष में व-य का भेद नहीं है—इस बात की दृष्टि में रखकर इन दोनों व्यञ्जनों के स्थान पर बाङ्गला में 'व' ही लिखा गया है, एवं संस्कृत से मिले भाषाओं के 'व' वाले शब्द भी संस्कृत में भी वकार से ही लिखे गये हैं। संस्कृत भाषा में उद्धृत वचनों के मूल ग्रन्थों का पत्रादि निर्देश यथासंभव दिया गया

सन् १९५४ ई० में आशिक राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के उपाधिवितरणोत्सव के अवसर पर सस्वतो-भजन के कुछ चुने हुए हस्त-लिखित ग्रन्थों को प्रदर्शनी हुई थी। उसमें इस राज्य के मुख्य मन्त्री डाक्टर श्री सम्पूर्णानन्दजी तथा भूतपूर्व शिक्षामन्त्री ठाकुर श्री हरगोविन्द सिंह जी ने धर्मशास्त्रीयव्यवस्था-समग्र को तीन पुस्तकें देखकर इन्हें प्रकाशित कराने की इच्छा व्यक्त की। तदनन्तर शीघ्र ही प्रशासकीय आदेश हुआ कि इन ग्रन्थ के अविलम्ब प्रकाशन की व्यवस्था की जाय। अतः इसे जनता के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है।

यह बात सर्वविदित है कि भारतवर्ष में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के आरम्भिक दिनों में न्यायालयों की यह व्यवस्था थी कि वहाँ धर्मशास्त्र के ज्ञाता पण्डित तथा शरियत के जानकार मौलवी इस कार्य के लिये नियुक्त थे कि वे व्यवहार-निर्णयाधिकारियों की सहायता सबद धर्मशास्त्र की दृष्टि से किया करें। सन् १८२४ ई० के आरम्भ से लेकर सन् १८३६ साल तक की कलकत्ते की सदर दीवानी अदालत द्वारा उससे सबद प्रधानतया पण्डित वैद्यनाथ मिश्र से धर्मशास्त्र के विषय में जितनी जिज्ञासार्थ की गयी थी तथा उन्होंने जो परामर्श दिये थे वे ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किये जा रहे हैं। इस प्रसंग में यह भी शतव्य है कि आरम्भिक वर्षों में पण्डित रामतनुशर्मविद्यावागीश भी पण्डित वैद्यनाथ मिश्र के साथ परामर्श दिया करते थे, तथा मिश्रजी की अस्वस्थता की अवधि में उनके इस कार्य का सम्पादन पण्डित हीरानन्द मिश्र ने किया था।

पण्डितजी के पास अदालत से जो प्रश्न आते थे, प्रमाण सहित उनका जो उत्तर वे देते थे, उनकी प्रतिलिपि पण्डितजी अपने पास रख लेते थे। इन्हीं प्रतिलिपियों के आधार पर यह ग्रन्थ संवादित हुआ है। एक प्रति के आरम्भ में लिखा हुआ है 'श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य पुस्तकमिदम्'।

इस व्यवस्था-संग्रह में अदालतों द्वारा की गयी जिज्ञासाओं की भाषा बङ्गला है तथा परिदृश्यों में उनके उत्तर संस्कृत में दिये हैं। अनेक अपोल के मुकदमों में ऐसा भी हुआ था कि छोटी अदालतों से परिदृश्यों की तथा वादियों एवं प्रतिवादियों द्वारा उपस्थापित स्वतन्त्र परिदृश्यों की व्यवस्थाएँ भी—पुनर्निरीक्षण के हेतु—सदर दीवानी अदालत के परिदृश के पास भेजी जाती थीं। इस प्रकार की व्यवस्थाओं में भाषा विषयक नियमों में कुछ परिवर्तन भी हुआ है। व्यवस्थाएँ बङ्गाद्वार में लिखी गयी हैं, यहाँ तक कि हिन्दी के वाक्य भी उसी लिपि में हैं। हाँ, परिदृश वैद्यनाथ मिश्र के हस्ताक्षर देवनागर में हैं।

हिन्दुओं के उत्तराधिकार आदि से संबंधित विषयों के नियम आज तक बहुत बदल चुके हैं, तथा इन व्यवस्थाओं के निर्णय बहुत अंशों में अमान्य हो गये हैं, पर इनका निजी महत्त्व कई दृष्टियों से स्पष्ट है। सर्वप्रथम तो १९वीं शताब्दी के पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत के समाज की स्थिति का बहुत कुछ परिचय हमें विश्वसनीय रूप से इसकी सहायता से प्राप्त होता है। बङ्गभाषा में उस समय का इतना बड़ा राज ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हमें इसकी सहायता से इस भाषा की ध्वनियों तथा पदों का विवरण बहुत-कुछ ज्ञात हो सकता है। इनके अतिरिक्त भारतीय न्याय-व्यवस्था के इतिहास के अध्ययन के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री इस ग्रन्थ में निहित है।

इस प्रकार के इस ग्रन्थ से अधिक से अधिक विद्वान् लाभ उठावें इस ध्येय से इसे बङ्गला लिपि में नहीं छापकर देवनागरी लिपि में मुद्रित कराया गया है। बङ्गला भाषा की भाषा में कुछ भी परिवर्तन नहीं किया गया, पर संस्कृत अंशों में जो बहुत सी अशुद्धियाँ थीं उनका संशोधन कर दिया गया है। बङ्गलिपि में अथवा मूलकोष में व-व का भेद नहीं है—इस बात को दृष्टि में रखकर इन दोनों व्यञ्जनों के स्थान पर बङ्गला में 'व' ही लिखा गया है, एवं संस्कृत से मिश्र भाषाओं के 'व' वाले शब्द भी संस्कृत में भी वकार से ही लिखे गये हैं। संस्कृत भाषा में उद्धृत वचनों के मूल ग्रन्थों का पत्रादि निर्देश यथासंभव दिया गया

है। अन्तिम भाग में पढ़ने वाले ऐसे वचन जो बार-बार पूर्व भाग में आ चुके हैं उनके लिए ऐसा निर्देश प्रायः नहीं दिया गया है।

लेख के साथ लिखना पड़ता है कि हमें कई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हो सके, अतः उनके वचनों के पाठों का मिलान हम नहीं कर सके हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में हमें महाविद्यालय के प्रधानाचार्य पण्डित भी कुबेरनाथ शुक्ल ने बार-बार प्रोत्साहन देकर सहायता की है। पुस्तकालय के हस्तलिखित ग्रन्थविभाग के मेरे साथियों में पण्डित श्रीविभूतिभूषण भट्टाचार्य ने विभिन्न प्रकार से समय-समय पर सहयोग दिया है, पण्डित श्रीचन्द्रभानु पाण्डेय तथा पण्डित श्रीनिशाकान्त पाठक ने प्रतिलिपि बनाने में सहायता की थी, पण्डित तारकनाथजी ने आरम्भ से लेकर समाप्ति तक किसी न किसी रूप में मेरे इस कार्य में हाथ बँटाया है, पण्डित श्रीगुनाथ पाण्डेय संस्कृत के प्रूफ-संशोधन में मेरे निरन्तर सहयोगी रहे हैं तथा इस कार्य में समय-समय पर पण्डित श्रीराजाराम भट्टमहने भी सहयोग दिया है।

मैं इन सब साथियों का श्रेणी हूँ, साथ-साथ यह भी व्यक्त करना आवश्यक समझता हूँ कि इस ग्रन्थ की त्रुटियों का उत्तरदायित्व एक मात्र मुझ पर ही है, मेरे इन सहायकों पर नहीं।

मुझे दुःख है कि प्रेत के कर्मचारियों की असावधानी के कारण तथा मेरे दृष्टि दोष के कारण बहुत सी अशुद्धियों का संशोधन ग्रन्थ के आरम्भिक भाग में नहीं हो सका है। टाइपों के टूटने तथा प्रूफ की अस्वच्छता के कारण भी कई स्थानों पर त्रुटियाँ रह गयी हैं। अतः सावधान रहने पर भी शुद्धिपत्र कुछ लम्बा हो गया है। तदर्थ मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में मैं अपने माननीय गुरुदेव डा० श्री मुनीतिकुमारचटर्जी तथा कलकत्ता हाइकोर्ट के न्यायाधीश श्री प्रशान्तविहारीमुखर्जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इसे देखकर इसकी भूमिका की रचना में एवं ग्रन्थ के वृत्तावर में भी प्रकाशित कराने के हेतु मेरी सब प्रकार की सहायता करने की उदारता प्रकट की है।

इस ग्रन्थ के वैशिष्ट्यो का निदर्शन बृहद् भूमिका के बिना नहीं हो सकता है। इस कार्य में कुछ अधिक समय लगेगा, तथा एतद्दर्श मेरा कलकत्ते में कुछ सप्ताह बिताना आवश्यक है, जो अभी तक संभव मालूम नहीं पड़ रहा है। अतः भूमिका की प्रतीक्षा में ग्रन्थ के प्रकाशन में विलम्ब न कर इसे विद्वानों के समक्ष इस आशा से रख रहा हूँ कि सहृदय विद्वानों की दृष्टि इस पर पड़ेगी, तथा जिस भूमिका के लिखने की जो सुविधा मुझे नहीं हो सकी है, उसमें उनका भी सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

श्रीसुभद्रभूषा

१९ चैत्र १८७९ शकाब्द



क्रमाङ्कः	नामस्तुतः	अन्वयः	अथर्वकः (शुभनिर्वाणस्थानम्)	लिखितमुद्रितविभक्त्यम्	विशेषावयवम्
१	इत्तः	अश्विस्तुतिः	बहुवासीमेस, कलकटा, ई० १२१६ य०	मुद्रित०	सजर्विशद्विद्वान्गता (२ संस्कार्यम्)
२	आलेः	आयस्तन्वसहिता	"	"	"
३	उर्ध्वः	उरुन संक्षिप्त	"	"	"
४	उर्ध्वः	उदाहृतम्	नारायणमेस, कलकटा, ई० १८६५	"	"
५	कल्पः	कल्पः	सर्वधनीभवस्तुस्तुस्तुस्तु, य० स० कालेन, काशी,	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशितम् (२ संस्कार्यम्)
६	कल्पः	कल्पः	आयस्तुतिमेस, पूना, ई०, सन १८३३	लिखित०	पुस्तकसंख्या १४०६१
७	कल्पः	कालिकापुराणम्	"	"	पी० बी० काशी
८	कल्पः	कल्पः	सर्वधनीभवस्तुस्तुस्तु, य० स० कालेन, काशी	"	पुस्तकसंख्या ११६७४/१३७३
९	गताः	गताः	कल्पः, काशी, ई० सन १८६७	मुद्रित०	हरिदासगुप्तेन प्रकाशितम्
१०	मीलः	गीतमसहिता	बहुवासीमेस, कलकटा, सन १२१६ कालम्	"	अन्विष्टसंहितान्तर्गता (२ संस्कार्यम्)
११	विदः	विदितम्	नारायणमेस, कलकटा, ई० सन १८६५	"	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशितम् (२ संस्कार्यम्)
१२	इत्तः	इत्तः	बहुवासीमेस, कलकटा, सन १२१६ कालम्	"	अन्विष्टसंहितान्तर्गता (२ संस्कार्यम्)
१३	दत्तः	दत्तः	गुणमेस, कलकटा	"	मधुसूदनसुतिरनन्वकाशित०
१४	दत्तः	दत्तः	"	"	"
१५	दत्तः	दत्तः	सर्वधनीभवस्तुस्तुस्तु, य० स० कालेन, काशी,	लिखित०	पुस्तकसंख्या १२३०५
१६	दत्तः	दत्तः	"	"	"
१७	दत्तः	दत्तः	विद्वत्समेस, कलकटा, ई० सन १८३३	मुद्रित०	जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्कार्यम्)

जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित० (२ संस्करणम्)

अ.पाठः	नामनद्वयः	अन्वयार्थः	अन्यप्रकाशनविषयवत्त्वम्	शिखिमुद्रितविवरणम्
१८	राता.	दायकत्वम्	नाशकत्वमेव, कलकत्ता, ई० सन १८६५	मुद्रित०
१९	दायकत्वम्.	दायकत्वमेव	भक्त्युत्पन्नत्वमेव, कलकत्ता, ई० सन १८७८	"
२०	दानम्.	दानमर्थः	गुह्यत्वमेव, मुम्बई, ई० सन १८६४	"
२१	दानम्.	दानमर्थः	गुह्यत्वमेव, कलकत्ता, ई० सन १८६५	"
२२	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
२३	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	त्रिखि०
२४	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	मुद्रित०
२५	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
२६	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
२७	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
२८	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
२९	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
३०	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
३१	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
३२	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
३३	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"
३४	दानम्.	दानमर्थः	साधनविधायकत्वमेव, गानगाट, काशी, सन् १८६५	"

जीवानन्दविद्यासागरप्रकाशित०, (२ संस्करणम्)

क्रमाङ्कः	नामसङ्केतः	ग्रन्थनाम	ग्रन्थपत्रसंख्याविषयसंख्यम्	लिखितमुद्रितविवरणम्	विशेषविवरणम्
१५	मदरा.	मदनसारादिशतः	सप्तसप्ततीष्वन्यपुस्तकसंख्य०, ग० सं० कालेज, न्यासी	लिखित०	पुस्तकसंख्या १६६१५१२०४२।
१६	मभा.	महाभारतम्	आर्यसंस्कृतिसंज्ञा, पूजा, ई० सन १६३७	लिखित०	
१७	मिदा.	मितवसरा	निर्णयसंग्रहसंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	मुद्रित०	
१८	यत्तल	यमसंज्ञिता	ब्रह्मसंज्ञासंज्ञा, नल्लकटा, सन १२१६ ब्रह्मसंज्ञा	"	ऊर्ध्वविशालीहोतासंज्ञा (२ संस्करणम्)
१९	यासू.	याज्ञिकसंज्ञा	निर्णयसंग्रहसंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	"	
२०	वसिस्त.	वसिस्तसंहिता	ब्रह्मसंज्ञासंज्ञा, नल्लकटा, सन १२१६ ब्रह्मसंज्ञा	"	ऊर्ध्वविशालीहोतासंज्ञा (२ संस्करणम्)
२१	यात.	याज्ञिकसंज्ञा	मद्रास, ब्रह्मसंज्ञासंज्ञा, ई० सन १६१२।	"	
२२	विचि.	विश्वविद्यालयसंज्ञा	पल्लवसंज्ञासंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	"	
२३	विच.	विश्वविद्यालयसंज्ञा	पल्लवसंज्ञासंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	"	
२४	विद.	विश्वविद्यालयसंज्ञा	पल्लवसंज्ञासंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	"	
२५	मिरे.	विश्वविद्यालयसंज्ञा	पल्लवसंज्ञासंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	"	
२६	विन.	विश्वविद्यालयसंज्ञा	पल्लवसंज्ञासंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	"	
२७	विमू.	विश्वविद्यालयसंज्ञा	पल्लवसंज्ञासंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	"	
२८	विमि.	विश्वविद्यालयसंज्ञा	पल्लवसंज्ञासंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	"	
२९	वैष्णव.	वैष्णवसंज्ञासंज्ञा	पल्लवसंज्ञासंज्ञा, मुम्बई, ई० सन १६०६	"	

अनुपलब्धपुस्तकनामानि—

- १—व्यवहारकौस्तुभः .
 - २—दायरहस्यम्
 - ३—व्यवहारविन्तामणिः
 - ४—दत्तकदीप्तिः
 - ५—गौतमप्रश्नः
 - ६—मल्लामरस्तुतिः
 - ७—व्यवहारार्णवः
 - ८—वर्मरत्नम्
-

व्यवस्था-पत्र-संग्रहः

श्रीज्जयतितराम्

१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयाती सदर इरेजी १८२४ साल तारिख १० माह जुलाई मवाबक' वझला १२३१ साल तारिख २८ आपाह रोज शनिवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्दनी इशमिट साहेवेर बैठके ... ।

याधु हरप्रकाश सिंहआपीलाएट ।

मृत बाजा' देलगञ्जन देओ ... रप्पाडएट ।

सन हालेर २५ मार्च मासेर हओया य आदालतेर परिसप्टेर जघावे सन हालेर १५ मेइ मासेर लिखित एलाका वारानसेर भवनसन कोटेर हाकिमदिगेरा पाठानो रिटरन ओ ताहार सम्बिलितेर रोवकारि ओ कागजात सहित लम्बरे पँहुझिया दृष्टे आइल । ताहार पर लाला राधाकृष्ण ओ मौलवि गोलाम एजदानि उकिलेरा मृत राजा देलगञ्जन देओयेर स्त्री रागी' गोलाव कोडरेर तरफ हइते आपनादिगेर नामिक एक केता ओकागचनामा' द्वारा ओ मौलवी नेयामत आलि याधु शुभनाथ सिंहेर तरफ हइते आपन नामिक एक केता ओकागचनामा' दाखिल करिया हाजिर हइल । हाल शनेर ३ जुलाई मासेर दाखिल हओया याधु हरकनाथ सिंहेर सओयाल इत्यादि । ये सओयालेर सम्पर्कीय कागजात सम्बलित ताहार उकिल मुनशी हसन आलिर हाजिरिते दृष्टे (आ)इल । जाना गेल जे सरकारेर आइने राखा ओ राजार कथा नाहि, ओ इरेजी १७६३ सालेर एगार

१. राजा ।

२. रागी गोलाव कोडर ।

३. ओकागचनामा ।

आइन अनुसार, जे इरेजी १७८५ सालेर चौथस्तिय आइन मते वारानसेर एलाकाते जारि हय, ये व्यक्ति घन ओ वृत्ति राखिया मरे ताहार धन ओ वृत्ति, यदि हिन्दु हय शास्त्र माफिक ओ यदि मसालमान हय शरी माफिक, ताहार उत्तराधिकारिदिगेर मध्ये विभाज हइवेक । ओ ए मर्कदगाते मजुन कागजात अनुसारे आर पड़ दृष्टे ये राजा देलगाछन देखो अकस्मात दालानेर छात पडिया मरियाछे प्रकारा बटे ये/ये व्यक्ति मरण पर्यन्त आपन धन ओ वृत्तिर उपर दखिल ओ काबेज छिल, ओ जखन मरणेर किछु अनुमान छिल ना आरन समचे कोन व्यक्तिके आपन धन ओ वृत्तिर उपर कखनो दखिल ओ काबेज कराइयाछिल ना । अतएव आमार निकट ताहार स्त्री राणी गोलाव कोडरेर दखल पनाहार नितान्त अमूलक ओ अनर्थक बटे; ओ फले ए मकरदमार काजिया उपस्थित इओन पर्यन्त कहारो दखल छिलो ना, ओ तिन पचेरह दखल ना थाकन 'प्रकरणे इरेजी १८१३ सालेर पड़ आइनेर निः सम्पर्क प्रकारा बटे । ए कारण शास्त्रेर आहा जानान निमित्ते पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल करण आवश्यक हइल । ओ जाना गेल ये राजा भओयावल' देखो राजा ईश्वरि बक्स देखो ओ राजा देलगाछन देखो ओ बाबु आहुलाल' सिंह ओ बाबु शुभनाथ सिंहके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ ये चारि इधेर मध्ये मयम राजा ईश्वरि बक्स देखो अप्राप्तव्यवहार एक पुत्र, ये ताहार नाम जाना गेलो ना, ओ यद स्त्री राणी सिउराज कोडर ओ छोट स्त्री राणी अभिमान कोडरके उत्तराधिकारि राखिया मरिल । ताहार पर ये अप्राप्तव्यवहार पुत्र मरिल । तदपरे बाबु आहुलाल सिंह बाबु हरकनाथ ओ बाबु जयनाथ सिंहके उत्तराधिकारि राखिया मरिल । ताहार पर राजा देलगाछन देखो राणी गोलाव कोडरके उत्तराधिकारि राखिया निःसन्तान

१. मयाबनदेव ।

२. आल. ८ सिव

भरिल, ओ बाबु शुमनाथ सिंह अद्यापि वर्तमान आछे । अतएव ए अदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने जिह्मासा जाय ये पश्चिम देशेर शास्त्रमते राजा देलगञ्जन देओवेर त्यक्त धन ओ वृत्ति कोन व्यक्तिके, अर्थात् ताहार स्त्री राणी गोलाव कोडरके किम्बा ताहार भ्राता शुमनाथ सिंहके अथवा ताहार भ्रातृपुत्र हरकनाथ सिंह ओ जयनाथ सिंहके अर्थे, ओ एइ सओयालेर जघाय लिखने सूत व्यक्ति ये राजा छिल ताहार पर दृष्टि करिवेन ना । ऐ व्यक्तिके अन्य २ लोक हथोने जे प्रकार जघाय लिखितेन सेइ प्रकार जघाय लिखिवेन; ओ पण्डितदिगेर जघाय दाखिल हथोन परे पुनर्बार कागजात दृष्टे आनिया मनाशीय हुकुम देओया जाइवेक, ओ एइ रोवकारि सओयालेर स्थाने जाना जाय, इहार नकल पण्डितदिगके समर्पण करा जाय ।

श्रीजयतितराम

एतदस्माधिकरणद्वितीयाधिपतिभूयुतकुटीनीश्वरमित्तादेवधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादशबोधो वातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते—

यद्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रपर्यन्तरहितो देलगञ्जननामा कश्चन व्यक्तिविशेषो गोलावकोमराख्या पत्नीमेकां शुमनाथसिंहनामानमेकं सोदरभ्रातरं हरकनाथ-
सिंह-अथनाथसिंहनामानौ द्वौ भ्रातृपुत्रौ च संरक्ष्य मृतः । तत्र तदीयविभक्त-
स्थावरारथावरधने तत्तन्त्या गोलावकोमराख्याया एवाधिकारः । धनोया-
मलदेवसंज्ञकः चतुरः पुमान् ईश्वरीवक्त्रदेव-देलावगञ्जनदेव-बाबु-आलहाद-
सिंह-बाबु-शुमनाथसिंहानुचराधिकारिणः संरक्ष्य मृतस्तत्र तेषान्तदन-
मविम्वतं चेत्तदा देलगञ्जनयोर्म्यांशे सोदरभ्रातुः शुमनाथसिंहस्याधि-
कारः, तत्पत्नी यावज्जीवमन्नाच्छादनमाग्निनीति पश्चिमदेशप्रचलिता-
मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्

पत्नी दुहितरस्यैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धु—इत्यादि मिताक्षराग्रन्थतः (पृ-२१७) याज्ञ-
बल्क्य-वचनम् (२, १३५) ॥ १ ॥

अपुत्रघनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि
तदभावे पितृगामि तदभावे आतृगामि तदभावे आतृपुत्रगामि इत्यादि
तद्भूत-बृहद्विष्णु-वचनम् ॥ २ ॥

पत्नी गृहणीयात् इत्येतद्वचनञ्चातं विभक्तआतृसीविषयम् । इति
मिताक्षरा (पृ० २१७)-लिखनम् ॥ ३ ॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं सवेत्—इति मनु-वचनञ्चेति
(६, १८७) ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

२—लम्बर २०४२

२ सदर देमनी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी
इरामिट साहेबेर हुजुर हइते ।

दुल्ली पाडे ओ गयरह

आपीलाएटान्

काशी पाडे ओ गयरह

रप्पाडएटानेर

२०४२ लम्बरेर मकईमाते इङ्गरेजी सन १८२४ सालेर
२६ जुलाई मासेर रोवकारिर लिखित बेहारेर शास्त्रमते आइन्दा
मङ्गलवार दिवस दुइ प्रहर पर्यन्त जबाब दाखिल करणेर म्यादे
ए आदालतेर पछित वैद्यनाथ मिश्रेर नामे सओयाल एइं ये—

प्रथम सञ्जोयाल—

बेहारदेशेर चलितशास्त्रमते कोन व्यक्तिके, जे से आपन पितार एक पुत्र बटे, दत्तक प्रकारे पुत्रताते लखोन सिद्ध बटे कि ना ।

द्वितीय सञ्जोयाल—

स्थायर किंवा अस्थायर साधारण ओ अविभक्त धनेर हेवा दाता व्यक्ति अंशेर सम्बन्धे सिद्ध बटे किना ।

तृतीय सञ्जोयाल—

महाब्राह्मणीय वृत्ति हस्तान्तर योग्य बटे कि ना । आर यद्यपि कयेक जन ब्रह्मणेर मध्ये साधारणो थाके ताहार मध्ये कोनो व्यक्तिके विभाग ना हओने विक्रय किम्बा हेवा प्रकारे आपन हिस्या हस्तान्तर करणेर उमता आछे कि ना ।

चतुर्थ सञ्जोयाल—

महाब्राह्मणीय वृत्ति जे ताहार उपर अंशीरा दिन नियुक्त पाला प्रकारे दाखिल ओ भोगी थाके शास्त्रानुसारे एक पालार अंशी दिगेर अंश समस्त अंशीगणेर मध्ये साधारण ओ अविभक्त, किन्वा ऐ पालार अंशीदिगेरइ पृथक् ओ विभक्त जाना जाय इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतादृशमधिकरणद्वितीयाधिपातश्रीयुतकुटुम्बीदशमिदसादेवधर्माधिकरण—
लिखितप्रश्नपत्रमन्त्रालोक्य यादृशबोधो धातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम् । यः कश्चित् स्वपितुर्बन्धुस्यैक एव पुत्रः स च बेहारदेशप्रचलितशास्त्रानुसारेणान्यस्य दत्तकपुत्रत्वं न प्राप्नोतीति ।

अत्र प्रमाणम् —

नैकपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं कथञ्चन ।

बहुपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं प्रयत्नतः ॥ इति दत्तकमीमांसा (पृष्ठ ६६) दत्तकचन्द्रिका (पृष्ठ ११) धृत-शौनकवचनम् ।

न त्वेवैकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहणीयाद्वा स हि सन्तानाय पूर्वेषाम् इति मिताक्षरा- (२/२१३)-दत्तकमीमांसा-दत्तकचन्द्रिका (पृष्ठ १०)-धृत-शौनकवचनम् ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम् । सामुदायिकानेकस्वत्वात्सदीभूतादिमत्त-साधारण्यस्थावरास्थावरपने स्वामिना मध्ये कश्चित् सर्वेषां स्वामिनामनुमतिं विना स्वांशं कल्पयित्वा तस्य दानं कर्तुं न शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम् —

अविमक्ता विमक्ता वा सर्वाण्येहाः स्थावरे समाः ।

एको ह्यनीशः सर्वत्र दानाधमनविक्रये ॥ इति मिताक्षरा (पृष्ठ २१६) धृत-व्यासवचनम् ।

निक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्व्यस्व भान्वये सति ।

आपस्वपि हि कष्टासु वर्तमानेन देहिना ।

अदेयान्याहुराचार्य यच्च साधारणं धनम् ॥ इति दत्तकमीमांसा (पृष्ठ ११२) धृत-नारदवचनम् ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम् —

महामाह्वयानो वृत्तिर्माह्वयाद्वा (श) भित्तगमनयोग्या न भवति, महामाह्वयानामेव प्रेतभ्रातृभोजन-प्रेतोद्देश्यकशय्या-वाचनादि-

१. कदाचन इति पाठो दत्तकमीमांसायाम् :

२. न त्वेकं पुत्रं दद्यात्-पर्यकोपवृत् २० सू० १५/१-८, मिता०-२/१६० ६० भी०-१११

३. "सर्पिण्डाः" इत्यस्य स्थाने "दायका" इति वा पाठः, सू० च० १६१५ वरयोक्तिरिति मिताक्षरायां श्राव्यं न शक्यते ।

४. ६० भी० ५० ११२, प०को०-७१८

दान-स्वीकर्तृत्वेन तेषां वृत्तिर्महाबाह्मणैक्योप्यत्वात् । तत्र यदि बहूनां महाबाह्मणानां साधारण्यविभक्ता सा वृत्तिर्मवति तदा तेषां मध्ये कस्यचिदप्येकस्य विभागं विनाऽप्येषामंशिनामनुमतिं विना तस्यांशं कल्पयित्वा विक्रयदानक्षमता नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम् —

यत्रालङ्कारशब्दादि पितुर्यद्वाहनादिकम् ।

गन्धमाल्यैः समभ्यर्च्य आक्षमोक्त्रे समर्पयेत् ॥ इति मिताक्षरा-
(पृ० २/११६) लिखित-बृहस्पति-वननम् (पृष्ठ ३४६) ।

निक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्वस्य चान्वये सति—इत्यादिदत्तकमीमांसा-
धृतनारदवननम् ।

चतुर्यप्रश्नस्योत्तरम्—

यत्र बहूनां महाबाह्मणानां कचिद् वृत्तिस्तस्यां वृत्तौ एतद्दिनोत्पन्नानि द्रव्याण्येतेषाम्, एतद्दिनोत्पन्नान्यन्येषामितिरीत्या ते नियुक्ता भोगिनश्च । तत्र एकदिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनो दिनान्तरोत्पन्नद्रव्यभोगिभ्यो विभक्ता एव । तद्दिनोत्पन्नं द्रव्यं तद्दिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनामसाधारण्यं विभक्तं भवति । किन्तु एकदिनोत्पन्नद्रव्यभोगिनां तद्दिनोत्पन्नं द्रव्यं साधारण्यविभक्तञ्चेति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम् —

विभागो - नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्यान्यानन्तदेक-
देशेषु विषयतया व्यवस्थापनम् ॥ इति मिताक्षरा (पृ० २१३)
लिखनम् ।

श्रीजर्जपतिविराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३—द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके सश्रोयाल एइ ये—

सश्रोयाल

ए आदालतेर पण्डितेरा कल्य द्विप्रहरेर मध्ये ए विपयेर जबाब दाखिल करेन—ये जिला सारन साकिनेर हिन्दुजाति एक व्यक्ति दुइ सहोदर भ्रातार दुइ पुत्र ओ अन्य दुइ सहोदर भ्रातार फेरु जन पौत्र उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, ओ ऐ देशेर चलित शास्त्रमते भृतव्यक्तिर त्यक्त धन केवल ताहार भ्रातृपुत्रदिगेके अशें, किया ताहार भ्रातृपुत्रदिगे एवं ताहार अन्य सहोदर दुइ भ्रातार पौत्र दिगेइ अशें इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जशब-व्यवहया

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिवतिश्रीयुतकुर्टनीइशमिटसाहेबधर्माधिकरण—
जितितप्रश्ननश्मवजोक्थ बादराबोघो बातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते ।
यत्र सारणदेशीयहिन्दुबातीयः कश्चन व्यक्तिविशेर चतुर्थी सोदरभ्रातृणां मध्ये द्वयोर्भ्रात्रोर्द्वौ पुत्रौ द्वयोर्भ्रात्रोः कतिपयपौत्रांश्चोत्तराधिकारिणः संरक्ष्य भूतस्तत्र तदीयधने पुत्रशैश्वर्यपौरुषरूपापत्यत्वादिभ्रातृपर्यन्तानपत्यधनाधिकार्यमावे तत्सोदरभ्रातृपुत्रयोरधिकारे न तु तयोः एतौ । भ्रातृ-पौत्राणाम्-इति तद्देशचलितमितावरादिप्रमाणानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः इत्यादिमितावरादि-ग्रन्थ (पृ० २/१३५) पृत्त-याशङ्कस्य-वचनम् । १ ।

१. सरीइक-व्यप० ।

२. पौत्राध-व्यप० ।

३. सारि-व्यप० ।

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे
आतृपुत्रगामि ॥ इत्यादि मित्ताक्षरादिग्रन्थ (पृ० २११५) धृत-विष्णु-
वचनम्^१ । २ ।

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।

यत्त्वासञ्चतरस्तेषां सोऽनपत्यघनं हरेत् ॥

इत्यादि बृहस्पतिवचनञ्चेति । ३ ।

श्रीर्जयतिशराम्

श्रीहरिःशराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविधात्रागीशेन

४—रोषकारि मिसिल आदालत देवोयानि सदर तारिख २५
माह आगस्त सन् १८९४ ई० मतायक १० माह भाद्र सन् १९३१
याङ्गला ए आदालतेर कामम मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत जान
हरचट हारिण्टीन साहेबेर बैठके ।

मुसन्मात दिपु

आपीलाष्ट

गौरिशङ्कर

रेप्पाडष्ट

आपीलाष्टेर उकिल बाबु जगन्नाथ सिंह ओ रेप्पाडष्टेर
एइ चणकार उकिलगण मुनशी आमजद आलि ओ मुनशी
आनिनर्दिन आहमद सालि हाजीर आसिल । एइ सनेर जुम
मासेर ३० तारिखेर हुकुम मते रेप्पाडष्टेर उकिलगणेर दाखिल
करा व्यवस्था तर्जमा हइया ऐ तारिखे दाखिल हइया रेप्पा-
डष्टेर दरखास्त सम्बिम्बलि)त पढा गेल । रेप्पाडष्टेर
उकिलगण जिझासा कालीन जाहिर करिलेक जे गणेशदत्त शर्मा
ओ त्रिपाठी वेदमणि शर्मा ओ चातुर्वेदि विश्वम्भरदत्त शर्मा
ओ रामनाथ शर्मा ओ विक्रम शर्मा ऐ जुम मासेर ३० तारिखेर

१. “बृहस्पति-व्यप०”

२. प० कोप—१५१८ ‘बृहस्पति’ इत्यस्येत्याने ‘मनु’—इति पाठः—व्यप० ।

दाखिल हओया व्यवस्था लेखक पण्डितगण सहर आजिमा-
चाद साकिमेर प्रधान पण्डित बटेन, किन्तु बादार मध्ये वेइ
आदालतेर पण्डिति कर्म किन्वा सरकारेर अन्य कर्म राखे ना
इति । अतएव यद्यपि एमत बाजे पण्डितगणेर व्यवस्था उपर
ये सरकारेर बागजगणेर मध्ये नाइ आदालतेर प्रत्यह(य)
हइते पारे ना । किन्तु एइ दृष्टे ये एइ मकईमार तजविज ओ
निष्पत्तिकालीन एइ आदालतेर पूर्वैर पण्डित शोभाशाखिर
माजुलि प्रयुक्त एक पण्डित अर्थात् रामंतनुविद्यावागीशेर
व्यवस्था लओया गिवाजे, एइ लण शोभाशाखिर पओजे वैद्य-
नाथ मिश्र पण्डित नियुक्त हइयाछेन हुकुम हइल, ये एइ
मकईमार फागज मधि वैद्यनाथ मिश्रेर हाथोयले करा जाय,
तबे एइ सनेर फेओषरि मासेर ६ तारिखेर रोवकारिर लिखित
सओयाल सकलेर जयाव सुये बेदारेर महाल सफल सहर
पाटना प्रभृतिर चलित शास्त्रमते महरम ओ दशाद्वार तातिलेर
पर १५ दिवसेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेन । तबे ताहार परे
ए आदालतेर कायम मकाम हाकिमेर विवेचनाय एइ केताय
जे वचित जाना जाइवेक हुकुम देओया जाइवेक इति ।

रोवकारि मिंसिल आदालतवं देओयानी सहर तारिख ६
फेपरओरि सन १८८४ इहरेबी मतावक यइला १२२० साल
तारिख १८ भाप रोज सोमवार आदालत मजफुरार कायम
मकाम हाकिम श्रीमुख जल हरबट हारिखदीन सादेवेर बैठके ।

मुसम्मात दिपु पापड

गौरीशङ्कर

आपीनारट

रण्याडण्ट

आपीनारटेर उछिल बालु मगझाव सिंह ओ छोद रण्याडण्ट
ओ ताहार उछिल मुनरी. दादारवक्स ओ लाला आवधलाल
दाजिर हइल । एइ मासेर ३ तारिखेर हुकुममते सेरस्तादार एक
केता वैधियत ताहार लिखित बिपयेर मजमुने ओ थनुप सिंहेर

सन्तानेर कुरशीनांमा एक केता दाखिल करिबेन^१ । छुटे आइल । तदपरे उभयेर छकिलेरा ऐ कुरशीनामार सत्यतार उपर स्वीकार करिवेक इति । ॥ मकईमार समस्त कागचेर अनुमोदने जाना गेल ये रण्पाडण्ट मुहइ एइ एजहारे सहर अजिमावादेर मध्ये जियाताम्युल महत्वा साकिमेर^२ गुलु चौधुरि पितामहेर ओ पितार स्वोपार्जित मालामाल मिलकियंत ओ मकररि ग्राम सकल ओ शोना ओ रूपार अलङ्कार ओ ओ काँचा पाका घाटी संकल ओ ओगाहि पटी^३ ओ शतरङ्गी ओ गालिचा विछाना ओ पितलिया हाडी आदि वासन ओ पोपाकी कापड ओ दोशाला आदि वस्त्र सकल ये मिलकियंत मकररि ग्राम सकल ओ ओगाहि पाटार उपर स्वत्व ओ घाटी सकल ओ अलङ्कार ओ शतरङ्गी ओ गालिचा आदिर किम्मत एकुने आन्दाजि मवलग ६००१ टाका निचेर लिखित मार्फिक हइवेक राखिया फसली १२१३ सालेर आश्विन मासे मुर्दइके ओ आपन भ्रातृपुत्र जगुके उत्तराधिकारि राखिया मरिलेक, ओ पूर्वाधिकारि मरयेर पर आपन पूर्वाधिकारि र त्यक्त धनेर उपर दखिल ओ भोगी हइल । ताहार^४ पर आमार भ्राता जगु फसली १२१६ सालेर १० माघ मासे केवल आमाके उत्तराधि(कारी) राखिआ मरिल । एइ क्षणे ऐ जगु(र) स्त्री मसम्मात दिपु त्यक्त धनेर उपर दखिल हइया वसु नाम जगुर भागिनेयके आपन मालिक मक्तार जानिया समस्त धन, वस्त्र ओ ग्राम आदिर उपस्वत्व भोग कराइते छे, ओ आमाके, ओ उत्तराधिकारि घटी, वेदखल करे इति । जगु बाबुर छि दीपु ओ ऐ जगु बाबुर भागिनेय वसुलालेर उपर

१. करिलेन—इति साधोयान् पाठः

२. साकिमेर इति साधोयान् पाठः ।

३. भोगाहि कुठी ।

४. 'ओगाहिपटी' इत्यपि पठितुं शक्यते ।

५. ताहार ताहार—इति वदप० ।

दावि करिलेक, ओ मुद्दर उकिल प्रवनसन कोटेर रह जवावे
 येओरा बयान करिलेक जे आमार मओकल गुलु वावुर त्यक्त धने
 दावि राखे, ओ गुलु वावुर मृत्युर पर गुलु वावुर सहोदर भ्रातर
 पुत्र जगु दखिल रहिल, जगुर मृत्युर पर आमार मओकल
 व्यतित, जे गुलु वावुर खुदतुता भ्रातुपुत्र हय, गुलु वावुर अन्य
 उत्तराधिकारि नाइ इति। ओ मुद्दाआलेहेरा प्रवनसन कोट
 आदालतेर जयावे ओ वद' जवावे' ओ एइ चण दसुनाखेर'
 मृत्युर पर मसम्मात दिपु आपीलाएट ए आदालतेर दाखिल
 करा आरजी मजुवाते अनुपसिंहेर त्यक्त धन ताहार पुत्रदिगोर
 मध्ये, अर्थात् आपीलाएटेर पति जगु वावुर पितामह भोलानाथ
 ओ रप्पाडहेटेर पितामह शम्सुनाथेर सहित, विभाग हओन, ओ
 ऐ भोलानाथेर मौरसी हिस्यार दुइ केता बाटी व्यतित विरोधि
 समुदय धन गुलु वावुर निकट, ताहार पिता भोलानाथेर त्यक्त धन
 हइते, जे ऐ भोलानाथ हरनाथ सेठीर कन्या के बियाह करिया
 छिल, उपाजर्जन हओन ओ गुलु वावुर भ्रातुपुत्र जगन्नाथ वावुर
 उत्तराधिकारित्व-सत्वे गुलु वावुर एकरार जे गुलु वावुर मृत्युर
 पर ऐ एकरार मते ओ भ्रातुपुत्र सम्पर्कगुलुवावुर मृत्युर
 आइयाम फसली १११२ सालेर माह आरिबन हइते आपन मृत्यु
 फसली १२१६ सालेर माघमास पर्यन्त मुद्दर ओ अन्य काहारी
 बिना दाओया ओ आपत्तिते गुलु वावुर त्यक्त धनेर पर दखिल
 रहियाछे। एजाहार मुद्दर उत्तराधिकारित्व सत्वेर उपर
 अस्वीकार हइल, ओ शास्त्रमते आपन उत्तराधिकारित्व-सत्वेर
 जाहेर करिलेक, ओ प्रवनसन कोटेर जओपावे मुद्दाआलेहेरा
 जाहेर करियाछिल जे हरनाथ सेठीर स्त्री भोलानाथेर प्रथम
 पुत्र वस्तीरामेर माहा (वा) मदी ये, एइ भोलानाथ हरनाथ

१. रदः।

२. ववा ये ओ इति व्यप०।

३. दसुनाथेर पति सापीबान् पठः।

सेठीर कन्याके विवाह करियाछिल, ऐ वस्तीरामके आपन पुत्र करिया लइया समस्त धन, वस्त्र ओ ओगाहि कुठीर^१ कार-
 वारेर कर्त्ता करियाछिल। यथा वस्तीराम आपन जीवदशामर्ष्यन्त
 ओगाहि ओ गयरहेर कारवार करियाछे, ऐ वस्तीरामेर मृत्यु पर
 अर्द्धक^२ ओगाहि कारवारेर आज्ञाम गुलु बाबु करियाछे, ओ
 वस्तीरामेर अर्द्धक हिस्सार आज्ञाम ताहार पुत्र जगुलाल ओ
 दौहित्र वसुलाल दियाछे। यथा ओगाहिर कारवारे अनेक ढाका
 महाजनेर देना हइयाछिल वसुलाल आपन मातार अलङ्कार
 विक्रय करिआ महाजनान् देनाते दियाछे। एइ क्षणह महा-
 जनान् देना बाकी आछे इति। किन्तु इङ्गरेजी १८१३ सालेर १७
 आपरेल मासेर हओया प्रबन्सन कोटेर रोवकारिते मुद्दाआलेहे-
 दिगेर उफिल एइ विषय जिज्ञासाकालीन ये आपन जवाब
 दाबिते लिखियाछे ये वस्तीरामके ऐ वस्तीरामेर माहा(ता)
 मही हरनाथ सेठीर^३ की आपन पुत्र करिया लइयाछे। जखन
 ऐ वस्तीराम अन्येर सन्तानेर मध्ये दाखिल हइल गुलुर मृत्यु
 पर वस्तीरामेर पुत्र जगु गुलुर उत्तराधिकारित्वे कि प्रकार
 आदालते हाजिर हइया मकदमा^४ सओयाल जवाब करियाछे।
 जवाब दिकेक ये वस्तीराम आपन माहा(ता)महीर दत्तक
 हइआ छिल ना, जवाब दाबिते सहक्रमे लेखा गियाछे, ओ वस्ती-
 राम आपन जीवदशाय आपन पुत्र जगुके गुलुर स्थाने समर्पन
 करिया छिल, ओ एइ हेतुते जगु गुलुर उत्तराधिकारित्वे आदालते
 हाजिर हइया नालिप करियाछिल इति। अर्थात् गुलु बाबु मुद्दह-
 मिबनजिबुल्वा ओ दोरदान खातुन मुद्दाआलेहेदिगेर मकदमाते ये
 मौजे मकरिया ओ अनेर ए विवरावत ऐ गुलुर जीवदशाते सदर
 पाटनार आदालते तजविजेर निचे छिल। ऐ गुलुर उत्तराधिकारि

१. पाटीर ।

२. अर्द्धक ।

३. सेठी ।

तलवे इस्ताहार जारि हओन कालीन जगु बाबु उत्तराधिकारि-
 त्वे प्रकारे मुद्दिरा काप्स मकाम हइया हाजिर हइया इक्बरेजी
 १८०७ सालेर ११ युन मासेर हओया ऐ आदालतेर डिकरि
 आपन सत्वे हासील करिलेक, ओ इक्बरेजी १८२० सालेर २२
 नवम्बर मासेर हओया ए आदालतेर सावेक चतुर्थ हाकीमेर
 हुकुम करा सहक्रिकाते गुलु बाबुर पितामह अनुपसिंहेर त्यक्त
 ताहार मृत्युर पर ताहार पुत्र भोलानाथेर दखली साहताज मगल
 महत्वार छोडो दुइ केता घाटी व्यक्तित बिरोधिय अन्य किछु
 माल अनुप सिंहेर त्यक्त साज्यस्थ हय नाइ, ओ ऐ छोडो दुइ केता
 घाटीर परियर्त्ते ये भोलानाथेर हिस्सा हय ऐ महत्वार अनुप
 सिंहेर त्यक्त ओ ताहार पुत्र ऐ मुद्दिर पितामह शम्भुनाथेर
 दखली । घड एक केता पाका घाटी हिजिरि १२२२ साल मतावक
 फसली १२२५ सालेर २२ सहरस ६ यान तारिख स्वयं मुद्दिर
 निकट हइते लाला मूलचन्द्रेर निकट विक्रय हइल । यथा स्वयं
 लाला मूलचन्द्रेर जयानवन्दिते सहक्रिकह हइल, ओ यद्यपि
 अनुपसिंहेर त्यक्त मालामाल ताहार पुत्र भोलानाथ ओ शम्भु
 नाथेर मध्ये विभाग हओन दीर्घकालगत हओन हेतुते आपी-
 लाष्टेर मानित साक्षीदिगेर साक्षाते उचित भत साज्यस्थ
 हइल ना । तत्रापि पृथक् २ घाटीते ऐ दुइ भ्रातार उत्तराधिकारि
 दिगेर प्रथम दखल हेतुते ओ रघुनाथदेर मानित साक्षीर द्वाराय
 दीर्घकाल पर्यन्त एकाग्र ओ साधारणेर कारबार साज्यस्थ ना
 हओने आपिलाष्टेर पति जगु बाबुर' मुरप भोलानाथ ओ
 मुरप शम्भुनाथेर मध्ये पूर्वे विभाग हओनेर द्रुत चोप हय ।
 अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर, नकल उभयेर उक्लिगणेर
 स्वीकार करा कुरशीनामा सम्बलित ए आदालतेर पण्डितदिगके

‘समर्पण’ करा जाय ये सुवे येहाचेर चलित शांखमते एक सप्ताहेर मध्ये एइ सत्रोयालेर जबाब व्यवस्था दाखिल करेन ।

प्रथम सत्रोयालः—

उपरे उल्लेख करा विषय सकलेर ओ ऐ कुराशीनामार दष्टे जगु बाबुर मृत्युर पर गुलु बाबु ओ जगु बाबुर त्यक्त धनेर’ उपर कोन व्यक्ति उत्तराधिकारित्वेर सत्त्व राखे, ओ यद्यपि जगु बाबुर ओी मसम्मात विपु जीवर्दशा पर्यन्त ऐ धनेर उपर सत्त्व राखे, ताहार मृत्युर पर कोन व्यक्ति के बर्तिवे ।

द्वितीय सत्रोयालः—

यद्यपि जगु बाबुर पिता’ बस्ती रामके ताहार मातामही हरनाथ सेठीर ओी आपन कर्त्ता पुत्र करिया थाके, ए हेतुते जगु बाबुर खुडा गुलुबाबुर त्यक्त धनेर उपर जगुबाबुर उत्तराधिकारित्व स्वत्व नष्ट हय कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम् ।

एतद्धर्मधिकरणप्रथमाभिपतिस्थानाभिपिकभीयुतबानहरवदहारिपदीन-साहेव-धर्मधिकरण-लिखित-प्रश्नप्रतिरूपप्रमेवं तदाशापितवशावलीपत्रं नायलोक्य यादृशबोधो वातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम् ।

अनूपसिंहसंकटः कश्चिद् व्यक्तिविशेषः पूर्वमासीत्तस्य पुत्रो मोलानाथशम्भूनाथो । तयोर्मध्ये मोलानाथोऽनूपसिंहस्य हर्म्यत्रयमध्ये लघु-हर्म्यद्वयमादाय विभागत्रादिकमकृत्वापि गवासीत् ; शम्भूनाथोऽपि तयैव गृहचर्चायैरुद्धर्ममादायासीत्तथापि तदिनमारम्य मोलानाथशम्भूनाथयोः पृथक् पृथक् स्थितिः^१ वाणिज्यकरणकृत्यादिना । एवं तयोः पुत्रपौत्राणामपि

१. पितार स्त्रीग्राम-व्याप० ।

२. स्थिति-व्याप० ।

पृथगेव स्थितिः, वाणिज्यकराकृष्यादिना^१ । एवं शम्भूनायपट्टीतानूप-
सिद्दीयवृहदेकदम्भस्य केवलं^२ तत्पौत्रगौरीशंकरतृकविषयेणापि चानूप-
सिद्धधनस्य विभाग एव निश्चितः । एवं निश्चिते विभागे मोलानायपुत्र कश्चित्
गुल्लुवाबुसंज्ञकः सोदरभ्रातृपुत्रादीनुत्तराधिकारिणः भवत्य मृत । तदीय-
समस्त-स्थावरास्थावरधनं तत्सोदरभ्रातृपुत्रेण जग्मुवाबुसंज्ञकेनोत्तराधि-
कारित्वेन प्राप्तमिति । तदीयधनमपि जग्मुवाबुसंज्ञकस्य स्त्रवास्वदीभूतं जातम् ।
अतो जग्मुवाबुसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तत्स्त्रवास्वदीभूतं याददन् तदुत्तराधि-
कारिणा(म्) भवति । अतस्तदने जग्मुवाबुसंज्ञकस्य पत्नी दीपुनामी भवत्यधि-
कारिणी । तन्पुत्राद्यन्यथाभावात् तन्मरणोत्तरं तदानीं वर्तमानानां तस्या
मत्सुपिण्डादीनां मध्ये य आसन्नतरः सपिण्डादिस्तस्य (तदने) भविष्य-
सीति चेद्वारदेशप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

विभागस्य निह्वयेऽपलाये ज्ञातिभिः पितृबन्धुभिः मातृबन्धुभिः
मातुलादिभिः साक्षिभिः पूर्वोक्तलक्ष्यैः स्तेरूपेव च विभागपत्रेण
विभागभाक्ता विभागनिधयो^३ ज्ञातव्यः, तथा पौतकैः पृथक्कृतैर्गृह-
क्षेत्रैश्च—इति मिताक्षरा (पृष्ठ २३११) लिखनम् ॥१॥

दानग्रहणपंखवगृहक्षेत्रपरिमहाः ।

विभक्ता नोपृथग् ज्ञेयाः पाकधर्म्मो गमव्ययाः ॥२॥

येषामेताः क्रिया लोके प्रवर्तन्ते स्वरिषधतः ।

विभक्तानवगच्छेयुर्लेख्यमध्यन्तरेण तान् ॥३॥ इति विभाद्विन्ता-
मणि (३१।१०४)—वीरमित्रोदय-व्यवहारसम्भूताद्यनेन-अन्यधृतनारदवचनम्
(नागसं० २४।३६) ।

१. कृष्यादिना च व्यव० ।

२. केवल-व्यव० ।

३. 'निधयो' शब्दस्य स्थाने 'निर्धयो' मिताक्षरायां ।

पत्नी दुहितरस्यैव पितरौ आतरस्तथा ॥

तत्तुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सप्तसचारिणः—इत्यादि
मिताक्षरादिप्रत्ययपुत्रयाचकत्ववचनम् (२१२३५) ॥ ४ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्

यद्यपि जगुवाहुसंज्ञकस्य पिता यस्तीरामः स्वमातामह्या हस्नायसेटी^१
संज्ञकस्य स्त्रिया कृत्रिमपुत्रः कृतः, कृत्रिमपुत्रस्यैव मिथिलादेशो कर्तापुत्र
इति प्रसिद्धिः, तथापि कृत्रिमपुत्रस्य जनकादिप्रपिण्डानां पुत्रत्वकरणं च
घनाधिकारित्वम्, तदुभयोः आद्याधिकारित्वञ्च भैषिलप्रत्ययकारसंमतं
मिथिलादेशप्रचलितं च । अतो जगुवाहुसंज्ञकस्य पितृव्य(स्य) गुल्मुवाहु-
संज्ञकस्य मरणोत्तरं तदीयघने जगुवाहुसंज्ञकस्योत्तराधिकारित्वेन स्वत-
न्नाशो न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्

स च पुत्रत्वकरस्यापि पिण्डप्रदः निजपित्तादीनां(च) पिण्डप्रदत्वं
तस्य तिष्ठत्येव^२ इति शुद्धिविवेक^३ रुद्रघरोपाध्यायलिखितम् (५०
३१ ख० पङ्क्ति ६) ।

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रं

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

१ हस्नायसेटी ।

२ तिष्ठेत्येव—अप० ।

३ स च पुत्रत्वकरस्य पिण्डप्रदः इति शुद्धिविवेकपाठः ।

श्रीज्जयतिराम्

५ रोवकारि, मिखिल, आदालत देओयानी सदर इङ्गरेजी १८२४ साल तारिख २६ अक्तुबर मतावक ११ माइ कार्तिक सन १२३१ याइला रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम धीयुत कुर्दनी इशामिट साहेबेर बैठके—

शेख गोलाम आली— वनाम—मिरज एवराहिम बेग

मुनशा दादारयकरा उकिल विद्यमाने आसिया आपन नामिक एक केता ओकालतनामा सायेलेर तरप हइते दाखिल करिलेक । तत परे हालसालेर १० आगस्ति मासेर लिखित धारानसेर कोट आपीलेर रिटरन ताहार सम्बलितेर रोवकारि ओ मकहमार रोयदाद सहित पेंहुळिया ए आदालतेर दाखिल करा सओलादिर सङ्गे अब दृष्ट आइल । हुकुम हइल जे ए आदालतेर शरबे अधिकारीरा ५ लंबरे वरायत शेख गोलाम आलीर दाओयार आरजि ओ १० लंबरे वरायत श्रीमति धनवंत ओ श्रीमति धन्नार सओयाल २० लंबरे वरायत मिरजा एवराहिम बेग मुदाआलेहेर दाखिल करा दाखिर जबावेर मजमुन वेत्ता हइया फतोआ लिखेन जे आमिर वक्शेर त्यक्त धन ऐ मुद्द ५ के अशें, किम्बा ताहार माता ओ भगिनी सकल ओ भाता सकल के ये अद्यापि हिन्दु जातिसे छिर आछे, ओ ए आदालतेर पण्डितेरा ५ ऐ तिन कागचेर मजमुनेर वेत्ता हइया ऐ सओयालेर जबाव धारानसेर शास्त्रानुसारे लिखेन । तवे फतोया ओ व्यवस्था दृष्ट हओन परे जे उचित हुकुम देओया जाइवेक ।

१ द्वितीय-व्यप० ।

२ लंबरेर वावड—धति साधीयान् पाठः ।

३ किम्बा किम्बा-व्यप० ।

४ छिर ।

श्रीज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुर्दनीइशमिडसाहेवधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिकरपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।
प्रमारोशापितपत्रत्रयार्थपरिज्ञानेन मित्यकरानाम्ना काचित् स्त्री पूर्वं हिन्दु-
जातीया आसीत्, तजातिस्थितया तया यदुपार्जितं सत् स्वमात्रे दत्त्वा
पश्चाद्यवनजातीयैः निरजाएवराहिमघेगसंज्ञकेन सह स्थिता, यदुपार्जितं
तद्गृह एव स्थित्वाऽप्युत्प्रायश्चित्तैव मृतेति ज्ञेयम् । तत्र तस्या यवनजाति-
संसर्गोऽप्युत्प्रायश्चित्तया हिन्दुजाति-बहिर्भूतत्वाद्यवनजातिस्थितया तया
यदुपार्जितं द्रव्यजातं सत्र हिन्दुजातिस्थितानां सन्मातृमणिन्यादीनां तत्सम्बन्धा-
भावात् न तदनाधिकार इति वाराणस्यादिप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्था-
नुधारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

याजनं योनिसंबन्धं स्वाध्यायं सहभोजनम् ।

कृषा सद्यः पतत्येव पतितेन न संशयः ॥

इति मिताक्षरादि (पृष्ठ ४१४) ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

महापातकादी व्यवहार्यत्वं निषिद्धम्—इति मिताक्षरा—

(पृष्ठ ३७५) लिखितम् ॥२॥

१ पश्चाद्यवनव्यप० ।

२ तद्गृहे—व्यप० ।

३ संसर्गेण—व्यप० ॥

४ उपार्जितम्—व्यप० ।

५ वाराणस्यादि—व्यप० ।

पुरुषस्य यानि पतननिमित्तानि स्त्रीणांमपि तान्येव—इति मिताक्ष-
राधृतशौनकवचनञ्चेति ॥३॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्री हरिःशरणम्

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

लम्बर २२६७

६ रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर इक्करेजी १८२४
साल तारिख २३ माह नयम्बर मतावक थाङ्गला १२३१ साल
६ माह अमहायण रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय
हाकिम श्री युत कुर्टनी इशामिट साहेबेर बैठके ।

रामसेवक सिंह

मृत हाजारि दमन सिंह ओ गायरह

आपीलाष्ट

रप्पाडण्टान्

रप्पाडण्ट दिगेर उकिल मौलवि नेयामत आलि हाजिर
हइया १३ हाल मासेर हुकुमानुसारे निवेदन करिलेक ये
हाजारि हरशहाय सिंहेर भ्राता रामशहाय सिंह अप्राप्त-व्यवहार
घटे, ओ मृत हाजारिदमन सिंहेर स्त्री ओ दुइ कन्या धारान-
सेर शास्त्रानुसारे सत्वाधिकारि नाइ, ए निमित्ते केवल हाजारि
हरशहाय सिंहेर तरफ हइते ओकालतनामा दाखिल हय । हुकुम
हइल ये ए रोवकारि नकल ओ १३ तारिखेर हाल मासेर रोव-
कारि नकल एइ प्रनेते ये मृत हाजारिदमनसिंहेर त्यक्त धन
साधार उत्तराधिकारिदिगेर विवरण अनुसार, जाहा १३ तारिखेर
रोवकारिते लेखा गया छे, फोन व्यक्ति के अर्शे, पण्डित दिगेके

समर्पण करा जाय, पछित दिगेर जबाब दाखिल हओन परे उचित हुकुम देओया जाइवेक इति ।

१३ हाल मासेर रोवकारि एइ—ये हाल सालेर १६ आक्टुबर मासेर लिखित बारानसेर प्रबनसन कोटेर एक बेता रिटरन ताहार सम्यलितेर रोवकारि सहित लम्बर पहुँछिया पडा गेल, जाना गेल—ये पूर्व इङ्गरेजी १८२० साले १७ जुलाई मासेर दीकासिंह सूत्रधर ओ गुरुदत्त तेओयारि एजाहारे प्रतिपन्न हय जे हाजारि दमनसिंह रामराहाय ओ हरशहाय नाम दुइ पुत्र आर दुइ कन्या ओ एक स्त्री उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, आर ए आदालते केवल हाजारि हरशहायसिंहेर तरफ हइते ओकालत नामा मौलवी नेयामत आलि उकिलेर नामे दाखिल हय, अतएव ऐ उकिलके जिज्ञासा गेलो ये कि निमित्ते पाच जन उत्तराधिकारि मध्ये केवल एक उत्तराधि(कारि) ओकालत नामा दियाछे । जबाब दिलेक रषाडण्टदिगेर मध्ये राम सेठनसिंहेर स्थाने जे कलिकाता सहर मजुत आछे जानिया निवेदन करिवेक । ए मते हुकुम हइल जे एइ क्षण स्थिति थाके, उकिल आइन्दा रिटरन पडिबार दिवस पर्यन्त आपन करार माफिक आमार आपने इति ।

श्रीज्जयतितराम्

जबाब-व्यवस्था

एतद्गर्माधिकरणद्वितीयापिपतिश्रीयुतकुटुम्बीइशमिष्टसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादशघोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र हाजारीदमनसिंहसंज्ञकः कश्चित्^१ रामसहायसिंहहरशहायसिंह-

१—अप्रस-व्यप० ।

२—कश्चिन् व्यप० ।

संज्ञको द्वौ पुत्रौ पत्नीमेका द्वे च अन्ये संसृज्य मृतस्त्वत्र तदीयघने द्वौ पुत्रावधि-
कारिणौ भवतः, तयोः सप्तोः^१ तत्सन्त्यास्तत्कन्ययोर्वा नाधिकार इति
वाराणस्यादिप्रचलितमिताक्षरादि-ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्

उत्पत्यैवार्थस्यामित्वं लगतः^२ इत्याचार्याः—इति मिताक्षरादि
(पृ० १६६) ग्रन्थभूतगोतमवचनम् । १

तस्मात्सैतुके पैतामहे च द्रव्ये जन्मनैव स्वत्वम्—इति मिताक्षरा-
लिखितम् ॥ २

अनपत्यस्य घनं^३ पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि
मिताक्षरादि (पृ० २१७) ग्रन्थभूतदृढदिष्णुवचनञ्चेति ।

श्रीज्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीज्जयतितराम्

सन्वत् २२५४

सञ्चोयाल—

७ सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत फुर्टनी
इरामिट साहेबेर हुजुर हस्ते २२२४ संवत्तरेर चावत ।

१—सत्वे—व्यप० ।

२—अपत्यमात्रम्—व्यप० ।

३—‘लगते’ इत्यस्य स्थाने ‘लभेत’ इति पाठः मिता० ।

४—‘दृढदिष्णु’ इत्यस्य स्थाने ‘दृढकिष्णु’ इति पाठः मिता० ।

५—अपुत्रपनयिति वा पाठः

जगमोहन मुखोपाध्याय प्रभृति

आपिलाष्टान

पञ्चानन चट्टोपाध्याय प्रभृति

रम्पाडण्टानेर

मकईमाते इङ्गरेजी १८२४ सालेर २५ नवम्बर मासेर रोषकारिर लिखित ए धावालेतेर पण्डितदिगेर नामे श्रगौणे जबाब दाखिलकरण हुकुमे सञ्चोयाल एइ ये

कुशलचन्द्र चट्टोपाध्याय मानिक ठाकुरानी स्त्री ओ ताराचान्द्र ओ निमाइचरण पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ निमाइचरण लुइधर पुत्रके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ लुइधर पञ्चानन ओ ईश्वरचन्द्र दुइ पुत्रगणके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ कुशलचन्द्रेर द्वितीय पुत्र ताराचान्द्र गोलकमनि कन्या ओ शशीमुखि स्त्रीके उत्तराधिकारि राखिया मरिल, ओ गोलकमनि जगमोहन मुखोपाध्याय ओ गोपीमोहन पुत्रगणके राखिया मरिल, तदपरे ताराचान्द्रेर स्त्री शशीमुखी मरिल, ओ मानिक ठाकुराण आपन पुत्र ताराचान्द्र ओ निमाइचरणेर मृत्युर पर मरिल। बङ्गदेशेर शास्त्रमते कुशलचन्द्रेर अर्द्धक त्यक्त धनेर, जे ताहार पुत्र ताराचान्द्रेर स्वत्व छिल, एइ छण निमाइचरणेर पौत्र पञ्चानन ओ ईश्वरचन्द्रके स्वत्व बर्त्ते, किन्वा ताराचान्द्रेर कन्या गोलकमणिर पुत्र जगमोहन मुखोपाध्याय ओ गोपीमोहन मुखोपाध्यायेर सत्य बटे इति।

श्रीज्जयतितराम

जवाबव्यवस्था

एतदङ्गोधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुम्बीइश मङ्गसादेवधर्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रम्वलोक्य बाह्यश्रेयोबातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यत्र कुशलचन्द्रचट्टोपाध्यायताराचान्दनिमाइचरणसंज्ञकौ स्त्री पुत्राशुचराधिकारिणौ संस्रव मृतस्तयोर्माप्ये निमाइचरणसंज्ञकः लुइधरसंज्ञकः

पुत्रमुत्तराधिकारिणी संरक्ष्य मृतः, लुहधरोऽपि पञ्चानन-ईश्वरचन्द्रसंज्ञकौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणी संरक्ष्य मृतः, एवं ताराचार्दसंज्ञकोऽपि 'शशि-मुलीनाम्नी' फलीमुत्तराधिकारिणी संरक्ष्य मृतः, शशिमुख्यपि बगमोहन मुखोपाध्याय-गोपीमोहनमुखोपाध्यायसंज्ञकौ द्वौ दौहित्रावुत्तराधिकारिणी संरक्ष्य मृतः, तत्र कुशलचन्द्रघनादस्य तत्पुत्रताराचार्दसंज्ञकस्यामिक-धनस्याधिकारिणौ ताराचार्दसंज्ञकस्य दौहित्रौ बगमोहनमुखोपाध्याय-गोपीमोहनमुखोपाध्यायौ भवतः । न तु दौहित्रयोः सतो^१ भ्रातृपौत्राणामधिकारः इति बङ्गदेशप्रचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो^२ गोत्रजो बन्धुः ।

इत्यादि दायभागादि(पृ० १५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (पृ० २१६) ।

श्रीज्जयतितराम्

श्री हरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

आरामतनुशर्ममिथ्यानागोशेन

श्रीज्जयतितराम्

सदर देशोयानी आदालतेर पण्डितगणेर स्थाने सञ्चाल—
मुञ्ज^३ कि, ओ कोन वैदिक कर्मते व्यवहार्य ह्यः । ओ शास्त्रानु-
सारे स्पर्शकार जातिदिगेर प्रति ऐ मुञ्ज^३ व्यवहार करणे निषेध
आछे कि ना । यद्यपि स्यात् निषेध थाके, तवे कोन शास्त्रानुसारे,
एवं याज्ञलादेशेर स्पर्शकारदिगेर प्रति ताहार चलन आछे
कि ना, आर कंफिनी बहादूरेर सरकारेर शासित देशसकलेर
मध्यगत कोन देशे ऐ मुञ्ज^३ व्यवहार्य आछे कि ना । अतएव

१ सत्ते—अप०

२ 'तत्सुतो' इत्यस्य स्थाने—'तस्य सत्तो'—अप० ।

३ मुञ्ज—अप० ।

शास्त्रानुसारे ए सत्रोयालेर जवाव लिखिया दाखिल करेन इति ।

जवानव्यवस्था

प्रमुक्तप्रश्नानुसारेण उत्तरं लिख्यते—

मुञ्जस्तृणविशेषः । तथाहि कस्मिंश्चिद्देशे वाराणस्यादौ मध्यदेशादौ, च भापायां 'काणा' इति प्रसिद्धोऽपरः कश्चिन्मिपितादेशादौ 'शरकाणा' इति प्रसिद्धो, वङ्गदेशादौ शरपावा इति प्रसिद्धः, कश्चिन्दीर्घपरिमाण-स्तृणवृक्षः, तस्य पुष्पमार्गकोपावरणरूपो मुञ्जः, भापायाञ्च 'मुन' इति प्रसिद्धः । एवं तद्व्यवहारश्च ब्राह्मणजातेर्मौञ्जीनिबन्धनात्मक उपनयन संस्काररूपवैदिककर्मणि मेखलानिर्मिणे । एवं स्वर्णकारजातीनां शूद्र-रूपत्वेन तादृशमुञ्जनिर्मित मेखलाव्यवहारः शास्त्रबोधितो न भवति । यद्यद् वैदिकं कर्म लोके प्रसिद्धं भवति तत्तत्सर्वं तत्तत्कर्मविधायकशास्त्रा-देवेति स्वर्णकारजातेरुपनयनविधायकशास्त्राभावात् निषेधवचनाच्च मुञ्ज-निर्मितमेखलाव्यवहारस्य निषेध एव । एवं वङ्गदेशीयस्वर्णकारजाती-नां तादृशमुञ्जनिर्मितमेखलाव्यवहारो नास्त्येव । एवं श्रीमत्संस्कार-कंपिनीवाहादूरास्थसार्वाभौमराजशासितदेशानाम्मध्ये कस्मिंश्चिदपि देशे स्वर्णकारजातीनां मौञ्जीनिबन्धनात्मक उपनयनसंस्काररूपवैदिककर्मण्य-धिकाराभावात् तादृशमुञ्जनिर्मितमेखलाव्यवहारो नास्तीति शास्त्रानु-सारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

'मुञ्जःशरः' इति संस्कारतत्त्वे स्थुनन्दनभट्टाचार्यव्याख्यानम् ।

मौञ्जीनिबन्धनुपनयनम् इति—मन्वर्थमुकावल्वां द्वितीयाध्याये

कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् (२।२७) ॥२॥

मौञ्जी निवृत्तं समा स्तद्धणा क्षपो विप्रस्य मेखला ।

क्षत्रियस्य तु भौर्तो ज्या वैश्यस्य शण्णतान्तवी' इति मनुवचनम्
(२।४२) ॥ ३ ॥

दण्डाजिनोपवीतानि मेखलाञ्चय धारयेत्—इत्यादिमिताक्ष-
रादिभूतयागवत्स्वयवचनम् (१।२६) ॥४

प्रालाशादिदण्डमजिनं कर्णार्पादि, उपवीतं कार्पासादिनिर्मितं,
मेखला मुञ्जादिनिर्मिता मास्यपादिर्भक्षचारी धारयेत् इत्यादि-
मिताक्षरा (पृ० ६) लिखनम् ॥५

द्विजानी पोडशैव स्युः शूद्राणां द्वादशैव हि ।

पञ्चैव मिश्रजातीनां संस्काराः कुलधर्मतः ॥

वेदप्रतीपनयनमहानाम्ना महाव्रतम् ।

मिताद्वादश शूद्राणां संस्काराणामगम्यतः—

इति शुद्धकमलाकर (पृ० १६) भूतशारङ्गधरवचनञ्चेति ॥६॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावार्गीशेन

एष व्यवस्था दाखिल इरेजि मिसिल मुञ्जेर सधोयालेर
जयाव ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

६—रोवकारि मिरिल आदालत देमानी सदर इहरेजी १८२५
साल तारिल ४ माह जानओरि मतावक बाङ्गला १२३१ माह पीप
रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्दनी
इरामिट साहेबेर बैठके—

श्रीमति हेमलता चौधुरानी

आपीलाएट

श्रीमति पद्ममणि

रप्पाडएट

आपीलाएटेर उकिलगण मुनशी महाम्मद पाता ओ मुनशी दादार यक्स ओ सदासुक पण्डित, ओ रप्पाडएटेर उकिलगण मुनशी हसन आली ओ ओजरदारान राममणि दास्यार उकिल मुनशी फकिर महाम्मद ओ गौरकिशोर मजुमदारेर उकिल मुनशी गोलाम बतुन ओ स्वयं गौरकिशोर मजुमदार हाजिर हुइल । मकईमा पूर्व इज्जरेजी १८२४ सालेर जुलाई मासेर १४ ओ १५ ओ आगस्त मासेर २१ तारिख सकले तृतीय हाकिमेर बैठके रोबकार और प्रवनसन कोट आदालतेर कागज सकल १ लम्बर अवधि ८५ लम्बर पर्यन्त पढा गया स्थकित छिल, ओ एइ तण आमार बैठके रोबकार हुइया प्रवनसन कोटेर कागज सकल १ लम्बर हुइते तथाकार फएसला पर्यन्त ओ ए आदालतेर दाखिल हओयो आरजी मजुमात ओ जबाब ओ ओजरदारान राममणि दास्यार सओयाल ओ गौरकिशोर मजुमदारेर सओयाल दृष्टी आइल । तत्परे राममणि दास्यार उकिलइ ये मकईमार सम्पर्के आपीलाएट ओ रप्पाडएटेर कोनो सत्य नाकरण ओ राममणि दास्यार ताहार सत्व अधिकारि याकन ओ ऐ राममणि दास्यार दाखिल करा वंशावलीपत्र अनुसारे ऐ राममणि आपन पितामातार धनेर उपर स्थायी हओयार प्रार्थनाय बिबरण्ये एक कीता सओयाल लम्बरे... दाखिल करिलेक, पढा गेल । तदन्तर गौरकिशोर मजुमदारेर ओजरदारेर उकिल स्थाने, जे ताहार ओजरेर सओयाल ७१ लम्बरे दाखिल आछे, जिज्ञासा गेलो जे तोमार मकजेर मातार नाम कि छिल, ओ से कोन सने मरियाछे । जबाब दिलेक जे ताहार नाम नारायणि छील, ओ

१—बतुन—इति साधोयान् पाठः । २—मजुमदार—२५९० ।

३—सम्पर्के—२५९० ।

वाङ्मला ११८६ साले आमार मक्कलेर मातामह चौधुरि रघुराम-
 रायेर मृत्युर पर आमार मक्कलेर मातुल रामकिशोर रायेर
 समुखे मरियाछे । पुनर्ज्वाँर जिज्ञासा गेलो जे कोन आपीले कि
 निमित्ते तोमार मक्कलेर तरप हइते ओजरेर सओयाल गुजरे
 नाइ । जबाब दिलेक जे आमार मक्कल ऐ रामकिशोर रायेर
 कन्या राममणिर पुत्र सकल एकवार मरण वार्ता हइते अज्ञात
 छिल, न तु या कोट आपीले ओजरेर सओयाल गुजराइत ।
 तत्परे ऐ राममणि दास्यार उकिल स्थाने जिज्ञासा गेल जे तोमार
 मओक्कल कोट आपीले मकईमा दापर थाकनकालीन कि निमित्ते
 ओजरेर सओयाल गुजराए नाइ । जबाब दिलेक जे अमार
 मक्कल वाङ्मला ११२५ साले वृन्दावन तीर्थे गीयाछिल, मकईमा
 निष्पत्तेर परे आशीयाछे, ए कार(ण) कोट आपीले ताहार तर्प हइते
 सओयाल गुजरे नाइ । ताहार परे आपीलाएट ओ रप्पाइएटेर
 उकिलान स्थाने जिज्ञासा गेल जे पूर्व पुरुस रघुराम चौधुरि
 दुइ पुत्र व्यसित नारायणि नाम एक कन्याओ राखिया मरियाछे
 कि ना; यद्यपि राखिया थाके गौरकिशोर मजुमदार ओजर-
 दार ऐ नारायणिर पुत्र बढे कि ना । आपीलाएटेर उकिलेरा
 जबाब दिलेक जे आमरा नारायणिर वार्ता ज्ञात नाइ, एथं गौर
 किशोर मजुमदार ताहार कन्यार पुत्र एहाओ जानि ना, ओ
 रप्पाइएटेर उकिल आरजि करिलेक जे चौधुरि रघुरामराय
 कोन कन्या राखिया मरे नाइ, ओ ऐ गौरकिशोर मजुमदार
 ऐ रघुराम रायेर कन्यार पुत्र नहे, वरं कोटेर फयसलार परे
 ऐ मजुमदार आमार मओक्कलार तरप हइते आपनाके
 मोक्षारकार कहिया मकईमा सओयाल जयावेर कारण
 आमार निकट रुजु छिल, ओ तत्कालीन आपन दौहित्रेर कोन
 उल्लेख करे नाइ, रोप द्वितीय पक्षेर सहित योग करिया दौहित्र
 मुस्य हइयाछे । ओज रदातेरे सओयाल गुजराइया छे । परे राम-

मणि ओजरदारेर उकिल स्थाने जिज्ञासा गेल जे तोमार मओकला गौरकिशोर मजुमदारेर एजाहार सत्य कहे कि मिथ्या । जयाव दिलेक जे आमार मओकलार पाठानो वंशा-
वलि पत्रानुसारे गौरकिशोर मजुमदार यथार्थरूप रघुराम
रायेर कन्या नारायणदास्यार पुत्र बोध हय, वरं हुकुम
अनुसारे सादा कागजे वंशावलि पत्र लंघरे गुजराइवेक ।
जाना गेल जे बाङ्गला १२०१ सालेर १४ भाद्रमासेर लिखित
पद्ममणि रप्पाडण्टेर दाखिलकरा अनुमति पत्र जे, कोटेर नथी
२३ लंघरे आछे, कोट आपीले ताहार कोन साव्यस्त हय नाइ ।
ओ यद्यपि स्यात् इङ्गरेजी १८१६ साले १३ आगस्त मासेर
हओया ३८ लम्बर वावत केलेकदुरिर रोवकारिते रप्पाडण्टेर
पतिर अनुमतिर उल्लेख आछे । किन्तु ऐ रोवकारिर मजमुने
जाना जाय जे रप्पाडण्ट ताहार आपन कथार सत्यतार कोन
दस्तावेज तत्कालीन उपस्थित करे नाइ, ओ ताहार पति मरणेर
मुहंत २२ वाइप बत्सर परे उल्लेख हइयाछे । अतएव अनुमति
पत्र एवं ऐ रूप आपीलाण्टेर समुर रामचन्द्र रायेर तरप हइते
लेखा जाओन एजाहारे बाङ्गला १२१६ सालेर ३ आश्विन
मासेर लिखित २८ लंघरेर एकरारनामा प्रत्ययेर किछु सत्यता
राखे ना । ओ इहाओ जाना जाइतेछे ऐ रप्पाडण्ट एइ क्षण
पर्यन्त ताहार आपन पतिर बिना अनुमतिते किम्बा अनुमतिते
कोन व्यक्तिके आपन पुत्रताते लय नाइ । बाकी रहिल
उत्तराधिकारित्वेर कथा, अर्थात् ऐ जे रप्पाडण्टके द्वितीय सने
ताहार पति रामकुमार राय ओ पतिर भ्राता रामजीवन ओ
रामकमल रायेर त्यक्त घनेर मध्य किछु आर्शिवेक कि ना ।
आर जाना जाइतेछे जे उभय पक्षइ ए कथा स्वीकृत आछे ।
रप्पाडण्टेर पति आपन पिता रामकेशव रायेर सम्मुखे मरि-

याछे, ओ ताहार दुइ भाता ऐ रामकिशोर रायेर मृत्युर परे मरियाछे । एवं ताहाओ जाना गेल जे ए मकदमा उभय पक्ष व्यतिंत ऐ रामकेशव रायेर कन्या राममणि ऐ रामकेशव रायेर सहोदर ज्येष्ठ भाता रामचन्द्र रायेर मध्यम पुत्र रामलोचन रायेर छो चन्द्रावली एइ क्षण पर्यन्त वर्त्तमान आछे, ओ कोर्ट आपीलेर समस्त कागजे रघुरामराय चौधुरि (२) कन्या नारायणिर कोनो उल्लेख जे गौरकिशोर मजुमदार आपन के ऐ नारायणिर पुत्र कहै पाओया जायना, ओ ए आदालत आपीलाष्ट ओ रप्पाडष्टेर उकिलेरा अपनादिगेके नारायणिर उत्पत्ति हइते ओ गौरकिशोरमजुमदारेर दौहित्रता हइते अज्ञात जाहेर करितेछे । अतएव हुकुम हइल जे ए आदालतेर पण्डितेरा उपरेर विवरण करा वृत्तान्त ओ कोटेर नथिर २७ जंवरैर दाखिलि यंशाबलि पत्र जे एइ मकदमार विवरण माफिक बोध हइते छे पढिया ओ बुझिया बङ्गदेशेर शाख अनुसार व्यवस्था लिखिया देन जे रामकेशवरायेर पुत्र रामकुमाररायेर अंश हइते जे ऐ रामकुमारराय पितार सन्मुखे मरियाछे, ओ ऐ रामकुमाररायेर सहोदर भाता रामजीवन राय ओ रामकमल रायेर हिस्सा हइते, जे ताहारा आपनादिगेर पितार मृत्युर पर निःसन्तान मरियाछे दत्तक करणेर कथा उपर्येय पक्षमणि के स्वीत्व वायत किछु अशे कि ना । यदि अशे, कि परिमान अशे । उचित जे परस्व दिवस दुइ प्रहर पर्यन्त एइ सभोयालेर जवाब दाखिल करेन । ओ पण्डितदिगेर जवाब दाखिल हओय परे ताहार मजमुन दिष्टे उभयेर साक्षि सोननेर आवश्यक ओ अनावश्यक विषय उचित हुकुम देओया जाइवेक ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुम्बीशमिटसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितपत्रप्रतिरूपपत्रान्तर्गतप्रश्नमेवं तदाज्ञापितवंशावलोपत्रं चावलो-
क्यावगत्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यत्र रघुरामरायस्य द्वौ पुत्रौ, रामचन्द्ररायरामकेशवरायतंशकौ
स्थितौ । तयोर्मध्ये रामकेशवस्य त्रयः पुत्राः रामकुमाररामजीवन-
रामकमलसंज्ञकाः । तेषां मध्ये पितरि जीवत्येव यद्यनपत्यो रामकुमारः
पद्ममणिनाम्नी स्त्रियं संरक्ष्य मृतः, पश्चाद्रामकेशवोऽप्यशिशौ द्वौ पुत्रौ
शुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः, तत्र रामकेशवस्याधिकधने तु पितरि
जीवति रामकुमारस्य भरणान्नं स्वत्वनिवृत्तैस्तत्पत्न्याः पद्ममण्याः स्वभर्तु-
पैतृकधने नाधिकारः, किन्तु आसच्छादनभागित्वं स्वभर्तुरसाधारणधने
शौत्तराधिकारित्वेन यावज्जीवमधिकारः, एवं रामजीवनरामकमलयोर्मध्ये
मातरि शङ्करीदास्यां सत्यां यद्येको मृतस्तदा तयोर्गणांशभागित्वं तन्मातुः
शङ्करीदास्याः । एवं सत्यां च मातरि द्वयोर्मरणञ्चेत्तदा तन्मातुर्द्वयो-
र्धनाधिकारित्वम् । एवं मृतायां च मातरि तयोर्द्वयोर्मरणञ्चेत्तदा
यदि रामकेशवस्य कन्यायाः राममण्याः पुत्राः स्थितास्तदा तेषां तयोर्धना-
धिकारः, तेषां मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तन्मातुः राममण्या
अधिकारः । यदि रामजीवन रामकमलयोः सतोरेव तयोर्भाता शङ्करीदासी
मृता, रामकेशवदीहित्राश्च मृतास्तदा राममण्यास्तयोर्मगिन्या न तद्व-
नाधिकारः । किन्तु तयोर्मरणोत्तरं रघुरामरायस्य पुत्रतत्पौत्रतत्प्रपौ-
त्राणां मध्ये ये आसन्नास्तदानीं विद्यमानास्तेषांमधिकारः । तेषां मरणो-
त्तरं तेषां ये उत्तराधिकारिणस्तेषांमधिकारः इति बद्धदेशप्रचलित-
दायभागदायतत्त्वादिप्रणयानुसारिणी व्यवस्था—

१—यावज्जीवम्—व्यप० ।

२—तन्मातुराममण्या व्यप० ।

अत्र प्रमाणम्—

उद्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य आतरः समम् ।

भजेरन् पेतृक रिषयमनीशास्ते हि जीवतोः ॥

इति दायभागादिग्रन्थ (पृ० ११) धृतमनुवचनम् (६।१०४) ॥१॥

पितृभ्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्य हि भवेदेषां निर्दोषे पितरि स्थिते—इति तद्धृतदेवल-
वचनम् (पृ० ११) ॥२॥

पत्नी हुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ (पृ० १५१) ।
धृतपाणिन्यवचनम् (२।१३५) ॥३॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावेपिन्दोहिन्नस्याधिकारो बोद्धव्यः—

इति दायभाग (पृ० २०८) लिखनञ्चति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्री हरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

१०—सदर देमानी आदालतेर कायेम सकाम प्रथम हाकिम
श्री युत जान हरवरष्ट हारिडटीन साहेबेर हजुर हइते ए आदा-
लतेर पण्डितदिगेर नाम ।

श्याम सुन्दर महेन्द्र

आपिल्लाष्ट

कृष्ण चन्द्र भ्रमरवरराय पापड

रण्याडएटेर

२४ ६६ जंवरेर वाचत मकई माते अंगरेजी १८२५ सालेर

१—श्रीविनीः—पृ० १ ।

२—दाय= १११४

१२ फिवरवरी मासेर रोवकारिर लिखित ए मकईमाते मुद्दईर दाखिल करा ६५ लंवरेर दस्तावेज चटार अर्थात् लिखन ओ जिला कटकेर कमिसनर साहेबेर काचारते दाखिल हओया उभयेर सओयाल ओ जवाब दष्टे सुवे उडिस्यार चलित शाखानुसारे एक समाहेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करण निर्वन्धे सवाल एइ ये—

लंवर २४६६

श्यामसुन्दरमहेन्द्र

आपीलाष्ट

कृष्णचन्द्रभ्रमरवरराय

रप्पाडण्ट

यद्यपि विरोधीय राज्य ओ जमीदारिर दाखिलकार राजा रामचन्द्र पे दस्तावेजेर मजमूने लिखन मुद्दईर निकट लिखिया थाके । तत्परे पे राज्य ओ जमीदारीते मुद्दईके बिना दाखिलकार करणे मरिया थाके, पे त्विखनेर लिखित त्यागकरण अचिद्रयत ताहार साज्यस्त हओन प्रकारे मुद्दईमत्वेर ताहार लिखित राज्य ओ जमिदारीर दान ओ अचिद्रयत ओ राजा रामचन्द्रेर औरस पुत्र फुल बिवाहेर और गर्भजात कृष्णचन्द्र महेन्द्र आसल गुदाभ्राजेहेर उत्तराधिकारित्व-मत्त्व असिद्धतार लिपिते पे सुबार चलित शाखानुसारे बलवत्तर ओ गुणदायक बटे कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रथम जवाब व्यवस्था—रामतनुविद्यावागीश—

राजा रामचन्द्रेण मानसिदस्य राज्ञो दत्तकपुत्रकृष्णचन्द्रभ्रमरवर-संशकस्य कर्तृत्वादिकरण्याथ कृष्णचन्द्रभ्रमरवररासन्निधानेऽपि यद्विहितं तद्विहितानुसारेण दानकरणादध्यक्षकरणाच्च रामचन्द्रस्वत्वात्पदोभूतराज्यादौ तत्स्वत्वत्यागानन्तरं कृष्णचन्द्रभ्रमरवरस्य स्वत्वं जातम् । एवं रामचन्द्र-लिखना(नु)रोधात् दासीगर्भजातः कृष्णचन्द्रमहेन्द्रस्तु पितृदिद्, अतस्त-द्राज्यादौ तस्य स्वत्वं भवितुं नाहंति इत्योद्देशचलितमनुमिताक्षरा-दिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् (५।१५२) ॥१॥

मनसा पात्रमुद्दिश्य भूमौ तोयं विनिःक्षिपेत् ।

विद्यते सागरस्यान्तो दानस्यान्तो न विद्यते ॥ इति नारदवचनम्^१ ॥२॥

भूमिं दत्त्वा तु यः पत्रं कुर्याच्चन्द्रार्कसाक्षिकम् ।

अनाद्येधमनाहार्यं दानलेख्यन्तु तद्विदुः ॥ इति वृक्षस्पति (पृ० ६१)-
वचनम्^२ ॥३॥

पितृद्विट् पतितः (पण्डो) यश्च स्यादौपपातिकः ।

औरसा अपि नेतेऽरां लमेरन् क्षेत्रजाः कुतः ॥

इति नारदवचनम्^३ इति (पृ० १६५) ॥४॥

श्रीहरिः शरणम्

भीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

श्रीज्जयतिराम

द्वितीय व्यवस्था—वैद्यनाथमिश्र—

एतद्वर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुक्तबानहरवरदहारिणदीन-
सादेवधर्माभिः इत्युल्लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभोराज्ञापितवादिप्रतिवादिनोः प्रश्नोत्तरपत्रार्थपरिज्ञानेन राज्ञा

१. दानमूलं नारद —(पृष्ठ १२) । तत्र “दानस्यान्तो न विद्यते” इत्यस्य स्थाने
“तस्यान्तो नैव विद्यते” इति पाठः ।

२. नृ०-पद्ये-११४ । तत्र “चन्द्रार्कसाक्षिकम्” इत्यस्य स्थाने “चन्द्रार्क-
साक्षिकम्” इति पाठः । “तद्विदुः” इत्यस्य स्थाने “तद्विदुः” इति पाठः
व्यप० मध्ये ।

३. नृ०-१० १६५ । तत्र “औरसा” इत्यस्य स्थाने “औरसा” इति पाठः ।

त्रिलोचनसिंहेन फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नो राजा रामचन्द्रः शौर्येण तदुत्तराधिकारित्वेन वा समस्तमेव पत्रं राज्यं प्राप्य कतिपयदिनान्युपभुज्य फूलविवाहितायां स्त्रियां कृष्णशरणनामानं कृष्णचन्द्रमहेन्द्रप्रसिद्धं पुत्रमुत्पाद्य^१ कृष्णचन्द्रभ्रमरवरस्यैतद्वर्माधिकरणप्रतिवादिनोऽन्तिके चर्चावसंज्ञकं^२ पत्रं प्रेषयित्वा मृत इति ज्ञातम् । तत्र यदि तद्देशे फूलविवाह-शब्देन शास्त्रोक्तगान्धर्वविवाह उच्यते तदा गान्धर्वविवाहसंस्कृतायां पत्न्यामुत्पन्नो^३ राजा रामचन्द्रः स्वपितुः मुख्य एवोरसः पुत्रः, तथा रामचन्द्रस्य फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नः कृष्णचन्द्रमहेन्द्रः मुख्य एवोरसः पुत्रः । यदि च तद्देशे दास्येव फूलविवाहिताशब्देनोच्यते तदा दास्यामुत्पन्नो^४ राजा रामचन्द्रस्तथापि स्वपितुरोरस एव । उभयथा राजा रामचन्द्रः शूद्र एव । शूद्रेण विवाहितायां^५ स्त्रियामुत्पन्नो दास्यामुत्पन्नश्च घनाधिकारी भवत्येव । सति पुत्राद्यन्वये^६ घनाधिकारिणि विद्यमाने सर्वस्वदानं तदननु-मत्या क्रमागतत्वाञ्जितस्थावरदानं चाप्तिदम् । अतो रामचन्द्रप्रेषितपत्र-लिखितस्यागकरणदिवृत्तान्तेन रामचन्द्रस्वामिकरागशब्दे कृष्णचन्द्र-भ्रमरवरस्यैतद्वर्माधिकरणप्रतिवादिनः स्वत्वं न भवति । एवं रामचन्द्रेण फूलविवाहितायां स्त्रियामुत्पन्नस्य कृष्णचन्द्रमहेन्द्रस्य तदुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वनाशो न भवति—इति उक्तलदेशप्रचलितमनुमिवाक्षरावीरमशोदय-व्यवहारमूलप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

एक एवोरसः पुत्रः पित्र्यस्य वसुनः प्रभुः—इत्यादि मनुवचनम् (६।१६३) ॥१॥

स्वं कृदुन्वाविरोपेन देयं दारमुताहते ।

१. कृष्णचन्द्र—व्यप० ।

२. उत्तराश्व—व्यप० ।

३. “चटान” इत्यपि भविष्यवर्तति ।

४. उत्पन्नो—व्यप० ।

५. विवाहितया—व्यप० ।

६. चतये—व्यप० ।

नान्वये^१ सति सर्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम्^२॥ इति मिताक्षरा-वीर-
मित्रोदयादि (पृ० ६५१)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्^३ (२।७५) ॥२॥

पुत्रपौत्राद्यन्वये^४ विद्यमाने सर्वं धनं न दद्यात्—इति मिताक्षरा-
(पृ० २४५)लिखनम् ॥३॥

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते^५ च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव—
इति मिताक्षरा(याज्ञ० २।११३ पृ० २००)लिखनम् ॥४॥

जातोऽपि दास्यो यूमेण कामतोऽशहरो भवेत् ।

मृते पितरि कुर्यात्संभ्रातरस्त्वर्द्धभागिकम् ॥

अभ्रातृको हरेत्सर्वं दुहितृणां सुतादते—इति मिताक्षरा-
वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।११३-४ पृ० २१६)वचनञ्चेति॥५॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

११ एड् मर्कट् माते प्रथमेते श्रीयुत कुर्टनी इरामिट साहेब
द्वितीय हाकिमेर बैठकेते सञ्जोयाल । एड् ये
सञ्जोयाल—

जेला माहाबाद साकिनेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदर
भ्रातार पुत्रके पुत्रताते लइलेक । ताहार पर ए व्यक्ति औरस
पुत्र जन्मिल । ऐ व्यक्ति मृत्युर पर ताहार त्यक्त धनेर मध्ये

१. नाशने—व्यप० ।

२. प्रतिपदम्—व्यप० ।

३. स्वकुटुम्बनिरोधेन—व्यप० ।

४. पुत्रपौत्राद्यन्वये—व्यप० ।

५. स्वार्जिते पैत्रादि—व्यप० ।

औरस पुत्र कि परिमान ओ दत्तक पुत्र कि परिमान पाइवेक, उचित-ये अतिशीघ्र एइ सओयालेर जवाब ऐ देशेर शाखानुसारे दाखिल करेन इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाब-व्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुक्तकुटुम्बीहसमिटवाहेववर्माधिकरण-लिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते ।

यत्र कश्चित् हिन्दूजातीयः शाहाबादप्रदेशीयः सोदरभ्रातृपुत्र^१ दत्तकत्वेन गृहीत्वानन्तरमौरसपुत्रमेकमुत्पाद्य भृतः, तत्र तदीयसमस्तस्थावरास्पावराभरणं चतुर्धा विभज्य भागत्रयमौरसः^२ पुत्रो गृह्णीयात्^३, दत्तकपुत्रस्त्वेकं भागं गृह्णीयादिति शाहाबादप्रदेशादिचलितमिताक्षरादत्तकमीमांसादिमन्यानुसारिणी^४ व्यवस्था इति ।

तत्र प्रमाणम्—

तस्मिन्चेत् प्रतिगृहीते औरस उत्पद्यते^५ ।

चतुर्थेभागमागी स्यात्^६ दत्तकः ॥ इति मिताक्षरा (याश० २।१३२)
दत्तकमीमांसादि(६०मी० १०३/भृतवशिष्ठवचनम्^१ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः धारणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

१. भ्रातृपुत्र—व्यप० ।

२. मीसरः—व्यप० ।

३. गृह्णीत—व्यप० ।

४. दत्तमीमांसा—व्यप० ।

५. उत्पद्यते—व्यप० ।

६. तस्मिन् दत्तके प्रतिगृहीते औरस उत्पद्यते तदा दत्तकपुत्रांशं लभते न सम-
शान्तिरर्थः इति ६०मी० पाठः ।

श्रीर्जयतितराम्

सञ्चोयाल—

१२—योगि जातिर स्त्री स्वामिर मरणोर पर आपन इच्छाते स्वामिर सहित दग्ध हइते पारे कि ना ।

जवाव-व्यवस्था

योगिजातेः स्त्री स्वामिरणानन्तरं स्वेच्छया स्वामिसहगमनं कर्तुमर्हतीति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल रेजेष्टर मेयनाटन साहेबेर निकट ।

श्रीर्जयतितराम्

१३—सञ्चोयाल—

रामकृष्णेर चारि पुत्र, बड पुत्र रामहरि, द्वितीय रामचन्द्र, तृतीय पुत्र राममोहन, चतुर्थ पुत्र रामकान्त । ताहर मध्ये रामहरिर आपन ऐ तिन भ्राता ओ पिता मर्त्तमाने^१ दुइ पुत्र राखिया मृत्यु हय । रामहरि आपन उपार्जन^२ द्वारा धन सङ्ग्रह करिया दुइ पुत्रेर नामे उडल अर्पाने^३ विभागपत्र करिया देन । राम

१. श्रीर्जयतितराम्—२५० ।

२. मर्त्तमाने अतिशयोक्त्याः ।

३. उपार्जन—२५० ।

४. अर्पित—२५० ।

कृष्ण ओ रामचन्द्र ओ रामगोहन ओ रामकान्त प्रत्येके एइ धनेर अंशेर दाओया करे । यद्यपि ऐ धन रामहरि आपन धन ओ आपन सरीरायास द्वारा उपार्जन करिया थाके, ताहाते ताहारा किम्बा के के, एवं ताहादिगेर मध्ये कोन व्यक्ति ऐ धनेर कत अंश पाइते पारे । यद्यपि ऐ धन पितार धन ओ ताहार साहाय्य-साते^१ एवं सुपारिष द्वारा उपार्जन करिया थाके ताहाते ताहारा कि रूप अंश पाइवे । एकाक्ष किम्बा पृथकाक्ष थाकिले ऐ धन ग्रहणेर कि विशेष इति ।

श्रीर्जयतितराम्^२

जयाव्यवस्था

प्रभुकृतप्रभानुसारेणोत्तरं लिख्यते । यत्र चतुर्णां सौदरभ्रातॄणां मध्ये एको भ्राता पृथग्नस्थितोऽपृथग्नस्थितो वा विद्यमाने पितरि विद्यमानेषु त्रिषु भ्रातॄषु चास्मद्विहितममस्तनमस्तपुत्रयोरित्यभिप्रायेण^३ विभागपत्रं कृत्वा मुनस्तत्र यदि तद्धनं यदि पितृधनोपघातेन पितुः शरीरापातेन वा उपाजितं स्यात्तदा तदुपाजितमस्तनमस्तपनास्पादंभागित्वं पितुरवशिष्टार्द्धभागस्य पञ्च भागान् कृत्वा भागद्वयमुपाजैकस्यैकैको भागस्त्रयाणां भ्रातॄणाम् । यदि च पितृधनानुपघातेन पितुः शरीरायामव्यापारभ्रष्टिरेकेणोपाजितं स्यात्तदा तद्भ्रातॄणां न तद्वनाधिकारः, किन्तु समुदायव्रण्यस्पादंभागित्वं पितुरर्द्धभागित्वमुपाजैकस्य । उभयपक्ष एवोपाजैकपुत्रयोरुपाजैकभागभागित्वम् इति वद्वदेशप्रचलितदायतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम् ।

द्वयं राहरोऽर्धहरो वा पुत्रवित्तार्जनात्पिता —

इति दायभाग (॥ ४८, २।६५) दायतत्त्वादि (दात०—२४, ५)—

ग्रन्थधृतकात्यायन (पृ ८५१) वचनम् ।

१. साहाय्यताजे—इति सभाषान् पाठः ।

२. श्रीर्जयतितराम्—व्यप० ।

३. ०रमदुर्गच्छ—व्यप० ।

तत्र पितृद्रव्योपघातेन पुत्रार्जितवित्तस्यार्द्धं पितुरर्जस्तस्य पुत्रस्योश-
द्वयमितरेषामेकैकांशिता^१, अनुपघाते पितुरंशद्वयमर्जकस्यापि तावदेव
इतरेषामनंशस्त्वम्—इति दायभाग(पृ० ५१ २।७१)ग्रन्थलिखित-
द्वचनव्याख्यानञ्चेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्ज्जयतितराम्

१४—लम्बर २३३६

रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर इंरेजी सन
१८९५ साल सारिख ५ माह आपरेल मतायक बाङ्गला सन
१२३१ साल २४ चैत्र रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार द्वितीय
हाकिम श्रीयुत कुटनी इशमिट साहेबेर बैठके—

प्रियाभासिंह

आपीलाएट

अत्रध्यासिंह

रण्याडएट

आपीलाएटेर उकिलगण मुनमी महम्मद प(ना)ह ओ लाला
आयुधलाल^२ ओ रण्याडएटेर उकिलगण नवि नेयामत आली
बिद्यमाने आडल। मकहमा रोवकार हइल। कोट आपीलेर दाखिल
हओया कागज लम्बर हइते तथाकार फयमला पर्यन्त ओ ए
आदालते दाखिल हओया आरजि मजुवात ओ जबाय ओ २३३६
लम्बरे मकहमा कागजमकल पढागेल। तदपरे आपीलाएटेर

१. •कांशता—व्यय।

२. आयुधनाल आयुधाल—व्यय० ।

उकिलेरा सनहिसिंह ओ मुसम्मात पाना आपीलाष्ट वालमुकुन्द
रप्पाडण्टेर मकईमाते इरेजि १८१३ साले २० आपरेल मासेर
हथोया एक केता फयसला(र) नकल ओ जिला त्रिहोटेर देओयानी
आदालतेर पण्डितेर एक केता व्यवस्थार नकल ओ जिला साहा-
बादेर देओयानी आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल छय टाका
मूखेर फेरस्त द्वारा लम्बरे दाखिल करिल दृष्टे आइल । तत्परे ए
आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल करानेज एइ ययाने
जे जिला साहाबाद साकिमेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन सहोदर
आवार पुत्रके पुत्रताते लइलेक । ताहार पर ऐ व्यक्ति औरस पुत्र
जन्मिल । ऐ व्यक्ति मृत्युर पर ताहार त्यक्त धनेर मध्ये औरस
पुत्र कि परिमात ओ दत्तक पुत्र कि परिमान पाइवेक । उचित जे
अतिशिश्र एइ सओयालेर जयाव ऐ देशेर शाखानुमारे दाखिल
करेन इति । सन १८२५ साल इङ्गरेजी तारिख ५ आपरेल यथा
पण्डितेरा जयाव दाखिल करिलेक, ताहार तरजमार विवरण
एइ ये, यद्यपि जिला साहाबाद साकिमेर एक व्यक्ति हिन्दु आपन
सहोदरभ्रातृपुत्रके अपन पुत्रताते लइलेक । ओ तत्परे ऐ
व्यक्ति औरस पुत्र जन्मिलेक । ताहार मृत्युर पर ताहार स्थावर-
स्थावर समुदाय धन चारि अंश इइया, ताहार मध्ये हइते तिन
अंश ताहार औरस पुत्रके ओ एकांश ताहार दत्तक पुत्रके
वर्त्तिवेक । जिला साहाबाद ओ गयरहेर चलिब मिताचरा ओ
दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थानुजाइ एइ व्यवस्था । इहार प्रमाण
मिताचरा दत्तकमीमांसा ग्रन्थसक्तेर लिखित यसिष्ठमुनिर^१
वचन । अर्थ एइ—यद्यपि कोन व्यक्ति प्रथम दत्तक ग्रहण करिया
थाके ओ तदपरे ताहार औरस पुत्र जन्मे, से प्रकारे ताहार
मृत्युर पर दत्तक पुत्रके चतुर्थ अंश वर्त्तिवेक इति । यथा ए

१. गणिर—व्यप० ।

२. दृष्ट—व्यप० ।

आदालतेर पण्डितदिगेर जबाब अनुसारे उचित छिल जे कोटेर डिगिरि रण्पाडखेरे दाबिर अद्वेकेर, कारण जे पूर्व हइते अद्वेक त्यक्त धनेर सपर देखिल आछे, हइतो । ओ वृत्तान्त पइ ये आपील आदालतेर पण्डितेरे जबाब अनुसारे दाओयार तिन एवं चौथा-इर डिगिरि हइयाछे । पण्डितेरे स्थाने आपीलेर हाकिमेर सओ-यालेर घयान—जद्यपि हिन्दु जाति कोन व्यक्ति आपन^१ धातु-पुत्रके दत्तक करे, ओ ताहार दत्तक करणेपर दत्तकमहीत-छीर एक पुत्र जन्मे । अतएव ए प्रकारे ऐ व्यक्तिर त्यक्त धनादि दत्तक ओरस^२ पुत्रे सहित शास्त्रानुसारे कि प्रकार विभाग हइवेक । कोट आपीलेर पण्डितेरे जबावे(र) तरजमार विवरण-इहार मिताक्षरा ओ व्यवहारमयूख प्रभृति शास्त्रानुसारे ऐ व्यक्तिर त्यक्त धनके दुइ अंश करिया परे एक अंशके चारि अंश करा जावेक । सेइ चारि अंशेर एकांश दत्तक पुत्रके वत्तिवेक, ओ अथशिष्ट समुदाय त्यक्त धन ऐ औरस पुत्रे सत्त्व—यशिष्टमुनि ओ कात्यायनमुनिर कथित पइ कथा । अतएव हुकुम हइल ये पइ रोयकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितदिगके समर्पन करा जाय । ये आपिल आदालतेर पण्डितेरे जबावे ये तदनुसारे मृत^३ व्यक्तिर समस्त धन मध्ये सोलो आनार चोर्द्ध आना औरस पुत्रके ओ दुइ आना दत्तक पुत्रके वर्ते—शुद्ध बदे कि अशुद्ध, ओ यदि शुद्ध हय, तवे कि प्रकारे ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर व्यवस्थाते सम्यक धनेर तिन चौथाइ, ये सोल आनार धार आना हय, औरस पुत्रे(र) सत्त्व, ओ चतुर्थांश^४ अर्थात् चारि आनार

१. आपन आपन—अप० ।

२. औरस—रनि लीपान् पठ० ।

३. मृत—अप० ।

४. चर्थांश—अप० ।

दत्तक पुत्रेर सत्त्व लिखियाछे^१ । उचित ये कल्य दुइ ग्रहरेर मध्येः
एइ सञ्चोयालेर जबाब दाखिल करेन इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाबन्यवस्थापत्र ।

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुम्बोद्देशमिटसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

एतद्विवादविषये कोर्टश्रीपीलाख्यधर्माधिकरणनिमुक्तपरिद्वेतेन
यत्तत्स्थानाधिपतिकृतप्रश्नोत्तरव्यवस्थापत्रे दत्तकपुत्रस्य ग्रहीतृधनाष्टमांश-
भागित्वं लिखितम्, तल्लि(लि)तवशिष्टवचनकात्यायनवचनाम्शानेवमिदानीं
तद्देशप्रचलितग्रन्थैश्च नायाति । तथा हि तल्लिखितवचनयोर्मध्ये वशिष्ट-
वचनस्यायमर्थः—दत्तकपुत्रे ग्रहीते सति यद्यौरसपुत्र उत्पद्यते तदा
दत्तकपुत्रश्चतुर्थभागभागीति, एवं कात्यायनवचनस्यायमर्थः—अौरसपुत्रे
उत्पन्ने^२ सति दत्तकादयः पुत्राश्चतुर्थांशभागिन इति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

१५--रोवकारि मिसिल आदालत नेजामत इङ्गरेजी १८२५
साल तारिख ६ माह जुन मतावक सन १२३२ वाङ्मला २५ माह

१. तिलिया छे—म्याप० ।

२. उत्पन्ने—व्याप० ।

३. श्रीर्जयति—व्याप० ।

ज्येष्ठ रोज सोमवार आदालत मजकुरार प्रथम हाकिमेर काएम मोकाम श्रीयुत कुटुनी इशमिट साहेवेर बैठके ।

धर्मचन्द्र ओ गयरह

सायेलान

साएलदीगेर उकिल मदासुकपण्डित हाजीर हइल । मौजे भूलपुरे मण्डलहायेर पुजारि-कर्म भोजकजाति ओ शिव-नर्माल्य-ग्राहक कालुरामेर बहालि विषये अन्य २ वयान सन्वलित सहर धारानशेर मेजपूर साहेव ओ एलाका धारानशेर दायेर सायब आदालतेर द्वितीय हाकिमेर हुकुमसफलेर नाराजीते सायेलदिगेर सभोयाल, हुलासीराम ओ मानिकचन्द्रेर नामिक मुक्तारनामा ओ ऐ उकिलेर नामिक ओकालतनामा ओ इङ्गरेजी सन १८२० सालेर ५ ओ १६ मेइ ओ सन १८२३ सालेर ६।१० आषतुबर ओ २ दिजम्बर ओ १८२४ सालेर मार्च मासेर लिखित सहर धारानशेर फौजदारि आदालतेर ६ फीता रोवकारिद नकल इङ्गरेजी सन १८२४ सालेर ३ आपरेल ओ सन हालेर २६।३१ मार्च ओ २८ ओ ३० आपरेल मासेर हजोपा एलाका धारानशेर दायेर सायेर आदालतेर ६ फीता रोवकारिद नकल ओ ४ फीता एजाहारेर नकल ओ ६ फीता दरखास्तेर नकल इत्यादि दस्तावेजा सहित, जे हाल मासेर ४ तारिख दाखिल हइयालील, ताराचन्द्र ओ लालचन्द्रेर उकिल मुनशी हसन आलीर हाजिरिते, जे आपन नामिक ताहादिगेर पत्ते ओकालतनामा दाखिल करिलेऊ, दरपेश हइया दृष्टी आइल । तदपरे सायेलदिगेर उकिल पण्डितदिगेर^१ व्यवस्था तरजमाय नकल इङ्गरेजी अक्षर ओ पाठे दाखिल करिलेऊ, पढायेल । परे जिज्ञासा गेल जे उभयेर मानित शालिपदीगेर हाल सालेर जानओरि मासेर २१ तारिखेर पाठानो कैफियत फीता । जवाब दिलेऊ 'मजुद नाइ' ।

पुनराय जिज्ञासा गेल जे पाठशालार पण्डितेरा श्रमत जियेन नाइ जे कालूराम पूजारि बहालिर योग्य नहे, चरं एइ लिखिया छैन जे कोनो व्यक्ति भोजक पूजारि थाकने शास्त्रानुसारे हानि नाइ । आर एइ लिखिया छैन जे अतएव देवालय स्वतंत्र की साधारण थाकनेर विवरण आमारदीगेर नितक प्रकाश नाइ । यदि साधारण हय ओ अतएव ओ कालूरामके रहित करावार योग्य जाने, रहितेर योग्य बटे, ओ यदि बहाल राखनेर योग्य जाने, बहालिर योग्य बटे । अतएव जिज्ञासा जाय जे तोमार मओक्षालेर सओयाले कि निमित्ते व्यवस्था मजमुनेर व्यक्तिकम लिखियाछे । जवाब दिलेक जे सओयाल लिखन पर्यन्त व्यवस्था पहुँछिया छिल ना । परे व्यवस्था इङ्गरेजीर तरजमाय जे दिगम्बरि-दीगेर ओ सेतम्बरिदिगेर देवालय साधारण हय, कि स्वतंत्र, ओ यद्यपि साधारण हय, ताहार पुजारि रहित ओ नियुक्त करण एक श्रेणीर क्षमताते हइते पारे, किम्बा दुइ श्रेणारेइ क्षमतार आवश्यक राखे । आर कोन व्यक्ति भोजक जाति हओन प्रकारे ऐ देवालयते तहाके पूजारि हओनेर निषेध शास्त्रानुसारे बोध हय कि ना । उचित् ये सायेलदीगेर सओयाल ओ एइ रोवकारि ओ इङ्गरेजी १८२४ सालेर ६ मार्च ओ १८२३ सालेर १० आक्तुबर मासेर लिखित सहर बारानशेर फौजदारि आदालतेर रोवकारि ओ सन हालेर २६ मार्च ओ २५।३० आपरेल हओया बारानशेर कोट सरकटेर रोवकारि अवगत हइया ऐ सओयाल सकलेर जवाब बुधवार पर दिवस दुइ प्रहर पन्तर्घ्य^१ दाखिल करेन इति ।

श्रीज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्द्वर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रौतकुटुनीदशमिद-
साहेवधर्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिपत्रमेव सदाज्ञापितैतद्धर्माधिकरण-
वादिना प्रश्नपत्रम् अङ्गरेषीयन्दप्रतिपत्रचतुर्विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय-
मार्चमासीदपुदिवसलिखितत्रयोविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयापतुवरमासीय-
दशमदिवसलिखितवाराणस्याधिकरणद्वौसदारिंशकधर्माधिकरणलिखित-
विचारपत्रपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीयमार्चमासीयोनत्रिंशद्विषसीयतादृ-
शाब्दीयाष्टाविंशतिदिवसीयत्रिंशद्विषसीयापरेलमासीयवाराणस्याधिकरणक-
फोटसरकटसंज्ञकधर्माधिकरणलिखितविचारपत्राणि^१ चावलोक्य यादृश-
बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

उपरिलिखितपत्राणामर्थानवगत्य यादिप्रतिवादिनोर्द्वयोरेव पारश-
नायाख्यदेवोपासकत्वमिति निश्चितम् । पारशनायाख्यदेवोपासना च
धर्मशास्त्रे न^२ क्वापि लिखितेति । पारशनायाख्यदेवोपासकान्तर्गतयोर्दिगम्बर-
श्चेताम्बरयोस्तद्देवालयः साधारणः, पृथक् पृथग्देवालयद्वयं चेत्यत्रापि
धर्मशास्त्रालिखितत्वेन^३ धर्मशास्त्रानुसारेण तद्देवालयस्य साधारण्या-
साधारण्यनिश्चयो भवतु नार्हति । परन्तु पञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशताब्दीय-
मार्चमासीयोनत्रिंशद्विषसीयवाराणस्याधिकरणक—फोट सरकट-संज्ञक-धर्मा-
धिकरणलिखितविचारपत्रेण विवादास्पदोभूतमन्दिरद्वयमध्ये एक^४ मन्दिरं
दिगम्बराख्यमनापारणमित्युभयवादिस्तिष्ठमिति गम्यते । ततस्तद्विपन्न-

१. मोन^१ यतिनराम्—व्यप० ।

२. पारानस्यधिकरणम्—व्यप० ।

३. श्वरकट—व्यप० ।

४. ०य—व्यप० ।

५. धर्मशास्त्रलिखितत्वेन—व्यप० ।

६. एकं मन्दिरं—व्यप० ।

साधारण्ये मन्दिरे पूजकनियोगकरणं दोषसहितपूजकत्यागकरणं च दिगम्बरा-
णामिच्छया भवति ।

द्वितीयञ्च मन्दिरं तयोर्द्वयोर्मध्ये कस्यासाधारणं भवतीत्युपरिनिश्चित-
पत्रैर्नावगम्यते इति । द्वितीयं मन्दिरं तयोर्द्वयोः साधारण्यं चेत्
तदा तत्र पूजकनियोगकरणं दोषसहितपूजकस्य त्यागकरणञ्च तयोर्द्वयोरे-
वेच्छया भवति । यदि च तयोर्मध्ये एकस्यासाधारण्यं तन्मन्दिरमिति निश्चयं
भवति तदा यस्यासाधारण्यं तन्मन्दिरं भवति तदिच्छयैव तत्र पूजकनियोग-
करणं दोषसहितस्य पूजकस्य त्यागकरणमिति लोके व्यवहारविदमपि ।
अथ च धर्मशास्त्रोक्तभूर्जकण्टकजातीय एव लोकमायायां भोजक जाति-
शब्देन प्रसिद्धः । स च भूर्जकण्टकः पौडशवर्षपर्यन्तमुपनयन-
संस्कारहीनस्वरूपमास्याद् 'ब्राह्मयामुत्पन्नो' भवति (कुल्लूकः—मनुः—
१०।२१) । मास्यस्य तूपनयनसंस्कारहीनत्वेन पतितत्वाद् ब्राह्मणनाम्नुक्त-
कर्मानर्हत्वम् । अतः सुतरां ब्राह्मणोत्पन्नस्य भूर्जकण्टकशब्दाच्चस्य भाषाया
भोजक जातिशब्देन प्रसिद्धस्य धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणकर्मानर्हत्वम्—इति मनु-
मिताहाराधिवादचिन्तामण्यादिग्रन्थानुसारेणोत्तरम् ।

तत्र प्रमाणम्—

कामादिति अत्याज्यत्यागे अष्टत्वित्रः ।

सहत्विक्त्यागे* याज्यस्य च पण्यशतद्वयं दण्डः ॥

सदोषस्य तु त्यागे न दोषः इत्यर्थः ।

इति (पृ० २३।१५-१६) विवादविग्रहामप्युपगम्यतिस्वनम् ॥१॥

द्विजातयः सवर्णासु जनयन्त्यव्रतांस्तु यान् ।

तान् मावित्रीपरिग्रहान् ब्राह्मणानिति विनिर्दिशेत् ॥

इति मनुवचनम् (१०।२०) ।

१. मात्यादिप्रादुर्भावा—व्यप० ।

२. उत्पन्न०—व्यप० ।

३. अतिरिक्त०—विग्रहार्थः ॥

प्रात्यात् जायते विशात् पापात्मा भूर्जकण्टकः ।
 आवन्त्यकाटधानौ च पुण्यघः शैल एव च ॥
 इति मनुवचनम् (१०।२१) ।
 उपनयनकालस्य परमावधिमाह—
 आ 'पोडशादाद्विंशच्चतुर्विंशच्च षत्सरात् ।
 वक्ष्यन्निविशो कालः औपनायनिकः परः ॥
 अत ऊर्ध्वं पतन्त्येते सर्वधर्मपरिहृताः ।
 सावित्रोऽस्मिता प्रात्या प्रात्यस्तामादते^३ कतोः ॥ इति मिताक्षर-
 लिलनम् (या० स्मृ० १।१७-१८) ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीविद्यनाथमिश्रण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

१६—रोयकारि मिखिल अदालत नेजामत सदर इक्तेरजी
 १८२५ साल तारिख २२ माह सेतम्बर मतावक बाङ्गला १२१२
 साल ७ आश्विन रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार काएम
 मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत् कुटनी इशमिट साहेबेर बैठके ।

धर्मचन्द्रप्रभृति

शायेल

सायेलदिगेर ठकिल सदामुखः पण्डित ओ ताराचान्द,
 सेतान्बरिर ठकिल मुनशी मुहम्मद पानाह ओ मुनशी इशान

१. भारोन्मात्र—अप० ।

२. ०४ कलकत्ता—अप० ।

३. कास्त्रोपनायनिक पर—अप० ।

४. अ. वस्तो १।३ कतोर्विनेटि—अप० :

आलि हाजिर हइल । हुजुरेर तलब करा वारानशेन (वाराणसेय) पाटशाला(र) पण्डितदिगेर व्यवस्था असुद्ध, ओ ए आदालतेर पण्डितदिगेर व्यवस्था यथार्थ थाकन ओ सायेलदिगेर श्रेणीमत कोनो भोजाक जाति ठाकूर-पूजार कर्मेर योग्य ना हओन विशये ओ जती जाति पपाकर द्वाराय, जे ताहादिगेर नाम एइ दरखास्तेर निचे लेखा गयाछे, ए बिषयेर ताहाकीकातेर प्रार्थनार सायेलदिगेर शओयाल अन्य-हेतु सम्बलित, ये हाल मासेर १७ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अथ "कार पहुँछा, हाल शनेर १२ आगस्त मासेर लिखित वारानशेर कोर्ट शरकदेर रिटरन ओ रोबकारि इत्यादि कागज ओ पाटशालार पण्डित-दिगेर जबाब सम्बलित पडा गेल । जाना गेल जे पाटशालार पण्डितेरा हाल हालेर २६ जुन मासेर हुकुम माफिक कालुराम भोजक पूजा करशेर योग्य हओन विशये द्वितीय व्यवस्था लिखियाछेन । अतएव हुकुम हइल ये ए आदालतेर पण्डितेरा हालेर व्यवस्था सुन्दर रूप अनुमोदने पढीया ताहारविगेर तजबिजे शास्त्रानुसारे याहा हय लिखिया दाखिल करेन, ओ यद्यपि आपनदिगेर पूर्व व्यवस्थार कोन विशय परिवर्तकरण विवेचना करेन ताहार वैओरा कैफियत लिखेन, ओ सोमवार दिवस दुइ प्रहर पर्यन्त जबाब दाखिल करेन; ताहा दृष्टेर परे उचित हुकुम देओया याइवेक इति ।

श्रीजयतितराम

जबाब व्यवस्था

एतदधर्माधिकरणप्रथमाधिपति-स्थानाधिपति-अधुत-कुटनी इशमिट राहेव धर्माधिकरण-समर्पित-धाराणस्यधिकरणक-श्रीमत्-सरकार-कंपिनी

वहादुरारण्य-सर्वभूमि-पाठशालास्य-परिदृष्ट-लिखित-व्यवस्था-पत्रम-
 यलोक्य विविच्य च शास्त्रानुसारेण पर्यवसितार्थो लिख्यते । उपरिलिखित-
 व्यवस्थापत्रे यानि प्रमाणानि लिखितानि तानि विश्वम्भरबालुशास्त्ररयानि
 जातिविवेकस्थानि बालम्भट्टकृताचाराध्यायस्य मिताक्षराटीकारूपग्रन्थ-
 स्थानीति^(१)लिखितम् । परन्तु केषां मुनीनां तानि वचनानीति तत्र न
 लिखितम् । तेषां ग्रन्थानामिदानीं प्रचारमावात् कुत्रापि तदनुसारेण
 व्यवस्था न दीयते । केनापि यद्यप्यप्रचरिततत्तद्ग्रन्थानुसारेणैव तत्तत्परिदृष्टै-
 र्व्यवस्था दत्ता । परन्तु तद्व्यवस्थालिखितवचनजातैर्भोजकजातिर्देवमन्दिरे
 देवपूजार्थं नियोक्तव्य इति नायाति । तथा हि भोजकजातेरुत्पत्तिप्रकार-
 दयं लिखितम् । तैस्तद्वचनजातैः षोडशवर्गपर्यन्तमुपनयनसंस्कारहीन-
 स्वरूपग्रात्यादिप्राद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नो भूर्जकण्टकजातिरित्येकः प्रकारः । द्वितीयश्च
 तस्मादेव भूर्जकण्टकाद् ब्राह्मण्याम् (उत्पन्नः) आर्षतकजातिः,
 आर्षतकाद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नः कटघानजातिः, कटघानाद् ब्राह्मण्यामुत्पन्नः
 पुष्पशेखरजातिः, पुष्पशेखरजातीयायां स्त्रियां ब्राह्मणेनोत्पन्नो भोजक-
 जातिरिति ।

स एव भोजको मागध इत्यनयोर्पक्षयोर्मध्ये पूर्वः पक्षस्तेषामभिमत-
 रचेत्तदा पूर्वपक्षोक्तभूर्जकण्टकस्य देवपूजार्थं देवमन्दिरे नियोगः शास्त्रानु-
 सारेण न सम्भवति, संस्कारहीनस्य ग्रात्यस्य सावित्रीपतितत्वेन धर्मशास्त्रोक्त-
 ब्राह्मण^२जात्युक्तकर्मानधिकारित्वात् । तदुत्पन्नस्य भूर्जकण्टकस्यापि
 सावित्रीपतितत्वेन मुतरां धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्मानर्हत्वम् ।
 द्वितीयः पक्षस्तेषामभिमतश्चेत्तदा द्वितीयपक्षोक्तभोजकजातेर्देवपूजार्थं
 देवमन्दिरे नियोगः शास्त्रानुसारेण कदाचिदपि न सम्भवति, सावित्रीपतित-

१. ब्राह्मणो—ग्रन्थः ।

२. अनुक्तं—ग्रन्थः ।

३. कर्मनर्हं—ग्रन्थः ।

व्रात्यवंशोद्भवायां पुष्पशेखरायां स्त्रियां ब्राह्मणेनोत्पन्नस्य भोजकस्य तदभिमत-
मागधाभिधस्य पतितस्त्रीजातत्वेन पतितत्वात्, मागधत्वेन वर्णसङ्करत्वाद्
धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्मानर्हत्वम् ।

यत्तु तैत्तिरीयं कचित् पुस्तके भूजकण्टकस्य पूजकत्वविषये निषेधाभावाद्
देवमन्दिरे देवपूजायं नियुक्तो भोजकजातीयः कालुरामाख्यो निष्कासयितुमयुक्त
एव, तदपि न—

अत ऊर्ध्वं पतन्त्येते सर्वधर्मबहिष्कृताः । (यास्मृ० १।१८)

इत्यादिना योगीश्वरेण ,

सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्यविगर्हिताः । (२।२६)

इत्यनेन मनुना [च] धर्मशास्त्रोक्तब्राह्मणजात्युक्तकर्म्ममात्र एव
नस्यानधिकारविधानात् ।

यत्तुक्तम्—भोजकापेक्षया निकृष्टस्य देवलक्ष्यदेर्धर्मशास्त्रे देवपूज-
कत्वमुक्तम्, तत्र प्रमाणं किमपि न लिखितं तैत्तिरीयमभिरपि न दृष्टं
ह्यपि, अतस्तदपि हेयमेव । तस्मादस्माभिलिखिता पूर्वव्यवस्थाऽस्मिन्
प्रिषादे पराधर्तनयोग्या न भवतीति ।

श्रीर्जयवित्तराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्

श्रीरामवल्लभशर्माविद्यावागीशेन

[श्रीज्जयतितराम्]

लम्बर २३०२

१७ जानकीनाथराय प्रभृति

गङ्गागोविन्दचन्दोपाध्याय

सञ्जोयाल

आपीलाष्टान्

रस्पाडष्ट

सदर देओयानी आदालतेर कायेम मोकाम प्रथम हाकिम धीयुत कुर्टनि इरामिट साहेबेर हजुर हइते जानकीनाथराय प्रभृति आपिलाष्टान गङ्गागोविन्द(चन्दो)पाध्याय रस्पाडष्टेर २३०२ लम्बरेर मोकदमाते अंगरेजी १८२५ सालेर २६ जुन मासेर लिखित ए आदालतेर पण्डितानेर नामे कल्प दुइ प्रहर पर्यन्त बचन प्रमाणेर तफसील संबलित जबाब दाखिल करणे हुकुम । सवाल एइ ये :—

प्रथम सञ्जोयाल—१

बह्मदेश निवासी एक जन ब्राह्मण आपन मातार त्यक्त धनेर उपर दखिल थाकिया बैमात्रेय भ्राता ओ स्त्री उत्तराधिकारि राखिया मरियाछे, ओइ त्यक्त धन स्त्रीके वसिबे, कि बैमात्रेय भ्राताके ?

द्वितीय सञ्जोयाल—२

यद्यपि स्त्रीके वसिबे, तबे स्त्री निःसन्ताना मरिले, ओइ त्यक्त धन बैमात्रेय भ्राताके आशिबे कि ना ?

तृतीय सञ्जोयाल—३

ओइ दुइ जनेर मातामह पृथक थाकन, एक बैमात्रेय भ्रातार उत्तराधिकारि द्वितीय बैमात्रेय भ्राता हओने शास्त्रमते निषेध आछे कि ना ?

चतुर्थ सञ्चोयाल—४

यद्यपि प्रथम सञ्चोयालेर जवावानुसारे मृत व्यक्तित्व त्यक्त धन स्त्रीके पतिर ऋण परिशो(ध)नार्थे ओ ताहार स्वर्गार्थे किम्वा अन्य हेतुते किम्वा आपन इच्छा ओ मत्क्रमे ओइ सम्यक् धन किम्वा तार मध्ये कतोक विक्रय ओ हेवाकरणेर क्षमता आछे कि ना ?

पञ्चम सञ्चोयाल—५

यद्यपि प्रपौत्र ओ पुत्रेर दौहित्रेर वैमात्रेय भ्राता वर्तमान आछे, ओइ दुइ जनेर मध्ये दौहित्रेर स्त्री, जे पतिमरखेर परे ताहार धनेते दखिलकार छिलो, निः सन्ताना मरिले पर भातामहेर त्यक्त धन कोन व्यक्तिके अर्शे ?

श्रीज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तपुत्रकुटुम्बीहरामिदृशादेव-
धर्माधिकरणलिखितप्रभपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

वङ्गदेशीयः कश्चन ब्राह्मणः स्वमातृव्यक्तधनं प्राप्य तद्धनं आयत्तत्वं
सम्पत्तयः स्वपत्नीमुत्तराधिकारिणीं स्ववैमात्रेयभ्रातरञ्चोत्तराधिकारिणं संरक्ष्य
मृतस्तत्र तद्धनं यदि स्वमातृस्त्रीधनं स्यादथवा तस्याः पैतृकं धनमुत्तराधि-
कारित्वेन तत्संकान्तं स्याद्, उभयथाप्युत्तराधिकारित्वेन पुत्रेण प्राप्तं तद्धनं
पुत्रमरणानन्तरं पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवन्ति, तत्र च सत्यां
पत्न्यां तस्या एवाधिकारो न तु वैमात्रेयभ्रातुरिति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा । इत्यादि दायभागादि (दाभा० ११४) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (११३५) ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण तद्वनाधिकारिण्याः पत्न्या मरणोत्तरं दुहितृदौहित्रपितृमातृसहोदर^१ भ्रातृपर्यान्ताभावे तद्वने वैमात्रेयभ्रातुरधिकार इति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणम् ॥ १ ॥ तत्रापि प्रथमं सौदरस्तदभावे वैमात्रेयः—इति दायभागादिग्रन्थ (दाभा०—११५।७)^२ लिखनम् ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

भिन्नमातामहक्यैमात्रेयभ्रातृधने भिन्नमातामहकापरवैमात्रेयभ्रातुरधिकारे शास्त्रानुसारेण निषेधो नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणम् ॥ ३ ॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण मृतस्य धनिनः पत्न्या गृहीतधनायाः पतिकृतकुटुम्बभरणार्थं^३ परिशोधनार्थं स्वशरीरधारणार्थं मृतकुटुम्बभरणार्थं पत्युपवश्यकभ्रादृशार्थं च तद्वनविक्रयाधिकारः । एवं पतिस्वगार्थधनानुसारेण दानाधिकारोऽपि । परन्तु यावद्वनविक्रयेण^४ पतिकृतकुटुम्बभरणार्थं परिशोधनं पतिभ्रादृदि पतिकुटुम्बभरणं स्वशरीरधारणञ्च भवति तावद्वनविक्रय एवाधिकारो, न त्वधिकधनविक्रये । यदि च समुदायधनविक्रय-

१. सहोदरः—व्या० ।

२. भ्रातरस्येत्युक्तानुधिरागसरे प्रथमं सौदरो गृहीतव्यमित्यर्थः । तस्य त्वभावे साधुजो भ्राता, एकप्रभक्तेन तस्यापि भ्रातृगन्धार्यत्वात् । (दाभा० ११५।७) ।

३. ० विस्तारो—व्या० ।

व्यतिरेकेण पतिकृतकुटुम्बभरणार्थपरिशोधनादिकमेव न भवति तदा तदर्थं समुदायधनविक्रयेऽप्यधिकारः, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा समुदायधनस्य यत्किञ्चिदनस्य वा दानविक्रयाधिकारः ।

अत्र प्रमाणम्—

‘कर्तुं कामेन वा भर्ता उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रपञ्चापि सा दाप्या धनं दद्यात् श्रितं स्त्रिया ॥

इति विवादभङ्गार्णव (१ विवाम० पृ० २०६) विवादार्णवसेतु (पृ० ३०)

धृतनारदवचनम् (पृ० ५१) ॥ १ ॥

यदि भर्तृधनं स्त्रिया गृहीतमप्र(पञ्चा)पि स्वीकारमकुर्वत्यपि शोधयेत् । यदि तु मृत्युकाले भर्ता त्वया मम ऋणं देयमित्याकापिता स्वीकारं करोति तदाऽगृहीतधनापि शोधयेत्—इति विवादभङ्गार्णवल्लिखनम् (१, पृ० २०६ ख) ॥ २ ॥

एवञ्च पत्युरीर्दध्यदेहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतमिति—इति दाय-भागलिखनम् (११।१।६१) ॥ ३ ॥

वर्तनाराक्तो आधानमप्यनुमतम्, तत्राप्यशक्तो विक्रयणमपि—इत्यादि दायभागग्रन्थलिखनम् (११।१।६२) ॥ ४ ॥

रिक्थमाही ऋणं दाप्यः—इत्यादि विवादभङ्गार्णवादि (१, पृ० २१४ ख) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।५१) ॥ ५ ॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन—इति भारताद् (१३।४७।२४) अपहारशब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयवचनधिकार इति दायरहस्य लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

१. कर्तुं कामेन—निमये० ।

२. धनं यथाश्रितं स्त्रिया—विभो० ।

३. न खी पतिकृत दद्यात् पुत्रकृतं तया । अमृत्युरेतादौ यदा सह पत्या कर्तुं मरेत् ॥ नामसं० (पृ० २४) । विवादार्णवसेतौ धृतमिदं नारदीय वचनं नारदग्रन्थमस्ति तर्था बहुभिनिर्णयः पदे पठितम् ।

४. रिक्थमाह काय दाप्य—इति यास्म० पाठः, कथञ्चमाही न्वप० ।

५. दायार—इति पाठान्तरम् । निवृत्तिार इति—यमं श्लोकेन, पाठः ।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण धनाधिकारिणि दौहित्रैश्चगते सन्ति दौहित्र-
मरणानन्तरं गृहीतधनायास्तत्पत्न्या मरणोत्तरं दौहित्रवैमात्रेयप्रातुरधिकारो
न तु प्रभुलिखितप्रभार्यावगतधनाधिकारिदौहित्रप्रमातामहप्रपौत्रस्य वर्तमा-
नस्याधिकार इति। यद्गद्देशचलितदायभागदायतत्त्वविवादभद्गार्थवविवा-
दार्थवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ५ ॥

अत्र प्रमाणम्—

तृतीयप्रश्नोत्तरविहितप्रमाणम् ॥ ३ ॥

श्रीर्जयपतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

जंघर २४३६

१८. रोषकारि मिसिल आदालत देमानी सदर अरेजी १८२५
साल तारिख ३ माह अगस्ति मताबक बाङ्गला १२३२ साल
तारिख २० माह श्रावण रोज बुधवार आदालत मजफुरार कायम
मकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्दनी इरामिट साहेबेर बैठके :—

मृत राजा अरिमर्दनशाहि

आपिलाएट

शिवदयाल उपाध्याय

रफाहएट

हाल शालेर १६ जुन मासेर लिखित जिला गोरकपुरेर जज
साहेबेर एक किता रिटरन ताहार शामिलेर रोषकारि आदि
सम्बलित लम्बर पहुँछियाछे, अद्य पढा गेलो। हुकुम हइलो ये
ए आदालतेर परिइतेरा हाल सनेर २२ जुन मासेर हओया
जिला गोरकपुरेर देमानी आदालतेर रोषकारि मजमुन बोध
करिया फल्य दुइ प्रहर पर्यन्त निवेदन करेन जे पे देशेर शाखा-

मुसारे, दलमर्दनशाहि ओ समशेरशाहि. दुइ सहोदर भ्राता, ओ पृथ्वीपतिशाहि सहोदर भ्रातुपुत्र, एहार मध्ये मृत राजा अरिमर्दनशाहिर उत्तराधिकारि कोन व्यक्ति बोध हय । ओ मुनसी महम्मद पनाह ओ लाला अबधलाल ये प्रकाशे ताहादिगेर नामिक ओकालतनामा ओइ दलमर्दनशाहिर तरफ हइते पहुँछियाछे ताहा कल्यकार मिशिले दाखिल करेन इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जबाब-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतकुटुनीइशमिटवाहेब-धर्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिपत्तपत्रमवलोक्य यादृशार्थबोधो जातस्तदनुसारं शोचरं लिख्यते ।

यज्ञानपत्यः पत्न्यादिपितृपुष्पन्तरहितो राजा अरिमर्दनशाहिसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो दलमर्दनशाहि-शमशेरशाहिसंज्ञकौ द्वौ सोदरभ्रातरौ पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकमेकं सोदरभ्रातृपुत्रं च सरस्व मृतः, तत्र तत्सोदर-भ्रातरौ दलमर्दनशाहिशमशेरशाहिसंज्ञकावेव तदुत्तराधिकारिणौ । सतोः सोदरभ्रात्रोः सोदरभ्रातृपुत्रस्य पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकस्य न तदुत्तराधिकारित्व-मिति । अत्र राज्ञोऽरिमर्दनशाहिसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारित्व-विषये विवदमानानां अंगरेजशब्दप्रतिपाद्यपञ्चविंशत्यधिकाष्टादश-शताब्दीय—शुनमासीयद्वाविंशतिदिवसीयगोरखपुरसंज्ञकप्रदेशाधिकरणकदे-मानी-आदालत-संज्ञकधर्माधिकरणलिखितविचारपत्रनिविधानां त्रयाणां मध्ये राज्ञी वेदनकुमारिनाम्नो काचित् स्त्री यद्यपि लिखिता, परन्तु तस्याः कश्चिद् वृत्तान्तस्तद्विचारपत्रे न लिखित इति सा राज्ञी राजा-अरिमर्दन-शाहिसंज्ञकस्य का भवतीति न ज्ञातः । अतएव सा राज्ञी राज्ञोऽरिमर्दन-शाहिसंज्ञकस्योत्तराधिकारिणी भवति न वेत्यापि न लिखितः । एवं तत्तत्र-निविधानां त्रयाणां मध्ये पृथ्वीपतिशाहिसंज्ञकस्य धनिनो राज्ञः सोदर-

आतृपुत्रश्चाहं राज्ञो दत्तकपुत्रः, एवं तमलिकनामाख्यं पत्रं राजा मद्यं दत्तमित्यादिवृत्तान्तो यद्यपि तत्पत्रे लिखितः, किन्तु यथाशास्त्रं दत्तकपुत्र-प्रदणं तेन राजा कृतं न वेत्यस्य, एवं तमलिकनामाख्यं पत्रं तस्मै राजा दत्तं न वेत्यस्य च सत्पत्र(१)लिखितत्वेन तस्य दत्तकपुत्रत्वादिसिद्धिर्भवति न वेत्यपि निश्चयः कर्तुं न शक्यत इति गोरखपुर-संस्कृत-प्रचलित-मिताक्षरा-वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा । तत्सुताः—

इत्यादि मिताक्षरा (पृ० २१६) वीरमित्रोदय (पृ० ६०२) प्रभृति-ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे आतृगामि तदभावे आतृपुत्रगामि—इत्यादि तदपुत्रवृद्धिप्लुवचनम् (मिता० पृ० २१७; वीर० पृ० ६०३) ॥२॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् । इत्यादि मनु(६।१८७)-वचनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमित्रेण

श्रीहरिः शरणां
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागी तेन

श्रीर्जयतितराम्

१६. प्रथम हाकिम मीयुत कुर्तनी इशमिट साहेबेर बैठके सञ्चोयाल एइ ये—

परिदहतदिगेर स्थाने सञ्चोयाल :—

ये हिन्दु ब्राह्मण हय, सोदरा दुइ भगिनीके विवाह करिया ओइ दुइ जनकेइ एकत्र आपन बाटीते राखिते पारे कि ना, वचन ओ कोन ग्रन्थेर लिखित ताहा सहित जबाव तलाव इति ।

परिडतदिगेर आरजि सन १८२५, १३ सेतम्बर दाखिल हइल ।

कल्य हुजुर हइते एइ मजमुने हुकुम हइयाछे ये हिन्दु ब्राह्मण जाति दुइ सहोदरा भगिनीके विवाह करिया एकत्र ऐ दुइ जनके आपन बाटीते राखिते पारे कि ना-वचन ओ ग्रन्थेर नाम सम्बलित आमरा जबाव दाखिल करि । सोदाबन्द सहोदरा दुइ भगिनीके विवाह-करण ओ ताहादिगेके एकत्र आपन बाटी-ते राखन बद्धदेशे सम्यक प्रकारे ओ पश्चिमदेशे कोनो स्थले चकित आछे । ये विषयेर दलिल धर्मशास्त्रेर ग्रन्थे एइ क्षण पर्यन्त पाइ नाइ । तलाप करितेछि, पाइले हुजुरे समर्पन करा ग्रन्थेर जबाव दाखिल करिव ।

श्रीज्जयतितराम

जबाव-व्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणप्रथमाधिपतिस्थानाभिपिक्तश्रीयुतकुटनीइरामिडसादेव-धर्माधिकरणलिखित(म)केनचिद् ब्राह्मणेनैकोदरप्रसूते द्वे कन्ये विवाह स्व-गृहे स्थापयितुं शक्यते न चेत्यर्थकप्रअपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

बद्धदेशे सर्वत्र, पश्चिमदेशेष्वपि क्वचिदेकेनैकोदरप्रसूते द्वे कन्ये ततोप्यधिकतरा विवाह स्वगृहे स्थाप्यन्ते इति व्यवहारः । अत्र विषये

यद्यपीदानीं प्रसिद्धधर्मशास्त्रे क्वापि विधिविधौ न लिखितौ,
तथापि पुराणादौ मुनीनां तादृशाचारदर्शनात्तदनुसारेणोदानीन्त-
नानामपि तादृशाचारः । अतएव तत्तद्देशाचारानुसारेणैव तत्तद्देशीयव्यव-
हारनिश्चयो भवितुमर्हतीति धर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

यावत् सूर्य उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति ।

सर्वं तद्यौवनाशस्य मान्यातुः क्षेत्रमुच्यते ॥ (६।६।१०)

शशबिन्दोर्दुहितरि बिन्दुमत्यामघान्मृपः ।

पुरुकुत्समम्बरीपं मुचुकुन्दश्च योगिनम् ॥ (६।६।३८)

तेषां स्वसारः पञ्चाशत् सीमरिं वमिरे पतिम् । (६।६।३९-१)

श्रुतः स राजकन्याभिरेकः पञ्चाशतावरः ॥ (६।६।४३-२)

एवं गृहे वसन् कलं विरक्तो न्यासमास्थितः ।

धनं जगामानुप्रयुस्तत्पत्न्यः पतिदेवताः ॥ (६।६।५३)

इति श्रीभारवतीयनवमस्कन्धे सोमयुग्पाख्यानम् ॥ १ ॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक् प्रयत्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुम्भतेऽन्यथा ॥

इतिबोरमित्रोदयग्रन्थ (धको०-पृ० १६४९, स्मृच०पृ० १०,
धर्मास्तत्त्र०-इति पाठान्तरम्, श्रुतबृहस्पतिवचनम् ॥ २ ॥

जातिजानपदानु धर्माञ्चैषीधर्माश्च धमेषित् ।

समीक्ष्य कुलधर्माश्च स्वधर्मं प्रतिपादयेत् ॥

इति मनुवचनञ्चेति (८।४१)॥३॥

श्रीर्ज्जपतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावांगीशेन

श्रीर्जयतितराम्

सञ्चोयाल—

२०. रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर इरेजि १८२५ साल तारिख ८ नवेम्बर मोतावक बाबला १२३२ साल तारिख २४ कार्तिक रोज मङ्गलवार आदालत मजकुरार कायेम मोकाम प्रथम हाकिम श्रीयुत कुर्तनी इशमिट साहेबेर बैठ—

कुन्दनगिर

आपिलाष्ट

दुर्गागिर ओ गायरह

रण्याडण्टान

एइ सनेर तारिख १३ सैतम्बर माहार जेला कानपुरेद यजसाहेबेर एक केता रोवकारिर सम्बलित रिटरन " लम्बरे प्राप्त हइया अर पडा गेल । हुकुम हइल ये ए अदालतेर पण्डितेरा एइ सनेर तारिख १० आगष्ट माहार गुजरान शिवराजपुरेद कायेम मोकाम थानादार सयिद कादेर आलिर आरजि दृष्टि करिया आरज करेन ये गङ्गा घाखन' यवन जातीया बेशयार गर्भे जन्मिया ओ आपनार ज्ञानावस्थावधि हिन्दुर धर्म आचरण स्वीकार करिया छे, ओ ताहार पिता हिन्दु छिल, एतल्लयुक्त शास्त्रानुसारे हिन्दुर गणनाय आसिवेक कि ना, एवम् ए आदालतेर आरवावशारा उपर उक्त कागज पडिया फतओया लेखेन ये ए व्यक्ति अपनार यवनि मातार त्यक्त धनेर उत्तराधिकारि (शरा) नुसारे हइते पारे कि ना । पण्डितदिगेर ओ आरवावशारा प्रभृतिर (व्यवस्था) अवलोकनानन्तर उचित हुकुम देओया याइवेक इति ।

श्रीज्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणप्रथमाधिपतिसयानामिषिक्तश्रीयुतकुटुम्बीदशमिटसाहेव-
धर्माधिकरणलिखितप्रथममेवं तत्समर्पितअंगरेजी-शब्दप्रतिपाद्य 'पञ्च-
विंशत्यधिकाष्टादशशताब्दोयागस्तिमासीयदशदिवसलिखितशिवराजपुरग्राम-
स्थस्थानपालप्रतिनिधि-सैयद-कादर-अली-संशक्तस्य विश्वसिपयमवलोक्य
यादृशार्थदोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

उपरिलिखितप्रथमपत्रसमर्पितपत्राभ्यां गङ्गायक्ससंशक्तस्य यवन-
जातीयवेद्यागर्भजातत्वेन लिखितस्य स्वज्ञानावधि हिन्दुजातीयधर्मा-
चरणेषुपि तत्पितृहिन्दुजातित्वेऽपि हिन्दुजातावन्तर्भावः शास्त्रानुसारेण
भविष्युं न शक्यते । प्रत्युत गङ्गायक्सपितृहिन्दुजातीयस्य उमरावगिर-
संशक्तस्य सन्यासिनो^१ ज्ञानकृतयवनीगमनेनाकृतप्रायश्चित्तस्य यवन-
जातितुल्यत्वेन तत्पुत्रस्य तच्चन्यत्वेन यवनीगर्भजातित्वेन च भुतरां यवन-
जातीयत्वमेवेति कान्धपुराख्यप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरानुसारिणी व्यवस्था-
इति ।

तत्र प्रमाणम्—

चण्डालान्त्यसियो गत्वा मुक्त्वा च प्रतिगृह्य च ।

पतत्यज्ञानतो विप्रो ज्ञानात्साम्यन्तु गच्छति ॥

१. पतिपाद्य—ध्या० ।

२. प्रत्युत—अथ० ।

३. सन्यासि—न्या० ।

इति मनुसंहिता (११।१०५) मिताक्षरादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशे

एह व्यवस्था दाखिल काबेम मोक़म प्रथम हाकिम श्रीयुत कुट्ट
इशमिट साहेबेर बैठके—

२१. सवर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुट्ट
इशमिट साहेबेर सओयाल—

यद्यपि दुह जन हिन्दु ब्राह्मण जाति सरिकिमते मदिरा
घोतल सकल क्रय विक्रयेर बाणिज्य करे । ए प्रकार बाणिज्य वङ्ग
देशे ओ पश्चिमदेशेर शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि असिद्ध; क
यद्यपि असिद्ध हय सरिकीर शेष^१ हइले पर एक अंशीके अन
अंशीर उपर ताहार लभ्येर अंश दाओया अशें कि ना । उचि
ये ए विषयेर जबाब अगौणे दाखिल करेन इति ।

जबाब-व्यवस्था

ब्राह्मणजातेर्मदिरापात्रव्यापारः शाल्लसिद्धो न भवति । यद्यपि निन्दितत्वेन
तेन कर्मणा द्वयोर्ब्राह्मणयोः संभूयकारिणोक्त्यन्तं धनम् तत्र द्वयोः समांश
इति शास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

तत्र प्रमाणम्—

याजनाध्यापनप्रतिग्रहेर्द्विजो धनमर्जयेत्^२—इति दायभाग^३मिताक्षरा
:(५० ३१.२) धृतमनुवचनम्^४ (१०।७६) ॥१॥

१. वचनमिदं मिताक्षरायामुपपातकमुद्दिष्टरणे (वास्तु० ३।२६५) नोपलभ्यते ।

२. शेष शेष—व्यप० ।

३. मत्र येत्—व्यप० ।

४. वरणां ॥ कर्मणामस्य ओषि कर्मणि जीवितम् ।

याजनाध्यापने चैव विमुक्त्यर्थं प्रतिग्रहः ॥

इति मनुस्मृतिवचनम् । तथा च मिताक्षरायाम् ॥

५. दायभागे वचनमिदं नोपलभ्यम् ।

यदा तु स्वत्वं लौकिकं तदा—

असत्प्रतिग्रहादिलब्धस्यापि स्वत्वात् इति मिताक्षरा (पृ० १६८-१६९)

लिखन्चेति ॥२॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम्

सओयाल

२२. नानाशाखाध्यापक श्रीयुत वैद्यनाथमिश्र तथा श्रीयुत रामतनुविद्यावागीशपण्डितान् सदर देओयानि आदालत सच्च-
रित्रेपु—

यदि स्यात् कोन व्यक्तिर दुइ पुत्र थाके, सेइ व्यक्ति आपन जीवतमाने आपनार जमीदारी सेइ हुइ पुत्रके समर्पण करे, आर ताहार कतक दिवस परे ओइ कर्त्ता व्यक्तिर वर्त्तमाने ताहार ज्येष्ठ पुत्र एक स्त्री राखिया ताहाके पोष्यपुत्र राखिवार निमित्तक अनुमति पत्र लिखिया दिया भूत्यु हय । ताहार कतक दिवस परे ओइ कर्त्ता व्यक्ति, अर्थात् पुत्रदिगेर पितार, परलोक हय । तवे शाखानुजाय ओइ कर्त्ता व्यक्तिर ज्येष्ठ पुत्रे स्त्री जमीदारीर हिस्सा पाइते पारे कि, केवल खोरपोप पाय । यदि स्यात् खोर-
पोप पाय, तवे कर्त्ता व्यक्तिर कनिष्ठ पुत्रे नाम संवलित ओइ स्त्रीलोकेर नाम सेरस्ताते दाखिल करा आवश्यक कि, कि प्रकार, शाखानुजाय जाहा यथार्थ हय इहार विवेचना करिया अतित्य-
राय प्रत्युत्तर लिखिवेन इति । २२ फिबरवरि—

श्रीर्जयतितराम्

जवाव-व्यवस्था-पत्र ।

रोषडाख्यस्थानाधिपतिप्रेषितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशशोभो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि पित्रा द्वयोः पुत्रयोः स्वस्वामिकसमस्तस्यावरास्थावरचनं समपितम्, ततः किञ्चित्कालानन्तरं जीवत्येव पितरि तयोर्मध्ये ज्येष्ठः पुत्रः स्वजायां प्रति दत्तकपुत्रकरणार्थमनुमतिपत्रं लिखित्वा दत्त्वा मृतः, तदनन्तरं कनिष्ठपुत्रं संरक्ष्य तयोः पिता मृतः स्यात्, अत्र प्रमांः पत्रलिखितसमर्पणशब्दस्यार्थद्वयं भवति । स्वस्वत्वत्यागपूर्वकपरस्वत्वापादनरूपं दानम्, सत्यपि स्वस्वत्वे घनसंरक्षणार्थमाहाकरणं च । तत्र यदि पित्रा स्वस्वत्वत्यागपूर्वकपरस्वत्वापादनरूपं दानं कृतं स्यात्तदा तदनेन पितुः स्वत्वापगमात् पुत्रयोरेव तदनं जातम् । अतो जीवत्यपि पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्यानुमत्या भविष्यत्तत्पत्नीकृतदत्तकः पुत्रस्तदने स्वपितृयोग्यांशं लब्धुमर्हति । यदि वदनुमत्या तत्पत्नीकृतो दत्तकः पुत्रो नैव भविष्यति तथापि दानपक्षे स्त्रीत्वेन तत्पत्न्यपि स्वमर्त्ययोग्यांशभागिनी भवति । यदि च पित्रा सत्यपि स्वस्वत्वे घनसंरक्षणार्थमाहा कृता स्यात्तदा तदाहया पितुः स्वत्वाविनाशेन पुत्रयोस्तदनं न जातम् । अतो जीवति पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्य तदनांशयोग्यताविरहेण तदने स्त्रीत्वेन तत्पत्न्या नाधिकारः । किन्तु पत्न्यनुमत्या भविष्यद्दत्तकस्य पितामहधने यादृशोऽशो भविष्यति तादृशांशसंरक्षणकर्तृत्वेन भविष्यद्दत्तकस्याप्राप्तव्यहरकालपर्यन्तं राजा सा नियोज्यया । ततः सर्वथैव कर्तुः कनिष्ठपुत्रनामसहितं तस्या(पि)नाम राजस्थानेऽवश्यं लेख्यम्—इति बङ्गदेशचलितमनुदायमागव्यवहारतत्प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

१ ० परस्वत्वादानं—अथ० ।

२ ० परस्वत्वादानं—अथ० ।

३. भविष्यत्—अथ० ।

तत्र प्रमाणम्—

स्वस्वत्वनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वापादनं दानम्—इति (याज्ञवल्क्यस्मृति-टीकामुचोधिनी पृ० ७४१) कुल्लूकमटलिखनम् ॥ १ ॥

न आतरो न पितरः पुत्रा रिष्यहराः पितुः—इति मनुवचनम् ॥ २ ॥ (६।१८५) ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादि(दाय० ११।१।४)ग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ ३ ॥ (२।१३५)

अस्याम्यं हि भवेदेपां निर्दोषे पितरि स्थिते—इति दायभागादिग्रन्थभूत-देवलवचनम् (दाय ६।१।१८) ॥ ४ ॥

पुत्रान् द्वादश यानाह नृणां स्वायम्भुवो मनुः ।
तेषां षड्वन्धुदायादाः षडदायादवन्धवाः ॥
औरसः क्षेत्रजश्चैव दत्तः कृत्रिम एव च ।
गुढोत्पन्नोऽपि विद्वद् दायदा दान्धवाश्च पद ॥
—इति मनुवचनद्वयम् ॥ ५ ॥ (६।१५८-१५९)

ये ज ता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
वृत्ति च येऽभिराक्षन्ति वृत्तिलोभो विगर्हितः ॥
—इति दायभागादि(ग्रन्थः, दाय-१।४५)भूतमनुवचनम् ॥ ६ ॥

अभावे धीजिनो माता तदभावे तु पूर्ववः ।

—इति व्यवहारतत्त्व(पृ० ६४६५)भूतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ३० २।१३) ॥ ७ ॥

१. पादान्—व्या० ।

२. पुत्रान्—व्या० ।

३. व्यासवचनमिदमिति धर्मकोशाकारणे, मिताक्षरायाम् (२।१११) १८८ इत्युक्तम् ।
भनुस्मृतौ तु एतत् इत्युक्तम् । भर्तृवचनमिदमिति दायभागादिग्रन्थलिखितम् ।

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यसेयुर्धुमित्रेषु श्रोपितानां तथैव च ॥

—इति दायभागः पृ० ६२ ३।१६) वृत्तकृत्यापनवचनञ्चेति ॥२॥

(८५५) ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथनिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यानागोशेन

एष व्यवस्था दाखिल थोरडरमनु

श्रीर्जयतितराम्

२३—सदर नेनामत आदालतेर पण्डितदिगेर नामे सओयाल ।

श्रीहृदनिवाशि एक व्यक्ति आसन दाशी, ताहार चारि पुत्र ओ एक कन्या सहित मूल्य निर्वाच्य करिया अन्य कोनो व्यक्तिर निकट विक्रय करिते चाहे । ताहारा अर्थात् ऐ दाशी-प्रभृतिरा आदालते एइ रूप दरखास्त गुजराइलेक ये आमरा आपन मनिवेर सेवा करिते सन्मत आछि, तथापि आमारदिगेर मनिब शत्रुता करिया जाहार निकट आमारदिगेके विक्रय करिते उद्यत हइयाछे ताहार सहित एइ प्रकार याग करियाछे ये आमादिगेके भिन्न देशे निया पृथक् २ भिन्न २ स्थाने विक्रय करे । अतएव जिज्ञासा जाय—श्राहृददेशेर चलित शास्त्रमते एइरूप विक्रयेर स्थाने दास-दिगेर ए प्रकार ओजर सिद्ध हय कि ना; यदि सिद्ध हय तबे ऐ दास-व्यक्तिरा आपनादिगेर स्वीकारमत अन्यत्रक जन क्रय-कर्ता निर्दिष्ट करिते पारे कि ना; किम्वा ताहार निद्वार्य हओया मूल्य यद्यपि कोन प्रकारे मजुब करिते पारे, मूल्येर टाका आदाय करिया खालाश पाइते पारे कि ना इति ।

श्रीर्जयंतितराम

जवाब-व्यवस्था

प्रभुवृत्तप्रशानुसारेणोत्तरलिख्यते—उपरिलिखितप्रभार्थावगमेन शास्त्रोक्तान्वदशदासानां मध्ये प्रत्यक्षलिखितदासप्रभृतयो गृहजाता अश्वगम्यन्ते । तत्र च गृहजात-क्रीत-सन्ध-दायप्राप्तात्मविक्रेतृणां पञ्चानां दासानां स्वामिप्रसादं विना न दास्यमोक्षः । तथा च यदि दासविक्रये प्रसन्नः स्वामी गृहजातादीनां पञ्चानां दासानां स्वकल्पितमूल्यद्वारा विक्रयेण दास्यमोक्षमिच्छति तदा प्रभुत्वात् स्वातन्त्र्याच्च^१ स्वामिसेवां कर्तुमिच्छतामपि दासानां विक्रयं कर्तुमर्हति । तत्र यदि स्वामिनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशात् स्वकल्पितदासमूल्यग्रहणे दासानामात्यन्तिकं दुःखं स्वाच्छदा दासनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशादन्यस्मात् क्रेतुः सकाशाद्वा तदेव स्वकल्पितदासमूल्यं गृहीत्वा स्वामिनो गृहजातादिदासमोक्षार्थं शास्त्रीयवृत्तिसिद्धं भवितुमर्हति, दासनिर्दिष्टक्रेतुः सकाशादन्यस्मात् क्रेतुः सकाशाद्वा स्वकल्पितदासमूल्यग्रहणेऽपि स्वामिनः क्षतिविरहात्^२ । परन्तु गृहजातादयो दासाः स्वधनात् स्वामिकल्पितमूल्यं दत्त्वा कदाचिदपि दास्यान्न मुच्यन्ते दासधनेऽपि स्वामिनः प्रभुत्वात्—इति बङ्गदेशान्तर्गतब्रीहृप्रदेशप्रचलितविवादभङ्गार्थं वदायकमसंग्रहदायभागप्रभृतिग्रन्थ(१)नुसारिणो व्यवस्येति ।

तत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो सन्धो दायादुपागतः ।

अत्रा^३कालभृतस्तद्दाहितः स्वामिना च यः ॥

१. शान्त्युक्तं च—अर्थः ।

२. विहात—अर्थः ।

३. अत्रा^३कालभृतस्तद्दाहितः स्वामिना च यः ॥ अत्रानादिभूतस्तद्दाहितः स्वा^३कालभृतः । अत्राकालभृतः—अर्थः ।

मोक्षितो^१ महतश्चर्णाद् युद्धे प्राप्तः पणो जितः ।

तवाहमित्युपगतः प्रज्यावसितः^२ कृतः ॥

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवामृतः^३ ।

विक्नेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥

—इति विवादभङ्गार्णवः (१ विवाम० ५१६ क) दायक्रमसंग्रह
(पृ० ५२) भूतनारदवचनम् (नामसं०—पृ० ६६), गृहजातो दास्यामुत्पन्नः^४

—इति दायक्रमसंग्रहव्याख्यानम् (पृ० ५२) ॥ २ ॥

एतेषां गृहजातादिचतुर्णामात्मविक्नेतुश्च स्वामिप्रसादं विना न दास्य-
मोक्षः—इति दायक्रमसंग्रहलिखनम् (पृ० ५४) ॥ ३ ॥

कैवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनियर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥

—इति व्यवहारतत्त्वादिसंस्मृत० २।पृ० १६६) ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम्
(बृहस्प०—१।१११) ॥ ४ ॥

गार्ह्या पुत्रश्च दासश्च त्रय एवाधनाः^५ स्मृताः ।

यच्चे समधिगच्छन्ति यस्येते^६ तस्य तद्धनम् ॥

१. अथात्र मोक्षितोऽनत्याद् युद्धप्राप्तः—नामसं० ।

२. प्रज्यावसितः—नामसं० ।

३. ० वृत्तः—यमो० ।

४. ० मुत्तपन्नः—न्यप० ।

५. एव धनाः—न्यप० ।

६. यस्येते तस्येते—इति विमल० पाठः ।

इति विवादमज्ञार्थवत् (१ विवाम० ५३३क) दायभाग'दायतत्त्वादिग्रन्थ-
भृतमनुवचनम् (८५१६) चेति ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल अंगरेजी भिखिलवे दासेर बिषय ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

२४—प्रश्न—यत्र कश्चिद् एतावत् कालपर्यन्तमर्थादृशवर्षपर्यन्तं
विंशतिवर्षपर्यन्तं वा तत्र दास्यमहं करिष्यामीति परिभाष्य स्थितः, तत्र
दास्यावस्थायामुत्पन्नान्यपत्यानि स्वामिनो दास्यं कर्तुमर्हन्ति न वेति ।
यद्यर्हन्ति तदा पितुर्दास्यकालपर्यन्तमधिकं न्यूनं वेति च ।

एतस्योत्तरम्—

प्रमुकृतप्रभानुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रभलिखितदासः शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानां मध्ये क्रीतदासः । क्रीत-
दासस्य'मोक्षः क्रीतकाल'व्यपगमेनैव । दास्यावस्थायां क्रीत'क्रीतकाल-
दासेनोत्पन्नानामपि दास्यमोक्षः पित्रा सदैव-इतिशास्त्रीययुक्तिरिष्टा
व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल आशिषट्पट्ट सादेवेर निकटे ।

१. न च भार्या पुत्रत्वेत्यादिकद् अस्वातन्त्र्याभियासमिति वाच्यम्, तदानीं स्वत्वे
प्रमाणभावात् । भार्यादिषु तु यत्ते समधिगच्छन्ति अर्जयन्तीति स्वत्वे सिद्धे
पुत्रमस्वातन्त्र्यवर्षनम्—इति दास्यभागे (५० १२) मनुवचनसंकेतः । वचनमिदं
दास्यत्वे न दृश्यम् ।

२. एतावता—व्यप० ।

३. उपपन्ना—व्यप० ।

४. क्रीत—व्यप० ।

श्रीर्जयतितराम्

ल० २३००

२५—सदर देओयानी आदालतेर पण्डितदिगेके सओयाल करा याइतेछे ।—ई० १८२६ सालेर मार्चमासेर १३ तारिखे ऐ सदर देओयानी आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत ओलीयम नसेष्टर साहेब ओ चतुर्थ हाकिम श्रीयुत ओलीयम डोबिन साहेबेर बैठके—

मृत भवानीचरणचन्द्रेर उत्तराधिकारी राधाबन्धवचन्द्र ओ गयरह— आपीलाएटान—

मृत गोविन्दचन्द्रचौधुरिर उत्तराधिकारी जगतचन्द्र चौधरी ओ गयरह— रेष्पाडएटान—

हुकुम हइल ये मृत राजा चित्रसेनेर प्रधाना रानी आपीलाएट ओ कनिछा रानी रेष्पाडएडेर ५३२ लम्बरेर मोकदमार ओ जगतचन्द्रसेन आपीलाएट ओ केशवानन्दगोस्वामी ओ गयरह रेष्पाडएडेर ८३२ लम्बरेर मोकदमार दाखिल हओया हुइ केता व्यवस्था एख १६ लम्बरेर भवानीचरणेर नामिक मकररी पाट्टा ओ ११ लम्बरेर गोविन्दचन्द्रेर नामिक मकररी पाट्टा ओ ऐ पाट्टाजातेर सम्पर्कीय हुइ केता रसीद ल० १७२२ तोमारदिगके अर्पण करा जाय । उचित' ये नीचेर लिखित सओयालेर जओयाथ ३ तिन दिवसेर मध्ये दाखिल करेन ।

उपरेर लिखित मोकदमार दाखिल हओया व्यवस्थाते जाना याइतेछे ये देवशेवार भूमि हइते जाहा उत्पन्न हय ताहा देवतार वस्तु चटे, ओ शास्त्रानुसारे देवतार भूमि विक्रय कि दान कि चन्धककरण सिद्ध नहे, आर केवल देवतार सेवार निर्व्वाह ओ सरववाह हओनेर अथे देवत्र भूमिर रक्षणपेक्षणेर क्षमता देवत्र

करणीया व्यक्ति अर्थात् देवत्र भूमिर रक्षक ११ ओ १६ लम्बरेर पाट्टार न्याय अन्य कोनो व्यक्तिके पुत्रपौत्रादिक्रमे सेलामीर टाका (देओया पूर्व ह्य ना) । एतावता पनेर टाकार बदले मकररी जमाते मकररी पाडा देय । एमत् पाट्टा शास्त्रमते सिद्ध वटे, कि सेवाती व्यक्तिर ऐ पाट्टा देओनेर क्षमता नाहि; ओ पाट्टा देओ-यानीर व्यक्तिर मृत्यु परे ये व्यक्तिके ताहार रक्षणापेक्षणकरण उत्तराधिकारित्वे अशें से ऐ पाट्टा रहित करणेर ओ देवत्र भूमिर नूतन बन्दवस्त करणेर क्षमता राखे ना, ओ ए विषये बाह्यलादेशेर चलित शास्त्रालुसारे किछु हुकुम कि व्यवहार आछे कि ना ओ एमत् मोकदमार सिद्ध असिद्ध हओन एइ अर्थे ये ऐ मकईमार देवत्र वस्तुर लाभ ओ क्षति हओने सम्पर्क राखे (कि ना) इति—

एतदभाधिकरणप्रथमाधिपतिभूयुत - अलीयमनशहरसाहेबचतुर्पाधि-पतिभूयुत - अलीयमहोरणसाहेबतदुमयधर्माधिकरणलिलितप्रभप्रनिरूप-पत्रमेधं तत्समर्पितव्यवस्थापत्रद्वयं योइशाङ्काङ्कितैकादशाङ्काङ्कितमकररीपाटा-संशकपत्रद्वयं त(त्)सम्बन्धिसप्तदशाङ्काङ्कितद्वादशाङ्काङ्कितरसीदसंशकपत्र-द्वयञ्चायलोक्य विविच्यच्च याहशबोधो जातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते—

देवसेवायौत्सृष्टभूम्यादिस्तदुत्पन्नं द्रव्यं देवस्वम् । देवस्वभूम्यादि-विक्रय-दान-बन्धक-करण क्षमता देवार्थभूम्युत्पन्नं कस्य सत्तुत्तराधिकारिणां वा नास्ति । केवलं देवसेवानिष्ठां हार्थं देवस्वभूम्यादे रक्षणा-वेक्षणादि-कर्तृत्वं यो देवमेवां कारयति स एव बद्धदेशे सेवाहतरान्देनप्रसिद्धो यद्यन्यस्मै कस्मैचिद् देवार्थं दर्शनीयमुद्रा गृहीत्वा प्रभुसमर्पितोपरिलिखित-मकररीपाट्टासंशकपत्रद्वयलिलितरीत्या . मकररीपाट्टासंशकं नियमपत्रं

१. सम्पर्क—म्य० ।

२. भूम्युत्पन्नं—म्य० ।

३. बद्धदेश—म्य० ।

ददाति तदा तन्नियमपत्रं बद्धदेशचलितव्यवहारानुमारेण च सिद्धं भवति,
नहि देवस्वभूमेर्माकररीपाट्टासंज्ञकनियमपत्रदानं विक्रयो न च दानं न वा
बन्धको भवति । मूल्यग्रहणप्रयुक्तस्वस्वत्वनाशकव्यापारस्यैव विक्रयदार्थ-
त्वेन स्वस्थत्यनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वोत्पत्त्यनुकूलव्यापारस्य दानपदार्थत्वेन
चाधमर्णोत्तमर्णसमीपे ऋणपरिशोधनकालपर्यन्तं विश्वासार्थं स्थापितस्य
स्वकीयद्रव्यस्य बन्धत्वेन च देवस्वभूमौ माकररीपाट्टासंज्ञकपत्रदातुः स्वत्वा-
भावेन मूल्यग्रहणपूर्वकतन्निवृत्तेर्वा दानप्रकारेण वा तन्निवृत्तेरसम्भवात्,
बन्धनेन स्थापनाभावाच्च । यथा राजा ग्रामाधिपतिना वा स्वकीयग्राम-
क्षेत्रादिः प्रत्यान्दिक्करग्रहणार्थमन्यस्यै प्रणयै वा कालनियमं कृत्वा धकृत्वा
वा पुत्रपौत्रादिकमेण प्रत्यब्दमेता मुद्रा दत्त्वा त्वयैतद्ग्रामः क्षेत्रादिर्वा
भुज्यतामिति नियमपत्र पाट्टासंज्ञकपत्र माकररीपाट्टासंज्ञकं वा दत्त्वा सम-
र्प्यते^१, तथा देवसेवायौत्सृष्टभूमिरपि बद्धदेशसेवाइतपदवाच्ये^२ नोपरिलिखित-
रीत्या समर्प्यते^३ इति बद्धदेशव्यवहारः । देवस्वभूमावेतादृशव्यवहारसिद्धौ
तद्भूमाय^४ तिष्ठद्यानावृष्ट्या वा शस्यानुत्पादेऽपि नियमितद्रव्यसाध्यदेवसे-
वाया श्रवाधः, इत्येव लाभः । तदसिद्धौ अतिवृष्ट्यादिदोषेण शस्यानुत्पा-
दाद्देवसेवाश्रयोऽपि भवितुं शक्नोति, इत्येव क्षतिः । एवञ्चैतद्देवसेवादे-
यमुपरिलिखितमाकररीपाट्टासंज्ञकपत्रद्वयान्तर्गतपोडशाङ्काङ्कितश्री देवमुद्रा-
ङ्कित नियमपत्रं तत्सम्बन्धिरसीदसंज्ञकपत्रञ्च बद्धदेशे सेवाइतशब्दवाच्या या
राज्ञा देवसेवार्थं दर्शनीयमुद्रा देवकोपे निवेश्य पुत्रपौत्रादिकमेण प्रत्यब्द-
मेता मुद्रा दत्त्वा भुज्यतामित्युपरिलिखितनियमपत्रमन्यस्मै^५ करमैचित् पोड-

१. सत्त्वाभावेन—व्यप० ।

२. त्वयैतद्—व्यप० ।

३. समर्प्यते—व्यप० ।

४. पदवाच्येन—व्यप० ।

५. समर्प्यते—व्यप० ।

६. तद्भूमा—व्यप० ।

७. चैतद्—व्यप० ।

८. मन्यस्मै करयै—व्यप० ।

शाधिकद्वादशशताब्दे दत्तं तन्नियमपत्रेऽन्यस्याधिककरदातुरुपस्थितिं यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामिति लिखनाभावात् तन्नियमपत्रदात्र्याः सेवाइतशब्द-
वाच्याया मरयोत्तरं तदुत्तराधिकारित्वेन तस्या एव । देवसेवार्थोत्पृष्टभूमे
रक्षणावेक्षणदिकर्तृत्वं यस्य भवति स तु तत्पत्रमवर्णयन् कृत्वा नियम-
पत्रान्तरं दातुं न शक्नोति-इति बङ्गदेशप्रचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थ-
मुक्तावलीविवादभङ्गाण्यवप्रमृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

तत्र प्रमाणम्—

देवस्थं ब्राह्मणस्थं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।

स पापात्मापरे लोके गृध्रोऽन्विष्टेन जीवति ॥

—इति मनुवचनम् ॥१॥ (१११२६)

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्पृष्टं धनं देवस्त्वम् ।

—इति कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥ २ ॥ (मनु० १११२६)

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक् प्रवर्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रजुम्यतेऽन्यथा ॥

—इति बृहस्पतिवचनम् ॥ ३ ॥ (१११२६)

एकत्र बन्धस्यान्यत्रबन्धदानवद् एकत्र वशीभूताया भूमेरन्यत्र वशी-
भवनमयोग्यमिति भूमिसमर्पणसमये अन्यस्याधिककरदातुरुपस्थितिं
यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्येव प्रतिज्ञा कर्तव्या-इति विवादभङ्गाण्य-
(१ विवाह० पृ० ३१० ख) लिखनम् ॥ ४ ॥

एकत्र बन्धीभूतद्रव्यस्यान्यत्रबन्धकरणे परबन्धस्यैव एकत्र वशीकृत-

१. कुल्लूक—न्यप० ।

२. वा भेनो—न्यप० ।

३. पापी परे—न्यप० ।

४. गृध्रो—न्यप० ।

५. देशजातिकुलादीनां ये धर्मास्तत्रवर्तिता इति कुल्लूकवचनम् ।

द्रव्यस्यान्यत्र वशीकरणोऽपि असिद्धिरेव-इति विवादमद्वारांवल्लिखनञ्चेति
(१ विवाम० पृ० ३१६ क) ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशम्भेविधावागीशेन

एतद्वर्माधिकरणप्रथमाधिपति-श्रीयुतश्रीलियमलसेटरसाहेवैतद्वर्मा-
धिकरणचतुर्थाधिपति — श्रीयुतश्रीलियमडोरनराहेवैतदुभयधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितव्यवस्थापत्रद्वयं पोडशाङ्काङ्कितै-
कादशाङ्काङ्कितमकररीपाटासंज्ञकपत्रद्वयं, तत्सम्बन्धिसप्तदशाङ्काङ्कित-
द्वादशाङ्काङ्कितरसीदसंज्ञकपत्रद्वयमवलोक्य विविच्य च यादृशाधोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

देवसेवार्थो(त्पुष्ट)भूमिरक्षक सेवाइतराब्देन (उच्यते) । यद्यथावन्त्यस्यै
कस्मैचित् देवार्थदर्शनीयमुद्रा गृहीत्वा प्रभुसमर्पितोपरिनिश्चितमकररी-
पाटासंज्ञकपत्रद्वयम् लिखितरीत्या मकररीपाटासंज्ञकं पत्रं ददाति तदा तन्म-
कररीपाटासंज्ञकं पत्रं वङ्गदेशचलितव्यवहारानुसारेण शास्त्रानुसारेण च
सिद्धंभवति । एवञ्च तन्मकररीपाटासंज्ञकपत्रदानुसेवायितकतुर्भरणानन्तरं
तदुत्तराधिकारित्वेन तस्या एव । देवसेवार्थभूमे रक्षणावेक्षणैकतृत्वं
यस्य भवति स यदि तन्मकररीपाटासंज्ञकपत्रेभ्यस्तथाधिककरदातुंरुपस्थितिं
याधत्प्रतिवर्षं त्वया भुज्यताम्—इति लिखनं (करोति), न चेत्तदा तन्मकररी-
पाटासंज्ञकं पत्रमकर्मण्यं कृत्वा नूतनवन्देवस्तसंज्ञकमायामं कर्तुं न शक्नोति ।
एवञ्च देवसेवार्थभूमौ मकररीपाटासंज्ञकपत्रदानं व्यवहारानुसारेण शास्त्रानु-
सारेण च सिद्धं चेत्, अतिवृष्ट्याऽनावृष्ट्या वा तद्भूमौ शस्यानुत्पादेऽपि
नियमितद्रव्यसाध्यदेवसेवाया अनाधः—इत्येव लाभः । तदसिद्धायतिवृष्ट्यादि-

१ सप्तदशाङ्काङ्कितद्वादशा व्यप० ।

२ सेवाइत व्यक्तुर्भारण—व्यप० ।

३ ०परिचित वाक्य—व्यप० ।

४ तद्भूमौ—व्यप० ।

दोषेण शस्यानुत्पादाद् देवसेवात्राधोऽपि भवितुं शक्नोति इत्येव-क्षतिः-इति च द्वादशप्रचलितमनुविवादमद्वार्यवप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्माश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्माश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत्-इतिमनुवचनम् (८।४१) ॥१॥

एकत्र बन्धद्रव्यास्यान्यत्रबन्धदानवत् एकत्र वशीभूताया भूमेरन्यत्र वशीभवनमयोग्यम्-इति भूमिसमर्पणसमयेऽन्यस्याधिककरदातुरुपस्थिति-यावत् प्रतिवर्षं त्वया भुज्यतामित्वेव प्रतिज्ञा फलव्या-इति विवादमद्वार्यवलिखनम् (१ पृ० ३१० ख) ॥ २ ॥

एकत्र बन्धीभूतद्रव्यस्यान्यत्रबन्धकरणे परबन्धस्येव एकत्र वशी-कृतद्रव्यस्यान्यत्रवशीकरणेऽपि, असिद्धिरेव-इतिविवादमद्वार्यवलिख-नञ्चेति (१ विवाह० पृ० ३१६क) ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीनौघनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

समाल

२६ सत्र देमानी आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीयुत ओलियम लसेष्टर साहेब ओ चतुर्थ हाकिम श्रीयुत ओलियम डोरण साहेबेर हुजुर हइते ओइ आदालतेर पण्डितगणेर प्रति अंगरेजी १८२६ साल १० अपरेल तारिकेर रोवकारिह हुकुमानुसारे—

राधावल्लभचन्द्र ओ गयरह

आपोलारटान

जगच्चन्द्रचौधुरी ओ गयरह

रण्याडरटान

पूर्वे मोकदिमासकले लंबर १३२ ओ ८३२ चावत ये

व्यवस्थासकल दाखिल हइयाछे ताहार सत्वे देवोत्तर भूमिर

सेवाइतेर लिखित पुत्र-पौत्रादि क्रमे मोकररी पाटा सिद्ध हथोनेर विषये तोमरा आपनारदिगेर मत उत्तरे लिखिया छ । अतएव पुनर्वार जिज्ञासा करा जाइतेछे ये हिन्दुलोकेर कोनो शास्त्रे मोकररी पाटार प्रस्ताव आछे; प्रबल सन्देहेर द्वाराय यदि एमत कोनो प्रस्ताव शास्त्रे पावा जाइतेछे ना, तबे पश्चाद् ग्रन्थकार-गनेर ग्रन्थेर मध्ये कोनो ग्रन्थे वाहार प्रस्ताव आछे, ओ तोमार-दिगेर उत्तरेर लिखनानुसारे व्यवहार ओ ओइ व्यवहारेर सिद्ध-तार प्रस्ताव कोन ग्रन्थे पावा जाइतेछे । ये हेतुक एद्यणे एइ विषयेर सन्देह आछे, ये कोनो वचन ए विषयेर जन्मे नाइ, परं हिन्दुलोकेर ग्रन्थे ओ ए विषयेर प्रसङ्गमात्र नाइ ओ ए विषयेर विचार पूर्वक व्यवस्थासकल ओ चलित आइनसकलेर अनुसारे आदालतेर हाकिमानेर सहितइ सम्पर्क राखे इति ।

श्रीज्जयतितराम्

जवाय-व्यवस्था

एतद्दुर्म्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमलमेष्टरगाहेवैत'दुर्म्माधिकरणचतुर्थाधिपतिश्रीयुत— श्रीलियमलमेष्टरगाहेवैतदुभयधर्म्माधिकरण-लिखितप्रश्नप्रतिरूपप्रमवलोक्य यादृशशोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

हिन्दुजातेर्धर्म्मशास्त्रीयस्मृतिचन्द्रिकावीरमिश्रोदय-व्यवहारमातृकाव्य-व्याहारचिन्तामणि-विवादभङ्गार्थग्रन्थेषु लोके भाषायां मकररीपाटा-शब्देन प्रसिद्धस्य शास्त्रोक्तशासनपत्रस्यास्ति प्रस्तावः । एयमस्मदुत्तर-लिखितव्यवहारस्य तादृशव्यवहारसिद्धतायाश्चोपरिलिखितग्रन्थेभ्यः प्राप्तत्वात्-इत्युपरिलिखितग्रन्थानुसारेणोत्तरम् ।

१. पश्चात् व्यप० ।

२ थीज्जयति०—२५० ?

३ वैतदुर्म्मा०—२५१० ।

अत्र प्रमाणम्—

राजलेख्यं स्थानकृतं स्वहस्तलिखितं तथा ।

लेख्यं तु त्रिविधं प्रोक्तं भिन्नं तद् बहुधा पुनः ॥

—इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् (वृस्पृ० ६।१) ॥१॥

तत्रशासनं निरूपयितुमाह याज्ञवल्क्यः

शासनं कारयेद्धर्म्यं^१ स्थानवंशामिसंयुतम् ॥ (वृस्पृ० ६।१६)

दत्त्वा भूमिं निबन्धं वा कृत्वा लेख्यं तु कारयेत् ।

आगामिभद्रनृपतिपरिज्ञानाय पार्थिवः ॥ (वास्पृ० १।३१८)

निबन्धो वागिज्यादिकरादिभिः प्रतिवर्षं प्रतिमासं वा किञ्चिद्धनमस्मै
ब्राह्मणायास्यै देवतायै देयमित्यादिप्रभुसमयलभ्यमित्यर्थः । भूमिमिति
ग्रामारामादीनामुपलक्षणा र्थम् । अतएव वृहस्पतिः—

दत्त्वा भूम्यादिकं राजा ताम्रपट्टे^२ ऽथवा पटे ।

शासनं कारयेद्धर्म्यं^३ स्थानवंशामिसंयुतम् ॥

—इतिस्मृतिचन्द्रिकालिखनम् । २ (स्मृचव्य० २।५५)

योगीश्वरः शासनमाह :—

भूमिं दत्त्वा निबन्धं वा कृत्वा लेख्यं तु कारयेत् ।

आगामिभद्रनृपतिपरिज्ञानाय पार्थिवः ॥ (वास्पृ० १।३१८)

पटे वा ताम्रपट्टे वा स्वमुद्रापरिचिह्नितम्—इत्यादिवीरमित्रोदय (पृ०

३५६) व्यवहारचिन्तामण्यादिग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तामिष्य वर्षोपयुक्तचरदानेन वर्षोपयुक्तस्वत्वमज्ज्यते । तद्वर्षे च
राज्ञा तद्भूमेरन्यत्र दानविक्रयणादिकरणं न सिद्ध्यति । यदि तु प्रतिवर्षं
स्वया मुष्यतामित्यादि प्रतिज्ञाभवत् तदा तु यावद्वर्षेष्वेव स्वत्वानुमतेः
कदापि दानविक्रयादिकं न कर्तव्यमिति विवादभङ्गार्थलिखनम् ॥४॥

(१ विवाम० पृ० ३०८ कख)

१. लिखितं सावद् द्विविधं स्वहस्तलिखनमन्वत्कृत्वा—नी० मि० पृ० ५२०, यार०

२. ताम्रपट्टमात्र—अप० ।

३. ५५५ ५५५० ३३६ तमे पृष्ठे वचनमिदमुद्धृतमिति धर्त० ।

३. ताम्रपट्टेऽथवा पटे इति वृस्पृ० पाठान्तरम्, ताम्रपट्टे तथा पटे स्पृष्टव्यं ५५

४. ०२०३—वृस्पृ० ।

देशाचाराविरुद्धं यद्व्यक्ताधिविधि^१लक्षणम् ।

तत्प्रमाणं स्मृतं खेत्त्यमविलुप्तक्रमाक्षरम् ॥

—इति वीरमित्रोदयग्रन्थधृतनारदवचनम् । (नामसं० २।११३) ॥५॥

पृ० ५२) ।

व्यवहारो हि चलवान् धर्मस्तेनावहीयते ।

—इति व्यवहारस्तत्त्व(पृ० १६६)व्यवहारमातृका(पृ० २८४)धृतनारद-
वचनम् । (नामसं—१।३४) ॥६॥

केवलं शास्त्रगाभित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥ —इति तत्तद्ग्रन्थधृत
(व्यमा० २८२ : २६४)वृहस्पतिवचनम्, युक्तिक्लृप्तव्यवहारः^२—इति
तत्तद्ग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

२७ सदर देमानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्दनी
शरामिट साहेबेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर परिडतदिगेर नामे
मित्रजितसिंहेर ओ श्रीमति मनुबिबी सायलार मकहमाते तिन
रोजेर मध्ये पश्चिमदेशेर एव बङ्गदेशेर शास्त्रमते यचाय दाखिल
करखेर हुकुमे इंगरेजी १८२६ शालेर ३० मे भासेर रोबकारिर
लिखित सवाल गइ—एक व्यक्ति चित्रि रूी, ये ताहार आपन
स्वामीर त्यक्त धने दाखिलकार छिल, ताहार आपन स्वामीर

१. ०धितल०—नामसं० ।

२. मिताक्षरा इति पठनीय २।८६ ॥

३. युक्तिर्नामः स च लोक्तव्यवहारः इति व्यवहारगात्रिका—व्यत० पृ० १६६ ।

मानुल पुत्र राखिया भरियाछे । अन्य उत्तराधिकारी ना थाकन
एवं ऐ मृत स्त्री-व्यक्तीर दत्तक पुत्र ना थाकन कालीन ऐ स्त्रीर
त्यक्त धन ऐ पुत्र पाइते पारे कि ना इति ।

ववावव्यवस्था(१)

एतद्ग्रन्थाधिकरणद्वितीयाधिपतिभूयुतकुटुम्बीइशमितसाहेबधर्माधि-
करणलिखितप्रभप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेखोतरं
लिख्यते :—

यत्र कस्यचिद् अनपत्यस्य जत्रियस्य स्त्री स्वस्वामित्यक्तधने भोग-
यती आसीत्, स्वस्वामिमानुलपुत्रं संरक्ष्य मृता^१ स्यात्, तत्र यदि तस्याः
स्वामिनः पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थलिखितकमेश पत्न्यादि—
मातृ^२ पक्षीयपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिणो न स्युः, तदापश्चिमदेशचलित-
मिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण एव वङ्गदेशचलितभूकृष्णतर्कालङ्कारकृत-
दायकमसंग्रह-विवादार्णवसेतु-विवादभङ्गार्णव ग्रन्थलिखितकमेश पत्न्यादि-
मानुलपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिणो यदि न स्युः तदा वङ्गदेशीयतत्तद्ग्रन्थानु-
सारेण अथ च वङ्गदेशीयभूकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकारूपग्रन्थ-
लिखितकमेश पत्न्यादिमातृपक्षीयपर्यन्ता धनाधिकारिणो यदि
स्युः, तदा वङ्गदेशीयतद्ग्रन्थानुसारेण एवचैतन्मतत्रय एव मृतायास्तस्याः
स्त्रिया यदा दत्तक पुत्रो नास्ति तदा च तस्याः स्त्रियास्त्यक्तधनं तत्स्वामि-
मानुल पुत्र आदावेव^३ बन्धुत्वेन प्राप्तुं शक्नोति-इति पश्चिमदेशचलित-
मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी वङ्गदेशचलितदायभागभूकृष्णतर्कालङ्कार-
कृतदायभागटीकाकमसंग्रह - विवादार्णवसेतु - विवादभङ्गार्णवादि-ग्रन्थानु-
सारिणी च व्यवस्था ।

१ मृता—मृत० ।

२ पक्षीय०—पक्ष० ।

३ आदावेव—आदा० ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थलिखितयाश्वत्थ-
वचनम् (मास्मृ० २।१३५) । १

गोत्रजाभावे बन्धवो धनमाजः । बन्धवश्च त्रिविधाः ।

आत्मबन्धवः पितृबन्धवो मातृबन्धवश्चेति ॥

यथोक्तम्—

आत्मपितृष्वसुः पुत्रा आत्ममातृष्वसुः सुताः ।

आत्ममातुलपुत्राश्च विज्ञेया आत्मबान्धवाः ॥

पितुः पितृष्वसुः पुत्राः पितुर्मातृष्वसुः सुताः ।

पितु(१)मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः पितृबान्धवाः ॥

मातुः पितृष्वसुः पुत्रा मातुर्मातृष्वसुः सुताः ।

मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबान्धवाः ॥

इति । तत्र चान्तरङ्गत्वात् प्रथममात्मबन्धवो धनमाजस्तदभावे पितृ-
बन्धवस्तदभावे मातृबन्धवः—इति क्रमो वेदितव्यः—इति मिताक्षरादि-
(मिता० २।१३, पृ० २१३) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तदभावे मातुलस्तदभावे मातुलपुत्रस्तदभावे मातुलपौत्रस्तदभावे
मातामहदौहित्रोऽधिकारी—इत्यादिश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत(दाय)क्रमसंग्रह
ग्रन्थलिखनम् । (१०।१५, पृ० ६) ॥ ३ ॥

१. आत्मपितृष्वसुः पुत्रा पितृमातृ०—व्य० ।

२. पितुर्मातुल०—व्य० ।

तत्र प्रथमं मातुलस्तदभावे मातृपत्नीयस्याधिकारस्तदभावे मातुल-
पुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका
रूपग्रन्थलिखनम् । ॥ ४ ॥

श्रीजर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्य तथमिश्रेण श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

२८ लंबर—

रोवकारी मिसिल आदालत देमाना सदर अंगरेजी १८२६
साल तारीख ७ माहे दिशम्वर मतावक याज्ञज्ञा १२३३ साल
२३ माहे अमहायण रोज वृहस्पतिवार आदालत मजकुरार
द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके ।

श्रीमति मुलतणा—

श्यामाप्रसादनन्दी ओ गयरह

आपीलाष्ट

रप्पाइष्टान

सन हालेर २० लंबर (नवम्बर) मासेर लिखित जिला
मैदनीपुरेर जजसाहेबेर एक किता रिटरन, ताहार सामिलेर
रोवकारी ओ गयरह संवलित पडुचिया अश श्यामाप्रसादनन्दी
ओ लक्ष्मीनारायणचौधुरीर उकिल मुनशी गोलाम घतुल ओ
ग्रजलालचौधुरीर उकिल मुनसी दादारवकरा ओ सदासुख
पण्डित ओ आनन्दलालचौधुरी ओ नन्दलालचौधुरि ओ
मसम्मात हरिप्रियामणी राणीर उकिल सदासुख

१. तत्र प्रथमं मातुलस्तदभावे मातृपत्नीयस्याधिकारस्तदभावे मातुल-
पुत्रपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति दाय-
भागटीका कृष्णतर्कालङ्कारकृतम् (५० २१८, २११६ पृ०)

२. हरिप्रियामणी स्त्री—पृ० १

परिडतेर होंजीरीते तोनि आंदांलतेर कागजांत संहित दरपेस हइयां पंडा गेलों। तत्परे ब्रंजलालचौधुरीर वकीलेरां अयोध्याप्रसाददांस मुद्दई श्यामाप्रसादंनन्दी ओ गैरह मुद्दांआं-लेहेर मोकहिमांते अंगरेजी १८२२ सालेर मार्च मांसेर हअंओयां एलाका कलिकातार कोर्ट आपीलेर एक किता रोवकारिर नकल ७ तंचरे दाखिल करिलेक, दृष्टि आइलो। जाना गेलो ये आंदांलतेर साबिक तृतीय हाकिम अंगरेजी १८२२ सालेर १४ शिंतम्बर मांसेर हआया हुकुमे एइ लिखियालेन ये विरोधी निष्पत्ति पर्यन्त मृत मधुसूदनेर हिस्सा सरवराहकारेर इलाफांते थाके, ओ ताहार हिस्सार मोनफा सरवराहकारेर निकट आमांनत थाके, ओ फि प्रकारे विरोधी निष्पत्ति हय, ओ कोन व्यक्तिरे स्वत्व—ए विषयेर किछु तजवीज करेन नाइ, अतएव ए विषयेर हुकुम सादर करण आवश्यक हइलो, ओ अंगरेजी १८११ सालेर माइ मांसेर लिखित ए आदांलतेर फयसलार दृष्टे दोष हय जे दौहिअदिगेर मध्ये अर्थात् डिगरीदारानेर मध्ये एक जन मरिले, ताहार हिस्सा कोन व्यक्तिके अर्शिबेक। ओइ फयस-नाते ए विषयेर किछु हुकुम नाइ। आर अंगरेजी १८२२ सालेर मार्च मांसेर ११ एगारह तारिकेर हआया कलिकाता(२) कोटेर रोवकारीते अन्य मोकहिमांते, अर्थात् अयोध्याराम मुद्दई यनाम श्यामाप्रसादनन्दी ओ गैरह मुद्दाआलेहेर मोकहिमांते सम्पर्क राखे, मद्र हुकुम आछे ये मधुसूदन मुद्दाआलेहेर पिता अन्य उत्तराधिकारीरां मोकहिमांर तद्विर करे, ओ ओइ रोवकारी अन्य मोकहिमांर सम्पर्कीय ए मोकहिमांर प्रवेश हइते पारे ना। वरं ओइ रोवकारीर गरज अयोध्याराम मुद्दईर मोकहिमांर..... छिलो। मृत मधुसूदनेर उत्तराधिकारीदिगेर विरोध निष्पत्तिर छिलो ना, ओ से मोकहिमांते ओइ मुद्दईर नातिस कलिकातार कोटे डिसमिस हइया मृत मधुसूदनेर उत्तराधिकारीदिगेर विरोधेर किछु निष्पत्ति कोटे हय नाइ।

आर जाना जाय ये छय ६ जन दौहित्र अर्थात् डिगरी(दारदिगे)-
मध्ये केवल ओइ मधुसूदन मरियाछे । बाकी पाच जन । ताहार
मध्ये मृत व्यक्ति सहोदर भ्राता तिनि एइ क्षण पर्यन्त वर्तमान
आछे, ओ ब्रजलालचौधुरीर श्री हरिप्रियामणीर गर्भे अन्य
दौहित्र जन्मे नाइ, आर मधुसूदनचौधुरीर पिता ब्रजलाल-
चौधुरी ओ माता हरिप्रिया ओ सहोदर तीन भ्राता, आनन्दलाल
ओ नन्दलाल ओ गङ्गानारायणचौधुरीके राखिया मरियाछे ।
अतएव हुकुम हइलो ये ए आदालतेर पण्डितान् स्थाने सयाल
करा जाय ये ओइ प्रकारे मृत मधुसूदनेर अंश कोन व्यक्तिके
अशे; ताहार पिता आदि उत्तराधिकारिदिगेके किंवा मृत राजा
जादबरायेर, ये ओइ छय जनेर मातामह छिलो, ताहार बाकी
पाच जन दौहित्रके अशे । उचित ये अंगरेजी १८११ सालेर २७
माइ मासेर हओया ए आदालतेर फयसलार मजमून हात हइया
दायभागशाख मते ये सेइ शाख मते ए मोकदिमा ए आदालते
निष्पत्ति हइयाछे; ओइ सवाल्लेर यथाय परसु दुइ प्रहर पर्यन्त
वचनप्रन्धेर बेओरा सम्मलित दाखिल करेन । पण्डितदिगेर
यथाय दाखिल हइले पर उचित हुकुम देया जाइवेक इति ।

श्रीर्जयतिराम

जगद्व्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुनकुर्तनीइशमितसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रथमप्रतिस्तामवलोक्यैवं तत्प्रमर्षितांगरेजीशब्द-
प्रतिपादकसदशाधि'काष्टादशशताब्दीयमाहमासीयसप्तविंशतिदिवसीयैतद्वर्मा-

१. श्रीर्जयति—व्य० ।

२. 'काष्टा'—व्य० ।

धिकरणीयजयपत्रार्थमवगत्य च यादृशोचो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते । यत्र मधुसूदनचौधुरीसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो ब्रजलालचौधुरीसंज्ञकं पितरं हरिप्रियामणोनाम्नी मातरमानन्दलाल-नन्दलालगङ्गानारायणचौधुरीसंज्ञकान् त्रीन् सोदरभ्रातृन् संख्य मृतः तत्रोपरिलिखितैव दम्माधिकरणीयजयपत्रानुसारेणोत्तराधिकारित्वेन मधुसूदनचौधुरीसंज्ञकस्यत्यास्पदीभूताशस्य तदीयधनत्वेन तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारो न तु पूर्वस्वाम्युत्तराधिकारिणाम् । तत्र च तत्पुत्र-पौत्र-पक्षी-दुहितृ-दौहित्र-पर्यन्ताभावे तत्पितुः (१) ब्रजलाल-चौधुरीसंज्ञकस्याधिकारः, (अ) एति पितरि मातु-सोदर-भ्रातादीनाम्, एवं मृतस्य राशो यादयरामरायस्य पूर्वधनस्वामिनोऽवशिष्टा(नां) पञ्चदौहित्राणां नाधिकारः—इति दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्

अपुत्रधनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे मातृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—इत्यादि दायभागादि(दामा० पृ० १५१, १११, ११४)ग्रन्थभूतविष्णुवचनम् (विष्णु० १७४) । १

दौहित्रस्याभावे पितुर्न मातुः—इत्यादि दायभागग्रन्थ (दामा० पृ० १८५,

१११, १११)लिलनम् । २

तदभावे पिता तदभावे माता तदभावे भ्राता—इत्यादि श्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकारूपग्रन्थ(दामा० टी० पृ० २१८, पृ० १२)-लिखनञ्चेति ।

श्रीर्जनयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्

श्रीराधतनुशर्माविद्यावागीशेन

સવાલ

૨૬—સદર દેમાની આદાલતેર દ્વિતીય હાકિમ શ્રીયુત કુર્ટની
 ઇશમિટ સાહેબેર હજુર હજીતે કમલાકાન્તઘોશાલ ઓ ગૌરહ
 યનામે રામહરિનન્દિમામી ઓ ગૌરહેર; મોકદિમાતે અંગરેજી
 ૧૮૨૬ સાલેર ૧૩ વિશમ્બર માસે રોષકારીર લિખિત
 અદાલત મજકુરાર પશ્ચિમતાનેર નામે પરસુ દુહ પ્રહર પર્યન્ત
 વચન ઓ પ્રમાણેર વેઓરા સંબલિત યથાવ તત્તવ મજમુને
 સવાલ ઘડ્યે—

ગોવર્દનનન્દિમામી નરેન્દ્રનિત્યાનન્દમામી ઓ શીતારામ-
 નન્દિમામી દુહ પુત્ર(કે) ઉત્તરાધિકારી રાખિયા મરિલો, ઓ નરેન્દ્ર-
 નિત્યાનન્દ એક પુત્ર ગોપીનાથકે રાખિયા મરિલો, ઓ સીતારામ
 એક પુત્ર સહદેવ નામ ઓ એક કન્યા, (યા)હાર નામ પ્રકાશ નાહ,
 ઉત્તરાધિકારી રાખિયા મરિલો । ઓ ઓહ ગોપીનાથ તોનિ પુત્ર
 રામહરિનન્દિમામી ઓ ગૌરહરિનન્દિમામી ઓ હારુનન્દિમામી-
 કે રાખિયા મરિલો; ઓ સહદેવ નિઃસન્તાન મરિલો, ઓ તાહાર
 મગિની એક કન્યા રાખિયા મરિલો, ઓ ઓહ સહદેવ આપન
 જીવદુશાતે મગિનીર મૃત્યુર પર આપન મગિનીર કન્યાર જીવ-
 દુશાતે તાહાર આપન મગિનીર પુત્ર રામશક્કરઘોશાલકે કયેક
 વિધા વ્રહ્મોત્તરં ઓ દેવત્તર ભૂમિ દાતવ્ય કરિયાછે; ઓ તાહાર
 દાનપત્ર લિખિયા દિયાછે; ઓ મહીતાકે દાતવ્ય કરા ભૂમિર
 ઉપર દક્ષિલ કરાઈયા તાહાર તોનિ વત્સર પડે મરિયાછે; ઓ
 દાતકાલીન ગોપીનાથનન્દિમામીર પુત્ર રામહરી ઓ
 ગૌરહરી ઓ હારુ નન્દિમામી વર્તમાન છિલો, एवं આછે ।
 ઓ ઓહ ગોપીનાથ મરિયાછે, ઓ દાતા વ્યક્તિર મૃત્યુર કયેક
 વત્સર પડે મહીતા વ્યક્તિ મરિયાછે । તાહાર પુત્રેરા દાન કરા-
 ભૂમીર ઉપર દક્ષિલ હજ્યાછે । વક્ષદેશેર શાસ્ત્રાનુસારે ઓહ

सहदेवेर लिखिया देया हेवा सिद्ध, कि असिद्ध, ओ ताहा असिद्ध ह्ओन प्रकारे दान करा भूमि कोन व्यक्ति के अशें इति ।

श्रीर्जयतितराम्

यथा व्यवस्था

एतद्दर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटनीहसामित्सादेवधर्माधिकर-
णलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशज्ञो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र गोयर्द्धननन्दिग्रामोऽसंज्ञकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो नरेन्द्रनित्यानन्द-
नन्दिग्रामोऽसीतारामनन्दिग्रामोऽसंज्ञको द्वौ पुत्राश्चतुराधिकारिणौ संरक्ष्य
मृतः, नरेन्द्रनित्यानन्दोऽपि गोपीनाथसंज्ञकमेकं पुत्रं संरक्ष्य मृतः, एवं
सीतारामोऽपि सहदेवनामानमेकं पुत्रमेकं कन्यां च संरक्ष्य मृतः, एवं गोपी-
नाथो रामहरीगौरहरी-शरूखेठकान् श्रोन् पुत्रान् संरक्ष्य मृतः,
तद्योपरिलिखितसहदेवः स्वजीवनदशायां स्वभगिनीदौहित्राय रामराद्धर-
घोशालाय यदि कतिपयविधाशब्दवाच्या^१ कश्चिद् ब्रह्मभूमिदेवत्र
भूमिद्वयं दत्त्वा, तस्याश्च दानपत्रं लिखित्वा दत्त्वा, तस्यां च अहीतुराय^२ तत्त्वं
सम्पाद्य संवत्सरत्रयानन्तरमनपत्य एष मृतस्तदा दानकाले इदानीं च
गोपीनाथपुत्रेषु रामहरीपुत्रपरिलिखितेषु त्रिषु सत्स्वप्यभिमतयां भूमौ
स्यांशयोग्यायाः विभक्तयां च स्यांशरूपाया वा ब्रह्मभूमेर्यद्दानं कृतं तद्
यद्देशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धं भवति, स्वतन्त्रस्वामिदत्तत्वात्, एवं
दानपत्रलिखिताया देवत्रभूमेर्यद्दानं तत्र सिद्ध्यति^३, देवत्रभूमौ केवल देव-
ताया एव स्वत्वं देवमित्रानां केषाञ्चिदपि स्वत्वाभावात् । किन्तु देवत्रभूमेः
संरक्षणावेक्षणादिकर्तृत्वं लोकनामेव व्यवहाराद् दृश्यते । तत्र यद्यनेन
येनचिद् भूम्यधिपतिना देवसेवार्थं कश्चिद् भूमिर्त्रियमिता तत्संरक्षणादि-
कर्तृत्वं तद्देवपूजकत्वं वा सहदेवाय, तत्सुख्यपुरुषाय वा दत्तं स्यात्तदा

१. श्रीर्जयति०—व्यय० ।

२. वाच्या कश्चिद् ब्रह्मभूमिदेवभूमिदत्ता दत्तः—व्यय० ।

३. राक्षस—व्यय० ।

४. सिद्धि—व्यय० ।

तदेव स्वकर्तव्यस्ववशीभूतसंरक्षणादिकर्तृत्वं तदेव पूजकत्वं वा यदि
सहदेवेनोपरिलिखितरामशङ्करघोशालाय दत्तं स्यात्तदा, यदि वा स्वयमेव
महदेवेन देवसेवार्थं स्वोयक्ताचिद्भूमिर्नियमिता तस्याः संरक्षणादिकर्तृत्वं
तदेव पूजकत्वं वा तस्मै दत्तं स्यात्, तदा चैतदुभयविधं दानं लोकव्य-
वहारात्सिद्ध्यतीति, अतः शास्त्रानुसारेणापि सिद्धं भवितुमर्हतीति
वङ्गदेशचलितदायभागमनुष्यव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी
व्यवस्था—

अथ प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरयापि वा ।

कुर्व्युर्यथेष्टं तत्तत्तर्चमीशास्ते^१ स्वधनस्य वै ॥

इति दायभागार्द्धं दामा० २।२६, पृ० ३५)ग्रन्थधृतनारदवचनम्
(नामसं० पृ० १५७, १४।४२) । १

प्रदानं स्वाम्यकरणम्—इति मनुवचनम् । (मन्म० ५।१५२) । २

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः—इति मनुवचनम् (मन्म०
८।१६६) । ३

व्यवहारो हि यल्लवान् धर्मस्तेनावहीयते^१—इति व्यवहारतत्त्वादि-
ग्रन्थ(व्यत० पृ० १६६)धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ८, १।३४)^२

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

१. लदेव०—व्यप० ।

२. ०नत्व०—व्यप० ।

३. स्वानंरान्—नामसं० ।

४. पुरयुयपे०—व्यप० ।

५. मीराते—नामसं० ।

६. नापचीकते—नामसं० ।

सवाल

३०—सदर दैमानी अदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुटनी इशमिट साहेबेर हजुर हइते ओइ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे अंगरेजी १८२५ सालेर १८ दिशम्वर मासेर रोवकारिर लिखित भवानीलालेर नामे हरीशायीवीर मोकदिमाते परसु दुइ प्रहर पर्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर वेओरा संवलिख यवाय दाखिल करनेर हुकुमे सवाल, एइ ये—

एक व्यक्ति हिन्दु, कायस्थ जाति, स्त्री ओ पिताके राखिया मरिलो । ताहार पर पिता स्त्रीके, ये प्रथम मृत व्यक्तिर माता नहे, आर अप्राप्त-व्यवहार पुत्र ओ भगिनीर पुत्रके राखिया मरिलो । पश्चात् ऐ अप्राप्त-व्यवहार पुत्र निःसन्तान मरिलो । तत्परे ऐ पितार स्त्री, ये अप्राप्त-व्यवहार पुत्रेर मृत्युर परे ऐ पितार त्यक्त धनेर उपर दखिलकार हइयाछिलो, आपन पतिर भगिनीर पुत्रके, ये उपरे उल्लेख हइलो, ऐ त्यक्त धनेर असियतनामा लिखिया दिया प्रहीताके दान करा वस्तु उपर दखिल ना करा-इतेइ मरिलो मैथिलदेश ओ बङ्गदेशेर शास्त्रानुसारे ऐ असियत-नामा प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्री থাকने ओ सिद्ध ओ चलित बटे, कि ना ? आर यद्यपि असियतनामा लिखा ना हइतो, एइ स्वीकार करा जाय उत्तराधिकारित्वक्रमे ऐ त्यक्त धन द्वितीय मृत व्यक्तिर भगिनीर पुत्रके किम्बा प्रथम मृत व्यक्तिर स्त्रीके अपितो इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जन्मावव्यवस्था

एतद्दर्माधिकरणद्वितीया(धि)पति - श्रीयुत-कुटनीइशमिटसाहेबधर्मा-धिकरणलिखितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चित्कायस्यजातिः स्वस्त्रियं स्वापेतरश्च संरक्ष्य मृतस्तदनन्तरं
 सतिपता तद्विभातरमप्राप्तव्यवहारं पुत्रश्चैकं स्वभगिनीपुत्रश्च संरक्ष्य मृतः,
 पश्चादप्राप्तव्यवहारः स पुत्रोऽप्यनपत्य एव मृतः, तदनन्तरमप्राप्त-
 व्यवहारस्य पुत्रस्य पितुः पत्नी तस्मिन्विवादास्पदीभूतघने भोगवती भूत्वा
 स्वपतिभगिनीपुत्राय उपरिलिखिताय तस्यैव स्वायत्तीभूतघनस्य^१ शसियत-
 नामाख्यं पत्रं लिखित्वा दत्त्वा गृहीततत्पत्रं तत्पत्रलिखितवस्तुपुं^२ भोगम-
 कारयित्वा मृता स्यात्तदा मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण वङ्गदेशचलित-
 शास्त्रानुसारेण च तदेव शसियतनामाख्यपत्रं प्रथममृतव्यक्तेः त्रिषां
 सत्यामवस्थां^३ वा सिद्धं प्रचलितं (च) भविष्यं न शक्नोति । एवञ्च विवादास्पदी-
 भूतघने उत्तराधिकारिणामयं क्रमः^४ । तथाहि जीवति पितरि प्रथममृतो
 यः पुत्रस्तदीयविभक्तमसाधारणं^५ धनं तत्पत्नी मिथिलादेशचलितशास्त्रा-
 नुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण च प्राप्नुमर्हति; यदि च तस्य
 स्वोपाजितं धनं साधारणं स्थितं तदा तत्पत्नी तदुयोग्यांशं^६ वङ्गदेशचलित-
 शास्त्रानुसारेण प्राप्नुमर्हति, न तु मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण, तद्दे-
 शीयग्रन्थकारैः साधारणघने विभागे सत्येयं पत्न्याधिकारालम्बनात् । एवञ्च
 प्रथममृतव्यक्तेर्विभक्तासाधारणधनातिरिक्तं^७ विवादास्पदीभूतं धनं एतदु-
 भयविघ्नतदीयधनाभावे च समस्तमेव विवादास्पदीभूतं धनं मिथिलादेश-
 चलितशास्त्रानुसारेण, अथ च तस्यैव पुत्रस्य विभक्तासाधारणं धनं विना
 तदुपाजितसाधारणधनेऽपि तदुयोग्यांशञ्च विना विवादास्पदीभूतं धनम्, एतत्त्रिवि-
 धधनाभावे च समस्तमेव विवादास्पदीभूतं धनं वङ्गदेशचलितशास्त्रानु-
 सारेण प्रथमपुत्रमरणोत्तरं तस्मिन्त्रयां सत्यामपि तत्पितुः स्वत्वास्पदीभूतम्,
 अतस्तस्मिन्मृते तस्याप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य उपरिलिखितपितृस्वत्वास्पदीभूत-
 यावद्दनाधिकारे जाते सति तद्धनं तदीयमेव जातम् । अतस्तस्मिन्ननपत्ये^८ मृते

१. ०धनस्यासि०—अप० ।

२. गृहीततत्पत्रलिखित०—अप० ।

३. देवसि०—अप० ।

४. सत्याम्बा—अप० ।

५. *मयन०—अप० ।

६. तन्मित्रशये—अप० ।

तदुत्तराधिकारिणामेव तदनाधिकारः । तत्र च तत्पल्यादिसंगोत्रपर्यन्ता-
भावे तत्पितुर्भागिनेयस्य अ(१)त्मबन्धुत्वेन मिथिलादेशचलितशास्त्रा-
नुसारेण, एवं पल्यादितत्पितामहप्रपौत्रपर्यन्ताभावे तत्पितामहदौहित्र-
त्वेन यद्देशचलितशास्त्रानुसारेण चाधिकारः । एवञ्च सति प्रथममृत-
व्यक्तेः स्त्री उपरिलिखितप्रतिस्वत्वात्पदीभूतधनाभावे एतदनादेव
प्राप्ताच्छादनाधिकारिणीति—इतिमिथिलादेशचलितविवादचिन्तामण्यादि-
ग्रन्थानुसारिणी यद्देशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था ।

तत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां^१ स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात्^२ कथञ्चन ॥

इति विवादचिन्तामणि^३ विचि० पृ० २३८) दायगागादि(दाभा०
पृ० १७३, ११।१।६०) लिखितमहाभारतवचनम् (भारत-१३।४६७।२४) । १

अपहार ऐच्छिकं दानविक्रयादिकम्—इति विवादचिन्तामणि-
ग्रन्थलिखनम् (पृ० २३८) । २

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृ-
गामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि तदभावे भ्रातृपुत्रगामि—
इत्यादि विवादचिन्तामण्यादि(विचि० पृ० २३५) ग्रन्थभूतविष्णुवचनम्
(विस्मृ० पृ० ४६) । ३

इदं च विमलपतिधनपरम्—इति विवादचिन्तामणिलिखनम् (पृ०
२३४) । ४

१. स्त्रीणां तु पतिदायावन्—भारतम् ।

२. वित्तान्—व्ययं, दायात्—दाया० ।

अतोऽविशेषेणैव विभक्तत्वाद्यनपेक्ष्यैव^१ । अपुत्रस्य भर्तुः इत्स्न-
धने पत्न्यधिकारः—इत्यादि दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ० १६६,
११।१।४६) । ५

‘सगोत्राभावे बन्धुः’—याज्ञवल्क्य(वचना)त्, स (च) स्वबन्धुः
पितृबन्धुर्मातृबन्धुश्च ।

आत्मपितृष्वसुः^१ पुत्रा आत्ममातृष्वसुः^१ सुताः ॥

आत्ममातुलपुत्राश्च^१ विज्ञेया आत्मबान्धवाः ।

पितुः पितृष्वसुः पुत्रा पितुर्मातृष्वसुः^१ सुता ।

पितुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया पितृबान्धवाः ॥

मातुः^१ पितृष्वसुः^१ पुत्राः मातुर्मातृष्वसुः^१ सुताः ।

मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः मातृबान्धवाः ॥

एतेषां क्रमेणाधिकारः—इति विवादचिन्तामणिलिखनम् (पृ०
२४२) । ६

एवं पितामहप्रपितामहसन्तरेरपि दीहिप्रान्तायाः पिरडप्रत्यासक्ति-^१
क्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् (पृ०
१२०८-९) । ७

अविभागे तु शङ्क ।

आतृभार्योणां (च) स्नुषाणाञ्च न्याय(तः प्र)वृत्तानामनपत्यानां
पिरडमात्रं गुरुदंष्ट्रात् ॥

१. ०-नपेक्ष्यैव—दाभा० ।

२. ०स्वसु—व्यप० ।

३. अग०—व्यप० ।

४. पितुर्मा०—व्यप० ।

५. मातृपि०—व्यप० ।

६. प्रत्यासक्ति०—व्यप० ।

जीर्णानि वासांस्यविकृतानि^१—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखन-
ञ्चेति (पृ० २३६)

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

३१—रोवकारि मिसिल आदालत देमानी सदर इङ्गरेजि
१८२६ साल तारिख २८ माह देशम्बर मतावक बाङ्गला १२३३
साल तारिख १४ पौष रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार
द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्दनी इरामिट साहेबेर बैठके—

मृत गौरीप्रसादचौधुरि

आपिलाएट

मसम्मात जयमालाचौधुराणी

रप्पाबएट

मृत्युञ्जयशर्म्मा शायेलेर उकिल सदासुखपण्डित विद्यमाने
आइल । जयमालाचौधुराणी मुद्दाआलेहेर जमिदारि निलाम
द्वाराय शायेलेर पञ्चोना डिगरि टाका देयानेर बाबत । शायेलेर
दरखास्त नामजुरिर बिषये कोट आपिलेर तृतीय हाकिमेर
मजुर राखा सहर ढाकार जजसाहेबेर हुकुमेर असम्मतिते
ओ ऐ चौधुराणीर जमिदारि किछु निलाम करिया डिगरि
लिखित टाका देओयानेर निमित्ते कोर्ट आपीलेर हाकिमदिगेर
नामे प आदालतेर हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय शाएलेर
दरखास्त पे उकिलेर नामिक ओकालतनामा ओ सन हालेर
१ मेइ मासेर लिखित जाहाङ्गीरनगरेर कोटेर रोवकारि नकल
आर कोटे दाखिल हओया शाएलेर सओयालेर नकल सम्बलित
जे हाल मासेर २३ तारिखे प आदालते दाखिल हइयाछिल
अब दरपेप हइया दृष्टे आइल । जाना गेल ये इङ्गरेजि १८१४

शालेर १६ देशम्बर मामेर ह्योया ए आदालतेर कयशला
 अनुसारे गोविन्दप्रसादचौधुरिर त्यक्त परगने काशीमृपुर शारनि-
 वाशन गयरह जमिदोरिर आठ आना रकमेर मध्ये ऐ गोविन्द
 प्रसादचौधुरिर प्रथमा स्त्री मसम्मात् पार्वतीचौधुराखिर
 दत्तक पुत्र गौरिप्रसादचौधुरिर स्वत्व अर्द्धक परिमाणे, आ ऐ
 चौधुरिर द्वितीया स्त्री मसम्मात् जयमालार दत्तक पुत्र शिव-
 प्रसादेर स्वत्व द्वितीय अर्द्धक परिमाणे सान्यस्थ हइयाछे । ओ
 ए आदालतेर कयशालार परे द्वितीय स्त्रीर दत्तक पुत्र शिवप्रसाद-
 निःसन्तान मरिल; ओ ताहार मृत्यु हओने हेतुते ऐ गौरिप्रसाद
 चौधुरिर ताहार त्यक्त चारि आना स्वत्वेर दाओया करिलेक, ओ
 ए आदालतेर पण्डितेरा इङ्गरेजी १८१७ शालेर ७ केयरओयारि
 मासे प्रथम हाकिमेर सओयालेर जवावे एक केदा व्यवस्था एइ
 मजमुने, ये शिवप्रसादचौधुरीर त्यक्त चारि आना अंश ऐ
 अप्राप्त-व्यवहारेर प्रहीत-माता जयमालाके अशे, ताहार भ्राता
 गौरीप्रसादके अशे ना, दाखिल करिलेन । ताहार पर तारिणी-
 प्रसाद अप्राप्त-व्यवहार पुत्र राखिया ऐ गौरीप्रसाद मरिल, ओ
 इङ्गरेजि १८१६ शालेर ३१ आगष्ट मासे मृत्युञ्जय शर्मा शाएल
 ऐ जयमालार नामे, ये ए छल पर्यन्त वर्तमान आछे, प्रकाश
 हय, ६७६।)। २ गण्डार डिगिरि सहर टाकार देओयानी आदा-
 लत हइते पाइल; ओ चाहितेछे ये ए चारि आना हिंसा किन्वा
 ताहार मध्ये किछु आपन हासिल करा डिगिरि टाका पाओनेर
 कारण विप्रय कराय, ओ वमसुकेर तारिख ये ए मृत्युञ्जयेर
 दाओयार मूल बटे अनिर्णय । आर मसम्मात जयमाला-
 चौधुराखीर एजहार, एइ जे आमार एक कन्या, ताहार सन्तान
 जन्मे नाइ सम्भावना आछे; ओ द्वितीय कन्या पति-वर्तमाना,
 ताहार गर्भज, अप्राप्त-व्यवहार एक पुत्र आछे, ओ आमि स्वयं

द्वितीय एक पुत्रके दत्तक करियाछि । ए प्रकारे ए आदालतेर पण्डितदिगेर (स्थाने) जिज्ञासा जाय ये जयमालार एजहार सत्य-प्रकारे ऐ चारि आना अंश, किम्बा ताहार मध्ये किछ मृत्युञ्जय शर्म्मार पाओया डिगारि निमित्ते विक्रय हइते पारे कि ना, ओ ताहार एजहार मिथ्या हआन प्रकारे ताहार मृत्युर पर ऐ चारि आना हिस्सा ताहार सपन्नोर पौत्र अर्थात् गौरोप्रसादचौधुरि पुत्र तारिणीप्रसादचौधुरिके, किम्बा कोन व्यक्तिके अर्शिवेक, आर ताहार एजहार (प्रकारे) ताहार दुइ कन्या ओ एक दत्तक पुत्र थाकनेय विषये मिथ्याइ स्वीकार करणेर जबाब घञ्जदेशेर शास्त्रानुसारे मङ्गलवार दिवस दुइ प्रहर पर्यन्त दाखिल करेन इति ।

जवाबव्यवस्था

एतदधर्माधिकरणद्वितीयाधिपतभूयुतकुटनी - इशमितसाहेबधर्माधिकरणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रश्नमवलोक्य यादृशचोपो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

मृत्युञ्जयशर्म्माः प्रातःत्रयपत्रलिखितमुणं यदि शिवप्रसादस्यावश्यक-आद्याद्यौर्ध्वदेहिकक्रियार्थं स्वभरणपोषणार्थं वा तन्मात्रा जयमालया कृतं तत्परिशोधनं यदि स्वसंक्रान्ततदीयाशक्तिक्रयं विना न भवति तदा जयमालोपस्यापितवृत्तान्तस्य सत्यत्वेऽसत्यत्वे वा तदर्थमुपरिलिखितम्नृण-परिशोधनोपयुक्तस्य तदोपांशान्तर्गतस्य विक्रयो मयितुमर्हति, न तु त्वेच्छया स्वामिप्रायेण वा जयमालया कृतस्य श्रृणस्य परिशोधनार्थम् । यथा पतिघने पत्न्याः पतिआद्याद्यौर्ध्वदेहिकक्रियार्थं पतिकृतकुटुम्बभरणार्थम् परिशोधनार्थं स्वभरणपोषणार्थंसाधने विक्रयेऽशक्तावधिकारस्तथा पुत्रघने मातुरपि । एवञ्च जयमालामरणोत्तरं स एवांशत्तात्त्विकपत्नीपौत्रस्य तारिणीप्रसादचतुर्धरिणस्य पूर्वधनस्वामिशिवप्रसादभ्रातृपुत्रस्य भविष्यति, यतः पुत्रघनस्योत्तराधिकारित्वेन मातृसंक्रान्तत्वेऽपि गृहीतपुत्रघनाया मातुरपरमे पूर्वधनस्वामिपुत्रस्य ये उत्तराधिकारिण्यस्तेषामेव तद्वनं

भवति । तत्र च तद्भ्रातृपर्यन्तामावे' सुतरां भ्रातृपुत्रत्वैवाधिकारः, सति भ्रातृपुत्रे पितृदोहित्रस्यानधिकारात्, स्वाभिमरणोत्तरमेकस्त्रीकृतस्य द्वितीय-
दत्तकशास्त्रलिखितत्वाच्च—इतिवद्देशप्रचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कार-
कृतदायभागटीकाक्रमसंग्रहविवादमङ्गार्यावादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम् :—

रिक्थमाह श्रुणं दाप्यः—

इत्यादिविवादमङ्गार्यावादिग्रन्थ (१विपा१७६ख) धृतयाश्वल्क्यवचनम्
(२।५१) । १

पत्नी तद्धनं सुजीतेष, परं न तु तस्य दानाधानविक्रयान् कर्तु-
मर्हति । तदाह-आत्यायनः

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

सुजीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥ (कास्मृ० ६२१)

इतिदायभाग, पृ० १७१) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

एवञ्च पत्युरोर्ध्वदेहिकक्रियार्थं दानादिकमप्यनुमतम् । अतएव
पतंनो'शक्तावाधानमपि, तत्राप्यशक्नो विक्रयणमपि—इत्यादि दायभाग-
ग्रन्थलिखनम् । (पृ० १६३, ११। १।६१-६२)

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, सीमाप्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो आतरस्तथा ।

तरसुतो गोप्रजो यन्धुः—इत्यादिदायभागादिग्रन्थ (दामा० पृ०
१५१) लिखितयाश्वल्क्यवचनम् ॥ (२।१३५) ५ ।

१ पयन्त०—न्या० ।

२ कात्यायनी—न्या० ।

३ पत्युरोर्ध्व—न्या० ।

४ वसन्ताना०—न्या० ।

५ रिक्तो आतरस्त०—न्या० ।

आतृपौत्रस्यामावे पितृदौहित्रस्याधिकारः—इति (दाप)क्रमसंग्रह-
लिखनञ्चेति (पृ० ६) । ६

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

श्रीर्जयतितराम् ।

३२—यत्र घनिनः सप्तमपुत्रप्राप्तिमातुलपुत्री विद्येते सत्र तयोर्मध्ये
जीमूतयाहनकृतदायमगमते घनिनो मातुलपुत्रस्यैव घनित्यक्तधने घनिनि-
भूतेऽधिकारः, विज्ञानेश्वरकृतमिताक्षरामते तु तयोर्मध्ये सप्तमपुत्रप्राप्ति-
रेवाधिकारी न तु मातुलपुत्र इति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

३३ व्यवस्था दाखिल सदर देमानीका रजिष्टर साहेब श्री
मेघनाथ साहेबका हजूर कलकत्तेका कोर्ट आपील आदालतके
ह्याफमान्क सवालके यथाय इति —

श्रीवैद्यनाथपरिद्धत

सवाल

३३—आगम केतने प्रकार है ? सप्त प्रकार आगम कोन
पुस्तकमे लिखा हो ? मिताक्षरा किम्वा अन्य कोई ग्रन्थमे
लिखा हो इति ।

यवाव . . .

शास्त्रोक्त आगम सप्त प्रकार, ओ सप्त प्रकार आगम मिताक्षरा
वीरमित्रोदय ओ गैरह ग्रन्थमे लिखा है इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

एह यवाव दाखिल नाएव रजिष्टर श्रियुत विष्ट साहेबका
हुजुरमो इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रथम सवाल

३४—कुशलरायेर चारि पुत्रेरा ओहार त्यक्त जमिदारी प्रभृतीर
अंश सकलेर उपर समान अंशते दखिलकार थाकिया कुशल-
रायेर वृतीय पुत्र रामदुलाल आपन स्त्री रत्नादेव्याके राखिया
निःसन्तान मरे, ओ ऐ स्त्रीलोक आपन जीवत्तद्दशा पर्यन्त आपन
स्वामीर त्यक्त जमिदारी-प्रभृतीर अंशेर उपर दखिल थाकिया
राजीबलोचन ओ कृष्णचन्द्र ओ रामगोपालेर पुत्रगण, जयराम-
रायेर पुत्र हरिहरराय, ओ राधाचरणेर चारि पुत्र, राजचन्द्र ओ
गयरहेर समते भरिलो । अतएव रत्नादेव्या मजकुरार मृत्युर पर
ताहार स्वामी अर्थात् कुशलराय मजकुरेर वृतीय पुत्र रामदुलाल-
रायेर त्यक्त अंश शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर मध्ये फाहाके, फी
परिमान अशें इति ।

द्वितीय सवाल

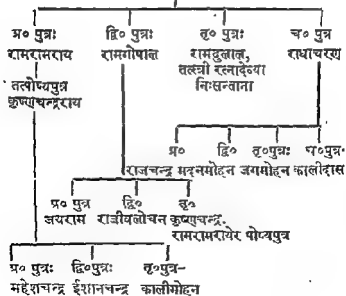
रामगोपालरायेर औरस पुत्र कृष्णचन्द्रके रामदुलालराय
पोष्यपुत्रकरण प्रयुक्त कृष्णचन्द्र मजकुर रामदुलालेर त्यक्तेर

स्वत्वे ताहार स्त्री रत्नादेव्यार मृत्युर पर आपन सहोदर भ्राता राजीवलोचन ओ पितृव्यपुत्रमाण राजचन्द्र (ओ) गयरहैर सहित समान मर्यादा राखिवेक, कि ओदारदिगेर सम्पर्के ओहार स्वत्व न्यून किम्बा अधिक हइवेक इति ।

यद्यपि रामगोपालरायेर पुत्र जयरामराय रत्नादेव्यार समझे मरियाथाके, ए प्रयुक्त ताहार पुत्र हरिहरराय रत्नादेव्या मजकुरार मृत्युर पर राजीवलोचन ओ गयरह रामदुलालेर भ्रातृपुत्रगणेर न्याय ऐ रामदुलालेर त्यक्त बिषयेर अंशे स्वत्वाधिकारी हइवेक, किम्बा रत्नार समझे ताहार पितार मृत्यु हओन प्रयुक्त स्वत्वाधिकारी हइवेक इति ।

मूलपुरुष

कुशलराय



श्रीर्जयतितराम्

जगत्प्रव्यवस्था

प्रभुसम्पितवशावलीपञ्चानुसारेण प्रभानुसारेण चोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नोत्तरम्—

यत्र कुशलरायस्य चत्वारः पुत्राः स्वपितृव्यक्रमराजकरस्यावशात् चतुष्टयं कृत्वा स्वस्वांशभोगवन्तः स्यताः, तेषां मध्ये कुशलरायस्य तृतीय-पुत्रो रामदुलालः स्वपत्नी रत्नादेवी संरक्ष्य अनपत्य एव मृतः, ततो रत्ना-देवी स्वजीवनकालपर्यन्तं स्वपितृव्यक्रमराजकरस्थः वरदंशभोगे कृत्वा रामगोपालपुत्रो, राजीवलोचनकृष्णचन्द्रसंरक्षो, जगदमरायस्यैकं पुत्रं हरिहररायसंरक्षं, राधाचरणस्य चतुरः पुत्रान् राजचन्द्रमदनमोहन-मोहनकालिदासन् संरक्ष्य मृता स्यात्, तदा रत्नादेव्याः स्वामिनोऽर्थात् कुशलरायस्य तृतीयपुत्रस्य रामदुलालरायस्यांशं समस्तमेकादशधा वि-भज्य द्वौ द्वौ भागौ राधाचरणपुत्राणां राजचन्द्रमदनमोहनमोहन-कालिदासानां प्रत्येकं भवतः, तथैव द्वौ भागौ रामगोपालपुत्रस्य राजी-वलोचनस्य भवतः, अथःशःशैको भागो वंशावलीपञ्चगतं राममराय-दत्तपुत्रस्य कृष्णचन्द्रस्य भवति ।

द्वितीयप्रश्नस्याप्यर्थाद्दमेवोत्तमम्—इतिवद्देशप्रचलितदायभागवि-वादमहार्थवदत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थानुसारं शीव्यवस्थाति ।

तृतीयप्रश्नोत्तरम्—

यदि रामगोपालरायस्य पुत्रो जगदमरायको रत्नादेव्यां सखायां मृतः स्या-त्, तदा तत्पुत्रो हरिहररायो रत्नादेव्या मरणोत्तरं रामदुलालभ्रातृपुत्रराजो

चलोचनादिवद् रामदुलालत्यकधने अधिकारी न भवति, सत्यां रत्ना-
देव्यां मृतस्य जयरामरायस्य हरिहररायपेनुस्तदने स्वत्वाभावात् । हरिहर-
रायस्य तु रामदुलालप्रनुज्ञत्वेन सत्तु भ्रातृपुत्रेषु भ्रातृपौत्रस्य हरिहर-
रायस्य तदनाधिकारभावाच्च (नाधिकारः) इति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमद्वितीयप्रभेत्तरप्रमाणान्तर्गतप्रथमद्वितीयप्रमाणमेव । अत्र यद्यपि
द्वितीयपक्षे कृष्णचन्द्रस्य रामदुलालरायदत्तकनुत्वं निश्चितं तथापि
वैशाखतीर्तने कृष्णचन्द्रस्य रामरायदत्तकनुत्वं निश्चित्यैव व्यवस्था
दत्ता । कृष्णचन्द्रस्य रामदुलालरायदत्तकनुत्वं निश्चितं भवति चेत्तदा
रात्रिश्रयोत्तरं तदुत्तरं दास्यामीति—

श्रीजर्जयतितरा

श्रीहृःशरणम्

श्री.वैद्य पाथ मेधेग

श्री ११ तनुशर्मविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था वाखिल रजेष्टर साहेब श्रीयुत मेघनादन माहेवके
हजुर फलरुत्त हा काटे आगल आदालतको हाकिमातके
सत्रालके बराबरो कुशोनामा मे सवाल ।

सवाल

३५—जिले कानपुर साकिनेर एह हिन्दु जमीदार तीन श्री -
वाखितो । ओ ताहार एक छार गर्भ एक पुत्र ओ द्वितीय स्त्रीर गर्भ
ओ एक पुत्र एवं अन्य छोगर्भ पाँच पुत्र छिलो । ओ जमीदार
मजकुर ओइ सात पुत्र वर्तमान राखिया लाकान्तर हय । जमी-
दार मजकुरेरेपैरुह जमीदारी ओइ सात सन्तानेर मध्ये की प्रकार
अंश हइवेक इति ।

सवाल

यदि स्यात् जमींदार मजकुरेर सन्तान सकलइ तीन खीर मध्ये एकेर गर्भजात हइया सकलइ परलोक प्राप्त हय तवे ओइ खीर कोनो सन्तान ना थाकावे ताहारदिगेर पैतृक हिस्सा की रूप दण्डक हइवेक, एवं कोन कोन व्यक्तिके अंशवेक इति ।

यथाव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभपन्नमवलोक्य बाटखबोधो जातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते—

यत्र कस्यचित् कानपुरप्रदेशीयस्य हिन्दुजातेभूस्वामिनस्तिदद्यां खीणां मध्ये एकस्या गर्भ एकः पुत्रो द्वितीयस्या अति गर्भ एकः पुत्र एवमन्यस्या गर्भे पञ्च पुत्राः स्थिताः; स भूस्वामी यद्युपरिलिखितमत्तपुत्रान् संरक्ष्य मृतः स्यात्तदा तद्भूस्वामिनः^१ पैतृकं खराजकररूपावरं समं सप्तधा विभज्य सप्तपुत्राणां प्रत्येकमेकैकांशो भवतीति—

तत्र प्रमाणम्—

अतः ऊर्ध्वं पितुः पुत्रा विभजेयुर्धनं समम्—इति मिताक्षरा (पृ० ५७५, यासू० २११४) बीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतनारदवचनम् (धको० पृ० २१५२) ।

यद्युपरिलिखितभूस्वा(मि)नस्तिदद्यां^२ स्त्रीणां मध्ये एकस्या गर्भराताः सन्ततयः सख्याः परलोके गतास्तदा तस्या मृतसन्तानायाः कस्या-

१. तत्प०—न्यप० ।

२. पितुर्द्वयं गते पुत्रा विभजेत् धनं नारद-यासू० पृ० ५७५ । पितुर्गणे पुत्रा विभजेयुर्धनं त्रि-नासू० ख० पृ० १०६ ।

३. बीरमित्रोदये वचनमिदं न दृश्यते । तत्रैतदर्थकम् विभजेत् पुत्राः त्रयोदश-कण्ठस्य स्मृतम्—इति (यासू० २१११०) दृश्यते ।

४. मिताक्षराम्—न्यप० ।

(श्रि)द्वर्त्तमानसन्ततेरभावेन तासां सतीनां पैतृकधनांशस्यायं विभागप्रकारः—यद्युपरिलिखितप्रभलिखितसप्तषापक्षभ्रातृणां पैतृकं (धनं) सराब्जकरस्थावरमविभक्तं स्यात्तदा वर्त्तमाना ये सापक्षभ्रातरस्ते एव मृतानां सापक्षभ्रातृणां योऽशस्तस्य तत्पुत्रपोत्रप्रपौत्रसोदरभ्रातृपर्यन्ताभावे समानांशभागिनो भवन्ति । यदि च ते प्रथम परस्परं विभक्ताः पुनर्विभक्तं धनं मिश्रीकृत्यैकैकधर्मेण संसृष्टाः सन्तः केचन मृतास्तदा येन येन सह ते संसृष्टाः (सन्तस्ते) स्थितास्तोषामेव वदन्म, न त्वसंसृष्टानां पुत्राद्यभावेऽपि भवति । एतत्पक्षद्वये मृतानां धनग्राह्यः सकाशात् तत्तत्तल्यः तत्तन्मातरो वा यावज्जीवमन्नाच्छादनभागिन्यः । यदि च तेषां वदन् विभक्तमय-
योपरिलिखितरीत्या ते संसृष्टा न स्थितास्तदा तेषां पुत्रपौत्रप्रपौत्रकरापत्य-
पत्नीदुहितृदोहप्रपत्यन्ताभावे तेषां माता तत्तदंशभागिनी भवति—इति
कानपुरप्रदेशचलितमिताक्षराधीरमिश्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अथ प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थ-
(मिता० पृ० २१६) भूतयाज्ञवल्क्यवचनम् (२११५) ॥ १ ॥

सोदराणामभावे मिश्रोदरा धनभाजः—इति मिताक्षरालिखनम्
(पृ० २२२) ॥ २ ॥

संसृष्टिनस्तु संसृष्टी—इत्यादि तद्भूत (मिता० पृ० २२५) याज्ञ-
वल्क्यवचनम् (२१३८) ॥ ३ ॥

१. ०णामंशो तत्तत्—व्यप० ।

२ ०मेकमुद्वेग न स पुत्रायभावे भवति—व्यप० ।

३ ०पत्नी माता वा—व्यप० ।

४. ०भागिनी—व्यप० ।

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनं विमलप्रातृतीविषयम्-इतिमितःक्ष-
लिखनम् (मिता० पृ० २१७) ॥ ५ ॥

श्रीज्जयतिराम्

श्रीहरेशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशम्भोद्यागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल रजिष्टर साहेब श्रीयुत मेघनादनसाहेबका
इजुर कलकत्तेका सदर कमिसनरके आयुत राससाहेब सदर
देमाती आदालतीके पञ्चम हार्किम(के) सवालके यबाव ।

: ३६-श्रीयुत रजिष्टर मेघनादन साहेबेर हैते सवाल-
प्रसादसिंह नामे एक व्यक्ति राजपूतेर औरसे धानक जाति
खीर गर्भ जन्मियाछे । इहाते यद्यपि ताहार पितार सहित ताहार
मातार विवाह हैइया ना थाके, सोरपोष पाओनेर योग्यता
राखे, कि ना-एइ सवालेर यबाव हिन्दुस्थानि परिद्वत लिखिया
दन इति ।

यबावव्यवस्था

यदि कश्चित् प्रसादसिंहो राजपुत्रबीरतो^१ धानकजातीयस्त्रीगर्भे उत्पन्न-
स्तत्र यद्यपि तत्पित्रा सह तन्मातुर्विवाहो नाभूत् तथापि अन्नभक्षणं
प्राप्तुं शक्नोतीति ।

श्रीज्जयतिराम

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

एह व्यवस्था दाखिल रजिस्टर श्रीयुत मेघनादन साहेबेर
इजुरे—

समोयाल

३७—यद्यपि त्रिहोत जिला निवासी कोन व्यक्ति भ्रातृपुत्र-
थाके से व्यक्ति दीहित्रके कृत्रिम पुत्र करिते पारे कि ना ?

यदाव

तीरभुक्तिप्रदेशीयेन चैनचिदनपत्नेन तद्देशचलितकेशवमिश्रकृतवैत-
परिगृहद्वयरोपः प्रयापकृतशुद्धविवेकादप्रत्यविवेचनया मनुवचनानुसरण
तद्देशीयपूर्वापरव्यवहारानुसारेण च सत्यपि भ्रातृपुत्रे दीहित्रः कृत्रिमपुत्रः
कस्य शक्यते इति—

भोज्जंयतितरामू
श्रीमधनायधिशेण

एह व्यवस्था दाखिल श्रीयुत रेजेष्टर मेकनटन साहेवेर
इजुरे ।

समोयाल

३८—एक विधवा स्त्रिलोक आपन पतिर अनुमतिते शास्त्रोक्त-
विधि मत एक बालकके दत्तक करिलेक । ए प्रकारे ऐ स्त्रीर जीव-
इशाते ताहार मृत पतिर धन पाबोनेर सत्वाधिकारी ऐ दत्तक
हय कि ना ।

यदाव

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रप्रतिरूपमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुगारेणोत्तरं
लिख्यते ।

यत्रेकया विधवया स्त्रिया पत्यनुमत्या शास्त्रोक्तविधिना एको बालको
दत्तकः कृतः स्यात्तदा तस्यां स्त्रियां जीवन्त्यामपि तस्या मृतपतिधनप्राप्तेः

स्वत्वाधिकारी स एव दत्तकः पुत्रो भवति. शास्त्रोक्तमुख्यगौणपुत्राणामेवं पौत्रप्रपौत्राणां वाभाव एव पत्न्यादीनामधिकारमिधानात्—इति मिताक्षरा-दिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

एवं मुख्यगौणपुत्राननुक्रम्येतेषां दायग्रहणं क्रममाह—

पिएडदोऽशहरश्चैषो पूर्वाभावे परः परः—(यास्मृ० २।११२)

इति—मिताक्षरालिखनम् (पृ० २१४) ॥ १ ॥

मुख्यगौणसुता दायं गृह्णन्ति—इति निरूपितम् । तेषामभावे सर्वेषां दायदक्रम उच्यते । यत्नी दाहतरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—(यास्मृ० २।११५) इत्यादि मिताक्षरादप्रालिखनम् (पृ० २१६) ॥ २ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमश्रय

श्रीगमतनुशम्भविद्यावागीशेन

एह व्यवस्था दाखिल इङ्गरेजी मिराल

सञ्जाल

३८—ये मंकरमाते ऐ सञ्जाल कग गियाछे—आजमिर देरोर सगपर्यय छिल । जिहासा जाइतेछे ये बङ्ग देश दायभाग मते दत्तक पुत्रेर सत्वे ऐ आज्ञा सिद्ध बटे, कि ना । यदि सिद्ध ना हय ताहार हेतु घचन प्रमाण सम्यलित निवेदन करेण इते । २६ शेतम्बर सन १८२६ ईरेजि ।

यत्राव-व्यवस्था

यद्देशे चलिताय भागादिग्रन्थमते दत्तकपुत्रस्य स्वत्वे इयमेव व्यवस्था प्रमाणं भवतीति ।

श्रीजर्जपतितराम
श्रीवचनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामस्तनुशर्माविद्यावार्गीशेन

४०—सदर देमानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्तनी इशमिट साहेबेर हुजुर हइते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे अप्राप्त-व्यवहार शिवनाथघोषेर पत्ते अखिवनवामवसुर' नामे भानुमतीदास्यार मकई माते इङ्गरेजि १८२७ सालेर ७ फिघरओरि मासेर रोबकारिर लिखित पगस्व दुइ ग्रहर पय्येन्ता जवाय दाखिल करणेर हुकुमे सओयालात, एइ ये—

प्रथम सओयाल—

बङ्ग देशनिवासी एक व्यक्ति हिन्दु आपन तालुक हइते आपन खांके किछु भूमि पृथक करिया दिया ओ खांके ताहार उपर दखिल कराइया ताहार कएक बत्सर परे ऐ खांके ओ ताहार गर्भज तिन पुत्र राखिया गरियाछे । पश्चात् ऐ तिन पुत्रेर मध्ये एक जन खां राखिया मरियाछे । तत्परे प्रथम मृत व्यक्तिक खां बाकी दुइ पुत्र राखिया मरियाछे । जिलासा फरा जाइतेछे ये ऐ भूमिते मृत पुत्रेर खीर पत्यंशेर दाओया अरौं कि ना ? ॥ १ ॥

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि प्रथम मृत व्यक्तिक स्त्री ऐ पुत्रेर मृत्युर पूर्व किम्बा ताहार पर ऐ सम्यक भूमिर हेवानामा बाकी दुइ पुत्रेर एक

जनार पुत्रके लिखिया दिया थाके, ओ गृहीताके हेवार' भूमिते दखिल कराइया थाके. ए प्रकार हेवा सिद्ध ओ दात्रोर अन्य पुत्रदिगेर स्वत्वनाश बोधक बटे कि ना ॥ २ ॥

तृतीय सञ्चोयाल—

यद्यपि प्रथम मृत व्यक्ति ए भूमि पृथक् करिया देओन काज पर्यन्त केवल ए तिन पुत्रेर मध्ये एक जन, अर्थात् गृहीतार पिता, सम्मिया थ के; ए प्रकारे शास्त्रे आह्वाते उत्तराधिकारित्व स्वत्व ओ हेवा सिद्ध तार बिषये विशेष आछे कि ना ? ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम

यवाव-व्यवस्था

एतद्धर्माधिकरण द्वितीयाधिपतिभोग्युतकुटुम्बीइश भित्ताहेयधर्माधिकरण लिखितप्रभ्रम तेत्पपत्रमवलोक्य यादशघोषो जातस्तदनुसारेणांतर लिख्यते—

प्रथमप्रभ्रयोत्तारम्—

यत्र यद्देशीयः कश्चन हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वकीयतत्वात् करस्यावशात् स्वस्मिन् काश्चिद्भूमि पृथक्कृत्य दत्त्वा तदुपरि तस्याश्च भोगं कारयित्वा कतिपयवत्सरानन्तरं तां भूमिं तद्गमनांस्वान् पुत्रांश्च संरक्ष्य मृतः, पश्चात्तेषां प्रयत्नां मध्ये कश्चिदेकः पुत्रः स्वस्मिन् संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं प्रथममृतव्यक्तः स्त्री त ववशिष्टौ द्वौ पुत्रौ संरक्ष्य मृता स्यात् तत्र तद्भूमौ मातरि जीवन्यां मृतस्य पुनस्य स्त्री पत्युः कलायेत्वा प्र.पु. नईत । मातरि मृतायामेव विद्यमानानां पुत्राणां पुत्रत्वेन म.पु.ने स्वत्वात्तस्या

१ हेवाव—व्यप ।

२ पत्युः—व्यप ।

३ मात—व्यप ।

दायत्वं भवति, जीवन्त्याञ्च मातरि मृतस्य मातृधने स्वत्वोत्पत्त्यभावेन
दायत्वाभावात् तत्स्त्रियाः सुतरां तदनानधिकारित्वात् इति ।

अत्र प्रमाणम्—

पूर्वस्यामिसम्बन्धाधीनं तत्त्वाम्युपरमे' यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र निरुद्धो
दायशब्दः - इति दायभागग्रन्थलिखितम् (पृ० ५) ॥ १ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि प्रथममृतव्यक्तः स्त्री तत्पुत्रमरणात् पूर्वं तदनन्तरं वा तस्या-
वर्ध्या एव भूमेर्दानपत्रमवशिष्टयोर्द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये एकस्य पुत्रा-
लिखित्वा दत्त्वा गृहीतुर्दानकृताभूमौ भोगं कारितयतीत्युक्तदेतद्वशादानं सिद्धं
भवितुम्, एवं दान्या अन्यपुत्रादीनामुत्तराधिकारित्वेन स्वत्यनशेषोपकञ्ज
भवितुं नार्हति, यतो भर्तुर्दत्तस्थावरात्मकसोदायकस्त्रीधने स्त्रिया दानाद्यनधि-
कारस्य विशेषतो दायभागो द्रव्यलिखितत्वेनोपरि लिखितवत्त्वादायशब्दीभू-
धनस्य भर्तुर्दत्तस्थावरात्मकसोदायिकज्ञाधनत्वमात्र ।

अत्र प्रमाणम्—

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।

भर्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सोदायिकं स्मृतम्—इत्यादि दाय-
भागदि (दामा० पृ० ७६, ४।२२ ग्रन्थलिखितकात्यायनवचनम्
(कास्मृ० ६०१) ॥ १ ॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्यावरेष्वपि—इति तद्धृतं दामा०
पृ० ७६, ४।२२ कात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६०५) ॥ २ ॥

स्यावरेऽपि भर्तुर्दत्तमात्रे स्त्रिया दानाद्यनधिकारः । यथाह नारदः—

भर्ता प्रीतेन बद्धं च स्त्रियं तस्मिन् मृतेऽपि तत् ।

सा यथाकाममश्नीयाद् दद्यात् वा स्थावरादौ ॥—इत्यादि दाय
भागग्रन्थलिखनम् (पृ० ७६ ७७, ४।२३, नास्मृ० पृ० ५६) ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि प्रथममृतव्यक्तिकृतकृतद्भूमिपृथक्करणदानकालपर्यन्तं तेषां
त्रयाणां पुत्राणां मध्ये केवलमेक एव अर्थाद् ग्रहीतुः पितृज्योत्पन्नोऽभूद्,
एतस्मिन् प्रकारे सत्यपि शास्त्राशायामुत्तराधिकारित्वेन स्वत्वविषये एव दान
सिद्ध्यसिद्धिविषये च विशेषो नास्ति—इति 'वङ्गदेशचलितदायभागादि
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

श्रीर्जयपतितराम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीवैद्यनाथमित्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यायांगोशेन

४१—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर, इंगरेजि
१८२७ साल २४ माहे आपरेल मतालक (मतावक) वाङ्गला
१८३४ साल १२ माहे वैशाख रोज मङ्गलवार आदालत मज-
दुराट द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके ।

नवकिशोरदास

सायेल

सायेलेर छमिल मुनसी गोलाम बतुल हाजीर हइल । साये-
लेर सओयालेर लिखित निवेदनेर अनुमोदने ओ दस्तावेजातेर
दृष्टे सायेलेर दखली स्थान हइते शरवराहकार महकुफी ओ
अन्य २ विषय सम्बलित ए आदालतेर हुकुम सादर हओनेर

प्रार्थनाय. ऐ सञ्चोयाल ओ जंगनाथ चक्रवर्तिर नामिक मत्कार-
नामा ओ ऐ उकिलेर, नामिक ओकालतनामा ओ इंगरेजी
१८२६ सालेर २० शेतम्बर मासेर-हञ्चोया जिला मयमनसिहेर
आदालतेर रोयकारिर नकल ओ सन हालेर जनओरि मासेर
२०/२७ तारिखेर लिखित जाहाङ्गीर नगरेर कोट आपीलेर
रोयकारिर नकल दुइ केता सम्बलित, जे हाल मासेर २१ तारिखे
दाखिल हइयाछिल, अच पढा गेल । तदपरे सदासुखपरिडत
छकिल सञ्चोयालेर, शामिल दस्तावेजासेर दृष्टे सरयराहकार
बहालीर, प्रार्थनाय एक केता सञ्चोयाल रामशङ्करराय ओ
शोनारामसरकारेर नामिक मत्कारनामा ओ आपन नामिक
ओकालतनामा ओ बाङ्गला पाठ ओ अचर बाङ्गला १२३१
सालेर १३ पौष मासेर लिखित नवकिशोरदासेर लिखिया
देया एक केता एकरारनामांर नकल सम्बलित अप्राप्त-व्यवहार
गोपीमोहनदासेर माता राजेश्वरिदासीर पक्ष हइते दाखिल
करिलेक दृष्टि आइल । ओ मुनशी दयदर आत्मी उकिल दाजिर
हइया रामकिशोररायेर तरफ हइते वाहार हिस्या क्रोक हइते
खालाश पाओनेर मजमुने एलाका जाहाङ्गीरनगरेर कोटेर
हाकिमदिगेर हुकुम बहालीर प्रार्थनाय अन्य विषय सम्बलित
एक केता सञ्चोयाल मये रघुनाथरायेर नामिक मत्कारनामा
ओ आपन नामेर ओकालतनामा दाखिल करिलेक, पढा गेल ।
तदपरे सायेलेर उकिलेर स्थाने जिझाशा गेल जे आठ भ्रातार
मध्ये चारि भ्राता जे आपन स्त्री राखिया तिसन्तान मरियाछे
से चारि भ्रातार नाम कि छिल । जबाब दिलेक जे शिवमोहन
ओ ब्रजकिशोर ओ शोभाराम ओ कुञ्जकिशोर । वाहार मध्ये
कुञ्जकिशोर स्त्री ओ शिवमोहनेर स्त्री मरियाछे, ओ शोभारामेर
स्त्री ओ ब्रजकिशोर स्त्री वर्तमान आछे । जाना गेल जे नवकिशोर

दासेर सञ्चोयाले लेखा आछे ये आमार भ्राता गौरकिशोरदास
ससार त्यस हइया आपन अस्यावर वस्तु आपन स्त्री राजेश्वरी
दास्याके ओ स्यावर वस्तु आमाके दिया, चैराग्य धर्माश्रय
करिया दशान्त र हइया बहु बाल परे पुनराय आपन बाटीते
आसियाछल । ततुसालीन गोपीमोहनदास नामे एक पुत्र
राजेश्वरीदास्यार गर्भे जन्मियाछे । कि तु शास्त्रमते मसम्माज
मजकुरार ओ साहार पुत्रर सत्व मिलकियते रहे नाइ इति ।
एमते हुकुम हइलो जे, प अदालतेर, पण्डितदिगेर स्थाने दुइ
सञ्चोयाल करा जाय । एक एइ ये यद्यपि ऐ नवकिशोरदासेर
एजहार, सत्य हय, मन्यत हआया नाय राजेश्वरीदास्यार ओ
साहार पुत्र गोपीमोहनदासक गौरकिशोरदासेर मिलकियत
अर्श कि ना ?

द्वितीय, एइ ये सहोदर आठ भ्रातर मध्ये दुइ भ्रातर
नि सन्तान दुइ स्त्री जे अद्याप वत्तमान आछे ताहारदिगेर
एतित्यक्त दुइ अष्टम अशेर सत्वाधिकारिणी बटे कि ना । उचित
ये शनिवार पर्यन्त वङ्गदेशे शास्त्र नुसारे एइ दुइ सञ्चोयालेर
जवाब दाखिल करण । पण्डितदिगेर न्यवस्था छट उचित हुकुम
देया जाहवैक ।

जवानन्यवस्था ।

एतद्वर्मा धरण्याद्वितीयाधपातभयुनकुर्जतीइत्यभिरणदेवधर्माध
करणलि खतत्वचपत्रान्तगतमङ्गनप्र तरुपत्रमबल कय य दशपाधी त्र वस्तु
दनुस रेणोत्तर शिरभते ।

प्रथममभस्योत्तरम्—

यद्यपिनवकिशोरदासोपस्थागतवृत्तान्तगतनवकिशोरदाससम्प्रदान
कगौरवशोरदासक नुबन्धस्वत्व स्पर्शीभूतस्थ चरधन कपयक स्वस्तीदानेभ्यो

दासीसम्प्रदानकगौरकिशोररायकृत कृतस्वत्वास्पदीभूत स्यावरधनविषयक
दानं सत्यत्वेन मन्यमानं सन्निरुपाधिकं स्यात्तदा राजेश्वरीदास्यास्तत्पुत्रस्य
गोपीमोहनदासस्य वा गौरकिशोररायकृत कनककिशोरदाससम्प्रदान-
कृतस्वत्वास्पदीभूतयनान्तर्गतनिरुपाधिदानकृतस्थावरवस्तुषु नाधिकारः ।
किन्तु प्रविलिखितराजेश्वरीदासीसम्प्रदानकनिरुपाधिदानकृतास्थावरवस्तुषु
राजेश्वरीदास्या भवत्येवाधिकारः, न तु सत्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य ।
एवं यद्यप्युपस्थापितगौरकिशोररायकृत कंससारंत्यागस्य वैतान्य-
धर्माभयपात्रदानस्य च सत्यत्वेन मन्यमानत्वेऽपि राजेश्वरीगर्भजावस्य
गोपीमोहनदासस्य गौरकिशोररायोरस्य तत्कृतोपरिलिखितदानविषयीभूत-
स्यावरास्थावरानि रिकृतस्वत्वास्पदीभूतस्यावरास्थावरवस्तुषु तत्स्वत्वो-
परमेधिकारः । यदि च उपरिलिखितं दानं गोपाधिकं स्यात्तदा तदुपाधि-
निष्कृतं विना गोपाधिदानकृतस्थावरास्थावरवस्तुषु राजेश्वरीदास्यास्त-
त्पुत्रस्य गोपीमोहनदासस्य वा अधिकारो भवति न वेति निश्चयो भवितुं न
शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्यास्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।
कुर्व्ययेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥ इति दायभागवि-
(दामा० पु० ३५, २१३१ ग्रन्थभूतनारदवचनम् (नास्मृ० पु०
१५७, १४४२) ॥ १ ॥
उत्तरयेवार्थस्वामित्वं लभेत इति आचार्यो इति गोतमवचनम् ।
(गी० १०४८) । तदपि पितृस्वत्वोपरमेऽत्र जलस्य स्वामित्वहेतुत्वेनोत्प-
त्तिमात्रसम्बन्धेनान्यसम्बन्धाधिक्येन जनकधने पुत्राणां स्वामित्वात्तदने-

१. ० भूत०—व्य० ।

२. गोपी०—व्य० ।

३. ० दानं—व्य० ।

४. स्वानंरान्—नास्मृ० ।

५. सर्वमीशास्ते—नास्मृ० ।

६. ते—नास्मृ० ।

७. ० र्म स्वामित्वान्त्व०—व्य० ।

८. ० त्वादनम्—व्य० ।

९. ० अत्रहेतुत्वेनोत्पत्ति०—व्य० ।

पुत्रो लभेत, नान्यः सम्बन्धीत्याचार्या मन्यन्ते इत्यर्थकम्—इतिदायवत्त्व-
लिखनम् (पृ० २) ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

आदाना सहोदरभ्रातृणां मध्ये द्वयोर्भ्रात्रोरनपत्ये द्वे स्त्रियौ विद्यमाने
स्याताम्, तयोः स्वस्वपत्नित्वात्काष्ठभ्रातृसाधारण अनुदायधनान्तर्गतस्वस्वपति-
भोग्याशेऽधिकार—इति वङ्गदेशचलितदायभागदायवत्त्वविवादमन्त्रालय-
विवादायां वसेदुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादि-
(दासां पृ० १५१, १५१, १५१) ग्रन्थभृत्याश्वत्थवचनम् (१, ११५)
॥ १ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतिराम

श्रीहरिशरणम्

श्रीवैद्यनाथमश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यानागीशेन

४२—रोवकारि मिसिल आदालत नेजामत इजरेजी १५२७
शाल सारिख १ मैइ मतावक १६ माह. चैशाख सन १२३४
घाफ्फला रोज मङ्गलवार आदालत मजबुरार द्वितीय हाकिम
श्रीयुत पुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके—

शहूरदास—

शायेल ।

शायेल हाजिर हइलो। हाल सनेर २६ मार्च मासेर लिखित
आजिमावादेर कोर्ट सरकोटेर एक बेता स्टिरन-साहार सम्बलि-
तेर रोवकारि ओ मर्दमार फागजात समेत पहुँचिया ए आदा-
लते दारिमल हओया सओयाल आदि सहित अथ पडोगेल ।
हुकुम हइलो ये ए आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल
फराजाय ये यद्यपि मन्यत हओया जाय ये शहूरदासपटन

ओयार सायेल ४४ टाका जगद् किम्बा ५० टाकार एक केता तमरुसुक रामचरणपटनओयार स्थाने लिखाइया, जइया आपन स्त्री मसम्मति रघुवंशीयाके ऐ रामचरण स्थाने समर्पन कइया थाके, ओ रामचरण ऐ, स्त्रीके आपन स्त्रीत्व व्यवहारै अनियाथाके ओ स्वयं ऐ स्त्री आपन आशल पतिर दौरात्म्ये एजहारे रामचरणपटनओयारेर निकट थाकिते सम्मत थाके । ए प्रकारे शङ्करदास सायलेर निमित्ते स्वामित्व स्तुत्व बाकि रहियाछे कि ना । ओर ऐ स्त्री ऐ रामचरणेर निकटे रहिवेऊ, किम्बा आशल पति तलब करण प्रकारे, सम्मत किम्बा असम्मत हय, पुनराय आशल पतिर निकट जाइवेऊ । उचित ऐ फोजदारिद कागजातेर मजमुन विवेचना कइया ए विषयेर जवाब पश्चिम देशेर शाखानुसारे शनिघार पर्यन्त दाखिल करेन । एत कालीन उचित हुकुम देया जाइवेऊ इति—

श्रीर्जयतितराम्

जमानव्यवस्था

एतदधर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटनीइशामिटणहेषधर्माधिकरणलिखितविचारपनान्तर्गतप्रभप्रतिरूपनमेवं तत्समर्पितफौजादेरिसकधर्माधिकरणीयपत्राणि चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

मयार्थिशङ्करदासपटनओयारेण चतुश्चत्वारिंशद्राजतमुद्रा किं वा पञ्चाशद्राजतमुद्राणामेकमृणालेख्यं रामचरणपटनओयारसकाशाल्लेख यित्वा गृहीत्वा स्वस्ती रघुवंशीयानाम्नी तद्रामचरणस्थाने समर्पितेति मन्यमान स्याद्, एव रामचरणपटनओयारे रघुवंशीयया सह स्वस्तीनद्

१ ॥ रघोद-व्यप० ।

२ किम्बा—व्यप० ।

३ ०कं नख०—व्यप० ।

व्यवहारं कृतवान् स्यात्, अथ च सा स्त्री स्वकीयपाणिग्राहकपतिदौरात्म्योप-
स्थापनेन रामचरणपटनश्रोयारस्य सन्निधौ स्थातुं सम्मता स्यादेतादृश-
प्रकारे सत्यवर्धिनिः शङ्करदासस्य पतित्वप्रयुक्तस्वत्वमेत्येव; एवं सा स्त्री
स्वपतिकृताहाने सति तत्सन्निधौ स्थातुमसम्मता सम्मता वा पुनः स्व-
कीयपाणिग्राहकपतिसन्निधौ गन्तुं योग्या भवति, यतः प्रभुसमर्पितफौजदारी-
संश्लेषधर्माधिकरणीयपत्रजातविवेचनया अर्थिशङ्करदासकर्तृकस्वस्त्रीविक्र-
यस्य दानस्य यानवगमात्, प्रत्युत रक्तगोपालनामकसाक्ष्युपस्थापितवृत्ता-
न्तेनोपरिलिखितश्रृणुलेख्यञ्च अर्थिशङ्करदासकर्तृकस्वीकाराभावावगमात् ।
एवं रघुवंशीयोपस्थापितवृत्तान्तेन तस्या रामचरणपटनश्रोयारस्थानस्थितौ
पतिदौरात्म्यमाश्रित्यैव प्रयोजकत्वावगमात्, अथ च रामचरणपटनश्रोयारोप-
स्थापितवृत्तान्तेन तस्याः पतिभगिनीपतित्वसम्बन्धेन तत्सन्निधानस्थित्यव-
गमाच्च । एवं रामचरणपटनश्रोयारसंश्लेषधर्माधिकरणीयवृत्तान्तोपस्थापित-
वृत्तान्तेनार्थिशङ्करदासकर्तृकरामचरणसकाशात् चतुश्चत्वारिंशद्राजत-
मुद्राग्रहणपूर्वकमेताश्चतुश्चत्वारिंशद्राजतमुद्रा मया गृहीता इव रघुवंशीया-
नाम्नी स्त्री त्यक्तस्वर्धकलेख्यदानं प्रतीयते । परन्तु तत्सोख्यस्य प्रभु-
समर्पितपत्रेष्वदशनेन मुद्राग्रहणस्यापि सन्देहः । यद्यपि मुद्रा गृहीतास्तदा
तत्पत्रजातनिविष्टश्रृणुलेख्यस्य किमावश्यकत्वमिति । यदि च प्रत्यर्थिपन-
चरणनिर्दिष्टसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तस्यैव, सत्यत्वेन स्वीकारस्तथाप्येतादृश-
दारविक्रयस्य शास्त्रानुसारेण व्यवहारानुसारेण च सिद्धिर्भवितुं नार्हति ।
अथ च यदि कश्चित् शास्त्रव्यवहारविरुद्धं कर्म करोति तं दण्डयित्वा एता-
वत्कार्यमवश्यं परावर्त्तनीयम् । तस्माद्रामचरणसकाशात् गृहीता
रघुवंशीयानाग्री स्त्री अर्थिना शङ्करदासेन स्वभर्त्रा यजतो भरणिया-इति
पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावोरमित्रोदयव्यवहारप्रयुक्तस्मृतिचन्द्रिकादिप्र-
न्यानुसारिणी व्यवस्था—

१ ० नाने—२५१० ।

२ ० लेख्य—२५१० ।

३ ० दारि—२५१० ।

अत्र प्रमाणम्—

निःक्षेपः पुत्रदाराश्च सर्वस्वं चान्वये सति ।

आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्तमानेन देहिना ॥

अदेयान्याहुराचार्यो यचान्यसौ प्रतिश्रुतम्—इति मिताक्षरा (पृ० २४४) वीरमिनोदयस्मृतिचन्द्रिका (पृ० १६१) व्यवहारमयूखादिग्रन्थलिखित-
नारदवचनम् (नामसं०, पृ० ८६ ५४, ५) । १ ।

गृह्णत्यदत्तं यो मोहाद् यथादेयं प्रयच्छति ।

दण्डनीयायुभागेतौ धर्मज्ञेन महीक्षिता—इति (मिता० पृ० १४६;
२।१७६,) वीरमिनोदय (वीमि० पृ० ३६३) स्मृतिचन्द्रिकादिग्रन्थ-
(स्मृच० पृ० १६४) धृतनारदवचनम् (नामसं० पृ० ६१, ५११;
नास्मृपृ० १४०, ७।१२) । २ ।

अदत्तादेयमहणाद् गृहीतस्य परावर्तनमपि कार्यमिति गम्यते—

इति वीरमिनोदय (पृ० ३६४) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

रक्षेत् कन्यां पिता विचां पतिः पुत्रास्तु वादर्घके ।

अभावे ज्ञातयस्तेषां न स्यातन्व्यं क्वचित् स्त्रियाः ॥

इति मिताक्षरा (पृ० २५) वीरमिनोदयादि (वीमि० पृ० १५०)
ग्रन्थलिखितपाशवत्क्यवचनम् (१, ८५) ४ ।

पिता रक्षति कीमारे भर्ता रक्षति यौवने ।

रक्षन्ति स्यावरे पुत्र न स्त्री स्यातन्व्यमर्हति ॥

इति मिताक्षरादिग्रन्थधृतमनुवचनञ्चेति (मस्मृ० पृ० ३४६) ५ ।

श्रीर्जयविततराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवेधनाथमित्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

१ निक्षेप पुत्रदार च—नास्मृ सं० ।

२ सर्वस्व पात्र—व्यपृ० ।

३ गृह्णत्य—व्यपृ० ।

४ लोभाद्—मिता० ।

५ यथा—नास्मृ० सं०, यथादेयं—व्यपृ० ।

६ अदेयदायको दण्डयस्तथादत्तप्रतीक्षक—नास्मृ०, तथादेयस्य दायक—नमसं० ।

७ गृहीतस्यपरावर्तनमपि महीक्षिता कार्यम्—स्मृतिचन्द्रिकायाम् ।

८ पुत्राश्च—१४ स्मृ० ।

९ मिताक्षरायानु-वचिदपि स्त्रीणां नैव स्यातन्व्यम्—इति तस्यते ।

४३—आदालत आपिल एलाके अजिमावाद—

शदर देओयानी आदालतैर पण्डितदिगेर स्थाने सओयाल-जवाब—यद्यपि एक व्यक्ति गयाओयाल ब्राह्मण आपन सहोदरा भगिनी ओ ताहार पतिर नामे वाटीर दानपत्र, ये ताहार नकल पाठाने याइतेछे, एइ प्रकार करियाथाके ये आपन जीवदशा पर्यन्त ऐ वाटीते थाकिया आमार मृत्युर परे उहारा आमार क्रिया कर्म करिवेक, ओ सहोदरा भगिनी, ओ ताहार पति दातार पूर्वै मरियाछे, ओ ताहार परे दाता-मरियाछे, ए प्रकारे शांखानुसारे ऐ जायगा सहोदरा भगिनी ओ ताहार पतिर उत्तराधिकारिदिगेके अश्विक, किम्बा दातार उत्तराधिकारिदिगेके इति । शन १८२७ इजरेजि तारिख ५ माहे मार्च मतावक २२ माहे फाल्गुण सन १२३४ फराली लेखा गेल—

रोषकारि मिशील आदालते दे(ओ)यानी सदर इरेजी सन १८२७ साल तारिख १५ मेइ मतावक—

लच्छिरोम—

आपीलाएट—

मंशर्मात आनन्दिवाइ—

रण्याडएट—

शन हालेर ५ मार्च मासेर लिखित अजिमावादेर प्रबनशन कोटेर एक केता सार्टापकिट ताहार सामिलेर रोषकारि आदि सहित पहुँचिया अब दृष्टि आइल । हुकुम हइल ये पण्डितदिगेर स्थाने जवाब शनिवार पर्यन्त दाखिल कराइया दृष्टि करा जावे इति ।

इरेजी शन १८२७ सालेर २६ मेइ व्यवस्था दाखिल हइया—
पाटन पाठानेर हुकुम सारद हइल—

श्रीजयतिराम

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयापिपतिश्रीयुतकुटीनीइशमितसादेवधर्माधिकर
बलिखितसप्तविंशत्यधिकाशदशशताब्दीयमेइमासीयपञ्चदशदिवसीपविचार

पत्रलिखिताद्यानुसारेण... तत्समर्पितपाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकोटापीला-
ख्यधर्माधिकरणोपविचारपत्रादिनिविष्टप्रश्नपत्रमेवं दानपत्रप्रतिरूपपत्रञ्चाव-
लोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यद्येकः कश्चिद् गयावास्तब्राह्मणः स्वकीयसहोदरभगिनीनामकमेवं
तत्पतिनामकञ्च यादृश दानपत्रमेतत्प्रकारेण लिखितवान्—स्वजीवन-
पर्यन्तं तस्यां वादयामहं स्यास्यामि^१; अस्मन्निधनानन्तरं तायस्मन्निध्याः
करिष्यतः, एवं दातारि विद्यमाने सति तौ जायापती भृतौ स्यातामेवं तदनन्तरं
दाता भृतश्चेत् एतत्प्रकारे सति उपरिलिखितदानपत्रलिखितरीत्या शास्त्रा-
नुसारेण सा वादी दातुः सहोदरभगिन्यास्तत्पत्युश्चोत्तराधिकारिणामेव
भवति, न तु दातुस्तदाधिकारिणाम्; यतो दानपत्रे भौविष्णुपदे सहोदर-
भगिनीतत्पत्युभयसम्प्रदानकं कुशोदकग्रहणपूर्वकं कृत्वा कल्पकरणपूर्वक-
यादृशादिसर्वस्यत्यागात्मकधर्मार्थदानं मया कृतमिति दात्रा लिखितम् ।
एतादृशवैधदानेन तदनन्तरकाल एव दातुः स्वत्वनिवृत्तिः, ग्रहीतुः स्वत्वो-
त्पत्तिश्च भवति । एवं दात्रा सम्प्रदानभूतयोस्तयोर्जायापत्योः सन्तानयोः
स्वायत्तीभूतग्रहादिनिष्ठावत्तत्त्वसम्पादनमपि कृतमित्यपि लिखितम् । अथ च
दानादिना वद्धे^२ तदग्रहे तौ सम्प्रदानभूतौ जायापती दानपत्रानुसारेण
तिष्ठतामायत्तत्त्वञ्च कुस्ताम्, अस्मत्स्वत्वमद्यावधि किञ्चिदपि नास्तीति-
दानपत्रलिखनेन दातुः स्वत्वविनाशस्य सम्प्रदानभूतयोस्तयोः स्वत्वस्य च
दृष्टीभूतत्वेनावगमात् । अतएव दानकृतवाच्यां यावज्जीवं दातुः स्थिते,
सम्प्रदानकर्तृकदातुः आद्याद्यौदृक्चैदिकक्रियाकरणभावस्य च सम्प्रदान-
स्वत्वोत्पत्तिप्रतिबन्धकोपाधित्वं न सम्भवति, उपरिलिखितप्रकारेदानस्य
वैधत्वेन धर्मप्रयोजनकत्वेन भोगद्वारा पूर्णतया सम्पन्नत्वेन च योपाधित्वा-
र्भावात्—इति पाटलिपुत्रप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरायोरमिश्रोदयव्यवहार-
मंयूलादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देशे काल'उपायेन द्रव्यं अदासमन्वितम् ।

पात्रे प्रदीयते यत्तत् सकलं धर्मलक्षणम्—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-

(मिताष्ट० ३) धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (१।६) ॥ १ ॥

प्रदीयते यथा न प्रत्यावर्त्तने तथा परस्वत्वावसानं त्यज्यते ।

एतद्धर्मस्योत्पादकम्—इति मिताक्षरालिखनम् (पृ० ३) ॥ २ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् (५।१५२) ॥ ३ ॥

स्वामी रिव्यक्तयसंविभागपरिग्रहाधिगमेषु (गौच० १०।१८) ।

आक्षेपस्याधिकं लब्धम्—(गौच० १०।३६) ।

ह्यत्रियस्य विजितम् (गौच० १०।४०) ।

निर्विष्टं वैश्यशूद्रयोः (गौच० १०।४१) इति मिताक्षरा (पृ० १३५)

वीरमित्रोदयव्यवहारमयूखा (व्यम० ८६ उक्त०) दिग्रन्थयुतगौतमवचनम् ॥ ४ ॥

तत्र च हिरण्यवस्त्रादाबुदकदानानन्तरमेवोपादानादिसम्भवाद्—

इत्यादिमिताक्षरालिखनम् (पृ० २४१) ॥ ५ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

४४—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर इक्करेजि
१८२७ साल तारिख १४ माहे जुन मताबक बाक्कला १२३४ साल
१ आपाठ रोज गृहस्पतिवार आदालत भजकुरार द्वितीय हाकिम
श्रीयुत कुर्टनी इशमिट साहेबेर बैठके—

राममोहनघोष वनामे रामधनराय ओगयरह
शायेलेर उकिल मुनराी गोलाम बतुल हाजिर हइल । सन हालेर
३१ मेइ मासेर हओया रोवकारिर लिखित पञ्चम हाकिमेर
हुकुमानुसारे खास आपीलेर सओयाल ओ गयरह, तत्तम्पर्किय

कागजात आमार बैठके उपस्थित हइया दृष्टे आइल । उभयेर एक धारे जाना जाइतेछे ये विरोधि लाट अर्थात् लाट परला वर्द्धमानेर काछारि मोकामे रासयात्रा दिवस निलाम हइया छे । मुद्देदिगेर एजहार एइ रूप जाना चाहतेछे ये आमरा रास-यात्रार दिवस बाकि टाका जमिदारेर आगलाल निकट निया-छिलाम, जमिदारेर आमला रासयात्रार दिवस हओनेर ओ-जरे से दिवस बाकीर टाका लओनेर स्वीकार ना करिया जबाब-दिलेक ये कल्य आइस, लओया जाइवेक, ओ आमरा गेले परे यात्रार दिवस हओनेओ महालेर द्वितीय वन्दवस्त करिलेक, आर इङ्गरेजि ८१६ शालेर अष्टम आइनेर द्वादश धाराते हुकुम आछे-निलाम, अर्थात् द्वितीय वन्दवस्त, ये एइ आएन निर्दिष्ट ह-ओयार पूर्व हइया थाके, तत्सम्पर्कओ ऐ डाँडा ये ऐ आइनेर एकादश धाराते लेखाआछे, निलाम-अर्थात् द्वितीय वन्दवस्त, पूर्व प्रसिद्ध ओ बिना शठताय ओ देश न्यवस्थार मन हओन नियमेओ वर्त्तिवेक । यथा सन्देह हइतेछे ये शास्त्रानुसारे एइ प्रकार कार्य रासयात्रार दिवस सिद्ध ना हय, विरोपतो रास-यात्रार दिवस कहिया बाकीर टाका लओने अस्वीकार हइया, आगत कल्य ताहा लओनेर करार करिया, बाकिवारविगेक विदाय दिया, परे सेइ दिवस रासयात्रार दिवस हओनेओ बाकि बाबिर हेतुते महालेर द्वितीय वन्दवस्त ये बाकिवार-दिगेर असाक्षाते करायाय सिद्ध रहिवेक ना । एइ प्रयुक्त ए विषये बङ्गदेशेर शास्त्रेर जिहासा करण आवश्यक हइनो । ए कारण हुकुम हइलो ये आदालतेर पण्डितेरा बङ्गदेशेर शास्त्रा-नुसारे परस्व दुइ प्रहर पर्यन्त ए विषयेर जबाब लिखिया गुजराएन ये मुद्देदिगेर एजहार सत्य ओ रासयात्रार दिवस निलाम हओन सत्येओ ३ प्रकार कार्य ययार्थ ओ सिद्ध हइते-पारे कि ना, ओ पण्डितदिगेर जबाब दाखिल हइले परे उचित हुकुम वेओया जाइवेक इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाचव्यवस्था

एतदधर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतकुटुम्बीदशमिहसाहेवधर्माधिक-
रणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रथमप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-
नुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि नृत्तान्तस्य सत्यत्वं स्यात्तदेतादृशकार्यस्य ह्यलकृतत्वेन, अथ
चायिनोऽवशिष्टकरदानानुकूलव्यापारे सत्यपि सयाजकरभूस्वाम्यधिकृतैस्तत्-
करमगृहीत्वा करदानानुरूपोपाधिसम्बन्धेन^१ भूस्वामिकृतदाननिमित्तमार्थिनां
भोगोपयुक्तं^२ सत्यं यत्र तस्य प्रयासान्तरकरणेन निष्पन्नत्वाच्च सिद्धिर्भवति^३
नार्हति; यतः सयाजकरभूस्वामिसत्काशात् करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन^४ तत्-
कृतदानान् प्रजादीनां भोगोपयुक्तं सत्यमुत्पद्यते । तत्त्वत्वञ्च करदानरूपो-
पाधिसम्बन्धेन^५ तिष्ठति, तदभावे गच्छति । प्रकृते स्वर्ग्युपरपापितनृत्तान्तेन^६
अधिकृतं करदानाभावावगमात् सुतरां करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन भूस्वा-
मिनो दाननिमित्तमार्थिनां भोगोपयुक्तं सत्यं गन्तुं न शक्नोति । अथ च
भाषायां निलामशब्दवाच्यस्य द्वितीयवन्दयस्तशब्देन प्रतिद्वयस्य द्वितीय-
प्रयासस्य रासयाधादिवसीयत्वेन^७ सिद्धिर्भवति न वेत्यस्येदानीं बह्वदेशचलित-
ग्रन्थेष्वलिलनात्—इति बह्वदेशचलितमनुविवादमज्ञायां वादिग्रन्थात्
सारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् ।

यत्र वाप्युपाधि परयेत् तत्तत्त्वं विनिवर्त्तयेत्^८ ॥

—इति मनुवचनम् (८११६५) ॥ १ ॥

१. सम्बन्धेन—अप० ।

२. सिद्धिः—अप० ।

३. चन्देन—अप० ।

४. ० न भितिः—अप० ।

५. दिवसीयत्वेन—अप० ।

६. निवर्त्तयेत्—अप० ।

तामिथ वषो(प)युक्तकरदानेन वषोपयुक्तस्वत्वमर्ज्यते । तद्वर्षे च राज्ञा तद्भूमेरन्यत्र दानविक्रयणादिकरणां न सिद्ध्यति । यदि तु प्रतिवर्षं मुज्यतां त्वया-इत्यादि प्रतिज्ञाभवत्तदा तु यावद्वर्षेष्वेव स्वत्वानुमतेः कदापि दानविक्रयादिकं न कर्तव्यम् । यदि तु प्रजा करं न ददाति तदा सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धमिति अन्यत्र दातुं शक्नोतीति—इति विवादमङ्कार्यवलिखितम् (१ विवाम० पृ० ३०८ क. ख) ॥ २ ॥

करदानरूपोपाधिसम्बन्धेन राज्ञो दाननिमित्तमेव प्रजानां स्वामित्वं जायते । अन्यत्र गमने च करदानाभावे उपाध्यसिद्ध्या दानासिद्धिः । न च राजसम्बन्धतुल्यसम्बन्धापत्तिरिति वाच्यम्, राज्ञस्तथाप्येच्छाभावात् । तथाहि-एतस्यां मम भूमौ मत्स्वत्वे विद्यमान एव निरूप्य भोगोपयुक्तं तव स्वत्वं भवतु-इति राज्ञस्तुष्ट्या तादृशमेव स्वत्वं जायते-इति (१ विवाम० पृ० ३१० क) विवादमङ्कार्यवलिखितञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

४५—सदर देशोयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुक्त कुर्तनी इशमिट साहेबेर हजुर हइते आदालत मजकुरार पण्डित-दिगेर नामे इङ्गरेजी १८२७ शालेर ३ जुलाई मासेर रोयकारि लिखित छन्दासिंह आपिलाष्ट मराम्मात दुर्गाकुमार रप्पाडरदेर मकर्द्माते बृहस्पतिवार दिवा दुइ प्रहरेर मध्ये बचन ओ प्रन्धेर वेओरा सम्यलित जवाब दाखिल करगोर हुकुमे सओयाल-सकल, ये एइ—

प्रथम सओयाल—

पाटना सहर निवासी एक व्यक्ति हिन्दु आपन तिन स्त्री ओ चारि कन्या थाकिते आपन धन आपन तिन स्त्रीर मध्ये एक

खीर भ्राताके ओ तिन खीर मध्ये द्वितीय खीर गर्भज कन्यार पतिके फशाली १२१६ शालेर ४ माघ तारिखे लिखिया दिया फशाली १२१६ शालेर २ वैशाख तारिखे ऐ तिन खो ओ चारि कन्याके राखिया मरियाछे । तद्देशेर शाखानुसारे हेवानामा सिद्धि हइते पारे कि ना इति ।

द्वितीय सञ्चोयाल—

ऐ व्यक्ति ओ ताहार तिन खीर मध्ये दुइ खी मरणेर परे तृतीय खीर तिन कन्यार मध्ये एक कन्या आपन दुइ भगिनीर विन सराकते, आपन मातार विद्यमाने, आपन भ्रातार पत्नी-दिगेर मध्ये एक जन निःसन्तान मरण हेतुते ऐ दाता व्यक्तिर त्यक्त धनेर अर्द्धकेर दाओया करिलेक । ऐ दान मिध्या हओन प्रकारे मृत कर्ता व्यक्तिर कन्यार पक्ष हइते ए प्रकार दाओया, ये मुदाइयार मातार सम्मति क्रमे दइयाछे, सिद्ध हइते पारे कि ना इति ।

तृतीय सञ्चोयाल—

ऐ दानेर सिद्धताते मुदाइयार माता प्रभृति ऐ मृत व्यक्तिर खीरदिगेर एक वार यद्यपि ऐ कन्यार दाओयार पूर्व संघटन हइयाथाके कन्यार दाओयार नियेधि बोधक बटे कि ना इति ।

श्रीज्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतदुद्दर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिभीमुतकुटनीइरामिदसादेवधर्माधिकर-
लिखितप्रभप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर
लिख्यते—

१. मध्ये मध्ये—अप० ।

२. आपन मातार पत्नी—अप० ।

यद्येकः कश्चित् पाटलिपुत्राख्यनगरनिवासी हिन्दुजातीयो व्यक्ति-
विशेषः स्वकीयानां तिसृणां स्त्रीणामेवं चतसृणां कन्यकानां विद्यमानानां
मध्ये तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्याः स्त्रिया भ्रात्रे द्वितीयस्याः कस्याश्चि-
ज्जामात्रे स्वस्वत्वात्पदीभूतघनस्य^१ दानपत्रं लिखित्वा दत्तोपरिलिखितो-
त्तिसः^२ स्त्रियभूतसः कन्यकांश्च संरक्ष्य मृतश्चेत्तदा तद्दानपत्रं यदि तिसृणां
स्त्री(णा)भग्नान्छादनोपयुक्तं द्रव्यमेवं चतसृणां कन्यकानां मध्ये या न
विवाहितास्तासां विवाहकालपर्यन्तमन्नाच्छादनोपयुक्तं द्रव्यमथ च विवा-
होपयुक्तं द्रव्यं विनाऽवशिष्टघनस्य चेत्तदा तद्दानपत्रलिखितदत्तघनस्य
दानमेतत्प्रकाराभावे चोपरिलिखिताभ्याच्छादनाद्युपयुक्तद्रव्यं विनाऽवशिष्ट-
घनस्य दानञ्च सिद्धं भवितुं शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

स्वं कुटुम्भाविरोधेन^३ देयम्—इत्यादि मिताक्षरा (पृ० २४४) वीरमित्रो-
दय (पृ० ६५१) व्यवहारमयूखव्यवहारकोस्तुमादिग्रन्थपुतया शब्दव्यवचनम्
(२/७५) ॥ १ ॥

स्वमासीयं कुटुम्भाविरोधेन (कुटुम्बानुपरोधेन) कुटुम्बभरणा-
वशिष्टमिति यावत्तद्घातं तद्भरणस्यावश्यकत्वात् । तथा च मनु-
वृक्षौ च मातापितरौ साध्वी भार्या सुतः शिशुः (८/१२५)—इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनम् (पृ० २४४) ।

देयस्वरूपमाह नारदः^४ (नामसं० पृ० ८२, ५/६)

द्रव्यं कुटुम्बभरणाद्^५ यत्किञ्चिदतिरिच्यते ।

तद्देयमुप^६ हृत्यान्यद् दददोपमवाप्नुयात्—इति ।

१. स्वस्वरूपमाह नारदः ।

२. उत्तिसः तिसृणां—अप० ।

३. कुटुम्बविरोधेन—अप० ।

४. यथाह—मिता० ।

५. ॥ अप—अप० ।

६. भरणात्—अप० ।

७. उपहृत्यान्यान्तददो—अप० । उपहृत्यान्यं—सूच० ।

८. दददोपमः समानु—नामसं० ।

अन्यद् उपहृत्य मर्तव्यकुटुम्बमनवरूपेत्यर्थः । उपरोक्षश्च (निस्वतया)
भोजनाच्छादनादि राहित्यनिबन्धनतोऽप्राप्तमितो, न ताम्बूलादिभोगसा-
धनवैकल्यनिबन्धनः—इत्यादि (वीमि० पृ० ३६४) स्मृतिचन्द्रिका (पृ० १६०)
ग्रन्थलिखनम् । ३ ।

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्यादेयं वैवाहिकं वसु—इति स्मृतिचन्द्रिका-
(पृ० १६०.) ग्रन्थलिखितदेवलवचनम् । ४ ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तद्व्यक्तेस्तिष्ठणां तत्स्रोणां मध्ये द्वयोः स्त्रियोश्च मरणोत्तरं तृतीयस्याः
स्त्रियाः कन्याः, आसां मध्ये एकस्याः कन्याकायाः स्वकीय भगिनोद्वय-
साधारण्यं विना विद्यमानायां स्वमातरि सा परमातृणां मध्ये एकस्याः
निःसन्तानायाः मरणेन तस्या दातृव्यक्तेस्त्यक्तं घनाद्भातिस्तदानस्य
मिथ्यास्वप्रकारे सत्यमि तन्मातृसम्भृत्यापि सिद्धां मवित्रं न शक्नोति,
यतस्तस्याः पूर्वमधिकारिणां मातरि विद्यमानायां तस्याः स्वत्वमेव
नोत्पद्यते इति—

अत्र प्रमाणम्—

अनपत्यस्य घनं पत्यमिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि मिता-
क्षरादि (मिता० पृ० २१७) ग्रन्थपुत्रवृद्धिपुत्रवचनम् (विस्मृ० १७।६-७) । १ ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तदानं दातृव्यक्तेस्तस्य अधिकारिणां स्वत्वोत्पत्तिप्रतिबन्धकं चेदयिन्या
मातृप्रभृतोनामयान्मृतव्यक्तेः स्त्रीणां तत्तत्कन्याया घनप्राप्तीच्छाया
पूर्वकालोत्पत्त्य स्वोक्तस्य तदानसाधकत्वेन निदिश्य तत्कन्याया-
स्तदानप्राप्तिनिषेधकत्वं विना साधकत्वं नास्ति—इति पाटलिपुत्राख्ये—

१. अन्तर्ग—सूत्र० ।

२. उपर्युक्त—सूत्र० ।

३. ० इत्येवमेव—सूत्र० ।

४. अत्रापि—सूत्र० ।

५. वीमिन्द्रोदय—व्यप० ।

६. विद्रव्य—सूत्र० ।

७. ० सम्भृत्य—व्यप० ।

८. ० च्छाया—व्यप० ।

नगरप्रभृतिचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

(स्व)स्वत्वनिवृत्तिः परस्वत्वापादनञ्च दानम्—इति मुन्नेधिनीलिखनम्^१
(पृ० ७४१)

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

४६—रोयकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर इंरेजि
१८२७ शाल. तारिख २२ भाहे जुलाइ मवाबक वाङ्गला १२३४
शाल २६ आपाढ रोज बृहस्पतिवार आदालत मजकुरार
द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इरामिट साहेबेर बैठके ।

छन्दासिंह

आपिलाष्ट

मसम्मात दुर्गाकोडर

रप्पाडण्ट

ए आदालतेर पयिष्ठतेरा हाल मासेर ३ तारिखेर हुकुमानुसारे
व्यवस्था लन्धरे दाखिल करिलेन । आपिलाष्टेर अफिल मुनशी
महम्मद पनाह ओ लाला आवधलालेर हाजिरिते दृष्टे आइल ।
तत् पूरे मुनशी दादार वक्श ओ मौलवी गोनाम एजदानी उकि-
लेरा आपनादिगेर नामिक एक केता ओकालतनामा ओ ए
आदालतेर नाएव तहबिलदारेर दस्तखति आपनादिगेर मेहन्-
तानार^२ चावत मबलम २६६।।। आनार रशीद ओ हाल शनेर
६ जुन मासेर देओया आजिमावादेर कोटेर रोयकारि नकल दुइ

टाका मूल्यकेहर वरुह' द्वाराय रण्पाडण्टेर पक्ष हइते लम्बरे दाखिल करिलेक, पडागेल। तत्परे रण्पाडण्टेर उकिलदिगेर स्थाने जिद्दासा करागेल ये फयशला जारि महकुफिर बाबत तोमादिगेर मओवेकेलार ओजर कि। जयाव दिलेक ये आमार-दिगेर मओवेकेलार ओजर एइ ये फयशला जारि हइयाछे, ओ मओवेकेलारा दखल पाइयाछे। हुकुम हइल ये ए आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने चतुर्थ राओयाल करा जाय। से, एइ ये सहर पटना निचासी एक व्यक्ति हिन्दु तिन छी राखिया, ये ताहार मध्ये एक छी निःसन्ताना, ओ एक खीर तिन कन्या, ओ एक खीर एक कन्या जन्मियाछे, मरियाछे। ओ ताहार परे जे छी निःसन्ताना छिल मरियाछे। वरेराशास्त्रानुसारे मृत खीर अंश कोन व्यक्तिके, ओ ताहार दाओया करयेर समता कोन व्यक्तिके अर्श। उचित् ये एइ सओयालेर वचर परस्व दुइ प्रहर पर्यन्त ग्रन्थ ओ वचनेर वेओरा सम्बलित दाखिल करेण। ताहार परे उचित हुकुम देओया आइवेक इति।

श्रीर्जयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतदम्माधिकरयद्वितीयाधिपतिभीमुक्तकुटुम्बीदशमिदवादेकधर्माधिकरयलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिकुपपत्रमयलोकथ बादशमोओ जाठस्त-दतुणरेओसरं लिख्यते।

यत्नेकः कश्चित् पाटलिपुत्राएनगरनिवासी हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेष-स्तिसः स्त्रिय एवं ताषां तिसृणां स्त्रीणां मध्ये एकस्या एषां कन्यामेक-स्यास्तिसः कन्याका एषां निःसन्तानाश्च संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं निःसन्ताना स्त्री मृता चेत्तदा मृतायास्तस्या निःसन्तानायाः स्त्रियाः पतित्यक्तपनाशो

जीवन्तीनां तत्पत्नीनामेव भवति, एवं तत्प्राप्तीच्छाकरणाद्यमतापि तत्पत्नीनामेव, यतोऽनपत्यपतिघनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽपि तन्मरणोत्तरं तदनं तदभर्तुंरुत्तराधिकारिणामेव भवति । तत्र च भर्तुंरुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे पत्न्या एव प्राधान्यम्-इति पाटलिपुत्राख्यनगरप्रभृतिचलितमितादरावीरमित्रोदयन्यवहारमयूखन्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः-इति वीरमित्रोदयादि-
(वीमि० पृ० ६२७) ग्रन्थभूतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६२१) ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि-इत्यादि मिता-
क्षरादिग्रन्थभूत मिता० पृ० २१७) दुहितृगामिवचनम् ॥ २ ॥

पत्नी दुहितरश्चेव-इत्यादि तच्चद्वयग्रन्थभूतवास्तववचनम् (२।१३५)
॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

४७-सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्तनी इशमिट शाहेवेर हुजुर हइते राय वंशीधर वनामे मनोहर लाल ओ गयरहेर मकईभाते इहरेजी १८२७ शालेर २४ जुलाइ मासेर रोवकारिर लिखित परस्व दुइ प्रहर पर्यन्त वचन ओ ग्रन्थेर वैओरा संस्वलित जवाब दाखिल करणेर हुकुमे आदालत मजकुरारार पण्डितदिगेर नामे सओयाल सकल, एइ ये—

प्रथम सओयाल—

वेहार जिला निवासी एक व्यक्ति हिन्दु कायेत जाति पितृ-
गन विभाग करणेर परे दुइ भातपुत्र ओ चारि दीहित्र राखिया

मरियाछे । ऐ देशेर शास्त्रानुसारे वाहार त्यक्त धन वाहार
भ्रातृपुत्रदिगके अशं कि वाहार दोहित्रदिगके ?

द्वितीय सञ्चोयान—

यद्यपि ऐ व्यक्ति पितृधन विना विभाग करये मरितो वाहार
त्यक्त धन फोन व्यक्तिके अशितो ?

श्रीर्जयतितराम्

एतद्दर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीपुत्रकुटुम्बोद्देशमिटवाहेवदर्माधि-
करणलिखितप्रभप्रतिकारप्रमवलोकय यादृशकोषो आतस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि वेहाराखप्रदेशनिवासी कश्चिदेकः कायस्थजातिः पितृधनविभाग-
कर्यान्मतरं दो भ्रातृपुत्रो चतुरो दोहित्राश्च^१ संख्य मृतः स्यात्तदा तत्
त्यक्तधने चतुर्यो दोहित्राणामधिकारो, यतो दोहित्रेषु विद्यमानेषु विभक्तधने
भ्रातृपुत्राणां नाधिकार इति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि मिवाक्षरावीरमिशोरवादि (बीमि० ६०२) ग्रन्थपुत्र-
यांशमन्त्रवचनम् ॥ १ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तद्व्यक्तिविशेषः पितृधनविभागमकृत्वा मृतस्तदा पितृधने तद्व्यो-
ग्यो भ्रातृपुत्रयोरेव भवति, न तु दोहित्राणां विभक्तधन एव पत्नीदुहित-
दोहित्राणामधिकारस्य मिवाक्षरादिग्रन्थलिखितत्वात्, अविभक्तधने तेषामधि-
काररहितत्वित्यत आह, यं बालभगद्वैतमिताक्षराटीकायां^२ विभक्तधन ए-
व दोहित्राधिकारस्याविभक्तधने तदधिकाराभावस्य च, स्पष्टीकृतत्वाच्चेति

वेदाराख्यप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमिश्रोदयचालम्भट्टकृतमिताक्षराटीकादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

एवं दीहित्रआतृसुतसमवाये मृतस्य विभक्तत्वे दीहित्रस्य चलवत्त्वस्य
अंशहरणो सत्त्वेऽपि पियडादौ स एव चलवान्, अविभक्तत्वे तु पितुः
आतृसुतानामेवांशहरत्वादपि—इति व्यवहाराध्यायस्य मिताक्षराटीकायां
(पृ० २०) चालम्भट्टलिखनम् ॥ १ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४८—सदर देओयाली आदालतेर द्वितीय हाकिम धीयुत
कुर्तनी इशमिट साहेवेर हुजुर हइते पे आदालतेर पण्डितदिगेर
नामै स्वयं ओ आपन अप्राम-व्यवहार आता आनन्दीकालेर
ओयाली रामधुमन्लाल सायेलेर मकईमाते इहरेजी १८२७
शालेर १६ आगष्ट मासेर रोवकारिर लिखित सायेलेर सओयाल
ओ आजिमायादेर कोटेर फयशला ये ताहाते आदालतेर सओ-
याल ओ तथाकार राधाकृष्णपण्डितेर जबाब लिखा आछे एष्ट
ओ सम्पूर्णा अनुमोदन परे बचन ओ ग्रन्थेर वेओराते परस्व
पर्यन्त जबाब दाखिल करणेर हुकुमे सओयाल, एइ ये—

सओयाल—

राधाकृष्णपण्डितेर लिखिया देया आपिल आदालतेर सओ-
यालेर जबाब मिताक्षरा पुथि मत प्रसिद्ध वटे कि ना, अर्थात् हुइ
दाओयार मध्ये सायेलदिगेर मासी जितकेँरेर दाओया किम्बा
सायेलदिगेर दाओया प्रसिद्ध वटे, अथवा हुइ दाओयाइ मिध्या

ओ परिहतेर जवाव प्रसिद्ध । .

राधाकृष्णपरिहतेर व्यवस्था, पइ ये—

पतिमरणानन्तरं तत्पत्नी तद्धनमु(पु)ण्य दुहितुर्विहाय^१ मृता ।
तत्रैका दुहितुमती, द्वितीया पुत्रवती, त्रैर्ष विधवे, तृतीयास्ति^२ यौवना-
वमर्त्तु^३का शनपत्या । तर्हि तदने ताः समांशभागिन्यो भवितुमर्हन्ति, दोहि-
त्री तु न तद्धनहारिणी । पत्नी दुहितरश्चैव—इति मिलादपधृतयाश्वत्थ-
वचनात् (२।१३५) ।

अज्ञादज्ञात् सम्भवति पुत्रपद् दुहिता नृणाम् ।

तस्मात् पितृधनं त्वन्यः कथं गृह्णाति मानवः—इति (मिता० पृ०
२२१) दृश्यतिवचनात्, सदस्यी सदरोनोदा—इति वचनाच्च ।
त्रिवेदिभिराधाकृष्णशर्मणाम् ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

सदर देशोयानी अदालतेर सञ्चोयालेर जवाव व्यवस्था—

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिभीषुतकुर्नेनीदशमित्ठादेवधर्माधिकर-
णलिखितप्रभप्रतिरूपपत्रं तत्समर्पितार्थनिवेदनपत्रं चैवं पाटलिपुत्राख्य-
नगरसम्बन्धि कोटापीलाख्यधर्माधिकरणीयवपत्रं तदन्तर्गततद्वर्माधि-
करणीयप्रभमेधं राधाकृष्णख्यपरिहृतलिखिततत्प्रभोत्तरं यावलोक्त्य विविच्य
च यादृशयोधो वातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

विवादास्पदीभूतं धनं यदि ज्ञानकोमराख्यायाः पतिमरणानन्तरं तदीय-
धनत्वेनोत्तपधिकारित्वेन तत्त्वक्रान्तं स्यात्, अथ च तिस्र एव दुहितरो
निर्पन्ना^१, सर्वा एव वा सधनास्तदा राधाकृष्णख्यपरिहृतलिखितकोट-
आपीलाख्यधर्माधिकरणप्रभोत्तरं मितःक्षुपग्रन्थसम्मतं भवति । यदि च
तिस्रणां दुहितृणां मध्ये एका निर्पन्ना द्वे वा^२ निर्दने तदा तत्परिहृतस्योत्तरं

१. दुहितु—दत्त० ।

२. निर्पन्ना—व्यप० ।

३. इका—व्यप० ।

२. तृतीया तृतीया—व्यप० ।

४. सर्वा—व्यप० ।

तद्ग्रन्थसम्मतं न भवति, मिताक्षरायां दुहितुः पितृधनाधिकारप्रकरणे
अप्रतिष्ठितानामर्थान्निर्द्धानां दुहितृणामभाव एव प्रतिष्ठितानामर्थान्
सधनानां दुहितृणामधिकारविधानात् । एवं चैतत्पक्षे द्वयोर्द्वन्द्वप्रती-
च्छयोर्मध्ये अर्थिनो मातृपुत्रजीतकोमराख्यायास्तत्त्वमस्तधनप्राप्तीच्छा
केवलं तस्या एव निर्धनत्वे, द्वयोर्निर्धनत्वे तदनादंप्राप्तीच्छा, तिसृणां
निर्धनत्वे तत्तृतीयांशप्राप्तीच्छैव तद्ग्रन्थसम्मतता भवति । यदि च विवादा-
स्पदोभूतं धनं ग्यानकोमराख्यायास्तदीयशुल्कामिन्नं स्त्रीधनं भवति,
अथ च तिसृणां मध्ये पुत्रवत्याः सधनत्वे जीतकोमराख्यायास्तदनादं-
प्राप्तीच्छा तद्ग्रन्थसम्मतता भवति, मिताक्षरायां दुहितृणां मातृस्तादृशस्त्री-
धनाधिकारप्रकरणे प्रतिष्ठितानामर्थान्निर्द्धानाम् अनपत्यानां वा दुहितृणा-
मभाव एव प्रतिष्ठितानामर्थान् सधनानां सापत्यानां वा दुहितृणामधिकार-
विधानात् । एवं तिसृणां मध्ये द्वयोः पुत्रपौत्ररूपापत्यरहितत्वावगमात्
पुत्रवत्या निर्धनत्वे, जीतकोमराख्यायास्तदनतृतीयांशप्राप्तीच्छैव तद्ग्रन्थ-
सम्मतता भवति, तत्प्रकरणे मिताक्षरायां निर्धनानपत्ययोद्विविधयोरेव
दुहिशोः प्रथममधिकारविधानात् । अर्थिनां तदनप्राप्तीच्छा चोपरिलिखित-
पक्षद्वय एव विद्यमानत्वात् तस्मात्प्रभृतिषु तद्ग्रन्थसम्मतता न भवतीति ।

अत्रप्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षराग्रन्थवृत्त (पृ० २१७) याज्ञ-
वल्क्यवचनम् (२।१३५) ॥ १ ॥

अप्रतिष्ठिताप्रतिष्ठितानां समवाये अप्रतिष्ठितैव तदभावे प्रतिष्ठिता—
इति दुहितुः पितृधनाधिकारप्रकरणे मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ०-
२२१) ॥ २ ॥

अप्रतिष्ठिता निर्धना अनपत्या वा—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम्
(पृ० २२१, खपुस्तके) ॥ ३ ॥

प्रतिष्ठिताऽप्रतिष्ठितासमवायेऽप्रतिष्ठिता गृह्णाति, तदभावे प्रतिष्ठिता ।
यथा गौतमो मुनिः स्त्रीधनं दुहितृणामप्रदानामप्रतिष्ठितानां चेति ।
तत्र शब्दात् तत्र अर्थानां प्रतिष्ठितानाञ्च । अप्रतिष्ठिता निर्धना अनपत्या

वा । एतच्च शुल्कव्यतिरेकेण—इत्यादि दुहितृणां मातुः स्त्रीधनाधिकार-
प्रकरणे मितानुग्रहग्रन्थलिखनं चेति (पृ० २२६) ॥ ४ ॥

श्रीर्जयतिराम्

श्रीहरिशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

सञ्चोयाल—

४६—सदर देओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत
कुर्तनी इशमिट साहेबेर हुजुर^१ हइते ये आदालतेर पण्डितविगेर
नामे इक्करेजि १८२७ सालेर ११ शेवम्बर मासेर रोपकारि
लिखित अमिमानवाय^२ सा(ग)लेर मकईमाते परस्व हुइ प्रहर
पर्यन्त वारानश देशेर शाखानुसारे वचन ओ ग्रन्थेर वैओरा
सम्बलित जघाय दाखिल करणेर हुकुमे सञ्चोयाल, पइ ये —

हिन्दु चारि व्यक्ति टीका लइया आपनादिगेर मिलकियतेर
मौजा एक व्यक्ति हिन्दुर निकट बन्धक राखिलेक । ताहार परे
बन्धक दाता चारि जनेर मध्ये एक जन चाहिलेक ये ये बन्धकेर
बेवाक टाका दिया समस्त मौजार बन्धक छाडाय, ओ बन्धक
प्रहीता बाकि बन्धक दाता तिन जनेर असम्मति जानाइया
एक जन बन्धक दातार स्थाने समुदाय बन्धक टाका लखोन
ओ समस्त मौजार बन्धक हइते छाडन स्वीकार न करिया
बाहिलेक ये ये एक व्यक्ति बन्धक दातार स्थाने बन्धक वावद
चतुर्थ अंश टाका लइया ताहार अंश परिमाण अर्थात् बन्धक
मौजार चतुर्थ अंश छाडिया दिया बाकि चारय आना मौजार
पर पूर्व मत बाकि तिन जन बन्धक दातार पक्ष हइते बन्धक

१. हुजुरा इते—अ० २. अमिमानवाय—इति स्त्रीवाचकः पाठः ।

३. येक वचन करे—अ० ४.

छाडान पर्यन्तं दाखिलकार थाके । अतएव जिज्ञासा जाइते छे । यद्यपि यथार्थद्वै वाकि तिन जन बन्धक दाता आपन हिस्सार बन्धक चतुर्थ बन्धक दातार पत्त हइते छाडानेते सम्मत ना थाके, ताहारदिगेर असम्मति बाकी बारय आना हिस्सार बन्धक छाडानेते निषेधि बटे, किम्बा चतुर्थ बन्धक दाताके वत्ते, ये निजे समस्त बन्धकि टाका आदाय करिया आपन हिस्सार उपर अधिकार प्रकारे ओ वाकि तिन जन बन्धक दातार हिस्सार उपर बन्धक प्रहोत । प्रकारे दखल पान इति ।

श्रीज्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाध्यायिप्रतिश्रुतकूर्तनीइशमितसाहेवधर्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो भवस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रश्नार्थेन प्रश्नपत्रलिखिताशेषं श्रुत्वा चतुर्विधाध्यन्वर्गताकृतकालात्मकभोग्याभित्वनिश्चयात्, तत्र यदि चतुर्भिर्हिन्दुजातीयैर्मुद्रां गृहीत्वा स्वस्वस्यास्पदीभूतग्राम एकस्य कस्यचित् हिन्दुजातीयस्य निरुद्धे बन्धकीकृतः, तदनन्तरं बन्धकदातृणां चतुर्णां मध्ये एकः कश्चिद् बन्धकग्रामस्य समस्तमुद्रा दत्त्वा सम्पूर्णग्रामो बन्धकात् मोक्तव्य इतीच्छते, तत्र यदि बन्धकीभूतग्रामश्चतुर्णां साधारण्यश्चेत्, तदा तदन्तर्गतत्रयाणां यथार्थभूता स्वस्वयोग्यांशमोचनासम्प्रतिः सुतरामवशिष्टद्वादशांशकपरिमितांशत्रयस्य बन्धकमोचने प्रतिग्रन्थिका भवति । एवं चतुर्थबन्धकदातुरवशिष्टबन्धकदातृणां त्रयाणां सम्प्रतिश्चेत् तदैव समस्तमुद्रा दत्त्वा स्वांशे स्वामित्वेनावशिष्टबन्धकदातृणां त्रयाणांमंशं बन्धकमहीतृत्वेनायत्तत्वाप्राप्तिर्भाविनुमईते, यतः साधारण्यधने सर्वेषामंशानामनुमतिं विना तन्मध्ये एकस्य कस्यचिदनाधमनविक्रयत्वमता नास्तीति । अतः सुतरां साधारण्यधनाविमोचनात्प्रत्यक्षं सिद्धं । यदि च बन्धकभूतग्रामे तेषामंशानिर्यायश्चेत्तदा बन्धकदात्रन्तर्गतत्रयाणामनुमतिं विनापि-

चतुर्थवर्गकदाता पृथङ्'निर्दिष्टस्वांशं बन्धकान्मोक्षयितुमर्हति-इति वाराणसीप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्तेषु द्वयस्य मध्यस्थत्वाद् एकस्यानिश्चयत्वात् सर्वाभ्यनुज्ञावश्यं कार्या । विभक्तेषु (तूत्तरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्यूदासेन व्यवहारसौकर्याय सर्वाभ्यनुज्ञा, न पुनरेकस्यानीशरत्वेन । अतो) विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्धयत्येव इति व्याख्येयम्—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-लिखनम् (मिता० पृ० २००) ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

४०—सदर दैओयानी आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्देनी इशमिट साहेबेर हुजुर हइते ये आदालतेर पण्डितदिगेर नामे इहरेजि १८२७ सालेर ११ शेतम्बर मासेर रोषकाटीर लिखित भवानीचरणदत्त सायेलेर मकईमाते निचेर लिखित दस्तावेजेर अनुमोदन पूर्वक परस्व दुइ प्रहर पर्यन्त बचन ओ प्रन्थेर चेओरा सम्बलित जवाब दाखिल करणेर हुकुमे सओयालः—

एइ ये, सनातन हालदारेर श्री मुशम्मात जानकी, ये आपन पतिर मृत्यु परे वाङ्गला १२३२ सालेर २६ चैत्र मासेर हओया दस्तावेज भवानीचरणदत्तके लिखिया दियाछे, मुशम्मात मजकुरार पक्ष हइते ए प्रकार दस्तावेज लिखिया दैओन बङ्गदेशेर शासलुसारे सिद्ध छिल कि ना; ओ दस्तावेज लिखार एक बतसर परे मुशम्मात मजकुरार मृत्यु हओन हेतुवे ये दस्तावेज जे तत्सम्पर्क भशम्मात मजकुरार पतिर भ्रातारा ओ भ्रातृपुत्रेरा प्रतिबन्धक ओ स्वीकार आछे मिथ्या हय कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवावन्यवस्था

एतदस्मादधिकरणद्वितीयाधिपतिभूयुतकुटुम्बीदशमिटकाहेवधर्माधिकरण-
लिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समपितवाङ्मलाख्यद्रात्रिशदधिकद्वादश-
शतान्दोषोनत्रिंशद्विषयीयचैप्रमासीयदस्तावेनसंज्ञकपत्रावलोक्य विविच्य
च यादृशबोधो जातस्तदनुचारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि सनातनहालदारक्षिया ज्ञानक्या पतिमरणानन्तरमुपरिलिखित-
दस्तावेनसंज्ञकपत्रं भयानीचरणदत्ताय लिखित्वा दत्तं तत्र तत्प्रलिखित-
मृत्तान्तस्य सत्यत्वञ्चेत्तदादृशपत्रदानं बद्धवेशचलितशास्त्रानुसारेण
चिदमासीत्, यतोऽनपत्यपतिधनस्वोचराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वे पत्न्या
वर्त्तनाद्यशक्तौ तदुपयुक्तदनाधानविक्रयणं शास्त्रानुमतं भवति । वर्त्त-
नादिमूलीभूतस्य तदनरक्षणायायश्यकत्वेन सुतरां तदनरक्षणाय तदुप-
युक्तस्य तदनस्याधानविक्रयणं शास्त्रसम्मतं भवति । प्रकृते तूपरिलिखित-
तत्पत्रेण ज्ञानक्याः स्यामिमरणानन्तरं सत्यतिप्रत्यधिकृतसतिभ्राता-
द्यधिकृतप्रलिखितविवादद्वयनिष्पत्तेरुक्तराधिकारित्वेन केवलं तस्या एव
कर्त्तव्यत्वेन तत्र तस्या अशक्त्या उपरिलिखितदस्तावेजसंज्ञकपत्रलिखित-
चनदानात् तद्विवादिनिष्पत्त्या अवश्यं तत्पतिकर्त्तव्यत्वघनरक्षणात् तत्-
पत्रलिखितधनादवशिष्टमुदायवतित्यक्तघनरक्षणावस्थात् तत्प्रत्य इत्यव-
गमात्, एवं तत्प्रलिखितनादनन्तरमेकसंवत्सरानन्तरं ज्ञानक्या मरणेन
तत्पत्रं तस्याः पत्युः प्रातृगिरेव तत्पतिभ्रातृपुत्रेभ्य प्रतिबन्धमस्वीकृत्य
मित्र्या भयितुं नार्हति, यत्तत्प्रत्येण तत्प्रतिबन्धनसमये तत्पतिभ्रातृभिस्तत्पुत्रेभ्य
उपरिलिखितविवादद्वयान्तर्गतैकस्मिन् विवादे विरोधित्वेन तया सह विवादं

कृत्वा तत्प्रचलितनतस्तस्या निवारणं न कृतमित्यवगमाद्, इदानीं तस्या मरणेन तत्पत्रास्वीकारस्य उत्पत्तिबन्धस्य च अग्रयोजकत्वात्—इति वल्ल-
देशचलितदायभागविवादमहार्णवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अतएव वर्त्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्ती विकय-
णमपि—इति दायभागलिखनम् (पृ० १७३, ११११६२) । १ ।

तथा च भर्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्यद्वा कर्म करोति
मृतभर्तृकापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तथ कर्म कुर्वीत—
इति विवादमहार्णव (२ विवाम० पृ० ३१६ क) लिखनमेति ॥ २ ॥

श्रीज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीविद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

५१—सदर देमानी आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत आलक
सुन्दर राश साहेबेर हुजुर होते ऐ आदालतेर पण्डितदिगेर नामे
ईराजि १८२७ सालेर ११ सेतम्बर मासेर रोवकारिरे लिखित
१८५७ लम्बरेर वायव गणेश आपालाण्ट (वनसिया) रप्पाडण्टेर
मकईमाते धारानश देशेर चलित शाख मते घृहस्पतिवार पर्यन्त
जवाय दाखिल करणेर हुकुमे सञ्चोयाल सकल पद ये—

प्रथम सञ्चोयाल—

धारानश साकिनेर फल्लुजाति एक छांलोपेर विवाह फोन
व्यक्तिरे सहित हइयादिल, ओ ताहार स्वामि अनुदेश हइल,

१. अमाउ—व्यप० ।

२. विनसिया—इति सप्तम्यान् पाठः ।

३. लम्बरे कावत—व्यप० ।

ओ ऐ स्त्रीलोक तांहार स्वामि अनुदेश हओयार तेर बत्सरेर परे ताहार पतिर कनिष्ठ आतार सहित शाङ्गा करिते पारे कि ना, ए प्रकार (शाङ्गा) शाख अनुसार सिद्ध हय कि ना ।

द्वितीय सओयाल—

यद्यपि ए प्रकार शाङ्गा सिद्ध हय, ओ ऐ स्त्रीलोकेर द्वितीय पति ऐ स्त्रीलोक व्यक्ति ओ आपन पिता ओ तिन सहोदरभ्राताके राखिया मरियाछे, ओ समस्त धन साधारण कि असाधारण हय, ए दुइ प्रकार सृत व्यक्तिर अस्थावर त्यक्त धन कोन व्यक्ति-के (अरों) हति ।

जयाव न्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रानुतआलकशब्दरधर्माधिकरणलि-
खितप्रथमप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशगोचो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

शाखे शाङ्गाइशब्दवाच्यकार्यस्य प्रस्तावो नास्ति । परन्तु यदि धाराणसीप्रदेशीयानां^१ पैलकारजातीयानां प्रक्षपत्रलिखितप्रकारकसंगाइ-
शब्दवाच्यस्य व्यवहारश्चेत् तदा प्रश्नपत्रलिखितशास्त्रालिखितप्रकारक^२-
संगाइशब्दवाच्य कार्य'कर्तुं' शक्नोति । एवमेतत्प्रकारक संगाइशब्दवाच्य
तत्कार्यमुपरिलिखितव्यवहारसिद्धमिति चेत्तदा शास्त्रानुसारेणपि सिद्धं
गबितुं शक्नोति, व्यवहारस्य शास्त्रानुसारेण बलवत्त्वादिति ।

अत्र ५.माणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् ओशीधर्मांश्च धर्मावित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥

इति—मनुवचनम् (८।४१.) । १ ।

यस्मिन् देशे यदाचारो व्यवहारः कृतस्थितिः ।

तथैव परिपाल्योऽसौ यदा धरामुपागतः ॥

—इति मिताक्षरादि (मिता० १०५) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्
(१।३४३) । २ ।

स्यष्टशास्त्रानुपलम्भे तु देशव्यवहारानुरोधेन निर्णयः कार्यः ।
इत्यप्याह स एव ।

तस्मात् शास्त्रानुसारेण राजकार्याणि साधयेद्, वाक्याभावे तु
सर्वेषां देशदृष्टमते नयेत्—इति वीरमित्रोदयलिखनम् । ३ ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि प्रश्नपत्रलिखितसगाइराब्दवाच्यं कार्यं प्रथमप्रश्नोत्तरलिखित-
व्यवहारानुसारेण सिद्धं चेदयं च तस्या एव लिखा द्वितीयतत्तिर्वां लिख्यमेव
स्वपितरं प्रीन् स्वतोदरभ्रातृन्^१ बंधरक्ष मृतः स्यादेवं तदीयसमस्तस्थावरधने
पित्रा भ्रातृभिश्च सह^२ साधारणं चेत्तदा तयोपपत्तदीयस्थावरधनार्णः^३
भातया च भवति; यदि च केवलं पित्रा सह धनं^४ साधारणं चेत्तदा केवलं
पितुरेव; यदि वा केवलं भ्रातृभिः सह साधारणं चेत्तदा केवलं भ्रातृणामेव
भवति; यद्यसाधारणं तद्धनं चेदयं च तद्देशीयानां वज्रातीयानां^५ यथा
विधादिता श्रोत्रा असाधारणपतिधने अधिकारिणी भवति तथैव सगा-
संरक्षकार्यकृत् अन्यपि तद्धने अधिकारिणो भवतीतिगवहरचेत्तदा सा
शास्त्रानुसारेणाभि^६ तद्धनं प्राप्तं शक्नोति । एवं व्यवहारो न चेत्तदा
धनस्यासाधारणत्वबले तत्पितुरेव (तद्धनम्)—इति वाराणसीमंचलितमनु-
मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

१. य आ०—यास्य० ।

५. धनार्णः—व्यय० ।

२. ०तोप्येति—व्यय०

६. धनं सा साधारणं—व्यय० ।

३. सोदर भ्रातृ स्वसंधय—व्यय० ।

७. वज्रातीयानां—व्यय० ।

४. ०मितस्वद्ध—व्यय० ।

८. शास्त्रं प्राप्तं शास्त्रेति—व्यय० ।

९. वाराणसी—व्यय० ।

अत्र प्रमाणम्—

तदुपरिलिखितमेव । १ ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरादि (मिता-
५० २१६) ग्रन्थप्रतयाञ्चवत्कथञ्चनञ्चेति (२।१२५) । २ ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

लं० १८६७

५२—रोवकारि मिसिल आदालते देखोयानी सदर इक्करेजी
१८२७ साल तारिख १५ माह सेतम्बर मोतावक थाहला १२३४
साल रोज शनियाद आदालत मजकुरार पञ्चम हाकिम श्रीयुत.
आलक सुन्दर राश साहेबेर बैठके—

गणेश

आपीलायद

मुरान्मति बेलसिया

रण्पादयद

एइ मासेर ११ तारिखेर हुकुमानुसारे ए आदालतेर पण्डित-
गण लम्बरे व्यवस्था दाखिले करिलेर दृष्टे आसिया द्वितीय सञ्चो-
याल बचित हइल । अतएव हुकुम हइल ये ए रोवकारि नकल
एइ हुकुमे पण्डितगणके समर्पण करा जाय ये नीचेर लिखित
सञ्चोयालेर जवाब तातिलेर परे दाखिल करेन ।

सञ्चोयाल—यद्यपि एइ मत सङ्गाइ बारानश देशे सिद्ध हय
आर ऐ दाखिल करा व्यवस्था लिखित द्वितीय सञ्चोयालेर
जवाब मते बोध हइते (छे ना) ये साङ्गाइ खोर द्वितीय पतिर
त्यक्त धन किचु साङ्गाइ खिके अर्शिवेक कि ना; यदि ना अर्शे तवे
ऐ खिर भरण पोपणेर अवधारण काहार जिम्बा थाकिवेक इति—

श्रीर्जयतितराम्

जवाव्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणपत्रमाधियतिश्रियुतञ्चालंकमुन्दरसाहेवधर्माधि-
करणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जात-
स्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

यदि वाराणस्यादिप्रदेशे^१ एतादृशसगाइशब्दवाच्यं^२ काव्यं
व्यवहारानुसारेण सिद्धं^३ भवति; एवं सगाइशब्दवाच्यकाव्यं कृतज्ञिया
द्वितीयपतित्यक्तधन यदि तस्मिन्ना तद्भ्रातृभिश्च सह किंवा केवलं
तद्भ्रातृभिः सह साधारणं चेत्तदा सगाइशब्दवाच्यकाव्यं कृतज्ञोस्वामि-
त्वेन किञ्चिदपि तद्वनात् प्राप्तुं^४ न शक्नोति । एवं चेत्तदा तस्याः स्त्रिया
भरणपोषणं यावज्जीवनमेतद्विवादे पूर्वलिखितास्मद्व्यवस्थान्तर्गतद्वितीय-
प्रश्नोत्तरव्यवस्थानुसारेण तस्या द्वितीयपतित्यक्तसाधारणधनाधिकारिभिरेव
काव्यम् । तत्र तस्य साधारणधनाधिकारिणो यदि पिता भ्रातरश्च सर्वे
भवन्ति तदा तैः सर्वैरेव कर्तव्यम्, यदि च केवलं तस्मिन्ना भवति
अधिकारी तदा तेनैव कर्तव्यम्, यदि च केवलं तद्भ्रातर एव भवन्ति तदा
तेनैव^५ कर्तव्यम्—इति वाराणस्यादिप्रचलितमिताक्षरावीरमिश्रोदयादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृप्रीतिविषयम्—इति मिता-
क्षरालिखनम् (पृ० २१७) । १ ।

भरणं चास्य कुर्वीरन् स्त्रीणामाजीवनं क्षयात्—इत्यादि मिताक्षरा-
(पृ० २२०) वीर मित्रोदय^६ (पृ० ६३६ ख) ग्रन्थभूतनारदवचनम्
(नास्मृ० पृ० १६६) । २ ।

१. वारानस्यादि—व्यय० । २. सिद्धं सिद्धं—व्यय० । ३. प्राप्त—व्यय० ।

४. तेनैव—व्यय० । ५. जीविन—नास्मृ० ।

६. स्त्रीणामनरत्नानां भरणमात्रं नारदेन प्रतिपादितमिति धीमि० ग्रन्थे । नारद-
वचनं ॥ ॥ ॥ मोपलब्धम् ।

स्वर्गते स्वामिनि श्री तु आसाञ्छादनमागिनी ।

अविमपते घनांशे तु आमोत्यामरणान्तिकम् ॥

इति धोरमिश्रोदयादि (बीमि० पृ० ६५४ ख) ग्रन्थधृतकात्यायन-
वचनं चेति (कास्मृ० ६२२) । २ ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्मविद्यावत्सीशेन

१३- जिला गाजिपुरे फौजदारि आवालेतेर रोवकारि
सारिख ५ छेतम्बर सन १८२७ इकरेजी हेनरि ब्रिओनानओन
फण्ड साहेब मेजेष्ठरेर^१ घैठके ।

सरकार

मुद्द

ओमराओ राय शतिर ओयारिश—

ओ दण्डघारि चौबे ओ कामराय मुदाआलेहेम ।

ओ परस आदिर

कारण मुपन्मात रामकलिर शति हओो थानादानिवने
हवसालि । अथ मकईमा रुवकार हइल । मुदाआलेहेने जओो-
ब, ओ ओदनराय ओ सिओदयाल^२ ओ घनओोरि ओ सिव-
जोरराय ओ रामदेहलराय ओ आकुहुराय ओ अच्युत आनन्द,
ओ हरनाम रा(य)ओ रओसन आली ओ दस्त साक्षीदिगेर
पजाहार दस्तुर मत लिखा जाइया मकईमार मिछिल सामिल
पढागेल । जे हेतुक एइ मकईमार कएक प्रकरण बोध करा आव-
श्यक, अतएव हुकुम हइल ये ओमराओ राय एक सउ टाकार
जामिन दिया हाजिर थाके, एवं अन्य अन्य आसामीयान साक्षी-
थान सहित विदाय हये । एक किता इकराजी चिटो एक विपयेर

जिज्ञासा पूर्वकं जे ब्राह्मण जाति व्यतिरिक्त सती स्त्रीलोकेर प्रति-
स्वामीर मृत्यु संवाद श्रवणेर परे कत दिवस किम्बा काल अनुमरण
हइवार रीति निरूपित आछे—सदर नेजामते-पाठान जाय इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम

यवाव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोचरं
लिख्यते—

पतिमरण^१भयानान्तरं ब्राह्मणजातिव्यतिरिक्ता स्त्री यद्यनुमरण-
मिच्छति तदा शीघ्रमेवानुमरणं कर्तुं मर्हतीति शास्त्रे लिखितम् । किन्तु
शीघ्रशब्दस्यार्थः कश्चिद् विशेषतो न लिखितः । परन्तु अनुमरणस्यायं
व्यवहारः पतिमरणभयानान्तरमनुमरणकर्तुं ब्राह्मणजातिव्यतिरिक्ता स्त्री
प्रथमतोऽनुमरणमहं कारिष्यामितीच्छति^२ । तत्र यदि कश्चिद्भौतिकः प्रति-
बन्धश्चेत्तदा तत्प्रतिबन्धकदूरीकरणान्तरमपि शीघ्रमेवानुमरणं करोति ।
अथवा अनुमरणेच्छायां कृतायामपि यदि सा रजस्वला भवति तदा राज-
स्वलाशौचान्तरमपि अनुमरणं करोति इति च व्यवहारः—इति गाजिपुरा-
ख्यादिप्रचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अथ प्रमाणम्—

१) अथैव सकल एव सर्व्यासां स्त्रीणामगमिणीनामवालापत्याना-
माचर्यडालं साधारणो धर्मः—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २५) । १।
दयितं यान्यदेशस्य मृतं श्रुत्वा पतिव्रता ॥
समारोहति^३ दीप्तं ऽग्नौ तस्याः शक्तिं निबोधत ॥
यदि प्रविष्टो नरकं बद्धः पारोः सुदारुणैः ।
संप्राप्तो यातनास्थानं गृहीतो यमकिङ्करैः ॥

१. पतिमरणा भयं—२५० ।

४. समारोहति—(शीम० पृ० १५२) ।

२. मीतीच्छति—२५० ।

५. स्त्रीनाग्नौ—२५० ।

३. दग्नी कल्याण—२५० ।

तिष्ठते विवशो दीनो बध्यमानः स्वकर्मभिः ।

व्यालमोही यथा व्यालं बलाद्गृह्णात्यशङ्कितः ।

तद्वद्भर्तारमादाय दिव्यं याति तपोबलात् ।

तत्र सा भर्तृपरमा स्तूयमानाप्सरोगणैः ।

धीडते पतिना सार्द्धं यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥

इति व्यासपञ्चनखेति । २ ।

श्रीजर्जपतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

एइ व्यवस्था दाखिल इहारेनि मिखिल सती विपचेर —

५४—सदर देओयानि आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत कुर्टनी इशानिद साहेबेर हुजुर हइते कालप्रसादराय सायेलेर मकई माते इहारेजी १८९७ सालेर ३० आक्तुबर मासेर रोवकारि लिखित मते परस्व दुइ ग्रहर पर्यन्त वङ्ग दश चलिख शाखानुसारे इहारेजी १८९४ सालेर २२ दिजम्बर मासेर लिखित जिला बर्दमानेर रोवकारी ओ ई० हाल सालेर १६ आपरेल मासेर लिखित फलिकातार कोटेर रोवकारि ओ सायेलेर सओयालेर मजमुन सकलेर अनुमोदने जबाब दाखिल करार हुकुमे आदालत मजकुरेर पण्डितगणेर नामे सओयाल ।

यद्यपि इहार परे मृतपार्वतीचरणेर भगिनी मशम्मात श्यामा-सुन्दरी गर्भे एर पुत्र जन्मे । ऐ पार्वतीचरणेर पितामही मुशम्मात राशमणिर त्यक्त वस्तु ऐ पुत्रेर स्वत्व हइवेक कि ना ? यदि हइवेक, एइ दण ऐ वस्तु मसम्मात श्यामासुन्दरीर जिम्माय किम्वा

१. विवशा० — व्यन० ।

२. वेद्यमानः — वीमि० ।

३. विलासुदरते बलात् — वीमि० ।

४. तेनैव सह मोदते — वीमि० ।

५. कपोतिकाचिन्ताक्षोपाख्यान्म० ।

पार्वतीचरणेर सुहायण अर्थात् फालीप्रसादराय ओ दुर्गा-
सुन्दररायेर जिम्माय राखा जाइवेक; ओ यद्यपि उहार सुहा-
गणेर जिम्माय रहिवेक, विरोधीय वस्तु हस्तान्तर ना करण
कराते उदादिगेर स्थान हइते आभिन लओया शाखेर आहा
सम्मत वटे कि ना इति ।

श्रीज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्दम्माधिकरणद्वितीयाधिवसिओपुतकुटनीहशमिदसारेवधम्माधिकर-
णलिखितमभप्रतिरूपपत्रमेवं तुल्यमपितेद्वरेजीराब्दप्रतिपाद्यचतुर्विंशत्यधि-
काष्टादशशताब्दीयद्वाविंशतिदिवसीयदिशम्बरमासोयवर्द्धमानजिलाएयधम्मा-
धिकरणीयविचारपत्रमथ च इङ्गरेजीराब्दप्रतिपाद्यसप्तविंशत्यधिकाष्टादश-
शताब्दीयषोडशदिवसीयापरेलमासोयकलिकाताओटापीशाख्यधम्माधिकर-
णीयविचारपत्रमेतद्दम्माधिकरणाधिवेदनपत्रजावलोक्य. विविध च
पादशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

उपरिलिखितपत्रनातै राममुन्दररायमरणानन्तरं तत्पुत्रधनं तत्पुत्रेण
पार्वतीचरणेन प्राप्तमिदं जातमिति, विंशदास्पदीभूतधनं पार्वती-
चरणस्यैव जातम् । अतस्तन्मरणानन्तरं तद्वनं तदुत्तराधिकारिणामेव
भवति । तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपितामहपर्यन्ताभावे
तस्मितामह्मा रासमण्या उत्तराधिकारित्वेन तद्वनं प्राप्तम् । रासमण्या
मृतायामेतद्वनं यद्यपि मृतस्य पार्वतीचरणस्य भविष्याः श्यामासुन्दर्यागर्भे
एकः पुत्रो जनिष्यते तथापि पार्वतीचरणपितामहोरसमणित्वक्रान्ततदीय-
धने भविष्यते पार्वतीचरणपितृदोहित्रस्याधिकारो न भविष्यति, यतो विंशदा-
स्पदीभूतधनस्योत्तराधिकारित्वेन पार्वतीचरणपितामहीराजकान्तव्ये तन्म-
रणोत्तरं तस्याः पूर्वमधिकारिपितामहादपि पूर्वमधिकारिणः पितृदोहित्र-

स्याधिकारप्रतिपादकशास्त्राभावात्—इति वद्वदेशचलितश्रीकृष्णतर्कालङ्कार-
दायमागटीकाविवादमङ्गार्यवदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

आतृपौत्राभावे पितृदोहित्रः तदभावे पितामहः तदभावे पितामही-
इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायमागटीकालिखनम् (पृ० २१८) ॥ १ ॥

दोहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पितामहो घनाधिकारी आसन्नत्वात्
तदभावे पितामही—इति विवादमङ्गार्यवलिलनम् (२ विवाम० पृ०
३६४ ल) ॥ २ ॥

दोहित्रान्तस्वसन्तानाभावे पितुरधिकारवत् पितृदोहित्रान्तसन्ताना-
भावे पितामहाधिकारः^१, सांष्टिकन्यायसिद्धत्वाद् घनिभोग्यप्रपितामह-
पिण्डदातृत्वाच्च पितामहाभावे पितामही—इति दायक्रमसंग्रहलिखन-
ञ्चेति (पृ० ७) ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीहरिभरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

५५—नं० ७१५५ आपील सदर आमीन—

रोवकारि आदालत देओयानी जिला वर्द्धमान इंरेजि १८२७

साल ११ जुन प्रथम रेजेष्टर मीयुत मेस्तर जान एङ्गलेश हारणी-
साहेबेर बैठके ।

रामप्रशादधन्धोपाध्याय

आपीलाएट

आपन अप्राप्त-व्यवहारा कन्या

अन्नपूर्णादेव्यार पक्ष हइते

मीमतिदेव्या ओ गयरह

रषाडएटान

सुवर्णादेव्या

ओजरदार

॥ आतृपौत्राभावे आतृपौत्रः...तदभावे पितृदोहित्रः...तदभावे पिता०—दायमान-
दीक्षायाः ।

२. पितामहदख, सांष्टिक०—दायक्रमसंग्रहाटः ।

ए मकईमार विवरण दृष्टे एइ जिलार पण्डितेर उपर व्यवस्था तलवे एइ सञ्चोयाल हइयाछिल। येयद्यपि हइ भग्नि पितृधने दखिलकार हइया, ताहार मध्ये एक जन भग्नि ओ दुइ पुत्र समझे मरे, तवे मृत व्यक्तिर धन भग्निके अर्शिवेक, किम्वा ताहार पुत्र-दिगेके अर्शिवेक। ताहाते एइ रूप व्यवस्था पहुँछिल ये मृतार धन ताहार भग्निके अर्शिवेक। एइ रूप आमार तलव करण मते एलाका कलिकातार कोट आपिल आदालतेर पण्डितेर निकट हइते ये व्यवस्था पहुँछियाछे जिलार व्यवस्था ऐक्यता हइल। किन्तु विचारेर दाँडाते हजुरेर विवेचना सम्मत ना हइया उपरेर लिखित सञ्चोयाल एइ बेओराते ये दाओया करा वस्तु साधारण ओ पृथक थाकन प्रकारे उपरेर बेओरा करा कोन उत्तराधिकारिके अर्शिवेक—इरेजि चिटो द्वारा हुगुलि जिलाते पाठान गिया-छिल। हुगुलि जिलार पण्डित ए जिलार व्यवस्था नितान्त व्यतिक्रम, अर्थात् दाओया करा वस्तु साधारण किम्वा पृथक, दुइ प्रकारेइ पुत्रदिगेके अर्शिवेक लिखियाछे। अतएव व्यवस्था व्यतिक्रम हओने सन्देह उत्पत्ति हइया ताहार निष्पत्ति कारण सदर देओयानि आदालतेर व्यवस्था तलव करण आवश्यक घोष हइया हुकुम हइल ये सञ्चोयाल एइ रोवकारि नफल द्वारा जज साहेबेर समीपे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय ये सञ्चोयालेर व्यवस्था सदर देओयानी आदालत हइते आनाइया ए आदालते पाठयेन इति।

रोवकारि आदालते देओयानी जिला वर्द्धमान तारिख १६ माइ जुन शन १८२७ शाल मेस्तर हेनरि मेरट जज साहेबेर बैठके—

रामप्रसादवन्धोपाध्याय
आपन अप्राप्त-व्यवहारा कन्या
अन्नपूर्णादेव्यार पक्ष हइते—
श्रीमतिदेव्या ओ गयरह

आपीलाण्ट
रम्पाडण्टान्

सुवर्णादेव्या—

ओजरदार

एह मासेर ११ तारिखेर लिखित ए जिलार रेजेष्टर साहेबेर रोवकारिर एक केता नकल एक मृता खीर भग्नि ओ दुइ पुत्रेर उत्तराधिकारत्वेर^१ विशये ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था कोट आपिल आदालतेर व्यवस्थार सहित ऐक्य, ओ जिला हुगुलिर आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार सहित व्यतिक्रम हथोन मजमुने एक केता सञ्जोयाल सन्यलित सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था हासिल करखेर कारण ऐ सञ्जोयाल सदर देओयानी आदालते पाठानेर प्रार्थनाय उपुल दइल । हुकुम दइल ये साहेब गौपुकेर आसल रोवकारि ऐ सञ्जोयाल सन्यलित एह रोवकारिर नकल आमार ईरेजि चिटिर सामिल सदर देओयानि आदालतेर प्रथल प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय इति—

सञ्जोयाल—

थयपि कोन व्यक्ति आपन दुइ कन्या वर्त्तमाना राखिया, फौत् करे । ताहार पर ऐ दुइ कन्यार एक कन्या आपन दुइ पुत्र ओ भग्निके राखिया फौत् करे । इहते मृता कन्यार विशय ताहार भग्निके अर्शे, कि ताहार पुत्रदिगेर अर्शे ? इहार संसृष्ट मते ओ विभाग प्रयोगे पृथक २ शाखानुसारे जबाय लिखिवेन इति ।

श्रीर्जयतितराम्

जवाव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभयत्रयवलोक्य यादृशशोधो जातस्तदनुवारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कश्चिद्व्यक्तिविशेषः स्वकीये द्वे कन्ये संरक्ष्य मृतः, तदनन्तरं द्वयोः कन्ययोर्मध्ये एका कन्या द्वौ पुत्रौ एकां भगिनीञ्च संरक्ष्य मृता स्यात्, सत्र सा कन्या यदि अविवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी चेत्तदा, यदि न

विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, परन्तु तस्याः सा भगिनी वन्ध्या,
 पुत्रहीना विधवा चेत्तदा च, तस्याः पितृव्यकथनांशे सत्पुत्रयोरधिकारः ।
 यदि च सा कन्या विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, अथ च
 तस्याः सा भगिनी वन्ध्या, पुत्रहीना विधवा वा नो चेत्तदा तद्भगिन्याः,
 अथवा पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्राणां वा, अधिकारः । पितृधने उदाया
 दुहितुरधिकारे जातेऽपि सन्मस्योत्तरं पितृरुत्तराधिकारिणामेव क्रमेण तदनं
 भवेति । तत्र च पितृरुत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपत्नीपर्यन्ताभावे दुहितुरेव
 प्राधान्याद् विभक्तेऽविभक्ते वा व्यावहारिकसंस्थांति, असंस्थांति वा सति
 पूर्वाधिकारिणी तदनन्तराधिकारिणां बद्धदेशचलितराजानुसारेण
 अधिकाराभावाच्च—इति बद्धदेशचलितदायभागभीकृष्यतर्कालङ्कारकृत-
 दायभागदीकादायकमसंग्रहविवादाख्यबसुनिपादभट्टाख्यवादिग्रन्थानुसारिणी
 व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्न्यभावे दुहिता...तत्रापि प्रथमं कुमारी...तत्रायं विशेषः । कन्या
 जाताधिकारा पश्चात् परित्यक्ता सती अविद्यमानपुत्रा यदि म्रियेत तदा
 तत्पितृदाये सपुत्रायाः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः । न
 तु तद्भर्त्रादीनां, स्त्रीधन एव तेषामधिकारात् । कुमार्यभावे चोदायाः
 पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः, तयोरेकतराभावे
 एकतराधिकारः । वन्ध्यापुत्रहीनविधवयोस्तु पुत्रद्वारेण पार्व्वण्यपिण्डदा-
 नोपकाराभावात्, पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोरसत्त्वेऽपि नाधिकारः...सर्व-
 दुहिप्रभावे दीहिप्रत्याधिकारः—इति दायकमसंग्रह (पृ० ३४) विवादा-
 ख्यबसु (पृ० ४३-४४) प्रभृतिग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

१. पत्न्यभावे कुमारी धनाधिकारिणी । ...तदभावे चोदा...तत्रायं विशेषः । कन्या
 जाताधिकारा पश्चात्परित्यक्ता सती अविद्यमानपुत्रा यदि म्रियेत तदा तत्पितृदाये
 सपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारो न तु बद्धदेशादीनां, स्त्रीधन एव तेषामधिकारात् ।
 तदभावे पुत्रवती सम्भावितपुत्रा च तुल्याधिकारिणी पक्षधरेकेतराभावे अन्यतरा-
 धिकाः । ...पुत्रवती पार्व्वण्यपिण्डदातृत्वा इत्येकस्याविशेषाच्च । ...कन्यापुत्र-
 हीनविधवोस्तु नाधिकारः । ...तयोरेकभावे दीहिप्रत्या—इति विवादाख्यबसुनाम् ।

... एवम् दुहितुरप्यधिकारे जाते तस्यां मृतायां तदग्राह्योक्ताः पितृपत्नी-
धिकारिणो गृहीयुः न तु दुहितृपत्नीधिकारिणः—इति दायभागः (पृ०
१७४) ग्रन्थलिखन) इति ।

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिःशरणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशम्भेविद्यावागीशेन ।

नम्बर २५६५

१६—रोवकारी मिसिल आदालते देओयानी सदर तारिख
२४ माहे जानओरि सन १८२८ इहरेजी मतावेक १२ माहे माघ
सन १२३४ याद्वला रोज बृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम
श्रीयुत कटवरद धरलेन सिलि साहेबेर बैठके—

देविदयाल प्रभृति

आपीलाण्टानं

हरहोरसिंह

रप्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिल मुनशी महम्मद पाणाह विद्यमान
आशील । ए मकदमा गत दिवस रप्पाडण्टेर असाच्याते
आमार बैठके रोवकार, ओ जिलार आदालतेर कागज-सकल
१० लम्बर पर्यन्त पढागिया स्थिति छिल । पुनराय अद्य रोव-
कार हइया ऐ आदालतेर बाकि कागज-सकल फयसला पर्यन्त
ओ फोट आदालतेर तावत् कागज ओ ए आदालतेर समुदय
कागज पढागेल । यथा ए मकदमार सम्पर्के नातक हुकुम सादर
हओनेर पूर्व एइ विषय जानिन जे हरहोरसिंहेर बारे वेशन
शाखानुसारे सान्यवस्थ बटे किना आवश्यक हइल । अतएव
हुकुम हइल ये एइ रोवकारिं नकल सहित ए मकदमार समस्त
कागज एइ आदालतेर परदीतगणके एइ हुकुमे समर्पण करा
जाय ये मकदमार दाखिल हओया सन्यक कागज ओ सकल
दस्तावेज दृष्टी करिया व्यवस्था लेखेन ये हरहोरसिंहेर बारे

विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, परन्तु तस्याः सा भगिनी बन्धा,
 पुत्रहीना विधवा चेत्तदा च, तस्याः पितृव्यकथनान्तरे तत्पुत्रयोरधिकारः ।
 यदि च सा कन्या विवाहिता सती पितृधनाधिकारिणी जाता, अथ च
 तस्याः सा भगिनी बन्धा, पुत्रहीना विधवा वा नो चेत्तदा तद्भगिन्याः,
 अथवा पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(याः)वा, अधिकारः । पितृधने ऊदाया
 दुहितुरधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं पितृव्यत्तराधिकारिणामेव क्रमेण तदनं
 भवति । तत्र च पितृव्यत्तराधिकारिणां मध्ये पुत्रादिपक्षीपर्यन्ताभावे दुहितुरेव
 प्राधान्याद् विभक्तेऽविभक्ते वा व्यावहारिकसंश्लिनि, असंश्लिनि वा सति
 पूर्वाधिकारिणी तदनन्तराधिकारिणां बङ्गदेशचलितराज्ञानुसारेण
 अधिकारमावाध—इति बङ्गदेशचलितदायभागभीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-
 दायभागटीकादायकमसंग्रहविवादाख्यवसेतुविवादमहाख्यवादिग्रन्थानुसारिणी
 व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्युभावे दुहिता...तत्रापि प्रथमं कुमारी...तत्रायं विशेषः । कन्या
 जाताधिकारा पश्चात् परिणीता सती अविद्यमानपुत्रा यदि भ्रियेत तदा
 तत्पितृदाये सपुत्रायाः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः । न
 तु तद्भर्त्रादीनां, स्वीधन एव तेषामधिकारात् । कुमार्यभावे चोदायाः
 पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारः, तयारेकतरेभावे
 एकतराधिकारः । बन्धापुत्रहीनविधवयोस्तु पुत्रद्वारेण पार्श्वेणपिउदा-
 नोपक्रमामावात्, पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोरसत्त्वेऽपि नाधिकारः...सर्व-
 दुहितृभावे दौहित्रस्याधिकारः—इति दायकमसंग्रह (पृ० ३-४) विवादा-
 ख्यवसेतु (पृ० ४३-४४) प्रसूतिग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

१. कन्यभावे कुमारी धनाधिकारिणी ।...तदभावे चोदा...तत्रायं विशेषः । कन्या
 जाताधिकारा पश्चात्परिणीता अविद्यमानपुत्रा यदि दृष्टा तदा तत्पितृदाये
 सपुत्रायाश्च भगिन्यास्तुल्याधिकारो न तु तद्भर्त्रादीनां, स्वीधन एव तेषामधिकारात् ।
 तदभावे पुत्रवती सम्भावितपुत्रा च भगिन्याधिकारिणी पत्योरप्येकतरेभावे अन्यतरा-
 धिकारः ।...तत्पुत्रवत्या पार्श्वेणपिउदाया इयोरन्यतराधिकारोपपन्नः ।...कन्यापुत्र-
 हीनविधवयोस्तु नाधिकारः ।...वयोभावे दौहित्र—इति विवादाख्यवसेतुपठः ।

अथ च दुहितुरप्यधिकारे जाते तस्यां मृतायां तदभावोक्ताः पितृधनाधिकारिणो दृढीयुः न तु दुहितृधनाधिकारिणः—इति दायमार्गः (पृ. १७४) ग्रन्थलिखन) इति ।

श्रीर्जयतितराम् श्रीहरिभारणम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण श्रीरामतनुशम्भेविद्यावागीशेन ।

नम्बर २५६५

५६—रोवकारी मिसिल आदालते देओयानी सदर सारिखः २४ माहे जानओरि सन १८२८ इङ्गरेजी मतावेक १२ माहे माघ सन १२३४ बाङ्गला रोज बृहस्पतिवार पे आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट थरलेन सिलि साहेबेर बैठके—

वैबिदयाल प्रभृति

आपीलाष्टान

हरहोरसिंह

रप्पाडण्ट

आपीलाण्डेर उकिल मुनरी महम्मद पाणाह बिद्यमान आशील । ए मकईमा गत दिवस रप्पाडण्डेर असादयाते आमार बैठके रोवकार, ओ जिलार आदालतेर कागज-सकल १० लम्बर पर्यन्त पडागिवा स्थकित छिल । पुनराय अथ रोवकार हइया ऐ आदालतेर बाकि कागज-सकल फयशला पर्यन्त ओ फोट आदालतेर तावत् कागज ओ ए आदालतेर समुदय कागज पडागेल । थया ए मकईमार सम्पर्क नातक हुकुम सादर हओनेर पूर्व एइ विषय जानिन जे हरहोरसिंहेर वाशे वंशान शास्त्रानुसारे साव्यवस्थ बटे किना आवश्यक हइल । अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल सहित ए मकईमार समस्त कागज एइ आदालतेर पण्डीतगणके एइ हुकुमे दर्ज कराय ये मकईमार द्राखिल हओया सम्यक कागज ओ सकल दस्तावेज दृष्टी करिया व्यवस्था लेखेन ये हरहोरसिंहेर वाशे

वैशान शास्त्रानुसारे साम्यवस्थ बटे कि ना; ओ व्यवस्था दाखिल ह्मोन परे उचित हुकुम सादय ह्मवेक इति ।

एतदमधिकरणधितिओयुतकटवरटयरनेलसेलिमाहेवधर्माधिकरण-
लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवंतत्समापितैतद्विवादपदविषयनि-
विष्टप्रश्नात् चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

हरहोरसिंहनिर्दिष्टाक्षुपरस्यापितवृत्तान्तेन वाराणस्यधिकरणकोट-
आपीलाख्यधर्माधिकरणनिविष्टसप्तदशाङ्काङ्कितव्यवस्थापत्रेणैव^१ महादशा-
ङ्काङ्किततद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण^२ चैवं तद्व्यवस्थापत्रलिखितप्रश्नपत्रेण चैव-
मेतद्विवादविषयनिविष्टप्रश्नात्^३ हरहोरसिंहः स्वपितुर्जनकस्यैक एव पुत्रः,
एवं जनकपितृमरणानन्तरं तन्मात्रा वा मनेवाजसिंहाय आपायां राशशिनी-
शब्दप्रतिपाद्यदत्तकपुत्रकरणार्थं दत्त इति ज्ञातम् । एतादृशवृत्तान्ते सति
हरहोरसिंहस्य वा मनेवानसिंहकर्तृकं आपायां राशनसिनोशब्दप्रतिपाद्य-
दत्तकपुत्रत्वं सिद्धं भवितुं न शक्नोति । एकमात्रपुत्रो दत्तकपुत्रकरणार्थं न
दातव्यः—शास्त्रे^४ निषेधस्मरणात्, भर्तुर्नुमतिं विना स्त्रियाः पुत्रदान-
निषेधाच्च । अथ च हरहोरसिंहनिमुक्तं स्नानशब्दवाच्ये यद्व्यवस्थापत्रं
वाराणस्यधिकरणकोटापिलाख्यधर्माधिकरणे निविष्टं सद्यव्यवस्थापत्रे
तत्प्रतिरूपपत्रे चेदमेव लिखितम् । काचिदेकपुत्रा तत्पुत्रमरणपोषणा-
द्यसमर्था स्त्री स्वकीयमेकपुत्रं दत्तवती^५ । आवयोः सकलकार्यकारी अयं
पुत्रः अस्तु । अतएवायं द्वयामुप्याययः पुत्रः सिद्धो भवतीति तद्विवा-
शुद्धम् । तादृक् संविदः सत्यत्वस्य प्रमुखमपितपत्रभावेरेव प्राप्तत्वात्, पत्न्यु-
मतिं विना केवलभरणाद्यसमर्थया मात्रा दत्तस्यैकमात्रपुत्रस्य द्वयामुप्याय-
यस्य शास्त्रालिखितत्वाद्, भर्तुर्नुमतेः प्रमुखमपितैतद्विवादविषयनिविष्टप्र-
त्नात्तरेवप्राप्तत्वाच्च । अथ च जिलाख्यधर्माधिकरणनिविष्टपत्रान्तर्गत-

१. पत्रेन—व्यप० । २. भवनतोषणात्पत्न्या—व्यप० ।

३. सक्रिया देव पुत्रमलेनरात्र विदारयति—व्यप० ।

४. तादृश—व्यप० ।

५. इति शास्त्रे—व्यप० ।

तदस्माधिकरणनियुक्तपरिद्धतलिखितव्यवस्थापत्रमेवं पाठशालास्थपरिद्धत-
लिखितव्यवस्थापत्रं च शुद्धमशुद्धं वेत्तुमाभिर्न लिख्यते,^१ यतस्तद्व्यव-
स्थाद्वये हरहोतृसिंहस्य दत्तकपुत्रत्वसिद्धयसिद्धयोः प्रस्तावश्च नास्ति; इत्यत-
स्तस्यानायश्यकत्वमेव—इति धाराणास्यादिप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदय-
व्यवहारमाधयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभदत्तकमीमांसादत्तकदीपितिदत्तक-
चन्द्रिकादत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

मात्रा भर्तुर्नुत्तया^२ प्रोपिते प्रेते वा भर्तारि पित्रा योभार्या वा सवर्णाय
यो यस्मै दीयते स तस्य दत्तकः पुत्रः ।

यथाह मनुः—

माता पिता वा दद्यातां यगद्भिः पुत्रमापदि ।

सदृशं श्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दन्निमः सुतः ॥—इति (६।१६८) ।

आपद्महणादनापदि न देयः । दातुरस्य प्रतिषेधः । तथा एकपुत्रो न देयः ।
“न त्वेवैकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद्वेति वशिष्ठस्मरणात्”, तथा “अनेक-
पुत्रसङ्गावेऽपि ज्येष्ठो न देयः । ज्येष्ठेन जातमात्रेण पुत्री भवति
मानवः”—इति (मनु०—६।१०६) ।

तस्यैव पुत्रकार्यकर्तृणो मुख्यत्वात्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम्
(पृ० २१३-२४) ॥ १ ॥

अपुत्रेणेति पुं(स्त्व)श्रवणात् न स्त्रिया अधिकार इति गम्यते ।
अतएव वशिष्ठः । न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानान्नर्तः—
इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् (पृ० ७) ॥ २ ॥

नैकपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं कदाचन ।

बहुपुत्रेण कर्तव्यं पुत्रदानं प्रयत्नतः ॥—इति दत्तकचन्द्रिकादत्तक-
मीमांसादि (पृ० ६६) ग्रन्थधृतशौनकवचनज्येति (पृ० ११) ॥ ३ ॥

श्रीर्जयवतिवराय

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनार्यामित्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

५७—रोबकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख ५ माह मार्च सन १८२८ इस्लामेजी मताबक २३ माह फालगुण सन १२३४ यादगला रोज बुधवार ऐ आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेबेर बैठके—

जयरामगिर वनाम मयागिर ओ देविगिर —
साएल हाजीर आशील । ई० १८२७ शालेर १३ आगस्त माशेर लिखित मरसीदायादेर प्रबलसिएल कोटेर एक केता रिडरन तथाकार रोबकारि सहित ओ सहार सम्बलित मकदमार रोएदाइ पौछिया ऐ सनेर जुलाई माशेर २३ तारिखे दृष्टी हओयाः साएलेर सओयाल प्रभृति, ताहार सम्पर्कीय कांगज-सफल अथ दृष्टे आशिल । यथा साएलेर सओयाल सम्पर्क चुडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व शाख विवेचना करण उचित बोध हइलो, अतएव हुकुम हइलो ये एइ रोबकारिर नकल एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितगनके अपेण कराजाय ये निचेर लिखित सओयालेर जवाय सोमघार पर्यन्त दाखिल करेण ।

सओयाल—यद्यपि एक व्यक्त गोसाबनी आपन गुरुर मृत्युर पर उहार त्यक्त धने दाखिल हइया अन्य व्यक्तिके आपन चेला नियुक्त करे, ओ ताहार पर आपन चेलार असम्मतिसे आपन गुरुर त्यक्त धन ओ आपन स्योपासित (धन)के गुरुर त्यक्त धन सम्बलित किम्बा पृथक् अन्य स्थाने हस्तान्तर करे । यज्ञदेश चलित शाखानुसारे एमत हस्तान्तर सिद्ध बढे कि ना इति ।

श्रीज्जयतितराम् ।

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकसुन्दरसाहेबधर्माधिकरण लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रभृतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्येतत्प्रभलिखितकश्चित्स्वामिगोस्वामी स्वगुरोर्मृत्योः परं तस्यकधने आयत्तत्वं सम्पादान्यं कश्चिद्व्यक्तिविशेषं सिध्यत्वेन नियुक्तवान् ।

तदनन्तरं तच्छिष्यानुमतिं विना स्वगुरुत्वकर्मनं स्वोपाजितधनं चैकोह्य
पृथग्यान्यस्य 'कस्यचिन्निष्ठे हस्तान्तरं' कृतवान् एवात्तत्र तदनं यदि
देवसेवार्थं नियमितं भवति तदा देवस्वत्वासादौभूततदने हस्तान्तरं कर्तुः
स्वत्वामायेन, यदि च तदनमतिथिसेवार्थं नियमितं तत्रायं नियमश्चेदे-
तदनादतिथिसेवैतत्स्थाननियुक्तेन कर्त्तव्यं, न ॥ दानविक्रयावपि, तदा च
शिष्यानुमत्वा तदननुमत्वा वा हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुं
नार्हति; यतः शास्त्रानुसारेण पोष्यवर्गामरणे नरकं भवति । अथ च संन्या-
सिनामिदानीन्तनानां प्रायशोऽतिथिसेवाम्बुहारो वृत्तेति । अथ चातिथिसेवार्थं
धननियमोऽपि वृत्तेति । तदनदानविक्रयावपि न भवत इत्यपि व्यवहारः ।
व्यवहारस्यापि शास्त्रसिद्धप्रमाणत्वात् । अथ च संन्यासिनामनेके संप्रदाया
अनेकाः भेषपस्तत्रैतत्प्रभलितितसंन्यासिनो गोस्वामिनो गुरुपरम्परा-
यामेतद्व्यवहारश्चेत् शिष्यानुमतिं विना गुरुणा गुरुपरम्परागतधनस्य
हस्तान्तरं न कर्त्तव्यं तदा तादृशव्यवहारात् शिष्यानुमतिं विना गुरुपरम्परा-
गतधनस्य हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण भवितुं नार्हति । यदि च तद्गुरु-
परम्परायां तादृशव्यवहारो न चेत्, तदैतत्प्रश्नलिखितधनं यदि देवसेवार्थं
मतिथिसेवार्थं वा नियमितं न भवति तदा च स्वोपाजितस्य गुरुपरम्परागत-
स्य धोमयपिधनस्यास्य संन्यासिनातिथिव्यवहारात् शिष्यानुमतिं विनापि
गुरुणा हस्तान्तरकरणं शास्त्रानुसारेण सिद्धमिति, अतः शास्त्रानुसारेणापि
सिद्धं भवितुमर्हति । व्यवहारस्य शास्त्रसिद्धप्रमाणत्वमुपरि लिखितमेव-इति
वदन् देशचलितमनुदायभागभीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाव्यवहारतत्त्व
व्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं माक्षणस्वं वा लोभेनोपेहि नस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके शुभोच्छिष्टेन जीवति ।—इति मनुस्मृत्यम्
(११ । २६) । १ ।

१. तदनन्तरं—अप० ।

२. शास्त्रानुसारेणपोष्य—अप० ।

३. धनस्यारमं व्याप्तसंन्यासिन्य—अप० ।

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं^१ घनं देवस्वम्—इति कुल्लुकभट्टव्याख्यान-
मिति (पृ० ४३०) । २ ।

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।
अकृतस्तु तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम्
(पृ० १६६) । ३ ।

व्यवहारो हि धनवान् धर्म्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारतत्त्व (पृ०
४) व्यवहारमातृकादि (पृ० २८२) ग्रन्थवृत्तनारदवचनम् । (पृ० १७)
१४०) । ४ ।

भरणां पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।
नरकं पीडने चास्य तस्माद्यत्नेन तं भरेत् ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-
वृत्त (दामा० पृ० ३३) मनुवचनम्^२ । ५ ।

पिता माता गुरुर्भार्य्या प्रजा दीनाः समाभिताः ।
अभ्यागतोऽतिथिश्चैव पोष्यवर्ग उदाहृतः ॥—इति श्रीहृण्यतर्का-
लङ्कारवृत्तमनुवचनम्^३ (दामाटी० पृ० ३४) । ६ ।

जातिजनपदान् धर्म्मगच्छे शीघर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।
समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनं चेति
(पृ० ४१) । ७ ।

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

—इक्ष्वाक्य दस्तखत—

१. देवता तदर्थम्—यप० ।

२. मनुस्मृतौ वचनमिदं नोपलभ्यते ।

३. वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते यद्यपि शास्त्रमिदं “मनुनैरोक्तम्” इति दायभा-
गटीकालिखनम् ।

शओयाल—

५८—एक व्यक्ति सामन्त रजपूत जातीय राजा प्रथमा ओ द्वितिया दुइ वनिता ओ द्वीया वनितार एक दुहिता ओ स्थावर ओ अस्थावर वस्तु स्वर्णादि राखिया निहत्तो अर्थात् मृत्यु हय । तदपरे ए निहत्तो व्यक्तिर द्वितिया वनितार एक दौहित्र हय । ऐ द्वितिय वनिता ओ ताहार दुहिता ओ दुहितार पुत्र वर्त्तमान आछे । ए द्यणे ऐ राजार प्रथमा वनिता आपन स्वामीर फौतेर पर ऐ सकल वस्तुते वखिलकार यक्रिया आपन सपत्नीर साम्बत्सरेर भरण पोषणेर वेतन दिया आपन सजातीय चरि वत्सरेर धयकनेर एक व्यक्तिके पीप्यपुत्र राखियाछे । एमते प्रस्ता जिहासा करा जाइतेछे । ऐ युत राजार द्वितीया वनितार दौहित्र वर्त्तमाने प्रथमा वनिता आपन स्वामीर विना अनुमतिरे पीप्यपुत्र करिते पारे कि ना । यदि पारे कोन शाखेर मव, ओ शे शाखेर नाम को, ओ कोन वचन ओ प्रमाण ताहा एइ शओखेर पृष्ठे लिखियाइन । इति ई शन १८१८ साल, तारिख ७ मार्च् ।

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुपमर्षितप्रभपमवलोक्य बाह्यशब्दो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते
प्रभपत्रलिखितस्य राज्ञो द्वितीयवनिताया दौहित्रे विद्यमाने छति प्रथमा वनिता स्वस्वाम्यनुमतिं विना दत्तकपुत्रं कर्त्तुं न शक्नोति—इति दत्तकमोमांसा-
दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३)दत्तकदोधितिप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद् वाऽन्यत्रानुज्ञानाद् भर्तुः—इति दत्तक-
मोमांसा(पृ० ७)दत्तकचन्द्रिका(पृ० ३)दत्तकदोधितिप्रभृतिग्रन्थद्वयवशिष्ट-
वचनम् ।

श्रीर्जयतितराम् .

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

११८

नं० २६८

५६—रोवकारि मिषिल आदालत देओनि सदर तारिख १३ माह मार्च सन १८२८ इहरेजी मोतावक २ चैत्र सन १२३४ बाङ्गला रोज घृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम कटवरट धरनेल मिली साहेबेर बैठके—

नफरमित्र ओ राजीवमित्र—
रामकुमारचट्टोपाध्याय प्रभृति—

आपीलाएटान
रप्पाडएटान

आपीलाएटानेर उकीलगण मुनशी हयदरालि ओ मुनशी गोलांम बतुल रैप्पाडएटानेर उकीलगणेर मध्ये एक जन मौलवि कर्म-होशेन हाजिर आशील । पूर्वे एइ मकदमा एइ मासेर ११ ओ १२ तारिख सकले रोवकार हइया ओ शहर आदालत ओ प्रविनशाल कोटेर कागजसकल तथाकार फयशला सहित पढागिया दिवा आवसान हेतु स्थकित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया खाप आपीलेर सओल याहा मौलुवातेर स्थाने करार दियाछे ओ ताहार जबाब इहरेजी १८२४ शालेर १०५२६ (१) जुलाई मासेर हओया ए आदालतेर रोवकारि सकल ओ आदालतेर समुदाय फागज पढागेन । जानागेन ये एइ मकदमाय सहरेर पण्डितेर निकट हइते दुइ व्यवस्था ओ कोटेर पण्डितेर निकट हइते एक व्यवस्था दाखिल हइयाछे, ओ ऐ व्यवस्थासकल परस्पर अनैक्य । अत-एव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्वे एइ आदालतेर पण्डित-गणेर निकट व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारि नकल नीचेर लिखित सओ(१)लसकल लिखिया मकदमार समुदाय कागज सहित एइ आदालतेर पण्डितगणके समर्पण कराजाय ।

प्रथम सओयाल । एइ जे यद्यपि रामकुणमित्रेर स्त्री मुसम्मात धनमणि आपन पतिर मृत्युर पर आपन पतिर अंश ओ त्यक्त

वाचत मलहि किसमतेर उपर, चाहा उत्तराधिकारित्व प्रकारे
उहाके पौछियाछे, दखिज हइया ताहा। आपन दौहित्र मानिक-
लालके हेवा करिया थाके; एमत हेवा सिद्ध बटे कि ना।

द्वितीय। एइ ये यद्यपि हेवानामा लिखिया देओन परे मुस-
म्मात^१मजकुरा ऐ लिखित वस्तुके पुनराय रष्पाटण्टानेर पिता
डोमनचट्टोपाध्यायेर निकट विक्रि करियाथाके, एमत विक्री
करार ऐ मुसम्मातर^२ जमता छिज कि ना। ओ यदि स्यात् हेवा
ओ विक्रय दुइओ सिद्धि ना ह्य तवे ऐ वस्तु आपोलाण्टानके,
ये धनमणिर पतिर भ्रातुपुत्र बटे, अशे कि ना ?

तृतीय^३। यद्यपि धनमणि एखन पर्यन्त जीवमान थाके तवे
ऐ वस्तुते उहार स्वत्वाकी आछे कि ना। उचित ये परिदृष्टगण
मकदमार समुदाय कागज दृष्टि करिया बङ्गदेरा चजित शाखा-
नुसारे व्यवस्था दाखिज करेण इति।

श्रीहरिःशरणम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटभरनेलसिलीसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्सम्पितैतद्विवादविषयनिवि-
ष्टपत्रजातं चायलोक्य विविच्य च यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

उपरिलिखितपत्रान्तर्गतमुकसिदा^४वादाख्यनगरसम्बन्धिधर्माधिकरणीय-
जयपत्रेणैकत्रिशदङ्काङ्कितविचारपत्रेण तद्धर्माधिकरणनिधुतापरिदृष्टसम्बन्धि-
प्रश्नपत्रेण चैवं कोटापीलाख्यधर्माधिकरणीयजयपत्रेणैकादशाङ्काङ्कितविचा-
रपत्रेण तद्धर्माधिकरणनिमुक्तपरिदृष्टसम्बन्धिप्रश्नपत्रेण च रामकृष्णमित्र-
मरणानन्तरं तत्त्यक्तधनं गङ्गागोविन्दमित्रेण तत्पुत्रेणोत्तराधिकारित्वेन
प्राप्तमिति ज्ञातम्। अतो रामकृष्णमित्रस्वत्वात्पदीभूतयावद्दने तस्यैव

१. अस्मात्—न्यप० ।

२. अस्मात्तर—न्यप० ।

३. द्वितीय—न्यप० ।

४. मुससिदावादाख्य—न्यप० ।

स्वत्वं जातम् । अतस्त्वस्थानपत्यस्य पत्नीमारभ्य पितृपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिरहितस्य मृतस्य शोचराधिकारित्वेन तन्मात्रा धनमन्या तद्वत् प्राप्त्या यत्तत्वं सम्पाद्य माणिक्यलालनाम्ने स्वदौहित्राय दत्तं चेत्, तदा तद्दानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतो दानपत्रे धनमन्या लिखितं मया स्वेच्छया तुभ्यमेतद्भाषायामष्टादशगण्डाराब्दप्रतिपाद्यं धनं दत्तम्, अतएव स्वेच्छया स्त्रिया दानाधिकारस्योच्चराधिकारित्वेन संक्रान्तधने शास्त्रासिद्धत्वात् । यथा पतित्यक्ते पत्नीसंक्रान्ते धने पत्न्याः स्वेच्छया दानादानधिकारस्तथापुत्रत्यक्तेऽपि मातृसंक्रान्ते धने मातुरपीति ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिदायात् कथञ्चन ॥—इति दायभाग-
(पृ० १७३) विवादभङ्गाख्यादि (पृ० २ विवाम० ३२१ क०) ग्रन्थभूत-
भारतवचनम् (१३/४७।२४) । १ ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिदायान् कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दा-
र्थेन यथेष्टदानविक्रयादौ नाधिकारः—इति दायरहस्यलिखनम् । २ ।

यद्वा पत्नीत्युपलक्षम् । स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दाय-
भागादिग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरानुसारेण शास्त्रासिद्धदानपत्रलिखनानन्तरं धनमयी तद्दानपत्रलिखितवस्तुनः पुनरेतद्वर्माधिकरणप्रत्यर्थिनां पितुः होमनचट्टोपाध्याय(स्य) सत्तिपौ विक्रयं कृतवती स्यात्तदेतादृशविक्रयकरणे तस्या धनमण्याः क्षमता नासीत्, यतो विक्रयपत्रे स्वीकृतसंक्रान्तधनस्य विक्रये शास्त्रोक्तवश्यकानां हेतूनामलिखनात् प्रभुसम्पत्तिवशिष्टपत्रज्ञातैरप्राप्तत्वाच्च शास्त्रोक्तविक्रयहेतोर्विना पतित्यक्ते धने यथा पत्न्या विक्रये नाधिकारस्तथा पुत्रत्यक्ते धने मातुरपि नाधिकारः । एवमपेरिलिखितप्रकारेण

१. सम्पत्ति—अप० ।

२. पितुः—अप० ।

३. ० नृत्य शास्त्रोक्तहेतूनां विक्रये अप्राप्तकानामिति—अप० ।

दानविक्रययोरसिद्धौ सत्यां विवादास्पदीभूतधनान्तर्गतगङ्गागोविन्दमित्रस्य
पूर्वस्वत्वास्पदीभूतभाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यपरिमितवस्तु यदि
गङ्गागोविन्दमित्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य वङ्गदेशचलितदायभागमदिग्रन्थ-
लेखितक्रमेण पत्नीमारभ्य पितामहपुत्रपर्यन्तानपत्यस्य धनाधिकारिणो न
युस्तदैतद्वर्माधिकारणार्थिनां गङ्गागोविन्दमित्रस्य पितामहपौत्राणामधिकारो
भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणत्रयम् । तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदर-
तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रस्तदभावे पितृवैमात्रेयपुत्रः—
त्यादि भीष्मण्यतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ।

तृतीयप्रश्नोत्तरम्—

यदि धनमयी एतत्कालपर्यन्तां जीवति तदा विवादास्पदीभूतधनान्त-
र्भाषायामष्टादशगण्डाशब्दप्रतिपाद्यपरिमितं यत्रायकृष्णमित्रमरणोत्तरं
पुत्रेण गङ्गागोविन्दमित्रेण प्राप्तं तदने धनमस्या मातृत्वेन स्वत्वम-
येव, यतो गङ्गागोविन्दमित्रस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररूपापत्यपत्नीदुहितृवैदित्र-
तृपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिराहित्यात्^१ प्रभुसमर्पितमन्त्रावैरवगमादुपरि-
लिखितप्रकरणेण दानविक्रययोरसिद्धत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागभी-
ष्मवर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादमहार्णवदायरहस्यादिग्रन्थानुसारिणी
पस्था ।

तृतीयप्रश्नोत्तरप्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा तत्सुतः—इत्यादि दाय(पृ १५१)
गादिग्रन्थधृतयाश्वत्यवचनम् (२।१३५) ।

अत्र यद्यपि विवादास्पदीभूतं धनं भाषायामेकादशगण्डाधिकैकाणाक-
रमितमिति विक्रयपत्रादिना ज्ञातम्, किन्तु तन्मध्ये भाषायामष्टादशगण्डा-
शब्दप्रतिपाद्यं यद्वनमस्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तस्यैवेदमुत्तरं प्रभुसम-

सितप्रभपञ्चानुसारेणं दत्तं, नावशिष्टस्य भाषायां त्रयोदशमण्डशब्दप्रति-
पाद्यस्य नेत्रकान्तविशालविक्रीतस्य चतुर्विधप्रभुमभाभावात्-इतिनिवेदन-
मिति ।

श्रीर्जयपतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिथेण

श्रीहरिश्चरणम्
श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

नम्बर २५६५

६०—रोवकारि भिसिल आदालते देखोनि सदर तारिख
६ माह आपरेख शन १८१८ इङ्गरेजी मोताबक २६ माह चैत्र
शन १२३४ बाङ्गला रोज बुधवार पे आदालतेर हकिम श्रीयुत
फटवरट धरनेल सिली साहेपेर बैठके ।

मुसम्मात ज्ञानकोशोर ओ जयाकौशोर आपिलण्टान
हुखवहनसिंह ओ दोवदत्त रम्पाडण्टान

आपिलण्टनेर उकिलगण मौलवि गोलाम इजदाखी ओ
लाला आउधलाल, रम्पाडण्टानेर उकिलगणेर मध्ये एक जन
मवासुरुपण्डित हाजीर आसिल । कल्य एइ मकईमार रोवकार
हइया नालिशो आरजि पढागिया दिवा अवसान प्रयुक्त स्थिति
द्विज, पुनराय अथ उपस्थित हइया प्रविन्शन फोटेर बाफि
कागज फयशला पर्यन्त ओ आदालते दासिल हओया आरजि
मज्जुवाते ओ जवाब प्रयुक्ति समस्त कागज गृष्टे आशोल । यया
म मोकईमार सम्बन्धे चुडन्त हुकुम स(र)दर हआनेर पूर्व म
आदालतेर पहिङगणेर स्थाने व्यवस्था लओन उचित हइल,
अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नरुल मकईमार समुदग
कागज सम्बलित पद सओयाले ए आदालतेर पण्डितगणेर
दाओला करजाय ये मुसम्मात ज्ञानकोशोर आपन पिता
फेहरसिंहेर त्यक्त स्थानेर परखुते ए आदालतेर छिकरि अनुमारे

उत्तराधिकारि प्रकारे कावेज हइयाछे, ओ मुसम्मात मजकुरा वन्धुसिंह नामे एक पुत्र ओ उम्मेदकौँओर ओ देओमुरत ओ नन्नाकौँओर नामिक तिन कन्या वा त ओ उद्दहार पुत्र वन्धुसिंह जयाकौँओर नामे एक खिराखिया निःसन्तान मरिल । तत्परे मुसम्मात देओमुरत द्वितीय कन्या दुइ पुत्र अर्थात् रण्पाइएटान-कै राखिया मृत्यु हइल, ओ ताहार पर उद्दहार तृतीय कन्या मुसम्मात नन्नाकौँओर मृत वन्धुसिंहेर स्त्री मुसम्मात जया-कौँओरके ऐ समुदाय वस्तु किम्बा ताहार हइते किश्चित दान करगेर हम निःसन्तान मरिल । अतएव मैथिल ओ पश्चिम देशेर चलित शास्त्रानुसारे ज्ञानकौँडरके (अपत्य) ना थाकाते तवे ताहार मृत्युर पर उद्दहार सत्याधिकारि कोन व्यक्ति हइवेक । उचित ये कागज-सफल दृष्टी ओ अनुमोदन करिया एइ सञ्चोयालेर जबाब शाखेर प्रमाण सहित समाह मध्ये दाखिल करि(वे)न इति ।

श्रीज्जयतितराम

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्माधिकरण/धिपतिश्रीयुतकटवरटथरनेलखिलीसाहेबधर्माधिक-
रणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समपितैतद् विवादविषय-
निविदपत्रबातझाबलोक्य विविच्य च यादशबोधो अतस्तदनुसारेयोत्तरं
लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतप्रद्विंशत्यङ्काङ्कितपूर्वलिखितैतद्धर्माधिकरणोप-
बन्धपत्रानुसारेण केहरसिंहजितसिंहयोर्विभक्तयोर्द्वयोः सोदरभ्रात्रोर्मध्ये केहर-
सिंहस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य समस्तविभक्तस्थावरघनांशे
तददुहितुर्गर्भकोरुराख्याया उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे बाते सति, शनकोह-
राख्याया गिमिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसा-
रेण चोपरिलिखितभैरुकसमुदायस्थावरघनांशस्य तदन्तर्गतकिञ्चिद्वनस्य वा

मृतस्य पुत्रबन्धुसिंहपत्नी ज्ञानकोमराख्यामुद्दिश्य दानकरणे क्षमता नास्ति, यतः शास्त्रे लिखितं पुत्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिदनस्यापि दानानधिकारः । अत एव पत्नीतो ज्ञान्याया दुहितुर्यात् पुत्रपौत्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने प्रधानाधिकारिण्याः पत्न्याः पश्चादधिकारिण्या उत्तराधिकारित्वेन विभक्तपितृधनाधिकारे जातेऽप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिदनस्य मृतस्य दानाधिकारित्वेनोपरिलिखितपैतुकसमुदायस्थावरधनाशस्य दानकरणक्षमतायाः मुनरां दूरास्तास्त्यादिकादासदीभूतधनस्य ज्ञानकोमराख्याया स्त्रीधनत्यागमाद्य । प्रकृते तु प्रभुसमर्पितपञ्चान्तर्गतं देनचत्वारिंशदङ्काङ्कितदानपत्रेष्ववशिष्टपञ्चात्रातेऽर्थादृष्टार्थदानानवगमात्, पैतुकसमुदायस्थावरधनांशदानावगमाद्य । एवञ्चोपरिलिखितप्रकारेण ज्ञानकोमराख्याया उपरिलिखितपैतुकसमस्तस्थावरधनांशस्य तदन्तर्गतकिञ्चिदनस्य वा दानकरणक्षमतायामसत्तां, तस्या मरणोत्तरं तदनं धनिनः केदरसिंहस्योत्तराधिकारिणामेव भवति; यतः शास्त्रानुसारेण पुत्रपौत्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं तदनं तत्पत्न्युत्तराधिकारिणामेव यथा भवति तथा शास्त्रविवेचनया पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य विभक्तधने दुहितुश्चत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि तन्मरणोत्तरं तदनं वहीनुत्तराधिकारिण्यामेव भवति । प्रकृते तु मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण प्रभुसमर्पितपञ्चान्तर्गतं शाश्वतीपदकलितितस्य धनिनः केदरसिंहस्य विनुः कृष्णसिंहस्य पित्रुवित्तमर्पितामहारित्तनीतीनां मध्ये यः कश्चित् केदरसिंहस्यासन्नतरः सप्तदशो ज्ञानकोमराख्याया मरणोत्तरं रथास्थानं च एवाधिकारी भविष्यति, यतो ज्ञानकोमराख्यायाः पितुर्धननः केदरसिंहस्योत्तराधिकारित्वं प्रकृतलिखितानाम्, अर्थात् ज्ञानकोमराख्याया मृतपुत्रकनुसिंहपत्न्या ज्ञानकोमराख्याया एवं तत्प्रथमकन्याया उमदेकोमराख्याया एवं तद्द्वितीयकन्याया देवमूर्तिकामराख्यायाः पुत्रयोरर्थादेतदधर्माधिकरणप्रत्ययिनोरेव, एतदभिज्ञानामुपरिलिखितवशां वहीपदकलितितानां मध्ये कस्यचिदस्य मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण न भवति, यतो मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण धनाधिकारिशृङ्खलायाः

मेतादृशानां पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य सम्बन्धिनामुल्लेखाभावात्, पश्चिमः देशचलितशास्त्रानुसारेणोपरिलिखितवंशावलीपट्कलिखितस्तुतीसिंहाख्यो, यो धनिनः केहरसिंहस्य दौहित्रः, स यदि ज्ञानकोमराख्याया मरणोत्तरं स्थास्यति तदा तस्याधिकारो भविष्यति, यतः प्रथमपत्रलिखितानामुपरिलिखितानामेवमुपरिलिखितवंशावलीपट्कलिखितानामन्येषां च पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण ज्ञानकोमराख्यायाः पितृर्धनिनः केहरसिंहस्योत्तराधिकारित्वं न भवति, यतः पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसार्यपुत्रधनाधिकारिशृङ्खलायामेतादृशापुत्रसम्बन्धिनामुल्लेखाभावात्—इति मिथिलादेशचलितविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रादिग्रन्थानुसारिणी पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूख्यव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

भारते (१३।४५।१२) :—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥

अपहारमेच्छिकदानविक्रयादिकम्—इति विवादचिन्तामणि (पृ० २३८)

लिखनम् ॥ १ ॥

यद्येष्टविनियोगार्थं तु कन्यायाः पितृधनग्रहणं दूरापास्तमेव—इति श्रीरामित्रोदय (पृ० ६५६) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अपुत्रा शयनं मर्त्यः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुजीताभरणात् ज्ञान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥

इति विवादरत्नाकरवीरमित्रोदयादिग्रन्थभृतकाल्यायनवचनम् (फारम् ० ६२१) ॥३॥

स्वपुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे साध्वी माय्या तदभावे दुहिता तदभावे माता तदभावे पिता तदभावे आता तदभावे तत्पुत्रस्तदभावे आसन्न-

सपिण्डस्तदभावे यथाक्रमं व्यवहितसपिण्डः—इत्यादि निवादचिन्तामणि-
(पृ० २४३) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

दुहित्रभावे दौहित्रो घनभाग्—इति मिताक्षरा (पृ० २२१) ग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥ ५ ॥

दुहित्रभावे दौहित्रः—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमित्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

१११
१११११

सञ्चोयाल—

६१—यदि कोन ग्रहस्तेर कन्याके ताहार पिता माता मूल्यादि
ना लइया काहारो नफरेर सङ्गे विवाह देय, एवं विवाह देओया
कालिन ऐ कन्यार पिता-माता ऐ कन्याके दासि करिया देओयार
कोनो लिखित पडित अथवा अङ्गिकार ना करे, तबे सेइ कन्या
ओ ताहार गर्भजात सन्तानसकल यथाशास्त्र दासि ओ नफर
हइते पारे कि ना ? एवं कोन शास्त्रानुसारे ए विषयेर निषेध कि
विधिर व्यवस्था हय सेइ व्यवस्थार श्लोक ओ भाषाते विवरण
अवगत होओया भावश्यक इति ।

प्रमुखमर्दितप्रभपत्रमवलोक्य यादृशशोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कस्यचिद् ग्रहस्थस्य कन्याया विवाहस्तत्पित्रा मात्रा वा मूल्यादिक-
मपहीत्वा कस्यचिदपरशब्दवाच्येनार्थादासेन सह कारितः, एवं विवाह-
समये तस्याः पित्रा मात्रा वा दासीत्वेन दानस्य किञ्चिल्लिखितादिकमथवा
स्वीकरणं न कृतं स्यात्तत्र यदि प्रश्नपत्रलिखितग्रहस्थशब्दे (वाच्यः ?)
कस्यचिद् दासो(न)भवति, तत्कन्यापि कौमारावस्थायां कस्यचिद् दासी न
पिता तदा, यदि वा प्रभपत्रलिखितग्रहस्थशब्देन (वाच्यः) कस्यचिदासो

भवति, यत्कन्यापि कौमारावस्थायां कस्यचिदासी स्थिता, कस्यचिदासेन सह विवाहे तस्याः स्वामिनो यद्यनुमतिस्तदा च सा परिणेतुदासेश्वरस्य दासी भवितुं शक्नोति । एवञ्च सत्येतत्पक्षद्वये तस्या गर्भजाताः सन्ताना अपि तत्परिणेतुदासेश्वरस्य दास्यो दासाश्च भवितुं शक्नुवन्ति, उपरिलिखित-प्रकारेण तस्या दासीत्वेन तद्गर्भजातसन्तानानामपि शास्त्रोक्तपञ्चदश-दासान्तःश्रुतिगृहजातात्मकप्रथमदासत्वात् । यदि च सा कन्या कौमारा-वस्थायां कस्यचिदासी स्थिता किन्तु कस्यचिदासेन सह विवाहे तस्याः स्वा-मिनो नानुमतिस्तदा च सा कन्या परिणेतुदासेश्वरस्य दासी भवितुं न शक्नोति, किन्तु पूर्वस्वामिन एव दासी भवति; एवं सत्येतत्पक्षे गर्भ-जाताः सन्ताना अपि एकस्य दासोत्पन्नत्वेन द्वितीयस्य दास्युत्पन्नत्वेन च द्वाभ्यामेव स्वामिन्यां विभज्य ग्रहोत्पन्ना भवन्ति—इति यङ्गदेशचलित-विवादमङ्गार्यवक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

दासेनोढा त्वदासी या सापि दासीत्वमाप्नुयात् ।

यस्माद् मर्त्ता प्रभुस्तस्याः^१ स्वान्यधीनः प्रभुर्यतः ॥

इतिधियादमङ्गार्यव (१ विवा० पृ० ५२५ क) (दाय)क्रमसंग्रहादि-
(दायक्र०पृ० ५४)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ७२५) । १ ।

सा च द्विविधा । कस्यापि न दासी, अन्यदासी च । तत्र पूर्वा दासोढात्वमात्रेणैव दासेश्वरस्य दासी, परा च तत्प्रभोरनुमतिसहकारेण अनुमता च न दासी—इति क्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् (पृ० ५४) । २ ।

गृहजातस्तथा प्रीतो लब्धो दायदुपागतः ।

अत्रा^२कालभृतस्तद्गृहाहितः स्वामिना च यः ॥

मोहितो महतश्चर्याद् युद्धे प्राप्तः परो जितः ।

तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्या^३वसितः कुतः ॥

१ तस्याद्—दास्य० ।

२ अप्रव्रज्यापस्त—नामसं० ।

३ भ्रातादिभूतस्तद्गृहाहितः स्वामिना च यः । अत्रा^२च मोहितोऽन्यत्वाद् युद्धप्राप्तः परो जितः—नामसं० ।

मस्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडंवास्तुतः ।

विमेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः॥

इतिविवादमहार्णव (१ विवा० ५१६ क) दायक्रमसंग्रहादि (दाकर्म०—
पृ० ५२) ग्रन्थवृत्तनारदवचनम् (नामसं०—पृ० ६६) ॥३॥ ० ॥ ० ॥

एवञ्च यद्यप्यननुमत्या दासेन दासी परिणीता तदा च स्वस्वस्या-
मिनोरेव दासदास्यो, तयोरेपत्यन्तु द्वाभ्यामेव स्वामिन्या विभजनीयम्—इति
(दाय) क्रमसंग्रहग्रन्थवर्तिलक्षणञ्चेति (पृ० ५५) ॥ ८ ॥ ० ॥

श्रीजर्जपतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६२—सदर देओयानि आदालतेर द्वितीय हाकिम श्रीगुल
आलक मुन्दर रास साहेबेर हजुर हस्ते अग्राम-व्यवहार राजा
राशीभूपणदेवराबेर पत्ते अशी ? कमलारान्तघकवर्ति अदिलाष्ट
गुरुगोविन्दचौधुरि रण्पाठएतेर मकहमाय इजरेजा १८२२ सालेर
१३ माह सेतम्बर अताबक बागला १२३५ सालेर ३० माह भाद्र
पौष शनिवादेर हओया रोवकारिर लिखित ऐ आदालतेर परिदत-
गणेर नामे आपन्दा मिसिले जबाब दाखिल करणेर हुकुमे
सओयाल—

सओयाल—

कागज-सकलेर द्वाराय पट्ट आछे ये धनदेश निरासि राम
राद्धरराय नामिक एक व्यक्ति आपन जमिदारिर मध्ये एक ग्राम
आपन माता राजराजेधरीर भरण ओ पोषणेर परिपत्ते यादा
तगाद निर्दिष्ट छिल आपन माताके एइ प्रकार ओ एइ नियमे
सोपई करिल ये ऐ ग्रामेर विक्रय कयाला कृष्णप्रसादनन्दी एक

व्यक्तीर विनामे लिखिया अन्य कोन व्यक्तिरे ताहा विक्रय ओ हेवा ना करण, ओ ऐ राजराजेश्वरि आपन जीयदेशा पर्यन्त नाहार उपस्यत्वे भोगवान थाकने, ओ ऐ मुसम्मातेर सत्युर पर ऐ ग्राम ऐ रामशङ्करेर पुत्रेर हथोन सम्बलित आपन मातार स्थान हइते एक किता एकरारनामा, ओ कृष्णप्रसादनन्द फरजि व्यक्ति हइते ऐ मुसम्मातेर लिखिया देओया एकरारनामार मजमुन मढो द्वितीय एक किता एकरारनामा लिखाइया लइल । तत् परे यखन सरकारेर घाफा खाजानार जन्ये समुदय महालेर, याहा ऐ रामशङ्करराय ओ ताहार पुत्र मोहनचन्द्रेर नामे कालेकटरि सिरस्ता लेखाजाय, निलामेर इस्तहार कालेकटरि सिरस्ता हइते लढके, तखन ऐ राजराजेश्वरि ऐ रामशङ्करेर अभिप्राय ओ फरजि व्यक्ति कृष्णप्रसादेर सम्मतिते ये ग्राम ऐ रामशङ्कर आपन माता मुसम्मात राजराजेश्वरिके नगद मास अछ्छादनेर परिचर्ते दियाछल द्वितीय एक व्यक्तिर हस्ते सम्यक प्रकारे विक्रय करिल । ओ ऐ कृष्णप्रसादनन्दिर नाम हइते कयाला लेखा गेल । अतएव जिज्ञासा करा याइतेछे ये ऐ रामशङ्करेर पुत्र मोहनचन्द्र मात व्यवहार थाकने, ओ द्वितीय विकोर सम्वन्धे ताहार अनुमति ना थाकने, ओ ऐ मोहनचन्द्रेर अप्राप्त-व्यवहार ऐ द्वितीय विकिर सम्वन्धे उहार अनुमति थाकने, फरजी व्यक्ति कृष्णप्रसादनन्दिर लिखिया देओया द्वितीय विक्रयपत्र, याहा रामशङ्कर ओ ताहार माता मुसम्मात राजराजेश्वरि अभिप्राय मते हइयाछे, बङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे सिद्धि ओ सङ्गत बट कि ना इति ।

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकमुन्दररायसाहेबवर्माधिकरणलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशवांघो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमलिखितप्रकारकरामशङ्कररायकर्तृकत्वस्त्वत्वास्पदीभूतसराजकर-स्यायरान्तर्गतैकग्रामसम्बन्धिप्रायमिकल्लविक्रयस्यार्थान् स्वमात्रे राखराजे-

स्वयं यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वभोगाय तद्ग्रामसमर्पणस्य प्रश्नपत्र-
लिखितप्रकारकाभ्यां राजराजेश्वरीलिखितसंवित्पत्रकृष्णप्रसादनन्दिनामक-
व्यक्त्यन्तरलिखितसंवित्पत्राभ्यां राजराजेश्वर्या यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोप-
स्वत्वभोगोपयुक्तमात्रस्वत्वोत्पादकत्वपर्यवसायित्वेन तद्ग्रामसम्बन्धिन्यां भूमौ
रामराङ्गरायस्य स्वत्वाविनाशकत्वात्, प्रभपत्रलिखितप्रकारेण राजरा-
जेश्वर्यै तद्ग्रामसमर्पणेन रामराङ्गरायस्य तद्भूमौ स्वत्वविनाशकयोर्वास्तवं
दानविक्रययोरनयनमात्रं, एषञ्च सति पितृस्वत्वे विद्यमाने पुत्रस्वत्वाभावा-
धोपकयद्देशचलितशास्त्रेण प्रभपत्रलिखितप्रकारेण तद्ग्रामसम्बन्धिन्यां
भूमौ मोहनचन्द्रस्य पितृ रामराङ्गरायस्य स्वत्वे विद्यमाने मोहनचन्द्रस्य
स्वत्वोत्पत्तिर्न भवति । नहि राजराजेश्वरीलिखितसंवित्पत्रेण राजराजेश्वरी-
मरणोत्तरं मोहनचन्द्रस्य स्वत्वं रामराङ्गरस्य स्वत्वविनाशो वा तद्ग्रामे तद्-
ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वे वा भवति । उपरिलिखितप्रकारेण राजराजेश्वर्या यावज्जीवं
तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वमात्रस्यामित्वेन तद्ग्रामस्यामित्वाभावात् स्वमरणोत्तरं
तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वास्यामित्वात् राजराजेश्वरीलिखितैतादृशसंवित्पत्रस्य धर्म-
शास्त्रोक्तस्वत्वोत्पादकहेत्यनन्तःपातित्वाच्च । एषञ्च सति जीवन्त्यां राजरा-
जेश्वर्यां रामराङ्गराये च जीवति सति सर्वथैव तद्ग्रामस्य तद्ग्रामोत्पन्नोप-
स्वत्वस्य चास्वामिनो मोहनचन्द्रस्य तद्ग्रामसम्बन्धिद्वितीयविक्रये अनुम-
तेरज्ञावश्यकत्वेन तस्य प्राप्त्यवधारतायां तदनुमतावसत्यामप्राप्त्यवधारतायां
च तदनुमतौ सत्यामपि द्वितीयविक्रयस्य तद्ग्रामसम्बन्धिभूस्वामिरामराङ्गर-
गयाभिप्रायेण कृष्णप्रसादनन्दिनामकव्यक्त्यन्तरानुमत्या चोपरिलिखितप्र-
कारेण यावज्जीवं तद्ग्रामोत्पन्नोपस्वत्वस्यामिराजराजेश्वरीकृतत्वेनैव यदा
राजप्राश्नकरग्रहणार्थं समुदायस्य सञ्चालनकारण्यावरस्य यत्तद्ग्रामराङ्गरायतत्पु-
त्रमोहनचन्द्रयोर्नाम्ना केलटरीमञ्जकप्रवर्तयाने लिखितं तस्य निलामसंशक-
विक्रयाशा तत्स्थानाधिपतिना दत्ता, तदा उपरिलिखितप्रकारेण जातत्वेन च
सिद्धेर्निष्पत्त्यूहत्वेन तत्प्रमाणभूतं कृष्णप्रसादनन्दिनामकव्यक्त्यन्तरान्ना
लिखितं द्वितीयविक्रयपत्रं यत्तद्भाराजेश्वरीरामराङ्गरोमयसम्पत्त्या जातं शा-
स्त्रानुसारेण सिद्धं सङ्गतञ्च भवति, यतः स्वामिसम्पत्त्या आस्वामिकृतोऽपि-
विक्रयः शास्त्रसिद्धः इति बह्वदेशचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तायली-

दायभागदायतत्त्वविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

योगाधमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् ।

यत्र चाप्युपधि पश्येत्तत्सर्वं विनिवर्त्तयेत् ॥

इति मनुवचनम् (८, १६५) ॥ १ ॥

योगशब्दश्छलपात्री । छलेन ये बन्धकविक्रयदानप्रतिग्रहाः कियन्ते न तत्त्वतो, अन्यत्रापि निःक्षेपादौ यत्र छद्म जानीयात्, यस्तुतो निःक्षेपादि न कृतं तत्सर्वं निवर्त्तते । इति मन्ययमुक्तावल्यां (५० ३०३) कुल्लूक-
भट्टव्याख्यानम् ॥ २ ॥

पितर्युपरते पुत्रा विभजेयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि गवेदेपां निर्दोषे पितरि स्थिते ॥

इति दायभाग (५० १३) दायतत्त्व (५० ३) विवादभङ्गार्णवादि (२ विवा० ५ क) ग्रन्थभूतदेयवचनम् ॥ ३ ॥

सप्त पितागमा धर्म्या दायो लाभः कस्यो जयः ।

प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥ इति मनुवचनम् (१०, ११६) ॥ ४ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीशुरथापि वा ।

कुर्युर्गृथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥

इति दायमागादि (५० ३५) ग्रन्थभूतनारद (१३।४२-४३) वचनम् ॥ ५ ॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिभूतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति व्यवहारोऽपि तथा—इति विवादभङ्गार्णव (१ विवा० ३०३ ख) लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्मविद्यावागीशेन

६३—रोयकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख २० माह माई सन १८२८ ई० मोताबक ८ माह ज्येष्ठ सन १२३५ वाङ्मला रोज मङ्गलवार एइ आदालतेर द्वितीय हाकिम भोयुत आलफ सुन्दर रास साहेबेर बैठके—

रत्नसिंह

सायल

सायल हाजिर आसिल। सायलेर सओयाल एक आना छय दाम तेर कौडी नओ चुडिर। मफईमा ताहार त्रिगुण उपस्वत्य मयलग १३२१-॥४ उनिप दामा तिन कौडीर तायदादे खास आपिल मजुर करणेर विषय एलाके आजिमायादेर प्रबिनसन फोटेर हाकिमगणेर नामे हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय मसम्मात धुपु ओ कथेसिंह ओ नियधारिसिंह ओ धोकलसिंह ओ कानायासिंहेर पत्तेर आपन नामिक मोकारनामा ओ एइ सनेर फेरबओरि माहरे ९ तारिखेर लिखित अजिमायादेर आपील आदालतेर एक फीता रोयकारि नकल ओ ई १८२२ शालेर हिसम्बर मासेर १६ तारिखेर लिखित जेला बेहारेर रेजिष्टर साहेबेर डिगरि नकल एक फेता ओ ई० १८२५ शालेर माह मासेर ११ तारिखेर लिखित ऐ जिलार जज साहेबेर डिगरि नकल सहित ये गत दिवस हुजुरे वासिल हइयाछिल अद्य दृष्टे आसिल। यथा सायलेर सओयालेर सम्वन्धे चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व ए आदालतेर परिडतदोगेर उपर सओयाल करा उचित बोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोयकारि नकल ए आदालतेर परिडतगणके एइ हुकुमे अर्पन करा जाय ये निचेर लिखित सओयालेर जवाब एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेन।

सओयाल—यद्यपि जिले बेहार निवासिनी हिन्दु एक छी आदालत हइते आपन पतिर हिस्सा वायन एक आना छय दाम तेर कौडी नओ चुडी जमिदारि डिगरि हासिल

करिया ऐ रकमेर भूमि सकल स्वतन्त्र करिया लखोनेर ओ ऐ डिगिरि मते ताहार उपर दखिल हथोनेर अनुमति डिगिरिते लिखा थाकनेओ आपन हिस्थार भूमि सकल पृथक करिया ना लइया हिस्थार सदी मते ताहार उपस्वत्व लइया पुत्र सन्तान ना राखिया मरे, एवं ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ कन्यार पुत्रगण आपनादिगके ऐ हिस्थार स्वत्वाधिकार ओ एवं ऐ स्त्रीर पतिर भ्रातार सन्तानरा ऐ हिस्था आवश्यक थाकन बजहारे ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ कन्यार पुत्रगणेर स्वत्वेर अस्वीकारे आपनादिगके ऐ रकमेर स्वत्वाधिकार करार देय—एमत अवस्थाय डिगिरि हथोया रकम बरटक किम्बा अबरटक बोध हवेक, ओ ऐ मृत स्त्रीर कन्या ओ दूहिपुत्रगणके अथवा बाहार पतिर भ्रातार सन्तान-गणके अपिवेक इति ।

श्रीज्जयतितराम्

जवाबव्यवस्था

एतद्धर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकमुन्दरराससाहेबधर्माधि-
करणलिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादशबोधो जातस्त-
दनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुकृतप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते यदि तत्प्रभुपत्रलिखितायाः स्त्रिया
जीवतः पत्युरंशो विमक्तो जातः स्वात्तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रपौत्ररहित-
त्वेन तत्पतिभ्रातृपुत्रादिभिर्बलात्कारेण विमक्तं तत्पत्यंशं गृहीत्वा समुदायब-
नमस्माकं साधारणगेव, नात्र विमागो जातः, अतएवेयं^१ पत्यंशयोग्यं प्राप्तुं
नार्हतीत्युक्त्या^२ तस्यै विमक्तः पत्यंशो न दत्तश्चेत्तदा यदि सा धर्माधिकरणे
निवेदनं कृत्वा स्वपत्यविमक्तंशस्य जयपत्रं प्राप्तवती, तज्जयपत्रलिखित-
धनस्य पृथक्कृत्य^३ ग्रहणस्यान्ते सति^४ तज्जयपत्रे लिखिते शत्यरि सा पृथक्-

१. ० अत्र वेदं—अप० ।

२. प्राप्तं गृहीतव्यं तत् स वि०—अप० ।

३. पृथक्—अप० । ४. ग्रहणस्थान्तमत्र तज्जयपत्रे लिखितं सा क्षयानपि—अप० ।

कृत्य तदग्रहीत्वा तदुपयुक्तोपस्वत्वं गृहीत्वा च मृताचेत् तथापि तत्रयपत्र-
लिखितघनं विभक्तमेवावगम्यते । एवं मृतायास्तस्याः स्त्रिया दुहितुस्त-
दभावे दौहित्राणां तत्राधिकारस्तस्याः पत्युर्भ्रातृपुत्रादीनां नाधिकारः ।
यदि च तस्याः स्त्रिया जीवतः पत्युरंशो विभक्तो न जातश्चेत्तदा प्रभुक्त
प्रश्नपत्रलिखितप्रकारेण तया अविभक्तघने पतियोग्यांशरथावरोत्पन्नोस्व-
त्वग्रहोऽपि तत्रयपत्रलिखितघनमविभक्तमेशवगम्यते । एतत्तद्वे तदने
तस्याः पतिभ्रातृपुत्रादीनामधिकारः, न तु तदुद्विष्टायां, तदभावे दौहि-
त्राणां वा—इति चेद्वाराह्यप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमा-
धवव्यवहारमूलव्यवहारकौस्तुभमिताक्षराटीकासुत्रोचिनोव्यवहाराध्यायबाल-
म्भट्टकृतमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुशारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तदेकदेशोऽ-
विषयतया व्य-स्थापनम्—इति मिताक्षरा (पृ० १६७) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

विभागशब्दस्त्वेकस्वाम्यानां द्रव्यसमुदायविषयाणां तत्तदेकदेशो व्य-
वस्थापने शक्तः—इति वीरमित्रोदय (पृ० ५२२) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्न्यभावे दुहितरोऽपुत्रविभक्ता संसृष्टिघनमाजः (विमि० पृ० ५५६) ।
दुहितुरभावे दौहित्रः—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् (पृ० ६६१) ॥ ३ ॥

एवं दौहित्रभ्रातृमुतसमवाये मृतस्य विभक्तत्वे दौहित्रस्य बलवत्त-
व्यशाहरणे सत्त्वेऽपि पितृदादौ स एव बलवान् । अविभक्तत्वे (तु) तद्-
भ्रातृमुतानामेवांशहरत्वादपि—इति व्यवहाराध्यायस्य मिताक्षराटीकायां
बालम्भट्ट (पृ० ८२०) लिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमित्रेण

श्रीहरिः शरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

६४—रोवकारि मिसिल आदालत दिमानि सदर तारीख
 ४ माह आगष्ट सन १८२८ अङ्गरेजी मतावक १४ माह श्रावण
 सन १२३(?) बाङ्गला रोज बृहस्पतिवार ओइ आदालतेर द्वितीय
 हाकिम श्रीयुत आलक सुन्दर रास साहेबेर बैठके—

गङ्गाधरवाचस्पति

साएल

साएलेर उकील मुनसी फकिर महम्मद हाजिर आइलो ।
 साएलेर हस्त दइते फतेहपुर परगणार मीजे आमरसिर वन्धक
 खालास बिषये वारानसेर कोर्ट आपीलेर हाकिमानेर हुकुमेर
 असम्मतिते ओ ताहार वन्धक हओनेर बिषये एइ आदालत
 दइते उचित हुकुम सादर हओनेर प्रार्थनाय अन्य हेतु सम्बलित
 सइलेर सओयाल ओइ डकिलेर नामिक उकालतनामा ओ एइ
 सनेर आपरेल मासेर . . . तारिखेर लिखित वारानसेर आपील
 आदालतेर रोवकारीर नकल ओ इ १८(?) सालेर आगष्ट
 मासेर . . . तारिखेर लिखित जिला फतेपुरेर आदालतेर एक-
 किता रोवकारिर नकल सम्बलित याहा १ एइ मासेर २ तारिखे
 दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आसिल । यथा साइलेर सओयालेर
 सम्बन्धे हुकुम सादर हओनेर पूर्व शाखेर बियरण ज्ञात हओन
 उचित बोध हइल, अतएव हुकुम हइल ये आदालतेर पण्डित-
 गण निचेर लिखित सओयालेर जवाब एक सप्ताह मध्ये दाखिल
 करेण ।

सओयाल

यद्यपि वारानस देसेर कोन जमिदारि चारि सरीकेर मध्ये
 एकत्र ओ साधारणे थाके, ओ जमिदारीर सरीकगण मध्ये दुइ
 जने आपन २ अवयटक हिस्सा काहारोनिकट वन्धक राखे, तवे
 एइ प्रकार वन्धक वारानस देसेर चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध बंट

किं ना ? ओ तादा सिद्धि ह्यथोन विषये अन्य सरिकेर अनुमति
आवश्यक किं ना इति ।

एतद्वर्माधिकरणद्वितीयाधिपतिश्रीयुतआलकमुन्दरराससादेवधर्माधि-
करणलित्वितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-
दनुसारेणोत्तर लिख्यते ।

यद्यपि वाराणसीप्रदेशीया काचित्सराजकरभूधनुर्णामंशानां मध्ये एकत्र
साधारणे घत्ते । अथ च सराजकरभुवोऽंशानां मध्ये द्वाविभक्तस्वत्वांशं
कस्यचिद्विफले बन्धकीकृत्य रत्तः, तदैवाहशब्धककरणमवशिष्टयोर्द्वयोर-
शिनोरनुमति विना सिद्धं न भवति । अतएव तत्सिद्ध्या अत्यन्तरानुमति-
रावश्यकी—इति वाराणसीप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानु-
सारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अविमर्शेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वादेकस्यानीधरत्वात् सर्वाम्यनुज्ञा
अवश्यं कार्या । विभक्तेषु तु (उत्तरकालं विभक्ताग्निभक्तसंशयवृद्धा-
सेन व्यवहारसौकर्याय सर्वाभ्युनज्ञा न पुनरेकस्यानीधरत्वेन । अतो)
विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्धवत्येवेति ध्यातव्यः—इति
मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥ • ॥ • ॥ • ॥

एह सगल खोलही अगस्ति १६ रोज शनिवार प्रहर पाँच घण्टाके
बखत मिला, ओ एहेना २१ अगस्ति रात्र बुधरातिवार चारि घण्टा
के व्यवस्था दाखिल किया सिरस्ताभो ।

श्रीज्जयतिवसाम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्य रायमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

नं० २५५३

६५—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ११ माह आगस्त सन १८२८ इङ्गरेजि मतावक २८ माह श्रावण शान १२३५ चाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटघरट धरनेल शेलि साहेबेर बैठके—

जयरामधामि स्वयं ओ मृत बखोरिधामिर स्त्री दिपुधामिनिर अप्राप्तव्यवहार पुत्र रामचन्द्र धामिर पत्ते अलि प्रकारे—

आपिलाष्ट

मुशानधामि

रषादष्ट

स्वयं आपिलाष्ट ओ रषादष्टेर उकिल मौनयि गोताम एज-
वानि हाजिर आसिल । ए मर्कदना इ १८२७ सालेर २५ आगस्त
मासेर हओया रोवकारि लिखि । साबे ८ द्वितीय हाकिमेर हुकुम
मते एइ मासेर साबेक ६ आ ७ तारिखे रावकार हइया ओ
जिलार आदालतेर दाखिल हओया कागज सकल १ लम्बर
हइते तथाकार फयशला आ प्रवणसन कार्टर कागज सकल
तथाकार फयशला ओ ए आदालतेर कागज सकल १ लम्बर
हइते ३३ लम्बर सक पडागिया दिवा अवशान प्रयुक्त स्थिति
छिलो, पुनराय अथ उपस्थित हइया ए आदालतेर बाकि कागज
सकल इ १८२७ सालेर २५ आगस्त मासेर लिखित साबेक
द्वितीय हाकिमेर राय सम्बलित दफ्ते आसिल । जानागेत ये जिला
वेहारेर जज साहेब ऐ जिलार आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था
लओन परे आपिलाष्टेर पूर्व पुरुस भोलाधामि ओरफे लछुसन
धामि ओ मृत बखोरिधामिर दावि डिकरि करेन । प्रवणसन
फोर्टेर हाकिमगण शास्त्रानुसारे भोलाधामि ओरफे लछुसनधामिके
मशाम्मात नेवाजो मतोफिया पुण्यपुत्र करण ओ मशाम्मात
मजकुरा वृत्ति रामशिला प्रभृति ऐ धामिके दान करखेर क्षमता
ना थाकन ज्ञान करिया जेलार छिगरि रद करियाछेन । फिन्दु

तद्विवादप्रत्ययिनी नेवाजोनाम्नी दत्तोत्तरतात्पर्यायेन च भर्तुनुमत्यभावस्य निश्चितत्वेनावगमात् । एवं तस्या नेवाजोनाम्न्या रामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य सस्यै लक्ष्मणधामिप्रसिद्धभोलाधामिनाम्ने^१ दानकरणक्षमतापिवास्तवं नासीत् तत्पत्रजातान्तर्गतैतद्वर्माधिकरणार्थिनिवेदनपत्रेणैवं कोट्यपीलाख्यधर्माधिकरणियत्रपत्रेणाय च एतद्वर्माधिकरणोपपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितैतद्वर्माधिकरणप्रत्ययिनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतस्य रामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्या नेवाजोनाम्न्याः प्रतिधनत्वेनावगमाद् अथ च तत्पत्रजातान्तर्गतैतद्वर्माधिकरणोपपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितप्राच्यरामनाम्न्याधिसम्बन्धिविवादनिविष्टनेवाजोनाम्नीप्रत्ययिनीदत्तोत्तरपत्रेणैवं कोट्यपीलाख्यधर्माधिकरणोपपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितैतद्वर्माधिकरणप्रत्ययिनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतरामशिलावृत्तिप्रभृतिधनस्य तस्या नेवाजोनाम्न्याः पत्युः क्रमागतत्वेनावगमाच्च । यतस्तदुपरिलिखितप्रकारकपतिधनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तात्वेप्यदृष्टार्थं विना तदन्तर्गतकिञ्चिद्धनस्यापि पत्या दानानधिकारः । प्रकृते तु तत्पत्रजातान्तर्गतजिलाख्यधर्माधिकरणोपपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितलक्ष्मणधामिप्रसिद्धभोलाधामिनामकोद्देश्यकदानपत्रेण विवादास्पदीभूतधनस्यादृष्टार्थकदानानवगमाद् परं विवादास्पदीभूतोपरिलिखितप्रकारकसमस्तपतिधनस्य स्वैच्छया स्यामिप्रायेण च नेवाजोनाम्नीकसूक्तदानावगमाच्च—इति वैद्यराख्यप्रदेशचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिमितादराधीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृह्णीयाद् अन्यत्रानुज्ञानाद्धर्तुः—इति दत्तकमीमांसा (पृ० ७) दत्तकचन्द्रिका (पृ० ३) दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थकृतवशिष्टवचनम् ॥ १ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पात्रयन्ती गुरो स्थिता ।

सुजीतामरणान् क्षान्ता दद्याद् उर्ध्वमानुवृत्तः ॥

इति वीरमित्रोदयादि (वीमि० ख पु० ६२७) अन्यभृतकत्वायन (कास्म० ६२१) वचनम् ॥ २ ॥

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिविघातं कथञ्चन ॥

इति वीरमित्रोदयादि (वीमि० ख पु० ६२८) अन्यभृतभारत (११/४७/२४) वचनञ्चेति ॥ ३ ॥ • ॥ • ॥ • ॥

श्रीजर्जपतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीपैद्यनायमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

नं० २६८४

६६-रोषकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर वारिख १६ माह आगस्त सन १८२८ ई मलाबक माह ५ भाद्र सन १२३५ वाङ्गला राज मङ्गलवार पे आदालतेर पञ्चम हाकिम भीयुत राब-रत हालडन राटार साहेबेर बैठके ।

राजा गिरीशचन्द्रराय

आपिलाण्ट

मृत राजा ईशानचन्द्रदेवरायेर अप्राप्तव्यबहार पुत्रगण राज-कोटर नरहरिचन्द्रदेवराय प्रभूतिर राजा जमेशचन्द्रराय—
रप्पाडण्ट—

आपिलाण्टेर उकिल मुनसि गौलाम मण्डल, रप्पाडण्टेर उकिल सदासुक पण्डित दात्रि आसिल । एइ मकरमा कल्य रोवकार हइया प्रविरान कोटेर कागजसकल १ लम्बर हइते तथाकार फयशला पर्यन्त ओ ए आदालतेर दाखिल हओया

आरसि' मजुयात पढागिया दिवा अवशान प्रयुक्त स्थकित स्थित । पुनराय अय उपस्थित हइया ए आदालते दाखिल हइया जवाब द्ये आसित । देशेर सर्वकालेर डाँडा आछे ये हिन्दु जाति ये पितार मृत्युर परे ताहार घन ओ वस्तु उत्तराधिकारिगणेर मध्ये बण्टक हय । किन्तु ताहार बहिर्भूत छभयेर पूर्व पुरुष मृत राजा कृष्णचन्द्रराय आपन जीवदशाय कोटेर नथिते दाखिल हओया हेवानामाय आपन समुदाय वस्तु अन्य पुत्रगणेर नैराशे आपिला-यटेर पितामह ज्येष्ठ पुत्र राजा शिवचन्द्ररायके लिखिया दियाछे । यद्यपि ऐ राजा हइते देशेर ओ नियमेर डाँडार बहिर्भूत हइयाछे, तथा' च राजार दानकारण ओ हेवानामा लिखिया देओनेर क्षमता ताहाके छिल । किन्तु यथा ऐ हेवानामाते लेखा गयाछे ये कोकर शम्भुचन्द्रदेवरायेर अधिक पुण्य शालियाना मबलग १५००० हाजार टाका ओ कोकर महेशचन्द्रदेवरायेर शालियाना मबलग १०००० हाजार टाका ओ कोकर नरहरिचन्द्रदेवराय अप्राप्त-व्यवहार प्रभृतिर पिता कोकर ईशानचन्द्रदेवरायेर' शालिआना मबलग १०००० हाजार टाका ओ मृत भैरवचन्द्रदेवरायेर पुण्यपुत्र माधवचन्द्र देवरा'येर २५०० आडाइ हाजार टाका ओ मृत कोकर हरचन्द्रदेवरायेर पोष्यपुत्र यज्ञचन्द्ररायेर' शालिआना मबलग २५०० आडाइ हाजार टाका मशहरा देयाइया पाइवेन इति, ओ हेवानामा मजमुनेर द्वाराय राजार आकांक्षा स्पष्ट बोध हइतेछेना ये मशहरा पाडयागणेर मृत्युर पर ताहांदिमेर उत्तराधिकारिगण मशहरा देइया पाइवेन, किन्वा बन्ध हइवेक । ओ आमार बुद्धे आइसे ये अन्य पुत्रगणेर जन्ये येसकल मशहरा नियुक्त राखि-याछे' ताहा फलितार्थे जामिदारि' प्रभृतिर अंशेर बदले ये ताहारो ओहार स्वत्वाधिकार छिल, हइयाछे । ओ ऐ हेतुते ऐ मशहरा

१. आरसि—इति तापीयान् पाठः । २. तथा च—अप० ।

३. देवराय—अप० ।

४. यज्ञचन्द्रराय शालि—अप० ।

५. रामिया दे—अप० ।

६. जमिदारि प्रभृ—अप० ।

प(१)इया गणेर उत्तराधिकारिगणसकल आपन आपन पूर्व पुरुष-गणेर सत्वे नियुक्त हओया मशाहरा, याहा उहादिगेर पूर्व पुरुष-गणेर जमिदारि प्रभृतिर हिस्यार बदले बटे, पाओनेर बलवान स्वत्वाधिकारि बोध हय । किन्तु ऐ हेवानामाय मशाहरार बिस्तारित लेखा ना थाकन सन्देह प्रयुक्त ये ऐ मशाहरासकल ताहा पाइ-यागणेर जीवदशा पर्यन्त बहाल थाकिवेक, किम्बा ताहारदिगेर मृत्युर पर ओहादिगेर उत्तराधिकारिगणकेओ अंशवेक । ऐ बिषयेर उचित हुकुम सादर हओया अनुचित । अतएव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व सन्देह छेदनार्थे एइ आदालतेर पण्डितगण हइते एइ बिषय जिज्ञासा करण उचित हइल ये यद्यपि मृत राजा कृष्णचन्द्ररायेर अन्य पुत्रगण पितृ-जमिदारि प्रभृति मालामानेर अंश हइते नैराश हइवेन, ओ जमिदारि प्रभृतिर अंशेर बदले उहार दिगेर जन्ये मशाहेरा नियुक्त हइल, ए प्रयुक्त मशाहेरा पाओइया-गणेर जीवदशा तक, किम्बा ताहारदिगेर मृत्युर परे उहादिगेर उत्तराधिकारिगणकेओ ऐसकल मशाहेरा अपेन पण्डितगणेर विवेचनाय हय । उचित ये हेवानामार मजमुन सुन्दर प्रकार हाव हइया ऐ बिषयेर जवाब आपन्दा मङ्गलवारेर दश घण्टा पर्यन्त दाखिल करेन । अतएव हुकुम हइलो ये एइ रोक्कारि नकल हेवानामा सहित पण्डितगणके अर्पन करा जाय ओ अद्य सकदमा स्यकित थाके इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणपञ्चमाधिपतिश्रीयुतगवर्द्धालङ्कनराट्रिमादेवधर्माधिकरणलिखितपिचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रतिरूपपत्रमवलोक्य तत्समर्पितदानपत्रार्थमङ्गल्य च यादृशबोधो जातस्तदनुषारेणोत्तरं लिख्यते—

ययनि मृतस्य राज्ञः कृष्णचन्द्ररायस्यान्ये ये पुत्राः पितृकराजकरभू-

प्रभृतिधनांशाभिस्ताः अथ च सराजकरभूमभृतेरंशविनिमये तेषां प्रभुस-
मर्पितविचारपत्रलिखितप्रकारेण वार्षिकं नियुक्तम् । अतो वार्षिकग्राहिणां
मरणानन्तरं तेषामुत्तराधिकारिणामपि तत्समस्तवार्षिकसमर्पणमस्माद्विवेचने
सिद्धं भवति, यतः प्रभुसमर्पितदानपत्रेण मृतराजकुप्यचन्द्ररायकतुकराज-
शिवचन्द्ररायोद्देश्यकस्वत्वास्पदीभूतसराजकरभूमभृतिधनदानावगमात् । तत्र
यदि राजशिवचन्द्ररायमरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिणां तद्वानाधीनराजशिव-
चन्द्ररायस्वत्वास्पदीभूतसराजकरभूमभृतिधनाधिकारस्तदा तदानपत्रलिखित-
तवार्षिकदानाधीनदानपत्रलिखितवार्षिकग्राहिस्वत्वास्पदीभूतवार्षिकधने तेषां
मरणानन्तरं तद्वार्षिकग्राह्युत्तराधिकारिणामप्यधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वाद्,
दानस्य उभयत्र तुल्यत्वाद् वार्षिकस्य तेषां सराजकरभूमभृतिधनांशविनिम-
यत्वात् । यतस्तद्दानेन वार्षिकग्राहिणां स्वत्वोत्पत्तिरत एव तदुत्तराधिकारिणां
तद्वार्षिकस्य दायत्वेन स्वत्वोत्पत्तेर्निष्पत्त्युह्यतात् । अथ च दानपत्रलिखित-
प्रकारेण स्वपुत्रभैरवचन्द्रदेवस्य श्रीरसपुत्रापेक्षया जपन्यदत्तपुत्रमाधव-
चन्द्रदेवसंश्लक्षस्वपौत्रोद्देश्यकवार्षिकदानेन स्वपुत्रहरचन्द्रदेवस्य दत्तपुत्र-
यशचन्द्रदेवसंश्लक्षस्वपौत्रोद्देश्यकवार्षिकदानेन च एवं मया यो नियमः कृत-
स्तत्स्योक्तदृष्टेन तैरेषं त्वया च कदाचिदपि न कर्तव्यम् ; यदि कश्चित्
कदाचिदेतन्नियमस्यान्यथाचरणोयुक्तस्तदा तदन्वथाचरणं लोकतो धर्मतश्च
राजसन्निधौ चाम्राष्ट्रमितिदानपत्रलिखनेन च मृतस्य राज्ञः कुप्यचन्द्ररायस्य
तथाभिप्रायावगमाच्च—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी
व्यवस्येति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकरणम्—इति मनुवचनम् । (५।१५२) ॥ १ ॥

सप्त विभागमा धर्म्या दायो लाभः प्रयो जयः ।

प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥—इति मनुवचनम् ।

(१०।११५)

ततश्च पूर्वस्वामिसम्बन्धाधीनं तत्त्वाम्योपरमे यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र निरूढो दायशब्दः—इति दायभाग (पृ० ५) ग्रन्थलिखनञ्चेति ।

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथपित्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

सं० २५६०

६७—रोयकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख २५ माह सेतम्बर सन १८२८ ई मतावक ११ माह आश्विन सन १२३५ चाङ्गला रोज घुहस्पतियार ऐ आदालतेर प्रथम हाकिम ओयुत उलियम नसष्टर साहेबेर बैठके ।

जयमणिदेव्या प्रभृति

आपिलाटगण

फकिरचन्द्रचक्रवर्त्ति

रप्पाडण्ट

आपिलाटगणेर उकिल मुनशी होसेन आलि ओ रप्पाडण्टेर उकिलगण मुनशी दादार वक्स ओ प्राणचन्द्रचट्टोपाध्याय हाजीर आसिल । ए मकदमा एइ सनेर आगष्ट मासेर २६ तारीखे आमार बैठके रोयकार हइया ए मकदमा आर खास आपिल मझुरिर हेतु सम्यलित ई १८२३ सालेर नवम्बर मासेर ८ ओ ई १८२४ सालेर जानओरि मासेर ७ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोयकारि सकलेर दृष्टे बोध हइल ये ए मकदमा शास्त्रे सम्पर्क राखन ओ शास्त्रे हेतुसकल यथार्थ निवेचना ना हओन दृष्टे ताहार आपिल मझूर हइयाछे । अतएव समुदय फागज दृष्ट हओनेर पूर्व ऐ आदालतेर पण्डितगण हइते निवेर सओयालसकलेर जवाबे व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकूम हइल ये एइ रोयकारि नकल ए आदालतेर पण्डितगणके समर्पण करा जाय, ये ऐ

सञ्चोयालसकलेर जवाब बङ्गदेश चलित शास्त्रानुसारे एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण ।

प्रथम सञ्चोयाल । यद्यपि एक व्यक्ति पैतृक देवोत्तर भूमि-सकल ओ देवसेवार पालि राखिया आपन स्त्री ओ पुत्र ओ पुत्रवधुर समते मरे, ओ कथक दिवसान्तर मृत व्यक्तिर पुत्र ओ माता ओ स्त्री राखिया निसन्तान मरे, तबे दुइ खिलोक अर्थात् सासुडि ओ पुत्रवधुर मध्ये के ऐ त्यक्त धनेर स्वत्याधिकारिणी हइवेक ।

द्वितीय सञ्चोयाल । यदि स्यात् मृत व्यक्तिर पुत्रे मृत्युर पर सासुडि ओ पुत्रवधु अनन्य प्रयुक्त ऐ सकल देवोत्तर भूमि सेवार पालि हिस्सा करिया लइया ताहार नादाबि आपनाबिगेर हिस्सा दान विक्रयेर चेमतार नियमे लिखित ओ पढित करिया थाके, तबे शास्त्रानुसारे देवोत्तर भूमि ओ ठाकुरसेवार पालि बाबत एमत लिखित पढित सिद्धि कि ना ?

तृतीय सञ्चोयाल । यदि दुइ खिलोक नादाबिर लिखित पढितेर अनुसारे देवोत्तर भूमिसकल ओ सेवार पालिते दखिल हइया ऐ सासुडि आपन पुत्रवधुर जिवदशाते आपन अंगेर देवोत्तर भूमिसकल ओ सेवार पालि काहारो निकट बन्धक राखेन, किन्वा आपन परकालेर कर्मेर पैतृके अथवा पतिर श्रृण परिशोधनार्थ काहार हस्ते विक्रय करिया थाके, तबे एमत विक्रय-सिद्धि इहवे कि ना इति ।

श्रीर्जयतिराम

जवाबन्यवस्था

एतदुर्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतअलिखमनसष्टरसाहेबधर्माधिकरणलिखितधिचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिस्सपत्रमवलोक्य यादृशचोपो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्येकः कश्चित् पित्राद्यायत्तभूतां समस्तां देवत्रभूमिमय च देव-
सेवायाः कालिकाशं च संरक्ष्य विद्यमानायां स्वपत्न्यां स्वपुत्रे च विद्यमाने
पुत्रवध्वां च विद्यमानायां मृतः, ततः किञ्चित्कालानन्तरं मृतव्यक्तेः
पुत्रोऽपि स्वमातरं स्वपत्नीं च संरक्ष्य निःसन्तान एव मृतः, तदा द्वयोः
श्वभूपुत्रवध्वोर्मध्ये पुत्रवधूरेवोपरिलिखितप्रकारकघनेऽधिकारिणी भवति,
यत उपरिलिखितप्रकारेण पितृमरणोत्तरं तत्पक्षधने तत्पुत्रस्याधिकारे
जाते सति तद्धनं तत्पुत्रस्यैव जातम् । अतस्तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारि-
णामेव तद्धनाधिकारः । तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये तस्य प्रभपत्र-
लिखितप्रकारेण पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या एव प्राधान्यमिति—

अत्र प्रमाणम्—

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्का-
लङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१८) लिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ-
(दायभा० पृ० १५१) भूतयाश्वत्थस्यवचनम् (२।११५) ॥ २ ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि मृतव्यक्तेः पुत्रस्य मरणानन्तरं श्वभूपुत्रवध्वोरनैक्येन तत्समस्त-
देवत्रभूमिमय च देवसेवायाः कालिकाशं च विमग्न्य ताभ्यां गृहीत्वा तस्य
देवत्रभूम्यादेः स्वश्वेतर्षाशप्राप्त्यनिच्छया कल्पितस्वत्वांशदानविक्रयक्षमता-
नियमेन लिखितं कृतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण देवत्रभूमेर्देवसेवायाभ-
कालिकाशस्यैतादृशं लिखितं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, प्रथमप्रश्नोत्तरलिखित-
प्रकारेण पुत्रवध्वा एव पतित्यक्षधनाधिकारित्वेन तस्याभ तद्धने स्वच्छदा-
दानविक्रयैतादृशविभागकरणक्षमताविरहाद् देवत्रभूमौ देवभिक्षानां केया-
ञ्चिदपि स्वत्वामाधान्वेति—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्यं बाह्यस्यं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके शुभोच्छिष्टेन जीवति ॥—इति मनु (११।२६)

वचनम् ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवत्वम्—इति कुल्लुकभट्ट (पृ०

४३०) व्याख्यानम् ॥ २ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

सुजीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभागादि
(पृ० १७१) ग्रन्थभृतकात्यायन (कास्मृ० ६२१) वचनम् ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि द्वे स्त्रियौ स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छया लिखितानुसारेण समस्त-
देवत्रभूमौ देवसेवांशे चायत्तत्वं सम्पादितवत्यौ, तयोर्मध्ये श्रद्धार्थिभ्यां
स्वपुत्रयभ्यां तल्लिखितानुसारेण स्वांशभूतत्वेन मन्यमाना या देवत्रभूमेस्तथा-
विषस्य देवसेवांशस्य च कस्यचिन्निकटे कथमयथा स्वस्वगार्थोल्लेखे-
नाथवा पतिकृतर्णपाकरणार्थोल्लेखेन विक्रयं वा कृतवती तदैवावशविक्रय-
करणं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण तस्यास्तद्ध-
नस्वामित्वामावाद्, द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण स्वस्वेतरांशप्राप्त्यनिच्छा-
लिखितस्यासिद्धत्वेन तल्लिखितानुसारेणापि तस्यास्तद्धनस्वामित्वामावाच्च-
इति यद्देशचलितमनुकुल्लुकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागश्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदामभागीकविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिविक्रयं दानमाधिष्ठ विनिवर्त्तयेत् ॥—विवादभङ्गार्थवादि

(१ विवा ३१७ ख) ग्रन्थभृतकात्यायन (कास्मृ०-६१२) वचनम् ॥ १ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनु (८।१६६)
वचनञ्चेति ॥ २ ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

६८—रोबकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिल
१ माह दिशम्बर सन १८२८ ई मत्वावक १७ माह अमहायण सन
१२३४ बाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत फट-
वरट धरलेन सिलि साहेबेर बैठके ।

मृत बाबु अभयनारायणसिंहेर खी मुसम्मात पुनितकोडर ओ
कन्या मुसम्मात अस्यमेधकोडर— साएल ।

साएलानेर उकिलगण मुनशी दादार बकूस ओ मुनशी महम्मद
आलि खा ओ बाबु रूपनारायणसिंह, द्वितीय पक्षेर उकिल सदा-
मुक्त पण्डित हाजिर आसिल । एइ सनेर नवम्बर मासेर २६
तारिले उभयेर दाखिल करा सओयाल प्रभृति ताहार सम्पर्कीय
कागजसकल आमार बैठके उपस्थित हइया दिवा अवसान प्रजुक्त
स्थिति छिल, अद्य पुनराय रोबकार हइया ऐ कागजसकल एइ
सनेर २७ आगस्त ओ २५ सितम्बर मासेर लिखित द्वितीय हाकिम
ओ पञ्चम हाकिमेर राय सम्बलित दृष्टे आसिल । तत् परे बाबु
रूपनारायणसिंहेर उकिल ई १८२७ शालेर मार्च मासेर २४ तारि-
केर निवेदित आजिमावादेर प्रविनसन कोर्टेर दाखिल हओया
जेला त्रिहोतेर कलेक्ट्र साहेबेर सओयालेर एक किता नकल ओ
इङ्गरेजि छय किता चिटिर नकल दाखिल करिल, पढागेल । यथा

एइ मकदमार चूडन्त हुकुम सादर हथोनेर पूर्व ए आदालतेर पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन उचित हइल अतएव हुकुम हइल ये ए आदालतेर दाखिल हथोया कागजसकलेर सम्वलित एइ रोबकारिर नकल एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितगणके सम-
र्पण करा जाय ये ए आदालतेर पण्डितगण ऐ कागजसकलेर दृष्टे मैथिल देसेर चलित शास्त्रानुसारे निचेर लिखित सओयालेर जबाब एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण ।

सओयाल —

चौधरिरी आजितसिंहेर तिन पुत्र । प्रथम बाबु दिगविजयसिंह, द्वितीय बाबु सर्वजितसिंह, तृतीय बाबु उमराओसिंह छिल । उमराओसिंह तृतीय पुत्र निस्वन्तान मरिल । बाबु दिगविजयसिंहेर पुत्र बाबु मुपनारायनसिंह ओ बाबु सर्वजितसिंहेर पुत्र बाबु रज्जीतसिंह उत्तराधिकारित्व स्वत्वे आपनर पितार मात ओ मिलकियते भोगवान् छिलेन । ताहारद्विगेर मृत्युर पर बाबु मुपनारायणसिंहेर पुत्र बाबु अभयनारायणसिंह ओ बाबु रज्जितसिंहेर पुत्र बाबु रूपनारायणसिंह आपनर पितार त्यक्त धन ओ वस्तुते दाखलकार हइया बाबु अभयनारायणसिंह मुसम्मात पुनितकोडर स्त्री ओ मुसम्मात अस्यमेधकोडर कन्या, ओ तृतीय पुदसिय खुडतात भ्राता बाबु रूपनारायणसिंहके राखिया मृत्यु हय । अतएव जिज्ञासा जाय जे यद्यपि बाबु अभयनारायणसिंह आपन मृत्युर पूर्व तालुक केवल नारायणपुर ग्रभृतिर अर्द्धक-
हिस्यार उपर आपन खुडतुता भ्राता बाबु रूपनारायणसिंहेर साधारणे दाखिल थाकिया मरिया थाके तवे ऐ मृत व्याप्तर त्यक्त वस्तु कोन व्यक्तिके अर्थात् स्त्री, किम्बा कन्या, किम्बा बाबु रूपनारायणसिंहके असिबेक । ओ यद्यपि ऐ मृत व्यक्तिर त्यक्त अर्द्धक हिस्या ताहार मृत्युर पूर्व विभाग हइया ऐ मृत व्यक्ति विभाग अनुसार ताहार उपर भोगवान हइया मरिया थाके तवे ऐ व्यक्तिगणेर मध्ये कोन व्यक्तिके मृत व्यक्तिर त्यक्त वस्तु असिबेक इति ।

श्रीजयतितराम्

जवावव्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतकटवरटयरलेनसिलीसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद् विवादविषयनिबिष्ट-
पत्रजातं चावलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते-

यद्यपि मृतबाहुध्रमयनारायणसिंहः स्वमृत्योः पूर्वं केशवनारायणपुर-
प्रभृतिसराजकरस्थावरस्याद्वांशे^१ स्वपितृव्यपुत्रबाहुरूपनारायणसिंहस्य साधा-
रण्यात् भुञ्जानस्मन् मृतस्तदा तस्या एव मृतव्यक्तेस्त्यक्तं केशवनारायण-
पुरप्रभृतिसराजकरस्थावरस्याद्वांशे^२ बाहुरूपनारायणसिंहः सपिण्डत्वेन साधा-
रण्यात्प्रतियोगित्वेन च प्राप्तुं शक्नोति, प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्विवादास्पदीभूत-
कमागतसराजकरस्थावरान्तर्गतकेशवनारायणपुरप्रभृतिप्रामाण्यां तत्तद्प्रामा-
न्तर्गताया भूमेर्वां अशपरिच्छेदानवगमाद् यत् तत्पत्रजातान्तर्गतरेजीशब्द-
प्रतिपाद्यपञ्चविंशत्यधिकाष्टादशशतान्दीयनबम्बरमासीयचतुर्थदिवसलिखित-
घोरभुक्तिप्रदेशीयकलकटरपदाभिषिक्तसाहेबलिखितविचारपत्रेणैव^३ सप्त-
विंशत्यधिकाष्टादशशतान्दीयापरेलमासीयपञ्चमदिवसलिखितकलकटरपदा-
भिषिक्तसाहेबकृतनिवेदनपत्रेण च विवादास्पदीभूतस्य केशवनारायणपुर-
प्रभृतिसराजकरस्थावरस्थाभयनारायणसिंहरूपनारायणसिंहयोस्ताधारण्याव-
गमाद् एतादृशकमागतसाधारणधने पत्नीदुहिभोरधिकारप्रतिपादकं मिथि-
लादेशचलितशास्त्रामावाधः । यदि च तस्या एव मृतव्यक्तेस्त्यक्ताद्वांशे^४
विभक्तः, सा च मृतव्यक्तिर्विभागानुसारेण तदुपरि श्राव्यत्वं सम्पाद्य मृता,
सदोपरिलिखितानां मध्ये पुनीतकोमराख्या, तत्पत्नी, तस्या एव मृतव्यक्ते-
स्त्यक्तधनं प्राप्तुं शक्नोति, पुत्रमैत्रप्रगौररहितस्य मृतस्य विभक्तधने पत्न्या-
प्रदानाधिकारित्वात्—इति मिथिलादेशचलितवेवादरत्नाकरविचारचिन्ता-
मणिविवादचन्द्रदेवनिर्णयद्वैतारशिष्टादिग्रन्थानुसारणो व्यवस्था—

१. ०२०रो—पृ० ।

२. २२०रो—पृ० ।

३. पदेदेवं—पृ० ।

४. ०२०१—पृ० ।

अथ प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं मर्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।

पत्न्येव दद्यात् तत्पिण्डं कृत्स्नमंशं लभेत च ॥—इति विवाद-
रक्षाकर (पृ० ५११) विवादचिन्तामण्यादि (पृ० २३६) ग्रन्थपुनर्वृद्धमनु-
यचनम् ॥ १ ॥

इदञ्च विभक्तपतिघनपरम्—इति विवादचिन्तामणि (पृ० २३७)
ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अविभक्ते^१ मृते पत्न्यो तस्यांश एव नामूदिति^२ किमियं गृह्णातु । न
च सेवांशप्रतियोगिनी प्रापकमावात् । न चैतान्येव वाक्यानि प्रापकाणि
तैषां विभक्तघनपरत्वेनाप्युपपत्तेः—इति विवादचिन्तामणि (पृ० २३७)
ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

आतृमार्थ्यायां पित्रायां पत्याहितगर्भायां तद्देवरादीनां विभागे प्रकान्ते^३
तस्या अपि शङ्कितपुत्रप्रसवावा^४ दाम्य^५ आप्रसर्वं स्वप्यः । स च
तस्याः पुत्रे जाते^६ तत्पुत्रस्यैव भवति पुत्रेऽनुत्पन्ने तु देवरादिभिर्माहः—
इत्यादि विवादचिन्तामणि (पृ० २३८) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

विभक्तानामपि यत्रांशपरिवृद्धे न जातस्तन्मध्यगमेव तिष्ठति तेन
तत्र साधारणत्वमेव—इति विवादचिन्तामणि (ख वि० चि० पृ० १६१)
द्वैतपरिशिष्टादिग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

अनपत्यस्य घनं पत्न्यमिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृ-
गामि तदभावे पितृगामि तदभावे आतृगामि तदभावे आतृपुत्रगामि^७ तद-

१. अविभक्तमयीते तु पत्न्यो—विचि० । २. मृत. किमि०—विचि० ।

३. यथा—विचि० । ४. प्राप्ते—विचि० ।

५. शङ्कित—व्यप । ६. मातृ—विचि० ।

७. पुत्रे कृत्यन्ते—विचि० ।

८. तदभावे आतृगामि—अतोऽयं विवादचिन्तामणौ नोपपत्तेः ।

भावे बन्धुगामि—इत्यादि विवादचिन्तमणवादि (विचि० पृ० २३५) अन्य-
लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिःशरणम्
श्रीरामतनुशर्म्मविद्यावागीशेन

६९—सहर श्रीरामपुरे देमानि आदालतेर जज साहेवेर हुजुर
हइते सदर देमानि आदालतेर पण्डितेरदिगेर प्रति सओयाल—
यदि कोन व्यक्ति तिन पुत्र यत्तमाने लोकान्तर हय, परे ऐ तिन
पुत्रे मध्ये ताहादिगेर ज्येष्ठ भ्राता अन्न प्राथेक्य हइया पैतृक सर्व-
साधारणेर एक घागान, याहाते कतरु प्रजार बसति आछे एवं
ताहादिगेर तिन भ्रातार अंशेर भिन्न २ सिमा चिह्नित हय नाइ,
ताहार तिन अंशेर एक अंश कोन अन्य व्यक्तिके विक्रय करे।
ताहाते यदि आर दुइ भ्राता प्रतिवादि हइया हाकिमेर निकट
नालिस करिया ऐ तिन अंशेर एक अंश, याहा ताहादिगेर ज्येष्ठ
भ्राता विक्रय करे, ताहार यथार्थ मूल्य दिया खरिदेर प्रार्थना
राखे, तवे ऐ तिन अंशेर एक अंश खरिद करिते काहार अधिकार
हयः ऐ दुइ भ्रातार, अथवा ऐ खरिदारेर—इहार व्यवस्था
शास्त्रानुसारे लिखिवेन इति। शन १८२८, ७ मेइ मों शन १८३५,
२६ वैशाख।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।
यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषस्त्रीन् पुत्रान् चरन्द्य मृतस्तदनन्तर तेषां वयाणां
पुत्राणां मध्ये न्येतः पृथग्वचो भूत्वा पिनृत्यक्तप्रातृत्रयसाधारणैकतमकसप्त ऋक-
भूमेस्त्रयाणां भ्रातृणां विभ.गव्यशुकसोमाचक्षुर हताया अंशत्रयमध्ये एकमंश-
मन्यस्मै कस्मैचिद् विक्रयं कृतवान्, कर्तुमिच्छति वा, तत्र यद्ययशिष्टो ह्ये

आतरो प्रतिवादिनो^१ भूत्वा राजघनिधौ निवेदनं कृत्वा तेषां त्रयाणामंशानामे-
कमंशमर्थोज्ज्वेष्टात्रा विक्रोतं, विक्रोतव्यं वा, तस्य यथार्थं^२ मूल्यं दत्त्वा केतुं^३
प्रार्थयतस्तथापि तेषां^४ त्रयाणामंशानामेकमंशं केतुं यस्मै उपरिलिखितविक्रय-
कर्त्ता प्रसन्नस्सन् विक्रेतुमिच्छति तस्यैवाधिकारः, यत इदानीं बद्रदेशचलित-
धर्मशास्त्रे ऋषकर्तृविचारो न लिखितः—इति बद्रदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटोकाविद्यादभङ्गार्णवविवादाण्यवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुता-
रिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्व्युयधेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभाग(पृ० ३५)

विद्यादमङ्गार्णव(१ विम० ख ४२३)विद्यादार्णवसेतु(पृ० ८३)प्रभृतिग्रन्थपुत-
नारद(नामस० १३।४२-६३)वचनम् ॥ १ ॥

तथा च विमलस्त्येवाविमलरथावरस्यापि^५ स्वामिकृतदानादि सिद्धय-
त्येव अक्षपातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादिदिभायः—इति श्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटोका (पृ० ३५) लिखनञ्चेति ॥ २ ॥ ॥ ० ॥

श्रीवर्जयतितराम्

श्रीहरिःशरणम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीरामतनुशर्माविद्यावागीशेन

७०—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख ८
माह आपरेल सन १८२६ ई० अतावक २७ माह चैत्र शन १२३५
वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर प्रथम हाकिम श्रीमुत अलिग्रम
नसप्रर साहेबेर बैठके—

१. प्रतिवादिनो—व्या० ।

२. यथार्थमूल्य—व्या० ।

३. तेना—व्या० ।

४. उपरिलिखित—व्या० ।

५. तथा च विमलस्त्येवाविमलरथावरस्यापि—व्या० ।

६. सिद्धये च—व्या० ।

राजचन्द्रराय

सायेल

एइ सनेर' मारच मासेर १४ तारिखेर सायेलेर मकईमार कागज सकल रोवकार ओ दष्टो हइया कोरक करा भूमि निला-मेर निपेधि हुकुम सादर' हओने परे अनुमोदनार्थे स्थकित छिल, अच पुनराय उपस्थित हइया अन्य कागज सकल दष्ट करागेत । यथा ए मकईमार सम्पर्के हुकुम हओनेर पृथ्वे देवोत्तर मुमि-सकलेर सम्बन्धे शाखेर कथन आझा विवेचना करा उचित हइल, अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि एइ आदालतेर पण्डितगणके समर्पण कराजाय, ये निचेर सओयालसकलेर जघाबे दुइ सप्ताह मध्ये शाखानुसारे व्यवस्था दाखिल करेण ।

प्रथम सओयाल—यद्यपि शाखानुसारे देवोत्तर भूमिसकल विक्रय करण एकान्त सिद्ध नहे । अतएव ताहार उपस्थत्य विक्रय करण (सिद्ध) हइवेक कि ना ?

द्वितीय सओयाल—सरबराहकारि कीम्बा सेवाइती प्रमुक्त देवोत्तर भूमि अथवा ताहार उपस्थत्ये सेवाइतेर किछु स्वत्य हय कि ना, ओ यद्यपि हय, ताहार किछु निर्दिष्ट आछे कि ना ? येमन एक विद्या देवोत्तर भूमि किम्बा ताहार उपस्थत्य एक टाकार मध्ये सेवाइतेर स्वत्य कि परिमान हइवेक ?

तृतीय सओयाल—यद्यपि देवोत्तर भूमि किम्बा ताहार उप-स्थत्ये सेवाइतेर स्वत्य परिमाने निर्दिष्ट हइयाथाके, तवे सेवाइतेर देनार निमित्ते सेवाइतेर स्वत्ये परिमानेर भूमि अथवा ताहा हइते ये परिमाने उपस्थत्य सेवाइतके(?) सकल हइते पारे विक्रय-हइवेक कि ना ?

चतुर्थ सओयाल—यद्यपि ये भूमिसकले किम्बा ताहार उप-स्थत्ये सेवाइतेर स्वत्य यत्तिया समुदय देवोत्तर भूमिसकलेर सम्बन्धित थाके, ओ सिमा चिह्नओ भिन्न ना हइया थाके, तवे समुदय देवोत्तर मुमि, किम्बा ता हइते किञ्चित् घण्टक ना

ह्योन हेतुकं सेवाइतेर देनार जन्त्ये विक्रयेर थोइ हइवेक, किन्वा
किछुइ नाइ इति ।

जवानन्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणप्रथमाधिपतिश्रीयुतालियमनसहरसाहेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयापरेलमासीयाष्टमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं
पत्तमासीयपोडशदिने सपादधटिकाद्वयाधिकसमये भया प्राप्तं तदवलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यतः शास्त्रानुसारेण देवत्रभूमौ विक्रयकरणं कदाचिदपि न सिद्ध्यति
अतएव तदुत्पन्नोपस्वत्वस्यापि देवमात्रस्वत्वेन तदितरस्वत्वाभावात्तद्विक्रय-
करणमपि न सिद्ध्यति ।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनापहिनस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके दृष्टोच्छिष्टेन जीवति ॥ --इति मनुवचनम्
(मनुस्मृ० ११।२६) ॥ १ ॥

प्रतिमा देयता । तदर्धमुत्सृष्टं धनं देवस्वम् ॥ --इति मन्वधमुक्ता-
पत्न्या कुल्लूकभट्टलिखनम् (पृ० ४३०) ॥ २ ॥

अस्यामिना उतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥ --इति मनुवचनम्
(मनुस्मृ० ८।१६६) ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मापायां सरवराइकारशब्दवाच्यस्य सेवाइतशब्दवाच्यस्य वा भापायां
सत्वरइकारीकर्मप्रयुक्तं सेवाइतीकर्मप्रयुक्तं वा देवत्रभूमौ तदुत्पन्नोपस्वत्वे
वा किञ्चिदपि न सत्त्वं धर्माशास्त्रीयप्रमाशामावादिति ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण देवत्रभूमौ तदुत्पन्नोपस्वत्वे वा सेवाइत-
शब्दवाच्यस्य स्वत्वाभावेन तद्वैयर्थिशोधनार्थं देवत्रभूमेस्तदुत्पन्नोपस्वत्वस्य

વા વિક્રયો ભવિતું નાઈતિ । ચતુર્થપ્રશ્નોત્તરમપ્યર્થાં(દા)વાતમિતિ ન પૃથગ્ લિલિ-
તમ્ । —ઈતિ મન્વાદિધર્મશાસ્ત્રાનુસારિણી^૧ વ્યવસ્થા—

શ્રીર્જયતિતરામ્ શ્રીવૈદનાયમિથ્રેણ

જાં ૨૭૬૬

૭૧—રોયકારિ મિસિલ આદાલત દેઓયાની સદર તારિખ ૧૧
માહ આપરેલ રાત ૧૮૨૬ ઇ' મસાબક ૪ માહ વૈશાલ સન ૧૨૩૬
વાઙ્ગલા રોજ બુધવાર પે આદાલતેર પશ્ચમ હાકિમ શ્રીયુત માન્ત-
કિઓ હેનરિ ટરમ્બલ સાહેબેર વેઠકે ।

વાલુ મજ્જાપ્રસાદનારાયણ

આપીલાઈટ

વાલુ લક્ષ્મિનારાયણ

રખ્ખાઈટ

આપીલાઈટેર ડકિલ મુનસી દાદારવસ્ક ઓ રખ્ખાઈટેર ડકિલ
લાલા આઢલલાલ હાજિર આસિલ । એ મકદમા યહ સનેર મારખ
માસેર ૩૧ તારિખેર હુકુમ મતે અવ આમાર વેઠકે રોયકાર હડયા
પ્રવિશન કોટેર દાલિલ હઓયા નાલિસી આરજી પ્રભૂતિ કાગચ
સકલ તથાકાર કયસલા પર્યન્ત ઓ એ આદાલતે દાલિલ હઓયા
આપીતેર મજુયાત ઓ તાહાર જઓયાવ પ્રભૂતિ કાગજસકલ તલ
મારખ માસેર ૩૧ તારિખેર એ આદાલતેર તૃતીય હાકિમેર વિલિ-
મ્મ^૨ રોયકારિ સમ્બલિત પઢાગેલ । યથા વોધ હહલ ચે મુશાઆ-
લેહે, યહ રજાકાર આપીલાઈટ, યહ વિપયેર આપતિ રાલે ચે ડમ-
ચેર પૂર્વ પુરુષ મૂલ વાલુ નરસિંદનારાયણસિંદેર કનિષ્ઠ ભ્રાતા વાલુ
પતેનારાયણસિંદેર સ્ત્રી મુસમ્માત રામકોડેરે સાલિસિ શાસ્ત્રાનુ-
સારે સિદ્ધ ઓ જારિ હઓનેર યોગ્ય નહે । અતઃપ્ચ ઓ એવં જિલા
ઓ કોટેર પરિહતગણેર દાલિલ કરા વ્યવસ્થાસકલ ઓ યહ દૃષ્ટે

ये एकथा लओन वटे ऐ विपयेर सम्मन्वे शाखेर आशासकल हात हओन उचित हइया ए मकहमार सम्पर्क चूडन्त हुकुम छादर हओनेर पूर्व हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितगणके थर्पण करा जाय-ये निचेर सओयालसकलेर जबाब दुइ दिवसेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेण ।

प्रथम सओयाल—जिला धारामरा बलित शाखानुसारै खिलोकेर सालिसी सिद्ध वटे कि ना ?

द्वितीय सओयाल—यद्यपि दुइ व्यक्ति, नैकट्य कुटुम्ब, उभयेर विरोध ओ आपत्ति निष्पत्त्येर जन्ये, याहा उहादिगेर मध्ये थाके, आपन वंशेर एक ओलोक्के, ये दुइ व्यक्तिर बिस्वासी हय, आपनारदिगेर अभिप्राये सालिप नियुक्त करिया थाके, ओ ऐ खिलोक निष्पत्ती करिया देय । तवे एमत ओलोकेर सालिसी शाखेर आशासकलेर मते सिद्ध ओ ताहार फयसला जाइर हओनेर योग्य हइवेक कि ना ? इति ।

जबाबव्यवस्था

एतदन्माधिकरणपञ्चमाधिपतिभ्रीयुतमान्तकिहेनरीटरम्बलसादेवधर्माधिकरणलिखितैतदन्वीयापरैलमासीयपञ्चदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रतिलपनं यत्तन्मासीयप्रोडशदिने चतुर्थमहरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादशयोधो जातस्तबनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रभस्पोत्तरम्—

मिताक्षरावीरमित्रोदयग्रन्थानुसारेण श्रीकृतव्यवहारनिर्णयोऽसिद्ध एव । विवादचिन्तामणिबेवादचन्द्रनारदस्मृत्यायनुसारेणापन्निवारणाय श्रीकृतोऽपि व्यवहारनिर्णयः सिद्ध्यति ।

अत्र प्रमाणम्—

यलोप(१)धिविनिर्हृत्तान्प्रवहाराचिवर्तयेत् ।

सीनक्तमन्तरागारबहिःशत्रुकृतांस्तथा ॥

इति मिताक्षरा (पृ० १४३) व्यवहारचिन्तामणिधृतयाज्ञवल्क्यवचनम्
(२।३१) ॥ १ ॥

स्त्रीषु रात्रौ^१ वहिर्भागादन्तर्वेश्मन्यरातिषु ।
व्यवहारः कृतोऽप्येषु पुनः कर्तव्यतामियात् ॥

इत्यादि वीरमिश्रोदयव्यवहारचिन्तामणिग्रन्थधृतनारदवचनम् (नामसं०
१, ३७) ॥ २ ॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्याण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनधिक्रयाः ॥—इति व्यवहारचिन्तामणिविवाद-
चन्द्र (पृ० १४७) नारदस्मृत्यादिधृतनारदवचनम् (नामसं० २।२२) ॥ ३ ॥

आपत्प्रतीकारार्थं स्त्रीकृतमपि प्रमाणमेव, अनापदीत्यभिधानात् —इति
विवादचन्द्रग्रन्थलिखनम् (पृ० १४७) ॥ ४ ॥

अनापदीत्यनेनापत्प्रतीकारार्थं स्त्रीकृतान्यपि प्रमाणान्येवेत्युक्तम्—इति
व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि द्वयोः सन्निहितसम्बन्धिनोर्विरोधस्यापत्तेष्व कस्याश्चिन्तिष्यत्वं^१ त्व-
वंशसम्बन्धिनो एका काचित् स्त्री, या तदुभयोर्विशस्ता^२, ज्येष्ठा, भेडा च,
स्वस्वामिप्रायेण स्वसम्बन्धिविवादनिर्ययकत्वेन द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां
नियुक्ता सती सैव स्त्री तद्विवादनिर्ययं कृतवती स्यात्तदैवविधिविवादनिर्ययो
मिताक्षरा^३ वीरमिश्रोदयग्रन्थानुसारेण सिद्धो भवितुं तत्कृतत्रयपत्रं चापि प्रच-
लितं भवितुं नार्हति, व्यवहारमाधवग्रन्थानुसारेण च तन्निर्ययः सिद्धो भवितुं
तत्प्रमाणभूतं तत्रयपत्रं च प्रचलितं भवितुमर्हति, प्रश्नप्रललितप्रकारेण
द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां तदधिकारस्य तस्यै दत्तत्वेन तद्विवादनिर्ययस्तत्तदधीन-
त्वात् “यदि च तत्समये तथा स्त्रिया यदि विवादनिर्ययो न भविष्यति तदा
ग्रामाकं महत्पापं भविष्यति” —इति ज्ञात्वा द्वाभ्यामेव विरोधिभ्यां विशस्ता

१. निष्कर्ष—अप० ।

२. तदुभयोर्विशस्तो—अप० ।

३. मितक्षरा—अप० ।

४. महत्पापविषय—अप० ।

ज्येष्ठा श्रेष्ठा सा स्त्री तदापत्तिवारणाय^१ विवादनिर्यायिकत्वेन नियुक्ता तदा तत्क्रीकृतविवादनिर्यायो व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्रनारदस्मृत्याद्यनुसारेण सिद्धो भवितुं तत्प्रमाणभूतं तत्कृतजयपत्रं च प्रचलितं भवितुमर्हति-इति सारगुदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्रव्यवहारमाधवनारदस्मृत्यनुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणान्युपरिलिखितानि सर्वाण्येव ।

गुरुः स्वामी कुटुम्बो च पिता ज्येष्ठः पितामहः ।

विवादानय^२ पश्येयुः स्वाधीने विषये नृणाम् ॥-इति व्यवहारमाधव-
(पृ० २४) ग्रन्थभूतव्यासवचनञ्चेति ।

श्रीजर्जयतितराम्
श्रीविद्यनायमिश्रेण

—०—

लम्बर २७८६

७२—रोवफारि मिसिल आदालत वैश्यायानि सदर ४ माह माइ सन १८२६ ई^१ मत्तावक २३ माह बैशाख सन १२३६ चाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरदथरलेनसिलि साहेबैर घैठके ।

मुसम्मातदुलादेइ ओ सोनोसिंह

आपिलाएटान्

सैमाजितराय ओ किर्तिराय

रण्याइएट

आपिलाएटगणेर उकिल लाला आउधलाल, ओ रण्याइएटानेर उकिल मुनशी दादार वक्स हाजिर आसिल । ए मकदमा पूर्व्व एइ सनेर आपरेल भासेर २७ ओ २८ ओ २६ तारिख सबले रोवफार हइया, ओ जिलार आदालतेर समुदय कागज १ लम्बर हइते तथा-कार फयशला पर्य्यन्त ओ प्रबिनसन कोर्टेर कागजसकल फयश-

ला सहित ओ ए आदालतेर समस्त कागज ओ चेमाजितराय प्रभु-
तिर नामिक सेक मझाहेर आलि प्रभुतिर मकहमा जिलार आदा-
लतेर समस्त कागज ओ कोर्टेर कागज १० लम्बर पर्यन्त पढा-
गिया, दिवा अवसान प्रयुक्त स्वकित झिल, अद्य पुनराय उपस्थित
हइया ऐ मकहमा बाबत कोर्टेर बाकी कागज दृष्टे आसिल । तत्
परे रम्भाडण्टेर उकिल इ' १८२१ शालेर जुन मासेर २८ तारिखेर
लिखित जिला बेहारेर आदालतेर एक किता फयशालार नकल इ'
१८२५ शालेर माइ मासेर २५ तारिखेर लिखित आजिमावादेर
प्रधिनसन कोर्टेर एक किता फयशालार नकल ओ इ' १८२७ शालेर
सेतम्बर मासेर ६ ओ १३ तारिखेर लिखित ऐ प्रधिनसन कोर्टेर
दुइ किता रोवकारिर नकल ओ फरालि १९६६ सालेर रमजानेर
१५ तारिखेर लिखित धर्मनारायणेर लिखा एक किता सराकत-
नामा ओ इ' १७६४ शालेर लवम्बर मासेर २० तारिखेर लिखित
सैयद महम्मद, ओ सैयद होसेन आलि ओ सैयद रोस्तम आलि
ओ सैयद आलि आमजद-मुहम्मदणेर उकिल सैयद केरामत होसे-
नेर लिखा एक किता राजिनामार नकल १२ टाका मूल्येर फेहर-
स्तेर द्वाराय लम्बरे दाखिल करिल, पढागेल । यथा ए मकहमार
चुबन्त हुकम सादर हओनेर पूर्व एइ आदालतेर पण्डित हइते
व्यवस्था लओन उचित बोध हइल, अतएव हुकम हइल ये मकह-
मार कागज सहित एइ रोवकारिर नकल पण्डितके समर्पण करा
जाय । उचित ये पण्डित मौ' ए मकहमार समस्त कागजेर
अनुमोदने निचेर लिखित दुइ सओयालेर जवाब एक सप्ताह मध्ये
दाखिल करेण ।

प्रथम सओयाल-यद्यपि विरोधीय वस्तु बण्टक हइयाथाके,
ऐ अवस्थाय मुसम्मात दुलारदेइ आपिलाण्ट आपन जीवदशा-
पर्यन्त केवल भरण-भोषण पाइवेक, किम्वा आपन पतिर त्यक्त-
हिस्साय दखिलकार थाकिया ताहार उपस्वत्वे भोगवान थाकिवेक
ओ ताहा दानेर क्षमता राखिवेक कि ना इति ।

द्वितीय सञ्चोयाल—विरोधीय वस्तु अवष्टक थाकने मुस-
न्मात मजकुरा प्रथम सञ्चोयालेर विस्तिर्ण सत्व-सकल ह्दते कोन
स्वत्वेर स्वत्वाधिकारि वटे इति ।

श्रीज्जयतितराम

जवावव्यवस्था

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीशुतकटवरटपरत्नेनतिलीसाद्वैधधर्माधिकरण-
लिखितैतद्वदीयमेमासीयचतुर्थदिवसीयविचारणान्तर्गतप्रभमतिरूपपत्रमेवं
स्तत्तमपितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यत्तन्मासीयपञ्चदिने धामद्वयानन्तरं
मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुगारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि विवादास्पदीभूतं यस्तु विभक्तमभूद्यदा दुलारदेइनाश्री एत-
द्वर्माधिकरणाधिकारी स्वजीवनपर्यन्तं पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्वपतित्यक्तविभक्त-
धनाशे प्रायत्तत्वं सम्पाद्य तदुपस्थिते भोगवती स्थास्यति । एवं तद्वस्तुनो
आवश्यकदृष्टार्थं विना दानसमता तस्या न स्थास्यति, यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्र-
रहितस्य मृतस्य विभक्त्याने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽप्यावश्य-
कादृष्टार्थं विना तद्वनस्य दानकरणसमता नास्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

तस्मादपुत्रस्य स्वर्गात्तस्या'संशुष्टिनो धनं परिणीता स्त्री संयता सकल
मेव गृह्णीतीतिरिथतम्—इति मिताक्षर(पृ० २२२)ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी गृह्णीयादित्येद्वचनजातं विभक्तन्त्रीविषयम्—इति मिताक्षरग्रन्थ-
लिखनम् ॥ २ ॥

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं सियः कुर्यात् पतिविचात् कथञ्चन ॥

इति—वीगमिन्द्रोदयादि (विमि० ख० पृ० ६२८) ग्रन्थपुस्तकमहामारत-
यचनम् (१३१४७।२४) ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतं धनमविभक्तं चेत्तदैतद्वर्माधिकरणार्थिनी दुलारदेह-
नाम्नी प्रथमप्रश्नलिखितस्वत्वधनुदायान्तर्गतकेवलं यावज्जीवं भरणपोषण-
प्राप्तिरूपप्रथमप्रकारोपयुक्तस्वत्वाधिकारिणी भवति, प्रमुखमर्पितपत्रजातैर्विवा-
दास्पदीभूतधनस्य विभागानवगमात्—इति चेद्विहारदेशप्रचलितमिताक्षरावीर-
मित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वयति स्वामिनि स्त्री तु प्राप्ताच्छादनमभिनी ।

अविभयते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति धीरमित्रोदयादि-
(वीमि० ख० पृ० ६५४) ग्रन्थधृतकात्यायनवचनं (कास्मू० ६२२) चेति । १।

१८ मै सन हाल, दो प्रहर बाद दाखिल किया—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

लं० १७६३

७३—शेवकारी मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख
६ माह माइ सन १८२६ ई० मतायक २५ माह वैशाख सन
१२३६ याहला रोज बुधवार ऐ आदालतेर पञ्चम हाकिम श्रीयुत
मान्तेगिओ हेनरि टरभवल साहेबेर बैठके ।

गोवर्द्धनलाल—

आपिलाएट

मोहनलाल ओ मृत सोहनलालेर उत्तराधिकारि गङ्गाप्रसाद-
रेप्पाडएटान

आपिलाएटेर उकिल मुनशी दादार बकस ओ रेप्पाडएटा-
नेर मध्ये मोहनलाल रेप्पाडएटेर उकिल लाला आउधलाल
हाजिर आसिल । अद्य ए मकदमा तरतिव' लम्बर मते आमार

निकट रोवकार हइया ईं १८२८ सालेर मारच मासेर ३१ तारि-
खेर लिखित ए आदालतेर परिसिप्टेर उत्तरे एइ सणेर आपरेल-
मासेर १६ तारिखेर लिखित जिला रामगडेर जजसाहेबेर^१ पाठानो-
विवरण ताहार समभिव्याहारीय^२ रोवकारि प्रभृति कागजातसकल
सहित लम्बरे पौहुछिया पडागेल । यथा वेचुसिंह ओ द्वितीय
वेचुसिंह साक्षिगण, ओ गङ्गाप्रसादेर पिता मोहनलाल ओ भाता
जोगललालेर एजाहारे ओ रेप्पाडण्टगखेर मध्ये एक रेप्पाडण्ट
मृत सोहनलालेर स्त्री मुसम्मात घोषार दरखास्ते ऐ मृत व्यक्ति.
गङ्गाप्रसादके पोष्यपुत्र लमोन सान्यस्थ हइल, अतएव हुकुम
हइल जे मृत रेप्पाडण्टेर स्थाने गङ्गाप्रसादेर नाम लेखा जाय ।
ताहाओ लेखारेल, ओ गङ्गाप्रसाद ऐ मृत व्यक्तिर उत्तराधिकारि
सान्यस्थ हओनेओ म्वयं किम्बा उकिलेर द्वाराय ए अदालते
हाजिरहय नाइ, अतएव ऐ व्यक्तिर सम्बन्धे एमकहमार तजबिज
एकसपाटि प्रकारे कराजाय । किन्तु प्रकाश हय ये जद्यपि अन्यकेह
मृत सोहनलालेर उत्तराधिकारि ओ गङ्गाप्रसादेर पोष्यपुत्रता
मिथ्या हओनेर दावि करे । एइ हुकुम ताहारे दावि ओ स्वखेर
तजबिजेर निषेधीय हइवेकना । ततपरे प्रविनसन कोठ दाखिल
हओया लालिसि आरजि प्रभृति कागजसकल तथाकार कय-
सला पर्थ्यन्त ए आदालते दाखिल हइया आपिलेर मजुवात ओ
ताहार जवाब पडागेल । जानागेल जे एमकहमार तजबिज साखे
मम्पर्क राखे । अतएव एमकहमार सम्मन्धे चूड(।)न्त हुकुम
सादर हओनेर पूर्व सास्त्रे(र) आज्ञासकल ज्ञात हओनार्थे व्यवस्था
लओन उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एमकहमा अद्य स्थकित
थाके, ओ एइ रोवकारिर नकल ७० लम्बरेर ईं १८१६ सालेर
जानओरि मासेर १७ तारिखेर लिखित हेवानामा^३ दस्तावेज सहित
ए आदालतेर पण्डितके समर्पन कराजाय, जे पश्चिम देशेर,
जाहाते रामगड जिला थाकिवेक, चलित शास्त्रानुसारेनिचेर

लिखित सञ्चोयालसकलेर जवावे एक सप्त(१)ह मध्ये व्यवस्था लिखिया दाखिल करेन ।

प्रथम सञ्चोयाल—यद्यपि हिन्दु जाति हइते एक व्यक्ति आपन कृत स्थावर वस्तुसकल आपन पुत्रगण हइते एक पुत्रके दान करिया, दान गृहीताके ताहार दखल देओयाय । अतएव ऐ दान गृहीतार अन्य भ्रातागण थाकनेओ ताहार स्वत्वे ऐ दान सिद्धि हइवेक कि ना, ओ दातार मृत्युर पर आपन आपन अंश पाओनेर अन्ये अन्य भ्रातागणेर दावि अशें कि ना ?

द्वितीय सञ्चोयाल—यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दु पाच पुत्र, ओ ताहारद्विगेर मध्ये ये पुत्र भ्रातागण हइते कनिष्ठ छिल अन्ध थाके, ओ ऐ व्यक्ति आपन कृत अस्थावर वस्तुसकल चार पुत्रके, याहारा अन्ध नहे, सुस्थ स्वरि र घटेन, दिया आपन कृत स्थावर वस्तु, जाहा मूल्येर द्वाराय चारि पुत्रेर एक २ पुत्रेर अस्थावर वस्तु अंश हइते तुल्यकिन्वामून थाके, अन्ध पुत्रके आपन विशय उपजन करण हइते प्रत्तम थाकन दृष्टे दान करिया थाके, तबे ऐ दान एमत पुत्रेर स्वत्वे सिद्धि ओ यथार्थ हइवेक कि ना ?

तृतीय सञ्चोयाल—चण्डाल १ यागवि २ साहा ३ सुँडी ४ काँओरा ५ धोपा ६ ओ डोम ७—पइ कय व्यक्तिर सुकृतिपत्रेर द्वाराय शपथ हय कि ना इति ।

सञ्चोयाल सुप्रीम कोर्टादालतिका मेघनाटन साहेबका हुकुम सेँ थवाव देना होगा इति ।

नकलयबाव

प्रभपत्रलिखितजातीयानां शास्त्रानुसारेण स्वीकृतिपत्रद्वारा शपथो भवितुं न शक्नोति प्रमाणाभावादिति—

एतदधर्माधिकरणपञ्चमाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूदेनरीटरम्बलसाहेबधर्माधिकरणलिखितैतदब्दीचमेमासीयपञ्चदिवसलिखितविचारपत्रान्तर्गतमधप्रति—

रूपपत्रं यत्तन्मासीयनवमदिने यामद्वयानन्तरं (मया) प्राप्तं तदवलोक्य एवं तत्समर्पितदानपत्रञ्च विविच्य यादृशचोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्येकः कश्चित् हिन्दुजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वोपाजितं सर्वमेव स्थावरं स्वपुत्राणां मध्ये एकस्मै पुत्राय दत्त्वा दानग्रहीतुस्तदुपरि श्रायत्तत्वं सम्पादितवान् स्यात्तत्र तद्दानं यदि पित्रा सर्वपुत्रानुमत्या कृतं तदा तद्दानग्रहीतुर्भाग्रन्तरेषु विद्यमानेष्वपि^१ तदर्थं तद्दानं सिद्धं भवितुं शक्नोति, एवं दातुर्मरणानन्तरं दानग्रहीतुर्भाग्रन्तराणां स्वयोग्यांशप्राप्तीच्छा न सम्भवति । यदा च पित्रा तद्दानं सर्वपुत्रानुमत्या न कृतं तदा तद्दानग्रहीतुर्भाग्रन्तरेषु सत्सु तदर्थं तद्दानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, एवं दातुर्मरणानन्तरं दानग्रहीतुर्भाग्रन्तराणां स्वस्वयोग्यांशप्राप्त्यर्थं तत्प्राप्तीच्छा सम्भवत्येव, यतः सर्वपुत्रानुमतिं विना पितुः स्वार्जितस्थावरस्यापि दानकरणक्षमत्वाया अभावेन न तत्कृतदानेन तेषां तत्र स्वत्वविच्छेदाभावात् । प्रकृते तु प्रभुसमर्पितदानपत्रेण तद्दाने दानग्रहीतुर्भाग्रन्तराणामनुमतेरनवगमाच्च ।

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव—इति मिताक्षरा(पृ० २००)औरमित्रोदय^१(स० पृ० ५३२)व्यवहारभाष्य(पृ० ११२)व्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

स्थावरं द्विपदं चेव यद्यपि स्वयमर्जितम् ।

असम्भूय सुतान् सर्वांन् न दानं न च विक्रयः ॥

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यरस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि काञ्चन्ति न दानं न च विक्रयः—इति उपरिलिखितग्रन्थधृतग्रन्थासौ मिता० पृ० २००)वचनद्वयञ्चेति ॥ २ ॥

१. विद्यमाये०—व्यप० ।

२. स्थावरदो ॥ स्वार्जिते पित्रादिपारतन्त्र्याप्राप्ते पुत्रादिपारतन्त्र्यं तुल्यमेवेति पाठः बीमि० गृ ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्येकस्य कस्यचित् हिन्दुजातीयस्य पञ्चपुत्राः, एतेषां मध्ये यः सर्वेभ्यो भ्रातृभ्यः कनिष्ठ आसीत् सोऽन्वः, एवं स एव व्यक्तिविशेषः स्वोपाजितम-
स्वावरं सर्वं यस्तु अन्यभिन्नेभ्यः स्वस्वशरीरेभ्यश्चतुर्भ्यः पुत्रेभ्योऽदत्त-
स्वोपाजितं स्वावरं यस्तु यन्मूल्यद्वारा चतुर्णां पुत्राणाम् एकैकपुत्रांशास्था-
वरधनांशात् तुल्यं न्यूनं वा भवति, तदन्वपुत्राय तद्दृष्ट्वा दत्तवान् । अथ
यः स्वयं धनोपाजितनाक्षमः । तत्रापि सर्वपुत्रानुमत्या दत्तञ्चेत् सिद्धयति,
नो चेन्न सिद्ध्यते, इति पश्चिमदेशान्तर्गतरामगडजिलाख्याबान्तरदेश-
चलितमितादराधीसमिश्रोदयव्यवहारमापवन्वयहारकौलुमादिग्रन्थानुसारिणी
व्यवस्था ।

अथ प्रमाणानि ग्रीक्युपविलिखितान्येव ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीजर्जपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७४ । रोवकारि मिसिल आदालत देशोपानि मद्दर तारिख
२७ माह माह सन १८२६ ई मतावक १५ माह ज्यैष्ठ सन १९१६
वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालततेर हाकिम श्रीयुत अजियस
नसष्टर साहेबेर बैठके ।

हलधरमुखोपाध्याय
अन्नपूर्णादेव्या प्रभृति

आपिलाष्ट
रप्पाडस्टान्

आपिलाष्टेर उकिल मुनशी सोहेन आलि ओ स्वयं आपि-
लाष्ट हाजिर आसिल, ओ रप्पाडस्टानेर उकिल सदासुक
पसिद्व काहिलिस्—आपले हाजिर इइलो ना । एइ मातेर
२५ तारिखेर हुकुमानुमारे ए मकईमा आमार बैठके उपस्थित

हइया नालिपि आरजि प्रभृति प्रविनसन कोर्टेर कागजसकल
 ६६ लम्बर पर्यन्त पडागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय उपस्थित
 हइया प्रविणसन कोर्टेर बाकि कागजसकल तथाकार फयशला
 पर्यन्त ओ आपिलेर मज्जुबात ओ ताहार जबाब पडागेल । समस्त
 कागजेर अनुमोदने यद्यपि रप्पाडण्टानेर मध्ये एक रप्पाडण्ट
 अन्नपूर्णादेव्यार लिखा एजाहार आपिलेख्तेर दरपेप करा ई
 १८ (१) ७ शालेर जुन मासेर १२ तारिखेर लिखित २६
 लम्बरेर दानपत्र निदर्शनेर सत्यतार प्रति पूर्ण सन्देह हइतेछे ।
 फिन्तु घृढान्त हुकुम (सादर) हओनेर पूर्व ए आदालतेर पण्डित
 हइते नीचेर विस्तीर्ण हेतुसकलेर विवेचना कारण उचित बोध
 हइया हुकुम हइल ये प्रविनसन कोर्टेर नथिर १ लम्बरेर बाङ्गला
 १२११ शालेर आश्विन मासेर १ तारिखेर लिखित मृत बलराम
 भट्टाचार्येर लिखा मोक्षारनामा ओ च्छाविस २६ लम्बरेर दान-
 पत्र एइ रोयकारिर नकल सहित ए आदालतेर पण्डितके समर्पण
 करा जाय, ये ऐ निदर्शनसकलेर उपर अनुमोदन करिया,
 बाङ्गालार चलित शास्त्रानुसारे नीचेर लिखित प्रश्न सकलेर जबाब
 एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण ।

प्रथम सओयाल—मुसम्मात अन्नपूर्णा दान सिद्ध बढे कि ना,
 ओ द्वितीय व्यक्तिगणेर अंशेर सम्मन्धे ताहा असिद्ध हओने
 अन्नपूर्णादेव्यार स्वयं अंश बायत सिद्ध हइवेक कि ना । ओ
 यद्यपि सिद्ध हय, उहार कि परिमाण अंश हइवेक ।

द्वितीय (सओयाल)—बलरामभट्टाचार्येर लिखा मोक्षार-
 नामा मते मुदाआलेहेके किछु अंश अशे कि ना, ओ बलरामभट्टा-
 चार्यके ताहार आपन एक स्त्री उहार मृत पुत्रेर स्त्री ओ उहार
 मृत पुत्रेर स्त्री ओ अविवाहिता एक कन्या थाकनेओ मुदाआलेहेके
 अंश देओनेर क्षमता छिल किना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

अनावश्यकवस्था

एतद्दर्माधिकरणाधिपतिभीयुतास्त्रियमनहरसाहेबधर्माधिकरणास्त्रि-
तैतदन्दीयसतविशतिदिवसीयमेइमासीयत्रिचारपत्रान्तर्गतप्रभृतिरूपप्रमेव
तत्समर्पितकोटापिलाख्यधर्माधिकरणनिविष्टपत्रान्तर्गतोनविशत्यद्वाङ्कितवा-
ङ्गलाख्यैकादशाधिकद्वादशराताब्दीयाधिनमासीयप्रथमदिवसीयमृतबलराम-
भट्टाचार्यलिखितमोक्तारण्यमावसंतकपत्रमेवं पद्धतिस्वद्वाङ्कितदानपत्रञ्च यन्मु-
नमासीयपञ्चदशदिने साङ्गैषट्किञ्चतुष्टयाधिकयामद्वये भया प्राप्तं तदप-
लोक्ष्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रभृत्योत्तरम्—

अप्रपूर्णाङ्कितदानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतः प्रभुसमर्पितमोक्तार-
णामामशक्यप्रदानपत्राभ्यां विवादास्पदीभूतधनस्याप्रपूर्णादिभ्याः पत्युर्बलराम-
भट्टाचार्यस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्योत्तराधिकारिस्त्वेन तत्सद्कान्तत्वे-
नादगमेन, तत्त्वाच्च स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा गच्छने दानानधिकारात् ।
ग्रहते तु प्रभुसमर्पितदानपत्रेण स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च दानावगमात्
पत्न्यां विद्यमानायामन्येषामर्थाद् दुहित्रादीनां केषाञ्चिदपि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहि-
तस्य मृतस्य धनेभिकारप्रतिपादक्यद्गदेशचलितशास्त्राभावेनाशविषेचनाया
अनावश्यकत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शपनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् सान्ता दायदा उद्धर्षमाणुषुः—इति दायभागादि-
(दायभा ५० १७१) ग्रन्थप्रुतस्त्रत्यायनयचनम् (कास्त्रु० ६२१) । १ ।

सीथा स्वयत्तिदायतु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः शक्तिविचात् कथञ्चन ॥—इति मारतादपहार-
शब्दार्थेन यथेष्टदानविक्रयधनधिकारः—इति दायदहस्यन्यलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चेव पितरौ आंतरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृत-
याज्ञवल्क्यवचनञ्चेति (पृ० २१६, २१३५) ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

द्वितीयप्रश्नोत्तरम्—

वलरामभट्टाचार्यलिखितमोक्षारनामासंज्ञकपत्रानुसारेण प्रत्यर्थिनः कि-
ञ्चिदप्यंशत्वेन प्राप्नुं नार्हन्ति, तत्राप्येव प्रत्यर्थिनामंशप्राप्तिप्रयोनकस्य तत्त्व-
त्वोत्पत्तिप्रयोजकस्य प्रत्यर्थिन उद्दिश्य वलरामभट्टाचार्यकृतस्य दानादेरनव-
गमात् । वलरामभट्टाचार्यस्य पत्न्यामेकस्यां पुत्रयध्यामदत्तायां कन्यायामेक-
स्यां विद्यमानायामपि स्वातन्त्र्याद्वाचकाभावाच्च प्रत्यर्थिनांऽशदाननुमता
आसीत्—इति वङ्गदेशचलितदायमागदायरहस्यधीकृष्यतर्कालङ्कारकृतदाम-
कमसंग्रहनिवादभट्टार्णवविवादार्यवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

जुनमासस्य पञ्चमितीतिदिने शुक्रवासरे घटिकाधिकयामद्वये दत्तैति ॥

श्रीज्जर्नपतितराम्
श्रीर्वचनायमिश्रेण

लं० २४६६

७५—रोवकारि मितिल आदालत देओयानि सदर तारिख
३ माह जुन शन १८२६ ई मतावक २२ माह व्यैष्ठ शन १२३६
वाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियम नस-
टर साहेबेर बैठके—

आकबरराय प्रभृति भोक्लेशगण आपिलाण्टान्

यदुनाथसिंह ओ साहेबसिंह प्रभृति रप्पाडण्टान्

रप्पाडण्टानेर मध्ये रामप्रतापसिंह एक रप्पाडण्ट हाजिर
आसिया ए मकदमास सानि तजविजेर प्रार्थनाय एक किता सओ-
याल चारानशेर पाठशालार ओ कलिकातार कालेजेर पण्डित-
गणेर दुइ किता व्यवस्था ओ ताहार एक किता इङ्गरेजि तरजमा
ओ १७५७ लम्बरेर मकदमा ओ ए मकदमा बावत ई १८२३

सालेर माइ मासेर १० (तारिखेर) ओ एइ सनेर फेवरओरि मासेर २४ तारिखसकलेर लिखित आखेरि दुइ किता रोवकारिर नकल सम्बलित लं दाखिल करिल । एइ सनेर फेवरओरि मासेर २४ तारिखेर हओयो ए आदालतेर फयशला सहित पढागेल । यथा रप्पाडण्टागेर सओयालेर उपर चूडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व १७५७ लम्बरेर मकईमा वावत इरेजि १८२१ शालेर फेवर-ओरि मासेर २ तारिखेर हओयो रोवकारिर लिखित सओयालेर जवावे ए आदालतेर एइत्तणकार परिहृत हइते व्यवस्था लओन ओ इहा अवगत हओन ये ऐ लम्बरेर सरेर नथिते ३३ लम्बरे प्रथित ए आदालतेर पूर्वैर परिहृतदिगेर व्यवस्था शाखानुसारे यथाथं वटे कि ना उचित हइल । अतएव हुकुम हइल ये एइ रोवकारि ओ इ १८२१ शालेर फेवरओरि मासेर २ तारिखेर हओयो ए आदालतेर रोवकारिर लिखित सओयाल ओ ताहार जवावे ए आदालतेर पूर्वैर परिहृतगणेर व्यवस्था ओ रप्पाडण्टेर दाखिल करा दुइ किता व्यवस्था सहित ए आदालतेर एइत्तण-कार परिहृतके समर्पण करा जाय, जे इ १८२१ शालेर फेवर-ओरि मासेर २ तारिखेर हओयो रोवकारिर लिखित सओयालेर ओ समर्पित व्यवस्था सकर मजमुनसकलेर अनुमोदने चलित शाखानुसारे व्यवस्था एइ कैफियत सम्बलित, ये पूर्वैर परिहृत-गणेर व्यवस्था शाखेर आज्ञानुसारे कि, ताहार किछु विपर्यय वटे, लिखिया दुइ सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति ।

जवाबव्यवस्था

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतालियमनशहरसाहेबधर्माधिकरणलि-
खितैतदन्दीयनुनमासीयतृतीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गताज्ञापितं तद्विचारपत्रम्
एवमङ्गरेजीशब्दप्रतिपालकविशयधिकाष्टदशशतान्दीयफेवर(अरि)मासी-
यद्वितीयदिवसीयैतद्दम्माधिकरणलिखितविचारपत्रलिखितप्रभप्रतिरूपपत्रं त-
दुत्तरवैतद्दम्माधिकरणनियुक्ताभ्यां पूर्वपरिहृताभ्यां लिखितं व्यवस्थापत्र-

मेवमेतद्वर्माधिकरणप्रत्यधिनविष्टं व्यवस्थाद्वयञ्च यत्तन्मासीयैकादशदिने पटिकाग्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशमोघो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि कस्यचित् साधारणसराजकरस्थावरस्य कतिचिर्दिशिनः क्रयकर्ता-
नञ्च, येषामुपरि तत्स्थावरसम्बन्धराजकरदानसंज्ञायाद्येदृशादिकर्तृत्वमार-
ब्धितव्यते, तापदप्राप्तव्यवहारेष्वंशमन्तरेषु विद्यमानेष्वेवं तेषामनुमतिं विना^१
राजकरदानार्थं कस्यचिन्निष्ठे तस्यैवगराजकरस्थावरस्य विक्रयं कृतवन्तः
स्युस्तदा स विक्रयः सिद्धो भवितुं प्रचलितुञ्च न शक्नोति, प्रमुञ्चतप्रभलि-
लि(ता)यामवस्थायां सत्त्वां साधारणस्थावरधने सर्वशर्मणिनामनुमतिं
विना एकस्य द्वयोर्वहूनां^२ वा स्वस्वांशयोग्यस्य समुदायस्य वा दानाधमनधि-
क्यानधिकाशद्, इदानीं वेहारदेशप्रचलितग्रन्थेषु प्रमुञ्चमर्पितवाराणस्यधिकर-
णकमाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रे कलकत्तास्वयमदानगरसंविधि-
यादृशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रे चाप्राप्तव्यवहारेषु श्रंश्यन्तरेषु सारु
प्राप्तव्यवहारैरंशभिः साधारणसराजकरस्थावरसमुदायस्य^३ स्वस्वांशयोग्यस्य
वा राजकरदानार्थं विक्रयः कर्तुं शक्यते, तैश्च कृतो विक्रयः सिद्धो भवितुं
शक्नोतीत्येतद्विधायकस्य प्रमाणस्यालिखितत्वाच्च, शास्त्रानुसारेण शालकाना-
मर्षादप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य सर्वतोभावेन राज्ञो रक्तकत्वेन राजकरदानार्थ-
मप्राप्तव्यवहाराणां विक्रयस्य भवितुमशक्यत्वान्च^४—इति वेहारदेशचलित-
मनुमिताञ्जरामितात्तराटो कसुमोधिनीधीरमिश्रोदयव्यवहारमाधयव्यवहारमयू-
खव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

एवञ्चेतद्वर्माधिकरणनियुक्ताभ्यां पूर्वपण्डितताभ्यां पूर्वं वा व्यव-
स्था दत्ता सा वेहारदेशचलितशास्त्रसिद्धैव । नहि तस्यां व्यवस्थायां कश्चित्द-
व्यतिक्रमोप्यस्ति—इति अगस्तिमासस्य चतुर्थदिने घटिकैकाधिकयामद्वये
मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

१. करवनिष्ठ—व्यप० ।

२. वदृशां—व्यप० ।

३. रपावस्थ—व्यप० ।

४. तेषामनुमतिमिथन—व्यप० ।

५. संशयि—व्यप० ।

६. मराठावाचं—व्यप० ।

अत्र प्रमाणम्—

स्थावरस्य समस्तस्य गोप्रसाधारणस्य च ।

नेकः कुर्यात्कथं दानं^१ परस्परगतं विना ॥—इति कौरमिश्रोदमादि-
(पी० मि० ख० पृ० ५८६) ग्रन्थवृत्तव्यासग्रन्थम् ॥ १ ॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्ये गत्वादेकस्यानीश्वरत्वात्तावाम्यनुज्ञा अवश्यं
कार्या, विभक्तेषु तु चरकालं विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसौक-
र्याय सर्वाम्यनुज्ञा, न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन । अतो विभक्तानुमतिव्यतिरेके-
णापि व्यवहारः सिद्धवत्येव—इति मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

अत्रापि त्वविभक्तानुज्ञामन्तरेण दानाद्यसिद्धिः साधारणत्वाद्
द्रव्यस्य । विभक्तानुमतिव्यतिरेकेणापि दानादिकमुपपद्यते—इत्यादि मिता-
क्षराटीकासुबोधिनी (पृ० ६११) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

पालदम्यादिकं विषयं तावद्राजानुपालयेत्^२ ।

थापत्स रयात् समाहृतो बावयातीतशैशवः ॥—इति मनु (८१७)-
वचनञ्चेति ॥ ४ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जन्यतितराम्

श्रीविद्यनाथमिश्रेण

सं० २५५३

७६—रोवफारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख
४ माह आगस्त सन १२२६ ई मतावक २१ माह श्रावण सन
१२३६ वाङ्मला रोज मङ्गलवार ये आदालतेर हाकिम श्रीयुत धाव-
रट हालडन राष्टरि साहेबेर घैठके ॥—

१. मध्यमपत्रम्—मि० १

२. दाय—व्यय० ।

३. साध्यकवादे—व्यय० ।

४. आहृतम्—व्यय० ।

५. राष्टरि—व्यय० ।

जयरामधामि स्वयं उद्धि प्रकारे मृत वखेरि-
धामिर खो दिपु धामिनिर अग्राप्तव्यवहार पुत्र

रामचन्द्रधामिर पत्ते—

आपिलाष्ट—

मुशतधामि—

रप्पाडष्ट—

आपिलाष्ट स्वयं ओ रप्पाडष्टेर उक्किल मौलवि गोलाम
एजदानि हाजिर आसिल । एइ सनेर जुन मासेर ३० तारिखेर ह-
ओया जेला बेहारेर जजसाहेवेर एक किता रिटरण, ताहार सम्ब-
लित रोवकारि प्रभृति पौचिया अथ एइ मकदमा नथि सम्बलित
रोवकार हइया जिलार आदालतेर कागजसकल १ लम्बर हइते
सथाकार फयशला पर्यन्त ओ प्रबिनशन कोर्टर कागजात फय-
शला सहित ओ ए आदालतेर समस्त कागज ईराजि १८२७
शालेर आगस्त मासेर २५ तारिखेर हओया एइ आदालतेर पूर्व
द्वितीय हाकिम श्रीयुत कोर्टनि इपमिट साहेवेर ओ ई० १८२८
शालेर १५ सेतम्बर मासेर लिखित ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत
फटवरट धरलेन सिली साहेवेर रायसकलेर सम्बलित पडागेत ।
ये हेतुक ए मकदमाते खीलोकेर पत्त हइते पोप्यपुत्र राख्वा जाओन
विशये जेलार आदालतेर नथिर गृथित व्यवस्थासकल ओ ए
आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्था मध्ये एइ प्रकार अनैक्य हइ-
याछे ये जिला बेहारेर आदालतेर नथिर व्यवस्था लेखा आछे ये
खीलोके स्वामिर विना अनुमतिवे पोप्यपुत्र राखनेर क्षमता राखे
ओ ए आदालतेर पण्डितगणेर व्यवस्थाय लेखागियाछे ये खीलोके
स्वामीर अनुमति व्यतीत पोप्यपुत्र राख्वा क्षमता हवेक ना । अत-
एव चूडान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व बेहारदेसेर चलित शाख
ओ धामिदिगेर वंशेर डाँडा ओ व्यवहार ये यद्यपि कोन खीलोके
पतिर अनुमति व्यतीत पोप्यपुत्र राखिया थाके, ऐ पोप्यपुत्र
शाखानुसारे बेहारदिगेर वंशेर डाँडा ओ व्यवहार दृष्टे सिद्ध हइ-

याछे कि ना—अवगत ह्छोन आवरयक हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे ये ऐ जिलार जजसाहेब साकिम ऐ जिलार तिन चारि जन प्रधान पण्डितगणेर द्वाराय तथाकार चलित शाखेर आजा सकल ओ धामिगणेर वंशेर डाँडा ओ व्यवहार उपरेर लिखित प्रकारे तहकिकात् करिया ये साव्यस्त हय ताहार-कैफीयत लओयाजिमा कागजसकलेर सम्बलित, ओ यद्यपि कखन ओ धामिरदिगेर पोष्यपुत्र विषय थाहा पतिर अनुमति व्यतीत राखियाछे, अन्य कोन एक मकईमा ऐ जिलार आदालते उपस्थित ओ निष्पत्ति हइयाथाके सेइ मकईमार आशिल रोयदाद-ओ पाठाएन एक मास मेयादे परिसिष्टेर लेफाफा जेला बेहारेर जजसाहेबेर निकट पाठान याय, ओ एइ रोवकारिर द्वितीय नकल, एइ कारण ए आदालतेर पण्डित वेधनाथमिश्रेर हाओ-याला फराजाय ये ऐ पण्डित एइ कथासकलेर जचाव ये एइ मकईमा घावत ताहान दाखिल करा व्यवस्था ओ जेला बेहारेर आदालतेर नथिर गृथित व्यवस्थासकले ये ये ग्रन्थेर नामसकल लेखा आछे, ऐ सकल व्यवस्था ऐ सकल ग्रन्थेर यचनसकलेर मते घटे कि ना, एइ रोवकारिर नकल पाओनेर तारिख हइते एक सप्ताह मध्ये दखिल करेण इति ।

एतदन्माधि करणाधिपति श्रीयुनरावरटहालइनरादरीसाहेबधर्माधिक-रणलिखितैतदब्दीयागस्तिमासीयचतुर्थदिक्सीयविचारपधान्तर्गतप्रभप्रतिरूप-पत्रं यत्तन्मासीयचतुर्विंशतिदिने घटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदपलोक्य-यादशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

अरमर्हस्तिव्यवस्थाया बेहारदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणीय-व्यवस्थाभिः सह निरोधे इदमेव कारणम्—दत्तकभोगांसादत्तकचन्द्रिकादत्तक-दीधितिदत्तकदर्पणदत्तककौमुदीवीरमिश्रोदयव्यवहारमयूरादेदत्तकविषयक-ग्रन्थमात्र एव 'न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद्वा अन्यत्रानुजानाद् मर्तुः' इति स्त्रियामर्तुः अनुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधकशिशुयचनस्य लिखितत्वात् कस्मिंश्चिदपि बेहारदेशचलितग्रन्थे कस्यचिदपि मुनेरेतादृशं यचनं

लिखितं नास्ति तद्वचनानुसारेण खियाभर्त्तनुमतिं विनापि दत्तकपुत्रग्रहणा-
धिकारो भवेत् । यद्विषयस्य मुनिवचनेन ग्रन्थमात्र एव निषेधो लिखितः^१
स विषयः शास्त्रानुसारेण सिद्धो भवितुं न शक्नोति । एवं त्रिलास्यधर्माधि-
करण्यपत्रजातान्तर्गताश्रयस्य व्यवस्थास्तासां प्रतिस्थापि,^२ एवञ्च मिलि-
त्या सप्तव्यवस्थासु च बहोरभट्टलिखितपञ्चविंशत्यङ्काङ्कितव्यवस्थायां द्वात्रिं-
शदङ्काङ्कितव्यवस्थायां च भर्त्तनुमतिं विनापि खिया दत्तकपुत्रेण ग्रहीतः
पुत्रस्यक्तुं न शक्यत इति यत्नेन परिहृतेन लिखितं तत्र शास्त्रसम्मतं भवति ।
यस्मिन् विषये यस्याः खियाः सामर्थ्यं नास्ति तथा कृतः स विषयो निवृत्तो
भवितुं न शक्नोत्यर्थात् सिद्धो भवितुं शक्नोतीत्येतद्विधायकशास्त्राभावात् । एवं
याज्ञवल्क्यस्य मुनेरिदं वचनं “यदि काचित् स्त्री पत्युनुमतिं विना कस्यचिद्-
दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणं कृतवती” स्यात्तदा या स्त्री स्वयं तं दत्तकपुत्रं त्यक्तुं न
शक्नोति । अनुमत्यभावेन यदि यस्याः पतिस्त्यक्तुमिच्छति तदा स दत्तकपुत्र-
स्यक्तो भवितुं शक्नोति” इति पञ्चविंशत्यङ्काङ्कितव्यवस्थायां यत्नेन परिहृतेन
लिखितं तदतीवनिम्बूलं याज्ञवल्क्यस्य मुनेरन्यस्य कस्यचिद्वा मुनेरेतादृशार्थ-
प्रतिपादकवचनाभावात् ।

अथ च पञ्चविंशत्यङ्काङ्कितलीलाधरपरिहृतलिखितव्यवस्थायां पूर्वं यत्
प्रभुप्रभस्योत्तरे पतिपुत्रविहीना स्त्री रीत्यनुसारेण शास्त्राज्ञानुसारेण^३ (च)
दत्तकपुत्रं ग्रहीतुं^४ शक्नोति स सिद्धो भवति इति यद्विलिखितं तत्र शास्त्राज्ञाया
अयमर्थो विवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थेषु लिखितः—स्त्री
पत्युनुमत्या, यदि पतिर्नास्ति तदा शास्त्रानुमत्या, दत्तकपुत्रं कर्तुं शक्नोति स
सिद्धो भवति इति यत्नेन परिहृतेन लिखितं तदतीवाशुद्धं मिथिलादेशचलि-
तविवादचन्द्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थेष्वपि “न स्त्री पुत्रं दद्यात्
परिगृहीयाद्वा” इत्यत्र “अनुज्ञानाद्भर्त्तुः” इति खिया भर्त्तनुमतिं विना
दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधकवशिष्टवचनस्य लिखितत्वात् । पत्युरभावे शास्त्र-

१. लिखित—व्यप० ।

२. प्रतिस्था—व्यप० ।

३. कृत—व्यप० ।

४. विहीना—व्यप० ।

५. शास्त्रानु०—व्यप० ।

६. गृहीतुं—व्यप० ।

७. सः—व्यप० ।

नुमत्या स्त्रिया दत्तकपुत्रो ग्राह्य इत्यस्यालिखितत्वाद् वरं तदन्तर्गतमिधिला-
देशचलितविवादचिन्तामणिग्रन्थे दत्ताप्रदानिकप्रकरणे “विशेषेण भर्तुं नुमतौ
सत्यामपि स्त्रिया दत्तकपुत्रग्रहणे नाधिकारस्तदङ्गव्याहृतिहोमवाधादितिवर्तु-
त्कार्थः” इति लिखितत्वात् । एवं जिज्ञास्यधर्माधिकारणीयग्रन्थान्तर्गत-
व्यवस्थानु यत्तद्ग्रन्थानां नामानि लिखितानि सन्ति ताः सन्ता एव व्यव-
स्थास्तत्तद्ग्रन्थभूतमुनिवचनानां सम्मता न भवन्ति; यतस्तत्तद्ग्रन्थेषु सर्वेष्वे-
वान्येषु ग्रन्थनातेष्वपि विशेषेण “न ह्यौ पुत्रं दद्यात् प्रतिशृङ्गोपाद्वाऽन्यत्रा-
नुज्ञानाद् भर्तुः” इति स्त्रिया भर्तुं नुमतिं विना दत्तकपुत्रग्रहणाधिकारनिषेधक-
यशिष्टवचनस्य लिखितत्वात् । कस्मिंश्चिदपि वेदार्देशचलितग्रन्थे वेदार्-
देशीयमिलाख्यावान्तरधर्माधिकारणीयग्रन्थस्यानु यः कस्यचिदपि नुनोता-
इत्यं वचनं लिखितं नास्ति यद्वचनानुसारेण स्त्रिया भर्तुं नुमतिं विनापि दत्त-
कपुत्रग्रहणाधिकारो भवेदिति ।

अत्र प्रमाणम्—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिशृङ्गोपाद्वाऽन्यत्रानुज्ञानाद्भर्तुः—इति दत्तक-
मीमांसा (५० ७) दत्तकचन्द्रिका (५० १) दत्तकदीधिति दत्तकदर्पण (५० १
क, पं० १२) दत्तककौमुदी (५० १ क, पं० १२) वीरमिश्रोदयव्यवहारमयूख-
विवादवन्प्रविवादचिन्तामणिकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थभूतवशिष्टवचनम् ॥ १ ॥

अत्र च निमित्तं भर्तुनुज्ञानं, ततश्च विधवाया भर्तुं भावेतानुज्ञानास-
म्भवाज्जिनिमित्तकप्रतिप्रसवाप्रवृत्त्या प्रापकान्तराभावाच्च नाधिकारः इति
सर्व्ववादिसम्प्रतिपन्नमेव—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् (५० १२-१३)
॥ २ ॥

भर्तुनुज्ञानेऽपि स्त्रिया न ग्रहणाधिकारः, तदङ्गव्याहृतिहोमवाधा-
दिति वर्तुत्कार्थः । ननु ‘अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्तुः’ इत्यविशेषेण धवणाद्
भर्तुं नुज्ञानाद्यवत् ग्रहणेऽपि स्त्र्यधिकारसिद्धौ तदवधिवाप्रयुक्तिरपि तस्याः
कल्पते, इति चेत्, सत्यं सहत्वेन तस्या अधिकार इष्टिवश्च पृथक्त्वेन बाधता-
येद्विधिप्रापते—इति विवादचिन्तामणिग्रन्थलिखनश्चेति ॥ ३ ॥

श्रीतम्बरमासस्योनविंशतिदिने घटिकैकधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था
दत्तेति ।

श्रीर्जपतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७७—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख
१८ माह आगस्त शन १८२६ ई मतायक ३ माह भाद्र शन १२२६
घाङ्गला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत रायरट हाल-
दन राटरी साहेबेर बैठके ।

सिओयकसमिछर चनाम देविप्रसादपाडे प्रभृति

सापलेर उकिल मुनशी होसेन आलि हाजिर आसिल । पर-
गणे घेसुधार मौजे पलाण एडिहार अद्वेकेर उपर आमल ओ
दखल देयाइया पाओनेर मकईमार तगुण सदर जमा ६०३
टाकार राख्याय खास आपिल मञ्जुरि प्रार्थनाय ६० टाकार
मूल्येर इष्टम्प फागजेर उपर सायेलेर सओयाल, याहा ऐ उकिलेर
नामिक उकालतनामा ई १८२७ सालेर माइ मासेर १५ तारिखेर
लिखित वारानशेर प्रविनशन कोटेर फयसलार नकल सहित,
याहा ऐ सनेर अक्तुवर मासेर २६ तारिखे दुइ टाकार मूल्येर फेइ-
रस्त द्वाराय दाखिल हइयाछिल, अद्य दृष्टे आसिल । हुकुम हइल ये
एइ रोवकारि नकल एखने आपिलेर सम्पकिय कागजसकल एइ
हुकुमे ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिश्रेर हाओला करा जाय-
ये ऐ पण्डित ऐ कागजसकलेर ■ दोहित्र मातामहेर दत्त कता
सिद्धि हओन सम्बलित कोट आपिलेर पण्डितेर व्यवस्था ये ताहार
खोलासा मजमुन कोटेर फयसलार लिखा आछे, अनुमोदने ऐ
ये व्यवस्था सिद्धता ओ असिद्धता लिखेन, ओ पण्डितेर व्यवस्था
दाखिल हओन पर्यन्त सैयद रहमत आलिख खास आपिलेर

सओयाल मञ्जुर ओ नामञ्जुर हओनेर चूडन्त हुकुम सादर
हओन स्थकित थाके इति ।

श्रीर्जयतितराम् ।

जवाबव्यवस्था

एतदधर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुक्तरावरटहालइनराटरिका हेवधर्माधिकर-
णलिखिताद्वरेजीराब्दप्रतिपाद्योनत्रिशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तिमासीया-
ष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रतिरूपपत्रमेवं सत्सम्पितैतद्विषादविष-
यनिविष्टपत्रात् यत्तदब्दीयदिसम्बरमासीयाष्टाविंशतिदिवसीयप्रभ्याशान्त-
रानुसारेण तदब्दीयतन्मासीयविंशद्दिने घटिकात्रयाधिकयामद्वयानन्तरं मया
प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

दौहित्रो मातामहस्य दत्तकः सिद्धो भवतीत्येतदर्थप्रतिपादककोटापीलाण्य-
धर्माधिकरणनियुक्तपरिहर्तालिखिता व्यवस्था, यस्याः तात्पर्यार्थः कोटा-
पीलाख्ये धर्माधिकरणीयजयपत्रे लिखितः, सा व्यवस्था शास्त्रसिद्धा न
भवति । प्रभुसम्पितपत्रजातैरधिप्रत्यर्थिनो द्वयोरेव ब्राह्मणजातीयत्वनिश्चयेन
ब्राह्मणजातौ दौहित्रो मातामहस्य दत्तको भवितुं न शक्नोतीति शास्त्रे निषे-
धाद्—इति धाराणस्यादिप्रचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधिति-
दत्तकदर्पणदत्तकर्णियादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

दौहित्रो भाग्निनेयश्च शूद्रैश्च कियते सुतः ।

ब्राह्मणादित्रये नारित भाग्निनेयः सुतः ऋषिर्त्तु ॥ इति दत्तकमीमांसा-
(पृ० ५६) दत्तकचन्द्रिका (पृ० ७) दत्तकदीधितिप्रभृतिग्रन्थभूतशौनक-
वचनम् ॥ १ ॥

तथा च भाग्निनेयपदं दौहित्रस्याप्युपलक्षणमेव—इति दत्तकमीमांसा-
(पृ० ६६-६७) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तथापि मागिमेयदौहित्रवज्जं विरुद्धसम्बन्धापरया पुत्रत्वबुद्ध्यनह-
आत्पितृव्यमातुलवज्जं च प्रयाणा वर्णानां स्वसमानवर्ण एव-इति दत्तक-
दीधितिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥—

त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयजानवरीमासीयेनाविशतिदिने घटिकात्रया-
धिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

नं० १८२२

७८—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख
१६ माह सितम्बर सन १८२६ ई मताबक १ माह आश्विन सन
१२३६ चाङ्गला रोज बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट
थरलेन' सिली साहेबेर बैठके ।

आनन्दनाथराय आप्राप्तव्यवहारेर उल्लिखन भवानीप्रसाद-
चौधुरि ओ विन्धनाथ चङ्गदार—

आपीलाएटान—

राखी जगदम्हा—

रप्पाडएट—

आपिलाएटगणेर उकिल मुनशी होसेन आलि, रप्पाडएटेर
उकिल सदासुख पण्डित हाजिर आसिल । ए मकरमा पूर्वे एइ
मासेर ७ ओ ८ ओ ९ ओ १० ओ १५ तारिखसकले रोवकार ओ
प्रविनशन कोटेर कागजसकल १ लम्बर हइते त्याकार फयराळा
पर्यन्त ए आदालतेर आरजी मजुधात ओ जचाव पडागिया
दिवा अवसान प्रयुक्त स्थकित छिल, पुनराय अद्य उपस्थित हइया
ए आदालतेर चाकी समस्त कागज एइ शनेर आगस्त मासेर १५
तारिखेर हओया ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत सान्तेगिओ हेनरि

टरम्बल साहेबेर राय संबलित पढागेल । तत्परे रप्पाडरटेर वकिल चारि टाका मूल्येर फेहरेस्तेर द्वाराय विश्वनाथशर्मा चद्गदार ओ मैरचनाथशर्मांर जवाबेर १ किता नकल ओ वाद्गला अत्तर ओ मजमुलेर एक किता दस्तावेजेर नकल खम्बरे दाखिल करिल, हटे आसिल । यथा चूडन्त हुकुम सादर हओनेर जवाब लओया उचित हइल, अंतएव हुकुम हइल ये एइ रोषकारिर नकल एइ मकहमा वाचत हुइ आदालतेर समुदय कागच एइ हुकुमे ए आदालतेर पण्डितके समर्पण कर(र) । जाय ये ये पण्डित समस्त कागजेर हटे ओ अनुमोदने एइ विषयेर सओयालेर जवाब ये यथापि विरोधीय ग्रामसफल देयसेवा वाचत ओ साह्यर उपर सरकारेर खालाना मकरर भाके, ऐ प्रकारे देवतार सेवाइत व्यक्तिके ऐ सफल ग्राम विक्रय करार समता आछे कि ना, ओ बङ्गदेश चलित शाखानुसारे एमत विक्रय सिद्ध ओ यथायं घटे कि ना, एइ रोषकारिर नकल पाओनेर तारिख हइते पञ्च दिवसेर मध्ये लिखिया दाखिल करेण इति ।

जवाबव्यवस्था

एतद्दर्माधिकार्याधिपतिभीयुतकटवरटपरलेनविलीखादेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयकितम्बरमासीयपोदरादिवसलिखितविचारपश्चान्तर्गतप्रभ-
प्रतिरूपपत्रमेव तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यत्तन्मासीयादादश-
दिने यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं, तदवलोक्य विविच्य च यादराधो जात-
स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि विवादारादोभूताः सर्वे ग्रामा देवतानां करावस्य भवन्ति, तदा
देवतायाः सेवाइतव्यक्तिराब्दवाच्यस्य व्यक्तिविशेषस्य तेषामेव ग्रामाणां वि-
श्रयकरणे ह्यमता नास्ति, एवमेतादराविक्रयो बङ्गदेशचलितशाखानुसारेण
यथायं भवितुं सिद्धो भवितुश्च न शक्नोति । प्रमुचमर्पितपत्रजातेविवादारादरी-
भूताः सर्वे ग्रामा एतादराविक्रयात् पूर्वमेतदर्थमेव नियमिता रिपताः—यथा
एतेषां ग्रामाणां राजमासकरं राजे दत्त्वा अचशिष्टैरेतद्ग्रामोत्पन्नीदेवतानां

सेवा भविष्यतीत्यवगमादेतादृशवृत्तान्ते सति देवतायाः सेवाइतशब्दवाच्यस्य तत्र संरक्षणावेक्षणदिकर्तृत्वं विना राचग्राह्यकरस्य राज्ञे समर्पणञ्च विना किञ्चिदपि स्वत्वाभावात् तत्तद्ग्रामाणां दानविक्रयकरणक्षमताया दूरापात्तात्वाद्, अथ च शास्त्रानुसारेणास्वामिकृतविक्रयस्य दानस्य वा राज्ञा परावर्त्तनीयत्वाच्च—इति यद्देशचलितमनुकुल्लूकमद्वक्तृकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागविवादमद्वार्णवविवादार्णवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

देवस्यं ब्राह्मणस्यं वा लोमेनोपहिनस्ति यः ।

स पापात्मा परे लोके शुभ्रोच्छिष्टेन जीवति ॥—इति मनुवचनम् (११।२६) ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं घनं देवस्वम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्यां कुल्लूकमद्वलिखनम् (पृ० ४३०) ॥ २ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम् (८।१६६) ॥ ३ ॥

अस्वामिविवक्ष्यं दानमाधिञ्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादार्णवसेतु (पृ० ११४) विवादमद्वार्णवादि (१ विवाध पृ० ३१७ ख) ग्रन्थभूतकात्यायन- (कास्मृ० पृ० ७६) वचनञ्चेति ॥ ४ ॥

सितम्बरमासस्य पञ्चविंशतिदिने गयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

परमात्मने नमः—

महामहिमश्रीयुक्तगवनरमेष्टसंस्कृतपाठशालास्य

परिद्धतवर्गेषु—

७९—कोनो व्यक्ति आपन सकर तालुकेर मध्ये कोन कोन ग्राम देवसेवार्थ देवतार नामे नियमित करिया, किञ्चित्काल देवसेवादि करिया, कनिष्ठ पुत्रके ऐ देवसेवार्थ सकर स्थावर अर्पण पूर्वक देवसेवार्थ अनुमति करिया परलोकगामी ह्येन । परे ऐ कनिष्ठ पुत्र बहुकाल देवसेवक रूपे प्रसिद्ध थाकिया, ऐ स्थावरेर करग्रहण राजस्वदान देवसेवादि करिया, ऐ स्थावर देवनाम सम्यलित आपन नामे दस्तखत करिया विक्रय करेन । ऐ विक्रय सिद्ध ह्ये कि ना । इहार व्यवस्था गौडदेश प्रचलित शास्त्रालुसारे लिखिते आज्ञा ह्ये इति ।

देवनामा नियमितस्य सकरस्यावरस्य तद्देवसेवकेन देवनामसंयलितस्व-
नामाङ्कितपत्रं कृत्वा कृतो विक्रयः सिद्ध एव । किन्त्वियान् विरोधः—विक्रेतुर्यथा
करग्रहणराजस्वप्रदानादिसम्पादकं लोकसिद्धं स्वत्वं तत्रासीत् केतुरपि तादृ-
शमेव लौकिकं स्वत्वं तत्र जातं देवस्वत्वस्य विजातीयकेतुस्वत्वं प्रत्यबाधक-
त्वात्, स्वकरोपादानाय राजकृतविक्रये देवस्वत्वस्य केतुस्वत्वाबाधकत्ववत्
स्वपितृकृतदानाद् विक्रेतुकनिष्ठपुत्रस्वत्ववद् विक्रयमकृत्वा तस्मिन् मृते तदु-
त्तराधिकारिस्वत्ववच्च—इति गौडदेशप्रचलितभ्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदाय-
भागटीकामिताक्षराग्रन्थविदाम्परामर्शः ॥ ० ॥

राज्यान्तराधिकारिणः सकाशान्नुपतिना क्रीतेऽपि राज्यान्तरादौ विक्रेतु-
स्वत्वसजातीयकरग्रहणोपयोगिस्वत्वमेव तत्रास्य जायते, न तु दायप्रतिपक्षीत-
भूम्यादिवृत्तिस्वत्वसजातीयस्वत्वं तत्रस्थानां तत्र तत्र भूम्यादौ तथाविध-
स्वत्वसत्त्वेन तद्विरोधात् तादृशस्वत्वोत्पत्त्यसम्भवात् समानजातीययोः
स्वत्वयोर्विरोधादिति । तथा स्वत्वधारावारणाय सजातीयस्वत्वं प्रतिस्वत्वं
विरोधीति सजातीयमतिकरणात् क्रीतप्रतिपक्षीतराज्यान्तर्व्यतिनि तादृशस्था-
वरादौ क्षेत्रादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादे न व्यभिचार इति च दायभागटीका-
कृन्द्बीकृष्णतर्कालङ्कारलिखनम् । अनेन यस्मिन् द्रव्ये यस्य यादृशं स्वत्वं तेन
तद्द्रव्यविक्रये केतुस्तस्मिन् द्रव्ये तादृशमेव स्वत्वं जायते इति स्फुटमव-

गम्यते । उच्यते-लौकिकमेव स्वत्वं लौकिकार्यक्रियासाधनत्वाद् प्रीत्यादिवद्,
अपि च प्रत्यन्तवाणिनामप्यदृष्टास्त्रव्यवहाराणां स्वत्वव्यवहारो दृश्यते,
क्रयविक्रयादिदर्शनात् । किञ्च नियतोपायकं स्वत्वं लोकसिद्धमेवेति न्यायवि-
दो मन्यन्ते इत्यादि मिताक्षरालिखनम् (पृ० १६७) । एतेन स्वत्वस्य
लौकिकत्वात् (देव)सेवकस्यापि तत्र स्थानरेविजातीयस्वत्वमस्त्येव । अन्यथा
उदासीना अपि तत्स्थावरस्य कस्मिन्प्रहणादिकं देवसेवाञ्च कुर्व्युंरिति ।

परमात्मने नमः—

श्रीरामचन्द्रशर्मणाम् ।

श्रीहरिः शरणम् ।

नवद्वीपस्थ—

महामहिमश्रीयुक्तपण्डितवर्गेषु—

८०—तत्तद्देवसेवायं तत्तद्देवनाम्ना नियमितस्य सकरस्थावरस्य बहुकालकृत-
तत्तद्देवसेवकेन तत्तद्देवतानामसंवलितस्वनामाङ्कितपत्र कृत्वा कृतो विक्रयः
सिद्ध एव । तत्र विक्रेतुनिरूपितकस्मिन्प्रहणोपयोगिराजस्वदानसम्पादक-
लौकिकस्य स्वत्वसजातीयक्रेतुत्वत्वोत्पत्तौ बाधकामायात्स जातीयस्वत्वं प्रति स्थित-
जातीयस्वत्वप्रतिबन्धकतया देवस्वत्वादेर्विजातीयतया तादृशस्वत्वग्रत्य
बाधकत्वाद्—इति विदुषाम्परामर्शः ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

गौडदेशचलितदायभागटीकाकृच्छ्रीकृष्णतर्कालङ्कारभट्टाचार्यलिख-
नम्—राज्यान्तराधिकारिणः सत्ताशान्तरूपतिना कीर्तेऽपि राज्यान्तरादौ
विक्रेतृत्वत्वसजातीयकस्मिन्प्रहणोपयोगि स्वत्वमेव तत्रास्य जायते, न तु
दायप्रतिपृहीतभूम्यादिवृत्तित्वत्वसजातीयस्वत्वं तत्रत्यानां, तत्र तत्र
भूम्यादौ तयाविधस्वत्वसत्त्वेन तद्विरोधात् तादृशस्वत्वोत्पत्त्यसम्भवात्
समानजातीययोः स्वत्वयोर्विरोधादिति (दाभाटी० पृ० १०), तथा स्वत्व-

१ यथा ७६ अङ्किते व्यवस्थापने तथा इदं प्राप्तासीदित्यनुमीयते ।

२ ० स्वजातीय०—व्यप० ।

३ स्फारान्तर०—व्यप० ।

धारा(वा)रणाय सजातीयस्वत्वं प्रति स्वत्वं विरोधीतिः सजातीयमिति
करणात् । कृतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्व्यतिनि तादृशस्थावरादौ केशादेः
क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादेऽपि न व्यभिचारः (दामादौ० पृ० ६) इति च ॥०॥

श्रीहरिः—

श्रीरामलोचनशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीराममोहनशर्मणाम्

श्रीहरिः शरणम्

श्रीरामचन्द्रशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीरामशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीकालीप्रसन्नशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीकालीदासशर्मणाम्

श्रीजगदीशो जयति

श्रीकालिकाप्रसादशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीरघुनाथशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीकाशीनाथशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीमोलानाथशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीराधानाथशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीहरिश्चन्द्रशर्मणाम्

श्रीरामः—

श्रीराममुन्दरशर्मणाम्

विद्यामन्दिरस्थपण्डितवर्गेषु—

८१—कथन स्वाधिकृतसकलप्रामाण्यवर्तिन्यदप्रामाण्यं देवसेवार्थं
नियम्य, देवतानाम्ना विख्याप्य, क्रियत्कालं देवसेवादिकं कृत्वा कनिष्ठ-
पुत्रं तदेवसेवार्थं तदप्रामाण्यधिकारित्वेन संस्थाप्य, लोकान्तरं गतः । अनन्तरं
तत्कनिष्ठपुत्रो देवसेवकत्वेन प्रसिद्धिमवलम्ब्य, तदप्रामाण्यनिषेधकरप्रदण-

नियमितराजस्वप्रदानदेवसेवादिकं बहुकालं कृत्वा, तद्ग्रामान् देवनामसं-
लितस्वनामाङ्कितपत्रेण विक्रीतवान् । तत्कृततद्विक्रयः स्वस्वत्वास्पदद्रव्य-
सम्बन्धितया सिद्धयत्येवेति विदुषां परामर्शः—

अत्र प्रमाणम्—

अत्रोच्यते । “लौकिकमेव स्वत्वं लौकिकार्थक्रियासाधनत्वात् ग्रीहादि-
वत्” इत्युपक्रम्य, “अपि च प्रत्यन्तवासिनामप्यदृष्टास्वव्यवहाराणां
स्वत्वव्यवहारो दृश्यते, कयविक्रयादिदर्शनात् । किञ्च नियतोपायकं स्वत्वं
लोकसिद्धमेवेति न्यायविदो मन्यन्ते” इत्यादि मिताक्षराङ्कितः (५०१६७)
स्वत्वस्य लौकिकत्वेन स्थिरीकृतत्वात्, लोके देवसेवार्थनियमितसकरस्था-
वरस्य स्वस्वत्वसंग्रहीतृस्वत्वजनकदानादिदर्शनात् च स्वस्वत्वध्वंसपरस्व-
त्वोत्पादनरूपदानान्यथानुपपत्त्या, सकरभूमिदेवसेवार्थनियामकदेवसेवक-
स्यापि तत्र स्वत्वमिति स्थितम् । स्वत्वस्य च यथेष्टविनियोगप्रयोजकत्वेन
द्रव्ये स्वकीयं तादृशं स्वत्वं तादृशस्वत्वजनकदेवसेवककर्तृकविक्रयसिद्धि-
निर्वाधेति युक्तिः । तादृशस्वावरस्य करग्रहणराजस्वप्रदानदेवसेवादि-
प्रयोजकतादृशविकं तृस्वत्वसक्रेतृस्वत्वोत्पत्तौ तु “पराजितनृपतिराज्या-
न्तर्गतितत्तत्पुरुषीयक्रमागतस्थावरादौ जयादिना जेतुर्नृपतेः करग्रहणो-
पयोगिस्वत्वोत्पादे तथा क्रीतप्रतिगृहीतराज्यान्तर्गतिनि तादृशस्थावरादौ
क्रेत्रादेः क्रयाद्यधीनस्वत्वोत्पादेऽपि न व्यभिचारः” इति श्रीकृष्णतर्कालङ्का-
रलिखनं (५० ६) तुल्यस्थानीयत्वेन प्रमाणम् ॥०॥

श्रीहरिर्जयति—

श्रीहरिः—

श्रीरामरत्नशर्मणाम्

श्रीपार्वतीचरणशर्मणाम्

श्रीगुरुर्जयति—

श्रीहरिः—

श्रीहरनाथशर्मणाम्

श्रीजगन्मोहनशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीहरिः—

श्रीनाथुरामशर्मणाम्

श्रीयोगध्यानमित्राणाम्

श्रीहरिःशरणम्—

श्रीलक्ष्मीनारायणशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीजयगोपालशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीहरिप्रसादशर्मणाम्

श्रीशङ्करोजयति—

श्रीशम्भुचन्द्रशर्मणाम्

श्रीविष्णुर्जयति—

श्रीनिमाइचन्द्रशर्मणाम्

श्रीहरिः—

श्रीगंगाधरशर्मणाम्

श्रीहरिर्जयति—

श्रीवीरान्वरशर्मणाम्

८२—प्रथमप्रश्न—

यद्यपि कोन व्यक्ति 'जामि सम्पत्त' कोन वस्तु ओ एक स्त्री ओ दुइ कन्या रालिया मृत्यु हय । परे ऐ स्त्री ऐ दुइ कन्यार प्रतिपालन ओ आवश्यक स्वरचेर निमित्ते ऐ जमिर मध्ये किछु विक्रय करिया मृत्यु हय । परे ऐ दुइ कन्यार अवशिष्ट जमि विभाग करिया लइया एक कन्या आपन अंश आपन भूमिके विक्रय करे । आर ऐ भूमिर तिन सन्तान । ताहार मध्ये एक वय-प्राप्त, आर दुइ नाबालग । एमत स्थले ऐ बेक्या आपन नाबालग पुत्रहेर भरण-पोषण ओ आवश्यक स्वरचेर अन्य आपन वयप्राप्त ओ नाबालग ओ स्वामी सकले एकात्रे धाकिया स्वामि ओ वयप्राप्त पुत्रेर सम्मतिते ऐ दुइ पुत्र नाबालग धाकिते उपरेर लिखित वस्तु पन्धक किन्वा विक्रय करिले शास्त्र सम्मत सिद्ध हइते पारे कि ना इति ।

द्वितीय प्रश्न—

कोन नाबालग व्यक्तिदिगेर पिता ओ माता धाकिते नाबालग वेक्तिहेर मालिक शास्त्र सम्मत अन्य बेह हइते पारे कि ना ।

एड. दुइ. प्रश्नेर प्रत्युत्तर, वंचन, ओ, तस्य भाशा इहार पारवे
लिखितेन इति। शन १८३६ तारिख १० जुन, मो शन १८३६ साल
यां तां २६ ज्यैष्ठ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्जयतिराम

धवावव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्योनिशदधिकाष्टादशशता-
ब्दीयलवम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोमवासरे सार्धषट्काव्याधिक्याम-
प्रयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः कांचिद् भूमिमेकां पत्नीं द्वे कन्ये च संरक्ष्य
मृतः स्यात्, तदनन्तरं सैव मृतस्य पत्नी तयोरेव द्वयोः कन्ययोः प्रतिपालनार्थं
स्वकीयावश्यकव्ययाथ च तस्या भूमेः किञ्चिद्विक्रयं कृत्वा मृता स्यात्, तद-
नन्तरं ते एव द्वे कन्येभ्यः शिष्टां भूमिं विभज्य, गृहीत्वा तयोर्मध्ये एका कन्या,
प्रभुसमर्पितविचारपत्रायगतो यस्तदीयावश्यकव्यस्तदर्थं स्वांशं स्वभगिन्या
निकटे विक्रीतवती स्यात्, एवं क्रयकर्त्रा भगिन्याल्लयः सन्तानाः, तेषां मरणे
एकः प्राप्तव्यवहारो द्वावप्राप्तव्यवहारौ, एतादृशवृत्तान्ते सति सैव क्रयकर्त्रा
अप्राप्तव्यवहारेण स्वपुत्रेणाप्राप्तव्यवहाराम्बां स्वपुत्राभ्यां च स्वपतिना च
सहैकान्ते स्थिता सती, स्वपत्यनुमत्या प्राप्तव्यवहारस्वपुत्रानुमत्या च सतोर्द्वयो-
रप्राप्तव्यवहारयोः स्वपुत्रयोरेपरिलिखितवस्तुनो बन्धकं विक्रयं वा कृतवती
स्यात्, तदा स बन्धको विक्रयो वा शास्त्रतः सिद्धो भवितुं शक्नोति । यथा
पुत्रपौत्रप्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य घने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे
जातेऽपि पत्न्या स्वभरणपोषणार्थं स्वकीयावश्यकव्ययाथ च तदने दानाधम-
नविक्रयाधिकारः तथा पत्न्यभावे दुहितुस्तुतयाधिकारित्वेनाधिकारे जातेऽपि

तस्या अप्यावश्यकव्ययाय स्वभरणपोषणाय च तद्धने दानाधमनविक-
याधिकारोऽस्त्येव, सत्यां पुत्रवत्यां दुहितरि दौहित्रस्यानधिकारादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिविचात् कथञ्चन ॥—इति दायभागा(दाभा०

पृ० १७२)दिग्रन्थभूतभारतवचनम् (ममा०—१३४७।२४) ॥ १ ॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिविचात्कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दाद्येन
यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम् ॥२॥

अतएव वर्त्तनाशक्तौ आपानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-
मपि—इति दायभाग(पृ० १७३)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्ष्यं, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दाय-
भाग(पृ० १८४)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि(दाभा०
पृ० १५१)ग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्य (यास्मृ० २।१३५)वचनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जीवति पितरि जीवन्त्यां च मातरि अप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य मध-
पत्रलिखितमालिकशब्दवाच्योऽर्थात् सरक्षणरुक्तां, अन्यः कश्चिच्छास्त्रतो
भवित्रुं नाहति, अप्राप्तव्यवहाराणां पित्र्यपेक्षया मान्यपेक्षया चान्येनां शुद्धस-
त्तराभावात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागद्वयविवादमङ्गार्यव्यवहार-
तरनव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अभावे बीजिनो माता तदभावे तु पूर्वजः ॥—इति व्यवहारतत्त्वादि-
(पृ० ६५)ग्रन्थभूतनारद (नामसं०—२।३५)वचनम् ॥ १ ॥

अन्तरेबीर्यन्दप्रतिगाद्यविशदधिकाशादशरातन्त्रोयज्ञानयरीमासीयनवम
दिनधम्मन्पिशनिवासरे यामद्रयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीजर्मयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिधेण

८३ —रोवकरि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १४ दिशम्बर शन १८२६ ई० मताबरु १ माह पौष शन १२१६ चान्दला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम ग्रीयुत मान्तकियू हेनरी टरम्बल साहेबेर बैठके—

कृष्णलोचन प्रभृति

आपिलाण्ट

तारामणिशास्या प्रभृति

रण्याडण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल सदासुक पण्डित, रण्याडण्टगणेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल हाजिर आसिल । एइ मकईमा पइ मासेर ६ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया जिलार आदाल-
तेर, ओ प्रविशन कोटेर फयसलासकल ओ ई० १८२७ सालेर जानेओरि मासेर १० ओ १२ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोवकारिसकल ओ खास आपिलेर दरखास्त, याहा मजुयात करार देया जाय, ओ ताहार जबाब ओ ए आदालतेर दाखिल हओया अन्य कागजसकल पढागिया स्थकित छिल, अच पुनराय रोव-
कार हइया जिला ओ कोट आदालतेर नालिसि आरजि प्रभृति कागजात पढागेल । ये उभयेर पूर्वाधिकारि आदित्यराम चारि पुत्र राखिया मरे । प्रथम रामदुलाल ओ राधामोहन ओ गोविन्दप्रसा-
देर पिता कृष्णप्रसाद; द्वितीय ए मकईमार आसल मुदाआलेहे-
गण गदाधरनाग ओ गदाधरनागेर पूर्वाधिकारि देविप्रसाद; तृतीय मुदइगणेर पूर्वाधिकारि कालिकाप्रसाद; चतुर्थ शम्भुनाथ ओ चारि भतागण आपनारदिगेर पूर्वाधिकारि मृत्युर पर पृथक हइया पितृव्यक्त वस्तु कण्टक करिया दखिल हइलेन । ये कालिन कालिकाप्रसाद राधाकान्त नामे एक पुत्र ओ अन्नपूर्णा नामे एक स्त्री, ओ मुदइगणेर माता राजेश्वरी नामे एक कन्या राखिया मरे । ताहार परे ए राधाकान्तह अप्राप्तव्यवहार समये मरिल । ओ ताहार मृत्युर पर रामदुलाल प्रभृति कालिकाप्रसादेर उच्छि-

तस्या अप्यावश्यकव्ययाय स्वभरणपोषणाय च तद्धने दानाधमनविक-
याधिकारोऽस्त्येव, सत्यां पुत्रवत्यां दुहितरि दौहित्रस्यानधिकारादिति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥—इति दायभागा(दाभा०

पृ० १७२)दिग्रन्थभृतमारतवचनम् (ममा०—१३।४७।२४) ॥ १ ॥

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात्कथञ्चनेति भारतादपहारशब्दाधेन
यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारः—इति दायरहस्यग्रन्थलिखनम् ॥२॥

अतएव वर्तनाशक्तौ आधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-
मपि—इति दायभाग(पृ० १७३)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणां, स्त्रीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति दाय-
भाग(पृ० १८४)ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादि(दाभा०
पृ० १५१)ग्रन्थभृतयाज्ञवल्क्य (यास्मृ० २।१३५)वचनम् ॥ ५ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जीयति पितरि जीयन्त्यां च मातरि अप्राप्तव्यवहाराणां धनस्य प्रभ-
पत्रलिखितमालिकशब्दवाच्योऽर्थात् संरक्षणकर्ता, अन्यः कश्चिच्छास्त्रतो
भविष्यति नाहति, अप्राप्तव्यवहाराणां पित्र्यपेक्षया मान्यपेक्षया चान्येषां सुदुत्त-
रत्वाभावात्—इति बङ्गदेशचलितदायभागदायरहस्यविवादमहार्णवव्यवहार-
तत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अभावे वीजिनो माता तदभावे तु पूर्वजः ।—इति व्यवहारतत्त्वादि-
(पृ० ६५)ग्रन्थभृतनारद (नामसं०—२।३५)वचनम् ॥ १ ॥

अङ्गरेजीशन्दप्रतिपाद्यत्रिशदधिकाष्टादशशतान्दोयज्ञानयरोमासीयनवम
दिनसम्प्रविशनिवास्तरे यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

८३—रोवकरि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १४ दिशम्बर शन १८२६ ई० मतावक १ माह पौष शन १२३६ चाङ्गला रोज सोमवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्तकियू हेनरी टरम्बल साहेबेर बैठके—

कृष्णलोचन प्रभृति

आपिलाण्ट

तारामणिदास्या प्रभृति

रफ्पाडण्ट

आपिलाण्टगणेर उकिल सदासुक पण्डित, रफ्पाडण्टगणेर उकिल मुनशी गोताम धतुल हाजिर आसिल । एह मकद्दमा एह मासेर ६ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया जिलार आदालतेर, ओ प्रविशन कोटेर फयसलासकल ओ ई० १८२७ सालेर जानेओरि मासेर १० ओ १८ तारिखेर लिखित ए आदालतेर रोवकारिसकल ओ खास आपिलेर दरखास्त, याह मजुबात करार दिया जाय, ओ ताहार जवाब ओ ए आदालतेर दाखिल हओया अन्य कागजसकल पडागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइया जिला ओ कोट आदालतेर नालिसि आरजि प्रभृति कागजात पडागेल । ये उभयेर पूर्वाधिकारि आदित्यराम चारि पुत्र राखिया मरे । प्रथम रामदुलाल ओ राधासोहन ओ गोविन्दप्रसादेर पिता कृष्णप्रसाद; द्वितीय ए मकद्दमार आसल मुद्दाआलेहेगण गङ्गाधरनाम ओ गदाधरनागेर पूर्वाधिकारि देविप्रसाद; तृतीय मुद्दगणेर पूर्वाधिकारि कालिकाप्रसाद; चतुर्थ शन्मुनाथ ओ चारि आतागण आपनारदिगेर पूर्वाधिकारि मृत्युर पर पृथक हइया पितृत्यक्त वस्तु कष्टक करिया दखिल हइलेन । ये कालिन कालिकाप्रसाद राधाकान्त नामे एक पुत्र ओ अन्नपूर्णा नामे एक छी, ओ मुद्दगणेर माता राजेश्वरी नामे एक कन्या राखिया मरे । ताहार परे ऐ राधाकान्तह अप्राप्तव्यवहार समये मरिल । ओ ताहार मृत्युर पर रामदुलाल प्रभृति कालिकाप्रसादेर उच्छि

यत ओ ऐ राधाकान्तेर हेवार एजहारे मृत कालिकाप्रसादेर संम-
स्त पैतृक ओ कृत वस्तुसकलेर उपर दखिल हइलेन । तत्कालिन
प्रथमत गङ्गाधरनाग प्रभृति मृत कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तु-
मध्ये तृतीय अंशेर दाविते, ओ साहार परे मृत व्यक्ति ओ मुश-
म्मात अन्नपूर्णा ओ कन्या मुशम्मात राजेश्वरि ऐ मृत व्यक्ति
समुदाय त्यक्त वस्तुते दखल पाओनेर जन्ये आपनाहिगेर सत्वेर
एजहारे आदालते नालिश करिलेन, ओ ई० १८०६ सालेर दिश-
म्बर मासेर ३१ तारिखेर जिलार जज साहेबेर तत्रविजे रामदु-
ला(ल)नाग प्रभृति एजहारि हेवा साब्यस्त हओन कारण दुइ
मकदमार मुद्दगणेर दावि हिसमिप हइल, ओ ई० १८१२ सालेर
जुन मासेर ३० तारिखे अपिलेर आदालते गङ्गाधरनाग प्रभृति
मकदमा सम्बन्धे जिलार फयशला बहाल यकिल, ओ राजेश्वरि
मकदमाय आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे एइ
साब्यस्थे, ये कालिकाप्रसादेर मृत्युर पर साहार त्यक्त (धन) बहार
पुत्र राधाकान्तके अशे, ओ राधाकान्तेर मृत्युर पर मुद्दगण हइते
एक जन मुशम्मात राजेश्वरि अप्राप्तव्यबहार पुत्रगण, कृष्णलो-
चन प्रभृतिर स्वत्व हइया जिलार फयशला बइ ओ एइ हुकुमे
डिकरि हइल ये राजेश्वरि आपिलाएट आपन अप्राप्तव्यबहार
पुत्रगणेर स्वत्वे विरोधीय सालुकेर उपर दखल पाय, ओ मुशम्मात
अन्नपूर्णा राधाकान्तेर त्यक्त वस्तु हइते भरख-पोपण पाइवेक इति ।
ओ साहार खास आपिल पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे ए
आदालते नामजुर हइल, ओ ए मकदमार नालिशेर एइ मूलज्ञान
हइल-ये यत्कालिन मुशम्मातान् अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि कालि-
काप्रसादेर त्यक्त वस्तु दखल पाओनेर दाविते नालिश करिलेन ।
तत्कालिन एइ मकदमार मुद्दगणेर गङ्गाधरनाग प्रभृति
बाङ्गला १२१३ सालेर २० भाद्र मंतायक ई० १८०६ सालेर ४ सेत-
म्बर मासेर लिखत ८४ लम्बरे गृयित गङ्गाधरनाग प्रभृतिर अमि-

पति-दुर्गाचरण नामे-ऐ-मुशम्मातान हइते-पइ-खोलासा मजमुने
 एक-किता-एकरार-लेखाइयाछे-ये मकदमाय-ये परिमान स्वरंच
 हइवेक तोमरा-दिवा, ओ-आमरा आदालत हइते डिगिरि पाइले
 कालिकाप्रसादेर-त्यक्त हइते-आमादिगेर-सोल आना स्वत्व हइते
 ।-आनार कमेर-विक्रय-कवाला-लिखियादिव, ओ ताहार पर
 रखन ई० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे आपिल आदालत
 हइते-ऐ-राजेरवरिर-अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण कुप्यलोचन प्रभृतिर
 स्वत्वे ठिकरि हइल एइ-मकदमार मुदइगणेर माता मुशम्मात
 राजेश्वरि हइते-वाङ्गला-१२१६ सालेर-१४ पौष-मतावक ई० १८२२
 सालेर-दिशम्बर-मासेर-२७ तारिखेर लिखित-८५ लम्बरे-गृथित
 विरोधीय-रकम घावत-कवाला, ओ ऐ तारिखेर-लिखित मबलग
 १५००-टाका निर्वन्धे-८६ लम्बरेर रसिद लिखाइया ताहार द्वाराय
 विरोधीय वस्तु उपर दखिलफार हइलेन, ओ आपिलापटान,
 आर्थात् मुदइगण, ऐ छय आना रकमेर उपर वखल पाओनेर जन्मे
 पइ बलिले-गङ्गाधरनाग प्रभृतिर नामे नालिस करियाछे ये उद्धार-
 दिगेर माता-मुशम्मात राजेश्वरि शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर स्वत्व
 हस्तान्तर करणेर इमत। राखित ना, ओ रण्पाडण्टान ताहार जघावे
 जाहेर करे ये उद्धारदिगेर माता-राजेश्वरि नष्ट उद्धार, अर्थात्-उद्धार-
 दिगेर स्वत्व स्थिर राखन जन्ये ताहा हइते किछु विक्रय करिलेक,
 अतएव एमत विक्रय शास्त्रानुसारे सिद्धि थाकिबेक इति । ये हेतुक
 उपरेर लिखितसकल हइते, पट आछे ये अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि
 पक्ष हइते कालिकाप्रसादेर स्वक्तेर सम्बन्धे उद्धारदिगेर स्वत्व दष्टे
 ओ केवल आदालतेर स्वरधार जन्ये ८४ लम्बरेर एकरारनामा
 निदर्शन लिखित हइयाछे, ओ ऐ मुशम्मातेर नालिस मकदमाय
 ई० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखेर लिखित प्रचिरान
 कोटेर डिगिरि आपिलापटगणेर स्वत्व दष्टे हइयाछे, ऐ मुशम्मा-
 तानेर स्वत्वे हय नाइ ओ इहाओ पट आछे-ये-सरकारेर चलित

यत ओ ऐ राधाकान्तेर हेवार एजहारे मृत कालिकाप्रसादेर सम
 स्त पैतृक ओ कृत वस्तुसकलेर उपर दखिल हइलेन । तत्कालिन-
 प्रथमत गङ्गाधरनाग प्रभृति मृत कालिकाप्रसादेर त्यक्त वस्तु-
 मध्ये तृतीय अंशेर दाविते, ओ ताहार परे मृत व्यक्ति स्त्री मुश
 म्मात अन्नपूर्णा ओ कन्या मुशम्मात राजेश्वरि ऐ मृत व्यक्ति
 समुदाय त्यक्त वस्तुते दखल पाओनेर जन्ये आपनाहिगेर सत्वेर
 एजहारे आदालते नालिश करिलेन, ओ इ० १८०६ सालेर दिश
 म्वर मासेर ३१ तारिखेर जिलार जज साहेबेर तजविजे रामदु-
 लाल(ल)नाग प्रभृतिर एजहारि हेवा सान्यस्त हओन कारण दुई
 मकदमार मुद्देगणेर दावि हिसमिप हइल ओ इ० १८१२ सालेर
 जुन मासेर ३० तारिखे अपिलेर आदालते गङ्गाधरनाग प्रभृतिर
 मकदमा सम्बन्धे जिलार फयराला बहाल यकिल ओ राजेश्वरि
 मकदमाय आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे एइ
 साल्यस्थे, ये कालिकाप्रसादेर मृत्युर पर ताहार त्यक्त (धन) वहार
 पुत्र राधाकान्तेर ओशे, ओ राधाकान्तेर मृत्युर पर मुद्देगण हइते
 एऊ जन मुशम्मात राजेश्वरि आप्राप्तव्यवहार पुत्रगण, कृष्णलो-
 चन प्रभृतिर स्वत्व हइया जिलार फयराला बइ ओ एइ हुकुमे
 डिकरि हइल ये राजेश्वरि आपिलाएट आपन अप्राप्तव्यवहार
 पुत्रगणेर स्वत्वे विरोधीय तालुकेर उपर दखल पाय, ओ मुशम्मात
 अन्नपूर्णा राधाकान्तेर त्यक्त वस्तु हइते भरय पोषण पाइवेक इति ।
 ओ ताहार खास आपिल पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे ए
 आदालते नामधुर हइल ओ ए मकदमार नालिशेर एइ मूलज्ञान
 हइल-ये यत्कालिन मुशम्मातान् अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि कालि
 काप्रसादेर त्यक्त वस्तु दगल पाओनेर दाविते नालिश करिलेन ।
 तत्कालिन एइ मकदमार मुद्देगणहण गङ्गाधरनाग प्रभृति
 बाइलो १९१३ सालेर २० भाद्र मतीबेक इ० १८०६ सालेर ४ सेत
 म्वर मासेर लिखित ८४ लेम्बेरे गौथित गङ्गाधरनाग प्रभृतिर भूमि-

पति दुर्गाचरण नामे ऐ मुशम्मातान हइते एइ खोलासा मजमुने
 एक किता एकरार लेखाइयाछे-ये मकदमाय ये परिमान खरच
 हइवेक तोमरा दिवा, ओ आमरा आदालत हइते डिगिरि पाइले
 फालिकाप्रसादेर त्यक्त हइते आमादिगेर सोल आना स्वत्व हइते
 १८ आना र कमरेर विक्रय कवाजा लिखियादिव, ओ ताहार पर
 यखन ई० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखे आपिल आदालत
 हइते ऐ राजेश्वरि अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण कृष्णजीवन प्रभृतिर
 स्वत्वे डिगिरि हइल एइ मकदमार मुद्दगणेर माता मुशम्मात
 राजेश्वरि हइते बाङ्गला १२१६ सालेर १४ पौष मतावक ई० १८२२
 सालेर दिशम्बर मासेर २७ तारिखेर लिखित ८५ लम्बरे गृहित
 विरोधीय रकम धायत कवाजा, ओ ऐ तारिखेर लिखित मयलग
 १५०० टाका निर्बन्धे ८६ लम्बरेर रसिद लिखाइया ताहार द्वाराय
 विरोधीय वस्तु उपर दखिलकार हइलेन, ओ आपिलाष्टान,
 आर्यात मुद्दगण, ऐ छय आना र कमरे उपर दखल पाओतेर जन्ये
 एइ दलिते गङ्गाधरनाग प्रभृतिर नामे नालिस करियाछे ये उद्धार-
 दिगेर माता मुशम्मात राजेश्वरि शास्त्रानुसारे ताहारदिगेर स्वत्व
 हस्तान्तर करणेर छमता राखित ना, ओ रण्पाडष्टान ताहार जवाबे
 जाहेर करे ये उद्धारदिगेर माता राजेश्वरि नष्ट उद्धार, अर्थात् उद्धार-
 दिगेर स्वत्व स्थिर राखन जन्ये ताहा हइते किछु विक्रय करिलेक,
 अतएव एमत विक्रय शास्त्रानुसारे सिद्धि थाकिवेक इति । ये हेतुक
 उपरेर लिखितसकल हइते पष्ट आछे ये अन्नपूर्णा ओ राजेश्वरि
 पक्ष हइते फालिकाप्रसादेर त्यक्तेर सम्बन्धे उद्धारदिगेर स्वत्व दृष्टे
 ओ केवल आदालतेर खरचार जन्ये ८४ लम्बरेर एकरारनामा
 निदर्शन लिखित हइयाछे, ओ ऐ मुशम्मातेर नालिसि मकदमाय
 ई० १८१२ सालेर जुन मासेर ३० तारिखेर लिखित प्रविशान
 कोटेर डिगिरि आपिलाष्टगणेर स्वत्व दृष्टे हइयाछे, ऐ मुशम्मा-
 तानेस् स्वत्वे हय नाइ ओ इहाओ पष्ट आछे ये सरकारेर चलित

आइनसकल अनुसारे ऐ मुशम्मातानेरं मफलसिते नालिस करणेर
 दयमता छिल, ओ आदालतेर खरचार निमित्तकओ एवं आपि-
 लाण्डगणेर प्रतिपालनार्थे उद्दाहिगेर गुजराणेर कोनो हेतु ना थाकन
 प्रयुक्त ८५ लम्बरेर कवालार लिखित मुल्येर टाका देओन विषय
 ए मकदमार मुद्दाआलेहेगणेर एजहार विसिष्ट रूपे प्रतिपन्न नहे ।
 केनना आपिलाण्डगणेर पिता रामलोचन वर्त्तमान थाकने उद्दा-
 हिगेर भरण ओ पोपणेर भार ताहार पर उचित छिल । उद्दाहिगेर
 माता राजेश्वरिर पर छिलना । अतएव चूडन्त हुकुम सादर हओ-
 नेर पूर्व ए आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन उचित बोध
 हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल मकदमार कागज सम्ब-
 लित ए आदालतेर पण्डितके एइ हुकुमे समर्पन कराजाय ये उपरे
 जे प्रकार लेखगेल मकदमार अवस्थार पर अनुमोदन परे एवं ८४
 ओ ८५ लम्बरेर एकरारनामा ओ कवाला दस्तावेजात ओ साक्षि-
 गणेर एजहारसकल दृष्टे याहा ई० १८२४ सालेर आगस्त मासेर
 १० तारिखेर हओया कोटेर हुकुम मते लओया गयाछे, ओ एइ
 दृष्टे ये कोनओ करार विक्रयेर दस्तावेज लिखिन कालिन राजेश्वरिर
 स्थामी रामलोचन, अर्थात् मुद्दागणेर पिता, जियवान् छिल, ओ
 एवं पूर्वैर मकदमार विरोधीय वस्तु हरण कारक व्यक्तिर हस्त
 हइते निकालन जन्ये सरकारेर आइन मते पूर्वैर नालिश
 उपस्थित करणार्थे आदालतेर किछु खरचार आविश्यक छिल ना-
 इहार व्यवस्था एक सप्ताह मध्ये लिखेन-ये ऐ विक्रय वज्रदेश
 अलित शाखानुसारे सिद्धि बटे कि ना ? इति ॥—

श्रीर्जयतिराम्

यवाव्यवस्था

एतद्दर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूदेनरीटरम्बलसादेवधर्माधिक-

रणलिलिताङ्गरेबोशब्दप्रतिपाद्योनत्रिशदधिकार्थादराशताब्दीपदिशम्बरमा-
सीयचतुर्दशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्तत्प्रतिष्ठितद्विवा-
दविषयनिविष्टपत्रजनान्तर्गतचतुरशीत्यङ्काङ्कितसंवित्पत्रं पञ्चाशीत्यङ्काङ्कित-
विक्रयपत्रं, साक्षिणां साक्ष्यपत्रजातं च यत्तद्वन्द्वीयतन्मासीयत्रयोविंशतितमे-
दिनसम्बन्धिपुषवासरे पट्टिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य
च पाटशबोधो जातरतदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति, मृतराधाकान्तत्यक्तधने
तत्पितृदौहित्रत्वेनैतद्वर्माधिकरणार्थिनां कृष्णलोचनप्रभृतीनां स्वत्ये, एतद्व-
र्माधिकरणास्त्रायां जातायामपि तन्मातृराजेश्वर्यास्तद्वनस्वामित्वस्य सर्वपैव
दूरापास्तत्वेन, तत्कृतेतादृशप्रभुकृतप्रश्नपत्रलिखितविक्रयः सिद्धो न भवति,
प्रभुसमर्पितचतुरशीत्यङ्काङ्कितसंवित्पत्रे अक्षपूर्णायां राजेश्वर्यां चेत्येव लिखितं
मदीयैतद्विवादे यावान् व्ययो भविष्यति, स भवत्रा वेयः, अस्मानिः पौडशाण-
कपरिमितविवादास्पदीभूतसराङ्कपरस्थावरसमुदायात् पञ्चाणकाः स्वस्वत्व-
स्यागपूर्वकं तुभ्यं दत्ताः । अतएवेतादृशनियमलिखनमेवैतद्विक्रयस्य मूलम् ।
तत्र च शास्त्रानुसारेणान्नपूर्णायाः राजेश्वर्यां वा तद्वनस्वामित्वस्याजातत्वेन,
धर्माधिकरणविचारेणापि तथा पर्यवधानेन च, तत्कृततत्त्ववित्पत्रस्य
तन्नियमानाक्रान्तस्यादु, अस्वामिकृतविक्रयस्य शास्त्रानुसारेण परावर्त्तनीयत्वा-
च्च इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागविवादभङ्गाणांवादिग्रन्थानुसारिणी व्यव-
स्था ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

अस्यामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनु(५० ३०६)

वचनम् ॥ १ ॥

अस्यामिविक्रयं दानमाधिष्ठ विनिवर्त्तयेत्—इति विवादभङ्गाणांवादि(१
विवाभ० पृ० ३१७ स्त)ग्रन्थपृतक्कालायन (कास्मृ. पृ० ७६)वचनञ्चेति
॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अहरेजीशब्दप्रतिपादयित्वाधिकालादशशतान्दोषानवरीमासीपत्र-
मदिने मङ्गलवासरे घटिकैकार्षिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतिराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण.

सं० = ई शन १८२७:

८४—रोबकारि फोट आपिल, एलाका मरसिदावाद, तारिख
६ माहे जानेओरि, शन १८२६ ई, मतायक २७ माहे शन १८३५
वाङ्गला, रोज शुक्रवार काएभमोकाम हाकिमश्रीयुव-रायद हेनरि
नेधवट साहेबेर बैठके ।

यदनचन्द्रसिंह
ओ अप्राप्तव्यवहार
रामनारायणघोषेर पिता
जियनकृष्णघोष
राधानाथसिंह

मतालके मरसिदावाद

आपिलाएदान
रघ्वाइष्ट

तालुक कमलनयन घाटी प्रभृतिर हिस्साय दखल पाओन
मथलग १६५ । = गण्डा मकहमा ।

एइ मकहमार मिश्रिल भिन्न २ तारिखसकले रोबकार हइया
आदालतेर पण्डित हइते व्यवस्था लओन परे स्थिति' छिल,
अथ पुनराय आपिलाएटेर सकिल रामप्रनराय, रप्पाइष्टेर उकिल
चेतन्यप्रसादरायेर हाजिरिते ए मकहमा उपस्थित हइल । यथा
आपिलाएटगणेर उकिल ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार पर
अमत, ओ उचित मत आमारे विधास हइल ना । ओ मकहमार
व्यवस्था एइ ये कृपानाथेर दुइ पत्र, प्रथम मुरलिमजुमदार, द्वितीय

भवानीमंजुमदार, ओ एक कन्या ओ दीहित्र राखिया मृत्यु हय। ओ मुरलिर अश ताहार दीहित्र पाइयाछे ओ भवानीमंजुमदारेर चारि पुत्र, प्रथम हरगोविन्द, द्वितीय गङ्गाप्रसाद, तृतीय कालीप्रसाद, चतुर्थ रामप्रसाद छिल। ताहार मध्ये गङ्गाप्रसाद निःसन्तान ओ हरगोविन्द नफर नामे आपन एक पुत्र ओ तिन कन्या राखिया पितार समझे मरे। तत्परे भवानीमंजुमदारेर मृत्यु पर प्रथम कालीप्रसाद, ताहार पर रामप्रसाद निःसन्तान मरे। तदपरे ऐ नफरो निःसन्तान मरे। तत्परे प्रथम रामप्रसादेर स्त्री, ताहार पर हरगोविन्देर स्त्री मरे। ओ हरगोविन्देर दीहित्रगण वर्तमान ओ राधानाथ, ये रामप्रसाद ओ हरगोविन्द प्रभृतीर पितामह कृपानाथेर दीहित्र बडे, हरगोविन्देर दीहित्रगणेर नामे त्यक्त वस्तु दायिदार हइल। अतएव उपरेर लिखित अवस्थां त्यक्त वस्तु फोन व्यक्तीके अश-इहार व्यवस्था शब्द आदासतेर पण्डित-गण हइते सओन आविश्यक। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोषकारि नकल इङ्गरेजी चिठीर मध्ये मुत्तरीनामा ओ सओयाल सहित सदरेद रेजेष्टर शाहेवेर हुजुरे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय जे साहेब मौसुफ शबरेर पण्डीतगण हइते ऐ सओयालेर जवाब लइया पइ। आदासते पाठान, ओ ए मकदमा स्थित थाके इति।

यदनचन्द्रसिंह ओ गयरह

आपिलास्टां(न)

राधानाथसिंह

रप्पाडएट

एइ मकदमांर विवरण एइ ये कृपानाथ आपन दुइ पुत्र, अर्थात् मुरलिमंजुमदार ओ भवानी मंजुमदार, ओर एक कन्या ओ दीहित्र राखिया मृत्यु हय। मुरलिमंजुमदारेर हिस्सा ताहार दीहित्रे पाइयाछे, ओर भवानीमंजुमदार मजकुरेर चारि पुत्र, प्रथम हरगोविन्द, द्वितीय गङ्गाप्रसाद, तृतीय कालीप्रसाद, चतुर्थ रामप्रसाद छिल। ओ चारि जणेर मध्ये गङ्गाप्रसाद निःसन्तान, ओ हरगोविन्द नफर नामे एक पुत्र ओ तिन कन्या राखिया आपन पितार सम्मुखे मृत्यु हय। तदपरे ऐ भवानीमंजुमदारेर मृत्यु पर प्रथम

कालीप्रसाद, ताहार पर रामप्रसाद निःसन्तान परलोक हय ।
तदपरे नफरेर मृत्यु हय । ताहार पर प्रथम रामप्रसादेर स्त्री,
तदपरे हरगोविन्देर स्त्री मृत्यु हय, ओ हरगोविन्देर दौहित्ररा वर्त्त-
मान आछे । कृपानाथेर दौहित्र, अर्थात् रामप्रसाद ओ हरगो-
विन्द ओ गयरहेर पितामहेर दौहित्र राधानाथ तेव्य वस्तुर दावि
हरगोविन्देर दौहित्रद्विगेर नामे राखे । ए जन्ये शङ्करेर परिष्ठित-
द्विगेर निकट शास्त्रानुसारे व्यवस्था एइ विषय लओया आवि-
श्वक ! ये उपरेर प्रकरणानुसारे एइ वस्तु के पाइते पारे । अतएव
कुरसिनामा दृष्टे इहार ओ ए शास्त्रानुसारे लिखेन इति । तारिख
६ जानेओरि । सन १८२९ ई० ।

प्रमुखमर्षितप्रश्नपत्रमेव वंशावलीपत्रञ्चावलोक्य यादरावोपो जातस्तद-
नुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकटुत्तान्ते सति यद्वाप्रसादस्य द्वितीयपुत्रस्य निःसन्ता-
नस्य भवानीमजुमदारे पितरि विद्यमाने सति. मृतस्य पितृस्वत्वास्पदीभूतघने
स्वत्वानुत्पादात्, तदनन्तरं मृतस्य भवानीमजुमदारस्यांशे जीवति पितरि
मृतस्य प्रथमपुत्रस्य हरगोविन्दस्य पुत्रो नफरसंज्ञको भवानीमजुमदारस्य
तदानीं विद्यमानो तृतीयचतुर्थौ द्वौ पुत्रावर्थात् कालोप्रसादरामप्रसादौ च एते
अथ एव समानाधिकारिणो आतास्तत्रापि नफरसंज्ञकस्य मरणोत्तरं तत्स्वत्वा-
स्पदीभूततत्पितृयोग्यतृतीयांशे तत्पितृहरगोविन्दस्य दौहित्रराधानाथद्वौ राम-
नारायणयदनचन्द्रदोलगोविन्दानामधिकारो, यतो नफरसंज्ञके स्वपितृयोग्य-
तृतीयांशधिकारिण्यनपत्ये पत्नीमारभ्य पितृपर्यन्तानपत्यधनाधिकारिरहिते
मृते सति तन्मातुरुत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सति तन्मरणोत्तरं तदने तदु-
त्तराधिकारिणामेवाधिकारः, तत्र च तदुत्तराधिकारिणां मध्ये प्रमुखमर्षित-
वंशावलीपत्रेण नफरसंज्ञकस्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्तस्य पितृदौहित्रात् पूर्व-
मधिकारिणोऽस्तत्वायगमाद् । अथ च विशिष्टांशद्वये रामप्रसादस्य पितामह-
पानाथदौहित्रस्यार्थद्वाराधानाथस्याधिकारो यतो रामप्रसादे भ्रातरि जीवति सति
मृतस्य कालीप्रसादस्यांशे भ्रातृत्वेन रामप्रसादस्याधिकारे जाते सति तदनं
रामप्रसादस्यैव आतम् । अतस्तस्मिन्नपत्ये मृते सति तत्स्वत्वास्पदीभूत-

यावद्धने श्रयाद् भवानीमडुमदारस्यांशस्य त्रिधा विभक्तस्यांशद्वये रामप्रसाद-
द्विधाः शास्त्रानुसारेण पतिस्वत्वास्पदोभूतघनाधिकारिण्या नफरसंज्ञके राम-
प्रसादभ्रातृपुत्रे मृते सत्यपि जीवन्त्यास्तस्या मरणोत्तरं तद्धने रामप्रसादस्य ये-
उत्तराधिकारिणस्तेषामेवाधिकारः, तत्र च तदुत्तराधिकारिणाम्मध्ये प्रमु-
खमपितृवंशावलीष्वेण रामप्रसादस्य पितामहप्रपौत्रपर्यन्तस्य पितामह-
दौहित्रात् पूर्वमधिकारिणोऽस्तत्त्वावगमान्च—इति वङ्गदेशचलितदायभाग-
श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्थविविवादाद्यंसेत्यादिग्रन्था-
नुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुर्व्युपरते पुत्रा विमज्जयुर्धनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेयां निर्दोषं पितरि स्थिते॥—इति दायभाग (पृ० १३)
श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका, (पृ० १३) विवादभङ्गार्थ (२ विवाभ०
पृ० ५ क) विवादाद्यंसेत्यादिग्रन्थभूतदेयलवचनम् ॥ १ ॥

यथा पितामहे धने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन् मृते तत्पुत्राणामपि,
न तत्र सन्निर्गर्पविप्रकर्षाभ्यां कोऽपि विशेषः—इति दायभाग (पृ० २६)
ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितुर्दौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यः—
इति दायभाग (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः॥—इति दायभाग-
दि (दामा पृ० १७१) ग्रन्थभूतकाव्यायन (कास्मृ० ६२१) वचनम् ॥ ४ ॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम् । स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति
दायभाग (पृ० १८४) ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा । तत्सुतः—इत्यादि दायभागदि-
(पृ० १५१) ग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्य (यास्मृ० २।१३५) वचनम् ॥ ६ ॥

एवं पितामहप्रपितामहसन्ततोरपि दौहित्रान्तायाः प्रियङ्गुप्रत्यासत्ति-
क्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागः (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥७॥
तदभावे पुत्रः पितृदौहित्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका-
(पृ० २१८) रूपग्रन्थलिखनम् ॥ ८ ॥
तदभावे पितामहदौहित्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका
(पृ० २१८) रूपग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ९ ॥ • ॥ • ॥ • ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्नः—

८५—यद्यपि कोन खोलाकेर स्वामी वायुमस्त अर्थात् वातुल
हय । तत्कालीन ऐ वातुल व्यक्तिर पैवक वस्तु विक्रयार्थे ऐ व्यक्ति
आपन स्त्रीके अनुमति देया, ना देया तुल्य । एमते ऐ खोलोक
आपन शशुरेर आद्वे देना परिशोध ओ ऐ वातुल स्वामीर चिकि-
त्सा कारण आपन स्वामीर पैवक कोन वस्तु ऐ स्वामीर बिना
अनुमतिते विक्रय करे । ताहा सिद्ध हइते पारे किना । इहार
प्रत्युत्तर शास्त्रानुसारे वचन ओ ताहार भाषा एइ प्रश्नेर पार्थ-
लिलिवेन । इति शन १८२६ शाल, तारिख ६ मेई । मोतायक
शन १२३६ शाल तारिख २८ वैशाख ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्षितप्रभवप्रमवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेषोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कस्याश्चित् स्त्रियाः पतिर्वायुमस्तत्समये तेनैव वायुमस्तेन पत्या
स्वपैवकधनविक्रयार्थं स्वपत्न्यै अनुमतिदानमदानञ्च तुल्यमिति मत्वा सा स्त्री-

अशुरस्य आवश्यकभादार्थ्यपरिशोधनार्थम् एवं तस्यैव वायुमस्तस्य पत्युः
त्रिक्रियायं तत्तत्त्वात्पदीभूतस्य तत्तैतुकस्य नस्त्यचिद्वस्तुनस्तस्यैव पत्युस्तु-
मति विना विक्रयं कृतवती स्वात्तदा स विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोति यतः
शास्त्रानुसारेण प्रेतभादकरणाद्यं चिकित्सायं वा येन केनापि सम्बन्धिना
दासेन वा कृतं तदुपयुक्तमृणं विक्रयादिकञ्च सिद्धयति—इति वद्वदेशचलि-
तमनुदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वविवादमङ्गार्यवविवादार्यवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणी
व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बार्थेऽव्यधीनोपि व्यवहारं यमाचरेत् ।

स्वदेशे वा विदेशे वा तं व्यापान विचालयेत् ॥ इति मनु (पृ० ८ ।

२६७) वचनम् ॥ १ ॥

कुटुम्बार्थमशक्ने तु गृहीत व्याधितेऽथवा ।

उपलभ्यनिमित्तञ्च विद्यादापत्कृतान्तु तत् ॥ २ ॥

कन्याविवाहिकञ्चैव प्रेतकार्येषु यत्कृतम् ।

एतत्सर्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ॥ इति व्यवहारतत्त्व (पृ०

२५) दायतत्त्व (पृ० २०) विवादमङ्गार्यवादि (१ विवा १६६ ए) ग्रन्थ-
धृतकात्यायन (का० स्मृ० ५४२-५४३) वचनम् ॥ ३ ॥

अत्रेदमवधेयम् । कुटुम्बमरणादिरूपयादशयादशकार्ये उपस्थिते
दासकृतमृणं प्रमुखा शोधनीयमिति प्रतीयते, तादृशतादृशकार्यनिष्पत्त्यर्थं
प्रमुघनविक्रयो सिद्धयति । तदतिरिक्त एव स्त्राम्भ्यनुमतपदेन बोध्यते—
इति विवादमङ्गार्यवग्रन्थ (१ विवा ३३० क) लिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

श्रीर्जनयतितराम्

श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

१. आवश्यक—न्यप० ।

२. परिस्तोपन०—न्यप० ।

३. अशक्ने इति पाठः व्यत० ।

४. व्याधितेन इति पाठः व्यत० ।

५. निमित्ते—दास्य० ।

६. कृते—नु—कास्य० ।

८६—रोयकारि आदालत देओयानि जिला यशर जिला मज-
कुरेर जज श्रीजान बित्रम्यार्फटविष्ट साहेबेर वेठके सन १८२६
शाल ६ भाइ मतावेक सन १२३६ शाल बाङ्गला २५ वैशाख रोज
बुधवार ।—

गङ्गागोविन्दसेन
रामलोचनसाहा

करियादि

आशामि

मकईमा डिगिरि जारि

अथ करियादिर उकिल वैद्यनाथ मजुमदार ओ मुनशी माहा-
मुद, छदफे ओ वैद्यनाथ मुनशी ओ ओजरदार चित्रामणिर
उकिल गोलकचन्द्र चौधुरी ओ गुरुप्रसाद मुनशी हाजिर हइलेन ।
हाल सनेर ७ आपरेल ओ २२ मार्च वारिखेर दाखिल हओ।
करियादिर दरखास्त ओ माहा(जन) मजकुरेर १३ तारिखेर
दाखिल हओया चित्रामणिर ओजरेर दरखास्त दृष्टि करागेल ।
यद्यपि ए मकईमार डिगिरि जारि कागज कलिकातार प्रबिनसियान
क्रोट आदालतेर पाठान गयाछे, किन्तु एइ आदालतेर प्रस्तुत
कागजातेर द्वाराय जानागेल । ए मकईमार विवरणः—एइ ये,
आसामि मजकुर करियादिके जानिन' दिया क्रोट आपबढेछेर
सिरिस्तार कर्तार निकट राजा शशिभूपणदेवराय नावालगेर
जमिदारि इजारा लइया, ताहार मालगुजारी परिशोध ना कराते
करियादिर तालुक निलाम हइया इजारा बाकि मालगुजारी
६६०० टाका उमुल हइयाछे । करियादि ताहार नालिप करिया
आसामि मजकुरेर पर मवलग मजकुरेर डिगिरि पाइयाछे । सेइ
डिगिरि जारि करिया आसामिर कीर्तिनगरेर वसति घाटी ओ नीलेर
फुटी ओ गरु ओ घोडा निलाम करिया, मवलगे १०२६१।० टाका
वमुया पाइयाछिल । आसामिर पिता रामजिसाहा विकिर वस्तुके
आपनार बलिया, निलाम असिद्ध करिवार' दरखास्त करिया-

द्विल । ताहाते सदर देशोयानिर हाकिमेरदिगेर विचारे ऐ वस्तु
 निलाम असिद्ध हइया करियादिके-नालिप करिवार आशा हइ-
 याद्विल । एमते करियादि मजगुर नीलेर कुटी ओ वसती वाटीर
 दाविते दुइ लम्वरे रामलोचनसाहा ओ रामजिशाहा दुइ जनेर
 नामे एइ आदालते नालिप करिले । ए आदालतेर पूर्वकार जज
 साहेबेर विचारे नीलेर कुटी ओ वसति वाटीर अधिपति ओ
 कर्ता आशामि रामलोचनसाहाके-योध हइया करियादिव-दुइ
 नालिप डिगदि हइयाद्विल । परे आसामिर पिता रामजिसाहा
 साहेब मोछफेर फयशलाते नाराज हइया एइ ओजरे आपिल
 करियाद्विल ये नीलेर कुटी, वसति वाटी, मजकुर आमार हक,
 आमार पुत्र रामलोचनसाहार सहित कोनो विषय नाइ । परे
 इहरेजि शन १८२८ सालेर १७ सेतम्बर तारिखे फलिफातारं
 फोट आपिलेर हाकिमेरदिगेर विचारे एइ हेतुक एइ आदालतेर
 दुइ फयशला असिद्ध हइयाछे । ये कुटि ओ वसति वाटीर प्रति
 डिगरि टाकार देन्दार रामलोचनसाहार आधिपत्यता आदालते
 मुस्पष्ट प्रकाश हइलना । ओ रामजिसाहा आपन नामेर एक
 पाट्टा ओ मोनसफेर तिन केता फयशला कुटि मजकुरेर जायगा
 आपन साब्यस्त कारण दरपेफ कगिलेक । आर पितृ वर्त्तमाने
 पितृवस्तु पुत्रेर देनाय विक्रि हइते पारेना । एइ चणे करियादि शन
 १२३५ सालेर फाल्गुण मासे रामलोचनसाहार पिता रामजि
 साहार मृत्यु हइयाछे, ओ रामलोचन मजकुर आपन पितार
 सायत विषयेर सत्वाधिकारि हइयाछे बलिचा सेइसकल आपन
 पाओना डिगरि टाका उमुजेर जन्य ऐसरुल विषय फोक ओ
 निलामेर दरखास्त करियाछे । ताहाते फोटेर हुकुम हइते परे
 रामलोचन आसामिर ओ चित्रामणि दरखास्त गुजराइलेक जे
 आमार स्वगुर रामजिसाहार बेकिछु जोतजमा ओ निष्कर
 भूमि ओ वसति वाटी समेन् एमारत् ओ नीलेर कुटी ओ तैजसादि
 ओ अलद्वार आदि स्यावर ओ अत्थावर आपन स्वकृत ये करि-

यादिलेन ताहा आपन मृत्युर पूर्वें शन १२३५ शालेर १६ माच्य तारिखे आमाके दान करिया ऐ तारिख मजकुर दानपत्र लिखिया दियाछेन; आमार स्वामि रामलोचनसाहा आमार स्वशुरेर अवाध्य स्थितेन । ताहार देनार जन्य आमार स्वशुरेर दत्त वस्तु आमार हक, ताहा क्रोक विक्रि हइते पारेना । परे नलवानुसारे चित्रामणिर उकिल शन १२३५ शालेर १६ माच तारिखेर एक केता दानपत्र प्रकार्य रामजिसाहा दातार लिखित चित्रामणि महीतार नामे बाह्मजा भापां ओ अक्षरेते लिखित एइ अदालतेर रेजष्टर साहेबेर निशानिते दरयेप करिलेक । ताहा दृष्टे करियादिर उकिल बैद्यनाथ मजुमदारेर स्थाने जिझासा करागेल ये चित्रामणिर नामेर रामजिसाहार दानपत्रेर सत्यताते सोमार मओकेलेर किछु आपस्य आछे कि ना । जबाब दिलेक ये एमत दानपत्र लिखित पडिन हओयार सम्भव घटे । किन्तु एमत धारार दस्तावेज लिखियार कारण केवल आमार मओकेलेर डिगरि टाका जीर्ण करिवेक । चित्रामणिर उकिलेर स्थाने जिझासा करागेल ये रामलोचनसाहा व्यतिरेक रामजिसाहार आर पुत्र आछे कि ना । जबाब दिलेक ये रामलोचन भित्त रामजिसाहार आर पुत्र नाइ इति । सजविज हइलो ये चूडन्त हुकुम प्रकाशेर पूर्वें ए मरुर्माते एइ कथा जाला हओया आवश्यक हइल ये चित्रामणिर दारिल करा दानपत्र शास्त्रानुसारे मिद्व हइवार योग्य घटे कि ना ।

ए विषय शास्त्रादिनेर निकट तिन कथा प्रभ करा उचित हइल । प्रथमतां एइ—यद्यपि दानपत्रेर लिखित वस्तु रामजिसाहार स्वापार्जित हय, आर रामजिसाहा ऐ वस्तुन दान विक्रयेर स्वत्वाधिकारि करिया पुत्र पौत्र वर्तमान धाकिते ऐ वस्तु आपन पुत्रवधूके दान करे, एमत सर्वस्वान्त दानपत्र यथाशास्त्र प्राप्तेर याग्य कि ना । ओ द्वितीयत—यद्यपि सेइ सकल वस्तु रामजि मजकुरार पैटुक हय, तवे एमत दान आपन पुत्रवधूक देया मिद्व यह कि ना । तृतीयत—यद्यपि दानेर वस्तुन मध्ये किछु पैटुक, ओ

किन्तु रामजिसाहार स्वकृत हथ, ताहा हइले एमत दानपत्रे
द्वाराय ताहा हस्तान्तरं करा सम्यक प्रकारे सिद्ध, कि असिद्ध,
किन्वा कतो सिद्ध, कतो असिद्ध । एइ आदालतेर पण्डित श्रीश्रीराम
सकालद्वार विदाय हइया आपन वाटी गियाछेन । ए जन्य हुकुम
हइल ये दानपत्र मजकुरे नकल समेत रोवकारि नकल सम्ब-
लित ओ ताहार वाङ्मला तरजमा इङ्गरेजि लिपि समभिव्याहारे
सदर देखोयानि आदालतेर हाकिमेरदिगेर निकट पाठान जाय
एइ प्रार्थनाय ये सदर देखोयानि आदालतेर हाकिमेरा अनुग्रह-
पृथक् कागजात् मजकुरात् ऐ आदालतेर पण्डितेदिगेर स्थाने
दिया हुकुम करिवेन—ये एइ मकदमार तावत विषयेर पर दृष्टि
करिया प्रश्नसकलेर उत्तर शास्त्रानुसारे लिखेन । लेखा हओनेर
परे ताहार उत्तर एइ आदालतेर अनुग्रह करिया पाठान । आर
आदालतेर नाजिरेर नामे परयाना लेखा जाय । नाजिर दोशरा
हुकुम प्रकाश हओ । पर्यन्त आपन नाएव मपखलेर पाठाइया
करियादिर दरखास्तेर निचेर लिखित वस्तु माफिक यावेवा क्रोक
करिया, एक जम् पेयादा ताहार रक्षार्थ नियुक्त करे, ये क्रोकी वस्तु
स्थानान्तर हइते ना पाय । पेयादार वेतन करियादिर स्थाने लय ।

आर एइ मकदमार डिगिरि जारिर आसल कागजेर नकल
ना राखिया क्रोट आपिल आदालते पाठान गियाछे, आर अरि-
थादिर^१ नालिपि मकदमार आमल कागज ये ताहाते नीलेर कुटि
ओ वसति घाटीते रामलोचनेर स्वत्व आछे—एइसकल कागज
दृष्टि करा आवश्यक । ए जन्य पुनराय हुकुम हइल ये एक प्रस्त
चुम्बक रोवकारि सेइसकल कागज अनुग्रह मते पाठाने प्रार्थ-
नाय क्रोट आपीले पाठान जाय इति ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं दानपत्रावलोक्य यादश-
बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नोत्तरम्—

यदि दानपत्रलिखितं यस्तु रामजीसाहायंशकस्य स्वोपाजितं भवति एवं रामजीसाहायंशकः स्वपुत्रवर्षं वदस्तुनो दानविक्रयत्वामिनीं कृत्वा पुत्रे विद्यमाने पौत्रेषु च विद्यमानेषु सर्वं धनं तस्यै दत्तञ्चेत्तदा तद्दानं प्रमुसमर्पितविचारपत्रदानपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति शास्त्रानुसारेण कृतवृत्तत्वेन कोषकृतत्वेन च सिद्धं भवितुं न शक्नोति, शास्त्रानुसारेण कोषकृतदानस्य कृतदानस्य च राज्ञा परावर्त्यत्वात् । प्रमुसमर्पितविचारपत्रदानपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति एकमात्रपुत्रस्य वितुर्व्यवहारयोग्ये तस्मिन्नेकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने श्रमात्तत्त्वव्यवहारेषु कतिपयेषु पौत्रेषु विद्यमानेष्वपि तेषामप्राच्यादनोपयुक्तं धनमसरस्य स्वपुत्रवर्षे व्यवहारिन्नेतादृशादेषसर्वस्वदानस्य कृत्वा दिक् विना अशम्भवाच्च । अतएव तत्प्रमाणभूतं तद्दानपत्रमपि शास्त्रानुसारेण प्राप्तं भवितुं न शक्नोतीति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

योगाचमनविक्रीतं योगदानप्रतिग्रहम् ।

यत्र वायुपति पश्येत्तत्तत्त्वं विनिवर्त्तयेत् ॥—इति मनुवचनम् (८, १६५) ॥ १ ॥

अदत्तन्तु मयकोषशोकेनेगरुगन्धितैः ॥

तथोक्तोऽपरीहासव्यासकृतयोगतः ॥ —इत्यादि विवादार्यपसेतु-
(पृ० १५२) विवादमहार्णवादि (१ विवाम० पृ० ४८५ ख) अन्वधृत-
नारद (नाम सं० ६१८) वचनम् ॥ २ ॥

एवं यत्र धनिकादिप्रतारणार्थं स्वकीयद्रव्यमन्वयार्थयति अन्वस्ये
दत्तमिति तत्रापि दानास्तिद्धिः—इत्यादि विवादमहार्णव (२ विवा ४८७ ख)
लिखनम् ॥ ३ ॥

स्वं कुटुम्बाविरोधेन देयं दारसुतादते ।

नान्वये सति सर्वस्वं यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् ॥—इति विवादार्णव-
सेतु (पृ० १४८) विवादमद्वार्यवादि (१ विवा० ४४५ ख) ग्रन्थधृतयाज्ञ-
वल्क्य (याज्ञ० पृ० २४४) वचनञ्चेति २।१७५ ॥ ४ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि च तदेव सर्वं यस्तु रामबीसाहासंशकस्य पैतृकं भवति तदा स्व-
पुत्रवधूमुद्दिश्यैतादृशदानं प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण छलकृतत्वात् क्रोध-
कृतत्वात् पैतामहे स्थावरदो पुत्रपौत्राद्यनुमतिं विना पितुरेतादृशदाने प्रभु-
त्वाभावाच्च सिद्धं भवितुं न शक्नोति ।

अत्र प्रमाणम्—

उपरिलिखितप्रमाणचतुष्टयम् ॥ ४ ॥

मणिमुक्ताप्रचालानां सर्वस्यैव पिता प्रभुः ॥

स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः ॥—इति दायभागादि (पृ०
३३) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ ५ ॥

पितामहश्रुतेस्तद्धनविषयं वचनम् । मणिमुक्ताद्युपादाय पुनः सर्व-
स्येति वचनात् सर्वेषां भूम्यादिव्यतिरिक्तानां दानादिषु पितुः प्रभुत्वं
न स्थावरनिग्रहद्रव्याणाम्—इति दायभाग (पृ० ३३) ग्रन्थलिखन-
ञ्चेति ॥ ६ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानकृतयस्तु किञ्चिद्रामबीसाहासंशकस्य पैतृकं किञ्चित् स्वो-
पाजितं भवति तदैतादृशदानपत्रद्वारा हस्तान्तरकरणं सर्वस्य यस्तुनस्तदन्त-
र्गतस्य किञ्चिद्रस्तुनो वा प्रथमद्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण सिद्धं भवितुं न
शक्नोति—इति वद्वदेशचलितगनुदायभागविवादमद्वार्यवविवादार्णवमेत्यादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

१ ने० याज्ञवल्क्यवचनम्, १६६ तमे पृष्ठे भित्तासूत्राणां चेदं सम्पत्ते ।

२ सर्वस्येष्टुद्वितीय—दाया० ।

अत्र प्रमाणानुपरिलिखितान्येवेति ॥ ६ ॥

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

—०—

सञ्चोयाल—

८७—फरियादियान नन्दकुमारगोस्वामी ओ रामचन्द्र-
गोस्वामी दिगद असामी वैष्णवानन्दगोस्वामिदिगरेर नामे हिस्व्या
वावति ५८७ टाकार दाविते १०२६ लम्बरे नालिप करियाछेन ।
फरियादियान आपन आरजिते लिखेन ये फरियादियान श्रीश्री-
नित्यानन्दजिठठाकुरेर परिवार तावत देशीय वैष्णवसकल श्रीश्री-
नित्यानन्दजिठठाकुरेर परिवारेर सासित वैष्णव हथोन कालीन
माला चन्दन इत्यादि जाहा प्रया आछे उहारा वैष्णव दिग्गदेर,
आर ऐ महालेर नाम भावकमहाल । अत्र विषये हाकिमेर बिना
दलिले नित्यानन्द जिठर परिवारे साम्यक भावे साध्य आछे, ओ
एइ महाल राजदत्त नय । ये ये स्थाने नित्यानन्दजिठर परिवार-
सकल वास करिया आछेन, सेह २ स्थाने जे जे प्रकारेर हिन्दुलोक
ओ वैष्णवलोक वास करेण । ताहादेर मध्ये ये केह नित्यानन्देर
उपर देशीय हन तेँहा नित्यानन्देर परिवारेर निकट हाजिर हन
इति । आसामि लेखेन जे एइ महाल राजगुरुक शासन । राजदत्त
विशयसकलेर एइ महाल राजा हइते राजगुरुके अर्पण आछे,
ओ भावक महाल कोन समय हइते आछे, ओ कि प्रकारे नित्या-
नन्देर परिवारके अर्शिते, एवं एइ महालेते किम्बा हाकिमेर द्वाराय
कोन प्रकारे किछु सम्पर्क आछे कि ना । यदि भेकाश्रित वैष्णव
हइते चाहे से व्यक्तिके नित्यानन्दजिठर परिवार व्यतिरेक अन्य
केह सेवक करिते पारेन कि ना । एवं यदि स्यात् तावत् देशीय
भावकमहाल नित्यानन्देर परिवारसकलेर अंश हइया थाके, आर
नित्यानन्दजिठर परिवारेर मध्ये एक स्थानेर परिवार कोन व्यक्ति

अन्य स्थानेर परिवारेर सेवक हइते चाहिले सेवक हइते पारे कि ना, ओ ऐ परिवारेर मिन्य स्थानवासी ऐ व्यक्तिके सेवक करिते पारेन कि ना, एवं नित्यानन्दजिउर परिवार ये ये स्थाने वास करिया आछैन ऐ जायगाय उद्दादिम्येर अधिकार कि । ये ये स्थाने नित्यानन्देर पन्थीय वैष्णवसकल आछैन ऐसकल स्थान उद्दादिम्येर शासन कि, तावतदेससकल उद्दादिम्येर प्रत्यक्ष अंश आछे, अर्थात् नित्यानन्देर परिवार केहो सिंहभूमवासी एवं केहो बराहभूमवासी, इहाते सिंहभूमनिवासी कोन व्यक्ति ऐ घराहभूमनिवासी नित्यानन्देर परिवारेर स्थाने सेवक हइते पारे कि ना । एवं नित्यानन्देर ये परिवार सिंहभूमे वास करिया आछैन, ताहार अधिकार केवल सिंहभूम कि बराहभूमो बटे । फलत तावत देशीय वैष्णवसकल नित्यानन्द जिउर तावत परिवारसकलेर साधारण मते अधिकार कि । ये ये स्थाने नित्यानन्देर ये परिवार वास करिया आछैन ताहार सेइ जायगाय अधिकार, तद्व्यतिरिक्त अन्य देशे नाइ । अत्र विषये शास्त्रे किमत विधि आछे ज्ञातो हओया अविश्वक । अतएव सदर देओयानि आदालतेर परिदृष्ट एइ सओयालेर जवाब दत्तिण' पारवै लेखेन इति । शन १८२६ साल तारिख २५ मुन मतावक शन १२३६ साल १३ आपाड ।

श्रीर्जयतितराम् यज्ञव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रं यदेतदब्दीभागस्तिमासोपपञ्चविंशतेदिने षष्टिका-
त्रयाधिक्यामहयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य षाटशबोधो जातस्तदनुसा-
रेणोत्तरं लिख्यते ।

यज्ञातीयानां यन्त्रेणीनां वा यस्मिन् विषये विशेषतः शास्त्राज्ञा नास्ति
तस्मिन् विषये यज्ञातीयानां यन्त्रेणीनां वा यथा पूर्वापरव्यवहारस्तदनुसारे
शैव निरणयो भवितुमर्हति । प्रभुसमर्पितप्रभपत्रलिखितविषयसमुदायस्यार्थाद्

भावक्रमहालसंज्ञकस्तुविशेषः कथमात् समयादतेते इत्यस्य, एवं केन प्रकारेण श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवारैस्तद्वस्तु प्राप्तमित्यस्यैवं तेषु^१ वस्तुषु सराबकरभूस्वामिनो राज्ञश्च वा केनापि प्रकारेण कश्चिदपि सम्बन्धो वर्तते न वेत्यस्य, एवं यदि कश्चिद्भूमेऽभितवैष्णवो भवितुमिच्छति तदा स श्रीमन्नित्यानन्दपरिवारस्यतिरिक्तेनान्येन केनचित् सेवकः कर्तुं शक्यते न वेत्यस्य, एवं तावद्देशीयभावक्रमहालसंज्ञकस्य विशेषो यदि श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराणामंशोऽभूद्, अथ च श्रीमन्नित्यानन्दपरिवाराणामध्ये एकस्थानस्य कश्चित्परिवारः स्थानान्तरजातिपरिवाराणां सेवको भवितुमिच्छति चेत्तदा सेवको भवितुं (शक्नोति) न वेत्यस्य, एवं तत्परिवारवासरधानाद्विस्तस्थाननिवासी कश्चिच्छ्रीमन्नित्यानन्दपरिवारस्तं व्यक्तिविशेषं सेवकं कर्तुं शक्नोति न वेत्यस्य, एवं श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवारो यस्मिन् यस्मिन् स्थाने श्रीमन्नित्यानन्दस्य सम्प्रदाया वैष्णवाः सन्ति (तस्मिन्) तस्मिन्नेव स्थाने तेषामधिकारः, किंवा सर्वस्मिन्देसे तेषामंशोऽभ्यात् श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराः केचित् सिंहभूमिकातिनः केचिच्च वराहभूमिकातिनः, तत्र सिंहभूमिनिवासी कश्चिद्व्यतिविशेषो वराहभूमिनिवातिनः श्रीमन्नित्यानन्दपरिवारस्य स्थाने सेवको भवितुं शक्नोति न वेत्यस्य, एवं श्रीमन्नित्यानन्दस्य ये परिवाराः सिंहभूमिनिवातिनस्तेषां केवलं सिंहभूमाधिकारः किं वा वराहभूमावधि, अर्थात् तावद्देशीयवैष्णवेषु श्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराः वातं कुर्वन्ति तस्मिन् स्थान एव तेषामधिकारो नान्यत्रेत्यस्य चेदानीं प्रचलितास्मृतावधर्मशास्त्रालिखितत्वात् प्रश्नप्रलिलितश्रीमन्नित्यानन्दस्य परिवाराणामध्ये प्रश्नप्रलिलितविषयसमुदायेषु पूर्वपरं यथा व्यवहारस्तदनुसारेण निरर्थको भवितुमर्हति, इति मनुदायतत्त्व-कल्पतरु-विद्यादरकाकर-व्यवहारमातृकान्यवहारतत्त्व-बोरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिज्ञानपदान् धर्माब्धेः लीधर्मांश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम् (८।

४१॥) ॥ १ ॥

देशस्य जातेस्संधस्य धर्मां ग्रामस्य यां भृगुः ।

उदितः स्यात् स तेनैव दायमागं प्रकल्पयेत् ॥—इति दायतत्त्व (पृ० ७) कल्पतरुविवादरत्नाकरप्रभृतिग्रन्थधृतकल्याणनवचनम् (कल्म० ८८४) ॥ २ ॥

व्यवहारो हि बलवान्धर्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारमातृका (पृ० २८२) व्यवहारतत्त्वादि (पृ० ४) ग्रन्थधृतनारदवचनम् (नास्मृ० पृ० १७) ॥ ३ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्यायः ।

युक्तिहीनपिचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारमातृका (पृ० २८२) वीरमित्रोदय (पृ० १८) व्यवहारतत्त्वादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० पृ० १६) ॥ ४ ॥

कीनाशाः कालकाः शिल्पिकुत्सीदिशेऽपि नर्तकाः ।

लिङ्गिनस्तस्कराः कुर्युः स्वेन धर्मेण निर्यायम् ॥—इति वीरमित्रोदय- (वीमि० ख पृ० ३०) व्यवहारमातृकादि (व्यमा० पृ० २८१) ग्रन्थधृत-बृहस्पतिवचनम् (बृस्मृ० पृ० १२) ॥ ५ ॥

युक्तिलोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका (२८२) व्यवहारतत्त्व- (पृ० ४) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

दिवम्बरमातृस्य प्रथमदिने यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१. तेनापचौको—इति पाठान्तरम् ।

२. °कास्का मल्लाः कुत्सीदमे शिवतंकाः ।

लिङ्गिनस्तस्कराश्चैव स्वेन धर्मेण निर्यायः ॥ (बृस्मृ० पाठ०)

३. युक्तिनिर्यायः । स च लोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका—व्यप० ।

सञ्चोयाल—

८८—यदि दुइ अथवा अधिक भ्राता थाके । एक जन ताहार वयप्राप्त । एवं अन्यसकल नाबालग । एवं ताहारदिगेर कोन गारहियेन् अर्थात् रक्षक विशेषरूपे मोकरर ना हइया थाके । एवं ताहारदिगेर ज्येष्ठ भ्राता, ये प्राप्तव्यवहार हइयाछे, स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे, ये स्थावर वस्तुते नाहार छातारदिगेर अंश छोदे । ऐ स्थावर वस्तु विभाग करखे ताहार दिगेरके अंशी बोध करा जाय । एमत हस्तान्तर करण शास्त्रमते नाबालगेर पछे सिद्धहइते पारे कि ना ?

श्रीर्जयतितराम्

मनुसमर्पितप्रभग्नं यदेतदन्दीयनपम्बरमासीयैकवैश्वतिदिने यामद्वया-
नन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशानुषो ज्ञातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते ।

यदि द्वौ सतोप्यधिका वा भ्रातरस्त्वन्ति, तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारो-
ऽन्येऽप्राप्तव्यवहारतेषामप्राप्तव्यवहाराणां विशेषतो रक्षकः कश्चिन् निपुक्तो
नाभूत्सादेवं तेषां क्येदो भ्राता यः प्राप्तव्यवहारोऽभूत् स यदि एवंभूतं
रपावरं हस्तान्तरं कृतवान् स्यात्, यत्र स्थापरे तद्भ्रातृयामरोऽस्ति, एवं
तत्स्थावरविभागकरणे तेषामप्राप्तव्यवहाराणामंशित्वेन ज्ञानं भवति, एता-
दृशवृत्तान्ते कति एतादृशहस्तान्तरकरणं शास्त्रतोऽप्राप्तव्यवहाराणामरो अ-
स्वामिकृतत्वात् सिद्धं भविर्नु न शक्नोति । शास्त्रानुसारेणास्वामिकृतविक्रयस्य
नियतनीयत्वात्—इति बङ्गदेशचलितमनुशासनाधिकारकृत-
द्वयभागीकानिवादमङ्कार्यादिप्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दास्यो विक्रय एव वा ।

अज्ञातस्तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनुवचनम्

(८९६६) ॥ २ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिश्च विनिवर्त्तयेत्—इति विवादमद्वार्षादि-
(१ विवाम० पृ० ३१७ ख)ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (कास्मृ० ६१२)
॥ २ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

विभक्तस्येवा^१विभक्तस्थानरस्यापि स्वामिकृतदानादि^२सिद्ध्यत्येव,अक्ष-
पातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादितिभावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-
दायभागटीका (पृ० ३५) लिखनम् ॥ ३ ॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन^३ विक्रये पराशयोग्येऽसिद्धिः-
स्वाशयोग्ये तु सिद्धिः—इत्यादि विवादमद्वार्षाव (१ विवाम० पृ० ३०५
क) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

दिसम्बरमासस्य द्वादशदिने शनिवासरे शामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था
वृत्तेति ॥

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रथम सञ्चोयाल—

८९—यदि कोन हिन्दु जाती एक स्त्री, ओ कएक जन पुत्र वत्त-
मान थाकिते आपन पैरुफ स्थावर वस्तु, याहा आपन पितार मृत्युर
पर उत्तराधिकारित्य प्रकारे उहाके आर्शियाछिल, ताहा समुदाय,
किम्बा ताहा हइते किञ्चित विक्रय करियाथाके, तवे एमत विक्रय
सिद्ध हइयेक कि ना, ओ विक्रयकर्त्ता किम्बा ताहार मृत्युर पर
उहार पुत्रगणेर द्वाराय क्रयकर्त्ताके दखल देओयानेर, आझा
देओयार क्षमता आदालतेर हाकिमगणेर आछे कि ना ?

द्वितीय सञ्चोयाल—

यद्यपि क्रयकर्त्ताके दखल दिया उहाके वेदखल करियाथाके तवे
हाकिमगण क्रयकर्त्ताके दखल देओयानेर आझा दिते पारेन कि ना ?

तृतीय सञ्चोयाल—

यदि क्रयकर्त्ता दखल ना पाइयायाके तवे हाकिमगण क्रय-
कर्त्तार सदमन्धे दखल देओयार आज्ञा दिते पारेन कि ना ?
प्रमुसमर्पितप्रभपत्रमवलोक्य मादराबोघो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

प्रथमप्रभस्योत्तरम्—

प्रभपत्रलिखितप्रकारकृतान्ते सति प्रभपत्रलिखितप्रकारकं समुदाय-
स्थावरं तदन्तर्गतकिञ्चित्स्थावरं वा कुटुम्बभरणपित्रादिआज्ञायावरयक-
कर्मकरणार्थं पुत्रेषु विद्यमानेष्वपि यदि पित्रा विक्रीतं तदा पुत्रायामनुमतिं
विनापि स विक्रयः सिद्धो भवितुं शक्नोति । यद्युपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्या-
वरयककर्मकरणार्थं पित्रा न विक्रीतं किन्तु स्वैच्छया स्वाभिप्रायेण वा विक्रीतं
तदा पुत्रायामनुमतिश्चेत् सिद्ध्यति, नोचेन्न सिद्ध्यति । एवञ्च सति तद्वि-
क्रयस्य सिद्धत्वपक्षे विक्रयकर्त्तारं प्रति सम्मरणानन्तरं तत्पुत्रान् प्रति वा
क्रयकर्त्तुं पयत्तवसम्नादिकाया आज्ञाया दाने क्षमता धर्माधिकरणाधिपती-
नामस्त्येव, सिद्धेन तद्विक्रयेण विक्रयकर्त्तुः स्वत्वविनाशेन तत्पुत्रायामपि
तत्र स्वत्वानुत्पादात् क्रयकर्त्तुः स्वत्वोत्पत्तेरचेति ।

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्वस्यैव पिता प्रभुः ।

स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः ॥ —इति दायमाग-
दिप्रश्न (दाभा० पृ० ३३) धृतपाशवत्स्ववचनम् ॥ २ ॥

पितामहश्च तेस्तद्वधनविषयकं वचनम् । मणिमुक्ताद्युपादाय पुनः
सर्वस्येति वचनात् सर्वेषां भूम्यादिव्यतिरिक्तानां दानादिषु पिनुः प्रभुत्वं
न स्थावरनिबन्धद्रव्याणाम्—इति दायमाग (पृ० ३३) अन्यलिखनम्
॥ २ ॥

१. वचनमिदं पाशवत्स्ववस्थौ न दृश्यते ।

२. °दानविषयं—म्यप० ।

३. उपादानात्—दाभा० ।

यदि पुनः सर्वस्थावरादिविक्रयमन्तरेण कुटुम्बवर्तनमेव न भवति.
तदा सर्वस्यापि विक्रयणादिकमर्थात् सिद्ध्यति—इति दायभागः(पृ० ३३)-
ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

विधीय परमं मूल्येन केतुर्यो^१ न प्रयच्छति ।

स्थावरस्य क्षयं^२ दाप्यो जङ्गमस्य क्रियाफलम् ॥

इति विवादभङ्गार्थविवादार्यवसेत्वाद्वि(पृ० १७८) ग्रन्थभृतनारद-
(नामसं० ६-१, ४) वचनम् ॥ ४ ॥

मूल्यग्रहणपूर्वकस्त्वत्पराशकव्यापारस्यैव विक्रयपदार्थत्वाद्—इति
विवादभङ्गार्थलिखनम् ॥ ५ ॥

सप्त विज्ञागमा धर्म्या दायो लामः कयो जयः ।

प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥—इति मनुवचन-
ञ्चेति (१०।११५) ॥ ६ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदिक्रयकर्तुरायत्तत्वं सम्पादायत्तत्त्वमुत्थापितवान् स्यात्तदा क्रयकर्तुराय-
त्तत्त्वसम्पादिकामाशां धर्माधिकरणाधिपतयो दातुं शक्नुवन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणान्तर्गतचतुर्थप्रमाणम् ।

यदि क्रयकर्त्ता नायत्तत्वं प्राप्तं तदा धर्माधिकरणाधिपतयः क्रयकर्तु-
रायत्तत्त्वसम्पादिकामाशां दातुं शक्नुवन्ति—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभाग-
विवादभङ्गार्थविवादार्यवसेत्वादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणमेवेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीहरिः शरणम् ।

२६ लम्बर दरखास्त खास आपिल—

सन १८२६ साल—

प्रश्नः—

६०—यद्यपि कोन व्यक्ति आपन सुपाजित ओ पैतृक कोन वस्तु आपन स्वर्गार्थे काहाकेओ दान करे आर ऐ दाता व्यक्ति दानपत्रे एमत सरत राखे ये आपन जीवदशा पर्यन्त खोरपोप पाइवेक, अतएव ए प्रकार सरतेर दान ये ताहाते केवल दाता व्यक्ति जीवदशा पर्यन्त खोरपोप सरत लेखा थाके-शास्त्र सम्मत सिद्ध बटे कि ना-इहार प्रतिउत्तर एइ प्रश्नेर पारखे, ओ तस्य भाषा लिखिवेन । इति १८२६ साल ता २६ नवम्बर मो० शन १२३६ साल ता० १२ अमहायन ।

श्रीर्जयतितराम

जवाबव्यवस्था

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रे यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यविंशदधिकाष्टादशशताब्दी-यज्ञानयरीमासीयत्रयमदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे घटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषः स्वोपाजितं पैतृकं च कियद्वस्तु स्वस्वगार्थं कस्मैचिदत्तमानं, अथ च तेनैव दात्रा दानपत्रे एतादृशनियमो रक्षितः “स्वजीवनपर्यन्तमह मासाच्छादनं प्राप्नोमि” । अतएव यद्दानपत्रे केवलं दानुजीवनपर्यन्त मासाच्छादननियमो लिखितस्तदानं यदि दात्रा स्वजीवनपर्यन्तं मासाच्छादन प्राप्त तदा सिद्ध्यति, नोचेन्न सिद्ध्यति, यतः सोपाधि-दानमुपाधिनिर्द्धी सिद्धम्, उपाध्यसिद्धावसिद्धं भवति—इति वङ्गदेशाचलित-दायमन्त्रविवादमङ्गलार्थगदिमन्यानुसारिणी व्यवस्था ।

१ प्रश्न — पृ० १ ।

२ सुपाजित—पृ० १ सोपाजित—इति साधयान् पाठ ।

३ दत्तम्—पृ० १ ।

४ स एव दात्रा—पृ० १ ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान्^१ यदि दधु स्ते विप्रीणीयुरथपि वा ।

कुर्युर्यथेष्टं तत्तर्ज्वमीशास्ते स्वघनस्य वै ॥—इति दायभागादि-

(दाय० पृ० ३०) अन्यपृतनारदः नामस० १४।४२) वचनम् ॥ १ ॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गार्णवः^(१) विवाभ०

पृ० ३०८ ख) अन्यलिखनम् ॥ २ ॥

अग्नेदमवधेयम्—यदि कतिचिदुपाधयः यावज्जीवपर्यन्तं पोषणादयः कृताः कतिचिच्चोर्द्ध्वदैहिकक्रिया (कलाप^२) रूपा न कृतास्तत्र का व्यवस्था इति चेद् यावद्व्यापाराकरणेन सम्प्रदानप्रतिज्ञागन्तादुद्देश्यफलानां किञ्चिदंशे विसंपादाच्च न दानसिद्धिः—इति विवादभङ्गार्णवग्रन्थः^(१) विवाभ० पृ० ४६५ फ) लिखनश्चेति ॥ ३ ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयकेनरयरीमासोयचतुर्थदिनसम्बन्धिवृहत्पति-
वासरे षट्कैकाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दर्शयति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

८७ तम्वर

रास आपिल

शन १८२७

प्रस्तः—

६१—यद्यपि कोन व्यक्ति किछु भुमि आपन कन्यार विवाह

२५६

कालिन आपन जामाताके दान करिया थाके, आर ऐ कन्यार गर्भे सेओया एक कन्या श्रीमतीकुमारी नामे, पुत्र सन्तान ना हइया थाके; ए प्रकारे ऐ वस्तु यथाशाल श्रीमतीकुमारीके कि ऐ प्रहीता व्यक्तिर द्वितीय पत्नेर सन्तानद्विगके आशें—इहार प्रति उत्तर घचन ओ सध्य ताहा एइ प्रश्नेर पार्शें लिखिवेन इति । शन १८२६ तारिख २२ दिशम्बर मोतायाक शन १२३६ तारिख ६ पौष ।

श्रीर्ज्जयति तिराम्

अनावश्यकवस्था

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रं यदेतदब्दौपकेवरवरीमासीयपञ्चमदिनसम्प्रन्धिशुक्र-
वाहरे घटिकात्रयाधिकयामहये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-
नुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यत्र कश्चिद्व्यक्तिविशेषः किञ्चिद्भूमिं स्वकीयकन्याविवाहसमये स्वजामात्रे दत्तवान्, अथ च तस्या गर्भे भोगतीकुमारीनाम्नीमेकां कन्यां विना अन्य-
कश्चित् पुत्रादिसन्तानो न जातश्चेत्तत्र तदानं यदि “कन्याया इदं भवतु”
इत्यभिसन्धिना कृतं तदा तावदेव यस्तु भोगतीकुमारीनाम्नी प्राप्तुं शक्नोति,
तन्मातृयौतुकस्त्रीधनत्वात्, यौतुकस्त्रीधने दुहितृधिकारस्य निष्पत्त्युत्त्वात् ।
यदि च तदानं तादृशमिसन्धिं विना कृतमर्थाद्, “जामातुरिदं भवतु”
इत्यभिसन्धिना कृतं तदा तदस्तु जामातुस्त्वधिकारिणामर्थात्तत्पुत्रपौत्र-
प्रपौत्रपत्नीदुहित्रादीनामेव भवति । प्रकृते तु प्रभुसमर्पितविचारपक्षलक्षि-
ताधित्तिस्थितवृत्तान्तवाक्यव्याख्यानार्थाद् राममण्या औरसपुत्राभावेन शास्त्रा-
नुसारेणार्थिन एवोत्तराधिकारिण इत्यनेन विवादास्यदीभूतपनस्य राममण्यो-
मुदितस्य तस्मिन्कृतदानावगमेन तादृशधनं राममण्या यौतुकं स्त्रीधनं
भवत्येव, यौतुकस्त्रीधने विद्यमानायां दुहितरे सख्योपुत्राणामर्थादधिनामधि-
कारप्रतिपादकशास्त्राभावाद्—इति यद्गदेराचलितदायमागभीरुभ्युत्कर्षलङ्का-
रकृतदायमागयीकादायकमसंग्रहनिवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

१. विवाहकाले-यत्किञ्चिद्वरायोद्दिश्य दीयते ।

कन्यायास्तदनं सर्वमविभाज्यं च यन्पुत्रिभिः ॥—इति दायभाग(पृ० ७५)

दायक्रमसंग्रहादि(दाकसं० पृ० १३) ग्रन्थवृत्त्याख्यवचनम् ॥ १ ॥

उद्दिश्येति कन्याया इदं भवत्वित्युद्दिश्य वराय यदानं न पुनरेतदभिसन्धिं विनापीत्यर्थः । अतएव विवाहकाल-इति प्रदर्शनाभं न पुनरेतदेव प्रयोजकं दायभिसन्धिनिमित्तत्वात् स्वत्वस्य-इति दायभाग(पृ० ७५)ग्रन्थ-लिखनम् ॥ २ ॥

न अत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति धीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग(पृ० २१८)लिखनम् ॥ ३ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव-इत्यादि दायभाग(पृ० १५१)धीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका(पृ० १५१)नियमसङ्ग्रहविवादमहार्थभादि(२ विभाग० पृ० ११४)ग्रन्थवृत्त्याख्यवचनम्(२११५)वचनम् ॥ ४ ॥

तत्र यौतुकपने प्रथमं कुमार्या अधिकारस्तदभावे चागृहस्थायास्तदभावे चांदायाः पुत्रपत्याः सभाविपुत्रायाश्च युगपदधिकार इति । तदभावे यन्ध्याविधवयोरपि तुल्यदधिकार इति च । सर्वदुहितृभावे पुत्रस्याधिकारः—इति च दायक्रमसंग्रह(पृ० २३)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

एतदन्दीपमहमासीपत्रयोदशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे षडिकैकाधिकशामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्ता इति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

नं०-२६५

६२—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि, सदर तारिक २१ माह जानओरि शन १८३० इ० मतावक ६ माह माघ सन

૧૨૩૬ વાઘલા રોજ બૃહસ્પતિવાર એ આદાલતેર હાકિમ શ્રીયુક્ત માન્તેગિયુ દેનરિ ટરમ્બલ સાહેવેર વૈઠકે ।

ગોપાલચન્દ્ર પ્રમુતિ

આપિલાઈટગણ .

વાલુ કોઠર સિંહ

રખાઈશ્વર

આપિલાઈટગણેર ઇકિલ મુનશી હોસેન આલિ ઓ મૌલવી ન્યામત આલિ, રખાઈશ્વરેર ઇકિલ મુનશી વાદાર વક્સ ઓ મુનશી હયબર આલિ ઓ મૌલવી કરમત' હોસેન હાજિર હૈલ । ૫ મક-
ઈમા ગત સનેર દિસમ્બર માસેર ૩૦ તારિખેર હુકુમાનુસારે ૫૬ માસેર ૧૧તારિખે આમાર વૈઠકે રોબકાર હૈયા જિલા ઓ કોર્ટેર આદાલતેર ફયસલાસકલ ઓ ૬ ૧૮૨૭ સાલેર માર્ચ માસેર ૬ ઓ ૨૭ તારિખેસકલેર લિખિત ૫ આદાલતેર વાકિ કાગજ-
સકલ ઓ આસ આપીલેર દરસ્તાલ, યાદા મજુબાત ફરિયાલે, ઓ ૫ આદાલતે દાખિલ હૈઓયા તાહાર જવાબ ઓ ૬ ૧૮૨૬ સાલેર દિસમ્બર માસેર ૩૦ તારિખેર રોબકારિર વિસ્તિર્મ ૫ આદા-
લતેર હાકિમ શ્રીયુક્ત ઇલિયમ નસટર સાહેવેર રાય ઓ ૫૬ મક-
ઈમાર આવિશ્યકીય અન્ય કાગજાત પુનરાય પઢાગેલ । યથા હમ-
યેર ઓજરસકલ ઓ ઇજહારસકલેર દૃષ્ટે ૫ મકઈમાર સન્વન્હે ષૂડન્ત હુકુમ સાદર હૈઓનેર પૂર્વ નિચેર સમોયાલેર જવાબે ૫ આદાલતેર પશ્ચિટ હૈતે વ્યવસ્થા લખોન ડખિત હૈલ, અતપ્પય હુકુમ હૈલ જે મકઈમા અથ સ્થાફત થાકે, ઓ ૫૬ રોબકારિર મફલ ૫૬ હુકુમે ૫ આદાલતેર પશ્ચિટવકે સમર્પણ કરાજાય યે જિલા માહાવાદેર ખલિત શાખાનુસારે નિચેર લિખિત સમોયાલેર જવાબે એક સમ્માદ મધ્યે વ્યવસ્થા દાખિલ કરેલ ।

સમોયાલ—યથાપિ હિન્દુ જાતિ હૈતે કેહો આપન પૈતૃક-
સ્થાવર વસ્તુસકલ હૈતે કિહુ બ્રાહ્મ જાતિ હૈતે એક વ્યપિકે દાન કરે । ઓ દાન ગૃહીતા ઓ તાહાર મૃત્યુર પર ચહાર વત્તરા-

धिकारिगण दान करा वस्तु उपर दखिल हइया थाके, ओ ता-
हार पर दाता व्यक्तिर पुत्रगणेर मध्ये एक जन आपन पिता बर्त्त-
माने ऐ दान सिद्धि न हओयार एजाहारे आदालते नालिस करे ।
तवे एमत दान शाखानुसारे सिद्धि ओ चलित हइवेक कि ना
इति ।

श्रीर्जयतितराम

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरवलसाहेबधर्माधिक-
रणलिखितैतदन्दीयजान (ओ) सीमासीयैकविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गत-
प्रभप्रतिरूपपत्रं यत् पेत्रवरसीमासीयतृतीयदिनसम्पन्नविशुध्यासरे घटिकैका-
धिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशशोचो जातस्तदनुसारेणो-
त्तरं लिख्यते—

यद्यपि हिन्दुनात्यन्तःपाती कश्चिद्वैतकृत्यावरसमुदायात् किञ्चिद्-
ब्राह्मणजातीयापेकस्मै कस्मैचिद्वचनान्, अथ च दानप्रदीपा तन्मरणा-
नन्तरं तदुत्तराधिकारिभिस्तद्दानकृतवस्तुनि आयत्तत्वं संगदितम्, तदनन्तरं
दातुः पुत्राणां मध्ये एकः कश्चिद् विद्यमाने पितरि स्वपितृकृतदानं सिद्धं न
मयतीति वदन् धर्माधिकरणेऽभियोगं कृतवान् स्यात्—तत्र विद्यमाने पितरि
प्रभरत्रलिखितप्रकारकपुत्रकृत्याभियोगदृष्ट्या तद्दानं यदि पित्रा स्वेच्छया
स्वाभिप्रायेण^१ वा प्रसन्नतया वा कृतम्, तत्र पुत्राणामनुमतिश्चेत् सिद्धं
चलितं च भवितुं शक्नोति, नो चेन्न शक्नोति, पैतामहे रथावरादौ पितापुत्र-
योस्तुल्यस्वामित्वेन साधारणतया तद्दानविक्रयादौ पुत्राणामनुमतेरावश्य-
कत्वात् । यदि च तद्दानं पित्रा मयस्त्रोधादियोदशप्रकारान्तर्गतेन केनचित्
प्रकारेण कृतम्, ये योदशप्रकाराः पञ्चमप्रमाणे स्पष्टीकृतास्तत्र पुत्राणां
मनुमतावननुमतौ वा सिद्धं चलितं च भवितुं नाहंति । यदि च तद्दानं
पित्राऽवश्यकर्तव्यपित्रादिभाद्धादिपु यथादिपु वा ब्राह्मणत्वेन धर्माभं वा,
अर्थात् तत्तद्देशचलितपित्रादिभाद्धादिदक्षिणा यथादिदक्षिणा वा ब्रह्मनं वा

कृता)पण्यं वा पादाप्यो वा संकल्यो वा वृत्तिर्वा विष्णुवादिदेवताप्रीत्यर्थं
नेत्यादिरीत्या कृतं तदा धर्माप्यन्तेन सिद्धं चलितं च भवितुमर्हति । धर्माप्यं
पितुराधिकारः । धर्माप्यं
अदत्तैव मृतश्चेत्तथापि
(का. ३. १. ५. १. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.)

राज्ञा तद्वत् तत्पुत्रा दापनीयाः(?)—इति मिताक्षरादिग्रन्थेषु विशेषतो लिखित-
तत्वात्—इति साहाय्यप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्य-
वहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सव्यस्यैव पिता प्रभुः ।
स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः ॥—इति मिताक्षरा-
(पृ० १६६) वीरमित्रोदय (पृ० ५२४) व्यवहारमाधव (पृ० ३३१) व्यव-
हारकौस्तुभादिग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्य (पृ० १६६) वचनम् ॥ १ ॥

भूर्या पितामहोपात्ता नियन्धो द्रव्यमेव वा ।
तत्र स्यात् सदृशं स्वाम्यं पितुः पुत्रस्य (चैव हि) ॥—इत्युपरिलि-
खितग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्य (पृ० २०६, २१२१) वचनम् ॥ २ ॥

तस्मात् पितृके पितामहे च द्रव्ये जन्मनेव स्वत्वं तथापि पितुरावरण-
केषु धर्मकृत्येषु वाचनिकेषु प्रसाददानकुटुम्बभरणा (पट्टि) मोक्षादिषु च
स्थावरभ्यतिरिक्तद्रव्यविनियोगे स्वातन्त्र्यमिति स्थितम् । स्थावरे तु स्वा-
जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव ।—इत्युपरिलिखितग्रन्थ (मिता-
पृ० २००) लिखनम् ॥ ३ ॥

स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमर्जितम् ।

असम्भूय सुतान् सर्वान् न दानं न च विक्रयः ॥

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि प्राप्नुवन्ति न दानं न च विक्रयः ॥—इति चोपरि-
लिखितग्रन्थभूत (मिता० पृ० २००) व्याख्यानद्वयम् ॥ ४ ॥

१. पादाप्यो वा संकल्यो वा—अप० । २. विष्णुवादिदेवताप्रीत्यर्थम्—अप० ।

३. याज्ञवल्क्यभूतो वचनमिदं चोपलभ्यते ।

अदत्तं तु भयकोषशोकेवेगरुगन्तितैः ।

तद्योक्तोचपरीहासव्यत्यासच्छलयोगतः ॥

बालमुदास्यतन्त्रार्त्तमत्तोन्मत्तापवर्जितैः ।

कचो ममेदं कमेति प्रेतिलाभेच्छया च यद् ॥

अपात्रे पात्रमित्युक्ते काये चाधर्मसंज्ञिते ।

यदत्तं स्यादविज्ञानाददत्तमिति तत्स्मृतम् ॥—इति चोपरिलिखितग्रन्थ-

(मिता० पृ० २४५) श्रुतनारद (नामसं० ६०) वचनम् ॥ ५ ॥

अस्वापवादः ॥

एकोऽपि, स्थावरे, कुर्याद्दानाधमनविक्रयम् ।

आपत्काले कुटुम्बार्थं धर्मार्थं च विशेषतः ॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थ-

(मिता० पृ० २९०) श्रुतमुनिवचनम् ॥ ६ ॥

स्वस्थेनार्त्तेन वा दत्तं आपितं धर्मकारणात् ।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्पुनो नात्र संशयः ॥—इति चोपरिलिखित-

ग्रन्थ (मिता० पृ० २४६) श्रुतकात्यायन (कास्मृ० ५६६) वचनं चेति ॥ ७ ॥

माचूर्चमासत्यत्रयोदशदिनसम्बन्धिशनिवारे घटिकैकाधिकपामद्वये मये

यं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

९३—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानी सदर तारिख
११ माह फेवरओरि शन १८३० इ० मताबक १ माह फाल्गुण

१. रुगन्तितैः—नामसं० ।

२. अपवर्जितम्—नामसं०, मिता० ।

३. ममार्थं—नामसं० ।

४. संज्ञिते—मिता०, नामसं० ।

५. प्रकीर्तितम्—व्यस० ।

शन १२३६ बाबूला ऐ आदालतेर हाकिम शीयुक्त अलियम नश-
टर साहेबेर बैठके ।

अप्राप्तव्यवहार हरनाथसिंहेर माता मुसम्मात छधोबिबि
तुहयत नेजामद्दिनेर माता मुसम्मात करिमन ओ अप्राप्तव्यव-
हार कालीचरणेर माता मुसम्मात पद्म ओ मुसम्मात वदामु
ओ मुसम्मात उदासी सायेलगणा । छधोबिबि उकिलगण मौलवी
गोलाम हजदानी ओ मुन्सी महम्मद आलि खा ओ मुसम्मातान्
करिमन ओ पत्न ओ उदाशीर उकिलगण सदासुकपण्डित ओ
लाला वस्तिहाल हाजिर आसिल । इ० १८२६ शालेर सितम्बर
मासेर २५ तारिखेर हुकुमानुसारे सायेलगणार सञ्जोयालसकल
ओ ताहार सम्पर्कीय अन्य कागजात ओ सालिसगणेर फयसला
ऐ तारिखेर विस्तिर्न रोषकारि ए आदालतेर हाकिम शीयुक्त
हालदन् बाबरट, राट्टर साहेबेर राय सम्बलित पढागेल ।
जेहेतुक कागचसकलेर द्वाराय योष हइवे छे ये सायेलगणा, ये
आपनादिगके मृत बाबु जगन्नाथसिंहेर स्त्री ओ उत्तराधिकारिणी
प्रकाश करितेछे, केह मृत बाबुर स्वजाति ओ केह भिन्न जाति,
ओ एवं ताहार मध्ये केह सन्तानबति बटे । अतएव ए मकदमार
सम्मान्ये चुडन्त हुकुम सादर हओनेर पूर्व हुकुम हइल ये मकद-
मार कागजात एइ रोषकारि नकल सहित एइ आदालतेर
पण्डितके समर्पण कराजाय—ये ताहार दृष्टे एइ सञ्जोयालेर जवाबे
ये सायेलगणार मध्ये मृत बाबुर कोन २ स्त्री ओ एवं ताहारदिगेर
गर्भ हइवे ये सन्तान हइयावे शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्ति पुत्र
ओ उत्तराधिकारि हय, ओ यद्यपि ऐ सायेलगणार मध्ये केह
किम्बा ताहादिगेर पुत्र ऐ मृत व्यक्ति उत्तराधिकारि हय, तबे
अन्य सायेलगणा ओ ताहादिगेर सन्तान वा ऐ मृत व्यक्ति—
त्यक्त वस्तु हइवे मरख ओ पोषणेर किछु सत्वा रखे कि ना—ये

१. छधोबिबि बिबि नेजामद्दिनेर माता मुसम्मात करिमन—एत छधोबान् पद ।

मृत व्यक्तिर याजिर^१ चलित शास्त्रानुसारे व्यवस्था लिखिया दाखिल करेण इति ।

श्रोज्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिभ्युवग्रलियमनसहरसादेवधर्माधिकरणलि-
लितैतद्भ्दीयकेवरवरीमासीपैकादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र-
मेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं यन्माचर्चमासीयच्चतुर्यदिनसम्ब-
न्धिवृहस्पतिवासरे षटिकैकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य
विधिष्य च यादृशचोपो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अयिनीनां मध्ये वदामूविधीनाम्नी मृतस्य बाहुजगन्नाथसिंहस्य पत्नी
भवति, शास्त्रे पत्नीशब्दस्य विवाहसंस्कृतस्त्रीयाचकत्वात्, प्रभुसमर्पित-
पत्रजातास्तर्गतविहितनेजामङ्गीनमातुः करिमननाम्न्या अप्राप्तव्यवहार-
कालीचरणमातुः पद्दुनाम्न्याक्षोशस्त्रीनाम्न्याश्च निवेदनपत्रेषांगरेजीशब्दप्र-
तिपाद्योन्निशदधिकाष्टादशशताब्दीयसितम्बरमासीयत्रयोविंशतिदिवसीयवृषा-
धिकृतकृतजयपत्रेण च वदामूविधीनाम्न्या मृतस्य बाहुजगन्नाथसिंह-
विवाहितपत्नीयस्त्रीत्वावगमात् । एवं वदामूविधीनाम्न्येवोत्तराधिकारि-
शयपि भवति, उत्तराधिकारित्वेनेदानीं तज्जातिव्यवहारानुसारेण) इत्त-
कृत्रिमपुत्राणां पुत्रपौत्राणां च मृतव्यक्तेरभावात् । एवं मृतस्य बाहुजगन्ना-
थसिंहस्य सजातीय विवाहित(स्त्री)वर्द्धोविधीनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहा-
रस्य हरनाथसिंहस्य शास्त्रोक्तद्वादशविधपुत्रान्तर्गतपौनर्भवपुत्रत्वेऽपि पौनर्भव-
पुत्रस्येदानीं व्यवहारभावात् शास्त्रनिषिद्धत्वाच्चोत्तराधिकारित्वं न सम्भ-
वति । एवं मित्रजातीयपद्दुनाम्नीगर्भोत्पन्नस्याप्राप्तव्यवहारस्य काली-
चरणस्य शास्त्रोक्तद्वादशविधपुत्रान्तर्गतस्य मृतस्य बाहुजगन्नाथसिंहस्य
शास्त्रानुसारेणवर्द्धपुत्रत्वेऽप्यर्थादपौत्रपुत्रत्वेऽपि तस्य च ह्यनियजाती-
यस्य मृतस्य बाहुजगन्नाथसिंहस्य त्यक्तपत्ने शास्त्रानुसारेणोत्तराधिकारित्वं न
सम्भवति । एवं चोपरिलिखितप्रकारेण वदामूविधीनाम्न्या मृतस्य बाहु-

जगन्नाथसिंहस्य पत्नीत्वे उत्तराधिकारित्वे च सति अन्यासामधिनीनां तार्ता-
सन्तानानां च तस्यैव मृतव्यक्तिविशेषस्य स्तुतपनाद् प्रा(सां)च्छादनस्य
किञ्चित्स्वत्वे अयं विशेषः—या सजातीयः विवादिता सद्बोधिवीनाम्नी,
सा या च भिन्नजातीया पद्दुनाम्नी च यदि मृतस्य वाजुजगन्नाथसिंहस्यो-
त्तराधिकारिणां प्रतिकूला व्यभिचारिणी वा न भवति तदा यावज्जीवं प्रासा-
च्छादनभागिनी भवति नान्यथा । अथ च सजातीयविवाहितलोगभोक्त-
नस्याप्राप्तव्यवहारस्य हरनापसिंहस्योपरिलिखितप्रकारेण पौनर्भवपुत्रस्य
मृतव्यक्त्युत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे प्रतिकूलत्वेऽपि योमययैव यावज्जीवं
प्रासाच्छादनभागित्वम्, भिन्नजातीयपद्दुनाम्नीलोगभोक्त-नस्याप्राप्तव्यवहारस्य
कालीचरणस्य मृतव्यक्त्युत्तराधिकारिणामनुकूलत्वे यावज्जीवं प्रासाच्छादन-
भागित्वं नान्यथा, यवनजातीयस्य विहितनेजामहीनस्य तन्मातुः करिमन-
नाम्न्याश्च रजकजातीयोदासीनाम्न्याश्च मृतव्यक्त्यस्तुतपनाद् प्रासाच्छादना-
धिकारानधिकारविधायकराज्ञाभावाद्—इति मृतस्य वाजुजगन्नाथसिंहस्य
क्षत्रियजातीयस्य प्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयदत्तकामीमांसादत्तकचन्द्रि-
कादत्तकदीपितदत्तकनिर्णयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थाः—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी विवाहसंस्कृता—इति मिताक्षरा (पृ० २१७) वीरमित्रोदयादि-
(वीमि० ख० पृ० ६२३) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरा (पृ० २१६)-

वीरमित्रोदया (पृ० ६२३) दिग्रन्थभूतपाशवस्त्वस्य (२१३५) वचनम् ॥ २ ॥

या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया ।

उत्पादयेत्पुनर्गत्वा स पौनर्भव उच्यते ॥—इति भजु (पृ० ३७५)-

वचनम् ॥ १ ॥

पौनर्भवस्तु पुत्रोऽक्षतायां क्षतायां वा पुनर्(र्भा) सवर्णादुत्पद्यः—इति
मिताक्षरादि (मि० पृ० २१३) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

१ सन्तानां—अप० ।

२ विवादिता—अप० ।

३ नान्नीयाव—अप० ।

४ सजातीयः—अप० ।

दत्तोरसेतरेषां तु पुत्रत्वेन परिग्रहः ।

इमान् धर्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्मनीषिणः ॥—इति दत्तकमीमांसा-

(पृ० ३०) दिग्रन्थधृतशौनकवचनाम् ॥ ५ ॥

निर्व्यास्या व्यवभिचारिण्यः प्रतिकूलास्तथैव च ॥—इति मिताक्षरा-

दिग्रन्थधृतयाशवल्क्य (२।१४२) वचनम् ॥ ६ ॥

गर्भव्यास्त्वपरे सुताः—इति धीरमित्रोदयादि (वीमिख० पृ० ६१४)

ग्रन्थधृतबृहस्पति (२०७) वचनम् ॥ ७ ॥

द्विजातिना दास्यामुत्पन्नः पितुरिच्छयाप्यंशं न लभते, नाप्यशं दूरतः,

एव । इत्यस्मिन् । किन्त्यनुकूलश्चेज्जीयनमात्रं लभते—इति मिताक्षरा-

(पृ० २१६) धीरमित्रोदयादि (पृ० ६२३) ग्रन्थलिखनम् ॥ ८ ॥

बन्धूनामेकधर्माणामेकस्यापि यदुच्यते ।

सर्वेषामेव तज्ज्ञेयमेकरूपा हि ते स्मृताः ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-

धृतौशनसवचनञ्चोक्तं ॥ ९ ॥

एतदब्दीयापरेलमासोपयद्द्विंशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे घटिकात्रया,

धिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जनयवितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६४—रोचकारि मिपिल आदालत देओयानि सदर तारिख,
२२ माह माइसन १८३० इ० मोताबक १० माह ज्यैष्ठ सन्त १९३७
बाङ्गला रोज शनिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत मान्त गिओ,
हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

बाबु माधोस्वहाय ओ वेनिस्वहाय,

अप्राप्तव्यवहारगणेर मोकार—

आपिलाएट ।

बाबु रामचरणलाल—

मोसम्मात बादामो प्रभृति—

रस्पाडएटान् ।

१. इमान्—मनीषिणः—दत्तकमीमांसाया नोक्तव्यते ।

२. मिताक्षरायां औशनससूत्रे च नोक्तव्यम् ।

आपिलाएटेर उकिल मुन्सि दादारवक्स हाजिर आइल । रस्पाडेएटगण ए आदालते एयालास शमार' पृष्ठे रसिद लिखिया, ओ स्वयं किन्वा उकिलेर द्वारा हाजिर हइल ना । अतएव एइ मकईमा वाहारदिगेर असाह्याते अथ आमार बैठके दवकार हइया नालिशि आरजि प्रभृति प्रविनशाल कोटेर कागजसकल फयशला पर्यन्त ओ ए आदालतेर आपिलेर मौजुबात् पढागेल । तत् परे आपिलाएटेर उकिल चारि टाकार मूल्येर एक केता फेरेस्तेर बराय' ईराजी अक्षर ओ एवारतेवइ'.....'कित्ता दस्तावेज लम्बरे दाखिल करिल, दृष्ट आसिल । जानागेल जे रस्पा-डण्टान्, सावेक मुइइगण, मृत बाबु द्वारिकादासेर त्यक्केर तृतीय अंश २५०००००० टाका देयाइया पाभोनेर जन्मे एइ एज-हारे नालिस करिलेक—ये मृत बाबुर दुइ छी । प्रथमा खीर गर्भ हइते, ये पे बाबुर साक्षाते मृत्यु हय, दुइ कन्या' ओ द्वितीयां छी, अर्थात् मुगम्मात् शितलबहुर गर्भ हइते एक कन्या जन्मे; ओ पे बा(बु)र मृत्युर (पर) मुगम्मात् शितलबहु आपन जीव-हरा पर्यन्त त्यक्त धन ओ कुटीसकलेर उपरे कावेज थाकिया देना ओ लेना ओ कुटीर कर्म जारि करिया मृत्यु हय; ओ वाहार मृत्युर पर चहार कन्या मुसम्मात् नछमन् ओ नछमनेर पुत्रगणेर मायोस्वहाय ओ वेणित्स्वहाय त्यक्त धन प्रभृतिरे दखिल हइयाछे । ये हेबुक शाख ओ देशेर व्यवहारमते मृत बाबुद्वारिकादासेर कन्यागणेर पुत्रगण व्यक्तित्व अन्य केहू उत्तराधिकारी नहे, ओ बाबुद्वारिकादासेर प्रथमा खीर गर्भज कन्यागणेर मध्ये एक कन्या आमि' मुसम्मात् बादासुर पुत्र जगन्नाथदास उत्तराधिकारी ओ हकदार बटे । अतएव नालिश करितेछि ।

१. एजलासेर हुसुमनांमार—इति साधोवान् पाठः ।

२. द्वाराव—इति साधोवान् पाठः ।

४. कपा—न्यप० ।

३. एवारतेवइ—इति साधोवान् पाठः ।

५. अर्थादित्ये ।

ओ जओयावेर खोलासा एइ ये यखन बाबुद्वारिकादास आपन जीवदशार मुद्दैयार विवाह दिया, ये देना छिल ताहा दिया, विदाय करियाछेन हिन्दु जातिर व्यवहार ओ शास्त्र मते मुद्दैगणेर किछु स्वत्व ओ हिस्सा दावि बाकि (रहि)ल ना, ओ यद्यपि मुद्दैगणेर किछु दावि थाकित बवे ऐ बाबुर जीवदशाते अथवा ताहार मृत्युर पर शीतलबहुर उपर, ये १५ बत्सर पर्यन्त कावेज ओ दखिल थाकिया, आपन दौहिन्नगणके उत्तराधिकारी ओ रासनसीन कराइया ओ तमलिकनामा लिखिया दियाछेन, आपत्ति करित । ओ जबाब मजबाब (ये)—मुसम्मात् शीतलबहु माधो-स्वहायके, ये रामचरणलाल, अर्थात् मुसम्मात् नछमिर पतिर बड पुत्र बटे, रासनसीन् करण असिद्ध, ओ शीतलबहुर मृत्युर पर तमलिकनामा प्रस्तुत हओन ओ मृत बाबुर सकल दौहिन्नगण तुल्यांशे स्वत्वाधिकारि थाकन सम्बलित बटे, ओ क्रोटेर हाकिम बारानसेर पाठशालार पण्डितगण हइते व्यवस्था लओन परे मुद्दैगणेर दावि डिगिरि करिलेन । यथा आपिलाएट एइ आपत्ति-सकले ये—ऐ व्यवस्था शास्त्र-बहिर्भूत बटे आपिल करिलेक, ओ प्रकाश करिलेक, ओ प्रकाश करे ये उपरेर लिखित हेतु मते शास्त्रानुसारे विरोधीय वस्तु उपर माधोस्वहाय ए वेनिस्वहायेर स्वत्वा साव्यस्थ ओ प्रामाण्य बटे ।

अतएव एइ आदालतेर, पण्डित हइते नीचेर सओयालेर जओयावे व्यवस्था लओन उचित बोध हइया हुकुम हइलो—ये एइ रोवकारि नकल ६५ लम्बरे प्रयित आशाल हेवानामा दस्तावेज सम्बलित, एइ आदालतेर पण्डितके अर्पण करा याय—ये बारानस देशेर चलित शास्त्रानुसारे नीचेर सओयालेर जबावे एक सप्ताहेर मध्ये व्यवस्था दाखिल करेन ।

सओल—यद्यपि आगरओयाला महाजन जाति हइते केइ एक स्त्री ओ ताहार गर्भज एक कन्या ओ प्रथमा स्त्री, ये पतिर साक्षाते मृत्यु हइबाछे, ताहार गर्भर दुइ कन्या ओ घनादि त्यक्त

वस्तु राक्षिया मरे, ओ ताहार पर द्वितीया स्त्री आपन जीवदशा
पर्यन्त पतिर त्यक्त वस्तुते दखिलकार थाकिया आपन गर्भज
कन्यार पुत्रगणके रासूनसिन् करिया ऐ समुदय वस्तुर तमलि,
कनामा य उदादिगके लिखिया दियाथाके तवे केवल द्वितीया
स्त्रीर तमलिक मते ताहार कन्यार पुत्रगण मृत व्यक्ति वस्तुर
कर्त्ता हइवेक, किम्बा प्रथमा स्त्रीर, ये पतिर साचाते मरियाछे,
कन्यागणेर पुत्रगणे कर्त्ता हइवेक, ओ मृत व्यक्ति द्वितीया स्त्रीर
आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके आपन पतिर अनुमति व्यतिव,
रासूनसीन करण, ओ स्त्रीलोक आपनार पतिर त्यक्त स्थावर,
किम्बा अस्थावर, सकल आपन गर्भज कन्यार पुत्रगणके तमलिक
करण शास्त्रानुसारे सिद्ध पडे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम् ।

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिभोयुतमान्तकिउदेनरिटरम्बलसहैवधर्माधि
करणलिखितैतद्वितीयमाहमासीयद्वाविंशतिदिनसम्बन्धिविचारपत्रान्तर्गतम्
अप्रतिरूपपत्रमेवं पञ्चपष्ठद्वाद्वितदानपत्रञ्च यजुनमासीयचतुर्दशदिनसम्ब
न्धिवन्द्वाराधरे पञ्चषट्काधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादराबोचो
जावस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि कश्चिदगरवाला महानो व्यक्तिविशेषो द्वितीयविवाहिता पत्नी
तद्गर्भनामेका कन्या तथा स्वामे मृतप्रथमपत्नीगर्भजकन्याद्वयं हेमरूप्य
कुप्यादिधनञ्च (स) रक्ष्य दिवं गतः तदनन्तरं सैव द्वितीया पत्नी स्वजीवदशा
पर्यन्तं पतित्यक्तसर्ववस्तुन्यायत्वं संप्राप्य स्वगर्भजकन्याया पुत्रं रापन
सीनमर्षादुक्तपुत्रं कृत्वा अथ च तस्या एव पुत्राय सर्ववस्तुनस्तमलिक
नामा अर्मात् दानपत्रं लिखित्वा दत्तवती स्यात्, तथापि मृतवदव्यक्तेर्द्विती
यपत्नीकृतदानपत्रानुसारेण तद्गर्भजकन्यापुत्रयोः केवलयोर्मृतव्यक्तेः प्रथम
पत्नीगर्भजकन्यापुत्रम(न)पेक्ष्य तस्मिन् सर्ववस्तुनि स्वामित्वं न सम्भवति
किन्तु सर्वेषामेव मृतव्यक्तेः प्रथमपत्नीगर्भजकन्यापुत्रस्य तथा द्वितीयपत्नी

गर्भजकन्यापुत्रयोस्तुत्याधिकारित्वात्, उत्तरोत्तराधिकारिकमनोधकशास्त्रे दो-
हित्रविरोधाश्रयणात् पत्यनुमतिव्यतिरेकेण स्त्रीकृतस्य कन्यापुत्रराजनर्त्तनक-
रणस्यार्थादत्तककरणस्य, तथा स्वपतित्यक्तस्यावरास्यावरसर्व्वस्तुनः स्वगर्भ-
जकन्यायाः पुत्रद्वयसम्प्रदानकदानपत्रकरणस्य च शास्त्रासम्मतत्वाच्च—इति ।
काशीप्रदेशचलितदत्तकमीमांसा-मिताक्षरा-वीरमित्रोदय-कृत्यकल्पतरु-विवाद-
चिन्तामणि-प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

दुहित्रमाये दोहित्रो धनभाक्—इति मिताक्षरा (पृ० २२९) वीरमि-
त्रोदय (पृ० ६६१) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

अपुत्रेण सुतः कार्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिरडोदकक्रियाहेतानामसङ्गीर्तनाय च—इति दत्तकमीमांसा-
(पृ० ५) धृतमनुवचनम् ॥ २ ॥

अपुत्रे(रो)ति पुंस्त्वश्रयणात् न स्त्रिया अधिकार इति गम्यते इति ।

अतएव वशिष्ठः—

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद्वा अन्यत्रानुज्ञानाद्भर्तुः—इति ।
दत्तकमीमांसा (पृ० ७) विवादचिन्तामणि-कल्पतरुप्रभृतिग्रन्थधृतवशिष्ठ-
वचनम् ॥ ३ ॥

अनेन विधवाया भर्तृनुज्ञानासम्भवादनधिकारो गम्यते—इति तत्प्रत्य-
(दमी० पृ० ७) लिखनम् ॥ ४ ॥

भारते (१६।४७।२४) स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं स्त्रियः कुर्युः पतिवित्तात् कथञ्चन ॥

अपहारमेच्छिकदानविक्रयादिकम् ।—इति विवादचिन्तामणि (पृ० ०

२३८) ग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

अपुत्रा शयनं मर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

सुञ्जीतामरणात् दान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति विवादरत्ना-

कर (पृ० ५११) कृत्यकल्पतरुवीरमित्रोदयादि (वीमि० पृ० ६२७) ग्रन्थ-

नाधृतकाल्यायन (कास्मि० पृ० ११२) वचनञ्चेति ॥ ६ ॥

१. विधिः पुत्रके वचनमिदं न प्राप्य । २. वचनमिदं मनुस्मृतौ नोपलभ्यते ।

जुनमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिगुरुवासरे घटिकाचतुष्टयाधिकयामद्वये
दर्शय मया व्यवस्था ।

श्रीज्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

६५—रोवकारि मिसिल आदालत देओनि सदर तारिख
२१ माह आगस्त सन १८३० ई० मतावक ६ माह भाद्र सन १२३७
बाह्रला रोज शनिवार पे आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलफ सुन्दर
रास साहेबेर बैठके ।

कन्दर्पसिंह मोफसेल—

आपिलाएट ।

मृत राजामोहनलालखार खीगण राणी सुगन्धलता ओ राणी
रस्पाडएटान् ।

बङ्गलताप्रभृति—

आपिलाएटेर उकिलगण मुनसि ददारवक्स् औ मौलवि करम
होसेन ओ स्वयं आपिलाएट ओ रस्पाडएटगणेर उकिलगण
मुनसि होसेनआलि ओ मुनसि गोलामबतुल ओ सदासुकपरिष्ठित
हाजिर आसिल । ए मर्दमा एलाका फलिकातार प्रबिनशाल
कोर्टेर रिटरण पीचन मते ए मासेर १४ तारिखे आमार निकट
पुनराय उपस्थित हइया पे तारिखेर रोवकारिर लिखित कागज-
सकल पढागिया स्थिति छिल, अछ पुनराय रोवकार हइया
प्रबिनशाल कोर्ट आदालतेर बाकी कागजात् ओ ए आदालते
दाखिल हओया कागजसकल पढागेल । ए मर्दमार कागज-
सकल ओ मोहनलालखौ आपिलाएट ओ राणी शिरोमणि रस्पा-
डएटेर ६५८ ल० मर्दमा ओ रूपचरणमहापात्र मोफसेल आपि-
लाएट आनन्दलालखौपर भाता मोहनलालखौ रस्पाडएटेर ६५८
ल० मर्दमा वावत् ए आदालतेर फयशलासकलेर द्वारा आमार
सान्यस्त हइल—ये राजा अजितसिंह ओ राणी शिरोमणि वंशे

दायभागशास्त्र चलित वटे, ओ ऐ शास्त्र ऐ फयशलासकलेर अनुसारै राजा अजितसिंहेर छी राखि शिरोमणिर मृत्युर पर, ये ऐ राजार त्यक्त जमिदारिर उपर उत्तराधिकारि प्रकारे दाखिलकार छिल, राजा अजितसिंहेर मातुलपुत्रगण उहार बलवान उत्तराधिकारि ओ उत्तराधि(कार)प्रकारे उहार मतरुकार स्वत्वाधिकार वटे। ओ इहा येओ स्पष्ट—ये मोहनलालखाँएर भ्राता आनन्दलालखाँर नामिक राखि शिरोमणिर लिखिया हेओया हेवानामा, ताहाते राजा अजितसिंहेर उत्तराधिकारिगणेर अनुमति ना पाओने असिद्ध ओ मिथ्या हइयाछे, ओ रूपचरण आपिलाष्ट ओ मोहनलालखाँ रम्पाडण्टेर मकईमाय, ये आपिलाष्ट आपनाके लक्ष्मणसिंहेर भ्राता श्यामसिंहेर सन्तान करार दिया विरोधीय जमिदारिर कारख नालिप करियाछिल। दाखिल हओया व्यवस्था द्वाराय बाहेर ये राखि शिरोमणिर मृत्युर पर यदि राजा अजितसिंहेर कोन निकटस्थ उत्तराधिकारि ना थाकित, राजा अजितसिंहेर मतरुकाते रूपचरणगहापात्रेर उत्तराधिकारि स्वत्व हइत। ओ एइ क्षण कन्दर्पसिंह लक्ष्मणसिंहके राजा अजितसिंहेर आदिपुरुष ओ आपनाके ओ सप्तमपुरुषीय स्वगोत्र धलिपा उत्तराधिकारिरूपे विरोधीय वस्तु दाविदार वटे, ओ आपिलाष्टेर दाखिल करा कुरसिनामा ओ रूपचरणगहापात्र आपिलाष्टेर मकईमार आमलि ११८८ शालेर भाद्रमासेर १५ तारिखेर लिखित राखि शिरोमणिर दाखिल करा कुरसिनामा ओ मोहनलालखाँ आपिलाष्ट राखि शिरोमणि रम्पाडण्टेर मकईमार दाखिल हओया ऐ राखिर दरखास्तेर नकल द्वाराय जाना याइतेछे ये कन्दर्पसिंह आपिलाष्ट ओ लक्ष्मणसिंह आदिपुरुषेर सहित नवम पुरुष ओ अजितसिंह लक्ष्मणसिंहेर सहित सप्तम पुरुष वटे। ओ दुइ व्यक्तिर तपसिल एइ ये।

आदि पुरुष लक्ष्मणसिंह

तस्य पुत्र पुरुषोत्तम

ज्येष्ठ पुत्र संप्रसा
तस्य पुत्र रघुनाथ
तस्य पुत्र रामसिंह
तस्य पुत्र यशोमन्तसिंह
तस्य पुत्र अजितसिंह

प्रतापनारायणमहापात्र
द्वितीय तस्य पुत्र सुबुद्धि
तस्य पुत्र दुर्गोधन
तस्य पुत्र रसिक
तस्य पुत्र वैष्णवचरण
तस्य पुत्र समिर
तस्य पुत्र कन्दर्पसिंह

ओ विरोधीय वस्तु इल्लिकार राजा मोहनलालखा राजा
अजितसिंह सफल मातुलपुत्रगणेर लिखिया देया नादायि द्वाराय
आपनाके विरोधीय जमिदारि स्वस्वाधिकारि करार देय ।
अतएव शास्त्र द्वाराय एइ कथार सहकिकात् ये मातुलपुत्रगणेर
लिखिया देओया नादायि मुहै अर्थात् आपिलाष्टर दाविर निपे-
धीय हइते पारे किना, आवश्यक बोध हइया, हुकुम हइल ये एइ
रोवकारि नकल रूपचरणमहापात्र आपिलाष्ट मोहनलालखा
रखाइए ओ मोहनलालखा आपिलाष्ट राणि शिरोमणि रखा-
इए मकहमार दाखिल हओया व्यवस्थासकल सहित एइ
हुकुमे ए आदालतेर पण्डितेर हाओलात करा थाय ये साहार दए
राजा अजितसिंह वंशेर चलित दायभागशाखानुसारे नीचेर
लिखित सओलेर जवाब सओयाल पाओनेर तारिख हइते
चारि दिवसेर मध्ये दाखिल करे ।

सओया(ल) — ये व्यवस्थासकल ओ ये मकहमासकलेर

बावत् ए आदालतेर फयशलासकलेर द्वाराय साव्यस्थ आछे
ये राजा अजितसिंह वंशेर चलित दायभागशाखानुसारे राजा
अजितसिंह स्त्री राणी शिरोमणिर मृत्युर पर ये राजा ओ राणिर
स्वच्छ विरोधीय वस्तु राजा अजितसिंह मातुलपुत्रगणके, ये
उदार बलवान् उत्तराधिकारि बटे, अशिवेक ओ साहारा साहार
स्वत्वाधिकारि बटे, ओ उहादिगेर समीक्षे सगोत्र उत्तराधिकारि
हइवेक ना, ओ कागजातेर द्वाराय साव्यस्थ ये ए आदालतेर

पूर्व पण्डितगणेर व्यवस्थासकल ओ फयशलासकलेर द्वाराय राखि शिरोमणिर मृत्युर पर मातुलपुत्रगण आपन विरोधीय वस्तुर स्वत्वाधिकार थाकनेओ, विरोधीय वस्तुके मोहनलालखाँयर दखले छाडिया दिया, ताहार नादावि लिखिया दियाछे। अतएव जिज्ञासा थाय ये नादावि लिखिया देखोनिया मातुलपुत्रगण, ये राखी शिरोमणिर मृत्युर पर राजा अजितसिंहेर बलवान् उत्तराधिकारी ओ विरोधीय जमिदारिर स्वत्वाधिकारि बटे, अजितसिंहेर अतिपुद्गप्रपितामहेर भ्रातार सन्तान, ये स्वगोत्र बटे, थाकनेओ ऐ सकल वस्तु हइते आपनादिगेर एकारे किछु ना राखिया, किम्बा श्राद्ध ओ आपनादिगेर निर्वाहार्थ ताहा हइते किछु राखिया, मोहनलालखाँके, ये भिन्न व्यक्ति बटे, विरोधीय वस्तुर नादावि लिखिया देखोयार जमला राखे कि ना, ओ ऐ नादावि आपलाएटेर स्वत्वेर ये स्वगोत्र बटे अपचय कारक हइवेक कि ना इति ।

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिभूतशालकमुन्दरासरादेवधर्माधिकरणलिखितखरामाष्टेन्दुमिताब्दीयागस्तमासीयसप्तविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमेवमेतद्विवादिनिविश्रपत्रजातान्तर्गतत्रत्यपूर्वधर्माधिकरणलिखितद्दीन्दष्टेन्दुमिताब्दीयजनवरीमासीमद्वाविंशतिदिवसीयविचारपत्रसंवलितव्यवस्थापत्रद्वयञ्च यदेतदब्दीयागस्तमासीयसप्तविंशतिदिनसम्यन्धिषुक्रवाचरे नयमिनटाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुतारेणोत्तरं लिख्यते ।

रात्रिशिरोमण्या मरणोत्तरं राशोऽजितसिंहस्य बलवदुत्तराधिकारिबिधादास्पदोभूतसराजकरस्थावरस्यत्याधिकार्यनभियोगपत्रलेखकमातुलपुत्रकर्तृकाजितसिंहस्य सगोत्रपुद्गप्रपितामहभ्रातृधुत्रसन्ताने वर्तमान एव सति तस्मात् सराजकरस्थावरत् स्वयत्तं किञ्चिदप्यरक्षित्वाश्रया आदाय तथा स्वीयनिर्वाहार्थं तस्मादेवसराजकरस्थावरात् किञ्चिद्रक्षित्वोदासीनमोहनलालखाँसम्प्रदानकविधादास्पदोभूतवस्वनभियोगपत्रदाने यद्यपि तस्मात्सराजकर-

स्थावरात् किञ्चिदप्यरक्षित्वेति^१ कल्पे शास्त्रासिद्धवृत्तिलोपात्मकत्वेन
मृतधनिव्यक्तेरजितसिंहस्य आद्यार्थमर्हस्यारक्षणत्वेन तथान्वयसर्वप्रयुक्त-
निषिद्धसर्वस्वदानत्वेन लोकविद्वत्त्वादिना च सत्यसत्यपि वाऽधिन्येतादृश-
सराजकरस्थावरविषयकानभियोगपत्रदानस्य शास्त्रानुसारित्वं नास्ति, तथापि
राज्ञाऽजितसिंहवत्चलितदायभागानुसारेण तु तैर्ज्ञानानुसारेण स्वेच्छापूर्वक-
सम्मत्या दानासिद्धिसाधनबलभीतिच्छलादिविरहेण^२ पुत्रादिसम्मत्या च स-
त्यपि राज्ञोऽजितसिंहस्य सगोत्रे वृद्धप्रपितामहभ्रातृपुत्रसन्ताने उदासीन-
मोहनलालखोऽसम्प्रदानकैतादृशसराजकरस्थावरविषयकमप्यनभियोगपत्रं दातुं
शक्यते, राज्ञोऽजितसिंहस्य बलवदुत्तराधिकारिमातुलपुत्राणां राज्ञोऽजि-
तसिंहस्य वृद्धप्रपितामहभ्रातृपुत्रसन्तानस्यार्थिन उदासीनसदृशत्वेन तस्य
तन्मातुलपुत्रकर्तृकानभियोगपत्रदाने प्रतिबन्धकत्वात्, तादृशस्य च वि-
धादाश्चर्यभूतसराजकरस्थावरस्य तेषां तन्मातुलपुत्राणां दायरूपत्वादाय-
रूपेण तस्मिन् स्वाच्छन्दस्य लोकप्रसिद्धत्वात् । परन्तु एतच्छास्त्रानुसारेण
दातुर्हो भविष्यति । तस्मात् किञ्चिदक्षित्वेति कल्पे आद्यार्थं तत्सराजकर-
स्थावरस्यादं तथा तस्मादेव स्थावरात् स्वपोष्यवर्गमरण्याहं धनं रक्षित्वा तु
ज्ञानानुसारेण स्वेच्छापूर्वकसम्मत्या बलभीतिच्छलादिविरहत्वेन पुत्रादि-
सम्मत्या च स्वाच्छन्द्येनोदासीनमोहनलालखोऽसम्प्रदानकमनभियोगपत्रं दातुं
शक्यते । यदि च किञ्चिदित्यनेन मानवर्द्धनमात्रं रक्षितं तथापि पूर्वो-
क्तज्ञानानुसारेणेत्यादितदानरीत्यान्यसम्प्रदानकमपि सदातुं शक्यते; परन्त्ये-
तद्वक्ष्यस्याप्यरक्षणसमत्वेन दातुर्हो भविष्यति । राज्ञोऽजितसिंहस्य बल-
वदुत्तराधिकारिमातुलपुत्रकर्तृकाजितसिंहस्य स्वकस्वदायरूपसराजकरस्थाव-
रविषयकोदासीनमोहनलालखोऽसम्प्रदानकानभियोगपत्रदानेनाजितसिंहस्य स-
गोत्रवृद्धप्रपितामहभ्रातृपुत्रसन्तानस्यार्थिनोऽपचयो नास्ति, तत्पूर्वमुपचया-
भावात्तन्मातुलपुत्रसत्त्वे सगोत्रस्य तस्य स्वत्वाभावात्—इति तद्वत्चलित-
दायभागदिप्रन्यानुसारिणी व्यवस्था ।

१ अथे सति—अप० ।

२ अक्षित्वेति—अप० ।

३ अप०—अप० ।

४ पुत्रगमादि—अप० ।

अत्र प्रमाणम्—

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—इति (दामा० २४)मनुवचनम् ॥ १ ॥

समुत्पन्नादनादङ्गं तदर्थं स्थापयेत्युक्तम् ।

मासंपाणमासिके आङ्गे वार्षिके च प्रयत्नतः ॥—इति दायभाग(पृ० २०६।२१०)धृतबृहस्पति(पृ० २१६)वचनम् ॥ २ ॥

निःक्षेपः पुत्रदारांश्च सर्वस्वञ्चान्वये सति ।

आपत्त्वपि हि कष्टासु वर्तमानेन देहिना ॥

अदेयान्याहुराचार्याः—इत्यादि विवादमङ्गार्षव(पृ० १-पृ० ४२१ ख)धृतनारद(नाल्मपृ० १३७)वचनम् ॥ ३ ॥

बलादत्तं बलादमुक्तं बलाद् यच्चापि लेखितम् ।

सर्वान् बलकृतानर्थानकृतान्मनुरवधीत् ॥—इति मनु(पृ० १६८)वचनम् ॥ ४ ॥

स्वप्नामज्ञातिसामन्तदायादानुमतेन च ।

हिरण्योदकदानेन पद्मिर्गच्छति मेदिनी ।—इति दायतत्त्व(पृ० १७६)धृतमुनिवचनम् ॥ ५ ॥

पूर्वस्यामिसम्बन्धाधीनं तत्स्याभ्योपरमे यत्र (द्रव्ये) स्वत्वं तत्र निरुद्धो दायशब्दः—इति दायभाग(पृ० ५)अन्धलिखनम् ॥ ६ ॥

मरणं पोध्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।

नरकं पीडने तस्य तस्माद् बलेन तं मरेत् ॥—इति दायभाग(पृ० ३३)अन्यधृतमनुवचनम् (?) ॥ ७ ॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारतत्त्व(पृ० ४)धृतबृहस्पति(पृ० १६)वचनम् ॥ ८ ॥

१, व्यासवचनमिति इतीउचनमिति वा पठनीयम् ।—तत्र च चतुर्थे पादे—वृत्तिदान न सिद्ध्यति—इति इमीउपाठः, न दानं न च विक्रयः—इति व्यासशब्दः । २, तदर्थे—दामा० ।

३, चास्य—दामा० ।

स्यभागात् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्व्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्तेस्वधनस्य वै ॥—इति दायभागः (पृ० ३५)-
धृतनारदः नामसं० पृ० १५७) वचनम् ॥ ६ ॥

ध्यासवचनं तु (स्वामित्वेन दुष्टं च पुरुषगोचरविक्रयदानादिना)
कुदुम्यविरोधादधर्मभागिताज्ञापनाय निषेधरूपं न तु विक्रयाद्यनिष-
त्यर्थम्—इति तत्करणाद्विध्यतिक्रमो भवति, न तु दानाद्यनिमित्तः—
इति च दायभागः (पृ० ३४-३५) ग्रन्थलिखनम् ॥ १० ॥

तदभावे यानुलपुत्रगोत्राणां क्रमेणाधिकारः तदभावे चाधस्तनसकु-
ल्यानां धनिमोग्यलेपदातृणां प्रतिप्रणष्टप्रमृतिपुरुषप्रयाणां क्रमेणा-
धिकारः । तदभावे पुनरुद्धर्ध्वतनसकुल्यानां धनिदेयलेपदातृणां हृदमपि
तामहादिसन्ततीनामासत्तिक्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-
दायभागटीकाग्रन्थः (पृ० २१८) लिखनञ्चेति ।

शेतम्बरमासीयस्तदिनसम्बन्धिभौमवासरे साद्व्यटिक्रयाधिक्रयानद्वये
दत्तेवं मया व्यवस्था ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६६—सञ्जोयान्त आदालत देञ्जोयानी कमिसनरी आतराक
मुसरफ जिला रङ्गपूर वनामे पण्डितान् सहर देञ्जोयानी आदालत
सन् १८३० इरेजी तारिख १० जुन मोताबक १२२७ बाङ्गला
तारिख २६ ज्यैष्ठ ।

विष्णुराम

मुद्र

पापद

धीरचन्द्रवहुया जमिदार

मुहाम्मते

परगणे धूण्या ओ गयरह

दाखि १५०० टाका

१. धनिदेयलेपदातृणां पुनःप्रतिभन्—म्य० ।

चावन् लओयावाद

फउरि^१ परगणार उपस्वत्वे

मुदै मजकुर आपन मातुल मेघनारायण चौधुरि विक्तेर पर दखिलकार थाका, आर मुदायाले परगणा मजकुरेर कएक मौजा जबरदस्तीते दखल करा पजहारे उपरेर लिखित भयलग मजकुरेर दयाते मुदायालेर नामे नालिष करे । तज्जिजूकालीन जाना-गियाछे—ये शिवनारायण नामे एक व्यक्ति परगणे लओयावाद फओरि जमिदार छिल । ताहार मृत्यु हओयार पर तस्य पुत्र शम्भुनारायण आपन पितृविकेते दखिलकार हइया निःसन्तान रूपे मृत्यु हय । ए प्रयुक्त शिवनारायणेर दीहित्र मेघनारायण ऐ स्थावर विक्तेर अधिकारी हइयाछिल । कथक दिवस पर से निःसन्तान मृत्यु हइयाछे । मुदै मेघनारायण मजकुरेर भागिनेय हय । से मते सओयाल करा जाइतेछे—ये मेघनारायण निःसन्तान मृत्यु हओयाते शिवनारायणेर स्थावर वस्तुते, ये ताहार पुत्र अधिकारी हइया परे मेघनारायणेर हस्तगत हय, शास्त्रानुसारे मुदै ताहा पाओयार स्वत्ववान् हय कि ना । यदि मुदै के ना अशे एवं मेघनारायणेर अथवा ताहार पूर्वधिकारीर उत्तराधिकारी केह नाथाके, तबै ऐ स्थावर वस्तु काहाके अशिते पादे इति ।

प्रभुसमर्पितप्रभञ्जं यदेतदन्दीपज्जुलाइमाओवपञ्चमदिनसम्बन्धितोम-
यासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशचोषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यपि शिवनारायणस्य मृतस्य तत्पुत्रस्य सम्बन्धितस्थायवस्तुनि शिव-
नारायणस्य पुत्रः शम्भुनारायण उत्तराधिकारित्वेनाधिकारं संशय निःसन्तान
एव स्मरतः, तदनन्तरं तद्भागिनेयो मेघनारायणस्तदेव वस्तु हस्तगतं
(६)रूपे निःसन्तानो मृतस्तथापि तन्मरणोत्तरं बह्वदेशचलितशास्त्रानुसारे-
स्याप्ययं मेघनारायणस्य भागिनेय एव तद्ग्रहणे स्वत्ववान् भवति—यत उ-
रिलिखितशास्त्रे मृतस्य पुत्रानुपपन्नस्य उत्तराधिकार्यभावे तत्पुत्रपुत्रे

पितृदौहित्रस्यार्थान्मृतव्यक्तेर्भांगिनेयस्याधिकारोऽभिव्यक्तोऽतः सुतरां मृतव्य-
क्तेस्तद्व्यतिरिक्तोऽत्तराधिकारिसामान्याभावस्य तथा मृतव्यक्तेः पूर्वाधिका-
रिणोऽर्थान्छम्भुनारायणस्योत्तराधिकारिसामान्याभावस्य च सद्भावात्-इति
वङ्गदेशचलितदायभागध्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायक्रमसंग्रहवि-
वांशभङ्गार्णवविवादाण्यवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अथ प्रमाणम्—

किन्तु पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्राधिकारो बोद्धव्यः—

इति दायभागः (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

तदभावे पितृदौहित्रः—इति ध्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागः (पृ० २१८)
ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

आतृपौत्रस्याभावे पितृदौहित्रस्याधिकारः, धनिपित्रादिभ्यपिण्डदा-
तृत्वात्—इति दायक्रमसंग्रहादि (पृ० ७) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ३ ॥

अगस्तमासीत्यदशमदिनसम्बन्धिभौमवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये
दत्तैर्धनं मया व्यवस्था इति—

श्रीश्रीर्जपतितराम्

श्रीदीरानन्दमिश्रेण

सदर देशोयानि आदासतेर पण्डितेर प्रति प्रभः—

६७—सञ्जोयातः—एक व्यक्ति युगि परामाणिकी मर्यादार
कउडिद दावि करे । असपव यमत प्रकार मर्यादार कउडि
देया ओ लओया शाखसम्मत् कि; उहादिगेर जातिर ओ
समाजस्य ओफेरा स्वेच्छाते विभाग हय-इहार प्रत्युत्तर ययाराख
लिखिवा इति ।

अथ कश्चिदयोगी व्यक्तिविशेषः परामाणिकीमर्यादासम्बन्धिकपरिहा-
यामेकद्रव्यविषयकस्वत्वामिषोर्धं कुर्यात्, तत्र यद्यपि विशेषण युगोत्प-
न्नम् मर्यादाद्रव्यस्य दानग्रहणे कुत्रापि शास्त्रे न लिखिते तथापि तत्र यदि
तज्जातीयै राणा वा केनचित् संविद्विशेषणार्थात् समूहैः कैश्चिद्वा कृतसन्नेतेन

समूहकार्यचिन्तनाद्यर्थः प्रधानत्वेन व्यवस्थाप्य वृत्तिरूपकल्पिता, अथवेवं तज्जातीयानां पारम्परिकाचारोपि वा भवेत्, अथवा तज्जातीयानां तच्छ्रेणीनां वा धर्म्मो भवेत्, तदेतादृशद्रव्यस्य दानादानयोस्तज्जातितच्छ्रेणितत्समूहस्य वा व्यवहारसिद्धत्वात् तद्वानादानयोर्निष्पत्त्युद्भवमेव शास्त्रसिद्धत्वम्, यतो यच्छ्रेणीनां यज्जातीयानां वा यथापूर्वपरव्यवहारस्तदनुसारेण यस्मिन् विषये विशेषतः शास्त्राज्ञा नास्ति तस्मिन् विषये तच्छ्रेणीनां तज्जातीयानां वा यथा पूर्वापरव्यवहारस्तदनुसारेणैव निरर्थस्य शास्त्रसम्मतत्वात्— इति यद्देशचक्षितमनुदायभागव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविद्यादचिन्तामणिविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

परन्वैतद्विवादमूलन्तु वृत्तिरूपमाश्रिते समकुष्णनयनयोः सहोदरत्वम्, तथा च प्रमुसमर्पितैतद्विवादानिविष्टपञ्चातान्तर्गतार्थिप्रत्यर्थिसम्मत-साक्षिभाषापञ्चान्वृत्तिहोऽपि कश्चिदासीत्, अनयोरर्थाद्वामकुष्णनयनयोर्भातेति नावगम्यत इति तु मिभाषनोपम—

अथ प्रमाणम्—

तथा च यस्य कस्यचिद् गणस्य वा संवित् सैव प्रतिपाल्या । तेन नापितादीनां प्रामाणिकत्वेन स्थातस्य यचनातिक्रमे दोषो व्यवहारसिद्धः सत्तच्छ्रुते—इति विवादभङ्गार्थवग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

यो धर्म्मः कर्म्म चेवैपामुपस्थानविधिश्च यः ।

यच्चैषां वृत्त्युपादानमनुमन्येत तत्तथा ॥ (नास्मृ० १३।३)

धर्म्मः पारम्परिकाचारः कर्म्म जीवनानुकूलोचितव्यापारः वृत्त्युपादानमुपादीयमाना वृत्तिः—इति (विवाद) रत्नाकरः (पृ० १७६) ।

अनुमन्येत राज्ञा इति शेषः । तथा चैषां पारम्परिकाचारादीन् कोऽप्यन्यथाकर्तुं न शक्नुयात् इत्यभिहितम्—इति च तदग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपादयेत् ॥—इति मनु (पृ०

२८१) वचनम् ॥ ३ ॥

व्यवहारोऽपि बलवान् धर्मस्तेनावहीयते—इति व्यवहारमातृका-
(पृ० २८२) व्यवहारतत्त्वादि (पृ० ४) ग्रन्थधृतनारद नामसं० पृ० ८)
वचनम् ॥ ४ ॥

केवलं शासमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ।
युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारमातृका-
(पृ० २८२) औरमित्रोदयादि (बीमि० ख-१८) ग्रन्थधृतबृहस्पति (पृ० १६)-
वचनम् ॥ ५ ॥

युक्तिलोकव्यवहारः—इति व्यवहारमातृका (पृ० २८२) व्यवहार-
तत्त्व (पृ० ४) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीहीनानन्दमिश्रेण

४२—लं खास आपिल । सन १८२६ शाल ई० सदर देओ-
यानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओल ।

६८—यद्यपि कोन व्यक्ति दुइ पुत्र राखिया लोकान्तर हय,
आर ऐ दुइ पुत्रेर मध्ये एक जन महाव्याधिग्रस्त ओ अपुत्रक,
ओ द्वितीय जन सुस्थशरीर थाके, तवे पितार धने ऐ दुइ पुत्र अधि-
कारी हय कि ना । आर ऐ महाव्याधिग्रस्त व्यक्ति आपन अंशेर
दान विक्रयेर समता राखे कि ना । शास्त्रानुसारे इहार व्यवस्था
लिखिया । सन १८३० शाल, तारिख १० जुन ।

प्रमुखमर्थितप्रभपत्रं यदेतदब्दीयशुलाहमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिगुरु-
वासरे पटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशघोषो जात-
स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः पुत्रद्वयं (स) रक्ष्य स्वर्गलोकमगमत् १ एक-
श्च तयोर्द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये एको महाव्याधिग्रस्तः, अथ च निःसन्तानो द्विती-
यश्च स्वस्थशरीरो भवेत् तथापि पितृत्यक्तधने निरुपाधिकपुत्र एक एवाधि-
कारी, नहि महाव्याधिग्रस्तशरीरोऽपि, यतः शास्त्रेऽन्वत्पदगुत्वज्ञीवत्वा-

दिनानोपाध्यायतनोः भक्तान्छादनातिरेकेण धनांशाभावप्रतिपादनात् ।
 सिद्धे चांशाभावे सुतयं तद्दानविक्रययोः-क्षमताभावः-इति वङ्गदेशचलित-
 मनुदायभागश्लोकप्रवृत्तकालङ्कारकृतदायभागटीकादायरूपसंग्रहविवादभङ्गा-
 र्थ्यादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

स्त्रीवोऽथ पतितस्तज्जः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्धोऽचिकित्सरोगाद्या मर्त्तव्याः स्युर्निरंशकाः ॥—इति दायभागदि-

(पृ० १०२)ग्रन्थधृतगात्रवल्गव्य (२१४०)वचनम् ॥ १ ॥

अनंशौ स्त्रीवपतिती जात्यन्धवधिरौ तथा ।

उन्मत्तजडमूकाश्च ये च केचिन्निरिन्द्रियाः ॥—इति मनु(६।२०१)

वचनम् ॥ २ ॥

मृते पितरि न स्त्रीयकुटुम्ब्युन्मत्तजडान्धकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायाराभागिनः ॥

तेषां पतितयज्जैम्यो मङ्गवस्त्रं प्रदीयते ॥—इति दायभाग (पृ० १०२)

विवादभङ्गार्थं (२ विवा० पृ० २११ ख) दायतत्त्वादिग्रन्थं दात० पृ०
 १७२)धृतदेवलवचनम् ॥ ३ ॥

अतीतव्यवहारान् आसाच्छादनेर्विमुक्त्युः ।

अन्धजडस्त्रीयव्यसनिव्याधितादीश्चाकर्मिणः । पतिततज्जातयज्जैम्य-

इति दायभागदि(दाभा० पृ० १०२)ग्रन्थधृतबौधायवचनञ्चेति ॥४॥

आगस्तमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे षट्कत्रयाधिकयामद्वये
 वत्तेयं मया व्यवस्था—

श्रीज्जयतितराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओयाल—

६६—कालीप्रसादरायघोपाल-आपिलाष्ट-फोर्ट कालिकाता

दुर्गाप्रसाद-रस्पाडगट-मर्छसाहेव—

७—लम्बर । आपिल सन १८२७ साल—

यद्यपि एक व्यक्ति एक स्त्री ओ एक पुत्र ओ एक कन्या राक्षिया मृत्यु हय, आर ऐ पुत्र आपन माता ओ भगिनीर संमुखे अविवाहित लोकान्तर हय; ताहार पर ऐ कन्यार एक पुत्र जन्मिया आपन मातामही ओ मातार जीवदशाय ओ महाव्याधि ओ यद्मा कारा प्रस्त हइया, एक स्त्री ओ दुइ कन्या राक्षिया, आपन मातार संमुखे मृत्यु हय । अतएव ऐ व्यक्ति ये ताहार लोकान्तर हइले, ताहार पुत्र आपन मातार संमुखे लोकान्तर(र) हय, ताहार पितार उत्तराधिकारिरा थाकिते उहार स्थावरास्थावर धन काहाके अरौ, एवं दौहित्रेर स्त्री ताहा पत्तनि पुरते विक्रय करिते पारे कि ना-शाखानुसारे इहार प्रत्युत्तर भाषाय यह सञ्चोयालेर पारौ लिखिवेन-इति । सन १८१० साल तारिख १५ जुलाई ।

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रं यदेतदन्दीयागस्तमासीयपञ्चमदिनसम्बन्धिगुरुवा-
सरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-
दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषः एको पत्नीमेकं पुत्रं कन्याञ्चैकां (६) रक्षयैः
लोकमत्यजत्, अथ च स बालोऽपि मातृभगिन्योरग्नेऽविवाहित एव स्वलोक-
मगमत्, तदनन्तरञ्च तस्याः कन्यायाः पुत्रो भूत्वा स्वमातामहीमात्रोर्बाव-
इत्यावधि महाव्याधियद्माकासप्रस्तः^१ सन्नेव स्वमातृसमक्षमेकां पत्नीं द्वे च
कन्ये (६) रक्षय मृतः स्यात्, तथाप्यविवाहितस्य मृतस्य तस्य मातृसंकान्ते
स्थावरास्थावरधने, तस्यां मातरि मृतायां स्वमातामहीवर्तमानावधि वा
कुष्ठयद्माकासप्रस्तस्य पितृदौहित्रस्याधिकारो नास्ति, शास्त्रेऽचिकित्स्य-
रोगिणोऽनधिकारबोधनात्, यद्माकासादिरोगोऽचिकित्स्यत्वस्यायुर्वेदविद-
त्वात्, चिकित्सयाप्यनुपशमेन मरणपर्यन्तस्थापित्वाच, शास्त्रे कुष्ठिनोऽप्य-
नधिकारबोधनात्, कुष्ठयद्माकासरोगप्रस्तस्य ■ सुवयमनधिकारः ।
यदन्यतरसत्त्वे अनधिकारस्तत्समुदायसत्त्वेऽनधिकारस्य लोकव्यवहारप्रसिद्ध-

त्वात् । एवञ्च सति तत्त्वत्त्वस्याप्यसत्त्वसमत्वाद्दोहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पिता-
महसन्ताना(ना)मेवाधिकारो, न तु मगिन्यादीनाम् इति । मातुलघनेऽधि-
कारिणस्तु पत्न्याः कीदृशेऽपि पतिमातुलघनस्य विक्रये क्षमता नास्ति, पति-
सत्त्वेऽसत्त्वेऽपि वा; स्वसंक्रान्तपतिस्यावरस्यापि स्त्रीकर्तृकविक्रयनिषेधोऽस्ति
यतोऽतः सुतरां पत्न्युपेक्षनेऽनधिकारः, तस्यास्तद्धने पतिद्वारमन्तरेणाधि-
कारित्वप्रतिपादकस्यास्वाभावेनानधिकारित्वनिश्चयात्, अनधिकारिणो विक्रया-
सामर्प्यस्य लोकप्रसिद्धत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागविवादमहार्णव-
दायतत्त्वव्यवहारमातृकादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

ह्रीवोऽथ पतितस्तजः पङ्गुर्गुल्मत्तको जडः ।

अन्वोऽचिकित्स्यरोगात्तो मर्त्यव्याः स्युर्निर्गुणाः ॥—इति दायभा-
गादि(दाभ पृ० १०२)ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(पृ० २२६)वचनम् ॥१॥

अचिकित्स्यरोगः अत्र तत्समाधेययक्ष्मादिरोगप्रस्तः ।—इति मिता-
क्षरा(पृ० २२७)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

महाराजं महाक्षीणमतीव(च) निपीडितम् ।

शूलशुष्कोदरं चैव यक्ष्मिणं परिवर्जयेत् ॥—इति आयुर्वेदीयवचनम् ॥१॥

मृते पितरि न ह्रीवकुष्ठयुग्मतमडाभ्यकाः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायंशमार्गिनः ॥—इति दायभागादि-
(पृ० १०२)ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ ४ ॥

किन्तु पितुरपि शरीरपर्यन्ताभावे पितृदोहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यः
घनिदोहित्रस्येव एवं पितामहप्रपितामहसन्तरेऽपि दोहित्रान्तायाः पितृ-
प्रत्यासात्तिक्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभाग(पृ० २०८)ग्रन्थ-
लिखनम् ॥ ५ ॥

पत्नी च भर्तृघनं मुञ्जीतेव, परं न नु तस्य दानाधानविक्रयान्
कर्तुमर्हति—इति दायभाग(पृ० १७१)ग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति च तद्ग्रन्थ-
(दाभा० पृ० १७१)धृतकात्यायन(कास्य पृ० ११२)वचनम् ॥ ७ ॥

व्यवहारोऽपि चलवान् धर्मस्तेनावहीयते ।

युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥—इति व्यवहारमातृकाधृत

(पृ० २८२) वचनञ्चेति ॥ ८॥

द्विजम्बरमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिवृषवाखरे घटिकाप्रयाधिकयामद्वये
-दत्तेयं मया व्यवस्था—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

१००—रोवकारि कोर्ट आपिल पलाके कलिकाता तारिख
५ माह मार्च सन १८३० ई मतावक २३ माह फाल्गुण सन
१२३६ वाङ्गला रोज शुक्रवार ऐ अदालतेर हाकिम श्रीयुत गोलब
-चटकाओएटरि माष्टर साहेवेर बैठके ।

मतालके जिलेय शहर
मुपन्मात चिप्रादासी

शा.पला

इंराजी १८२६ सालेर शेतम्बर मासे दाखिल हओया साप-
-लार सओयाल । ऐ तारिखेर लिखित ऐ अदालतेर हुकुमानुसारे
-यजसाहेवेर पाठान कागजात ओ गङ्गागोविन्द तरपसानिर
सओयाल ओ अनुमति ओ चन्द्रमुखिदास्यार मजाहेमदाराणेर
सओयालात ओ ई १८१२ सालेर नवम्बर मासेर १० ओ २४
-तारिखेर लिखित ७५८ लम्बरेर मकईमा बाबत सदर देओयानि
अदालतेर दुइ किता रोवकारि, ये ताहाते रामकुमारन्यायवाच-
स्पति आपिलाएट, कृष्णकिङ्करतर्कभूषण रप्पाडएट छिल, ऐ
आदालतेर परिहतगणेर दुइ किता व्यवस्था ओ ई १८२५
शालेर माइ मासेर २ ओ ३० तारिखेर लिखित सदर अदालतेर
२ किता रोवकारिर नकल ये ताहाते साएलार श्वशुर रामजय-
-सादा साएल छिल ओ साएलार चकिलगण रसिकलालदत्त ओ

शिवनारायणचट्टोपाध्यायेर अख दाखिल' पण्डितगणेर व्यवस्था सम्वलित अय वाहारदिगेर ओ गङ्गागोविन्दसेनेर उकिल रूपचन्द्रसेन ओ मजाहेमदाराखेर उकिल राजनारायणदत्तेर समीचे दृष्टे आसिल। जानागेल ये गङ्गागोविन्दसेन म० ८६०० टाकार वाविते ये शाण्वार पति रामलोचनसाहार इजारा लब्ध यावत वाहार तालुक निलम हइया उसुल हइयाछिल। ऐ रामलोचनेर नामे नालिप करिया डिगिरि हासिल करिया डिगिरि जारिते डिगिरि देइनदारेर जायदाद करारे नीतेर कुटी ओ वास्तु घाटी प्रभृति वस्तुसकल निलाम कराइयाछे। ओ देइनदारेर पित। रामजयसाहार दरखास्त मते ऐ जायदादके आपन जायदाद जाहिर कराइया छिल। सदर दओयानि आदालत हइते ऐ निलाम यद्ध हइया ऐसेन(?)प्रति नालिसेर अनुमति हय। तत परे ऐ सेनेर नालिप मते रामलोचनसाहा ओ वाहार पित।(२) नामे १ लम्बरे नीचेर कुटिर डिगिरि ओ २ लम्बरे वास्तु घाटीर डिगिरि जिलार आदालते हासिल हइल। ए आदालते ऐ जायदादसकल रामजयसाहार थाकन हेतुक जिलार दुइ डिगिरि यद्ध हइल, ओ एइ जणै ऐ रामजयसाहार मृत्युर पर ऐ डिगिरिद्वार रामजयसाहार त्यक्त समुदय वस्तु देइनदारेर स्वत्व करार दिया ताहा बिक्रय द्वाराय डिगिरि(२) टाका आदाय हओयार जन्ये जिलार आदालते^१ दरखास्त दाखिल करिलेक, ओ ताहार रोयकारि हुकुम सादर हओनेर परे साण्ळा एइ एजहारे एक फिता दरखास्त दाखिल करिलेक ये रामजय मजकुर अनेक दिव-(स) हइते आपन पुत्र रामलोचनके आज्ञावाहक ना थाकन प्रयुक्त पुत्रत्व हइते दूर करियाछे। रामलोचन मजकुर पितार वस्तु हइते नैरास दओनेर पर मेहनत ओ मशमत ओ इजारा प्रभृति द्वाराय दिन जापन करित, ओ बाङ्गला १२३५ शालेर १६ बैशा-

श्रेष्ठ रामजय मजकुर आपन वृद्धावस्थार दृष्टे साएलार नावालंक पुत्रे, ये उद्धार पौत्र बटे, ओ प्रतिपालन ओ तरवियतेर करा आपन स्वकृत समुदय स्थावर ओ अस्थावर वस्तु साएलाके हेवा करि-
याछे । जिलार यजसाहेब ऐ हेवा सिद्धि कि असिद्धि-ताहा सदर देओयानि आदालतेर पण्डितगण हइते ज्ञात हओनार्थे ऐ आदा-
लते आपन रोवकारि पाठाएन । सदर आदालतेर पण्डितगणेर
व्यवस्था पौछिल । परे ऐ हेवानामाके असिद्ध ज्ञान करिया ऐ
जायदाद विक्रयेर हुकुम पड़ हेतुते सादर करिलेन-ये रामलोचन-
साहा व्यतित मृत रामजयसाहार अन्य सन्तान नाइ । अत-
एव ताहार स्वत्वार प्रमाण तलब करार आविरवक हइल ना ।
ओ रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकईमा वावत सदर आदा-
लतेर इनफशालि रोवकारिर नकलेर द्वाराय जानागेल ये ऐ मक-
ईमाते ऐ आदालतेर हाकिमगणेर मध्ये हुजुर हइते पण्डितग-
णेर निकट ए विषयेर सओयाल हइल—ये यद्यपि कोन ब्राह्मण
ज्येष्ठ पुत्र विद्यमान राखिया थाकने आपन पैतृक ओ स्वकृत
स्थावर ओ अस्थावर समुदय विषय कनिष्ठ पुत्रके दान करे, से
दान धनदेशचलित शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना ।

ऐ आदालतेर पण्डितगण ताहार जबावे लिखिलेन—ये यद्यपि
कोन ब्राह्मणजाति ज्येष्ठपुत्र वर्त्तमान थाकनेओ पैतृक ओ स्वकृत
समुदाय स्थावर वस्तु ज्येष्ठ पुत्रके हेवा करे से हेवा सिद्ध बटे ।
किन्तु ये हेतुक पैतृक स्थावर समुदाय वस्तु दान करण शास्त्रनिषिद्ध
बटे, अतएव पैतृक समुदाय वस्तु दान करणे पाप हय—धनदेश-
चलित शास्त्रानुसारे ए व्यवस्था बटे इति ।

सदर आदालतेर पण्डित ए मकईमार यबावे लिखेन—ये
यद्यपि हेवार लिखित वस्तुसकल रामजयसाहार स्वकृत हय,
ओ साहा मजकुर आपन पुत्र ओ पौत्र मौजुद थाकनेओ ताहा
समुदाय आपन पुत्रवधूके ताहा दान ओ विक्रय करणेर सम्बन्धे
उद्धार क्षेमता कर्तृत्व नियमे हेवा करिया थाके, एमत व्यवस्था

अनैक्य हेतुक ये रोवकारिर समुदय वृत्तान्ते ओ हुजुरेर समर्पित हेवानामा' सठता ओ क्रोधमते हइयाछे, शास्त्रानुसारे सिद्ध हइते पारे ना । केन ना शास्त्रानुसारे हाकिमके उचित ये ये हेवा, सठता ओ क्रोध क्रमे हइछे, अकर्मस्य करेन । ओ रोवकारिर विस्तीर्ण मते पिता एक पुत्रके हेवाकरण, ओ आपन आप्राप्तव्य-वहार ओ अज्ञान पुत्र ओ अप्राप्तव्यवहार पौत्र थाकनेओ पुत्र ओ पौत्रेर भरण पोषणेर योग्य मिनाह ना दिया हेवार अयोग्य वस्तु हइते आपन पुत्रबधूके हेवाकरण शठता व्यतिवृत्त हय ना । अतएव एइ दृष्टे ये आदालतेर फयशला ओ सदर देओयानि आदालतेर रोवकारिर नकलेर अनुसारे ए मकहमाते साम्यस्थ नाइये । रामजयसाहा हेवा करणेर पूर्व आपन पुत्र रामलोचनके त्याग करियाछे, ओ ऐ हेवानामा लिखन कालिन रामजयसाहा ऐ रामलोचनेर सम्यन्वे शठता ओ क्रोध क्रमे साएलाके हेवा करियाछे, वरं ऐ हेवानामाते साएलार अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर, ये रामजयेर पौत्र बढे, प्रतिपालनेर बल्लेख लिखा नाइ । ताहाते साएलार सम्यन्वे हेवानामार लिखित समुदय वस्तु विक्रय ओ दानकरार क्षमता नाइ । ओ काहारो पिता बिना क्रोधे ओ अपराधे पुत्र त्याग करे ना । ओ रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकहमार व्यवस्था नकलेर द्वाराय जाहेर ये बड पुत्र थाकनेओ कनिष्ठ पुत्रके हेवा करा सिद्ध ओ ताहाते ज्येष्ठ पुत्रेर भरण-पोषणेर परिमाणेर किछु मिना लिखा नाइ । किन्तु से मकहमाते ब्राह्मण जाति शब्द लिखा गियाछे । ओ साएला अन्य पण्डितानेर व्यवस्था एइ कारण दरपेप करिलेक ये रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकहमार व्यवस्था शास्त्रानुसारे ब्राह्मण ओ हिन्दु अन्य जाति स्वत्वे एक बढे; ये हेतुक रामकुमारन्यायवाचस्पति आपिलाण्ट ओ कृष्ण-किङ्करतर्कभूषण रण्पाडण्टेर मकहमा वावत सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ ए मकहमा वावत व्यवस्था,

याहा आदालतेर सओयाल मते ऐ पखिडतगण दियाछेन, अनैक्या.
अतएव उभय व्यवस्थार अनैक्यता परिष्कारार्थे, ओ आरो एइ ये.
रामकुमारन्यायवाचस्पतिर मकईमार ब्राह्मणेर स्यत्वे ये हुकुम.
आछे, ताहा समस्त हिन्दु जातिर मकईमाते सम्पर्क राखे ना।
हुकुम हइल ये एइ रोषकारि नकल ओ दुइ व्यवस्थार नकल
सहित इङ्गरेजी चिट्ठीर सम्बलित सदर आदालतेर रेजिष्टर साहे-
बेर निकट एइ प्रार्थनाय पाठान जाय—सहेब मौपुफा ताइके
पखिडतगणेर निकट समर्पण करिया ताहार दृष्टे दुइ व्यवस्थार
अनैक्यतार परिष्कारेर विषय एवं वाचस्पतिर मकईमार
व्यवस्थार आज्ञा समस्त हिन्दु जातिर मकईमार सम्पर्क राखन,
ना राखन-विषये व्यवस्था दाखिल करेन—ताहा अनुमह पृथ्वक
ए आदालते पाठाएन इति।

श्रीज्जयतिराम

प्रभुसमर्पितप्रभपत्रप्रतिरूपपत्रं सदरदेओयानीपदवाच्यधर्माधिकरणा-
धिकृतपूर्वपरपखिडतव्यवस्थाद्वयस्य यदेतदब्दीयजुलाइमासीयचतुर्विंशतिदि-
वसीयशनौ पटिकैकाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते।

यद्यपि रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः भीमती-
चित्रादासीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थातो ब्राह्मणब्राह्मणेतरभेदकर्तृकभेदो नास्ति
शास्त्रे एतद्विषये जातिविषये जातिविशेषाभवेणात्, तथापि रामकुमार-
न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः शास्त्रबहिर्भूतत्वात् भीमती-
चित्रादासीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाश्च शास्त्रसम्मतत्वात्, शास्त्राशास्त्र-
भूतयोस्तु व्यवस्थयोर्भेदोऽस्त्येव। पैतामहे स्थावररथावरपने पितुः पुत्रस्य
च तुल्यस्यामित्येन बहुस्यामिकैकपदार्थस्य परस्परानुमतिव्यतिरेकेणैक-
कर्तृकदानविषयादौ स्वांशदानादिसिद्धिव्यतिरेकेण पराशदानादिविद्वेः, शास्त्र-
सोपबन्धवहासोमयसिद्धत्वात्, पैतामहे स्थावररपने पितुर्विशेषतः स्वच्छन्द-
वृत्तिताया अपि नियेषान्च, शास्त्रे पुत्राद्यनुमतिव्यतिरेकेण स्वोपाजितसर्व-

स्थावरास्थावरघनदानस्यापि निषेधोऽस्ति, पोष्यवर्मस्थावर्यम्भरणीयत्वात्,
तथान्ययस्यत्वप्रयुक्तसर्वस्वदानस्य^१ वृत्तिलोपस्य च निषेधात् । एवञ्च सति
रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादनिविष्टव्यवस्थापृतप्रायश्चित्तबोधकवचनस्य
‘प्रसक्तितु’ तत्रैव, यत्र केनचिद् दुर्वृत्तपुरुषेणैतादृशविधिमुल्लङ्घ्य^२
स्थोपार्जितसर्वधनस्य दानं कृतं स्यात्, विहितपोष्यवर्मभरणस्थाननुष्ठाना-
न्निन्दितस्य चान्ययस्यत्वप्रयुक्तसर्वस्वदानस्य वृत्तिलोपस्य च करणात् ।
न तु पैतामहस्थावरघनदाने तत्र पितुरेकस्य प्रमुत्वाभावात् शास्त्रानुसारात्
किञ्चिदपि पुत्रवधूकर्तृकोपकाराश्रयणादुत्तराधिकारिकोटावनन्तर्भूतत्वात्,
विना निमित्तं स्वमित्रस्य कस्यापि कृतार्थनिपाकारित्वान्च तस्याः । तथा च
कृते एतपि स्वाहोत्पन्नहन्कारित्वेन पुत्रत्यागे अप्राप्तव्यवहारेणाविदितगु-
णदोषेभ्यश्च च मुत्प्रेक्ष्यतः अधिकारिषु, स्वस्थार्याद्रामजीसाहस्य तथा श्रमस्तस्यै
स्वपुत्रस्थार्याद्रामलोचनसाहस्य कृतार्थापाकर्तृषु सत्त्वेवाप्राप्तव्यवहारेषु
पौत्रेषु, तेषामदत्त्वा स्वकुटुम्बादन्यमदत्त्वा च पुत्रवधूत्प्रदानकदानपत्रस्य
छलादिव्यतिरेकेणासम्भवात् । अथ च यद्यप्राप्तव्यवहाराणां तेषां भरणार्थ-
मेव तद्दानपत्रं दत्तं स्यात्, अथ च तस्य छलादिकं नाभिमतं स्यात्, तदा
पुत्रवधूमर्थात्तन्मातरं प्रप्यस्यां कृत्वैव पौत्रसम्प्रदानकं कुतो न दत्तम्-एता-
दृशरीत्याप्यदानात् छलादेः स्पष्टतरतया प्रतीतिः छलादिकृतव्यवहारे पराव-
र्तनीयत्वस्य शास्त्रसिद्धत्वात्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायक्रमसंग्रह-
विवादभट्टार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

भूम्यां पितामहोपात्ता निवन्धो द्रव्यमेव वा ।

तत्र स्यात् सदृशं स्वाम्यं पितुः पुत्रस्य चैव हि ॥

इति दायभागः (पृ० २६) प्रत्यघृतप्राप्तव्यवस्था (१।१२१) वचनम् ॥१॥

स्वमागान् यदि ददयुस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्गणेषु तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥

—इति तद्(दाभा० पृ० ३५) प्रत्यघृतनारद(नामसं १।५४२) वचनम् । २।

१ व्याजपरत्वरप्रयुक्तसर्वस्व-व्यय० । २ प्रसक्तितु-व्यय० । ३ पुरोता-व्यय० ।

४ पुरोता-व्यय० । ५ अत्रस्य-व्यय० । ६ सान्नाय-नामस० ।

पिता चेत् पुत्रान् विमज्जेत्तस्य स्नेच्छा स्वयमुपात्तेऽर्थे^१। पेतामहे तु पि-
तापुत्रयोस्तुल्यं स्वामित्वम् ॥ —इति तदग्रन्थ(दामा० पृ० ३१) धृतविष्णु-
वचनम् ॥ ३ ॥

यदि पिता पुत्रान् विमज्जति तदा स्योपाज्जितेऽर्थे न्यूनाधिकविभागं
स्नेच्छया पुत्रेभ्यो दद्यात् । पेतामहे तु नेतत्, यस्मात् तत्र तुल्यं स्वामित्वम्,
न पुनः पितुः स्वच्छन्दवृत्तिता —इति तद्(दाम० पृ० ३१)ग्रन्थलिल-
नम् ॥ ४ ॥

पूर्वोक्तगुणवत्त्वादिनिमित्तेनापि पितामहधनस्य भूमिनिबन्धद्विपद-
(अन्यतम)स्वरूपस्य न्यूनाधिकदाने पितुर्न प्रभुत्वम् —इति दायक्रमसंप्र-
(पृ० ४०)ग्रन्थलिलनम् ॥ ५ ॥

स्थावर द्विपदश्चैव यद्यपि स्वयमर्जितम् ।

असम्भूय सुतान् सर्वान् न दानं न च विक्रयः ॥ —इति दायमा-
गादि(दामा० पृ० ३५)ग्रन्थधृतवचनम् ॥ ६ ॥

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।

नरकं पीडने चास्य तस्माद् यत्नेन तं भरेत् ॥ —इति मनु(१)वच-
नम् ॥ ७ ॥

निःक्षेपः पुत्रदाराधिः सर्वस्वञ्चान्वये सति ।

आपत्स्वपि हि कष्टासु वर्त्तमानेन देहिना ॥

अदेयान्याहुराचार्याः —इत्यादि विवादमहार्थवादि(विभ० पृ० ४२१

ख)ग्रन्थधृतनारद(नामस० ५।५)वचनम् ॥ ८ ॥

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्तिं तेऽपि हि कृद्भक्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥

—इति व्यास(घट्टो० पृ० १५८०)वचनम् ॥ ९ ॥

विहितस्याननुष्ठानाबिन्दितस्य च सेवनात् ।

अनिमहाच्चेन्द्रियाणां नरः पतनमृच्छति^२ ॥ इति प्रायश्चित्तविवेक-

(पृ० १०)धृतयाज्ञवल्क्य(३।२१६)वचनम् ॥ १० ॥

१. ०मुपाज्जिते—यास्यु० ।

२. निक्षेपपुत्रदार च —नामस० ।

३. मनु०—यस० ।

४. ०निच्छति—अस्य० ।

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो धनुः शिष्यः सप्तस्यारिणः ॥

एषामभावे पूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।

स्ययातस्य ह्यपुत्रस्य सर्ववर्णेष्वयं विधिः ॥ —इति दायभागादि(पृ०

२५१) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य(२।१३५)वचनम् ॥११॥

प्रतिपत्तं द्विधा देयं यत्वा या सह यत् कृतम् ।

स्वयं कृतं वा यद्वयं नान्यत् स्त्री दानुमर्हति ॥

—इति विवादमङ्गार्यादि(१ विवा० पृ० २०६ क)ग्रन्थधृततद्(याश०

२।४६)वचनम् ॥ १२ ॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः ।—इति श्रीकृष्णत-

र्कालङ्कारकृतदायभागीकार् पृ० २१८)ग्रन्थलिखनम् ॥१३॥

पितरि प्रोपिते प्रेते व्यसनाभिष्णुतेऽपि वा ।

पुत्रपौत्रैर्भृशं देयं निहवे साक्षिभाषितम् ॥

इति विवादमङ्गार्यादि(पृ० १७८ ल) धृतयाज्ञवल्क्य(२।५०)वचनम् ॥१४॥

योगाधमनविकीर्तं योगदानप्रतिग्रहम् ।

यत्र दाय्युपधि पश्येत् तत्सर्वं विनिवर्तयेत् ॥—इति मनु (८।१६५)-

वचनञ्चेति ॥ १५ ॥ ० ॥ ० ॥

दिजम्बरमासीयेकविंशदिनसम्बन्धिऋगुवासरे चटिक(।)त्रयाधिकयामद्वये

दत्तेयं मया व्यवस्था ॥ ० ॥

श्रीजर्जयतिविराम्

श्रीहीरानन्दमिश्रेण

१०१—प्रभुपदार्थितद्वर्माधिकरणप्राचीनाधिपतिरुतस्य रामकुमार-

न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिप्रश्नरैतद्वर्माधिकरणप्राचीनपण्डितद्वयलि-

खितव्यवस्थापत्रं कलिकाताख्यरामहानगरसम्बन्धिकोयंगेलाख्यवर्माधिक-

रण्याधिनविकृतत्वं चिन्ताख्योपनिषद्सम्बन्धिप्रश्नरैतद्वर्माधिकरणमिदं-

तस्यानाभिपिक्तहीरानन्दमिभाख्यपरिद्वतलिखितव्यवस्थापत्रमन्यदप्यङ्गरेजी-
लिपिसमभिव्याहृतविचारपत्रद्वयं तत्रैषितमेवं यथाहरजिलाख्यावान्तरभर्मा-
धिकरणाधिपतिकृतस्य चित्रादासीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थासमल्लिखितव्यव-
स्थापत्रं चावलोक्य बाह्यबोधो जातस्तदनुसारेण निवेदनं क्रियते ।

रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थैतद्वर्माधिकरणे अङ्ग-
रेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वादशाधिकाष्टादशशतान्दे एतद्वर्माधिकरणप्राचीनप-
रिद्वतान्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रव्यवहारोभयावलोकनेनैवोपस्थापिता ।
एतद्वर्माधिकरणप्राचीनाधिपतिभिस्तदनुसारेणाशयां दत्ताया सस्यां वङ्ग-
देशे तादृशव्यवहारः शास्त्रतोऽपि दृढीभूतः । अतएव मुद्रायन्त्रालये मुद्रि-
तः । एवञ्च सति वङ्गदेशचलितशास्त्रेऽपि प्रायशः सुनिवचनानां ग्रन्थानां
या परस्परमनैक्यमस्त्येव । तथापि यस्मिन् देशे पूर्वोपरप्रचलित-
भवति तस्मिन् देशे तदेव रक्षणीयम्, अन्यथा प्रबाप्रक्षोभः स्यात् । अथ च
वङ्गदेशीयैः सर्वैरेष प्राचीनार्वाचीनैः ग्रन्थकारैः स्वस्वग्रन्थेषु जीवति पितरि-
पुत्राणां पैतृकधने पैतामहधने च किञ्चिदपि स्वत्वं नास्तीति लिखितम् ।
केतुचिद् ग्रन्थेषु विवादभङ्गार्थव्यवप्रभृतिष्वर्वाचीनेषु पुत्रे विद्यमाने तदनुमतिं
विना पितुः स्वाजितस्थावरस्य पैतृकस्थावरस्य वा समुदायस्य दानविक्रयनिवे-
षकान्येतद्वर्माधिकरणपरिद्वतस्थानाभिपिक्तहीरानन्दमिभाख्यपरिद्वतलिखि-
तव्यवस्थालिखितवचनानि लिखित्वा इदमपि लिखितं पुत्रानुमतिं विना पितुः
स्वाजितस्थावरस्य पैतृकस्थावरस्य वा समुदायस्य दानविक्रयकरणं नोचितं
भवतीत्येव । तादृशवचनानां तात्पर्यार्थः—यदि च पिता तदेव शास्त्रोक्ताश-
जातमुल्लङ्घ्य स्वोपाजितस्थावरसमुदायस्य पैतृकसमुदायस्य वा पुत्रानुमतिं
विना दानं विक्रयं वा करोति, तदा तद्दानं विक्रयो वा सिद्ध्यत्येव, किन्तु पितुः
शास्त्रोल्लङ्घनदण्यः प्रत्यवायो भवति । तत्रापि यदि छुलादिना क्रोधादिना वा
तादृशदानं विक्रयं वा करोति तदा न सिद्ध्यतीत्यपि लिखितम् । एवञ्च सति
रामकुमारन्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिव्यवस्थायाः श्रीमतीचित्रादासीय-
विवादसम्बन्धसमल्लिखितव्यवस्थातो वास्तवमनैक्यं नास्त्येव । प्रकृते तु

यशहरजिलाख्याबान्तरधर्माधिकरणाधिपतिकृतांगरेजीशब्दप्रतिपाद्योन्विष्ट-
 दधिकाष्टादशशताब्दीयमैमासीयपण्डितिवंशलिखितविचारपत्रान्तर्गतवृत्तान्ते स-
 ति, तत्सम्पितदानपत्रलिखितवृत्तान्ते च सति, एकमात्रपुत्रस्य पितृव्यवहार-
 योग्ये तस्मिन्नेकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने अग्राप्तव्यवहारेषु कतिपयेषु पौत्रेषु च
 विद्यमानेषु तेषामग्राप्त्वादनोपयुक्तमपि धनमसंरक्ष्य पुत्रकथं दानविक्रयस्य
 स्थाधिकारिणी कृत्वा व्यावहारिकतादृशसंपत्त्यदानस्य छलादिकं पिना अस-
 म्भवत्वेन तादृशदानस्य छलादिकृतत्वं क्रोधादिकृत(स्व)ञ्च (अतस्तरमाद्)
 दानासिद्धिप्रमाणीभूता व्यवस्था मया दत्ता । अत्र यद्यपि कलिकाताख्य-
 महानगरसम्बन्धिकोटोपीलाख्यधर्माधिकरणीयविचारपत्रद्वये तद्दानपत्रे
 रामजीसाहसंरक्तस्याग्राप्तव्यवहाराणां पौत्राणामथादधिन्याशित्रादास्याः
 पुत्राणां मरणपोषणं लिखितं नास्ति; अतएवाधिन्याशित्रादास्या दानपत्र-
 लिखितपत्तुनः समुदायस्य दानविक्रयादिकरणक्षमता नास्तीति लिखित-
 मस्ति । परन्तु तद्दानपत्रे दात्रा रामजीसाहसंरक्तेन लिखितम्—एतस्य
 दानविक्रययोः स्वत्वाधिकारोऽभ्युपेयः; एतद्विषये मया किंवा ममान्यैः केभ्य-
 दुत्तराधिकारिभिः प्राप्नोच्छा क्रियते चेत्तर्हि वा प्राप्नोच्छा न ग्राह्या नैव शुद्धा
 भवतीति । अतएव तद्दानपत्रे एतादृशल्लिखनेनाप्यधिन्याशित्रादास्यास्त-
 दानप्रहीन्या यदि सद्ने दानविक्रयादिकरणक्षमता न भवति । तर्हि तद्दानपत्रं
 तस्याः स्वत्योत्पत्तेः प्रमाणं कथं भवति । तद्दानपत्रमप्रमाणञ्चेत् कथं तत्
 प्रमाणेन तद्दानसिद्धिरिति । एवञ्च सति यदि जिलाख्याबान्तरधर्माधि-
 करणाधिपतिकृततद्विचारपत्रलिखितवृत्तान्तेन तद्दानपत्रेण वा छलादेः
 क्रोधादेर्वा निश्चयो वास्तवं न भवति तदा चित्रादासीयविवादसम्बन्धि-
 न्मल्लिखितव्यवस्था सुतरां प्रचारणीया नैव भवति, किन्तु रामकुमार-
 न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिनी व्यवस्थैव प्रचारणीया भवति । यदि
 च तद्विचारपत्रेण दानपत्रेण वा छलादेः क्रोधादेर्वा वास्तवं निश्चयो
 भवति तदा चित्रादासीयविवादसम्बन्धिनी अस्मल्लिखितव्यवस्थैव प्रचार-
 णीया भवति । एवञ्च सति एतद्वर्माधिकरणनियुक्तपरिद्वितसंस्मृता
 व्यवस्था चैतद्वर्माधिरणनियुक्तपरिद्वितसंस्मृतव्यवस्थायां परावर्त्तनयोग्या
 न भवतीति । अतएव एतद्वर्माधिकरणपरिद्वितस्यानाभिधिकृतद्वारानन्द-

मिश्राख्य परिदत्तलिखितव्यवस्थालिखितेन रामकुमारन्यायवाचस्पतीय-
विवादसम्बन्धव्यवस्थायाः शास्त्रबहिर्भूतत्वादिति । अनेनापि रामकुमार-
न्यायवाचस्पतीयविवादसम्बन्धिनी व्यवस्था परावर्त्तनयोग्या भवितुं न
शक्नोति—इति बङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटी-
कादायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादभङ्गार्थबहिर्वादाख्यवसेनुदायक-
प्रसंगग्रहादिग्रन्थानुसारेण निवेदनम्—इति

अत्र प्रमाण्यानि—प्रभुसम्पत्तितत्त्वव्यवस्थात्रयलिखितानि चतुर्विंशति-
संख्याकानि ॥ २४ ॥

• स्थावरं द्विपदं चैव यद्यपि स्वयमर्जितम् ।

असम्भूय सुतान् सर्थान् न दानं नच विक्रयः ॥

इत्येवमादिकम् तदप्येवमेव वर्णनीयम् ।

• तथापि कर्त्तव्यपदमवश्यमप्याह्वार्यम् ॥

• तेन दानविक्रयकर्त्तव्यतानिषेधात् तत्करणाद्विध्यतिक्रमो भवति,
न तु दानाद्यनिष्पत्तिः, यचनशतेनापि वस्तुनोऽन्यथाकरणाशक्तेः—
इत्यादि दायभाग (पृ० ३५) ग्रन्थलिखनम् ॥ २५ ॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्रावर्त्तयतिताः ।

• तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रजुम्यतेऽन्यथा—इति विवादभङ्गार्थ-
ग्रन्थधृतबृहस्पति (पृ० २१) वचनम् ॥ २६ ॥

देशस्य जाते. सङ्घस्य धर्मो ग्रामस्य यो भृगुः ।

उदितः स्यात् स तेनैव दायभाग. प्रकल्पयेत् ॥—इति दायतत्त्वादि-
(दात० पृ० १६५) ग्रन्थधृतकात्यायन (पृ० १०७) वचनम् ॥ २७ ॥

• (लोक) धर्मशास्त्र(यो) स्तु विरोधे लोकव्यवहार एवादरणीयः—
इत्याह स एव—

• धर्मशास्त्रविरोधे तु युक्तियुक्तो विधिः स्मृतः ।

• व्यवहारो हि बलवान् धर्मस्तेनावर्हीयते ।

• हीयते अवगम्यते, हीगतावित्यस्मादातोः । अतएव बृहस्पतिः—

• केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिरुण्यः ।

• युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥

युक्तिन्यायः, स च लोकव्यवहारः—इतिव्यवहारमातुम् (पृ० २८२)
इति व्यवहारतत्त्वादि (व्यत० पृ० ४) ग्रन्थलिखनम् ॥ २८ ॥

पितर्युपरते पुत्रा मिमजेयुर्धनं पितुः ।

अस्याग्न्य हि भवेदेपां निर्दोषे पितरि स्थिते—इति दायभागादि-
(दाभा० पृ० १३) ग्रन्थपूतदेवलवचनम् ॥ २९ ॥

यदि च परस्वत्योत्पत्तिफलकत्यागरूपं दानमेव करोति तदा उदा-
सीनवत् सिद्धयत्येव स्वाजिते पैतामहेऽपि स्थावरदादौ धने । परन्तु पुत्रानुमति
विना पैतामहस्थावरं ददतः पितुर्दुरदृष्टमेव भवतीत्येव तत्त्वम्—इति
विवादभङ्गाणवग्रन्थ (पृ० ४८ क) लिखनम् ॥ ३० ॥

नहि यः पुत्रादिशरीरदाने प्रभुः स स्थावरदाने पुत्राद्यनुमतिं विना
न प्रभुरिति वक्तुं युज्यते—इति विवादभङ्गाणवग्रन्थ लिखनम् ॥ ३१ ॥

एवञ्च यः कश्चित् पिता शास्त्रमुल्लङ्घ्य कस्मैचित् पुत्राय अन्यस्मै
वा स्वपेटुकं स्वाजितं वा समस्तमङ्गं वा स्थावरमन्यस्मै ददाति
तत्तु दानं सिद्ध्यत्येव । इदं कामक्रोधच्छलादिविमृक्तत्वे सत्येव । परन्तु
शास्त्रोल्लङ्घनजन्यं दुरदृष्टं भवति । इति विवादभङ्गाणवग्रन्थ (२ विवा०
पृ० ६४ ए) लिखनम् ॥ ३२ ॥

द्वैधे यद्वना वचनम्—इत्यादि व्यवहारतत्त्वादि (व्यत० पृ० २३)
ग्रन्थपूतयाज्ञवल्क्य (२।७८) वचनञ्चेति ॥ ३३ ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

सदर नैजामतेर आदाबतेर पण्डिते, र प्रति प्रश्नः—

(प्रथम) प्रश्नः—

एतद्वद्विषयपरलेमासीयद्वितीयदिनसमन्विशुक्रवाधरे घटिकाद्वयाधिक-
यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

सञ्चोयाल—

१०३—शूद्रजातिर मध्ये एक व्यक्ति स्वोपाग्निव स्थावरादि
धने अधिकार थाकिया परलोक हज्योयार पर ताहार पुत्र तद्वि-
षये उत्तराधिकारिसत्वे अधिकारि हइया ये समस्त वस्तु आपन
विमाताके हेवा करिया मृत्यु हइयाछे । ए स्थले ऐ हेवार वस्तु
सफल विमातार स्त्रीधन हय कि ना । परे ऐ विमाताकेवल
आपना पतिर भागिनेय विद्यमाने हेवार स्थावरादि सम्यदाय वस्तु
स्वजातीय एक जनके हेवा करियाछे । यद्यपि सपत्निर पुत्रेर
हेवा अनुसार ऐ वस्तु विमातार स्त्रीधन हइया थाके, तवे एमत्
वस्तु ऐ विमातार दान करा सिद्ध हय कि ना—यथाशास्त्र इहार
उत्तर लिखिया इति ।

जिलार जञ्चोयाप—

एइ सञ्चोयालेर उत्तर निवेदन करितेछि—यथा ऐ पुरुष
विमाताके पैतृक आपन धन हेवा अर्थात् दान करियाछे से दान
एवं ऐ स्त्रीलोक ये सपत्निपुत्र हइते लब्ध धन दान करियाछे, से
दान कि प्रकार व्यक्त लिखा नाहि मते ऐ हेवा-द्वयेर किरूप शब्द
प्रयोग आछे, ताहा ना जानाते ऐ दान सिद्धि हयोया नाहज्योया
दुइ प्रकार निवेदन करि । यथा दान सिद्धि ना हज्योयार ये ऐ
हेतु आछे, ताहा विने ऐ पुरुष आपन सत्वे त्याग करिया विमाताके
ऐ स्थावरादि सकल धन दिया थाके तवे ऐ सपत्निपुत्र देया
धन भर्तृदत्त स्थावरातिरिक्त स्त्रीधन हय । एमत् सौदायिक स्त्री-
धन दान सिद्धेर ये २ कारण आछे ताहा विने ऐ स्त्रीलोक आपन
सत्य त्याग करिया दिया थाके, तवे से दान अर्थात् हेवा सिद्ध
हय । आर ऐ पुरुष कि स्त्रीलोक दान सिद्धि नाहज्योयार ये २
कारण आछे से कारणे दियाथाके, तवे दान सिद्धि हयना । दान-

असिद्धेर कथक हेतु लिखि । यथा—कामे भये क्रोधे पीडाते भ्रमे शोके रोमे अथवा प्रतिलाभेच्छाते अर्थात् कोण शरते अपात्रके पात्र शङ्काते एवं उन्नादादिते दिया थाके तबे से देया सिद्ध ह्यना । तार प्रमाण कथक लिखि । यथा—

अदत्तं तु गयक्रोधकामशोकद्वान्वितैः ।

तथोक्तोचपरीहासव्यत्यासच्छ्रुतयोगतः ॥

प्रतिलाभेच्छया दत्तमपात्रे पात्रशङ्कया ॥

इत्यादि नारद-काल्यायन-मुनि प्रभृति लिखित नाना वच-
नादि । ताहासकल लिखाते अधिक हय । मठे किछु लिखि-
लाम् । ऐसकल हेवाते कि २ शब्द प्रयोग आछे, कि अभिप्राय,
ये हृष्योया ताह्य ना जानाते सिद्ध हृष्योया नाहृष्योया दुह मतेरि
कारण यथाशास्त्र निवेदन करिहाम् । साहेब फर्सा येनत् अभि-
प्राय निवेदनमेत(त्) इति ।

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र व्यवस्थापत्रद्वयश्च दानपत्रद्वयश्च यदेतदब्दीया-
परैलमासीयचतुर्विंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे षट्कैकाधिकयामद्वयानन्तरं
मया प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशोद्यो जलस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

यदि शङ्कजात्यन्तःपाती कश्चिद् व्यक्तिविशेषः स्वोपाखितस्यापराधिपते .
आयत्तत्वं सम्पाद्य मृतस्तदनन्तरं तत्पुत्रोऽपि स्वपितृत्यक्तवने उत्तरा-
धिकारित्वेनाधिकारी भूत्वा तदेव सर्वं यस्तु स्वभिप्राये दत्त्वा मृतः, तदा तदेव
दत्तं सर्वं यस्तु विमातुः स्वीकृतं भवितुं नि शक्नोति, देवीप्रसादसंज्ञक-
सपत्नीपुत्रलिखितचित्वासीसंज्ञकविमातुसप्रदासकदानपत्रे, तेनैव देवी-
प्रसादेन लिखितं त्वम्ना यथाशक्ति अस्माकं पुण्यानुक्रमेण, प्रम्मायं
ये क्रियाकर्मसिद्धयः प्रवर्तितवस्तान् संरक्ष्य भुज्यताम्—इति । अत्र वैतादृश-
लिखनेन चितवास्यास्वद्वने दानविक्रयानां प्रवृत्तिः, यस्मिन् घने, दानविक्रया-
नधिकारः, लिखास्तद्वनं स्वीकृतं भवत्येतद्विधायकशांस्वामोपात्तः । एवं

तद्दानात् परं सैव विमात्रा केवलं स्वपतिभागिनेये विद्यमाने सति दानकृत-
स्थावरादि सर्वं वस्तु स्वव्यतीयायैकस्मै कस्मैचिद्वत्तवती स्यात् तत्रोपरिलिखित-
प्रकारेण तदेव सर्वं वस्तु विमात्रुः स्वीचनं न भवति । अतएव तत्रैव वस्तु-
नस्तथा विमात्रा कृतदानं सिद्धं भवितुं न शक्नोति अस्वामिकृतत्वात्,
अस्वामिकृतदानस्य विक्रयस्य च आधेय परावर्त्तनीयत्वात्—इति वक्ष-
देशाच्चलितमनुशासनाभागीकृष्यवर्त्तलङ्कारकृतदायभागटीकादायकमसंग्रहवि-
वादभङ्गायवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इति मनु-
(पृ० ८११६) वचनम् ॥ १ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिष्य विनिवर्त्तयेत्—इति विवादमङ्गाण्यवादि-
(१ विधा ३१७ ख) ग्रन्थभूतकात्यायन (पृ० ७६) वचनञ्चेति ॥ २ ॥

एतद्वितीयमैमासीयअष्टाविंशतिदिनसम्बन्धिषुकरासरे यदिकैकाधिकं
न्यामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतिरामं
श्रीविघ्ननाथमिध्रेणं

१०४—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर सन
१९३१ इङ्गरेजि तारिख १५ जानेओरि मताबक सन १२३७
याङ्गला तारिख ३भाष रोव शनिवार ये आदालतेर हाकिम
झीमुत मान्तकीयू हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

काराीनायदत्त मतफार श्रीकरुणा(मयी) ओ गंयरह—

आपिलाष्टां

चन्द्रमाला मतफार स्वामी जयचन्द्रघोष—रसाडरट

आपिलाष्टदिगेर मध्ये एक जन रामकिशोरदत्तेर वकिल
मुनेशी दादारफूस ओ वल्लचन्द्रदत्त, नवालगेर भावा कालाचौद-

दत्त मतफार स्त्री मसम्मात कृष्णप्रिया श्री काशीनाथदत्त श्री
मसम्मात करुणामयी मतफारदिगेर नावालग पुत्र भैरवचन्द्र-
दत्तेर अद्धिमदान नारायणघोष उकिल मुनशी मोलाम यतुल
हाजिर हदल । आपिलाष्टदिगेर मध्ये एक जन रामकिशोरदत्त
श्री मसम्मात कृष्णप्रिया श्री गयरह सश्रोयाल ए मकईमार
तजविज सानि प्रार्थनाय, ताहार सम्पर्क कागजात सहित, थार
सन १८३० इङ्गरेजी नवम्बर मासेर २४ तारिखेर हश्रोया ए
आदालतेर हाकिम श्रीयुत अलियम नशाष्टर साहेबेर हुकुम माफिक
मकईमार कागज अथ आमार बैठके उपस्थित हइया नालिसि,
आरजि, श्री सन १८२७ इङ्गरेज जुलाइ मासेर ३ तारिखेर
श्री सन १८२८ इङ्गरेजि जानेओरि मासेर १७ तारिखेर
लिखित ए मकईमार राम आपिल मञ्जुरि रोयकारिमकल श्री
सन १८३० इ० जुलाइ मासेर १५ तारिखेर हश्रोया ए
मकईमा आखेरि रोयकारि श्री अथ जरुरि कागचसकल
रप्पाडएटेर उकिल सदाशुरपण्डितेर समक्षे दृष्टे आशील । ए
आदालतेर काएम-मकाम पण्डित हीरानन्दमिशेर एजाहार
असिद्ध सम्य लित आपिलाष्ट ओजरातेर दृष्टे जे सेइ पुनियादे
मकईमार तजविज हइयाछे, ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने
लिखित व्यवस्था लश्रोन उचित घोव हइया हुकुम दइलये एइ
रोयकारिर नकल आर जाहान्निरनगरेर फोर्टे आर्षीतेर पण्डितेर
आसल व्यवस्था ४४ लम्बर तथाकार नथीर सामिल, श्री ए
आदालतेर नथिर सामिल रप्पाडएटेर दाखिल करा व्यवस्था
सहित ए आदालतेर पण्डित बंशनाथमिशेर हाश्रोयाले करा-
जाय, एइ हुकुमे जे उपरेर व्यवस्थासकल बेत्ता हइया सप्ताह
मध्ये जवाब लिखेन-ये ऐ व्यवस्था बह्मदेश चलित शास्त्रानुमारे
सिद्धि कि असिद्धि मात्र । पण्डितेर व्यवस्था दाखिल हश्रोयार
पर आपिलाष्टेर तजविज सानिर सश्रोयालेर सम्पर्क मनाशीव
हुकुम प्रकाश पादवेक इति ।

श्रीर्जनयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणधिपतिधीयुतमान्तरीयूहेनरीटरम्बलसाहेबवर्माधिक-
रणलिखितैतद्वन्द्वीयजानवरीमासोयपञ्चदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रति-
रूपपत्रमेवं सत्समर्पितजाहाङ्गिरनगरसम्बन्धिकोर्टापोलास्वधर्माधिकरणनि-
युक्तपरिष्कृतलिखितव्यवस्थापत्रमेवमेतद्वर्माधिकरणप्रत्योयसमुपस्थापितमेत-
द्वर्माधिकरणोपव्यवस्थापत्रञ्च यत्फेरवररीमासोयसत्तमदिनसम्बन्धिसंमया-
सरे घटिकैलाधिकयामद्वये मथा प्राप्तन्तद्वलांश्च यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते ।

उपरिलिखितव्यवस्थापत्रद्वयान्तर्गतजाहाङ्गिरनगरसम्बन्धिकोर्टापोलास्व-
धर्माधिकरणनियुक्तपरिष्कृतलिखितव्यवस्थापत्रोपरिलिखितात् प्रभात् कीर्त्ति-
नारायणदत्तस्य मरणोत्तरं तद्योग्यारे शास्त्रानुसारेण तत्पुत्रस्याधिकारे जाते
सति तन्मरणोत्तरमनुमानादूनविशतिर्योत्तरं विशतिर्योत्तरं वा कीर्त्तिनारा-
यणदत्तस्यैको दोष्टश्च उत्पन्न इति ज्ञातम् । तथा सति कीर्त्तिनारायणदत्तस्याप्रात-
व्यवहारस्य पुत्रस्य मरणोत्तरं तस्यैवाप्रातन्यनहारस्य ये उत्तराधिकारिण्यस्त
एव तद्वनाधिकारिण्यो भवन्ति । एतच्च सति यद्देशचक्षितशास्त्रे एतादृशं
किमपि प्रमाणं लिखितं नास्ति यदनुसारेणोपरिलिखितप्रकारेण विवादास्-
दीभूतधनस्वामिनः कीर्त्तिनारायणदत्तपुत्रस्याप्रातव्यवहारस्य मरणसमये तत्पु-
त्रमारभ्य त्रितृदोहिवर्ग्यन्ताभावे तदानीं विद्यमानस्य तस्मैतामहस्य तद-
भावे तदानीं विद्यमानायस्तस्मैतामह्यास्तदभावे तदानीं विद्यमानानां उत्-
पि(तृ)व्यनाना तदभावे पितृव्यपुत्राणां तदभावे पितृव्यपौत्राणां वा अयो-
लिखितप्रमाणैस्तद्व्यादेवोत्तरन्नं स्वत्वं नश्येत् । अथवा तन्मरणान्दूनविशति-
र्योत्तरं विशतिर्योत्तरं वोत्तरस्त्वमानभितृदोहिव्यर्थं तद्वनमस्वामिकमेव
तावत्कालव्यन्तं तिष्ठेत् । अथवा तत्त्रितृदोहिवोत्तरतोः प्राक् तद्वनं
कोऽपि रक्षेत् । एवं प्रमुममर्णितव्यवस्थापत्रद्वयान्तर्गतैतद्वर्माधिकरण-
प्रत्योयसमुपस्थापितैतद्वर्माधिकरणोपव्यवस्थापत्रे दायभागलिखितं प्रमा-
णद्वयं लिखितमस्ति । तद्योग्येण प्रथमप्रमाणेन मातुलस्य मरणोत्तरं
तदीयधने ऊनविशतिर्योत्तरं विशतिर्योत्तरं वोत्तरस्य भामिनेयस्य स्वत्व-

सुत्पद्यते इत्यर्थो न प्रतीयते । वरं मातुलस्य मरणानन्तरं तत्त्वक्तधने यदि
 वस्य पुत्रमारभ्य पितुःप्रपौत्रपर्यन्तो न स्यात्, पितृदौहित्रस्तु विद्यते, तदा
 स एवाधिकारी भवतीत्यर्थः प्रतीयते, प्रकृते तु पितृदौहित्रस्य तदानीं विद्य-
 मानत्वाभावात् । यच्च तद्व्यवस्थायां द्वितीयं प्रमाणं लिखितं, तस्य चायम-
 र्थः-ये जाता उत्पन्नाः । येऽप्यजाताः भविष्यद्गर्भसम्बन्धाः । ये च गर्भे
 व्यवस्थितास्तेऽपि वृत्तिमाकाङ्क्षन्ति वृत्तिलोपस्तेषां विगर्हितो भवति-इत्य-
 मेनापि तादृशभागिनेयस्य मातुलधने स्वत्वमुत्पद्यत इत्यर्थो न प्रतीयते,
 तद्वचनस्य स्वत्वोत्पत्तिकारणत्वाभावात् । अथच दायभागग्रन्थे (पृ० २५)-
 तद्वचनं विभागप्रकरणे लिखितम् । यदि पित्रा स्वेच्छया क्रमागतधनस्य
 विभागो विभागप्रतियोगिनीं मातुरजोनिवृत्तिमन्तरा क्रियते तदा विभागोत्तर-
 जातानां वृत्तिलोपापत्तिः, अतएवासौ विभागो न युक्त इति विभागप्रतियोगिनी
 मातुरजोनिवृत्तिमन्तरा क्रमागतधनस्य विभागनिषेधार्थं तद्वचनं पञ्चमप्रमाणे
 स्पष्टीकृतं च । तत्रापि वृत्तिलोपो विगर्हित इत्यत्र वृत्तिराब्दस्यापि दायमा-
 गदीकाकृतधीकृष्णतर्कालङ्कारिर्दायभागटीकाशः (पृ० २५) मेवं व्याख्यातः-
 वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशकत्वमिति (दा० भा० टी० पृ० २५) । विभा-
 दभद्धार्षवग्रन्थेऽपि तस्यैव वृत्तिराब्दस्य क्रमागतधनमित्यर्थो व्याख्यातः ।
 अतएव मातुलधनं भागिनेयस्य वृत्तिर्न भवति, तस्य क्रमागतत्वाभावात् ।
 किन्तु आकस्मिकमेव तात्प्राप्तिर्भागिनेयस्य । अथ च वृत्तिलोपो विगर्हित
 इत्यनेन यदि केनचिद् विभागकरणेन दानविक्रयकरणेन वा कस्यचिद्
 वृत्तिलोपः क्रियते तदात्वसौ अपराधो भवति । प्रकृते तु विभागादिकरणेन
 वृत्तिलोपः केनापि न कृतः । अथ च बह्वदेशचलितशास्त्राभागादिग्रन्थमते
 दायस्थाने विशेषतः स्वत्वकारणं धनस्वामिसम्बन्धो धनस्वाम्योपरमश्च पूर्व-
 पूर्वसम्प्रतिपत्तामभावश्चेति त्रितयं भवति । अथ च केपाक्षित् ग्रन्थानां मते
 जन्मैव पुत्रपौत्रप्रपौत्राणां स्वत्वकारणं भवति । तत्र जन्म द्विविधम्-यस्मिन्
 काले यस्य गर्भाधानं तदेकविधं यस्मिन् काले गर्भतो निर्गतस्तद्वितीयम् ।
 प्रकृते तु कीर्त्तिनारायणपुत्रस्य कीर्त्तिनारायणमरखेत्तरं तदयोग्यांस्त्वा-
 मिनोऽप्रातव्यवहारस्य मरखतमये तद्भागिनेयस्य गर्भसम्बन्धस्याप्यभावेन
 तत्सम्बन्धस्य दूरापास्तत्वात् तत्त्वक्त(ध)ने तत्स्वत्वोत्पत्तिर्भावेनुमरा-

क्यैव । अथ चेन्नपोदशवर्षवयस्कानां बालकानामप्यादप्राप्तव्यवहाराणां
धनरक्षणे मुनिमिरुपायः कृतः । तस्मादपि द्विष्टमे प्रकृतस्थाने अनियमित-
कालेनोत्तममानानां धनरक्षणे कोप्युपायो मुनिमिर्गन्धकारैर्वा न कृतः ।
तस्मादपि अनुत्पन्नानां स्वत्व भवितुं न शक्नोति । तस्मात्प्रमुचमपितव्य-
वस्थाद्वयं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितुमर्हतीति न प्रतिभाति—
इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागध्रीकृष्यतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादाय-
तत्वदायक्रमसंग्रहविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी भ्यवरथा ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो आतरस्तथा ।

तत्सुता गोत्रजो बन्धुशिष्यः सन्नक्षचारिणः ॥

एवमभावेपूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।

स्वर्थातरस्य ह्यपुत्रस्य सत्त्वर्षेणैष्यं विधिः— इति दायभागवि(शत०
पृ० १५१) ग्रन्थभूतवाक्यरूपम् (२११३५) यचनम् ॥ १ ॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्रः इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पिता-
मही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्व्येमात्रेयस्तदभावे पितृसोदर-
पुत्रपितृव्येमात्रेयपुत्रापितृसोदरपौत्रपितृव्येमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—
इति च श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायटीका (पृ० २१८) लिखनम् ॥ २ ॥

दौहित्रान्तपितृसन्तानाभावे पितामहो धनाधिकारी आसन्नत्वात्,
तदभावे पितामही—इत्यादि विवादभङ्गार्थं (२ विधा० पृ० ३६४ ख)
ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तदभावे पितामहाधिकारः दौहित्रान्तरसन्तानाभावे पितुरधिकार-
वत्—इति दायक्रमसंग्रह (पृ० ७) ग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

तस्मात् पतितत्त्वनिष्ठहत्वोपरमैः स्वत्वापगम इत्येकः कालोऽपरश्च
सति स्वत्वे तादृच्छातइति कालद्वयमेव युक्तम् । आनुर्निवृत्तेरजसीतितत्
पितामहधर्माभिप्रायम् । निवृत्तेरजसि पुत्रान्तरसम्भावनाभावात् तदा-
नीमापि पितुरीच्छयैव पुत्राणां विभागः । अनिवृत्ते रजसि प्रमागतधन-
विभागे पश्चाज्जातानां वृत्तलोपापत्तेः । न चासौ युक्तः ।

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—

इति मनुवचनात्, इति दायभागधन्य (पृ० २४) लिखनम् ॥ ५ ॥

वृत्तिलोपः पितामहघने निरंशकत्वम्—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत-

दायभागटीका (पृ० २५) लिखनम् ॥ ६ ॥

जीमूतयाहनास्तु अनिवृत्ते रजसि क्रमागतधनविभागे पश्चाज्जातानां
वृत्तिलोपापत्तेन चासौ युक्तः ।

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्ति तेऽपि हि काङ्क्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ।

इति मनुवचनादित्याहुः ।

क्रमागतजीवनोपाय एव वृत्तिशब्देनोच्यते—इति १ तेषामभिप्रायः

इति विवादभङ्गांशवत् (२ विद्या० पृ० ७२ क) ग्रन्थलिखनम् ॥ ७ ॥

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः कयो जयः—इत्यादि वचनम्

(मनु० पृ० ४२२) ॥ ८ ॥

ततश्च पूर्वस्यामिसम्बन्धाधीनं तत्त्वाम्योपरमे यत्र द्रव्ये स्वत्वं तत्र-
निरुद्धो दायशब्दः—इति दायभाग (पृ० ५) ग्रन्थलिखनम् ॥ ९ ॥

तथा च तावदन्यतमसम्बन्धाधीनं सद् यत् पूर्वस्यामिस्वत्वनाश-
जन्यं स्वत्वं तद्वति घने निरुद्धो दायशब्द इत्यर्थः । न तु स्वत्वनाशानन्तरं
चेत्स्वत्वोत्पत्तिरिति, तदा तत्क्षणेऽङ्गामिकतया निष्पादिवदुदासीनस्या-
प्युपादानात् स्वत्वापत्तिरिति चेन्न, तत्र पुत्रादिसत्ताया एव विरोधित्वस्य
पुत्राधिधिकारयोपकरात्सिद्धत्वात्—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग-
टीका (पृ० ५) लिखनम् ॥ १० ॥

वस्तुतस्तु पितृस्वत्वमेव पुत्रस्वत्वोत्पत्तौ हेतुः । न चैवं पितृस्वत्वे
विद्यमानेऽपि तद्धने पुत्रस्वत्वापत्तिः । तत्र पितृस्वत्वनाशकस्यापि सहक्रा-
रित्वात् । स्वत्वनाशश्च मरणपातित्यादि । तेषां स्वत्वनाशकत्वेन स्मृति-
प्रतिपादितानां मरणत्वपातित्वत्वादिविशेषरूपेणैवाव्यवाहितोत्तराद्यन्त-

भविष्य पुत्रस्ततोत्पत्तौ हेतुत्वम्—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभा-
गटीका (पृ० ५६) लिखनम् ॥ ११ ॥

ततश्च उत्पद्येवार्थं स्वामित्वाल्लभेत इत्याचार्या मन्यन्ते—इति मिता-
हारा (पृ० १६६) धृतगीतमवचनम् ॥ १२ ॥

अमूलं समूलत्वे वा यस्मिन् गर्भस्ये पित्रादिर्मृतः तत्परम्—इत्यादि-
श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० १४) लिखनम् ॥ १३ ॥

पितृनिधनकालीनं वा जीवनमेव पुत्रस्यार्जनं भविष्यति—इति दाय-
भाग (पृ० १६) ग्रन्थलिखनम् ॥ १४ ॥

पुत्रजीवनमेव स्वत्वहेतुः । तत्र पितृनिधनकालः सहकारीत्यर्थः ।
इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० १६) लिखनम् ॥ १५ ॥

बालदायादिकं रिक्तं तावद्राजानुपालयेत् ।

यावत् स स्यात् समावृत्तौ यावद्यातीतरौशवः ॥—इति मनुवचन-
मिति (पृ० ८, २७) ॥ १५ ॥

अपचैतद्धर्माधिकरणप्रस्थितिमुत्स्थापितैतद्धर्माधिकरणीयव्यवस्था-
लिखितद्वितीयप्रमाणस्य तद्व्यवस्थालिखितपारस्मिकप्रतिरूपेण यादृशार्थो-
ऽवगम्यते तादृशार्थस्तु करिमन्नपि ग्रन्थे न लिखितः । दायभागग्रन्थे तत्-
प्रमाणस्य यादृशार्थो व्याख्यातः स तु श्रियुतद्देनरीकुलबोद्धकसाहेबाभिधानैत-
द्धर्माधिकरणप्राचीनाधिपतिकृतधर्मशास्त्रान्तर्गतवज्रदेशचलितदायभागप्र-
तिरूपे इङ्गरेजीलिपिनिर्मिते विभागकालद्वयनिरूपणप्रकरणे विंशतिपत्रे
एकविंशतिपत्रे च एतद्व्यवस्थायाः पञ्चमप्रमाणेऽपि च स्पष्टीकृतः इति
निवेदनमिति ।

एतदन्दीयमान्चर्मासीयनवमदिनसम्बन्धिजुषवासरे धटिकैकाधिक्रियाम-
हये दक्षेयं मया व्यवस्था ।

श्रीर्जनयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०५—रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख १० माहे माइ सन १८३१ इहरेजि मतावक तारिख २६ माहे वैशाख सन १२३८ साल वाङ्गला बुधवार ऐ आदालतेर हाकिम ओयुत मान्तगीओ हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

शीउमलुकसिंह—

आपिलाएट

रामप्रकाशसिंह—

रेण्पाडण्ट

आपिलाएटेर उकिलगण मौखवि नियामत आलि ओ सदा-सुख पण्डित रेण्पाडण्टेर उकिल मुनसि होसन आलि हाजिर हइल । आपरेल मासेर २७ ओ २८ ओ हाल मासेर ६ तारिखे ए मकईमा आमार बैठके उपस्थित हइया ऐ रोवकारिसकलेर विस्तुणो कागजसकल पढागिया स्वकिइ स्थित । अथ पुनराय उपस्थित हइया एइ मासेर ६ तारिखे आपिलाएटेर उकिलगण साकिदिगेर एजहारेर नकल समस्त जे दाखिल हइयाछिल ओ आवश्यकीय अनेक कागजात पुनराय पढागेल । बोध हइल जे तालुकजखनिर कर्ता उभयेर पूर्वपुरुष रामरुचसिंह तिन पुत्र राखिन । एक जन आपिलाएट मिउमलुकसिंहेर पिता भुपनारायण सिंह, ओ द्वितीय प्रेमनारायणसिंह जे मुकुन्द नामे एक पुत्र ओ दुइ २ । एक जन बक्तकोडर, द्वितीय मुकुन्दसिंह मजकुरेर भाता नियत कोडरके राखिया मरियाछे । आर ऐ रामरुचसिंहेर तृतीय पुत्र हिङ्गलसिंहेर पिता ओ ए मकईमार मुहानेहे रामप्रकाशसिंहेर पितामह देनजितसिंह, आर इहाओ प्रकाशजे ऐ प्रेमनारायण आपन जीवदसाते जखनि तालुक हइते आपन तृतीय हिस्सा बायत मुकुन्दसिंह पुत्र ओ मसम्मात बखतकोडर ओ नियत कोडर आपन खोगणेर नामे प्रत्येकेर अंशेर विना शङ्काय एक केता देवानामा लिखियादेय, ओ प्रेमनारायणसिंहेर मृत्यु पर ताहार पुत्र मुकुन्दसिंह अप्राप्तव्यवहार कालिन ओ ताहार पर चहार ओ मसम्मात बखतकोडर ओ मसम्मात नियतकोडरेर मृत्यु पर मृत भुपनारायणसिंहेर पुत्र शीउमलुकसिंह ओ मृत

देनजीतसिंहेर पुत्र दिङ्गलसिंह वर्त्तमाने आछे । चुडन्त हुकुम हज्रोनेर पूर्व एइ मकदमाते ए आदालतेर पण्डित हइते निचेर सओयालसकलेर जबाब व्यवस्था लओन उचित बोध हइयो हुकुम हइल जे मसम्मात बखतकोडर ओ नियतकोडर मुइइयो बाबु सोडमलुकसिंह ओ देनजितसिंह मुइलेहेदिगेर नालिसो मकदमाय हिजरी स'न) १२६१ सालेर सहर जमादिआओनेर २५ तारिखेर लेखा, मृत प्रेमनारायणसिंहेर लिखित एक केता हेयाना-मा ओ १८५४ सम्मत मिति कोओदारा यदि सप्तमी तारिखेर लेखा, सोडमलुकसिंहेर लेखा, एक केता एकरारनामा लम्बर १३ ओ १५ सम्बलित एइ रोषकारिर नकल ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने समारपन कराजाय जे सप्ताह मध्ये ऐ सओयालेर जबाबे व्यवस्था लिऐन ।

प्रथम—एइ जे मुकुन्दसिंह पुत्र ओ मसम्मात बखतकोडर ओ नियतकोडर आपन ओगणके ताहारदिगेर प्रत्येकेर अंशेर बिना शङ्काय ऐ प्रेमनारायण आपन पैतृक अंश हेवा करण शास्त्रानुसारे सिस्ति^१ बटि कि ना । ओ मसम्मात मजकुरा ऐ हेवा मते मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर हेवा करा सुनीय हित्या हइते कि परिमाण्य अंशेर सत्वाधिकारि हइवेक ।

द्वितीय—एइ जे मसम्मात मजकुरारा मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर स्थावर वस्तु हइते आपन स्वत्वेर समर्पके^२ ऐ हेवा अनुसारे दान ओ विक्रय ओ अन्य प्रकार हस्तान्तर करणेर क्षेमता धाकिवेक कि ना ।

तृतीय—एइ जे ऐ मुकुन्दसिंहेर मृत्युर पर ताहार माता नियतकोडर ओ विमाता बखतकोडर ओ ताहार खुडा देन^३ जीतसिंह से कालिन वर्त्तमान छिल, ओ ल्हार खुडताउ भ्राता शोडमलुकसिंह जिवदसाय थाकने प्रेमनारायणेर अंशेर स्वत्वाधिकारि के हइवेक ।

चतुर्थ—एइ जे यद्यपि मृत मुकुन्दसिंहेर त्यक्त अंशेर दखल ओ कावेजेर सत्वाधिकारि ताहार माता मसम्माता वखतकोडर ओ नियतकोडर हवेक, तवे उहादिगेर मृत्युर पर ऐ प्रेमनारायण सिंहेर दान करा अंशेर सत्वाधिकारि कोण व्यक्ति, भुपनारायण सिंहेर पुत्र शोडमलुकसिंह किम्बा देनजितसिंहेर पुत्र हिङ्गल सिंह अथवा दुइ जनाइ तुल्यांश हइवेक इति ।

श्रीज्जयतितराम्

एतद्वर्मापिकरणाधिपतिश्रीपुत्र-भान्तकीयूदेनरौटरम्बलसाहेवधर्माधि-
करणलिखितैतद्वर्मापमेमासीयैकादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप -
पत्रमेवं सत्समर्पितत्रयोदशह्नाङ्कितमृतप्रेमनारायणसिंहलिखितदानपत्रं
पञ्चदशह्नाङ्कितश्रीमनोगसिंहलिखितसंविद्(?) पत्रञ्च यत्तन्मासीयैकविंशति-
दिनसंवन्धिशनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशमोक्षो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तेनैव प्रेमनारायणसिंहेन स्वपैतृकधनस्य स्वांशो मुकुन्दसिंहनाम्ने
स्वपुत्राय वखतकुमारिनाम्न्यै नियतिकुमारिनाम्न्यै च स्वपत्न्यै तेषां प्रयाणां
दानप्राहिण्यां मध्ये प्रत्येकमंशसंख्यामकृत्यैव दत्तः स्यात्तदा तदानीं राजानु-
सारेण सिद्ध्यति, शास्त्रीयावश्यकदानादौ सामान्यतः पुत्रायामनुमतेरना-
वश्यकतेनाप्राप्तरूपाया अप्राप्तव्यवहारपुत्रानुमतेरनावश्यकत्वस्यार्थसिद्धत्वात्,
एतां पक्षीभ्यः स्त्रीधनदानस्यादत्तस्त्रीधनान्म्यस्ताभ्यो वा पुत्रधनानां दानस्य
च शास्त्रीयत्वात्, प्रभुधर्मपितृत्रयोदशह्नाङ्कितदानपत्रेण प्रेमनारायणसिं-
हस्य पैतृकस्वांशस्य आत्रादिभिः साधारण्याभावावगमेनाप्रात्रादीनां तत्रानु-
मतेरप्यनपेक्षितत्वात्, प्रात्रादीनां साधारण्येऽप्यप्रतिषेधरूपायास्तेषामनुमते-
रसत्तत्वाच्च, पञ्चदशह्नाङ्कितश्रीमनोगसिंह लिखितसंविद्(?)पत्रेण तथा
पर्यवसानाच्च । एवं तदानीनुसारेण पूर्वं प्रेमनारायणसिंहस्वत्तासदीभूत-
स्यांशस्य तृतीयांशाधिकारिणस्त्वपुत्रस्य मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्माता
नियतिकुमाराख्या अंशद्वयाधिकारिणी, तद्विमाता वखतकुमाराख्या च

तत्तृतीयांशरूपैकांशाधिकारिणी भवति । यतो यत्र दानादौ दानप्राप्तिः
मंशानियमो न कृतस्तत्र शास्त्रानुसारेण ते दानादिप्राप्तिः समानांशिनो
भवन्ति । तत्र मुकुन्दसिंहस्य पुत्रमारम्य दौहित्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य
तदानानुसारेण साधारणधनांशे तन्मातुल्यवत्कुमराख्याया अधिकारस्य
शास्त्रसिद्धत्वाद् इति ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकरणम्—इति मनु(५।१५२)वचनम् ॥ १ ॥

अवश्यकर्तव्येषु^१ पित्रादिप्राप्तादिषु^२ स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमे-
कोऽपि समर्थः कुर्याद्—इति मिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् (पृ० २००) ॥ २ ॥

तत्र तद्विधानबलादेवाधिकारो गम्यते—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
लिखनम् (मिता० पृ० २००) ॥ ३ ॥

पितृमातृपतिप्रातृदत्तमप्यन्युपागतम् ।

आधिपदेनिकाद्यञ्च स्त्रीधनं परिकीर्तितम् ॥—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (याज्ञ० २।१४३) वचनम् ॥ ४ ॥

यदि कुर्यात् समानांशान् पत्न्यः कार्य्याः समोशिक्षः ।

न दत्तं स्त्रीधनं यासां भर्ता वा स्वशुरेण वा—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् (याज्ञ० २।११५) ॥ ५ ॥

अप्रतिपिद्धं परममतमप्यनुमतं^३ भवति—इति दत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थ-
लिखनम् (दत्तक० पृ० १२) ॥ ६ ॥

समं स्यादश्रुतत्वादशेषस्य^४—इति धीरमिश्रोदयादिग्रन्थलिखनम्
(वी० मि० पृ० ५६५) ॥ ७ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ प्रातरस्तया ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
(२।१३५)वचनम् ॥ ८ ॥

१. ० पुत्र २. पित्राद्यादिषु इति मिता०

३. परमनुमतम्—दत्तक० ।

४. अवशिष्टधनस्येति समं स्यादश्रुतत्वाद्—इति वीमि० पाठः

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्मातुर्विमातुर्वा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण स्वस्वत्वास्पदीभूतान्तर्गतस्यावरधने अदृष्टार्थं दृष्टादृष्टावश्यककार्यार्थं स्वस्वमरणपोषणार्थं वा दानप्रकारेण विक्रयप्रकारेण वा अन्यप्रकारेण वा हस्तान्तरकरणे क्षमता स्यात्सत्येव, अन्यथा न स्यात्सत्येव । यतश्शास्त्रानुसारेण भर्तुर्दत्तस्थायरे पत्न्या उपरिलिखितादृष्टार्थादिव्यतिरेकेण यथेष्टदानविक्रयादौ नाधिकारः, पुत्रादिदोहित्रान्तरहितस्य मृतस्य पुत्रस्य धने उत्तराधिकारित्वेन मातुरधिकारे जातेऽपि तस्या उपरिलिखितादृष्टार्थादिव्यतिरेकेण तद्वनेऽपि यथेष्टदानविक्रयाद्यनधिकारश्चेति ॥ ०॥

अत्र प्रमाणम्—

गर्भा प्रीतेन यदत्तं स्त्रिये तस्मिन् मृतेऽपि तत् ।

सा यथाकाममश्नीयाद् दद्याद्वा स्थावरादृते ॥

इति मिताक्षरा(पृ० १६६)वीरमित्रोदयादि(पृ० ६६१)ग्रन्थधृतनारद-
(नामध० २।२४)वचनम् ॥ १ ॥

अदृष्टार्थे दाने दृष्टादृष्टावश्यककार्यार्थमाधौ विक्रये चास्त्येव पत्न्याः सकलभर्तृधनविययोऽधिकारः—इति वीरमित्रोदय(पृ० ६३०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

एकत्र निर्णीतः शास्त्रार्थो बाधकं विनाऽन्यत्रापि प्रवर्तते—इति उपरिलिखितग्रन्थलिखितम् ॥ ३ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तस्यैव मुकुन्दसिंहस्य मरणोत्तरं तन्मातानियतकोमराण्या तद्विमाता वसतकोमराण्या च तदानीं जीवन्त्यासीत्, तत्पितृव्ये दलजीतसिंहे पितृव्यपुत्रे श्रीमनोगसिंहे च जीवति सत्यपि प्रेमनारायणसिंहस्य पूर्वस्वत्वास्पदीभूतांशस्य प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेणाधिकारिण्यौ नियतिकुमरि-
वसतकुमर्यामेव भवतः, तयोर्जीवन्त्योः मुकुन्दसिंहपितृव्यस्य पितृव्यपुत्रस्य वा तत्र नाधिकार इति ॥

अत्र प्रमाणानि—प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि सर्वान्वयेवेति—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि मृतस्य मुकुन्दसिंहस्य त्यक्तधनांशस्य स्वत्वाधिकारिणी तन्माता नियतकुमराख्या प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकरणेण जाता, तथा तन्प्रमाणान्तरं तत्प्रमेनारायणसिंहकृतदानकृतस्यांशस्यान्तर्गतस्य प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण मुकुन्दसिंहस्वत्वास्पदीभूतस्य तत्तृतीयांशस्याधिकारी मुकुन्दसिंहस्य पुत्रमारभ्य पितामहपर्यन्तो नास्ति, तत्पितृव्यो भूपनारायणसिंहो दलबीतसिंहो वा कश्चिद् विद्यमानश्चेत्तदा स एव भवति । तौ द्वौ चेद् द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः । पितृव्याणां मध्ये कस्यचिदपि एकस्य तदानीं विद्यमानत्वाभावे तत्पितृव्यपुत्रो भीमनोगसिंहइल्लसिंहारूपौ द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः । नियतकुमराख्याया अथवा तत्कुमराख्यायाश्च प्रत्येकं (१) भरणोत्तरं तयोः स्वस्वत्वास्पदीभूततृतीयांशस्याधिकारी । यदि तयोः प्रत्येकं दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्रप्रपौत्रमत्तु सपत्नीपुत्रपौत्रप्रपौत्रदुहितृदौहित्रश्वभूरश्वशुरपर्यन्तानां स्त्रोधनाधिकारिणा मध्ये कश्चिन्नास्ति तयोः पतिभ्राता भूपनारायणसिंहो दलबीतसिंहो वा कश्चित् तदानीं विद्यमानस्तदा स एवाधिकारी भवति, तौ द्वौ चेद् द्वावेव तुल्याधिकारिणौ भवतः । तयोर्मध्ये एकस्याप्यभावे तयोः पुत्रौ भीमनोगसिंहदौहित्रसिंहारूपौ द्वावेव तुल्यांशिनौ भवतः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौलुभश्चक्रचन्द्रिकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्पुत्रो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
(२।११५) वचनम् ॥ १ ॥

तत्र च पितृसन्तानाभावे पितामही पितामहः पितृव्यास्तत्पुत्राश्च क्रमेण धनभाजः—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् (पृ० २२३) ॥ २ ॥

पूर्वोक्तं स्त्रीधनमप्रजस्यनपत्यायां दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्र-

प्रपौत्ररहितायां स्त्रियामतीतायां बान्धवा भर्तादयो वक्ष्यमाणा गृह्णन्ति—
इति मिताक्षराग्रन्यालिखनम् (पृ० २२६) ॥ ३ ॥

अप्रजसः स्त्रियाः पूर्वोक्तरूपाया मासद्वैवार्यप्राजापत्येषु चतुर्षु
विवाहेषु भार्यात्वं प्राप्ताया अतीतायाः पूर्वोक्तं धनं प्रथमं भर्तुर्भवति,
रादमाये तत्प्रत्यासन्नानां सर्पिण्डानां भवति—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
लिखनञ्चेति (पृ० २२६) ।

जन्मासीषद्वितीपदिनसम्बन्धिवृहस्पतियासरे दत्तं मया व्यवस्था इति ।

श्रीज्जयतितराम् श्रीविद्यनाथमिश्रेण

१०६ रोयकारि मिशिल सदर देओर्यानि आदालत तारिख
१८ माइ सन १८३१ साल इङ्गरेजि मोतावक ६ ज्येष्ठी शन १२३८
साल बाहला रोज बुधवार पे आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट
धरलेन शिलि साहेबेर बैठके—

राजा गोविन्दनाथराय

आपिलाइट

गोलालचन्द्र ओरफे लालकावाबुगं

रेप्पाइट

आपिलाइटेर उकिल मुनशि होसेन आलि ओ रेप्पाइट-
गणेर उकिल सक मुनशी गोलाम बतुल ओ सदाशुक पण्डित
हाजिर आइलेन । एइ मकदमा एइ माहार १०।१।१२।१६।१७।
तारिखसकले आमार बैठके हवकार हइया नालिसि आरजि
प्रभृति प्रेदिनरोल कोटेर कागजसकल फयशला पर्यन्त ओ एइ
आदालते दाखिलि हओया सओयाल जवाब ओ गयरह काय-
जात' पहागिया स्थकित छिल, अद्य पुनराय हवकार हइया गत
दिवसेर दाखिल हओया कागजात दृष्टे आसिल । यथा.चूडन्त-
हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ

विशय ज्ञात हृद्योऽन उचित हइलये अछियतनामा अनुसारे ये तद्वाराय मुतिचन्द्रके पुण्य पुत्र विवेचना करणेर क्षेमता राखे किना । अतएव हुकुम हइल ये एइ रुयकारिर नकल अछियतनामा सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ हुकुमे समर्पण कराजाय ये निचेर लिखित प्रश्नशकलेर उत्तर जेइन शाखानुसारे यद्यपि थाके नतुवा एतदेशीय चलित शाखानुसारे दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन ।

प्रथम प्रश्न—एइ ये विरोधिय छाटसकलेर कर्त्ता उत्तमचन्द्र साहार पुण्य पुत्र विवेचना करण जैन्ये ओ सहार सत्य रक्षणार्थे मुतिचन्द्रके ओछि मकरर करिया अछियतनामा लिखियादिया मृत्यु हइल । ये मुतिचन्द्र मजकुरके आपन जीवत दशाय पुण्य पुत्रेर विवेचना करणेर सावकाश ना हइया प्राप्ति हय । अतएव मुतिचन्द्रेर मृत्युर पर उत्तमचन्द्रेर ओ मुसम्मात मायाफोडर पुण्य पुत्र विवेचना करणेर क्षेमता राखे किना ।

द्वितीय प्रश्न—यद्यपि जेइन शाखे थाके तवे ऐ शाखानुसारे स्पेष्ठ पुण्य पुत्र हइते पारे किना ।

तृतीय प्रश्न—एइ ये जेइन शाख मते कत बतसरेर पुत्र दत्तक हइते पारे, एवं ताहार संख्या कि ।

चतुर्थ प्रश्न—एइ ये पुण्य पुत्र राखनेर एवं ताहार सिद्धि हृद्योनेर जैन्ये कि कि नियम घटे इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुवकटवरटगरलेनसिलीसाहेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयमेमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र-
मेवं तत्समर्पितमसीयतनामाख्यं पत्रं च यदेतदन्दीयजुनमासीयप्रथमदिन-
सम्बन्धिबुधवासरे सादृष्टिकावशाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदव-
लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतसगजक(र)स्थावरसमुदायस्य स्वामी उत्तमचन्द्रनाहारः स्वकीयपोष्यपुत्रविवेचनाकरणार्थं मतिचन्द्रनामोऽसीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगं कृत्वा तस्मै चासीयनामाख्यं पत्रं लिखित्वा दत्त्वा मृतः स्यात्तत्पुत्रमतिचन्द्रस्य स्वजीवनदशायामुत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रविवेचनाकरणस्या-
वकारोऽजाते सत्येव मरणेनोत्तमचन्द्रस्य पत्नी मायाकोमराख्या पोष्यपुत्र-
विवेचनाकरणक्षमतां रक्षत्येव जैनशास्त्रानुसारेण पतिमरणानन्तरं पुत्र-
वत्याः पत्न्याः पतिवत् कार्य्यमात्रकरणे स्वाच्छन्द्येन पुत्रशून्यायाः पत्यनु-
मतौ सत्यामसायां वा शतीनाम् आशयां सयामसायां वा उच्यंथैव पोष्य-
पुत्रकरणक्षमताया अर्थसिद्धत्वात् । तत्र चोत्तमचन्द्रनाहारेण स्वपितुः पाल-
कपुत्राय मतिचन्द्राय स्वकीयपोष्यपुत्रविवेचनाकरणाख्यायां इत्तायामपि
देवात् तदकृत्यैव मतिचन्द्रस्य मरणे सत्यपि जैनशास्त्रानुसारेण पत्यनु-
मतिमन्तरेणापि पोष्यपुत्रग्रहणाधिकारिण्याः पतिमरणानन्तरं पतिवत् स्वा-
च्छन्द्येन, कार्य्यमात्राधिकारिणश्चोत्तमचन्द्रनाहारस्य पत्न्या मायाकोम-
राख्या(या)स्तद्विवेचनाकरणक्षमतायामपि बाधकाभावाच्चेति ॥ • ॥—

अत्र प्रमाणम्

यस्या स्त्रिया भर्ता नास्ति सा यद् भर्तुं तद्व्यापयतु इति गौतमप्रहरी-
यमन्यधृतवर्धमानस्वामिवचनम् ॥ १ ॥

अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे कुरुजङ्गलदेशः स्थितः । तस्मिन्
हस्तिनापुरे यज्ञजङ्घारस्यो राजाऽभूत् । तस्य मह यवतीयतिदेपता
वज्रमतीपट्टराज्ञी आसीत् । तस्मिन्नेव नगरे कमलकान्ताख्यः कश्चि-
देको धनी स्थितस्तस्य कमलाश्रीनाम्नी पत्नी बभूव । तस्य श्रेष्ठिनो

१. पोष्यपुत्र—व्यप० । २. पुत्रपुत्र—व्यप० । ३. रक्षत्येव—व्यप० ।

४. वेन—व्यप० । ५. स्वाच्छन्द्येन—व्यप० । ६. पुत्रशून्यायाः—व्यप० ।

७. शतीनाम्—व्यप० । ८. पोष्य—व्यप० । ९. माये—व्यप० ।

१०. भर्ता—व्यप० । ११. दद०—व्यप० ।

द्वात्रिंशत्कोटिपरिमिता मुद्राः स्थिताः । तासु मध्येऽष्टकोटयो मुद्रा-
 मृन्मध्ये निस्ताताः पुनरष्टौ कोटयो मुद्रास्तरणीषु, व्यवहारार्थं स्थापिताः,
 पुनरष्टौ कोटयो मुद्राः देशान्तरे व्यवहाराय प्रेषिताः, तदनन्तरमष्टौ
 कोटयो मुद्राः गृहेषु स्थापिताः । एवं त्रिंशत्सहस्रोत्तरद्विलक्षपरिमिता
 धेनवः स्थिताः । एवं तस्य पञ्चशतपरिमिता अधिकारिणः स्थिताः ।
 तेषु मध्ये एको गाथापतिवंशोद्भवः सुमतिशिरोमणिनामधेयो महा-
 मतिरासीत् । स तु धनिना कमलाकान्तेन पुत्रवन्मन्यते । स तु कमला-
 कान्तः किञ्चित्कालानन्तरं ज्वरातुरः सन् परलोकं गतवान् । ततः
 सप्तवर्षानन्तरं स गाथापतिवंशोद्भवः सुमतिशिरोमणिर्विद्युत्पातेन प्रणष्टः ।
 तदनन्तरं कमलास्त्रियाः सहायाभावाद्धनरक्षाप्रमादो जातः । तदैकस्मिन्
 समये उदासीनतया मनस्येतद्विवेचितमिति । यदात्मीयं विना संसारादि-
 रक्षा नो भवितुमर्हति, अत एकः पालकपुत्रो विधेयः । ततस्तस्मिन्नेव समये
 तदुद्यानपालेनागत्य श्रेष्ठिकं प्रति निवेदितम् । यदशोकवाटिकायां पञ्चद-
 शशतपिमियुं क्लृप्तचतुर्विधबोधशाली(य)धर्मधोपसरितानामाचार्यैस्समा-
 गतः । तस्य दर्शनार्थं हस्तिनापुरवासिभिस्तत्रैव गम्यत इति । तत
 उद्यानपालामिहित निशम्य कमलास्त्रिया श्रेष्ठिकया धनवत्या तद्वेदर्श-
 नार्थं तत्रैवोपस्थितम् । (तत्र च) धर्मपुराणीयकथाविशम्य तमाचार्य-
 मञ्जलिं यद्ध्वा “भो भगवन्, मम स्वामिनामरक्षा धनरक्षा आत्मनोऽपि
 रक्षा कथं भवेदिति” पृष्टम् । तदा श्रेष्ठिकाभिहितं श्रुत्वा आचार्यैषु
 चतुर्मारब्धम् । “वरं यदद्य” प्रभृति भाषाम्पन्तरेऽशोकवाटिकायां खलु
 पशोरालये” क्षत्रियजातयो द्वात्रिंशदर्षवयस्कृष्टदेवराजसप्तविंशतिवर्ष-

१. निस्ताता — व्यप० ।

३. नामधेयो — व्यप० ।

५. मनसे — व्यप० ।

७. क्लृप्तमगजः — व्यप० ।

८. वर्त — व्यप० ।

११. पशो — व्यप० ।

२. अष्टौ — व्यप० प० ।

४. विपुन्यातेन — व्यप० ।

६. चतुर्विधबोधशालीधर्मधोपसरितानामाचार्यैः — व्यप० ।

९. पृष्टम् — व्यप० ।

१०. यद्वत् — व्यप० ।

ययस्कद्वितीयहंसराजद्वाविंशतिवर्षवयस्कतृतीयधनराजपोडशवर्षवयस्कच-
तुर्थधर्मराजास्या एकमातृकर महाजना आगमिष्यन्ति । तन्मन्त्रे
अभिलषितमेकं कश्चित् पुत्रत्वेन स्वीकुर्विति” तदनन्तरमाचार्यमुखात्
श्रेष्ठिका तेषां यार्तां श्रुत्वा सुप्रसन्नेव तत्रमस्कृत्य पुनः पृच्छति । “यतः
किं कृत्वा स्वे..... इति ।” तदभिहितं निश्चयाचार्यो वदति स्म ।
“यद्यपि ऋषभदेवस्य न्याह्नानि पूज्यानि, तदनन्तरं गुरुपुस्तकयोः पञ्च-
चोपचारेण, पोडशोपचारेण वा पूजा कार्या” इत्युक्तम् । एवं गुरुमक्ति-
विधेया, पश्चाद् गुरुमुत्तमान्मङ्गलवाक्यं श्रुत्वा पश्चान्निकुलदेवीं प्रपूज्य
तदनन्तरं चतुर्विधसिंहसाक्षिके एवं देशाधिपतिसमीपे पुनः गृहीत्वा निज-
ज्ञातीयमोजनाय भक्षितविधेया इत्य दम्पतीगौजयित्वा एवं शुभ-
मुहूर्तं दृष्ट्वा ‘नमो अरिहतायम्’ इत्युक्त्वा तं स्वपदं निवेश्य यद्रोलीति-
लक्षविन्दुमुत्तादामतृणफलफलचूर्णानि तस्मै दातव्यानि एवं शङ्ख-
ध्वनिभैरी (ध्वनिः) पुनर्नानावाद्यनृत्यादिकं कर्तव्यम् । एवं प्रकारेण
पुनः सौभाग्यवतीभिः स्त्रीभिः सहगीतध्वनिः स्वीयस्वीयमुखेन नानाविध-
मङ्गलाचारो विधेयः । एष अक्षया निजज्ञातिभ्य एवायथाऽन्येभ्योऽद्रव्य-
मथवा श्रीफलादि दातव्यम् । एवं निर्देनश्चेत्तेन पुगीफलभेष दातव्यम् ।
रात्रिजागरणमपि विधेयम् । तन्मूलादिकमपि प्रत्येकं प्रत्येकं दातव्यम् ।
अधिकं तु आचारादि आकरे द्रष्टव्यम् (?) । अथ किञ्चिन्मात्रमुक्तम् ।
श्रीवर्द्धमानस्याभिहितं वाक्यं श्रुत्वा पुनर्वदति “भगवन्, कदाचि-
दस्ती धर्मे न रथास्यति, यतः स्वे (?)” पुनो यदि मम सेवानिरतो न
गन्धेदेवं कुर्व्यसनेन धनक्षयं कुर्यात्, तदा मया किं कर्तव्यम्” इति ।
तदीयं वाक्यमाचार्येण श्रुत्वा पुनरुक्तं “यद्यप्यसौ धर्मे न रथास्यति तदा
स्याज्यो यथा अहिना दष्टमङ्ग पठनेस्त्यज्यते, तथा यः पोष्यपुत्रस्तं कथं
न त्यजेत्” इति तदीयमभिहितं श्रुत्वा पुनस्तमाचार्यं नमस्कृत्य निजगृह-

१. धनिः—व्यप० ।

२. निजज्ञातिभ्यरेत्यन्ता द्रव्यद्रव्यम्—व्यप० ।

३. निर्देनश्चेत्तेन—व्यप० ।

४. इवेत्तेन पुगीफलभेष—व्यप० ।

५. किञ्चिन्मात्रेण—व्यप० ।

६. पुनर्वदति—व्यप० ।

७. यो पुत्रमुक्तं—व्यप० ।

मागत्य तत्राशोकवाटिकायां चत्वारः सेवका नियोजिताः । यदा मासः पूर्णो जातस्तदा आचार्यनिर्दिष्टाश्चत्वारो महाजनास्तस्यामशोकवाटिकायामागताः । तेषामागमनं दृष्ट्वा श्रेष्ठिकनियोजिता आगत्य कमलाश्रये प्रति तेषामागमनवृत्तान्तं विज्ञापितवन्तः । कमलाश्रीरपि सद्वृत्तान्तं श्रुत्वा तांश्चतुरो गृहमानीय आचार्याज्ञया पुत्रत्वेन तेषां श्लेष्ठं देवराजास्य स्वीकृतवतीति गौतमप्रश्नीयमन्यलिखनम् ॥१॥

श्रीसिंहपुरनगराधिपतेः सिंहसेनस्य सिंहावतीनाम्नी महिष्यासीत् । तया सह सुखेन राज्यं कृतम् । तत्रानन्दपरमानन्ददेवानन्दाः क्षत्रिय-वंशोद्भवाः दुःखिनस्त्रयो आतरः । तेषु मध्ये आनन्दाभिधान एको आता धेनुं जुगोप । परमानन्दाभिधानो द्वितीयो आता विविधकाष्ठमानीय विक्रयामास । देवानन्दाभिधानस्तृतीयो आता शिशुः स्थितः । तदा सर्वैर्नगरस्थैर्जनैरानन्दस्य गोपाल इति नाम कृतम् , द्वितीयस्य परमानन्दस्य काष्ठजीवीत्यभिधानं कृतम् परन्तु ते त्रयो आतर एकस्मिन्नेव स्थाने स्वकीयं स्वकीयं कार्यं कृतवन्तः । तत्रैकं यतिं विलोच्य त्रिभिर्भ्रातृभिर्मिलित्य तं यतिं नत्वा स्थितम् । तदा स यतिस्तान् प्रति धर्ममुपदिष्टवान् । तदा ते मुनिधम्मोपदेशं निशम्य प्रीतिरता बभूवुः । पुनः साध्वाननात् परिमितं वापयं श्रुत्वा तेनाभ्यस्तं रात्रौ जलं न पातव्यमिति । तत्र फानने पुनश्च धेनुं पालयता तत्रैव निम्नगाकूले श्रीऋषभदेवस्य मुग्धयी प्रतिमां विधाय तत्रैवेकं गृहं कारयित्वा तन्मध्ये श्रीभगवतः प्रतिमा स्थापिता । तत्र प्रतिदिनं तेन तदर्चनं कृतम् । तत एकस्मिन् समये ऋषिमुखात् भक्तामरस्य माहात्म्यं शुश्राव । ततः ऋषिरानन्दं भक्तामरं पाठयित्वा जगाम । तदनन्तरमानन्दारूपः श्रीभगवतोऽपि प्रतिदिनं भक्तामरं स्मरतिस्म । तदेकस्मिन् दिने चक्रेश्वरीनाम्नी देवी प्रत्यक्षमागत्या-

१. तत्रानेकवाटिकायाम् व्यप० ।

२. तदा न्वर० ।

३. तद्वृत्तान्तम्० न्य० प० ।

४. तांश्चतुरो व्यप० ।

५. मृगामयी व्यप० ।

६. प्रतिमामभिधाय व्यप० ।

७. स्मृति २३ व्यप० ।

८. प्रत्यक्षं प्रापत्य व्यप० ।

स्मिन्नगरेऽधिपति (स्त्वं) भविष्यसीति वरं दत्त्वा अन्तरहिता^१ जाता । ततः किञ्चित्कालानन्तरं तन्नगरस्याधिपतिमृतः तस्यात्मजो न स्थितः । तदनन्तरं तस्य महिषी सिंहावती नाम्नीपुत्रशक्तानुरा परमास^२...र्द्धदिन पर्यन्तं राज्यं कृतवती । तदैकस्मिन् समये वनयात्रार्थं महिरी सखीभिः^३ सह मिलित्वा वनं जगाम । तत्र कानने निम्नगाकूले एकं स्थानं दृष्टवती । सिंहावतीनाम्नी राज्ञी तत्रालये गत्वा श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयी^४ प्रतिमां विलोक्य तस्याः प्रतिमायाः स्तुतिं चकार । पुनस्तस्याग्रे आनन्दो भक्त-मरं^५ स्मरति^६ स्म । तत्रैव परमानन्ददेवानन्दो स्थितो^७ । तान् प्रीन् प्रातृन् विलोक्य मनस्येतद्विषेचितम्-यतो मम पुत्रा^८ न स्थिताः किन्त्वय भगवता ऋषभदेवेन त्रयः पुत्रा मत्स्यं दत्ताः, अद्यैव मदीयं सर्वं दुःखं गत-मिति^९ महिषी विचार्य आनायितान् तान् पुनः पुनर्विलोक्य पृच्छति स्म “हे परमासः, युष्माकं किमाख्यातान् युष्माभिः प्रकाशनीयाः ।” तदा त्रयो आतरोऽञ्जलिं यज्वा, तन्मध्ये आनन्दाभिधेयो ज्येष्ठप्राता धदति स्म “हे अभ्य, वयं त्रयः सहोदराः, मम आनन्द इत्याभिधानम्, द्वितीयस्य परमानन्द इत्यभिधानम्, तृतीयस्य देवानन्द इत्यभिधानम् । तन्मध्ये ज्येष्ठ आनन्दाभिधानः श्रीऋषभदेवस्याग्रे सिंहावती महिष्या पत्ररत्नेन स्वीकृतः । तस्मान् काननात् कश्चिदेको मृत्युः स्वयमेव प्रेषितः “त्वया तत्र गत्वा सुमत्यधिशरिणं प्रति वक्तव्यम् भवता-चन्द्रशेखर-कर्णलोचन-रूपसेना-स्यैरगास्यैः सह पञ्च द्रव्याणि शृङ्गादीनि गृहीत्वा तत्र गन्तव्यमिति” । तत्रैव तस्मिन् समये श्रीसिंहकेसरसूरि^{१०} नामाचार्यस्समागतः । तत्रै-वानन्दाख्येन पुत्रेण सह महिषी धम्मोपदेशमाकर्ण्य तमाचार्यं पृच्छति स्म “भगवता पोथ्यपत्रैस्तवो वक्तव्यः” तदीयाभिहितं निशम्य वरुणमारुधम् “यतो” गोतमप्रश्नीयत् श्रीमज्जिनेश्वरस्य नवाङ्गीं पूजां कृत्वा पश्चाद्

१. आहिता—व्यप० ।

२. सखीभिः—व्यप० ।

३. भक्तमरम्—व्यप० ।

४. न प्रपुत्रान्—व्यप० ।

५. ०सरि—व्यप० ।

६. परमास—व्यप० ।

७. मृन्मयी—व्यप० ।

८. स्तुतिरम्—व्यप० ।

९. गत्वा—व्यप० ।

१०. यतो—व्यप० ।

गुरुपुस्तकज्ञानोपकरणवस्त्रद्रव्यादिपूजा पञ्चोपचारेण षोडशोपचारेण वा कार्या” इत्युक्तम् “ओरस पुत्र जन्मांतरसमयोत्सववत् पालकपुत्रोत्सवः कर्तव्यः । तदनन्तरं चतुर्विधसिंहसाक्षिके निजकुलदेवी पूजनीया, तदनन्तरं स्वकीयज्ञातिभ्यो भोजनं मिष्टान्ने रससंयुक्तैर्दद्यात् । तदनन्तरं ताम्बूलवस्त्रद्रव्यश्रीफलपूगीफगानि च प्रत्येकं दातव्यनि एतदपेक्षयाधिक-पुत्रोत्सवविधिराचारादनकरे द्रष्टव्यः” । एतत् सिंहकेसरसूरिणाचार्यैरेकम् तदा पूजाद्रव्यं गृहीत्वा अमात्यैः सह सुमिति-राजगाम । पुनः सिंहावती राक्षी आनन्देन सह श्रीऋषभदेवस्य मृन्मयी प्रतिमां विधाय षोडशोपचारेण प्रतिमां प्रपूजितवती । तदनन्तरं तस्य स्तुतिसमये श्रीऋषभदेवस्य सकाशात् पुष्पमानन्दस्य शरसि पपात । तदा आकाशात् “जय जय” इति शब्दो जातः । इत्यारच्यम् तदा सुमांतिना षण्दशोत्तरकर्णलाचनरूपसेनारत्यर्मन्त्रिभिः सह ५ (अ) तद्द्रव्याणि गृहादानीय तस्य आनन्दस्याग्रे स्थापितानि । तदनन्तरं तैः पञ्चद्रव्यैः तत्तत्कार्याणि तेन कृतानि । तदनन्तरं तस्मात् काननात् अमात्यैः सह राहुबादन्नमेरीनानाप्रकारादिचनिगीतादिज्ञातिसौभाग्य-वती दिभिः सह महामहोत्सवमानीय स्वगृहमागत्य आनन्देन राज्य-सिंहासने स्थिता । तस्य परमानन्दो द्वितीयो भ्राता युवराजः कृतः । तस्य देवानन्दस्तृतीयो भ्राता भटपतिः कृतः । किञ्चित् कालानन्तरं तद्देश-विपतिभिः सह तस्य युद्धमभूत् । पुनस्तान् जित्वा हुसेन राज्यं कृतवान् । इति भस्तामारस्तुतिमन्त्रलिसमम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण ज्येष्ठपुत्रः पोष्यपुत्रो भवितुं शक्नोति, जैनशास्त्रे ज्येष्ठपुत्रस्य पोष्यपुत्रताया निषेधाभावात्, तच्चासौ पूर्वेषां तच्चाद्यानु-सारेण व्यवहरतां राज्ञां वणिजा च स्त्रीणां ज्येष्ठपुत्रस्य पोष्यपुत्रकरणस्य लिखितत्वेनेदानीन्तनानामपि जैनशास्त्रानुसारेण व्यवहर्त्रीणां स्त्रीणां तथा व्यवहारस्य भवितुं शक्यत्वाच्चेति—

अत्र प्रमाणानि उपरिलिखितानि त्रीणि ॥ २ ॥

भो गौतम, अस्माकं मते ज्येष्ठकनिष्ठत्वे दत्तकः शिशुर्मातुः
सर्वलक्षणसंयुतः—इति गौतमप्रश्नीयग्रन्थभूतवर्द्धमानस्वामिवच-
नम् ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण गर्भाधानदिवसमारभ्य द्वात्रिंशद्वर्षपर्यन्तवयस्कः
पोष्यपुत्रो भवितुं शक्नोति ॥०॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

कियद्वायनमितवयस्कः पुत्रो मातुः इति गौतममुनेः प्रश्नः । यदा
तदा भगवता वर्द्धमानरवामिनोक्तम् स गर्भमारभ्य द्वात्रिंशद्वर्षपर्यन्त-
वयस्कः पुत्रो मातुः—इति गौतमप्रश्नीयग्रन्थलिखनम् ॥०॥०॥०॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

जैनशास्त्रानुसारेण पोष्यपुत्ररक्षणार्थमेवं तत्सिद्ध्यर्थमेते^१ नियमाः ।
तथाहि—ऋषभदेवास्यस्य तद्देवस्य प्रथमतो नवाङ्गपूजनं तदनन्तरं गुरु-
पस्तकयोः पञ्चोपचारेण षोडशोपचारेण वा पूजा कार्या एवं गुरुभक्तिर्वि-
धेया, परचाद् गुरुमुत्सान् मङ्गलवाक्यं श्रुत्वा निजगुरुदेवीं प्रपूज्य गुरु-
गुरुपत्नीज्ञातिज्ञातिपत्नीनां चतुर्णामिव ग्रामाधिपतेर्विषेदनं कृत्वा पुत्रं
ग्रहीत्वा निजज्ञातीनां सपत्नीकानां भोजनं दत्त्वा शुभमुहूर्तं दृष्ट्वा^२ म(न्त्र)-
पाठपूर्वकं स्वस्थाने बालकमुपवेश्य रोलीयतिलकविन्दुमुक्तविन्दु^३
तयद्गुलचूर्णानि वा तस्मै ललाटे दातव्यानि, एवं शङ्खध्वनिमेरीत्याद-
नानावाद्यनृत्यगीतादि नानाप्रकारेण सौभाग्यवतीभिः स्त्रीभिः स्वीयस्वीय-
मुखेन नानाविधमङ्गलाचारो विधेयः । एवं अद्या^४ स्वज्ञातिभ्यो वस्त्र-
द्रव्यताम्बूलश्रीफलपूगीफलानि दातव्यानि^५; निर्धनश्चेत् पूर्वाफलमेव
दातव्यम्, रात्रिजागरणमपि विधेयम्-इति गौतमप्रश्नीयग्रन्थामरस्तुति-

१. सिद्धर्थम् व्यप० ।

२. दृष्टा व्यप० ।

३. अद्या व्यप० ।

४. दातव्यानि व्यप० ।

सन्तनाथचरित्ररूपसेनचरित्रप्रश्नोत्तरसार्द्धशतकराबप्रश्नसूत्रिषिद्धान्तादिजे-
नशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणानि प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणान्येवेति—

एतदब्दीयकुलादमासीयाष्टाविंशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे^१ यामद-
यानन्तरं मयेय व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवचनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

१०७—रुक्कारि आदालत देओनी सदर इ०सन १८३१
शाल तारिख ४ माहे जुन मोलावेक सन १२३८ शाल तारिख
२३ ज्यैष्ठ रोज शनिवार एइ आदालतेर हाकिम श्रीयुत कटवरट
थरनेल शिली साहेबेर बैठके—

कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय घनाम गङ्गाचरणसेन ।
साएलानेर उकिल मुनशी होशन आलि ओ सदासुक-
पण्डित, विपक्षेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल ओ मुनशी फजर
होसेन हाजिर आसिलेन । एइ आदालतेर हाल सनेर २१ आपरे-
लेर हुकुमानुसारे साएलानेर खास आपिलेर सओयाल ओ
साहार सम्पर्कीय कामजातसकल अद्य आमार बैठके दरपेप
दइया एइ आदालतेर हाकिम रावरट^२ हालडन राटरि
साहेबेर पे तारिख मजकुरेर रुक्कारि ओ आदालत मज-
कुरेर हाकिम हेनरि शिकिषपिएर साहेबेर हाल सनेर १४ मार्चेंर
रुक्कारि सम्बलित मोलाहेजा हइवाते एइ मकईमार चूडान्त

१. राश्वि—व्य० ।

२. राश्वट—व्य० ।

हुकुम प्रकाश हइवार पूर्व एइ आदालतेर पण्डितेर द्वाराय ए विषय
ज्ञात हओया आचिश्क हइलो—ये जगमोहनरायेर पुत्र महेश-
चन्द्ररायेर मृत्युर पर महेशचन्द्ररायेर भगिनी श्रीमती ऐ मृत्यु
व्यक्तिर त्याज्य वस्तुते ओयारिप मते हिस्सा पाइवार सत्त्व राखे
कि, ताहार खुल्यतातगण कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय ।
अतएव हुकुम देया भाइतेछे—ये पे रुबकारिर सकल
कागजात सम्बलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने
समर्पण करा जाय—ये कागचसकल दृष्टे करिया निचेर प्रस्नेर
उत्तर ओ पाच दिवसेर मध्ये लिखेन ।

प्रश्न :—

यदि त्यात् परगणे हावेलि शिलामावादेर १० देड आनार
मालिक छणकिङ्कररायेर पुत्र लक्ष्मीकान्तराय ओ जगमोहन-
राय ओ शम्भुचन्द्रराय, एइ चारि भाता पैठक जमिवारिर
उपर आपन २ हिस्सा मते दखिलकार थाकेन । प्रथमत लक्ष्मीकान्त-
राय निःसन्तान, ओ ताहार पर जगमोहन आपन पुत्र महेश-
चन्द्रराय ओ श्रीमती कन्याके राखिया मृत्यु हय । महेशचन्द्र-
राय आपन पैठक हिस्सार उपर दखिलकार थाकिया ओ श्रीमती
भगिनी ओ कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय खुल्यतातगण
राखिया निःसन्तान मृत्यु हय, ओ ताहार स्त्री सहगामिनी हय ।
अनएव महेशचन्द्ररायेर त्यज्य वस्तु ताहार भगिनी श्रीमती, ये
मइ छण ताहार एक नाबालक पुत्र आछे, अरिबेक, कि ताहार
नुङ्गाण शम्भुचन्द्रराय ओ कमलाकान्तरायेके अर्धिवेक इति । ॥

श्रीज्जयतिराम

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिथीयुतकटवरटयरनेलविलीसहैवमर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयजुनमासीयचतुर्थदिवसीगविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिस्पर्ध-

अमेयं तत्समपितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदन्दीयजुलाहमासीत्-
नवमदिनसम्बन्धिनिवासरे सार्द्धघटिकात्रयाधिकयामद्वये मया प्राप्तं तदव-
लोक्य यादृशघोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति महेशचन्द्ररायस्य मरणोत्तरं तत्-
स्वत्वास्पदोभूतधने यदि तस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्तो न स्यात्,
पितृदौहित्रो गमे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये स्यात्, तदा तस्या-
धिकारः । जाते च तस्याधिकारे पुनस्तत्समानानां तद्भ्रात्रन्तराया-
मर्यान्महेशचन्द्रस्य पितृदौहित्रान्तराख्यामप्यधिकारः समान एव भविष्यति ।
सति च पितृदौहित्रे तत्पितृव्ययोः शम्भुचन्द्ररायकमलाकान्तरायपोर्ना-
धिकारः । यदि च महेशचन्द्ररायस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहि-
तस्य पितृदौहित्रो गमे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये नासीत्, तदा
तत्पितृदौहित्राणां स्वस्थान्यधानुपपत्त्या तद्भगिन्याः श्रीमत्यास्तत्पितृ-
दौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्काल-
पर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितृधने बुद्धितुः अधिकारस्त-
था भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च महेशचन्द्रस्य पितृदौहित्रे स्वतो महेश-
चन्द्रस्य पितुः पार्ष्वणश्राद्धपिण्डदातारि स्वतो महेशचन्द्रस्य पितुः पार्ष्वण-
श्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्याः श्रीमत्या नाधिकारः । किन्तु
तस्याः पुत्रस्यैव पुत्राणां वोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—इति यद्देशच-
लितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्णवादिग्रन्था-
नुसारिणी व्यवस्था ॥१०॥

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनि-
दौहित्रस्येव इति—दायभाग (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

इत्याद्या तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधिताद्—इति दायभागादि
(दाय भा. पृ० १३२) ग्रन्थश्रुतयाश्रवत्स्य (२१२२) वचनम् ॥ २ ॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति, तदभावे पितामहस्तदभावे पिता-
मही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयः—इति च श्रीकृष्णतर्क-
ालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१८) लिखनम् ॥३॥

पत्नीदुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादि(सामा. पृ० १५१)अन्य-
धृतयाश्वत्थम्(२।१३५)वचनम् ॥४॥

यद्यपि दुहितृभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तः
तथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्वण्यपिण्डदत्त्याभावाच्चाधिकारः, दुहितुस्तु
दौहित्रात् पूर्वमज्ञादज्ञात् सम्भवति—इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकारः
इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१०)
लिखनम् ॥४॥

एतदब्दीय-अगस्त्यमासीयप्रथमदिनसम्बन्धितोमवासरे घटिकैफापिक-
यामद्वयान्तरं मयेयं व्यवस्था दत्ता इति ।

श्रीज्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०८ रोजकारि मिछिल सदर देओयानि आवातत हेनरि
शिकरीपियेर साहेब आदालत मजकुरेर हाकिमेर बैठके तारिख
७ शेतम्बर १० सन १८३१ मोतायाक २३ भाद्र वाङ्गला सन
१२३८ साल रोज बुधवार ।

आनन्दमयीदेवी

छापला

छापलार उकिल मुनशी गोलांम वतुल ओ राधामोहनमिश्रि
उकिल मुनशी होशान आलि ओ श्रीमन्तमिश्रि ओ रामनाथ
आपाप्येर उकिलान् मुनशी दादार वकूशी ओ मौलुवि करम
होशान हाजिर आइल । एइ आदालतेर हाकिम माण्टेकु हेनरि
टरम्बल साहेवेर शन हालेर १६ आगष्ट तारिखेर हुकुम मोता-
यक एइ मोकईमार शओयाल ओ गयरह कागजात एइ आदा-
लतेर हाकिमान् रावट हालदन राटरि साहेब ओ आलक
सुन्दर रास साहेब ओ माण्टेकु हेनरि टरम्बल साहेवेर सन हालेर
३० जुन ओ १६ जुलाई ओ १६ आगष्टेर लिखित^१ राय सम्वलित

प्रे आईल । तत परे छायेलार उकिल मुनशी गोलाम वतुल
 द्राएलार तरफ हइते एक केता सओयाल दाखिल करिलेक, पढा-
 ल । यथा ए विषय ये नावालकेर मृत्युर पर प्रथमवो शाखानु-
 जाइ कोन व्यक्तिके ताहार उत्तराधिकारित्य, अर्शिवे, आर कि
 प्रकारे मोछुमोत आनन्दमयी ओ राधामोहन नावालकेर उत्तरा-
 धिकारि ओ हकदार हइवेक, अनुमोदन करा उचित हइल ।
 अतएव हुकुम हइल ये—आनन्दमयी ओ राधामोहनमिश्र
 आईल दुइ दरखास्त, जाहा एइ आदालतेर हाकिमानेर राय ले-
 गार पर दाखिल हइयाछे, एइ आदालतेर परिदतके एइ हुकुमे
 समर्पण करा जाय-ये परिदत मजकुर उपरेर लिखित यशयेर
 जओयाय तत्क्षणस लिखिया दाखिल करे, एवं मोकईमा
 मुलतबि थाके इति ।

श्रीजर्जयतिराम्

एतद्भर्माधिकरणेऽधिपतिभीषुतहेनरीसिक्किस्पीयरसाहेबधर्माधिकरण
 लिखितैतद्वदीयसितम्बरमासीयसप्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप—
 पत्रमेवं तत्समर्पितमानन्दमयीदेव्या निवेदनपत्रं राधामोहनमिश्रस्य निवेदन-
 पत्रञ्च यत्तन्मासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिननिवासरे पादोनघटिकावतुष्टया-
 धिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य मादृशबोधो जातस्तदनुसारे-
 णोत्तरं लिख्यते ।

पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्याप्राप्तव्यवहारस्य^१ मरणोत्तरं
 प्रथमतस्तत्पितृदौहित्रस्याधिकारः, यदि च तत्पितृदौहित्रस्तस्यैवाप्राप्तव्यव-
 हारस्य मरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा न भविष्यति, तदा तत्पितृ-
 दौहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्गगिन्योरर्थादहित्यास्तिमरण्योः तत्पितृ-
 दौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतयोस्तत्सम्बन्धमूलीभूतयोश्च^२ तत्पितृदौहित्रोत्पत्तेः
 प्राक्कालपर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्धने दुहितु-

रधिकारस्तथा भ्रातृघनेऽप्यधिकारः । सत्सु चाप्राप्तव्यवहारस्य पितृदौहित्रेण स्वतोऽप्राप्तव्यवहारस्य पितुः पार्वणश्राद्धपिण्डदातृषु स्वतोऽप्राप्तव्यवहारस्य पितुः पार्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्योऽप्राप्तव्यवहारस्य भगिन्योरर्थादहिल्याकृमिण्योर्नाधिकारः; किन्त्वप्राप्तव्यवहारस्य भगिन्योः पुत्राणामेवाधिकारः तत्पितृदौहित्राभावे तत्पितामहस्य, तदभावे तत्पितामह्या अर्थादानन्दमन्यास्तदभावे तत्पितुः सोदरभ्रातृस्तदभावे तत्पितुर्वैमात्रेयभ्रातृस्तदभावे सोदरभ्रातृपुत्रस्य तदभावे तत्पितुर्वैमात्रेयभ्रातृपुत्राणामर्थाद्राधामोदनप्रभृतीनामधिकारः—इति षड्देशचलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाधियादभङ्गार्णवधियादार्णवसेतुदायक्रमसंग्रहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । तत्सुतः—इत्याद्युपरिलिखित(दाभा. पृ० १५१)ग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्य(२।१३५, वचनम् ॥१॥

।पतुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बाँद्धस्यो धनिदौहित्रस्येव—इति दायभाग (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्ताथापि तस्याः स्त्रीत्वेन पार्वणपिण्डदत्याभावाच्चाधिकारः, दुहितुस्तु दौहित्रात् पूर्वमन्नादभ्रातृ सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१०)लिखनम् ॥३॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरः पुत्रपितृवैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्रपितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥४॥

एतद्वद्विधसेतुमन्त्रमासीद्यङ्घ्रिं प्रतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे मधेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०६ रोवकारि मिसिल आदालत देओयानि सदर तारिख २२ माह नवम्बर शन १८३१ इ० मतावक ८ माह अग्रहायण शन १२१८ वाङ्गला रोज मङ्गलवार ऐ आदालतेर हाकिम श्री-युत मान्तेगिओ हेनरि टरम्बल साहेबेर बैठके ।

मृत काशीनाथदत्तेर स्त्री करणामयी प्रभृति—आपीलाण्टान् चन्द्रमालार पति जयचन्द्र घोष— रेप्पाडस्ट

आपीलाण्टगणेर उकिलगण मुनशि दादार वक्स ओ मुनशी गोल्हाम धतुल, रेप्पाडस्टेर उकिल सदासुक पण्डित हाजिर आसिल । ए मकदमा एइ शनेर माइ मासेर २५ तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य आमार बैठके उपस्थित हइया एइ मकदमा बायत आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ कोर्टेर फयशला ओ छानि तजयिजेर दरखास्त ओ इ० १८३० शालेर जुलाइ मासेर १५ तारिखेर लिखित ए मकदमार इनफशलि रोवकारि ओ कमलाकान्तराय प्रभृति वनाम गङ्गाचरणसेनेर मकदमा बायत ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल याहा रेप्पाडस्टेर उकिले हुइ टाका मुल्लेर एक किता फेहरेस्त द्वाराय अद्य लम्बरे दाखिल करिलेक दृष्टे आसिल । ताहार पर आदालतेर पण्डितके हुजुरे तलब दिया (जिझा)सा करामेल—ये तोमार दाखिल करा व्यवस्थाय चन्द्रमालार स्वत्वेर उल्लेख केन छुटीयाछे, एइ क्षण तोमार अन्य व्यवस्थार द्वाराय, याहा रेप्पाडस्टेर उकिले अद्य दाखिल करिलेक, जाना जाइतेछे ये चन्द्रमाला ओ श्रीमतिर न्याय ये दौहित्र-गणेर उतपत्तिर करण घटे, गोराचान्देर त्यक्केर स्वत्वाधिकारिणि वटे । ताहार उत्तर निवेदन करिलेन ये हुजुर हइते एइ परिमाण सओयाल हइयाछिल ये शास्त्रानुसारे कोर्टेर पण्डितेर व्यवस्था यथार्थ घटे कि ना, ओ ऐ व्यवस्थाय कोर्टेर पण्डिते चन्द्रमालार पुत्रके स्वत्वाधि(कारि) लिखियाछिल, ओ तत्कालिन अर्थात् पूर्वाधिकारि मृत्युर पर लालमोहनेर, ये ताहार माता अप्राप्त व्यवहारा स्थित, जर्म हइयाछिल ना, ओ ये व्यक्तिर उत्पत्ति

ना थाके ताहार स्वत्व कोथा हइते अशिवेक । एइ हेतुक ताहाके अयथार्थ लिखियाछिलास; ओ फलितार्थ गोराचान्देर मृत्युर-पर ताहार अन्य उत्तराधिकारिण वर्त्तमान ना थाकने गोराचा-न्देर भग्नि मुसम्मात चन्द्रमाला, ये से गोराचान्देर पितृदौहित्र गणेर उत्पत्तिर कारण बटे, आपन भ्रातार मिलकीयतेर स्वत्वा-धिकारिणि हइवेक; एवं ए विशयेर विस्तारित एइव्यवस्थाय. याहा अक्ष रप्पाइएटेर उकिले दाखिल करिलेक, लिखा आछे इति । ऐ पण्डितेर एजहार दृष्टे उचित हइल ये निचेर सञ्जोयाल एइ आदालतेर पण्डितेर पर करा जाय ।

सञ्जोयाल—यद्यपि पूर्वोधिकारि निलकण्ठ तिन पुत्र, प्रथम कृष्णप्रसाद, द्वितीय प्रतापनारायण, तृतीय किर्त्तिनारायणके, राखिया मरे; ओ कृष्णप्रसादह तिन पुत्र रामराजा ओ राम-कृष्ण ओ फाशीनाथके राखिया मरिलेक; ओ प्रतापनारायण ओ एक पुत्र कालाचादके राखिया मरिल ओ कीर्त्तिनारायणह पुत्र गोराचान्द ओ चन्द्रमाला कन्याके राखिया मरिलेक; ओ सतपरे गोराचान्दह निस्थन्तान मरिलेक । अतएव शास्त्रानुसारे किर्त्तिनारायणेर स्वत्य, याता ताहार पुत्र गोराचान्दके अशिया-जिल, चन्द्रमालाके अशे, किम्या कोन व्यक्तिके । उचित ये ताहार जवाय तिन दिवसेर मध्ये दाखिल करेण इति ॥०॥

एतदुद्गर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरम्वलसाहेबधर्माधि-करणलिखितैतन्दीयलवम्बरमासीयद्वाविंशतिदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रभ-तिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयचतुर्विंशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटि-काचतुष्टयाधिकयामद्वायानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादराघोषो जातस्त-दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति कीर्त्तिनारायणस्य मरणानन्तर-मुत्तराधिकारत्वेन प्राप्तपितृधनस्य तत्पुत्रस्य गोराचौदसंस्तकस्य मरणोत्तरं-वत्सत्वास्पदीभूतघने यदि तस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्तो न स्यात्

तद्भगिन्याश्चन्द्रमालायाः कश्चिदेकोऽपि पुत्रोऽर्थाद् गोराचौदसंशकस्य पितृ-
दौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये स्यात्तदा तस्याधिकारः ।
जाते तस्याधिकारे पुनरुत्पत्त्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणामर्थाद् गोराचौदसं-
शकस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव भविष्यति । सति च पितृदौ-
हित्रे तत्पितृव्यपुत्राणां प्रभुसमर्पितप्रभपत्रलिखितानां मध्ये तदानां विद्यमा-
नानां नाधिकारः । यदि च गोराचौदसंशकस्य पुत्रमारभ्य पितुः प्रपौत्रपर्यन्त-
रहितस्य पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा तन्मरणसमये नासीत्तदा
तत्पितृदौहित्राणां स्वत्वान्ययानुपपत्त्या तद्भगिन्याश्चन्द्रमालायास्तत्पितृ-
दौहित्रोत्पत्तिमूलीभूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्काल-
पर्यन्तं यथा पुत्रादिपक्षोपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितुर्दत्ते दुहितुरधिकारः-
तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च गोराचौदसंशकस्य पितृदौहित्रे स्वतो
गोराचौदसंशकस्य पितुः पार्ष्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतो गोराचौदसंशकस्य
पितुः पार्ष्वणश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्याश्चन्द्रमालाया नापि-
कारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्राणां चोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—
इति वङ्गदेशचलितदायभागभीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवाद-
मङ्गलार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो घनिदौ-
हित्रस्यैव-इति दायभागः (पृ० २०८) ग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

दृष्ट्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इति दायभागादि-
(दा० भा० १३२) ग्रन्थपृथग्वक्तव्य (पृ० २१२२) वचनम् ॥ २ ॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति, तदभावे पितामहस्तदभावे पिता-
मही, तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्व्येमात्रेयस्तदभावे पितृसोदर-
पुत्रपितृव्येमात्रेयपुत्रः—इत्यादि च भीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ०
२१८) लिखनम् ॥ ३ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव । इत्यादि दायभागादि (दा० भा० पृ० १५१) ग्रन्थ-
पृथग्वक्तव्य (२१२५) वचनम् ॥ ४ ॥

यद्यपि दुहित्रमात्रे दीहित्रस्यैव मगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि 'तस्याः सतीत्वेन पार्व्वण्यपिण्डदत्ताभावनाधिकारः, दुहितुस्तु दीहित्रात् पूर्व्वम्—“अज्ञादज्ञात् सम्भवति” इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीका (पृ० २१०) लिखनं चेति ॥ ५ ॥

एतद्वद्दीपलवम्बरमासीत्पद्मविशतिदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयपतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११०—रोवकारि मिछिल शदर देओयाति आदाजत मज-
कुरेर हाकिम हेनरि सिकिसपीयेर साहेवेर बैठके तारिख ५ दिज-
म्बर ६० शन १८३१ साल गोतावक २१ अप्रहायण वाङ्गला
शन १२२८ साल रोज सोमवार—

वलमईनसाहि

आपीलाएट

राजा पृथ्वीपतिसाहि ताहार मृत्युर पर खड्गबाहादुरेर
अलि ओ माता राजेश्वर फोडर ओ मोछर्मात् मदनफोडर—

रेप्पाइएटान्—

आपीलाएटेर उकिल सदासुख पण्डित ओ रेप्पाइएटानेर उ-
किल मुनशी होशान आलि हाजिर हइल । तारिख १५ ओ २१
ओ २२ ओ २६ माह नवम्बरे एइ मोऊईमा रोवकारि ओ प्रीथिण
शीयान फोटेर समुदाय कागजात ओ एइ मकईमार धावत एइ
आदालतेर दाखिल करा सावेक कागजात पाठ हइया स्थकित
छिल, अय पुनराय रोवकार हइल । आमार रायेते राजा अरि-
मईनसाहिर राजा पृथ्वीपतिसाहिके पुप्यपुत्र राखनेते इच्छा ये
प्रकार उचित सात्तीगणेर साइदेर द्वाराय क्वार ओ याककाइ
शाहद पौछिल । एवं इहाओ तहकित हइल ये राजा मजकुर आपन

होस बहाले ओ स्थिर बुद्धिसे हेवानामा सकल राजा प्रथ्वीपति साहिर नामे लिखिया दियाछिल । किन्तु एतदभिन्य ओ गोरकपुरे जाहाते उभय विवादि बसति राखे, ताहार सर्वदर बेओ-याज^१ मते एवं शाखेर दाडाते ओ समुदाइक शरत शफामते राजा प्रथ्वीपतिसाहिर पुण्यपुत्रता सर्वतोभावे साव्यस्थ आसिया-छिल । से हेवानामा सकल शाखेर आज्ञानुसारे उचित बटे कि ना ? द्वितीयत्वे ये ताहार तजविज नितान्त शाखेर दाडाते एलाका हइतेछे इति । आर अजिमावादेर प्रीथिखरीयान कोटेर आदालतेर पण्डितेर एइ मोकईमार मिछिले दाखिल करा व्यय-स्थार द्वाराय प्रकाश हइतेछे—ये राजा प्रथ्वीपतिसाहिर पुण्य-पुत्रता उचित बोध हइल, आर शन हालेर २२ शेतम्बर तारिखेर हओया एइ आदालतेर हाकिम माण्टेकु हेनरि टरम्बल साहेबेर शेषकारि लिखित एइ आदालतेर पण्डितेर जयानि जओयावेते पट बोध हय ना—ये पण्डित मजकुरेर ऐ व्यवस्थाते अस्यता हइ-याछे कि ना । आर यदि स्यात् ना हइयाथाके कि जन्य हय नाहि । आर हाकिम मौछफेर शेषकारि लिखित पण्डित मजकुरेर जओयावेते बोध हय ये ज्येष्ठ पुत्र पुण्यपुत्र हइते पारे । एइ शर-सते ये उभय पुण्यपुत्रदाता ओ त्रिहिस्वा(?) एइ विषये स्वीकृत हय—ये पुत्र मजकुर उभय दुइ व्यक्ति आद्वे पण्डितदान करिबेक । किन्तु इहाते सस्पष्ट हयना—ये पुण्यपुत्रतार निर्धारितेर पूर्व ये रूप एइ मोकईमाय प्रकाश आछे, आप्त पितार मृत्युते ऐ प्रकार शरत बहाल थाके कि ना । एइ सकलेर प्रति दृष्टे आमार निकट सन्देह भजनार्थ^२ उचित ये मोकईमार कागजात एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे—ये पण्डित मजकुर कोट आ गयर-हर व्यवस्था ओ सत्संगणेर एजहार ओ मिछिलेर कागजात अनुमोदने निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाव तत्-क्षणत लिखिया दाखिल करेण पाठान जाय ।

१. प्रथमतो एइ ये सात्तीगणेर सात्तीर द्वाराय राजा प्रध्वी-पतिसाहि के पुण्यपुत्र देओया ओ लओया उभय उहार माता ओ राजा अरिमर्दनसाहि ओ रानी मदनकोडर ये रूप उचित शाखानुजाइक आयान आशीयाछे कि ना ।

२. द्वितीय—पुण्यपुत्रतार दाडासकलेर पूर्व प्रध्वीपति-साहिर आपन पीता रणवाहादुरसाहिर मरखेते ताहार सत्य-तार किछु द्यति हय कि ना । आर यदि ताहाते द्यति बोध हय, पमत द्यति रणवाहादुरसाहिर पद्य हइते पूर्व समये पुण्यपुत्रतार कछुल करखेर सचाव ये प्रकार मोछन्मात मदन-कोडर एइ मोकदेगार आपीलेर जओयावे लेखे दुर हइते पारे कि ना ।

३. तृतीय—ये छि सहगामिनी हय, सेइ स्त्री सहगामी हओयार पूर्व आपन पुत्र अन्य कोन व्यक्तिके पुण्यपुत्र देओयाते यथा-शास्त्र पट रूप निषेध आछे कि ना ।

४. चतुर्थ—प्रध्वीपतिसाहिर छय बतसर बयक्रमे ताहार पुण्य-पुत्रतार निषेध कि ना ।

५. पञ्चम—ज्येष्ठ पुत्र हेतुक तस्य पुण्यपुत्रतार आपत्य जेला-गोरकपुरेर प्रचलित दाडा ओ शाच्छादात ये प्रकार राजा उद्योतनारायणसिंह एवं द्वितीय राजासकलेर सात्तीते शाछद पौछिल दुर हइते पारे कि ना ।

६. षष्ठ—राजा अरिमर्दनसाहिर लिखिया देओया हेवा-नामा सकल दोरस्त हय कि ना । आर यदि स्यात् दोरस्त हय, तवे राजा प्रध्वीपतिसाहि पुण्यपुत्रतामिन्य ताहार द्वाराय देवार विषये हकदार हय कि ना ।

७. सप्तम—यदि स्यात् पुण्यपुत्रता ओ हेवानामासकल दुइ-ना दोरस्त हय, राजा अरिमर्दनसाहिर स्त्री रानी मदन कोड-

र ८५ लम्बरेर इ० शन १८२६ शालेर २८ मार्च तारिखेर लिखित एइ आदालतेर सावेक हाकिम कोर्टनि इरिमट साहेवेर रोवकारिते ये प्रकार लेखा, आछे आपन जीवदशा पर्यन्त उहार स्वामीर विषये कावेज ओ दखिलकारिर हकदार हइते पारे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम

एतद्वर्माधिकरणाधिपति श्रीहेनरीकिन्निउपोरसा हेव-धर्माधिकरणा-लिताह्वरेजोशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिरादधिकाष्टादशराताब्दीयदिशम्बरमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिस्पर्धमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रबातञ्च यत्तदब्दीयतन्मासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे घटिकाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

साक्षिणां साक्ष्यद्वारा राज्ञः पृथ्वीपतिसाहिसंशकस्य पुत्रप्रतिनिधित्वेन दानं ग्रहणं चैतद्वयं तस्य मानू राज्ञो अरिमर्देनसाहिसंशकस्य चैवं राश्यामदनकोमराश्यापारब्धं यथोचितं भवति तथा शास्त्रानुसारेण जातमिति ।

अथ प्रमाणम्—

माता पिता वा दद्यातां यमदमिः पुत्रमापदि ।

तद्वशं प्रीतिसंयुक्तं स होयो दन्निमः सुतः ॥—इति मिताक्षरा (पृ० २११)

वीरमित्रोदयादि-(पृ० ६०८) ग्रन्थप्रथममु(६।१६८)वचनम् ॥ १ ॥

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् बन्धूनाह्वय राजनि चावेद्य निवेशनस्य मध्ये व्याहृतिमिहुंत्वा अदूरवान्धवं बन्धुसन्निकृष्टमेव प्रतिगृहीयादइत्युपलितित(मिता पृ० २१४)ग्रन्थवृत्तवशिष्टवचनम् ॥ २ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

पुत्रप्रतिनिधिताया रीतीनां पूर्वं पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य जनकपितृ रण-
वहादुरसाहिसंज्ञकस्य मरणात् पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य पुत्रप्रतिनिधितास्य-
तायाः क्षतिर्यद्यपि सन्देहविषयीभूता भवति तथाप्येतादृशो क्षती रणवहादुर-
साहिसंज्ञकस्य सकाशात् पूर्वसमये पुत्रप्रतिनिधितायाः स्वीकारेणैतद्विवादे
‘एतद्वर्माभिकरणोत्तरपत्रे राश्या मदनकोमराख्यया लिखितेन दूरीभवितुं श-
क्नोति, रणवहादुरसाहिसंज्ञकस्य तादृशस्वीकारेण तथानुमतेरवगमादिति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रथमप्रमाणम् ॥ १ ॥

मात्रा भर्तनुज्ञया प्रोपिते प्रेते वा भर्तारि पित्रा बोभाभ्यां वा सवर्णाय
यो' यस्मै दीयते स तस्य दत्तकः पुत्रः—इति मिताक्षरा (पृ० २१३) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

या स्त्री सहगामिनी अनुगामिनी वा भवति सा स्त्री सहमरणात् पूर्वः
मनुमरणात्पूर्वं वा स्वकीयपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधिकरणार्थमन्यस्मै 'सम' 'शं-
कचु' न शक्नोतीति शास्त्रे निषेधो नास्तीति ।—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्य षड्वर्षवयस्कत्वेन पुत्रप्रतिनिधिताया निषेधो
नासीत् । तत्रायं विशेषः यदि तत्समये स नोपनीतः, अथ च तज्जनकेन
पित्रा जनकपित्रमिप्रायेण तजनन्या मात्रा वा “आवयोरयं पुत्रः” इति
सम्प्रतिपत्त्या ग्रहीत्रे दत्तः स्यात्तदा पुत्रप्रतिनिध्यन्तर्गतमित्यद्वयमुप्यायणपु-
त्रताया अये निषेधो नासीत्, जनकपुत्रतायास्तत्रादत्तत्वात् । यदि च ता-
दृशसम्प्रतिपत्तिं विनैव दत्तः स्यादयं च चूडान्तैस्संस्कारैर्जन्मकेन संस्कृतः प्र-
तिग्रहीत्रा चापनयनादिभिस्संस्कृतस्तत्रापि तस्य पुत्रप्रतिनिध्यन्तर्गतमित्य-
द्वयमुप्यायणपुत्रताया निषेधो नासीत्, तत्रापि जनकपुत्रतायास्तस्मिन्
अदत्तत्वात् । किन्तु यदि षड्वर्षवयस्कः पृथ्वीपतिसाहिसंज्ञकस्तदानीमुपनीतः

स्यात्तदा दत्तकपुत्रताया नियेष आसीत्तु कृत्रिमपुत्रतायाः; यतः कृत्रिमपुत्र-
करणे ज्येष्ठभ्रूनिष्ठयोर्नियमो नास्ति, उपनीतानुमनोत्तमोरपि नियमो नास्ति,
दानस्याप्यावश्यकता नास्ति, केवलं सजातीयत्वपुत्रत्वकरणयोरेव प्रयोज-
कत्वम् । अथ चे जनकपितुः पुत्रत्वं नैव गच्छति । अपञ्च सर्वधैव दद्या-
मुष्यायणः जनकपुत्रत्वकरणयोर्द्वयोरपि आद्यादिकरः । अयमेव कृत्रिमपुत्र-
पाटलिपुत्राख्यनगरसम्बन्धिकादीर्षीलाख्यधर्माधिकरणनियुक्तगणितेन लि-
खित इति ।

अथ प्रमाणम्—

तथाहि द्विविधा दत्तकद्वयो नित्यवद्द्वयामुष्यायणा, अनित्यवद्-
द्वयामुष्यायणाश्चेति । तत्र नित्यद्वयामुष्यायणा न.म.ये जनकप्रतिगृही-
तृभ्यामावयोरयं पुत्र इति संप्रतिपत्त्याः, अनित्यद्वयामुष्यायणास्तु ये चूडास्तै-
(संस्कारे)र्जनेन केन संस्कृताः उपनयनदिमिथ प्रतिगृहीता, तेषां गोत्र-
द्वयेनापि संस्कृतत्वाद्वयामुष्यायणत्वं परन्तु नित्यम्—इति दत्तकमीमांसादि-
(पृ० १३०) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

सदृशं यं प्रकुर्वीति गुणदोषविषक्षणम् ।

पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं सविज्ञेयस्तु कृत्रिमः ॥—इति मनु (पृ० १७४,
६।१७६) वचनम् ॥२॥

त च पुत्रत्वकरस्य पिएडप्रदः, निजपित्रादीनां पिएडप्रदत्वं तस्य
तिष्ठत्येव—इति शुद्धिविवेकग्रन्थ (३१ ॥ ६ पं०) लिखनम् ॥३॥

चूडाया यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः ।

दत्तादास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते ॥—इति दत्तकमीमांसा (पृ० ७४)
दत्तकचन्द्रिकादि (दच० पृ० १६) ग्रन्थधृतकारिकापुराणवचनम् ॥४॥

चूडाया इत्यतद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिणा द्विजातीनामुपनयनलाभः,
शूद्रस्य तु विवाहादिलाभः—इति दत्तकचन्द्रिका (पृ० २१) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥५॥

वस्तुतस्तु यस्य पञ्चदशवर्षपर्यन्तं देववशाच्चूडादिसंस्कारो न जात-
स्तस्य यथाविधि गृहणोच्चरसंस्कारा अतिपत्येरचित्यादिवचनात् प्रायश्चि-

तात् महाव्याहृतिहोमं विधाय चूडादिसंस्कारे कृते दत्तकत्वं सिद्धत्वेव ।
न चोद्ध्यं त्वित्यादिवचनविरोध इति वाच्यम्, तस्येष्टिपदभ्रवणात् सामिक-
परत्वात् । पञ्च च पञ्च च पञ्चचेत्येकरोपात् पञ्च तेषां पूरणः पञ्चमः
पञ्चदश इति यावत्, तस्माद्ध्यं न दद्याद्वाः सुता इत्यर्थाच्च । एवञ्च
पञ्चमवर्षपदं स्वस्वजात्युक्तोपनयनशालोपान्त्यवर्षपरम् । उद्ध्यन्तु पञ्चमा-
द्वर्षादित्यादिवचनारम्भस्तु ब्राह्मणादीनां षोडशादिवर्षव्यावर्तनाय-इति
शुद्धिचन्द्रिकाप्रणयलिखनम् ॥ ६ ॥ (१)

पञ्चमप्ररनस्योत्तरम्—

ज्येष्ठपुत्रत्वेन तस्य पुत्रप्रतिनिधिताया आपत्तिर्गोरखपुरप्रदेशचलि-
तरीत्या राज्ञ उद्योतनारायणसिंहस्यान्येषां राज्ञां साक्षिणां साक्ष्येण च
यथा निश्चित तेन दूरीभवितुं शक्नोति, तद्देशचलितरीतिवाद्युपस्था-
पितवृत्तान्ताभ्यां गोरखपुरप्रदेशे ज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधीकरणस्य सिद्धत्वेन,
तद्देशीयव्यवहारविरुद्धाया ज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रप्रतिनिधिताया आपत्तेः शास्त्रानु-
सारेणापि दूरीकृतत्वस्यार्थसिद्धत्वात् तद्देशीयव्यवहारविरुद्धस्य कस्यचिदपि
कर्मणः शास्त्रानुसारेण तस्मिन् देशे कदाचिदपि भविनुमशक्यत्वाच्चेति॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान्भ्रेणीधर्माश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्माश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम्
(मनु-४१) ॥१॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक्प्रवर्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रज्जुम्यतेऽन्यथा ॥—इति वीरमित्रोदवादि-
ग्रन्थपूतवृहस्पतिवचनम् ॥२॥

यस्मिन् देशे य आचारो व्यवहारः कूलस्थितिः ।

तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥—इति चाश्वत्थ-
वचनम् ॥३॥

केवलं शासमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्णयः ।

युक्तिहीनविचारे तु धर्महानिः प्रजायते ॥—इति वीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थभृतबृहस्पतिवचनम् ॥ ४ ॥ • ॥ • ॥ • ॥

पष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

राजा अरिमहंनसाहिसंज्ञकेन लिखितं दानपत्रज्ञातं तत्पत्न्या राज्या म-
दनकोमराख्याया यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तप्रासाञ्छादनोपयुक्तावरयकपिचवा-
धर्माद्याचरणोपयुक्ततिरिक्तधने सिद्ध्यति, प्रमुसमर्षितरपत्रज्ञातै राजोऽरि-
महंनसाहिसंज्ञकस्य चतुर्णां भ्रातॄणां मध्ये स्वकुलोचितम्पवहारानुसारेण
ज्येष्ठत्वेनावशिष्टानां प्रयाणां भ्रातॄणां पृथक् पृथक् स्वकुलोचितप्रासाञ्छाद-
नोपयुक्तातिरिक्तराज्ये आसाधारण्यस्वत्वेनासाधारण्यस्वत्वात्पदीभूतस्य राज्य-
स्य भ्रातृन्तरसाधारण्याभावावगमेन तत्र भ्रात्रादीनामनुमतिं विनापि दाना-
द्यधिकारित्वेन सिद्धेर्निष्पत्सूरत्यात् । एवं तद्वानस्य सिद्धौ सत्यां राजा पृथ्वी-
पतिसाहिसंज्ञकः पुत्रप्रतिनिधितां विनापि दानानुसारेण दानकृतधनस्याधि-
कारी भवितुं शक्नोति । तद्वानेन ग्रहीतुः स्वत्वोत्पादात्सप्तमप्रश्नस्योत्तरम्—
यादुपरिलिखितोत्तरानैरेव पर्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितम्—इति गोरख-
पुरप्रदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमूलव्यवहारकौस्तुभदत्तक-
चन्द्रिकाशुद्धिचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकनिर्णयसादिग्रन्थानुधारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनादेयं यदतिरिच्यते—इति वीरमित्रोदयादि (पृ० ३२४)
ग्रन्थभृतबृहस्पतिः (पृ० १३७) वचनम् ॥ १ ॥

विभक्तेषु तूत्तरकाल विभक्ताविभक्तसंशयव्युदासेन व्यवहारसीकर्थोयं
सर्वाभ्यनुज्ञा न पुनरेकस्यानीश्वरत्वेन, अतो विभक्तानुपतिव्यतिरेकेणापि
व्यवहारः सिद्ध्यत्येव—इति मितक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्वसत्तानिर्गृहीतपूर्वक्रमस्यत्वात्पादनं दानम्—इति मितक्षरादि (मुद्रो-
धिनी पृ० ७४१) ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

प्रदानं स्वाम्यक्षरणम्—इति मनुवचनम्येति ॥ ४ ॥ • ॥ • ॥ • ॥

अंगरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वानिश्चदधिकाष्टादशशताब्दीवनानवरीमासीयस-
प्तमदिनसम्प्रतिपद्यनिवासे घटिकैलाधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था
रुतेति ॥—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१११.—रोवकारि सदर देओयानि आदालत ओयाके तारिख
२६ दिजम्बर शन १८३१ साल मोतामेक शन १२३८ सालेर १२
पौष सोमवार श्रीयुत आलक सुन्दर राश साहेव ऐ आदालतेर
हाकिमेर बैठके बदनचन्द्रहालदार ओगायरहवनाम रामचौद-
मुखोपाध्याय सायेलानेर उकिल मुनशी गोलाम वतुल ओ तरफ-
छानिर उकिल सदासुकपण्डित, हाजिर अइल । सन १८३१
शालेर १५ शेतम्बर तारिखेर ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत
कटवरट धरनएल शेली साहेवेर हुकुमानुसारे सायेलानेर खास
आपीलेर सओयाल ओ गायरह ऐ मोतालकेर कागचसकल
अद्य आमार बैठके दरपेप हइया हाकिम मौलुफेर तारिख मज-
कुरेर रोवकारि लिखित राय ओ सन १८३१ सालेर २८ शेतम्बर
तारिखेर दृष्ट करा तरफछानिर सओयालेर सहित दृष्टे आइल ।
तरफछानि जेलार मुद्दाइ जाहेर करे जे राधाकान्तहालदार मोत-
ओकफार स्त्री मौलुम्मात सुभद्रादेव्या खासपुर परगानार कालीघाट
घामेर मोट सात विघा, देवसेवार, जमीर मध्ये एक विघा ओ
सालियाना पाच दिवस पालार मध्ये एक दिवस पाला कालि-
ठाकुरानिर सेवा सहित आपन स्वामीर संगार्थि मुद्दाइके दान-
करिग्राछे । यद्यपि स्यात् जेलार फयल्लार लिखित जेला पर्विप
परगानार पण्डितेर व्यवस्था मजमुने प्रकाश आछे—ये देव-
सेवार, जमी ओ सेवार पाला सेवा सहित अचिरा खीर दान

करिवार क्षमता आछे, किन्तु जेलार मुद्दाआलेहोम वदनचन्द्र-
हालदार ओ गायरह छाएलान् जाहेर करे ये अवीरा ओर
ठाकुराणीर पाला ओ देवसेवार जमी दान करिवार क्षमता
नाइ । ए जन्य हुकुम छादेर हओमेर पूर्व ए आदालतेर पण्डितेर
स्थाने व्यवस्था सओया उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एइ
रोषकारि नकल ओ राजबन्दरायेर मोकदमार दाखिल हओया
ए आदालतेर साबेक पण्डितेर व्यवस्था नकल, ये एइ दर-
खास्तेर सामिल आछे, एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयालेर
जबाब व्यवस्था मजकुर दृष्ट करिया एक सप्ताह मध्ये दाखिल
करेण, ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय ।

यद्यपि स्यात् अवीरा ओ मोट शात विषा देवसेवार जमीर
मध्ये मओजी एक विषा जमी ओ सखियानापाच दिवस
पालार मध्ये एक दिवस पाला सेवा सहित स्वामीर स्वर्गार्थ
कोन—वैष्णव दान करे, ए प्रकार दान बाङ्गलादेसेर शाखा
नुसारे यथार्थ घटे कि ना इति—

श्रीज्जयतितराम्

एतज्जम्माधिकरणाधिपतिश्रीगुणलक्ष्मणदेवचम्पाधिकरणलि-
लिताक्षरेजोरन्दप्रतिपादकत्रिशदधिकाष्टादशशतान्दोयदिशम्बरमासीयषड्-
विशतिदिवसीयविचारप्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्सम्पितराजचन्द्र-
यसम्बन्धिविशदविषयनिबिडव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रञ्च यदेतदन्दीयमानवरोमासी-
यप्रश्नमदिनतन्वन्धिनृहस्पतिवासे धटिकैलाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं
तदबलांघ्र्य यादराबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कानिद्वीय स्त्री सप्तविंशतिशतप्रतिपाददेवसेवासम्पादकभूमिसमु-
दायान्तर्गतैकविंशतिशतप्रतिपादभूमिमेवं वार्षिकषड्चदिवसीयपालाशब्द-
प्रतिपादान्तर्गतैकदिवसीयपालाशब्दप्रतिपादञ्च देवसेवासहित स्वपत्युः
स्वर्गार्थं कर्मोच्चैश्चतुर्णां स्थापनां तद्गानं यथायुमेव भवति, देवसेवायाः देव-
सेवापालाशब्दप्रतिपादस्य च सेवाइतरशब्दान्वयत्वायत्वेन सेवाइतरशब्द-

वाच्यस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य परपुत्रने जाताधिकारिण्या उपरि-
लिखितप्रकारकृतादशदानकर्त्र्याः पत्न्यास्तादृशदानविषयोभूतदेवसेवायाः
देवसेवापालाशब्दप्रतिपाद्यस्य च तत्सम्पादकदेवत्रभूमेः समर्पणं विना
अनिष्ठावत्वेन तत्समर्पणरूपदानस्याप्यावश्यकत्वेन च यथोत्तराधिकारि-
त्वेन सेवादृशशब्दवाच्यस्य पत्न्यास्तादृशदेवत्रभूमौ स्वत्वम्, अथात् तत्संरक्ष-
णावेक्षणादिकर्तृत्वोपयुक्तं कारयितृत्वोपयुक्तं वा तदुत्पन्नोपस्वत्वेन च देव-
सेवादिकर्तृत्वोपयुक्तं कारयितृत्वोपयुक्तं वा तथैव तथा पत्न्या कृतदानेन
तादृशं स्वत्वं प्रतिग्रहीतुरपि भवितुं शक्नोतीत्यत्र बाधकामावाद-इति यद्वा-
देराक्षलितदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायवत्त्वदायममम-
हदायरद्वयव्यवस्थार्णवविवादमङ्गार्यावादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायमागादिग्रन्थपुत्रयाज्ञवल्क्यवचनम्

॥ १ ॥

अपुत्रघने पौत्रप्रपौत्राभावे साध्याः पत्न्या अधिकारः, तत्रापि भर्तृ-
स्वर्गमुद्दिश्य दाने यथाकथञ्चिच्छरीररक्षार्थं भर्तृणो चाधिकारः, एतदति-
रिक्तयथेष्टावरणो स्यावरपिक्रयादी च नाधिकारः—इति व्यवस्थार्णवग्रन्थ-
लिखनम् ॥ २ ॥

स्वस्यत्वनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वापादनं दानम्—इति विवादमङ्गार्याव-
(१ विधा० ३१८ ख)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

विभेत्तुर्यादृशं स्वत्वं केतुस्तादृशमेव स्वत्वं कयाजायते—इति
श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग (पृ० १०)टीकालिखनञ्चेति ।

एतदन्दीयजानवरीमासोयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवासरे घटिकाद्वयावि-
कषामद्वयानन्तरं मयेय व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११२—सदर देशोयानि आदालतेर पण्डितेर-प्रति प्रश्न—

भरणार्थं प्राप्त व्यक्तीर मरणानन्तर ताहार उत्तराधिकारिगण बहुकालावधि देवस्तुते भोगवान् थाकिले मरणार्थं वस्तुते भरणार्थं प्राप्त व्यक्तीर उत्तराधिकारिगणेर सत्य लोप ह्य कि ना ? इति—

प्रमुसमपितप्रश्नपत्रमेवमेतद्विषादवियथनिविष्टपत्रनातं यदहरेबीशन्दप्र-
तिपाद्यत्रिशदधिकाष्टादशराशान्दीयश्रुलाहमासीयोनिविशद्विषयोयशुकवाचरे
धटिकाद्वयाधिकयामद्वये प्राप्तं तदवलोक्य विविच्य च यादृशभोगो जातस्त-
दनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कयाचित् कन्यया स्वपितुः सकाशाद्भरणार्थं किञ्चित् स्थावरं
धनं प्राप्तम्, तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिभिर्बहुकालावधिकं तदेव वस्तुस्व-
भोगास्पदीभूतं कृतं स्यात्तत्र यदि तया व्यस्त्या तद्वस्तु केवलं स्वजीवनपर्य-
न्तमेव भरणार्थं प्राप्तं स्यादेवं तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिभिः प्रमुसम-
पितपत्रावगतसम्बन्धेन प्रीत्या वा बहुकालपर्यन्तं तद्वस्तु भुक्तं चेदपि
तेषां तत्र स्वत्वानुत्पादेन स्वत्वसामान्याभावस्य विद्यमानत्वात् स्वत्वध्वंसो
दूरापास्त एव, एतादृशभोगस्य स्वत्वोत्पादकत्वाभावात् स्वत्वोत्पादकस्य,
दानाद्यागमस्याप्राप्तात्वाच्च, सम्बन्धप्रयुक्तभोगस्य प्रीतिप्रयुक्तभोगस्य, वा
स्वत्वे प्रमाणत्वाभावाच्च । यदि च तया व्यस्त्या तद्वस्तु पुत्रपौत्रादिकमेव
भरणार्थं प्राप्तं स्यात्तदा तन्मरणोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामपि तादृशभर-
णार्थप्राप्तिरूपगमेन तादृशभरणोपयुक्तं स्वत्वमुत्पन्नं नष्टं भवितुं न
शक्नोति, वरं बहुकालावधिकतादृशभोगेन तादृशभरणोपयुक्तस्वत्वोत्पाद-
कस्तादृशभरणार्थप्राप्तिरूपगमो दृढीभूतः—इति वङ्गदेशचलितमनुव्यवहार-
भानुकाव्यवहारतत्त्वदायकविवादमङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ।

प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥ इति मनुवचनम्

(पृ० ४२२, १०११५) ॥१॥

अस्वामिना तु यदमुक्तं गृहक्षेत्रापण्यादिकम् ।

सुहृद्वन्धुसकुल्यस्य न तदभोगेन हीयते ॥—इति दायतत्त्वव्यवहार-
तत्त्वादि (पृ० ५४) अन्यधृतवृद्धसति (पृ० ७५) वचनम् ॥२॥

आगमेन विशुद्धेन भोगो याति प्रमाणताम् ।

अविशुद्धागमो भोगः प्रामाण्यं नैव गच्छति ॥—इति व्यवहारमातृ-
कादि (पृ० ३४५) अन्यधृतनारद (नास्मृ पृ० ७०) वचनञ्चेति ॥३॥

अत्र भरणार्थं तद्वस्तु तथा व्यवसाय केन प्रकारेण केन नियमेन वा
प्राप्तमिति प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्ज्ञातुमशक्य एव तत्पत्रभातेषु प्रमाणभूतं
दानपत्रादिकं न प्राप्तमत एव व्यवस्थायां प्रकारद्वयं लिखितमिति
निवेदनम् ॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशरातान्दीयजानपरीमासीदैक-
विंशतिदिनसम्बन्धिषुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीर्ज्जपतितराम्
श्रीवैचनाथमिश्रेण

११३—सदर देओयानिर पण्डितेर पर सओयाल—

जद्यपि एक बेक्की हिन्दुर दुइ कन्या थाके । साहाते एक कन्या ।
एक पुत्र आपन गर्भेर राखिया आपन पितार साक्षाते मृतु हए ।
ताहार पर दे बेक्की आपनार द्वितीय कन्यार साक्षाते मृतु हए ।
से मते मृत बेक्कीर तेक वस्तु वर्तमान कन्याय अरसे, कि ताहार
दौहित्रके, जे ताहार माता पुत्र राखिया आपन पीतार बतेमाने
मृतु हइयाछे, ताहाके मृत बेक्कीर तेक वस्तु कीछु अरसे
कि ना । जद्यपि अरसे तबे की प्रमाण ? ॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रिंशदधिकाष्टादशरातान्दीयदिशम्बरमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिषुक्रवासरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वये
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

ययैकस्य कस्यचित् हिन्दूजातीयस्य दुहितृद्वयमासीत्, तयोर्मध्ये एका दुहिता स्वगर्भोत्पन्नमेकं पुत्रं संरक्ष्य विद्यमाने स्वपितरि मृता, तदनन्तरं स एव व्यक्तिविशेषो परस्यां दुहितरि विद्यमानायां मृतस्तदा तस्यैव वंक्तिविशेषस्य त्यक्तधनं विद्यमाना दुहिता, या प्रमुसमर्षितविचारपत्रेण पुत्रव-
स्यवगम्यते, सा प्राप्तुं शक्नोति, तस्यां पुत्रवत्यां दुहितरि विद्यमानायां सत्यां स च दौहित्रो यस्य माता विद्यमाने स्वपितरि मृता प्राप्तुं न शक्नोति, यतः शास्त्रानुसारेण पुत्रवत्या दुहितरि जीवन्त्यां सत्यां कस्यचिदपि दौहि-
त्रस्य विद्यमानमातृकस्य मृतमातृकस्य वा मातामहधने नाधिकारः—
इति बह्वदेशचलितदायभागभोक्तृभ्यतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्व-
दायक्रमसमहविवादमहार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ मातरस्तया—इत्याद्युपरिलिखितमन्यधृत-
याशब्दव्यवस्था (पृ० २१६।२।१३५)वचनम् ॥ १ ॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी ऋक्यं गृहीयात्तदभावे षोडा—इत्युपरि-
लिखितमन्यधृत (दाकं सं० पृ० ३) पराशरवचनम् ॥ २ ॥

कुमार्यभावे षोडायाः पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रा(या)श्च, (भगिन्याः)
तुल्योऽधिकारः, तयोरेकतराभावे एकतराधिकारः—इति, स्वपुत्रद्वारेण
पार्वण्यापिण्डदातृतया तयोरुपकाराविशेषाच्च—इति च, सर्वदुहितृभावे
दौहित्रस्याधिकारः—इति च दायक्रमसमह (पृ० ४) ग्रन्थलिखन-
व्येति ॥ ३ ॥

इदं सन्धोयान पापिते द्विल, यद् निमित्ते एद् पत्रे लेखा-
नोक्त ना ।

अक्षरेजीशन्दप्रतिपाद्यैकत्रिंशदधिकाष्टादशरातान्दीयकेवरवरोमासीयच-
तुर्यदिनसम्बन्धिशुक्रवास्तरे षट्कैकाधिकयामद्वये मयेयं व्यवस्था
दत्तेत ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमित्रेण

११४ सञ्जोआल—आमार धात. हइवार कारण ए विसपर जिह्मासा करा आविस्वक हइल जे जद्यपि एक बेक्की हिन्दुर दुइ-पुत्र थाके । ताहाते एक पुत्र आपन पितार साक्षाते एक पुत्र जिव-मान राखिया मृत्तु हय । ताहार पर ऐ बेक्कि आपन द्वितीय पुत्र ओ मृत पुत्रे बालकेर साक्षाते मृत्तु हए । सबे ऐ मृत बेक्कीर तेक घन काहाके अरो इति ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रे यत्प्रश्नान्तरं तदयलोक्य यादृशमोघो जात-स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

अदि कस्याचित् हिन्दूजातीयस्य व्यक्तिविशेषस्य पुत्रद्वयमासीत् तपोर्मध्ये एकः एकं पुत्रं संरक्ष्य विद्यमाने नितरि मृतस्तदनन्तरं सोऽपि व्यक्ति-विशेषो द्वितीये पुत्रे विद्यमाने मृतपितृकपौत्रे च विद्यमाने एति मृतस्तदा तस्यैव धनिनो मृतस्य तदनस्य स्मं द्विधा विभक्तस्वैकोऽशो विद्यमानपुत्र-स्यापरोऽशो मृतपितृकपौत्रस्य भवति । अत्र विशेषतः शास्त्रानुशया अथो-लिलितप्रमाणेष्वेव स्पष्टीकृतत्वाद्—इति चङ्गदेशचक्षितदायमाणश्रीकृष्ण-तर्कालङ्कारकृतदायमाणटीकादायतत्त्वदायकमसंग्रहविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानु-सारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अविमक्ते मृते पुत्रे तत्सुतं ऋक्ष्यमाग्निम् ।

कुर्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

लभेतांशं स्वपित्र्यन्तु पितृव्याचक्ष्य वा सुतात् ।

त एषारास्तु सव्येषां भ्रातृणां न्यायतो भवेत् ॥

लभेत तत्सुतो वापि निश्चातः परतो भवेद्—इति दायतत्त्वविवाद-भङ्गार्थवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् (आसु० पृ० १०३)

यथा पैतामहे चने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन् मृते तत्पुत्राणां भवि, न तत्र सधिकर्षविभक्त्याम्या कोऽपि विशेषः, पार्श्वेषुविधिना पिरडदानेन

१. निवे प्रेरे—इति अर्थोत्तरावच्छेदः; अविमनेऽनुमे प्रेरे, इति अत्राशयानुवृत्तिः ।

द्वयोरपि तदुपकारकत्वाविशेषाद्—इति दायमागं पृ० २६ ग्रन्थलिख-
नम् ॥ २ ॥

मृतपितृकमौत्रमृतपितृपितामहकप्रपौत्रयोः पुत्रेण सह तुल्याधिकारः,
तेषां पार्थ्व्यपिण्डदातृत्वेनोपकाराविशेषाद्—इति दायक्रमसंग्रह (पृ० २)
ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

एद्वार सञ्चोयाल पापिते छिल, एद्व निमित्ते एद्व पत्रे लेखा-
गेल् ना ।

अङ्गरेजीचन्दप्रतिपाद्यैकत्रिशदधिकशताब्दीयफेवरखरीमासीयच-
तुर्थदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे घटिकैकाधिकयामद्वये मयैव व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११५ सदर देओयानि आदालतेर पण्डित उपर सञ्चोयाल—
लं २ खास आपील शन १८३० साल—

मधुरराय ओ लक्ष्णराय
राजुपाइक

आपिलायटान
रम्पाडयट

१ दफा

गुरुप्रसाद नामक एक व्यक्ति अपुत्रक कारण कि, वरमाना
भाकिते ओ आपनार सकल विषय दानपत्रे लेखार सरत मते
अन्य व्यक्तिके दान करिते पारे कि ना, आर दान करिते शांखा-
नुसारे से दान जयार्थ हइते पारे कि ना ?

२ दफा—

दानेर परे गुरुप्रसाद मजकुरेर मृत्यु हइले परे यद्यपि ये व्यक्ति
दान पाय से दानपत्रे लेखार सरत मते गुरुप्रसाद मजकुरेर
अग्निकार्य ओ आदादि करिया आरे उदार छिर अन्न-वस्त्र दि यो
याके, तवे दान मजकुरा ययार्थ हइते पारे कि ना ?

३ वका—

गुरुप्रसाद मज्जकुरार ऐ प्रकार दान करिले परे सेइ दानेर द्रव्यादि अन्य कोन व्यक्तिके कवालार द्वाराय विक्रय करिते पारे कि ना इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदन्दीपमार्चमासीद्योनविंशतिदिनसम्बन्धि-
शनिवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशक्रोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

कश्चिद्गुरुप्रसादनामा व्यक्तिविशेषो निःसन्तानत्वेन हेतुना विद्यमाना-
यामपि पत्न्या स्वस्वत्वात्पदीभूतसमुदायधनं प्रभुसमर्पितदानपत्रलिखितनि-
यमेनान्यस्मै दातुं शक्नोति । अथ च कृते च दाने शास्त्रानुसारेण तद्दानं
यथार्थं भवति, शास्त्रानुसारेणैतादृशदानसिद्धौ वाचकामावादिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवत्तनादेयं यदतिरिच्यते ।—इति विषादभङ्गार्थवादिग्रन्थः
(१ विम० ४४८ क) श्रुतबृहस्पति(पृ० १३७)वचनम् ॥ १ ॥

स्वभागान् यदि ददयुस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्यथेष्टं तत्सर्वम्रीशास्ते स्वधनस्य वै ।—इति दायभागादिग्रन्थः
धृतनारदवचनम् ॥ २ ॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दानानन्तरं तत्स्यैव गुरुप्रसादस्य मरणे सति दानप्रहीना दानपत्र-
लिखितनियमानुसारेण तत्स्यैव गुरुप्रसादस्य अग्न्यादि सम्पत्त्य दाहादिकार्य्यं
आदादिकार्य्यञ्च कृत्वा अथ च तत्पत्न्या प्राणच्छादनादिकं दत्तमभूत्,
तदा तद्दानं यथार्थं भवितुं शक्नोति शास्त्रानुसारेण सोपाधिदानस्योपाधि-
सिद्धौ सिद्धेर्निष्पत्युहत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणत्रयम् ॥३॥

सोपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादमङ्गार्यवमन्यलिखनम्
॥ २ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्

स एव गुरुप्रसादस्तादृशदानकरणानन्तरं तद्दानकृतद्रव्यादेः अन्यस्मै कस्मैचिद् विक्रयपप्रद्वारा विक्रयं कर्तुं न शक्नोति प्राथमिकतादृशदानकरणेन गुरुप्रसादस्य तद्द्रव्ये यावज्जीवं दम्पत्योर्भरणपोषणायुपयुक्तस्वत्वातिरिक्तस्वत्वस्यार्थादानविक्रयाद्युपयुक्तस्वत्वस्याभावेन प्राथमिकदानानन्तरं तत्कृतविक्रयस्यास्वामिकृतत्वेन, अस्वामिकृतविक्रयस्यासिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वात्—इति वङ्गदेशचलितदायभागभ्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकामनुविवादमङ्गार्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—”

अत्र प्रमाणम्

तथा च पूर्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिपरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण त्यागराक्तस्य दायातोः—इत्यादि भ्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृत(पृ० ४) दायभागटीकालिखनम् ॥ १ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ।

अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥—इतिमनु(पृ० ३०६। ८।१६६)वचनम् ॥ २२ ॥

अस्वामिविक्रयं दानमाधिष्ठ विनिवर्तयेद्—इति विवादमङ्गार्यवादिग्रन्थ(१ विवा० ३१७ ख)भृतकात्यायन(कास्मृ० ६१२, पृ० ७६)वचनञ्चेति ॥ ३ ॥

आपरेलमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिशनिवाचरे दत्तेयं मया व्यवस्था ॥०॥

श्रीज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सदर देशोयाणी आदालतेर पखिडतेर प्रति प्रश्नः—

११६—एक व्यक्ति अवीरा स्त्री आपन स्वामीर परकालेर क्रिया कर्मेर सरचेरदेना परिशोध प्रयुक्त स्वामीर उत्तराधिका-
रीगण वर्तमाने देवत्र भूमि देव सेवा समेत टाकार परिवर्त्तन
दान करिते पारंकि ना । आर ताहा सिद्ध हय कि ना ? इति ।

श्रीज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिश्चितपत्रज्ञातं च यदेतदब्दीप-
मान्त्रमासीयेनविंशतिदिनसम्बन्धिशानियासरे यामद्वयानन्तरं मया ज्ञातं
तद्वक्तव्यं यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥ • ॥

एका काचिद्वीर्य स्त्री स्वपत्युः पारलौकिककार्यार्थग्यपरिशोधनार्थं
पत्युत्तराधिकारिषु विद्यमानेषु देवत्रभूमि राजतमुद्राविनिमये दातुं न
शक्नोति, एवं तद्दानं न सिद्ध्यति, देवत्रभूमि देवमिलानां केनाजिदपि स्व-
त्वामावेन दानायोग्यत्वात् । देवसेवायाश्च सेवायितशब्दवाच्यस्यायत्तत्वेन
सेवायितशब्दवाच्यस्य पुत्रपौत्रप्रगौरर्हत्तस्य मृतस्य पत्युरग्रे उत्तराधि-
कारित्वेन ज्ञाताधिकार्य पत्नी । यदि राजतमुद्राविनिमये स्वपतियोग्यांशदेव-
सेवादानमन्तरेण स्वपत्युः पारलौकिककार्यार्थग्यपरिशोधनं कर्तुमशक्ता
त्वाच्चा तदर्थं स्वपतियोग्यांशरूपाया देवसेवाया राजतमुद्राविनिमये दानं
कर्तुं शक्नोति, तद्दानं सिद्ध्यति । तत्र च द्रव्यसाध्यदेवसेवाया द्रव्यं
विनाऽनिष्ठाद्यत्वेन स्वपतियोग्यांशदेवसेवानिर्वाहकदेवत्रभूमेः संरक्षणावेत्त-
णादिकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्वा तदुत्पन्नोपस्वत्वेन च देवसेवाकर्तृत्वादेः
कारयितृत्वादेर्व्योपरिलिखितप्रकारेणोत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तस्य देव-
सेवान्ययानुपपत्त्या संपर्पणं भवितुमर्हति, यतः सेवायितशब्दवाच्यस्य
सम्भरणानन्तरं तदुत्तराधिकारिणो वा देवसेवानिर्वाहकदेवत्रभूमेः संर-
क्षणावेत्तणादिकर्तृत्वादेः कारयितृत्वादेर्वा देवसेवान्ययानुपपत्त्या क्षमता-
स्त्येव । प्रकृते तु प्रभुसमर्पितपत्रज्ञातान्तर्यतैकविंशत्यङ्काद्विदेवसेवार्पण
—देवावेल एङ्कोब—संज्ञकपत्रे अस्मत्स्वत्वे त्वं वर्तमानो भूत्वा-

श्रीमत्याः परमेश्वर्याः सेवां भूमिसहितां स्वायत्तीकृत्य पुत्रपौत्राद्युत्तराधिकारिकमेण तद्भूमेरुपस्वत्वादिकमादाय श्रीमत्याः परमेश्वर्याः सेवां कुरु इति लिखनेन स्वपतियोग्यांशरूपाया देवमेवायास्तत्सेवासम्पादकदेवप्रभूमिसहिताया राजतमुद्राविनिमये श्रीमत्याः परमेश्वर्याः सेवार्थं समर्पणमेव स्पष्टीकृतम्—इति बङ्गदेशचलितमनुकुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीदायभागश्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवादमङ्गार्यावादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

देवत्वं प्राप्तुं वा लोभेनोपहिंनस्ति यः ।

स मापात्मा परे लोके शुश्रोञ्छितेन जीवति—इति मनु(११।२६)

वचनम् ॥ १ ॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं धनं देवस्वम्—इति कुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावली(पृ० ४३०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रम एव वा ।

अकृतः स तु विहीनो व्यवहारे यथा स्थितिः—इति मनुवचनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थपूतयाकृतवचनम् ॥४॥

भर्तुरौर्ज्वदेहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतम्—इति दायभागदायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् ॥ ५ ॥

विकेतुर्यादरां स्वत्वं क्रेतुस्तादृशमेव स्वत्वं क्रयाज्जायते—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

एतदन्दीयापरेलमासीयत्रयोविंशतिदिनसम्बन्धिरानिवासरे दत्तं मया व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जयतितगम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

११७ प्रमुक्तप्रश्नमवगत्य यादृशचोदो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यद्यप्येकस्यां पत्न्यामेकस्यां दुहितरि च विद्यमानायां विद्यमानयोर्द्वयोः सोदरभ्रात्रोः पुत्रपौत्रपपौत्ररहितो राधाकृष्णाख्य एतद्वर्माधिकरणनियुक्त-
उक्लिशब्दवाच्यो मृतः स्यात्तदा तत्त्वक्तघनं यदि सोदरभ्रातृभ्यां साधारणं न भवति तदा तत्पत्नीं प्राप्तुं शक्नोति । यदि च तद्वनं सोदरभ्रातृभ्यां साधारणं भवति तदा तद्वने सोदरभ्रात्रोरेवाधिकारः, तत्पत्नी च यावज्जीव तद्वनाद् प्राप्ताच्छादनभागिनी भवति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरायोरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥ ० ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

॥ त्रस्तुतः—इत्यादि मिताक्षरायोरमित्रोदयादिग्रन्थभूतवाच्यवचनपचनम् ॥ १ ॥

॥ पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनजाते विभक्तभ्रातृव्यपयम्—इति मिताक्षरामन्थलित्वनम् ॥ २ ॥

स्वभ्यांते स्वामिनि त्वी तु प्राप्ताच्छादनभागिनी ।

अविभवते घनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थभूतवाच्यवचनपचनञ्चेति ॥ ३ ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

॥ ११८—प्रश्नः—

यद्यपि कोनहं मृतं चिह्नं अवीरा पत्नी आपनं उत्तराधिकारि वर्तमाने आपन स्वामिर त्वत्क पैतृक अर्थवा निजेर अर्थात् स्त्री

धनरूपकोनह चागान आपन मृत स्वामिर विषयान्तर ग्राह
हइया ताहार रचांय आदालतेर खरचार कारण विक्रय करे तवे
सेह विक्रय शास्त्र सिद्ध हय कि ना ?

प्रश्नः—

यद्यपि उत्तराधिकारि लिखित दलितेर द्वारा ये अवोरा
उपरेर लिखित विषयेर दान विक्रयेर समता बोध हय तवे सेह
विक्रय शास्त्र सिद्धहय कि ना ? ॥१॥

श्रोज्जयतितराम

प्रमुवमर्षितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादराबोषो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकट्टचान्ते सति तादृशविक्रयः शास्त्रसिद्धो भवति,
यतः पुत्रपौत्रप्रपौत्रराहितस्योपरतस्य पत्न्युद्धर्नस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नी-
संक्रान्तत्वेऽपि तस्याश्च वधनाद्यशक्तौ तदुपयुक्तस्य तदनस्थाधानं विक्रयणं
(च) शास्त्रानुमतं भवति । अतएव वधनादिमूलीभूतस्य तदनरक्षणस्याप्या-
वश्यकत्वेन तदनरक्षणार्थं तदुपयुक्तस्य तदनस्य शक्तावशक्तौ वामय-
सैव स्वकीयस्त्रीधनस्य चाधानं विक्रयणं (च) शास्त्रसम्मतं भवतीति निष्प-
त्त्युद्भवः ।

द्वितीयप्रश्नोत्तरमप्यथांदत्रैव पर्यवसन्नमिति पृथक् न लिखितम्—इति-
बह्वदेशचलितदायभागविवादमन्त्रार्थवादिग्रन्थानुसारिणो व्यपस्येति ॥१॥

अत्र प्रमाणम्—

अतएव वधनाशक्तावाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-
मपि—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

तथा च भर्षा जीवन् यथा यस्य पोषणादकं यद् यद्वा कर्म करोति
मृतमर्त्कपि स्वराक्षनुसारेण तमेव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत—
इति विवादमन्त्रार्थवग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्यादरेष्वपि ॥—इति दायभागादि-
(पृ० ७६) ग्रन्थपूतकाल्यायनं पृ० ११०, ६०६) वचनञ्चेति ॥३॥

श्रीज्जयतिराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

११९—आदालते देओयानि जङ्गल महाल सन १८३१ साल
ता० १९ मेह—

सओयाल

जओयाव

कोनो कनज ब्राह्मण तिन चारि पुरुष बाङ्गला देसे वास करिया
विवाह आदि क्रिया कलाप मिताइराशास्त्रानुसारे करिया आसिते-
झिल, एवं बाङ्गला देसे किछु जमिदारि फालेकटरि खरिदा ओ
दोपरा ता नुफ ओ गयरह सोपाजित करिया कथोक दिन भोगवान
थकिया वस एगार बत्सरेर अधिक हइवेक अवर्त्तमान हइयाछे ।
ऐ चारि पुत्र आपन पितार मरणान्ते कथोक दिन एक अन्ने थकिया
पुथक अन्न हन । किन्तु यदि जमिदारि गयरह एजमालिते
थाकिया मालगुजारि ओ सरञ्जमि ओ सवा ओ सदावर्त्त
खरच पत्र वादे बाकि गुनका चारि भ्राताते समान हिस्सा लइया
थाके, ओ चारि भ्रातार मर्दे एक भ्राता आपन नाओलव
अर्थात् अदिरा एक कविला राखिया अवर्त्तमान हय । तवे शास्त्र-
मते फौती भ्रातार, अर्थात् ये भ्राता मरियाछे, ताहार मतठका वस्तु,
जाहा चिन्हित ना हइया एजमालिते आछे, ऐ सकल वस्तुते
घनाधिकारि फौति व्यक्तिर भ्रातारा, कि ताहार कविला हइते
पारे ॥

२—सओयाल—

यदि चारि भ्राता वर्त्तमाने जमिदारि गयरह एजमालिते
राखिया चारि चारि आना जमिदारिर खजनार टाका आपन

२ हिस्सां प्रजागणैर पास उसुल तहशील करियाथाके, तवे शाखानुसारे उपरेर लिखित ओयारिस्तान मध्ये धनाधिकारि कविला कि भ्रातारा हइते पारे—इहार जओयाथ शाखानुसारे लिखिया ए आदालते पाठाइवेना—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयमेइमासीयाष्टाविंशतिदिनसम्पन्निश-
निवासरे पादोनघटिकाचनुष्टयाधिकयामद्वये मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृश-
बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकृत्तान्ते सति यदि चतुर्भिर्भ्रातृभिः कान्यकुब्ज-
ब्राह्मणजातीयैः पुरुषचतुष्टयावधि पञ्चपुरुषावधि वा वज्रदेशनिवासिभिः
पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण स्वकीयविवाहादिक्रियाकलापादि-
कर्म कुर्वन्तिः पृथग्नैः साधारणपैतृकपैतामहसराजकरस्थावरधनेः
साधारण्येन राजकरदानराजाशयाऽवश्यकराजदण्डादिदानदेवसेवादि-
सदाश्रितादिकर्म कुर्वन्तिस्तत्कर्म व्ययितावशिष्टजडमधनं विमन्य
प्रत्येकं तस्य समानांशो गृहीतः स्यात्तेषां चतुर्णां भ्रातृणां च मध्ये एकः
कश्चित् पत्नीमेका संरक्ष्य पुत्रपौत्रप्रगौररहितो मृतश्चेन्नरा तदीयविभक्त-
पैतृकपैतमहधनांशो तदीयस्वोपाजितासाधारण्यधने तत्पत्न्येषाधिकारिणी,
न तु भ्रातरः । तदीयाविभक्तसाधारण्यसराजकरास्थावरधनांशो च तद्वत्तर
एवाधिकार्यो न तु तत्तली । यदि च तदीयविभक्तपैतृकपैतामहधनेन
स्वोपाजितासाधारण्यधनेन वा तत्पत्न्या यावज्जीवं तत्कुलोपर्युक्तस्य प्रासा-
च्छादनादेरावश्यकविधवाधर्माय चरणस्य वा निर्वाहो भाष्यं न शक्यते
तदा भूतस्य तस्य पत्नी तदीयाविभक्तसाधारण्यसराजकरास्थावरधनांशादपि
यावज्जीवं तत्कुलोपर्युक्तस्य प्रासाच्छादनोपर्युक्तधनस्यावश्यकविधवाधर्मा-
य चरणनैर्वाहोपर्युक्तधनस्य च भागिनो भवतीति ॥—

अत्र प्रमाणम् —

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ॥

तत्पुतः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयाशवल्क्यवचनम् ॥१॥

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षरामन्थलिलनम् ॥२॥

स्वर्गते स्वामिनि श्री तु प्रासाच्छादनमाग्निनी ।

अविभक्ते धनारो तु प्रभोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि विद्यमानैश्चतुर्भिर्भ्रातृभिः सराजकरस्थावरादिधनं साधारणं रक्षित्या प्रत्येकं तत्सराजकरस्थावरोपस्यत्वस्य राजतमव्रात्मकस्य स्वस्वांशरूपश्चतुर्थांशः प्रजानां तन्निधौ गृहीतः स्यात्तेषां चतुर्थां भ्रातृणां च मध्ये मृतस्यैकस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य विभक्तपैतृकपैतामहधनारो स्वोपार्जितासाधारणधने च तत्पत्न्येवाधिकारिणी, न तु भ्रातरः; अविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनारो च तद्भ्रातर एवाधिकारिणो, न तु तत्पत्नी । यदि च तदीयविभक्तपैतृकपैतामहधनेन स्वोपार्जितासाधारणधनेन वा तत्पत्न्या यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य प्रासाच्छादनादेरावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणस्य वा निर्व्याहो भवितुं न शक्यते तदा मृतस्य तस्य पत्नी तदीयाविभक्तसाधारणसराजकरस्थावरधनारोद्यादि यावज्जीवं तत्कुलोपयुक्तस्य प्रासाच्छादनोपयुक्तधनस्यावश्यकविधवाधर्म्माद्याचरणोपयुक्तधनस्य च भागिनी भवति—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥ ० ॥ ॥ ० ॥ ० ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयम् ॥ ३ ॥

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तत्रैकदेशेषु विषयतया व्यवस्थापनम्—इति मिताक्षरादि ग्रन्थलिलनञ्चेति ॥ ४ ॥

एतदन्दीयद्वुनमासीयदशमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे दत्तेयं मया व्यवस्येति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रं

१२०—सञ्जाल आदालत देओयानी कमिसनरि आताराफ मसरफ जिला रङ्गपुर घनामे पण्डीताने सदर देओयानि आदालत शन १८३१ इङ्गरेजि तारिख ३१ मार्चर्च मोतावेक सन १२३७ शाल बाङ्गला तारिख १६ चैत्र—

रामप्रसादचक्रवर्ति

आपीलाष्ट

पेनका ओ पचिवेत्ता

रेष्पाइष्ट हय

दावि ३० टाका धावत दाश दाशीर मूल्य—

एइ मोकदेमाते एइ विशयेर व्यवस्था लओओ आविश्वक हइया सञ्जाल करा जाइतेछे जे जादि कोन दास कि दाशी ताहार स्वामीर ताच्छल्य क्रमे अथवा अन्य कोन हेतुते पृथक् थाकिया बहु काल पर्यन्त आपन संपाजित धन करणक दिन पात करे, तबे बहु काल परे ऐ स्वामिर कि स्वामिर उत्तराधिकारिर दाओो शाखानुसारे ऐ दास कि दासिर प्रति अशिते पारे कि ना इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्षितप्रश्नपत्रं यदेतदन्दीयापरेलमासीयपञ्चशतिदिनसम्बन्ध-
मङ्गलवासरे यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-
दनुषारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चिदासः काचिदासी वा स्वस्वामिनस्तान्छील्यक्रमेणाथवान्येन हेतुना केनचित् पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्यन्तं संपाजितधनेन स्वनिब्याह कृतवान्, कृतवती स्याद्वा, तत्र यदि स एव दासः सा दासी वा शास्त्रोक्त-

पञ्चदशदासान्तर्गतभक्तदासी भक्तदासी वा भवति तदा बहुकालानन्तरं तस्यैव स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा शास्त्रानुसारेण तदासम्प्रति दासी-
म्प्रति वा तदासीच्छा भवितुं न शक्नोति, स्वामिनो भक्त्यागादेव तयो-
र्भक्तदासदास्योदास्यमुक्तेः, तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा स्वत्वा-
भावात् । यदि च एव दासः सा दासी वा शास्त्रोक्तपञ्चदशदासान्तर्गत-
भक्तदासो भक्तदासी वा न भवति एवं तयोर्दासदास्योः स्वस्वामिनस्ता-
च्छ्र(१)ल्यक्रमेणान्येन केनचिद्भेतुना वा पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्यन्तं
स्वोपाजितधनकरणकनिव्याहे सत्यपि बहुकालानन्तरमपि दास्यान्मुक्तिर्भवितुं
न शक्नोति । अतएव तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा तयोः प्राप्तीच्छा-
भवितुं शक्नोत्येव, स्वस्वामिनस्ताच्छ्रोल्यक्रमेणान्येन केनचिद्भेतुना वा
पृथक् स्थित्वा बहुकालपर्यन्तं स्वोपाजितधनकरणकनिव्याहस्य भक्त-
दासभक्तदास्यतिरिक्तानां चतुर्दशप्रभेदानां दासदासीनां दासमुक्तिहेतुत्वाभा-
वेन पूर्ववत् तत्स्वामिनस्तदुत्तराधिकारिणो वा स्वत्वस्थानपायात्—
इति पञ्चदशचलितनारदस्मृतिविषादभङ्गार्णवविवादारण्यवसेनुदायक्रमसंग्रहा-
दिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अथ प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः ।

अनाकालभृतस्तद्दाहितः स्वामिना च यः ॥

मोक्षितो महतश्चर्याद् युद्धेप्राप्तः पणोजितः ।

तवाहमित्युपागतः प्रव्रज्यावसितः कृतः ॥

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव बहवामृतः ।

विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥ इत्युपरिलिखितग्रन्थ-

धृतनारदवचनम् (नारद- पृ. ६६) ॥ १ ॥

एतेषां मध्ये तु गृहजातादिचतुर्णांमात्मविक्रेतुश्च स्वायिप्रसादं विना
न दास्यमोक्षः । अनाकालभृतस्तु दुर्गिच्छे यद्मक्षितं तद्गोबुगसहितं
दत्त्वा मुच्येत । भक्तदासो भक्त्यागात्—इति दायक्रमप्रवृत्तादि (पृ-
५२।५३)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ २ ॥

आगष्टमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिबुधवाचरे घटिकैकाधिकय.मद्वयानन्तरं
दत्तेयं मया व्यवस्था ।

श्रीर्ज्जपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२१—सदर देशोयानि आदालतेर परिहृतेर प्रति प्रश्न—
सओयाल—

यदि कोन खीर स्वामि प्रायश्चित्त करे, एवं ताहार वार्ताते
ब्राह्मणसकले आहारादि करे, ओ आपन सरिकानेर सहित बिपया-
दिर विभाग हइयाथाके, तबे ताहार मरणोत्तर ऐ बिपये ताहार छि
अधिकारिणी हय कि ना, एवं ऐ छिर साक्षिरा उहार स्वामिर
प्रायश्चित्त करा एवं जाति पाओया ये प्रकार कहियाछे शास्त्र-
सम्मते यथार्थ बटे कि ना—मिछिलेर कागजात दृष्टे यथाशास्त्र
व्यवस्था लिखिवा इति । १५ आपरेल ई १८३१ साल ॥

श्रीर्ज्जपतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेव तत्समर्पितेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातञ्च यदे-
तदन्दीयमैमासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धिशनिवाचरे आमद्वयानन्तरं मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

यदि कस्याश्चित् स्त्रियाः स्वामिना प्रायश्चित्तं कृतम्, एवं तदप्यहं
ब्राह्मणैराहारादिकमपि कृतम्, अथच तत्स्वामिनः स्वांशिभिः सह धनस्य
विभागोऽभूत् तदा तत्स्वामिमरणोत्तरं तस्यैकधने तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रा-
भावे तत्पत्न्येवाधिकारिणी भवति । पत्न्यां विद्यमानायामन्येषां नाधिकारः ।
अथच तस्याः स्त्रियाः साक्षिभिस्तस्याः स्वामिनः प्रायश्चित्तकरणं यथोक्तं
जातिप्राप्तिर्वा यथोक्ता तच्छास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति—इति बङ्गदेश-
चलितदायमागभीकृष्यतर्कालङ्कारकृतदायभाषटीकादायतत्त्वविवादभङ्गार्थ-
वदायकप्रसंगहादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पतितानामपि स्वधनसाध्यप्रायश्चित्तश्रुतेः पातित्वेन स्वधननाशः प्रायश्चित्तवैमुख्ये बोध्यः—इति दायतत्त्व(पृ० १६२)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तया—इत्यादि दायभागादि-
ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥ २ ॥

एतदब्दीयसितम्बरमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिनृहस्पतियासरे घटिकैका-
धिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२२—लं० २६ सन १८३० इङ्गरेजी

बहमब^१ फएज गज़र खोदाओन्द न्यामत श्रीयुत कमिशनर
साहेब आदालत वेओयानि कमिशनरि आतवाफ मशवक जैला
रँपूर दाभ एक वानहु ॥

आरजदास्त श्रीमोहनलाल सदर आमिन मतालके आदालत
मजकुर गरिब परओर सेलामत । परगने पर्वत जोयारेर श्रीयुत
राजेन्द्र नारायण चौधुरि जमिदार कृवनारायण चौधुरि^२ मोतफार
=) आना जमिदारि पाओयार प्रार्थनाते परगता मजकुरेर जमि-
दारान् श्रीअमृतसिंह चौधुरि ओ शरणसिंह चौधुरि ओ जगदीश्वरी-
चौधुराणी जओजे अमृतनारायण चौधुरि मोतफार मादरे
गौरीनारायणसिंह चौधुरि मोतफार नामे १८२॥—) १२॥
गण्डार दाबिते^३ नालिस करे । नथिर कागजात विवेचनाते

१. बहमब मय्या वास्तव अपि पठितुं शक्यते । २. कृवनारायण शब्दपि पठितुं शक्यते ।

३. दारिते—ज्य० ।

जानागेल, जे परगणे पर्वत जोयारेर सावेक जमिदार कलप-
चन्द्रचौधुरिर ३ पुत्र । ताहार एक पुत्र किशोरिसिंह निःसन्तान
मृत्यु हय, द्वितीय पुत्र फुलसिंहचौधुरिर २ पुत्र । ताहार १
एक पुत्र आजबसिंह निःसन्तान मृत्यु हय, आर १ पुत्र सुलतान-
सिंहचौधुरि । ऐ कलपचन्द्रेर पुत्र दलसिंहचौधुरि ताहार २
पुत्र अयनसिंह ओ किर्त्तिनारायणसिंहचौधुरि । किर्त्तिनारायणेर
२ पत्ते ४ पुत्र । एक पत्ते राजेन्द्रनारायणसिंह ओ सरलसिंह ।
ऐ सरलसिंह सुलतानसिंहेर पुष्यपुत्र हइया ॥० आना जमिदारिर
अधिकारि हइयाछे । आर एक पत्ते अर्थात् प्रथम पत्तेर पुत्र
अमृतसिंह ओ कृष्णनारायणसिंहचौधुरि । ऐ अमृतसिंह अवन-
सिंहचौधुरिर पुष्यपुत्र हइया ॥० आना जमिदारिर अधिकारि
हइयाछे, बाकि ॥० आना, याहा कीर्त्तिनारायणसिंह मोतफार
हक, ताहार मध्ये =) आना राजेन्द्रनारायण ओ =) आना
कृष्णनारायणसिंह अधिकारि हइयाछे । कृष्णनारायण मजकुर
निःसन्तान मृत्यु हय । ताहार माता रुद्रेचरी ओ वैमात्रेय भ्राता
राजेन्द्रनारायण ओ सहोदर भ्राता अमृतनारायणसिंह, जे आपन
पितृव्येर पुष्यपुत्र हइयाछे, आर सरलसिंह वैमात्रेय भ्राता, जे
सुलतानसिंहेर पुष्यपुत्र हइयाछे, इहारा सकलि वर्त्तमान आछे ।
राजेन्द्रनारायण वैमात्रेय भ्राता विधाय ऐ कृष्णनारायण मोत-
फार =) आनार दाओया राखे । अमृतनारायणसिंह पूर्वसहोदर
भ्राता विधाय ऐ कृष्णनारायणेर =) आना अंशे आपन सम्ब
वर्त्ताय, एवं हेवानामा राखा ओ आद्धादि करा जाहेर करे । हेवा
नामा दरपेय करिते पारिलना । अतएव ऐ कृष्णनारायणेर =)
आना अंशे कोन व्यक्ति अधिकारि हय-यथाशास्त्र इहार व्यवस्था
निमित्ते ओ पट्ट बुझार जन्ये एक कुरशीनामा एइ आरजि सह-
कारे पठाइया उमेदोयार जे हजुरेर रोबकारिर द्वाराय कुरशीनामा
सदर देओयानि आदालतेर पण्डितदिगेर निकट पाठाइया
व्यवस्था आनाइया ए आदालते देलाइते मरजि हय ।—इह'

धारज । इति सन १८३१ सालं इरेजी ता० ६ जुन मोतावेक
सन १२३८ साल चाङ्गला तारिख २७ ज्यैष्ठ ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं वंशावलीपत्रं च यदेतदन्दीयजुलाइमासीशोनत्रि-
शदिनसम्बन्धिषुषवाचरे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयान्तरं मया प्राप्तम्
तदवलोक्य पादराशोषो जातस्तादनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।—

प्रश्नपत्रवंशावलीपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति कृष्णनारायणसिंहस्य
मरणोत्तरं तत्पुत्राण्यकद्वयपरिमितं यो यदि तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितु-
दौहित्रपितृपर्यन्तो न स्यात्तदा तन्मात् रुद्रेभव्या एवाधिकारः, तन्मातरि
रुद्रेभग्या विद्यमानायां तद्वैमात्रेयभ्रातृ राजेन्द्रनारायणसिंहस्य, तत्सहोदर-
भ्रातुरभूतनारायणसिंहस्य, अर्थात् स्वपितृव्यस्यायनसिंहस्य दत्तकपुत्रत्वेने-
दानीं स्वपितृव्यपुत्रस्य च तद्वैमात्रेयभ्रातुः सवलसिंहस्य अर्थात् स्वप्रपिता-
महकलपचन्द्रचातुर्दरिकपुत्रकुलसिंहचातुर्दरिकपुत्रकुलतानसिंहचातुर्दरिकस्य
दत्तकपुत्रत्वेनेदानीं स्वपितामहपौत्रस्य च नाधिकारः—इति यज्ञ-
देशचलितदायभागभीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकादायकमसंभविष्य-
दभङ्गार्थवाचवादाद्यवसेतुप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थवृत्तयाश्वस्त्य-
वचनम् ॥ १ ॥

एतदन्दीयसेतम्बरमासीयसप्तमदिनसम्बन्धिषुषवाचरे घटिकैकाधिक-
यामद्वयान्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२३—सथोयाल—यदि एक विधवार कन्या थाके, तवे सेइ विधवा आपन स्वांमिर पैतृक धनेर अधिकारिणी हइते. पारे कि ना. अथवा सेइ कन्या माता वर्त्तमाने. आपन मृत पितार पैतृक धनेर अधिकारिणी हइते पारे कि ना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुषमपितप्रश्नपत्रं यदेतद्दशोयागस्तिमासीपविंशतिदिनसम्बन्धि-
शनिवासरे घटिहेकाधिकशमद्वये मया प्राप्त तद्वक्तोक्तं थाइशवांघो जात-
स्तदनुमारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्याश्चिद् विधवायाः स्त्रियाः कन्या तिष्ठति । सा विधवा यदि पत्युः
पुत्रपौत्रप्रपौत्राणां मध्ये कश्चिन्नास्ति तदा तादृशस्य पत्युः पैतृकधनस्याधिका-
रिणी भवेतुं शक्नोति । तस्यां विधवायां मातरि विद्यमानायां सा दुहेता
मृतस्य स्वपेतुः पैतृकधनस्याधिकारिणी भवितुं न शक्नोति, पुत्रपौत्रप्रपौत्र-
रहितस्य मृतस्य घने शास्त्रानुसारेण पत्न्याः प्रधानाधिकारित्वात्, पत्न्या
अभाव एव दुहितुरधिकाराच्च—इति बह्वेदेषु चक्षितदायभागश्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादमञ्जर्यादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम् —

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्याद्युपलिलिखितग्रन्थभूतपाशयत्क्यवचनम् ॥१॥

अनपत्यधनं पत्न्यभिगामि, तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि तत्तद्-
ग्रन्थपूतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥—

एतद्दशोयदशम्वरमासीपविंशमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था
देतेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२४—प्रश्न—

कोन अपुत्रक स्त्रिलोक, ये ताहार चारि कन्या वर्त्तमाना, ओ ताहार मध्ये एक कन्या निःसन्ताना थाके, यद्यपि आपन स्वामिर परलोक प्राप्त ह्योनेर परे स्वामिर स्थावर वस्तु पुत्रवति निन कन्यार मध्ये एक कन्यार स्वामिके, ये सेइ वेक्ति ऐ वस्तु नष्टोद्धार ओ छीलोकेर सेवा सुधुषा एवं पति पालनेर निमित्त आपन अर्थ व्यय ओ परिश्रमं करे, ताहारि परिषर्ते एक कन्यार सन्मति पूर्वक दान करे, एवं तत्परे द्वितीय कन्या ओ दौहित्र सकल ऐ दाने सन्मति लिखन देय—ए रूप दान शास्त्रोक्त सिद्ध हय कि ना इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रनुयमपितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयागस्तमासीयविंशतिदिनसम्बन्धिरानि-
वासरे षट्दिकैः। धकयामद्वये मया प्राप्तम्, तदवलोक्य बाह्यचोघो जातस्त-
दनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति पतिमरणानन्तरं पुत्रपौत्रप्रपौत्र-
रहिता पत्नी यद्युत्तराधिकारित्वेन स्वसंक्रान्तपतिस्थावरधन पुत्रपौत्राणां तिसृषां
दुहितृषां मध्ये कस्याश्चिदप्येकस्याः पत्ये तत्स्थावरनष्टोद्धर्त्तुं च स्वसत्त्वा-
सदीभूतद्रव्यव्ययेन तस्याः स्त्रियाः सेवाशुश्रूषाप्रतिपालनादिपरिश्रमकर्त्रे
च तादृशद्रव्यव्ययविनिमये स्वानन्तरोत्तराधिकारिणीनां दुहितृषां दुहित्र-
नन्तरोत्तराधिकारिणां सर्वेषां दौहित्राणां च सम्मत्या दत्तवती स्यात्, तदै-
तादृशदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवति, पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्योपरतस्य पत्यु-
र्धनस्योत्तराधिकारित्वेन पत्नीसंक्रान्तत्वेऽपि तस्याश्च वर्त्तनाद्यशक्तौ तदनसम्ब-
न्ध्याधानविक्रयणादेः शास्त्रानुमतत्वेन वर्त्तनादिमूलीभूतस्य तदनसम्बन्धि-
नष्टोद्धारस्याप्यावश्यकत्वेन तादृशनष्टोद्धृतद्रव्यदानस्य तस्याः स्त्रियाः सेवाः
शुश्रूषाप्रतिपालनाद्युपयोगिद्रव्यविनिमयत्वेन च तत्सिद्धेः शास्त्रानुमतत्वस्या-
र्थसिद्धत्वात्, स्वाम्यनुत्याज्यस्वामिकृतदानस्य विक्रयस्य वा शास्त्रानुसारेण
सिद्धेर्निष्प्रत्यूहत्वेन स्वानन्तरोत्तराधिकार्यनुमत्या स्वानन्तरोत्तराधिकार्यः
नन्तराधिकार्यनुमत्या च धनस्वामिपूर्वाधिकारिकृतदानस्य शास्त्रानुसारेणः

सिद्धेतिभ्रतूहत्वस्यार्थसिद्धत्वाच्च—इति वङ्गदेशचलितदायभागश्रीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

यली दुहितश्चैव पितरौ मातरस्तथा—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थ-
धृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

अतएव धर्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतम्, तत्राप्यशक्तौ विक्रयण-
मपि—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तथा च भर्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद्वा कर्म करोति
मृतभर्तृकपि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत—
इति विवादभङ्गार्थग्रन्थलिखनम् ॥३॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति,
व्यवहारोपि तथा—इति विवादभङ्गार्थग्रन्थलिखनञ्चेत् ॥४॥

एतदन्वयदिशम्बरभाषोपपन्नमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था
इति ॥

श्रीर्जयपतिराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

१२५—सञ्जोयाल—आदालते आपिल कलिकाता वनामे
एण्डित आदालते देञ्जोयानि सदर—

१ प्रथम सञ्जोयाल—

राममोहन तेञ्जोयारि आपन भ्राता ओ भ्रातुप्पुत्र, सपपनी ओ
साहार गर्भजात दुह कन्या ओ एक पुत्र धर्तमाने आपन समुदय-
विषय सपपनीर गर्भजात आपन औरस पुत्रके दान करिया
सोकान्तर हइया थाके, तवे शाखानुसारे ऐ दानपत्र सिद्ध हय
कि ना, ओ ए विधाने ऐ मृत व्यक्तिर भ्राता ओ भ्रातुप्पुत्र मृत
व्यक्तिर घनाधिकारि हय कि ना ।

द्वितीय सञ्चोयात्—

यदि शास्त्रानुमारे ये दानपत्र सिद्ध नाह्य, तवे ये मृत व्यक्तिर-
भ्राता थो भ्रातृपुत्र ओ उपपत्नीर गर्भजात औरस पुत्र ओ दुइ-
कन्यार मध्ये कान व्यक्ति मृत व्यक्तिर घनाधिकारि हइते पारे—
यथाशास्त्र इहार जञ्चोयाच लिखह इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतद्दीपागस्तिमासीयत्रयोदशदिनसम्पन्निशनि-
वास्तरे घटिकैकाधिकवामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशमोघो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि राममोहनत्रिवेदी स्वकीये ग्रहोदरभ्रातृरि भ्रातृपुत्रे च विद्यमाने
सति स्वोपपत्त्यां च विद्यमानायां तद्गर्भजातयोर्द्वयोः कल्पयोर्येनमानयो-
रेवं तद्गर्भजनिते श्वेकस्मिन् पुत्रे विद्यमाने सति स्वस्वत्यास्यदीभूतसमुदाय-
धनं स्वकीयोपपत्तीगर्भजाताय स्वकीयोरसपुत्राय इत्या गृतः स्यात्तत्र यदि
सद्वनं भ्राता भ्रा पुत्रेण वा सह साधारणं भवति, एवं तद्वाने साधारण्य-
प्रतियोगिनोभ्यां तद्भ्रातृभ्रातृपुत्रस्य वा अनुमतिस्तथा तदान प्रभुसमर्पित-
प्रश्नपत्रावगतस्य विवाहसंस्कृतपत्नीगर्भजातपुत्रपौत्रप्रतीपराहितस्य मृतस्य
राममोहनत्रिवेदिनः प्रभुसमर्पितविचारपत्रावगतायाः विवाहसंस्कृतायाः
पत्न्याः सुगन्धानाम्ना याधर्जीयं आसाच्छादनोपयुक्तावरयकतकुलोपयुक्त
विधवाधर्माशाचरशोपयुक्तातिरिक्तसमुदायधन एव बह्वदेशचलितशास्त्रा-
नुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण च सिद्धं भवितुं शक्नोति । तेषां
मनुमतव्यमत्यामपि बह्वदेशचलितशास्त्रानुसारेणोपलिलिखितविवाहसंस्कृ-
तायाः पत्न्याः सुगन्धानाम्ना उपरिलिखितप्रकारकमासाच्छादनाद्युपयुक्ताति-
रिक्तस्नानयोग्ये सिद्धं भवितुं शक्नोति स्वेतगंशयोग्ये च सिद्धं भवितुं न
शक्नोति । पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण तु साधारण्यप्रतियोगिनो भ्रातृ-

भ्रातृपुत्रस्य वा अनुमतिं विना समुदाये स्वांशयोग्येऽपि वा सिद्धं भवितुं न शक्नोति, स्वेतराशयोग्ये तत्सिद्धिर्दूराशस्यैव, पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारणधने विभागं विना अशानर्णयामावेन स्वांशयोग्येऽप्येकस्य स्वेतराशयनुमतिमन्तरा दानायनधिकारित्वात् । यदि च तद्दन मृतस्य राममोहन-त्रिवेदिनोऽसाधारणं विभक्तं वा भवति, तदा वज्रदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण च मृतस्य राममोहनत्रिवेदिनः पर्याप्तं सुगन्धानाम्ना यावज्जीवमुत्तरिलिखितप्रकारकमासाञ्छादनायुःसंयुक्तातिरिक्तं धनं शो सिद्धं भवितुं शक्नोति । एवञ्च सति तद्दानस्य सिद्धत्वाच्चे मृतस्य कर्तृभ्राता भ्रातृपुत्रो वा मृतस्य कर्तेर्धनाधिकारी न भवति, तद्दानेन मृतस्य तस्य दातुः स्वत्वविच्छेदात्, प्रतेग्रहीतुः स्वत्वोत्पादाच्च । तद्दानस्यासिद्धत्वाच्चे अर्थात्तद्दानस्य भ्रात्रा भ्रातृपुत्रेण वा सह साधारण्ये पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण तेषामनुमतिं विना तद्दानस्यासिद्धत्वे मृतस्य राममोहन-त्रिवेदिनः पर्याप्तं दानम्, यद्यत् सुगन्धानाम्नीप्रभृतीनां द्वितायप्रश्नात्तर-लिखितप्रकारकमासाञ्छादनायुःसंयुक्तातिरिक्ताविभक्तसाधारण्यतर्काशो मृतस्य कर्तेः पुत्र-नारदस्य पितृपर्यन्तानाम्मध्ये यदि कश्चिन्नस्ति तदा तत् सहोदरभ्राता भवत्यधिकारी, सहोदरभ्रातरि विद्यमाने भ्रातृपुत्रो नाधिकारी भवतीति ॥ १ ॥

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनादेय यदतिरिच्यते—इति वज्रदेशचलितविवादमहार्णवादिग्रन्थभूतम्, पश्चिमदेशचलितवोरोमिश्रादयादिग्रन्थभूतञ्च नारद-वचनम् (४० ६६) ॥ १ ॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरयापि वा ।

कुर्म्युर्ययेष्ट तत्सर्वमीशास्ने स्वधनस्य वै ॥ इति वज्रदेशचलितशाय-मायादिग्रन्थभूतनारदवचनम् ॥ २ ॥

साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परांशयोग्येऽसिद्धिः । स्वांशयोग्ये ॥ सिद्धिः अन्यानुमत्या विक्रये तु तत्सिद्धिः—इति वज्रदेश-चलितविवादमहार्णवग्रन्थ (१ विवा० ३०५ क) लिखनम् ॥ ३ ॥

अविभक्तेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वाद् एकस्यानीश्वरत्वात् सर्वाम्यनुज्ञाऽ-
वश्यं कार्य्या, विभक्तेषु तु विभक्तानुमतव्यतिरेकेणापि व्यवहारः सिद्ध-
त्येव—इति पश्चिमदेशचलितमिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

रथावारस्य समस्तस्य गोत्रसाधारणस्य च ।

नेकः कुर्यात् क्रयं दानं परस्परमतं विना ॥—इति पश्चिमदेश-
चलितधीरमित्रोदयादिग्रन्थभृतयावचनम् ॥ ५ ॥

स्वस्वत्येनिवृत्तिपूर्वकपरस्वत्वापादनं दानम्—इति यद्देशचलित
विवादभङ्गार्थादिपश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थलिखनम् ॥ ६ ॥

पत्नी दुहितश्चैव पितरौ मातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि पश्चिमदेशचलितमिताक्षरादिग्रन्थभृतयावचनम् ॥ ७ ॥

पत्नी, गृहीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तप्रातृस्त्रीविषयम्—इति
पश्चिमदेशचलितमिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ ७ ॥ • ॥ = ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण तदानस्यासिद्धत्वात् अर्गात् तदन-
स्य भ्रात्रा भ्रातृपुत्रेण वा सह साधारण्ये सति तेषामनुमतिं विना पश्चिम-
देशचलितशास्त्रानुसारेण सादृशदानस्यासिद्धत्वात् प्रभुसमर्पितविचार-
पत्रलिखितानां मृतस्य राममोहननिवेदिनः पत्न्यादीनां सुगन्धानाग्नीमभृ-
तीनां मध्ये घनाधिकारे अयं विशेषः । सुगन्धानाग्नी तत्पत्नी यावज्जीवं तत्कु-
लोपयुक्तप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तघनस्याधिका-
रिणी भवति । मृतस्य तस्योपपत्ती यदि गृतस्य राममोहननिवेदिन उत्तरा-
धिकारिणां प्रतिकूला व्यभिचारिणी वा न भवति तदा सापि स्वकुलोपयुक्त-
प्रसाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तघनस्य च यावज्जीवं
भागिनी भवति । एवं तदुपपत्ती गर्भजातीरुपपुत्रोऽपि यावज्जीवं प्रासाच्छा-
दनभागी भवति । एवं तदुपपत्ती गर्भजाते द्वे कन्येऽपि विवाहसंस्कारपर्यन्तं
प्रासाच्छादनस्य विवाहोपयुक्तघनस्य च भागिन्यौ भवतः—इति यद्देश-
चलितदायभगध्रीकृष्णतर्जलद्वारकृतदायमागटीकाविवादभङ्गार्थवशायकम-

संहादिग्रन्थानुसारिणी पश्चिमदेशचलितमिताचरावीरमित्रोदयव्यवहारमा-
धव्यवहारकौस्तुभादग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्वर्प्यति गर्वमिनि स्त्री तु मासाच्छादनमाग्निनी ।

अविभक्ते घनांशे तु प्राप्नोत्यामरणान्तिकम् ॥—इति उपरिलिखित-
ग्रन्थधृतकाल्याणवचनम् ॥ १ ॥

तिज्वास्या व्यभिचारिण्यः प्रतिनूलास्तथैव च ।—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
वाङ्मयवचनम् ॥ २ ॥

भरणी चास्य कुर्वीरन् स्त्रीणामाजीवनक्षयात् ।

रक्षन्ति शय्या भर्तुश्चेदच्छिन्द्युरितरासु च—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
नारदवचनम् ॥ ३ ॥

भर्तव्यास्त्यपरे सुताः ।—इति तत्तद्ग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥ ४ ॥

अपरिणीताजातरय तु प्रतिषिद्धपुत्रत्वेनापकर्षाच्च भागिता, किन्तु
मासाच्छादनमात्रार्हता—इति बङ्गदेशचलितभोक्तृभ्यतर्कालङ्कारकृतशयभाग
टीका(पृ० १४२, लिखनम् ॥५॥

सुताम्वैपाञ्च भर्तव्या यावज्जो भर्तृसात्कृताः । इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
वाङ्मयवचनम् ॥ ६ ॥

कन्याम्यध्वपितृद्रव्याहंयं वैवाहिकं धसु—इति तत्तद्ग्रन्थ धृतदेवल-
वचनञ्चेति ॥ ७ ॥

अत्रराममोहननिवेदिनो वंशे बङ्गदेशचलितशास्त्रस्य पश्चिमदेश-
चलितशास्त्रस्य वा प्रचार इति अनवगमात् प्रमुखमपितविचारपत्रेऽपि
बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा व्यवस्था
दातव्येति आशया अलिखितत्वाच्च बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण पश्चिम-
देशचलितशास्त्रानुसारेण च व्यवस्था लिखितेति निवेदनम् ॥

एतद्विद्वद्भिरसम्भारमासीद्यत्रयोदशदिनसम्प्रन्धिमतलवाचरे मयेयं व्यव-
स्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्

श्रीदयनाथमिश्रेण

च श्रुत्कथकयसंविभागपरिग्रहाधिगमप्राप्तमिति व्याख्यानाच्च । मातृस्वत्वा-
स्पदीभूतद्रव्यमात्रस्य निश्चितस्त्रीधनत्वेन मातुरुर्ध्वं तदुत्तराधिकारिदुहित्रा-
दीनामेवाधिकारः । तत्र यदि अविभक्तैव माता मृता, तथापि तद्योग्यमंशं
तदुत्तराधिकारिण्या दुहित्रा विभज्य ग्रहीतुं शक्यत एव । यथा काचिन्नारी
दुहितृद्वयं रक्षित्वा स्वर्लोक्मगमत्, तत्स्त्रीधने जाताधिकारयोर्दुहित्रोरवि-
भक्तैवैका मृता, अनन्तरं तद्दुहित्रा स्वमातृयोग्यभागं मातृध्वसतो विभज्य
गृह्यत एव । दायभागमते तु सद्धनस्य संक्रान्तधनत्वेन स्त्रीधनस्याभावात्
विभक्ताविभक्त्येदानादरेणैव मातुरपरमे दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः—इति
वचनेन पूर्वस्थामिधनाधिकारिणां पुत्रादीनामेवाधिकार इति विशेषः—

प्रथमत्रलिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति शास्त्रानुसारेण मातृभागो नैव
भवति; प्रमाण्यामावात्, एकपुत्रस्थले पितृधनविभागस्यासंभवाच्च ।
माता “पितरि प्रेते पुत्रतुल्यांशहारिणी”—इति कात्यायनवचनस्य
समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पतौ—इति नारदवचनस्य च
पितुरुर्ध्वं विभजतां माताप्यशं समं हरेद्—इति याश्वल्क्य-
वचनस्य च मृते पितरि जीवत्वां च मातरि, यदि दुर्दृष्टाः पुत्राः पैतृकध-
नस्य विभागं कुर्वन्ति तदा मात्रे स्वस्वभागसमभागं दधुरित्यर्थवत्तया मिता-
क्षरादिग्रन्थेषु व्याख्यातत्वाच्च ।

तदभावे तु जननी तनयांशसमांशिनी ।

समांशा मातरस्तेषां तुरीयांशा तु कन्यका ॥

इति बृहस्पतिवचनस्य च विशेषत इति व्याख्यानेन । अर्थाद् अत्रार्थः—
'पितुरभावे'.....'पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती, मातरोऽपुत्रा
विमातरः एताः सर्व्वः पुत्रतुल्यांशभागिन्य इति । अनेन पुत्रैर्विभागे'
क्रियमाणे एव मातृभोगाविकारित्वप्रतिपादकत्वावगमाच्चान्यथा । यदि च
बहुपुत्रस्थले पुत्राणां विभागोपक्रमं विनापि विभागसंभावनारहिते एकपुत्र-
स्थले वा पुत्रेण सह मातृस्तुत्याधिकारित्व स्यात्तदा मातुः प्रथमाधिकार-

(त्वात्)त्वेन पुत्र-पौत्र-प्रपौत्ररहितस्य मृतस्य धने पत्नी-दुहितृ-दीहिजा-
दीनामधिकारमतिवादकस्य पत्नी दुहितरश्चैव-इत्यादि याज्ञवल्क्यवचनस्य,

अनन्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि-इत्यादि विष्णु-
वचनस्य दत्तबलाञ्जलि(२३)द्-इति द्वितीयतृतीयप्रश्नयोश्चरज्ञा
तत्रैवार्थग्रन्थमिति पृथ(८ न) लिखितमिति-

पूर्वमेवेतन्वयस्थापनस्योत्तरमस्माभिर्(६८म्), पाठशालास्धारोपसर्गद-
र्शनाभिमतस्येदं तानुमोदितादन्यद्वचनं या । तत्र चत्वारो हेतव उपन्यस्ताः ।
तान् दृष्ट्वास्माभिर्निर्दिष्टतम् । अस्मदुक्तस्यार्थार्थं स्या नादर्शितं, यतो
भवदुक्तदेवनामाशङ्काकोटौ प्रविष्टानां समाधानस्य बहुशस्तस्मिन् शास्त्रार्थ-
पत्रे कृतत्वात् । इदं तत्रार्थं चेत्तत्रः वादयोत्तरदाने भवदुक्तहेतुखण्ड-
नस्यापि खण्डनं भवता कृतं स्यात् । अतो बहुपकारकशङ्कासमाधानपुक्तं
पूर्वलिखितशास्त्रार्थग्रन्थं पुनरपि प्रेष्यते । तत्रत्यस्य समाधानानां प्रत्येकं
खण्डनं कृत्वा भवता उत्तरेण सः प्रेष्यते । तदा भवदुक्तमुत्तरं पण्डितानां
मनोरमं स्यात् । तस्मान् सर्वेषां गम्यावानानां दूषणं विना भवदुत्तरम-
नुत्तरमिति । यत्र शास्त्रार्थग्रन्थे भवदुक्तचतुर्णां हेतूनां समाधानानि
पूर्वमेव कृतानि पण्डितैस्तथागोदानां पुनरपि समाधानान्तराणि चान्यन्ते-
ऽस्माभिः ॥ मानुभागो नैव भवति प्रमाण्याभावादिति प्रथमो हेतुस्तथा दत्तः
उ न शोभनः ॥०॥

माता तु पितरि प्रेते पुत्रनुत्यांशहारिणी-इति कात्यायनीय-समांश-
हारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पती-इति नारदीय-पितृत्वं विमज्जती
नाताप्यंशं सगं हरेद्-इति याज्ञवल्क्य-समांशा मातरस्त्वेष्टान्पुत्रीया-
शास्तु कन्यका-इति बार्हस्पत्यवचनसाम्यविद्वत्प्रमाण्यानां सरसात् ॥ गन्धर्व-
मेभिर्वचनैः पुनः यदि विभागं कुर्युस्तदा जनन्यै स्वभागवत्तमेकं भागं दद्या-
त्युच्यते, न तु विभागोऽक्रमन्तरा यथा भागं ग्रहीतुं शक्यते इति चेत् । एता-
दृशार्थकरणे प्रमाण्याभावात् केनापि ग्रन्थखरेणातिखितत्वाच्च ॥ याज्ञवल्क्य-
वचनस्यवर्त्तमानार्थकं " सराश(१)विभागं कुर्वतामित्यर्थकविमज्जतामितिपद-

मेव प्रमाणमिति न वचनीयम् । अनुवादविशेषणत्वेन लट्ठस्य विवक्षित-
त्वात्, कातीयादिवचस्तु तदभावाच्च ॥ किञ्च हरेदित्यत्र विधौ लिट् विधिमन्-
त्रणे-इति पाणिनिस्मरणात् । विधित्वं चात्यन्ताप्राप्ते प्रापकत्वम् (म्) ॥
ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च—इत्यादिमन्वादिवचनैर्जनकमरणोत्तरं पुत्रकर्तृक-
विभागकालः पुत्रकर्तृकविभागश्चोभौ विधीयेते । एवञ्च तैस्तत्तिविधिभिर्भा-
तृणां परस्परं विभागे सिद्धे मातुर्भागो न प्राप्तः तावान् पूर्वोक्तः माताप्यंशं
समं हरेत् (या स्मृ० २।१२३) इत्यादिना च विधीयते । एवञ्च पति-
मरणोत्तरं स्वेच्छया मात्रापि पुत्रसमांशत्वांशो हर्त्तव्य इति विधेः शरीरं निष्प-
न्नम् । तत्रायं फलितार्थः । यथा पित्राद्युपरते तनयादिभिः पृथग्यस्मानु-
ष्ठानाय व्यवहारे यथेष्टविनियोगार्हस्वल्पसम्प्रदानाय बन्धनैव स्वत्वमिति मूलको
भागो गृह्यते, तथैव मात्रापि पुत्रैः सह पूर्वोक्ता तस्मिन्नेव विवाह-
बन्धन्यस्वत्वमिति मूलको भागो प्राप्त इति ॥ भयदुक्करीत्या तु पुत्रकर्तृकसम्प्रदाने
सम्प्रदानीभूतया मात्रा प्राप्तमिति विधिश्च शरीरं माताप्यंशं समं हरेत् (या स्मृ०
२।१२६) इत्यादिना निधन्नं भवेत्तच्च न शोभनम् । ईदृशस्य विधेः श्रुते-
रेक्षणादनुत्पत्तेर्महर्षेरीदृशविधौ विवक्षिते विभजन्तः पितुश्चोर्ध्वं ददुर्मात्रे
समांशकम् इति—महर्षिणा पठितव्ये तथा पाठस्य कृतत्वाद्, भयदुक्कवच-
नार्थे विधित्वाभावापत्तेश्च । पितरि श्रुते संस्थितायां मातरि यदि दुर्दुत्तौ पुत्रौ
भागं कुर्यातां तदा मात्रे भागं दद्यातामित्यत्र विभज्यतामित्यत्रत्यभयसम्मत-

यदि कुर्यात्समानांशान् पत्न्यः कार्य्याः समांशिनः—इति याज्ञवल्क्य
वचसि पुत्रविभागकरणे प्रवृत्तस्य पत्न्या अभि विभागावगतेस्तदभिप्रायेण
दम्पत्योस्त्यभिधानमिति समादधे । एवं

विभिचमातृकास्तेषां मातृभागः प्रशस्यते ।

इति वचनं पुत्राणां भागग्राहकत्वं मातृद्वारेणैव बोधयति । तस्या
भागाभावेतद्वद्वारेण तदग्राहकाणां तदग्रहणानां पतिः स्यादिति महा...कोपः
स्मृतीनाम् । तस्माद् बहुमुनिशिद्धान्तिते ग्रन्थकृद्भिर्विरोधी कृते प्रमाणसिद्धे
मातृभागे प्रमाणाभावादित्येते दुर्गमज्ञानभिज्ञानानामग्र(?)हेतुदायकस्य
प्रकटयति । इति मातृभागे प्रमाणाभावखण्डनम् । यदपि प्रलपितमातृ-
भागो नास्ति एकपुत्रस्थलेऽपि विभागस्यासम्भवाद् इति द्वितीयं कारणम्
तदपि न । एकपुत्रस्थलेऽपि विभागसम्भवस्य शास्त्रोक्तत्वात् । तथा यदा
एकात्मजः पिता स्वेच्छया स्वोपाजितधनस्य श्रीन् भागान् कृत्वा द्वावशौ
प्रतिपद्येत विभज्यात्मनः पितेत्यादिवचः (वचनात्पिता) द्वौ भागौ स्वयं
शङ्क्याति पुत्रायैकभागं ददाति तदैकपुत्रस्थले विभागो न्याय्य एव । एता-
दृशस्थले मिताक्षरदिमते स्वोपाजितधने एव पितुरंशद्वयग्रहणमभवति
भीमूतवाहनादिमते तु मितामहायुपाजितधने पुत्रोपाजितधने च^१ पितुरंशद्वय-
ग्रहणम्, यतस्तेषां मते भूयः पितृमहोपात्ता इत्यादौ नि वचनानि^२ या० स्मृ०
२।१२१) पितृकृतृकन्यूनाधिकविभागनिषेधकानि, न तु पितुरंशद्वय-
ग्रहणाभावाद्येव विचारान्तरम् । परन्तु सर्वेषां निषेधकाराणां मते
एतादृशस्थले एकपुत्रस्वत्वे भागो जायते; यथात्र जनको भागद्वयमेकस्मात्
पुत्रादुपाददाति तथा पत्न्यौ मृतेऽग्रहीतस्त्रीधना माता तथाभूत्वा पुत्राद्
भागं ग्रहीतुं शक्नोत्येव समांशहारिणी माता—इत्यादिवचनात् ॥

नचैवं द्वावशौ प्रतिपद्येत विभज्यात्मनः पिता इत्यादि (ना० स्मृ०
पृ० १६२) कमपि वचनमेकपुत्रस्थलातिरिक्तविषयमिति वाच्यम्, शङ्कल्लिखित-
वाक्यविरोधात् । तथा च शङ्कल्लिखितावाहृतः स हो कपुत्रः स्याद्वौ भागावात्मनः
कुर्यात् । न चैवं एकस्य पुत्र एकपुत्रः न पुनरेक एव पुत्रो यस्येति बहुमीहि-

स्तस्यान्यपदार्थप्रधानत्वेन पधीतत्पुरुषाद् दुर्बलत्वाद्—इति जीमूतवाह-
नाचार्यकृतेननेनार्थेनैकपुत्रस्थलातिरिक्तविषय^१ एवं शङ्खलिखितो बोध-
यतः पिनुर्द्विभागमिति वाच्यम् । जीमूतवाहनतः प्राचीनानां नवीनानां
च ग्रन्थकर्तृणां मध्ये^२ तु बहुव्रीहेरेव तत्र भिदान्तिउत्वात्, वीरमित्रोदये
दायभागप्रकरणे शङ्खवचनस्यैकपुत्रपदव्याख्यावसरे तत्पुरुषस्वीकारे दोष-
दानेन जीमूतवाहनोक्तेर्दृष्टित्वात् च ॥

अतएव शुद्धिचिन्तामणौ तीर्थचिन्तामणौ मुण्डनप्रकरणे—मुण्डनं

चोपवासश्च सर्व्वतीर्थेष्वयं विधिः—इत्यत्र दूषणभयाद् बहुव्रीहितः
प्रबलभूतौ तत्पुरुषः कर्मधारयौ त्यक्त्या बहुव्रीहेरेवाभितो^३ महामहो-
पाध्यायवाचस्पतिभिः, इति एकपुत्रस्थले भागाभावादिति हेतुस्तद-
नम् ॥ यच्च माता तु पितरि प्रेते पुत्रः इति कातोयस्य समांश-
हारिणी माता इति नारदीयस्य पितुर्दुष्पुं विभजतां माता इति
योगीश्वरचनत्य च सृते पितरि मातरि जीवन्त्याश्च यदा दुर्वृत्ताः
पुत्राः पैतृकस्य धनस्य विभागं कुर्व्वन्ति तदा मात्रे स्वस्वभागसमं
दद्यात् इत्यर्थकतया मिताक्षरादिग्रन्थेषु व्याख्यातारवादितिमातुर्भागे^४ तृतीयो
हेतुः सोऽपि न, मिताक्षरादिग्रन्थेषु एतादृशस्यार्थस्याप्येलाभात्, भवत्कृ-
तमिताक्षरादिनिबन्धस्याप्रमाणत्वादस्माभिरहृष्टत्वाच्च । अत्रेदं विचारणीयम् ।
यथा पुत्रादीनां कर्मनैव सामुदायिकं प्रादेशिकं चोत्पन्नमपि स्वत्वम्
ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च इत्यादि (मनु० ६।१०४) वचनानुराधेन पितुर-
निच्छया दाक्षिणात्यग्राह्यमैथिलसदग्रन्थकृन्मते पित्राजितधने, जीमूत-
वाहनाचार्यमते त्रितामहायजितधनेऽपि विभागानर्हता बोधयति । यथा वा
पत्न्यौ जीवति जायापत्योर्विभागो न विधते पाणिग्रहणाद्धि सहत्वम्
इत्यापस्तम्बोयेन पत्न्यः कार्य्यास्तमांशिकाः इति याश्वल्कीयेन (या०
स्मृ० २।१५) च पत्या सह भार्य्याया भागो न लभ्यते; तथा अत्र
विवाहजन्यं मातुः स्वत्वं पुत्राणामनिच्छया मात्रा पुत्रेभ्यः स्वीयभागो

१. विषय-व्यय ।

२. ते-व्यय ।

३. ०क्षितो व्यय ।

४. मातुर्भागे-व्यय.

५. ०प्यया-व्यय.

६. ०पत्यो-व्यय.

न लभ्य इति न बोधयति, पूर्वस्थलवदत्र संकोचकवचनाभावात् ॥ प्रत्युत
मातुर्गो पुत्राणां गोवास्वातन्त्र्यम्, ऊर्ध्वपितृश्च-इत्यादीनि (मनु० ६।१०४)
नचांश्चिद्विदधति । अतएव तत्तन्निष्कण्ठकारमातुरग्रे पुत्रकर्तृविभागो न
धर्म्योऽतदनुज्ञया-इत्याहुः । अतोऽप्युपाधारणं मातुः स्वत्वं पुत्राणां
विभागोपक्रमं विनाऽसंकोचकपित्राकस्याभावेन मातुर्भागं बोधयतीति मात्रा
पुत्रानिच्छया विभागो ग्राह्य इति । न चैवं पिता रक्षति बाल्ये हि भर्ता
रक्षति धौवने, पुत्रास्तु स्थाविरे भावे न स्त्री स्थातन्त्यमर्हति-इत्यादि-
नारदादि(ना० स्मृ० पृ० १६८)वृत्तनेभ्यो मातुरप्यस्वातन्त्र्यमिति विभा-
गोपक्रमं विनाऽसत्या न भाग इति वाच्यम् ॥ अकार्य्यकरणाद्रक्षेत्-
इत्यर्थस्य महानिबन्धेषु दर्शनात्-स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु-इत्यादिवच-
नानुसारेण वृथादानाद्यस्वातन्त्र्यबोधनात् माताप्यंशं समं हरेत्-इत्या-
दिवचनानुरोधेन भागग्रहणातिरिक्तस्थले तद्वचनेनास्वातन्त्र्यविधानाच्च
॥३॥ इति तृतीयहेतुस्तरङ्गम् ॥

यच्च तदभावे तु जननी इति गार्हस्थ्यं वचः-अत्यर्थः..... ।
वितुरभावे पुत्रैर्विभागे त्रियमाणे जननी पुत्रवती मातरोऽपुत्रा विमातर
एताः सर्वाः पुत्रतुल्यांशभागिन्य इत्यनेन पुत्रैर्विभागे त्रियमाणे मातुर्भा-
गाधिकारित्वावगमादित्यनूय विभागभावनारहिते एकपुत्रस्थले, विभाग-
रम्भावनाय क्ते बहुपुत्रस्थले, पुत्राणां विभागोपक्रममन्तरा तनयैः सह
मातुस्तुल्याधिकारित्य चेन्मातुः प्रथमाधिकारिणी माता धनिनः) पातित्वेन
पत्नी दुहितरश्चैव इत्यादीनां दत्तञ्जलाञ्जलिता स्यादिति तृतीयहेतुवर्णनम्,
तदप्यतितुच्छम् । एतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावाद् गार्हस्थ्यशक्यात्तराद-
लाभात् स्वकशेल्क(लिप तत्वात्, तदभावे तु जननी इत्यस्य-माता-
प्यंशं समम्-इत्येतत्समानार्थकत्वाद्, उत्तरार्दन्तु यत्न्यः कार्य्याः समां-
शिकाः इत्येतत्समानार्थकत्वाच्च । तदुक्तसिद्धान्तवदस्यापि सिद्धान्ति-
(तत्वात्) अक्षरादलामादेव श्रीकृष्णतर्कालङ्कारैर्योदि(र)प्युक्तमवाधे
.....न्यताभ्यादितिन्यायाच्चस्यापि श्रुतिमित्रत्वात् ॥ १ ॥ यथा

स्वेभ्योऽश्रम्यस्तु कन्याभ्यः प्रददयुर्प्रातरः पृथक् ।

स्वात्स्वादंशाच्चतुर्भागे पतिताः स्युरदिस्तवः,—इति मनु (६।१।२८) —वचने, भगिन्यश्च निजादंशादत्वांशं तु तुरीयकम्—इति याज्ञवल्क्य- (२।१२३) वचने च, प्रददयुर्दत्तेत्यस्य कर्तृतया भ्रातृणामन्यथात्वेनामघोन- स्ताभ्यो दानं तथा जननीग्राह्ये भागे परतन्त्रविधायकत्वात्त्याभावाद्भिभागो- पक्रमं विनापि बहुपुत्रस्थले विभागभावस्थले एकपुत्रस्थले, स्वेच्छया मात्रा भागग्रहणं कार्यम् ॥ ० ॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इति याज्ञवल्क्य (२।१।२५), वचनम्, अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि—इति विष्णुवचस्तु पुत्रादिदौहित्रान्तरहितस्य मृतस्य यशदत्तस्य धने मिताक्षरादिमते पूर्वं माता समग्रधनाधिकारिणी, जीनूत- वाहनमते पुत्रादिपिन्तरहितयशदत्तस्य समग्रधने माताधिकारिणी भवति इत्यर्थं ब्रूते ॥

पितृस्वर्णं विभजतां माताप्यंशं समं हरेद्—इत्यादि (वा०स्मृ० २।१२३) मातृभागप्रापकवचनानि तु विष्णुमित्रस्य पुत्रादिसत्त्वेऽपि मात्रा स्वभाग- ग्रहणं कर्तव्यमिति धनैकदेशग्रहणं—दधने इति मिश्रशिष्यस्वयंवस्या- एनेन चरितार्थानां वैयर्थ्याभावाद्दत्तवस्त्राञ्जलितोपपादनमशक्यं कर्तुं स्वया । किञ्च भवतामेव विरोधः स यथा देवदत्तः पञ्चभ्यः पुत्रेभ्यो यथाशास्त्रं पञ्चभा- गान् दत्त्वा स्वयं द्वावशौ प्रतिपद्येत विभजेवात्मनः—इति (नार०स्मृ० ५०१६२) प्रभृतिशास्त्रानुरोधेन द्वावशौ प्रतिपद्य विभक्तोऽभवत् । तत्र विभक्तेषु एकः पुत्रादिदौहित्रान्तरहितो मृतः । तदने पत्नी दुहितरश्चैव—इति याज्ञवल्क्य- अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि—इति वैष्णववचोभ्या जीनूतवाहनमते पिता समग्रधनाधिकारी, तदन्यमते माता समग्रधनस्वामिनी भवति । यथा वा पितृमरणोत्तरं स्वयं भ्रातरो विभक्तास्तेष्वैकः कश्चन भ्राता पुत्रादिपिन्त- रहितो ममार । तदने भ्रातृणामधिकारोऽधिकारिक्रमबोधकेन शास्त्रेण बोधितो भवति । भवन्मते उक्तस्थलयोः पित्रोर्भातृश्च प्रथमाधिकारि- ता- न्तःप्रातत्वेन तेषामधिकारः स्यात् । अस्मन्मते उक्तस्थलयोर्यथायथं पूर्वं पिता अंशद्वयाधिकारी, माता ॥ एकांशाधिकारिणी, भ्रातरस्तु स्वांशाधिकारिणः, पश्चादेतादृशस्थले पूर्वोक्ता मृतस्य समग्रधनाधिकारिणो-

भवन्तीति विषयश्चस्थापनेन भवदुपतरेव दत्तिलाञ्जलिता यानि । तस्माद्
घनस्य कृतस्यैकदेशरूपा व्यवस्था त्वया कर्तव्या ॥ यच्च केनाप्युक्तम् ॥
यत्र पतिपुत्रकर्तृको विभागः पत्या पुत्रेण वांशो दीयते, तत्रैव मातुर्भागो-
भवति । अत्र तु धनिना धनिपुत्रेण वा विभाग एव न कृतोऽतोमातुरंश
एव नास्ति; कृतो दुःहन्नादिभिलंभ्यध्वमिति । तद्वधमोचीनम् । पत्या एव
भाष्याया भागप्रदत्तेऽस्यातन्म्येऽपि पत्युरेच्छयैव तथा भागो लब्धव्य इति
तावत् सर्वेषां निर्विवादेऽपि पुत्राणां पितुरयम इव मातुर्भ्येऽपि स्वातन्त्र्य(१)-
मावस्य एवदेशीयमन्येदूपलभ्यमानत्वेन मातुर्भागादाने स्वेच्छया दाने
च पुत्राणामनधिकार एव । किन्तु मातुर्गुमत्या पितृधने दुर्दिनभावे
सति जननीपते च पुत्रैर्भागो प्राक्तः, मात्रा तु स्वेच्छयैव पुत्राणामनिच्छा-
सत्वेऽपि भागो प्राक्तः । अनीशास्ते हि जीपतोः—इत्यादि मन्याद्युक्तेः
माताप्यंशं समं हरेत्—इत्यादिविधिवोधकप्रत्ययाद्युद्धतस्मृतैः (१), एवं
धम्मावितमानुभागेऽपि दुदितुरधिकारो तेः । एतद्विचारस्तु दृतीयदुरीय-
हेतुत्वएवमेव महानरं विचारितस्तत् एवावधार्यः ॥

एवंप्रकारकमन्ये भवद्दूषणगणे जाते पण्डितानां मातृप्राप्तभाग-
विषयिणी अनुकम्पा बहुपुत्रस्थले विभागोपक्रम विना सकृत्पुत्रस्थले
(२) अपि मात्रा प्राक्तम् भागं बोधयन्ती मातुर्भागो नैव भवतीति प्रवक्तुमांता
भगिन्योऽप्य(भागि)त्वं बोधयति; यतः शास्त्राविद्वत्स्यार्थस्थापलपन(मृमृ)ना-
ग्रहमूलकमेव भवति इत्याग्रहन्त्य(क्त्या कृतशुद्धिभिरन्यैः (२५, क्षपातैः सह
त्वयाऽवधार्यम् । भवदत्तोत्तरे शब्द(१)शुद्धयोऽनन्वितपक्षयभास्माभिर्न दुःवि-
तास्तद्दूषणे प्रयोजनाभावात् । अ(नन्वैः) पाठशालास्थैरपाठशालास्थैश्च
सर्वैरपि गतागतशास्त्रार्थो दृष्टः, गुणशेषभावधारितः । अत्र शास्त्रार्थं
सर्वेषामनुमती भवतामप्यनु(म)तिरेव स्यात्, भूयसा व्यवदेश इति न्यायाद्
इत्यस्माकं प्रतिमाने । किञ्च मूर्त्ताणामिव पण्डितानामपि य नापण्डितेन
भवता न फार्या, यतः शास्त्रार्थमत्रं समालोच्य प्रतिवादिदृक्तरास्त्रार्थ-
निराकरणपूर्वकं स्वमतं महद्मिलिख्यते इति महत्तां सर(स्त्री) तथा त्वया

न कृत इति परिदत्तानामग्रे परिदत्तप्रयुक्तं गौरवं तत्तन्मतनिराकरणं
 विना कदापि न भवति । समाधानपूर्वपक्षादिकमस्मिन् शास्त्रार्थे बहूनि
 जातानि, तानि सर्वाणि विस्तरमयात्र लिखितानि । भवत्पूर्वपक्षायां
 समाधानान्येव परिदत्तैर्लिखितानि । शास्त्रार्थेनात्र परिदत्तानां वर्षशतेनापि
 पराजयो न भवति इति श्रोमद्भिर्निश्चेयम् । सुदृढभावेनोच्यते मया
 ह्ययं शास्त्रार्थो भवते रोचते तर्हि व्यवस्थायां सम्पत्तिं कृत्वा परिदत्तानां
 (१) भवे साहवाय देवा इति सताम्नसमर्थः शिबम् ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥

श्रीचन्द्रनारायणशर्मणः— अत्रार्थे सम्पत्तिस्सुकुशर्मण्याम् ।
 सम्पत्तिरत्रार्थे—

अत्रार्थे सम्पत्तिर्विद्वत्शास्त्रिण्याम् । सद्यं तदर्थं जाते जातेऽर्चि-
 र्ब्रह्मरानन्दशर्मणपरिदत्तस्य ।

अत्रार्थे सम्पत्तिः श्रीकान्त- श्रीकृष्णदेवशर्मण्यां सम्पत्तिः ।
 शर्मण्याम् ।

सम्पत्तिरेतदर्थं काशीनाथ- अत्रार्थे सम्पत्तिः श्रीलज्जाशङ्कर-
 शास्त्रिणः । शर्मण्याम् ।

अत्रार्थे सम्पत्तिः श्रीयदुनाथशुक्ल- सम्पत्तिः ...
 शर्मण्याम् । शर्मण्याम् ।

पूर्वप्रेषितापरिलिखितव्यवस्था पुत्राणां पैतृकधनविभागोपक्रमे
 मातृमागो मिश्रित एव । एवञ्च मति विभागमन्तरा मातृमागाभावप्रति-
 पादकहेतुसङ्गने यो हेतुः—माता तु पितरिं प्रेते पुत्रतुल्याशहारिणी इति
 कातोय—समांशहारिणी माता पुत्राणां स्यान्मृते पती—इति नारदीय-
 पितृसूत्रं विमजतां माताप्यंशं समं हरेत्—इति याज्ञवल्क्योय-समांशा
 मातरस्त्वेपां तुरीयांशास्तु कन्यकाः—इति बार्हस्पत्यवचसां प्रसिद्धप्रमाणानां
 सत्त्वादिति दत्तः(३७)तदातृणां शुक्लतद्वचनपाठपरायण्यराणां धर्मशास्त्रा-
 र्यानभिधानां विदुषां पुरः प्रकाशयति । तेषां चतुर्णामपि वचनानां सति
 विभागोपक्रम एव मातुः पुत्रमागसमभागप्रतिपादकत्वात् । नचेतादृशार्थेन
 सम्भवत्येतादृशार्थकरणे प्रमाणाभावात्, चेनापि ग्रन्थकारेणालिखितत्वा-
 न्चेति वक्तुं युक्तम् । तेषु प्रथमस्य—माता तु पितरिं प्रेते पुत्रतुल्यांश-

हारिणी-इति कातीय (वचन)स्य विभज्यते तदा मातुर्भागमाह इत्यनेन दायतत्वे रघुनन्दनस्माच्चर्मद्वारादिकृतदायमागटीक्रान्तु बहुशः समुदितत्वाच्च; तेषु समांशहारिणी माता-इति द्वितीयस्य नारदवचनस्य, पितरि चोपरते सोदरभ्रातृभिर्विभागे क्रियमाणे मात्रे पुत्रसमांशो दातव्यः-इत्यर्थकतया जीमूतवाहनमद्वाचार्य्येदायभागे व्याख्यातत्वात् ।

अथ तृतीयस्य-पितुरुत्थं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत् इति पाश-वल्कीयस्य-पितुरुत्थं विभागेऽपि पत्नीनां स्यपुत्रसमांशित्यं दर्शयितुमाह इत्यनेन मिताक्षरायामेव श्रीविज्ञानेश्वरैरवतारितत्वात् । किञ्च पितुरुत्थं विभजतां माताप्यंशं समं हरेत्-इति याश्वल्कीयवचनस्य, पितृद्रव्य-विभागः स्यात् जीवन्त्यामपि मातरि । न स्वतन्त्रतया स्वाम्यं यस्मान्मातुः पतिं विना-इति धीरमित्रोदयस्मृतिचन्द्रिकादिनिबन्धधृत-संग्रहकारी येन स्वतन्त्रतया पितर्यपरते तद्धनस्य विभाग कुर्वन्तां पुत्रायामस्वतन्त्राणि माता पुत्रांशसमांश हरेन्नतु भ्रात्रादिवत् (पूर्णस्या) पतिपथस्य सम्बन्धमन्त-त्वात् । अजीवद्विभागे मातुरंशक 'नामाहेत्यपत्' 'कया याश्वल्क्य-वचोऽवतार्यं एतच्च स्त्रीधनस्याप्रदाने वेदितव्यमित्वाच्च (परि व्या)ख्यात एव । स्मृत्यन्तरे जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽयं समं हरेत्-इति अस्वधना प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या जननी पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे पुत्रांशसममंशं हरेत्-इत्यर्थः-इति व्यवहारमात्रेण माधवापरम्पर्यावभोविद्यारण्यपादै-र्विशिष्य प्रतिपादनेनैवमेव स्मृतिचन्द्रिकायां श्रीदेवा(नन्द)भट्टैः तथाहि पतिद्वारागतं स्त्रीधनं नित्यं विभागानर्हमेव, लोके दम्पत्यो-र्धने विभागादर्शनात् जायापत्योर्न विभागो विद्यते-इति हारोतस्मर-णाच्च । एतेनात्र मातुः स्वत्वव्यवस्थापको दायविभागः । किन्तु यावदर्थं मेवार्थहरणमिति मन्तव्यम् । अतएव स्मृत्यन्तरे निर्धनमातृविषयमेवांशहरणं न मातृमात्रविषयमिदमिति ज्ञायते, जनन्यस्वधना पुत्रैर्विभागेऽयं समं हरेत्-इतिस्मरणात्, अस्वधना प्रातिस्विकस्त्रीधनशून्या जननी पुत्रै-रजीवद्विभागे क्रियमाणे पुत्रांशसममेवांशं हरेत्-इत्यर्थः । जननीप्रदणं तत्स्वपत्न्यादेरुपलक्ष्यार्थम् । मातरः पुत्रभागानुसारिभागहारिण्यः-इति

विष्णुस्मरणात् । अस्वधनेति विशेषणोपादानात् स्वधनादेव स्वकीयजीव-
नस्य स्वानुष्ठेय साध्यस्वकर्मांशुः सिद्धिसम्भवे जनन्यादीनां ॥ भाग-
हरणमिति गम्यते । तथा च स्वधने मात्रा तयोः सिद्ध्यसम्भवे जनन्या-
दीनां सधनानामपि न समभागहरणम्, किन्तु यथोपयोगं न्यूनभागस्यैव
हरणमिति च गम्यते । तथा च विभा..... वसोरतिबहुत्वे निर्धना-
नामपि जनन्यादीनां न समांशहरणं किन्तु यथास्वोपयोगं समांशन्यूनस्यैवांश-
हरणमित्यपि गम्यते । अस्वधनेति विशेषणोपयोगवशादशहरणं जनन्या
न पुनर्भातृव (तु) (स्व)त्ववशादिति शपनार्थत्वात् । सममिति विशेषण-
शोपयोगवशादसमांशस्य हरणेऽप्यवैयर्थ्यम् । अल्पविभाग्यवसोरधिकपूर-
णस्य प्राप्तस्य निवृत्त्यर्थत्वादिति प्रतिपादनेन भवदभिमतार्थस्य विभागोप-
क्रममन्तरापि मातृभागप्रापकत्वस्य दूरागस्तत्वात् । न च पुत्राणां पितृधन-
विभागस्वातन्त्र्ये ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य आतरः समम्—इति मान-
धीयेन, पुत्र... बोधकेन विरोध इति वाच्यम् । ऊर्ध्वं पितुः—इति पितृधन-
विभागकालः मातुरुर्ध्वम्—इति मातृधनविभागकालः । तत्र नैतदुक्तं
भवति पितुरुर्ध्वं मातरि जीयन्त्यामपि पितृधनविभागस्तथा मातुरुर्ध्वं-
वितरि जीयत्यपि मातृधनविभागः कार्य्य एव, अन्यतरधनविभागे उभयो-
रूर्ध्वकालप्रतीक्ष्यानुपयोगादिति माधवीयव्याख्यानुपस्थासोचनया तथा
अतएव पितुरुर्ध्वम्—इति पितृधनविभागकालः मातुरुर्ध्वम्—इति मातृ-
धनविभागकालोऽभिहितः इत्यारभ्य, अतश्चाग्नीशास्ते हि जीवतोः—इत्यपि
तत्तद्धने व्यवस्थाया अस्वातन्त्र्यप्रतिपादकं न स्वत्वप्रतिपादकं जन्मना स्वत्व-
स्य पुत्राणां पितृधने व्यवस्थापनादित्यन्तेन वीरमिश्रादपरस्मृति घट्टिकादिनि-
ग्रन्थलिखनेन अयोरपि तदोपाप्रतीतेः । युक्तं चैतज्जीवद्विभागोक्तं पितुः स्वा-
तन्त्र्यात् । अजीवद्विभागे पुत्राणां स्वातन्त्र्यादित्यादिना विशेषतो वीरमि-
श्रादवादावजीवद्विभागे पुत्राणामेव स्वातन्त्र्यप्रतिपादनाच्च, अस्वातन्त्र्यप्रति-
पादकानां च जीनतोरसतन्त्रः स्यात्—इत्यादिवचनानां सकलनिग्रन्थकारैः
-मृतेऽपि पितरि जीयन्त्यां च मातरि पुत्रकर्तृको यो विभागः (सः?) धर्म्य
इत्येतत्परस्त्वव्यवस्थापनात् । अतएवास्मद्वत्तत्पूर्वव्यवस्थायां पुत्रे दुर्दृष्टत्व-
विशेषणं सार्य्यकमिति (सिद्धमद) शावघातव्यम् । न चानुवादविशेष-

शीभूतस्य... अर्थस्याविवक्षितत्वेन विभागोपक्रमे मृतेऽपि मातृभागप्रापक-
 स्वसिद्धिरिति याच्यम् । अविबक्षायां प्रमाणाभावात् । नह्यनुवादविशेषणत्व-
 कथनेनैव सोऽर्थोऽप्येति । यदपि पूर्वोक्तवचनद्वयैकरूप्यार्थं (१) तथा (कथ)
 नमिति तदपि न, तयोरपि सकलानिबन्धकारैरेतद्वचनसमानार्थकत्वेनैवोपपा-
 दितत्वात् । किञ्च लङ् अर्थस्याविवक्षितत्वेन विभागोपक्रममन्तरापि मातृभागप्रा-
 पकत्वस्यपि तात्पर्यविषयत्वे विमज्जतामिति विशेषणपदस्यैवानर्थक्यापत्तिः ।
 पितुरूर्ध्वं तु पुत्राणां माताप्यंशं समं हरेत्—इत्येतावतैव भवदभिमतार्थ-
 स्वावगमात् अस्याहाराभावप्रयुक्तलाघवानुसंधेन तादृशवचनप्रणयनस्यै-
 वोचितत्वाच्च । पितरि मृते सति पुत्रैः क्रियमाणे विभागेऽपि मातुः समांश
 एव । तथान्न योगीश्वरः पितुरूर्ध्वं विमज्जतां माताप्यंशं समं हरेत् ।
 पितुरूर्ध्वं पितृमरणान्तरम् ॥ अत्रापि न दत्तं स्त्रीधनं यासां भर्त्रा वा
 स्वशुरेण वा—इति, दातुरूर्ध्वं प्रकल्पयेत्—इति च वचनद्वयं योग्यं समा-
 नन्यायत्वात्, प्रतिषेधाभावाच्च । एवमेव विज्ञानेश्वरधारेः श्वरादीनां मतम्—
 इति मदनपारिजातलिखनात् । धीरमिश्रोदयादी तदुपरमविभागेऽपि पुत्रै-
 स्ताः स्वसमांशभागिन्यः कार्य्याः—इत्याहेतियाश्रयक्यवचनस्यावतारित-
 त्वाच्चेति सुगुद्विचञ्चवश्चिरञ्जितयन्तु ॥ न च वरेत्—इति विभी लिङ्-
 विधित्वञ्चात्यन्ताप्राप्तप्रापकत्वम् तच्च न धट्ट इति याच्यम् । ऊर्ध्वं
 पितुश्च मातुश्च—इत्यादिमन्वादिवचनैः पितृधने जातधिकारैः पुत्रै
 विभागे क्रियमाणे मातुरपि तत्समांशभागित्वमित्यपूर्वशोधनेनैव कृतार्थत्वात्,
 एतेनेदृशस्य धिधेर्ऋपेरक्षरादनुत्वत्तेरित्यादिविधित्वाभावापत्तेश्चेत्यन्तं तद्व-
 चनाशयमजानद्भिरुक्तमपास्तम् । मातृभागप्रापकस्य समांशा मातरस्त्वेपां
 तुरीयांशास्तु कन्यकाः—इत्यवशिष्टस्य तुरीयस्यापि पुत्रकृत्तृकविभागप्रक-
 रण एव सर्वैरुक्तत्वात्तस्यापि तदर्थबोधकत्वेन न तानि भवदर्शसाधकानीति
 मुग्धीमिराकलनीयम् ॥ यदपि प्रलपितं विमज्जकेषु सुतो जातः सवर्णायां वि-
 भागभाग इति, आतृणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि । प्रातिभाज्यमृणं
 साक्ष्यमधिभक्तेन तत्स्मृतम्—इति च तदतिगुच्छम् । तयोर्दिभस्तेष्वि-
 त्यस्य विभागोत्तरं जायमानस्यासत्यां दुदितरि भागप्रापकत्वात्, तदर्थस्य
 चाविभाज्यत्वात् । न च तत्र सम्भावितभागम(१)दागैव वचनप्रवृत्तिरिति-

वान्यम्, वचनात्प्रतीतेः । स्वकपोलकस्मितस्यार्थस्याप्रमाणत्वाच्च ।
 द्वितीयस्य तु भ्रातृणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि—इति वच-
 नस्य नितृकृतविभागविषयत्वत् पितृकृतविभागे मातृभागो भवति नवे-
 त्यस्याविवाहत्वात् ? यदपि विभिन्नमातृभस्तेषां मातृभागः प्रशस्यते—
 इति वचने तदपि धीरमित्रोदये यदपि व्यासबृहस्पतिवचसोऽगित्यादि
 कृतमधिकेनेत्यन्तेन ग्रन्थेन । तज्जीवनवधि तदाशाशयदत्तयास्थे-
 यमिति समर्थितम् । अतस्तत् एवावघातव्यमिति प्रथमहेतौत्समर्थनम् ।
 यदपि एकपुत्रस्थले विभागासम्भवादित्यत्र दोषो वनं तदपि देवानां दान-
 ददायकमेव । पितृकृतं (?) कर्मिभागस्याविवाहत्वात् पितृभ्युपरते तदभावस्या-
 समदभिप्रेतत्वाच्च विवादास्पदभूतस्थलाभिप्रायकमेव लिखनाच्चेत्यलमिति
 जल्पनेनेति विज्ञे, यमिति द्वितीयहेतुसमर्थनम् ॥

यदपि तृतीयहेतुखण्डनेऽधिमिताक्षरयेतद्व्याख्यानं लाभादिति
 तदपि ग्रन्थार्थं सूत्रकमेव मिताक्षर्यायां जीवद्विभागे स्वपुत्र-
 समाशित्व पत्नीनामुक्तम् यदि कुर्यात् समानशान्—इत्यादिना
 पितृरूपं विभागेऽपि पत्नीनां स्वपुत्रसमाशित्व दर्शयतुमाहेत्यथतर-
 णिकया पितृरूपं विभज्यतामित्यवतारित्वान् । अजीवद्विभागे मातृ-
 रशकल्पनामाहेति याज्ञवल्क्यवचोऽवतार्य एतच्चेत्यादिना विशेष-
 मुक्तिरूप जनन्यस्वधना पुत्रविभागेऽंशं समं हरेद्—इति स्मृत्यन्तर-
 वचनमुपन्यस्य याज्ञवल्क्यः प्रातिस्विनीधनशून्या (?) जननीपुत्रैर्विभा-
 गेऽंशे त्रियमाशे पुत्राशसमं हरेदित्यर्थः । इति माधवीयात्, जीवत्पितृकृत-
 विभागे पित्रयथा पुत्रांशसमांशभागिन्यः स्वपत्न्यः कुर्यात्तथा तदुपरम-
 विभागेऽपि पुत्रेताः स्वसमांशभागिन्यः कुर्याः—इति धीरमित्रोदय-
 ज्ञानेन याज्ञवल्क्यः पितृरूपं विभज्यतां माताप्यंशं समं हरेत्, विष्णुः—
 भातरः पुत्रभागांनुसारिभागहारिण्यः, स्मृत्यन्तरे—जनन्यस्वधना पुत्रै-
 विभागेऽंशं समं हरेत्, स्वधना तु यावता स्वधनस्य पुत्रांशसमभागता
 भवति तत्रदेव हरेत्—इत्यर्थः । अशाधिकधनायास्तु नांश—इति व्यव-
 हारमयूखे नीलवस्त्रमृत्तिलस्त्रनेन तत् स्पष्टनया तदवगमाच्च । यत्रेदं विवा-

पुत्रैर्विभागे क्रियमाणे जननी पुत्रवती मातरोऽपुत्रा विमातर एताः सर्वाः पुत्रदुर्लभाशमग्निन्यः, एषां भागिनां भगिन्यश्चाविवाहिताविवाहार्थं स्वभ्रात्रशतुदीयांशभाजो विवाहोचितधनभागिन्यो भवन्तीति मदनरत्न-विवादश्च. करविवादचिन्तामणिदायकमनिबन्धकारैः कृत इति लिखनमेवेत्यलमधिकेन । एतेन स्वकरोलकलितत्वादित्यपि प्रत्यक्ष्यतामित्यवधारणव्यम् । यदपि भगिन्या भागे भ्रातॄणां स्वतन्त्र्यबोधकमनुशासकवत्त्व-वचनव्यमातृभागे तदभावात्तया स्वेच्छया भागप्रदणं कार्यमित तदप्यत्यन्ताप्रदृष्टरत्नादेयमेव । प्रसिद्धप्रमाणानि याज्ञवल्क्यादिवर्चास प्रथम-हेतुव्यवस्थापने लिखिततत्तन्निबन्धकारकृतध्याख्यानां च युक्तयामासै-रपलाप्य प्रमाणगन्धशून्यत्वोक्त्या तदर्थस्य व्यवस्थापनेनाप्रमाणत्वादिति चतुर्थद्विगुणमर्थनम् ॥

अथ भवन्मते विरोधो(द्भा)वनम् । कस्यचित् पुत्रिकाकरणान्त-मोरसपुत्राञ्जलि । तदनन्तरं पत्नी पुत्रिकां च त्यक्त्या स लोकान्तरमग-मत् । तत्फल्यपि प(त्नी)दिभं लोकमगमत् । तयोर्निधनानन्तरं पुत्रिकापुत्र-योर्विभागसमुत्थानेऽभिमन्यते समस्तत्र विभागः स्यात्—इत्यादिवचनेन कुलधनस्य सम एव विभागः सकलनिबन्धसिद्धः । भवतां तु सा मातृभागं पूर्वं गृहीत्वा परचात् पुनरवशिष्टादेः ग्रहीतुमर्हतीति तत्तदप्यवचनव्याकोपोऽर्थसङ्गैरपि दुर्लभार्थ इति सूक्ष्मदृष्ट्यावधारणव्यम् ॥ यत्तु दत्तजलाञ्जलि-सोपगदनमशक्यं कर्तुं त्वयेति तदाशयामवबोधतां बोधयति । विद्यमान-मातृकस्याजातपुत्रादेर्देवदत्तस्य मरणानन्तरं पत्नी दुहितरश्च — इति याज्ञव-ल्कीय-अपुत्रस्य धनं पत्न्यभिगामि—इति वैष्णववचनाभ्यां पत्न्या अधिकारित्व-बाधनेऽपि अविभक्तसमुपभ्रातृतो भागाभावाय पूर्वोक्तवचनयोरविभक्तसमुप-धनान्यविषयत्वमित्यर्थस्य गौडातिरिक्तसकलमुनिवचनव्याख्यातृसम्मतत्वेन सत्यमपि मातरि तदनस्य अविभक्तसमुपस्थेन मातृतः पूर्वं पत्न्यधिकार-बोधनस्य दत्तजलाञ्जलिता सहस्रासौ(पि)दुर्लभारा इति सन्नतत्वज्ञा विभावयन्तु ॥

१२७—रोयकारी मिखिल सदर देओयानि आदालत ओयाके सन १८१२ सालेर ५ जानेर मोतावर्क सन १२३८ सालेर

२२ पौष वृद्धस्पतिवार श्रुयुत हेनरी सिकिसपीयर साहेब से
आदालतेर हाकिमेर बैठके—

भैरवादासी

वनामे

नवकुष्माण्डसु

साएतार उकिल मुनसी गोलाम आहम्मद हाजिर आइल ।
पूर्व सन १८३१ सालेर १ दिजम्बर तारिखे साएतार खास
आपीलेर दरखास्त दरपेप हइया जेलार फैसला दिष्टि करण जन्हे
मूलतवि छिल, तदनुसारे गत कृत्य साएतार द्वितीय दरखास्त
फैसला आगैरह सम्बलित उपस्थित हइया साविक दरखास्तेर
सम्बलित करिया उपस्थित करणेर हुकुम हइयाछिल । से प्रयुक्त
अथ साएतार खास आपीलेर दरखास्त तत्समभिव्याहारि काग-
जात सम्बलित उपस्थित ओ पाठ होइल । हुकुम हइल ये जिलार
फैमला ओ साएतार ओकीलेर अणकार वाखिल करा व्यवस्था
ए विषये पचाव तनवे ये अणपि स्यात् उक्त फैसलार लिखित
प्रकरण सकल सत्य अथवा फैमलार लिखित व्यवस्था अथवा
साएतार उकिलेर दाखिल करा व्यवस्था—एह्यार कोन व्यवस्था
यथार्थ ए आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठानो जाय ये
पण्डित मजकुर उपरेर लिखित प्रकरणेर उत्तर अति त्वराय
लिखेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम

एतदधर्माधिकरणाभिनिश्रुयुतहेनरीसिकिसपीयरसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितैतदन्दीयनानपरीमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-
पत्रमेवं तत्समर्पितजिलाखायान्तरधर्माधिकरणीयत्रयपत्रमेतदधर्माधिकर-
णाधिनीनियुक्तोकीजशब्दवाच्येन तद्दिने निविष्टं व्यवस्थापत्रञ्च एतदन्दी-
यतन्मासीयैकविंशतिदिनसम्बन्धितनिवासरे पटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं
मया प्राप्तं तदधलांक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिखते ॥

प्रमुखसमर्पितत्रयपत्रलिखितप्रकरणानां मध्ये एतदधर्माधिकरणार्थिन्या
उत्तरपत्रलिखितप्रकरणानां सत्यत्वे सत्येतदधर्माधिकरणार्थिनो नियुक्तो

संग्रहवाच्यनिविष्टव्यवस्थैव शास्त्रसम्मतता भवति । तदुत्तरपत्रलिखितप्रकरणानामसत्त्वे तद्व्यपत्रलिखितव्यवस्थैव शास्त्रसम्मतता भवतीति ॥

एतदब्दीयफेरवररीमासीयचतुर्थदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था ति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथपिश्रेण

१२८—रोवकारि मिछिल सदर देओर्यानि आदालत ओयाके तारिख ७ जानेर सन १८३२ साल मोतावेक सन १२३८ सालेर २४ पीप शनिवार ओयुत आलफ सुन्दर राश साहेव ये आदालतेर हाकिमेर बैठके ॥

वदनचन्द्रसिंह

बनाम

मथुरामोहनपालीत ओ
महेशचन्द्रसिंह

साप्लेर वकिल मौलवि करम होछेन ओ तरफछानिर ठकिल सुनशी गोलाम बसुल हाजिर आइल । साप्लेर सओयाल एक शत पञ्चाश टाका दामेर कागजेर पर दोस्तपुर आगायेगह तालुक विराधि विपयेर दखल पाइवार मोकईमाय मयकगे पाँच हजार टाका ए विपयेर दामेर तायदादे ओ ठकिल मजकुरेर नामेर एक वेता ओफालतनामा ओ रामवृष्णबन्धोपाध्यायंर नामेर एक वेता मोफारनामा ओ सन १८२८ सालेर २१ जुन तारिखेर दुगलि छेलार देओर्यानि आदालतेर एक वेता फयल्लार नकल ओ सन १८३० सालेर १७ आगष्ट तारिखेर लिखित एलाका कलिकातार मोट आपीलेर एक वेता फयल्लार नकल ओ सन १८२६ सालेर २३ शेतम्यर तारिखेर लिखितकलिकातार मोट आपीलेर एक वेता रोवकारर नकल सहित ये, सन १८३० सालेर १६ दिजम्बर तारिखे दाखल इइया छिल, अद्य तरफछानिर सन १८३१ सालेर १३ आपरेल तारिखेर दृष्ट कया सओयालेर सहित दृष्टे आइल,

बोध हइल ये पार्वतीचरण मोतओफकार लेख्य विषय लाट नारायण पाडा उहार चारि पुत्रेर मध्ये अर्थात् वदनचन्द्रसिंह प्राप्तव्यवहार ओ महेशचन्द्रसिंह ओ ईशानचन्द्र ओ हरिशचन्द्र अप्राप्तव्यवहार एकत्तर ओ साधारणे छिल, ओ वदनचन्द्रसिंह मजकुर ये मालिक ओ कारवारेर कर्ता एवं भ्रातासकलेर सहित एकाजं छिल लाट मजकुरेर मोतालकेर मोजे शेस्तपुर ओगयरह विरोधि विषय द्वितीय भ्रातासकलेर अंश सहित तरफद्वानिर जेभार मुहाइ मथुरमोहनपालीतेर निकट वयवलओफार ? प्रकरणे दरपत्तिन तालुक विक्रय करिया जखन वयवलओफार मेयादेर मध्ये पोनेर टाका आदाय करिलेक ना । मुहाइ सेइ समय शन १८०६ सालेर १७ कानुनेर नियम आमले आनिया वयवात सम्पन्थ हइवार जन्य एइ नालिप दरपेप करिया जेना ओ क्रोट हइते ईशानचन्द्र ओ हरिशचन्द्रेर अंशेर कर्तन वादे वदनचन्द्र ओ महेशचन्द्रेर अंश वयवातेर वावत डिगिरि हाशील करियाछे, ओ महेशचन्द्र जाहेर करे ये वयवलओफा हओनेर समय आमि अप्राप्तव्यवहार छिनाम, आमार पत्त हइते वदनचन्द्र कओलागे दस्तखत करिया दियाछे ओ वदनचन्द्रेर क्षमता छिल ना ये आमि अप्राप्तव्यवहारेर अंश वयवलओफा अथवा सम्पूर्ण विक्रय करे । ए जन्य आमार निकट हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व ए आदालतेर पण्डितेर निकट व्यवस्था लओया उचित बोध हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित सओयातेर जओयाव एइ रोवकारि पाओयार तारिख हइते एक सप्ताह मेयाइ मध्ये दाखिल करेण—ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय इति ॥

सओयाल—

यद्यपि स्यात् सहोदर दुइ भ्राता अथवा तिन चारि भ्राता आपनारा एकाजमुक्त, ओ ताहार मध्ये एक जन प्राप्तव्यवहार, ओ द्वितीय सकल अप्राप्तव्यवहार थाके, ओ प्राप्तव्यवहार भ्राता

मौरुशी साधारण विशयैर मध्ये किहु अप्राप्तव्यवहारसकलेर अंश सहित हस्तान्तर करे, सवे ए प्रकार हस्तान्तर सिद्ध कि ना एवं प्राप्त-
व्यवहार भ्राता मौरुशी साधारण विशय अप्राप्तव्यवहार भ्राता
सकलेर अंशसहित, ये एकाग्रे बाके, कोन प्रकारे हस्तान्तर करणेर
क्षमता बाङ्गलादेशेर चलित शाखानुसारे आळे कि ना इति ॥—

श्रीज्जयतितराम

एतद्धर्माधिकरणापिपनिश्रियुतअलकमुन्दरराससाहेवधर्माधिकरणलि-
खितैतदब्दीयजानवरीमासीयसप्तमदिबसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं
पत्तदब्दीयतन्मासीयोनिविशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकाद्वयाधिकया-
मद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य तादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

यद्यपि सहोदरौ द्वौ भ्रातरो अथश्चत्वारो वा भ्रातर एकापाकेन भोक्तारः,
तेषां मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारोऽन्ये चाप्राप्तव्यवहारं भवन्ति । एवञ्च सति
प्राप्तव्यवहारो भ्राता क्रमागतसाधारणजनानाम्मध्ये किञ्चिद्भूतमप्राप्तव्यव-
हारयां सर्वेषामंशसहितं हस्तान्तरं कृतवान् स्यात्, तत्र यदि तादृशहस्ता-
न्तरमधो लिखितहेतुसमुदायान्तर्गतैकस्मिन्नपि हेतौ सति कृतवान् स्यात्तदा
त्थांशयोपे स्वेतराशयोपे च सिद्ध्यति, तादृशहेतुसमुदायान्तर्गतैश्चमादयि-
हेतोर्विना तादृशहस्तान्तरकर्तुर्भ्रातुरंशे सिद्ध्यति, तदितरांशे न सिद्ध्यति ।
एवमेकपाकेन भोक्तुः प्राप्तव्यवहारस्य भ्रातुः क्रमागतसाधारणजनस्याप्राप्त-
व्यवहारयां सर्वेषां भ्रातृणामंशसहितस्य कुटुम्बभरणाद्यर्थं मगिन्यादिविवा-
हार्थं वा आश्रादिविवाहार्थं वा रोगोपशमनार्थं वा पित्रादिकृत-
र्यापाकरणार्थं वा पित्रादिआद्धायावश्यककार्यादिसम्यत्यर्थं वा हस्तान्तर-
करणक्षमतास्त्येव । उपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्यावश्यककार्यार्थं दासा-
दीनामपि स्वामिघनस्य हस्तान्तरकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वेन चतुर्णां
सौदरभ्रातृणामेकपाकेन वसताम्यप्ये प्राप्तव्यवहारस्य ज्येष्ठभ्रातुरप्राप्तव्यव-
हारणामवशिष्टानां त्रयाणां भ्रातृणां शाखानुसारेण पितृवत्पतंगलना-
च्चावश्यककार्यकरणक्षमस्योपरिलिखितकुटुम्बभरणाद्यावश्यककार्यकरणार्थं

साधारणकमागतधनानाम्मध्ये तत्तत्त्वर्थोपयुक्तस्य धनस्य हस्तान्तरकरणक्ष-
मताया अर्थविद्धत्वात्-इति वक्ष्यदेशचलितमनुदायभागश्चाकृष्णतर्कालङ्का-
रकृतदायभागटीकादायतत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकाविवादाद्यवसेतुविवा-
दभक्षार्यादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अथ प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि ददयुस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुड्मार्थयेष्टं तत्सर्व्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-
धृतनारदवचनम् ॥१॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये पगशयोग्ये अस्तिद्धिः,
स्वांशयाग्ये तु सिद्धिः अन्यानुमत्या विक्रये तु तत्सिद्धिः—इति विवाद-
भक्षार्यवग्रन्थलिखनम् ॥२॥

कुड्मार्थेऽभ्यधीनोऽपि व्यवहारं यमाचरेत् ।

स्वदेशे वा विदेशे वा तं व्यायान्न विचालयेत् ॥—इत्युपरिलिखित-
ग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥३॥

पितृव्यभ्रातृपुत्रस्त्रीदासशिष्यानुजीविभिः ।

यद्गृहीतं कुड्मार्थे तद्मही दातुमर्हति ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
बृहस्पतिवचनम् ॥४॥

कुड्मार्थमशक्ते तु गृहीतं व्याधितेऽथवा ।

उपलवनिमित्तञ्च विद्याशपत्कृतं तु यत् ॥

कन्यायेवाहिकञ्चैव प्रेतकार्येषु यत्कृतम् ।

एतत्सर्व्वं प्रदातव्यं कुड्मनेन कृतं प्रभोः ॥—इत्युपरिलिखितग्रन्थ-
धृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

पितर्य्युपरते पुत्रा अष्टां ददयुर्यथाशतः ।

विभक्ता अविभक्ता वा यो वातामुद्रहेन्दुरम् ॥—इति विवादभक्षार्य-
वादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥६॥

१. कुड्मार्थमशक्तेन गृहीते व्याधितेऽथवा ।

उपलवनिमित्ते च विद्याशपत्कृते तु यत् ॥—कास्य०

२. प्रेतकार्ये च—कास्य० ।

अत्रेदमवधेयम् । कुटुम्बपरणादिरूपयादशयादशकर्म्ये उपरियते
दासकृतमृण प्रभुणा शोधनायमिति प्रतीयते तादृशतादृशकर्म्यनिश्चित्यथ
प्रभुधनधिकयोऽपि सिद्ध्यति । तदतिरिक्तनिपय एव स्वाम्यनुमतपदेन
बाध्यते— इति विवादभङ्गार्थवचन्याल्लेखनम् ॥७॥

पितेव पालयेत् पुत्रान् ज्येष्ठो आतृन् यर्वायसः ।

पुत्रवशापि यत्तैरमृ ज्येष्ठे आतृर धर्म्मतः ॥—इति मनुवचनम् ॥८॥

एकोऽरि स्थावरे कुर्याद्दानाधमनधिक्यम् ।

आपरकाले कुटुम्बायै धर्म्मायै च विशेषतः ॥—दायतत्त्वादिग्रन्थ-
भूतेमुनिवचनञ्चेति ॥९॥

एतदन्दीयकेवरधरोमासीयैकविंशतिदिनसंगमन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्य-
वस्था दत्तेति ॥

श्रीउर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१२६—रोवफारी मिखिल मदर रेओयानि आदालत ओयाके
तारिख २ माह जानओयारि ई सन १८३२ माल मोतावक
१३ माघ बाङ्गला सन १२३० साल गोज बुधवार श्रीयुत हेनरि
सिकिमपीयर साहेबे आदालत मजकुरेर हाकिमेर बैठके ॥

विश्वेश्वरीदेवी वनामे ताराचन्द्रबादुयर्षी

छाएलार मोत्तार रामकानाईपोष हाजीर हइल । छाएलार
सओयाल ई सन १८३१ सालेर ६ माह शेतम्बरतारिखेर । एलाका
भुरशीदावादेर प्रीविणसीयार कोटेर हाकिम फिलिप इरनिफ
पाटल साहेबेर फयमला, जाहाते मुर्दाई ताराचन्द्रबादुयर्षीर हक्के
डिगारि हइयाछे, ताहार नाराजीते एई मोकईमाय माफनिशी आपील
मब्जुरि प्रायेंनाय भोजाहाय मुलुदी ओगयरह रकम दुई आना

दुई कठार देखल पाओयार वाचते २७०१८६१२ टाकार ताइने ।
मोत्तार मजकुरेर नामे मोत्तारनामा सम्बलित ओ ई मन १८३१
सालेर ६ सेतम्बरेर लिखित एलाका गुरशीदावादेर कोटेर फयस-
लार नकल अनैक्यता जे एइ माह जानओयारिर १६ तारिखे
दाखल हइयाछज, पढागेल । यद्यपि स्यात्, एइ मोकदमांर मोफ-
निशां सुरत् आपील नामञ्जुरि कि मञ्जुरि हुकुम छादेग हओनेर
पूर्व एइ आदालतेर पण्डितेर द्वाराय निचेर लिखित विशय दरि-
आप्त करा उचित हइल । ए अन्य हुकुम हइल ये तत्स मेहवारि
कागजात सओयाल ओगयरह एइ गोवकारि नकल सम्बलित एइ
आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय-ये पण्डित
मोक्षप काटेर फयसलार लिखित सबयसकलेर एवं वाहार लिखित
कौक्यत् अनुमोदने एइ विशयेर जओयाव तत्क्षणात् लिखेन ये
लिखित फयसलार लिखित पण्डितेर न्यवस्था दोरन्त वटे किन्वा
मोकदमांर हालत् अनुमोदने ताहार सत्यताय किछु सन्देह प्रकाश
हइते पारे कि ना इति ॥

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्किपीयरसाहेबधर्माधिकरणा-
लिलितैतद्वितीयज्ञानवरीमासीयपञ्चविंशतदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्र-
तिरूपपत्रमेव तत्तमपितैताद्वयादविषयनिर्वाणनियेदनपत्रादिकश्च यत्तद्वितीय-
फेवरवरीमासीयदशमदिनसम्वन्धशुक्रवासरे घटिकात्रयाधियामद्वयानन्तरं
मया प्र.पं. तद्वलोक्य यादृशशीघ्रो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रभुसमर्पितत्रयपत्रलिखितप्रश्नत्रयस्योत्तरे तज्जयपत्रलिखितपण्डितदत्ता
व्यवस्था शास्त्रममता भवति । किन्तु देवचन्द्ररायेण स्वबोचनदशायां स्व-
स्वत्वात्सदीभूतधनमविवाहितायै स्वकन्यायै दासमन्यै दत्तमत्तशिन्या निवे-
दनपत्रे लिखितमस्ति-तत्सत्यं चेत्तदा दासमन्या मरणोत्तरं तद्वानुसारेण
तत्त्ववत्वात्सदीभूतमौदायित्रीधने तदनुद्दिष्टमावे तत्पुत्रस्य सर्वचन्द्रस्य स्वत्ये
वाते संतं तन्मरणोत्तरं तन्मातामह्मां वेदवत्यां पूर्वधनस्नामिनो देवचन्द्ररा-
यस्य पत्न्यां विद्यमानायामपि तस्य सर्वचन्द्रस्य पुत्रपौत्रपौत्रामावे तत्पत्न्या
विश्वेश्वरीदेव्या एवाधिकारो यतस्तज्जयपत्रे लिखितमस्ति । प्रत्ययिनीविश्वे-

श्वरीदेवीनिर्दिष्टसाक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तेन देवचन्द्रायस्य मरणोत्तरं तत्कन्या-
या दासमन्या आयत्तं तत्स्वत्वास्पदीभूतं धनं यद्यपि जातम्, किन्तु दासमन्या
मरणोत्तरं देवचन्द्रायस्य पत्न्या वेदवत्या आयत्तमपि जातमिति । एतादृश-
लिलनेन देवचन्द्रस्य मरणोत्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रमावे तत्स्वत्वास्पदीभूत-
घने शास्त्रानुगारेण प्रथमतस्तत्पत्न्या वेदवत्या एवाधिकारित्वेन विद्यमानां
तां विहाय तत्कन्याया दासमन्या आयत्त तद्धनं कमप्येकं हेतुं विना भवितुं न
शक्नोतीति । अतएवास्त्येव कश्चिद्वेतुस्त्विवगमात् । एवञ्च सति तज्जपत्र-
लिखितपरिहृतदत्तव्यवस्थैतद्विवादसम्पर्कशून्यैव — इतिवङ्गदेशचलितम-
नुदायभागभौकृष्यतर्कालङ्कारकृतदायभागीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहविवा-
दाध्यवसेनुविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुगारेणो व्यवस्था ॥

अग्रप्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ १ ॥

ऊढया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।

भर्तुः सकलशतम् । प्रपौत्रा लब्धं सोदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभा-

गादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ २ ॥

विवाहकाले तत्पूर्वपरिकाले वा तिथे यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र तु धने-
प्रथमं कुमार्यास्तदनन्तरमूदायाः पुत्रवतीसम्भावतपुत्रयोस्तदनन्तरं
कन्याविधवयोश्चाधिकारः । सर्वदुहितृभावे पुत्रादेभ्योऽनुकथनपत् क्रमे-
णाधिकारः—इतिदायक्रमसंग्रहग्रन्थलिलनम् ॥ ३ ॥

पत्नी दुहितृश्चैव पितरो आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ-
धृतपाठवत्त्वचनञ्चेति ॥ ४ ॥

एतदन्दीयमाचर्चमासीयनवमदिनसम्बन्धिगुक्त्वाधरे मयेयं व्यवस्था
इति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२७६४८—

१३०—रोवकारि मिच्छिल सदर 'देशोयानि आदालत' ओयाके तागिख ■ माह फिवरेल ई सन १८३२ साल मोतावक २६ माह माघ बाङ्गला शन १८३८ साल रोज मङ्गलवार श्रीयुत 'देनरि सिफिशपीयेर साहेब आदालत मजकुरे हाकिमेर बैठके—

दुर्गादत्त

आपिलाण्ड

बुनियादसिंह

रेप्पाडण्ड

आपिलाण्डेर उकिल मुनशी होशन आलि ओ सदासुद पण्डित, ओ रेप्पाडण्डेर उकिल मुनशी दावारवक्स हाजिर आइल । इत पूर्व सन हालेर ३०१३१ माह जानओयारिते एइ मोकदमा आमार बैठके रोवकार ओ प्रथम आदालतेर बाबत प्रविनशीयान क्रोटेर सादयक कागजात तथाकार फयखला पर्यन्त ओ एइ आदालतेर दाखिल हओया कागजात गतो शनेर ४ आपरेलेर लिखित रोवकारि पर्यन्त पढा हइया, इबा अवसान प्रयुक्त मुलतबि छिल । अब पुनराय दरपेप एइ मोकदमार बाबत एइ आदालतेर सकल कागजात ओ एइ आदालतेर तलब करा त्रिपुरसुन्दरिदत्त ओ गङ्गाजलिर मोकदमाय पाजे कागजात पढागेल । तयरे रेप्पाडण्डेर तरफ हइते मिरआकबर आलि एक केता मोकारनामा दाखिल करिलेक अनुमोदने आइल । जेलार जजसाहेबेर प्रेरित कागजातेर फिरण इहाइ मालुम हय-जे जे समय जयदृष्ट ओ त्रिपुरसुन्दरिदत्त ओ गयोेर दखिलकारिर तहकीकातेर कर्मजेर तजनिजे छिल, रेप्पाडण्ड आदालतेर तलब भते चारि केता नकल छोनेनामा, जाहा कालंकटारिते दाखिल हइयाछिल, दरपेप करे । एवं ताहार परे जजसाहेब ताहा ओ तहकीकातेर कागजात सम्बलित प्रीधिय-शीयान क्रोटे पाठान इति । यद्यपि स्यात् सत्यतार तहकीकातेर पूर्व एइ विषयेर दरियाप्त करा उचित हइल ये यद्यपि स्यात् पूर्व उक्त छोनेनामासकल सकलेर सम्मति भते लेखा हइयाथाके

पश्चादप्यौषधादिना दोषनिर्हरणे 'ऋस्त्येवांशुमागिता—इति वीर-
मित्रोदयग्रन्थलिखनम् ॥३॥

मृते पितरि न क्लीवकुष्ठयुग्मत्तत्रडान्पक्ताः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दाम्यांशुभागनः ॥

तत्पुत्राः पितृदाम्यांशं लमेरन् दोषवञ्जिताः—इति विवादचिन्ता-
मणिविद्यारक्षाकरादिग्रन्थभृतदेवलवचनम् ॥४॥

औरसाः क्षेत्रज्ञाश्चैषां निर्दोषा भागहारिणः ।

सुताश्चैषां च भर्त्तव्या यावन्नो मर्तुं सात्कृताः ॥

अपुत्रा योषितश्चैषां भर्त्तव्याः साधुवृत्तयः ॥—इति तत्तद्ग्रन्थभृत-
याज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

भरणं चास्य कुर्वीरन् सीणामाजीवनक्षयात्—इति तत्तद्ग्रन्थभृत-
शङ्खवचनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयमार्चमासीयद्वाधिशतिदिनस्तम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकाद-
याधिकयामद्वयानन्तरं मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्

श्रीविद्यनाथमिश्रेण

१३१—दोषकारी मिडिल सदर देओयानी आदालत ओयाफे
तारिख १६ माह फिशरेल इं सन १८६२ साल मोतायक ५
फागुण व झला शन १२६८ साल रोज बृहस्पतिवार श्रीयुत हेनरि
सिकिसपीयर साहेब आदालत मजकुरेर बैठके ॥

मैगवीदासी

बनामे

नवकृष्णवसु

सायेलार उकिल मुनशी गुलाम आहाम्मद ओ तरपडानिर
तरफ हइते सदासुखपाण्डित एक वेता ओकालातनामा दाखिल
करिया हाजीर आइल । इत पूर्व गत सनेर १ दिजम्बर तारिखे
छापलार सओयाल दरपेप हइया फयदला अनुमोदनेर जन्म
मुलतवि छिल । तदनुजाइ छापलार दोपरा छओयाल फयदला

सम्बलित अनुमोदने सन हालेर ५ जानेओयारि तारिखे एइ विशयेर जओयाव तलब-ये यद्यपि स्यात् फयछलार मजकुरेर लिखित विशयसकल सत्य तवे फयछलार लिखित व्यवस्था अथवा छायेलार उकिलेर दाखिल करा व्यवस्था दोरस्त वटे। एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने (जिज्ञासा) हय। तदनुजाइ पण्डितेर जओयाव दाखिल हओयाते अद्य छायेलार खाप आपीलेर छओयाल तत्समभिण्या-हारि फागजात सम्बलित आमार बैठके रोबकार हइया छायेलार उकिलेर स्थाने जिज्ञासा करगेल-ये आसल दस्तावेज नेमपत्र जाहा ओछियत नामा छओयाले लिखियाछ, कोन मोर्दमाय कोन आदालते दाखिल हइयाछिल। जओयाव जेलाः—२४ परगणार देओयाणि आदालते मवलग १४८८॥० टाका तालुकातेर हिस्या वावत् ८५६ लम्बरेर मोर्दमाय, जाहाते नवकृष्णवसु मुदाइ ओ भैरवादासी मुर्दालेहेम् छिल, दाखिल छिल इति। यद्यपि स्यात् एइ आदालतेर जओयावे एइ विषय लिखित ये यद्यपि स्यात् फयछलार लिखित छायेलार जओयावेर विषयसकल सत्य-हय, तदनुसारे छाएलार दाखिल करा व्यवस्था शाखानुजाइ दोरस्त वटे। याहाहटक, परे एइ विषय दरियात हयना ये 'फयछलार लिखित छाएलार जओयावेर लिखित कोन विषय दोरस्त ओ सभ्य हओन सबवे' छाएलार दाखिल करा व्यवस्था दोरस्त। ताहार प्रति दृष्टे हुकुम हइल ये नेमपत्र दस्तावेज मजकुर एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डित ताहार अनुमोदने उपरेर लिखित विषयेर पत्र ओ सारओयार एक सप्ताह मध्ये लिखेन, एवं ताहा आशा पर्थ्यन्त मोर्दमा मुलतवि थाके इति ॥

श्रीज्जयतितराय

एतद्वर्माधिकरणाधियति श्रीयु न्हेनरीतिनिशरीवरसादेवधर्माधिकरण -
लिनिउतदन्दोयकेवरवरीमासीयपोडशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतमर्शनप्रतिरूप-

कुर्याद्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्मधनस्य वै ॥ इति तत्तदग्रन्थ-
धृतनारवचनम् ॥ २ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव शितरौ आतरस्तथा—इत्यादि तत्तदग्रन्थ-
धृतनारवचनम् ॥ ३ ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात्सन्ता दायादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥ इति तत्तदग्रन्थ-
धृतकात्यायनवचनम् ॥ ४ ॥

अतः पत्नी दुहितरश्चैव इत्यादिना ये पूर्वपूर्वस्याभावे परभूताधि-
कारिणो निर्दिष्टास्ते यथा पत्न्यधिकारप्रागभावे गृह्णीयुस्तथा जाताधि-
कारायाः पत्न्या अधिकारप्रवृत्तेऽपि मोगावशिष्टं धनं गृह्णीयुः—इति
दायभागग्रन्थलखनञ्चेति ॥ ५ ॥

एतदन्दीयापरेलमासीयाष्टादशदिनतश्चान्विबुधवासरे भवेद्यं व्यवस्था
इति—

श्रीजयपतिराम्

श्रीचैयनायमिश्रेण

५१३२ सहर डाकार देशोयानि आदालतेर पण्डित श्रीयुत
दिगम्बरतर्कशास्त्रीभट्टाचार्य स्थाने प्रश्न यह सं० १६२-

भोलानाथराय—

फैगरी—

मृत रामरमण रायेर स्त्री श्रीमतिसावित्रा ओ गोपालकृष्ण
ओ मदनमोहनसिंह ओ मृत काशीचन्द्रसिंहेर स्त्री—

आसामीयान् ॥

सावित्रार विक्रि ११॥—) क्रान्ति हिस्सा जमिदारिर कओ-
याला असिद्ध करिया साहा दखलं पाओयार मकदमा—

हिन्दु एक व्यक्ति वैद्य जाति आपन स्त्री ओ ततगर्भजात
नावालग पुत्र ओ द्वितीय स्त्रीर पुण्यपुत्र राखिया मृत्यु हय, ओ ऐ

श्री ओ पुण्यपुत्र दुइ पुत्र छोलानामो अर्थात् विरोध मञ्जनीय पत्र द्वाराय ॥=३१॥ क्रान्ति हिस्सा ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर सत्त ओ ॥=६॥= क्रान्ति हिस्सा ऐ पुण्यपुत्रेर सत्त हइया ऐ अप्राप्त-व्यवहार पुत्रेर सत्त ताहार मातृ पत्तारे छिलो, ऐ नावालम पुत्रेर मृत्युर पर ऐ अविरा श्री सावित्रा अर्थात् नावालगेर माता सेइ-दरवस्त ॥=१३॥ दस आना सोया तेरगण्डा एक क्रान्ति हिस्सा ऐ पुण्यपुत्रेर अनुमति व्यसित विशेषकरण विना अन्येर निकट विक्रि करिसे पारे कि ना । ओ यदि सेइ दरवस्त मिलकियत विक्रि करिये काशीते थाकिये दिनपात करे, 'ओ पुण्यपुत्र' विक्रि असिद्धेर जन्ये ऐ मिलकियत दखल पाओवार प्रार्थनाय आदालते यदि हय-एमत विशयेते विक्रि असिद्धेर हुकुम आदालत हइते हइले पर ऐ पुण्यपुत्र विमातार जिवमाने विरोधि मिलकिअतेर उपर दखल पाइते पारे कि ना ॥

द्वितीय—

यदि ऐ हिस्सा विक्रि पर पुण्यपुत्र ऐ विमातार असङ्गत प्रकरण अर्थात् छेनाला कम्म हाकिमेर निकट प्रकाश करिया बाधि हए ओ ताहा साबुद ना हइया डिपमिष हइले सेइ वत्तकपुत्र पिटुनातृवस्तु पाइते पारे कि ना, अर्थात् विमातार प्रति एमत्त अत्युक्ति दत्तक सत्ते हक पाओयार निषेध हय कि ना । एसकल विषयेर उत्तर एतदेशीय चलित दायभाग प्रभृति शास्त्र सम्मत सप्ताहेर मद्रवे लिखेन । इति सन १९३८ साल, तारिख २८ आश्विन मी० शन १८३१—१२ आश्वस्त ।

समागतपारम्यस्वकारिखलितप्रश्नपत्रावलोकनात् यादशबोधोजात-स्तदनुसारेण मापया सुखबोधार्थमुत्तरं लिख्यते ॥

प्रथम प्रश्नेर उत्तर—

अप्राप्तव्यवहार ईशानचन्द्रेर जननी सावित्रा आपन पति रामशरणरायेर मृत्युर पर पतिर स्थावर वस्तु दत्तकस्म सपत्नीपुत्र

भोलानाथ गयेर सहित उमयतो यथाशास्त्र लिपि द्वारा तृतीयांशेर
एकांश । ६॥ = दत्तकपुत्रके दिया आपन अप्राप्तव्यवहार पुत्रे
स्वत्वास्पदाभूत दुइ अंश ॥ = १३॥ - निजाधिकारे अर्थात् आपन
एकारे राखिया ऐ अप्राप्तव्यवहार पुत्रे मरणानन्तर अवीरा
सावित्रा यथाशास्त्र स्वपुत्रधने अधिकारिणी हइया ऐ विभक्त
समस्त स्थावर वस्तु विसिष्ट कारण बिना ऐ दत्तकपुत्रे अनुमति
व्यतिरेक विक्रय करिते पारे ना । यदि ऐ तावत वस्तु विक्रय
करिया सावित्रा काशीते याकिया काल आपन करिते थाके, ऐ
दत्तकपुत्र ऐ विरोधि विक्रीत वस्तु विक्रय असिद्ध हइया आपन
अधिकार अर्थात् दखल पाओयार प्रायेनाय प्रतिवादि हय, ओ
राजाशा द्वारा अर्थात् आदालतेर हुकुम मते विक्रय असिद्ध हय,
तवे विमाता सावित्रा वर्तमान पर्यन्त ऐ विरोधि विभक्त वस्तुते
सावित्रा बिना दत्तकपुत्र अधिकारि अर्थात् दखल पाइते पारे
कि ना इति ॥

अत्र प्रमाणम्—

अपत्रा शयनं मर्तः पालयन्ती मते स्थिता ।

सुजीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति कात्यायन-
वचनात् ॥

स्त्रीणां स्वपतिदायस्तु उपभोगफलः स्मृतः ।

नापहारं त्रियः कुर्युः पतिदायात् कथञ्चन ॥—इत्यादि वचनम् ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

ऐ अंश विक्रय करणेर परे दत्तकपुत्र विमातार उपपति

न्यभिचारादि दोष राजधानीते प्रकाश करिया प्रतिवादि हय,
ताहार प्रमाण ना हओथाते राजविचारे ऐ दोष मिथ्या हइया
मकईमा डिपमिप हय । एमत मातृद्वेष्टा दत्तकपुत्र कोनो मते
विमातार धने अधिकारी हइते पारे ना । यद्यपि औरस पुत्र द्वेष्टा
हइया मातृर्ययार्थ न्यभिचारादि दोष कोनो स्थाने प्रकाश करे
तवे सेइ पुत्र मातृधनेर अधिकारी हय ना । दत्तकादिर पाओनेर

विषय कि । केन ना सावत शास्त्रे लिखित आछे—ये पितृ-मातृर
यथार्थ दोष पुत्रे सर्वतो भावे गोपन करिवेक । इहाते विद्वेष
करिया यदि पितृ-मातृर मिथ्या दोष, याहाते अत्यन्त अपमान
अव्यवहार्यत्वादि दोष हय, इहा राजद्वारे प्रकाश करिले, सेइ
पुत्र पितृमातृधनेर अधिकारि कोनो मते नहे, विशेषत दायभागेर
लिखित धनग्रहण धनस्वामिर ऐहिक पारत्रिक उपकार कर्ममेर
वेतन स्वरूप साहा, ना करिया, तद्धिपरीत विद्वेषादि करिले
सुतरा अनधिकारी हय-इति दायभागादिशास्त्रसम्मतता व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पितृद्विदू पतितः परडो यच्च स्यादौपपातिकः ।

औरसा अपि नेतैऽशं लभेरन् क्षेत्रजाः कुतः॥ इति व्यासवचनम् ॥

गोपयेज्जन्म नक्षत्रं धनसारं गृहे मलम् ।

प्रभोरप्यवमानञ्च तस्य दुश्चरितञ्च यत् ॥

कोऽर्थः पुत्रेण जानेन यो न विद्वाश्च धार्मिकः ।—इत्यादिवचनम् ॥

पुत्रान्मो नरफाद यस्मात् प्रायते इत्यादि (वचनेन) पुत्रकर्तृकतया
महाफलश्रुतेः । तत्कर्मवेतनं धनसम्बन्धित्वम् । अतस्तदकुर्व्यतः कुतो
वेतनम्—इति दायभागः ।

शन १८३१ साल २५ आगष्ट ॥

श्रीईश्वरो जयति

श्रीदिगम्बरशर्मणः

१३३—सहर ढाकार देयानि आदालतेर पण्डित श्रीयुतं
दिगम्बर तर्कवागीश भट्टाचार्य स्थाने प्रश्न एइ ये— लं० ४२२

भोलानाथराय

कैरावी

शाचित्रा ओ गोपालकृष्णसिंह ओ गयरह आसामीयान—

प्रथम प्रश्न—

पूर्व प्रश्न व्यवस्थापत्रे एमत बोध हय ना ये मातार व्यभिचा-

रादि दोष प्रकाशे पितृघन पाइते पारे ना । अतएव लिखा जाइते-
छे ये मातृ असङ्गत प्रकरण प्रकाशे पितृवस्तु पाओयार निषेध कि
ना-एहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे परस्यु दिवस मिद्धिलेर शमय
लिखिया पाठाएन ॥

द्वितीय—

पितृमातृदोष प्रकाशे ये पितृमातृघनेर अधिकारि नहे, एम-
स व्यवस्था लिखिया ताहार निचे व्यासवचन ओ दायभागवचन
ये लिखा गीयाछे ताहार अर्थ जयार्थ बाङ्गलाभापाठे लिखिया
परस्यु दिवस मिद्धिलेर समय दारिल करेण, गौन ना हय । इति
शन १२३८ तारिख १२ भाद्र बाङ्गलार आङ्गरेजी शन १८३१-
२७ आगस्त ।

समागतपारुष्यरूपकारित्वबलितप्रश्नपत्रावलोकनात् सादृशानोषो जात-
स्तदनुसारेण आपया मुक्तबोधार्थमुत्तरं लिख्यते ॥

प्रथम प्रश्नेर उत्तर—

मातृव्यभिचारादि दोष प्रकाश करिले पितृघन पुत्रे पाओनेर
बाधा नाइ । पूर्व परने लिखित मातृघन पाइते पारे ना-इति ।

द्वितीयप्रश्नेर उत्तर—

पितृमातृदोषप्रकाशे पितृमातृघने अधिकारी नहे । ताहार
प्रमाण ये व्यासवचन पितृद्विद् इत्यादि । ताहार अर्थ—एइ
पितृद्वेष्टा जीवदशाते वाक्य द्वारा किम्बा आपात द्वारा अपमान
करे एवं मृत्यु हइले श्राद्धादिते येमुख हय, पतित, अव्यवहार्य,
ओ पण्ड, नपुंसक, औपपातिकः उपपातकयुक्तः—एरूप औरस
पुत्र पितृघने अधिकारी हइते पारे ना, मुनरा क्षेत्रज्ञ दत्तकादि अधि-
कारी नहे ॥ द्वितीय विष्णुधर्मोत्तरवचन—गोपयेज्जन्म तत्तत्र-
इत्यादिर अर्थ—जन्मनक्षत्र, धनसार श्रेष्ठघन, गृहमल गृह-
खिद्र, प्रभु-पितृ-मातृर अपमान, आर ताहारदिगेर दुष्कर्म गोपन
करिवेक । पितृशब्दे ओ प्रभुशब्दे पिता माता दुइ । इहार प्रमाण
दायभागादि अनेक शास्त्रे आछे । कोऽर्थः पुत्रेण—इत्यादि वचनेर

अर्थः—ये पुत्र धार्मिक ओ विद्वान् ना हय, से पुत्रे कि प्रयोजन आछे, अर्थात् धनि व्यक्ति उत्तराधिकारी धनिर द्वेष्टा हइले ताहार धन पाइते पारे ना । इहार प्रमाणः एकत्र निर्णीतः शास्त्रार्थः बाधकं विना अन्यत्रापि कल्प्यते—इति दायभागादिशास्त्रसम्मत व्यवस्था । इति सन १८३१ साल तारिख २६ आगष्ट ॥

श्रीईश्वरा जयति

श्रीदिगम्बरशर्मणः

नं० ४६२—

१३४—मृत रामस्मरणरायेर पुण्यपुत्र भोलानाथराय-कैरादी ऐ मृतव्यक्तिर ओ सावित्रा ओ गोपालकृष्ण सिंह ओगयरह—
आसामीयान् ।

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितदिगेर स्थाने प्रश्न एइ ।

एइ आदालतेर प्रश्न जाहा सहर आदालतेर पण्डित श्रीयुत दिगम्बरतर्कवागीशमट्टाचार्य निकट पाठान गियाछिल, ओ मट्टाचार्य ये उत्तर ओ वचनेर अर्थ लिखियाछेन, ताहा पाठान जाये । यथाशास्त्र कि ना, एवं वचनेर अर्थ ये पण्डित लिखियाछेन ताहा यथार्थ कि ना, एवं यदि व्यवस्था यथाथे, ओ वचनेर अर्थ पण्डितेर व्यवस्था अक्य ना हय, तवे ऐ प्रश्नेर यथाशास्त्र व्यवस्था ओ वचनेर यथार्थ अर्थ लिखिया पाठाएन ।

यदि एक व्यक्ति बैद्यजाति, आपन वित्त राखिपा मृत्यु हय, आ सेइ वित्त प्रथम ओर पुण्यपुत्र ओ वर्त्तमाना द्वितीय स्त्रि गर्भजात पुत्र मध्ये दुइ अंश, एक अशमते अंश जात हइया, ओरस पुत्रे दुइ अंश ताहार अप्राप्तव्यवहार निमित्तक ओ पश्चात् ताहार मृत्यु हओते आपन मातृ एकारे छिलो, एमत वित्त शास्त्रानुसारे ऐ पुण्यपुत्रे मातृवित्त, कि पितृवित्त हय, इहार उत्तर लिखिया पाठाएन इति । सन १८३१ तारिख २३ आगस्त
मौ० बा० शन १२३८ तारिख १४ भाद्र ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुखमपितप्रश्नपत्रं व्यवस्थापनद्वयञ्च यदङ्गरेजीरन्दप्रतिपाद्यैक-
त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयसितम्बरमासीयेनविंशतिदिनसम्पन्निषोमवास-
रे घटिकाद्वयाधिकयामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबाधो-
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

जाह्नङ्गोरनगरसम्बन्धिकोटपीलाख्यधर्माधिकरणीयप्रश्नयोदत्तरे सहर
जिलाखयावान्नरधर्माधिकरणनियुक्तपरिद्वतेन दिग्गम्भरतर्कभागीशमहाचा-
र्येण लिखिते यथाशास्त्रे एव । एवं तत्प्रमाणीभूतवचनानामर्था अपि
तत्परिद्वतलिखिता यथार्था एव । किन्तु अङ्गरेजीरन्दप्रतिपाद्यैक-
त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्तमासीयेनविंशदिनलिखितप्रथमप्रश्नोत्तरे
व्यभिचारादिदोषप्रकाशकरणे सति पितृस्वत्वास्पदीभूतधनप्राप्तेर्भाधो
न भवति पुनस्त्वेति यल्लिखितं तत्रापि विशेषो मिथ्याभूतमातृव्यभिचारादि-
दोषप्रकाशकर्तुं पुत्रस्यातीव निन्दितत्वेन मानश्च पित्रपेक्षया सहस्रगुणाधिक-
मान्यत्वेन च पितृदोषप्रकाश विनैव मानव्यभिचारादिदोषप्रकाशेनैव
पितृदोषप्रकाशकर्तुं पुत्रस्याकृतयथाशास्त्रप्रायश्चित्तस्योत्तराधिकारित्वेन
कस्यापि धनग्रहणाधिकारित्वस्य योग्यता न भवतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

उपाध्यायादशाचार्य्य आचार्याणां सतं पिता ।

सहस्रन्तु पितुर्भाता गौरवेण्यतिरिच्यते ॥

गर्भधारणपोषाभ्यां तेन माता गरीयसी ।—इत्यादि श्रोकस्यतर्कोल-
ङ्कारकृतदायभागटीकादिग्रन्थलिखितमनुवचनम् ॥१॥

पितृपत्न्यः सर्वा मातरस्तद्भ्रातरो मातुलास्तद्भगिन्यो मातृस्वसार-
स्तद्दुहितरश्च भगिन्यस्तदपत्यानि भागिन्येयान्यन्यथासङ्करकारिणः स्यु-
रिति प्रयोगतरवादि उदाहृतत्वं पृ० १२८ ग्रन्थधृतमुपमन्त्रि(१)वचनम् ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येकः कश्चिद् वैद्यजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वस्वत्वात्पदीभूतघनं संरक्ष्य मृतः स्यादथ च तदेव घनं तस्य प्रथमपत्नीपोष्यपुत्रवर्त्तमानद्वितीयपत्नीगर्भज-पुत्रयोर्मध्ये विभागेन अंशद्वयमौरसपुत्रस्यैकोऽंशः पोष्यपुत्रस्येति । तत्रौरस-पुत्रस्यांशद्वयं तस्याप्राप्तव्यवहारत्वेन पश्चात्तन्मरणेन च स्वमातुरायत्तं भवति । एतादृशं घनं यद्यपि पोष्यपुत्रस्य पितृघनमभूत्, किन्तु पश्चाद् भ्रातृस्वत्वात्प-दीभूतत्वेन भ्रातृघनं तन्मरणपश्चात्तन्मातृसंक्रान्तत्वेन च तन्मातृमरणानन्तरं मातृसंक्रान्तं भ्रातृघनं भविष्यतीति ॥

अङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकशष्टादशशतान्दीयकेवरवरीमासीत्य-ग्रहमदिनसम्बन्धिषष्ठ्यासरे मयेदमुत्तरं दत्तमिति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३५—यद्यपि पितृव्य ओ भ्रातृपुत्र पैतृक साधारण स्थावर एवं अस्थावर वस्तु वषट्केर विवाद उपस्थित हइया सालिपेर निकट तावत वस्तु उत्तरकाल अश करिया लओनेर लिखित पठित हइया थाके, किन्तु तदनुसारे कोन वस्तु चिह्नित एयं नाम पृथक्, अर्थात् जमिदारि आविर नाम खारिज, ना हइया सकर भून्यादीर कर प्रदानेर निमित्त महाल खण्ड बिलिमते उभये ओतुल तहसील करिया उभये साधारणे राजकर प्रदान करिया थाके, ठाकुरसेवा ओ बागान ओ घाटीदिगर तावत वस्तु साधा-रणे राखिया ऐ भ्रातृपुत्र आपन पितृव्य एयं स्त्री वत्तेमाने लोकान्तर हइया थाके, तवे मिताक्षराग्रन्थ मते ऐ मृत व्यक्ति ऐ सकल वस्तु उत्तराधिकारि ऐ स्त्री किन्वा ऐ पितृव्य हइवेक इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रमुखमर्षितप्रश्नप्रतिस्पर्धनं तत्सम्पर्कीयायशिष्टपत्रचतुष्टयं च यदेत-दन्दीयजानवरीमासीयोनविंशतिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे घटिकाद्वयाधिक-

यामद्वयान्तर मया प्राप्त तदलोक्य ग्राह्यज्ञो धोऽन्वातस्तदनुसारेणोचरं
लिख्यति ॥ १० ॥

यदि कश्चित् स्वेष्टितृष्ये विद्यमाने स्वपत्न्याञ्च विद्यमानाया मृतः स्यात्तदा
प्रश्नपत्र लिखितप्रकारकवृत्तान्ते सति मिताक्षरादिग्रन्थमते तस्यैव मृतस्य
स्वक्तघने तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्रामावे तत्पत्न्येवाधिकारिणी भवति । पत्न्याञ्च
विद्यमानाया तत्पुत्रपुत्र्योर्अधिकारी भवितुं न शक्नोति । प्रश्नपत्रलिखितेन
राजकरस्थावरदेः करप्रदानार्थं पृथक् पृथक् सराजकरस्थावरक्षणदस्य
निर्देशेन द्वाभ्यां करग्रहणं कृत्वा ताभ्यां द्वाभ्यां साधारण्येन राजकरो दत्तः
स्यादित्यनेन विवादास्पदीभूतचनविभागस्य शास्त्रानुसारेण निश्चयपूर्वत्वात् ।
मिताक्षरादिग्रन्थलिखितस्य विभागशब्दार्थस्यैतद् व्यवस्थाया अर्थोलिखित
तृतीयप्रमाणे स्पष्टीकृतत्वाच्चेति मिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरस्यैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिमिताक्षरादिग्रन्थभूतयावत्स्व
वचनम् ॥ १॥

पत्नी पृथ्वीयान्—इत्येतद्वचनवात् विभक्तभ्रातृव्रीविषयम्—इति मिता
क्षराग्रन्थलिखनम् ॥ २॥

विभागो नाम द्वयसमुदायविषयाणामनेकत्वाभ्यानान्तदेकदेशेषु व्य-
वस्थापनम्—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥ ३॥

दानग्रहणपरवचनगृह्येअपरिमहाः ।

विभक्तानां पृथगुक्तेयाः पाकधर्मागमव्ययाः ॥—इति वीरमिश्रोद-
यादिग्रन्थभूतनारदवचनम् ॥ ४॥

साक्षत्वं प्रातिमाव्यं च दान ग्रहणमेव च ।

विभक्ता भ्रातरः कुर्युर्वाविभक्ताः कथञ्चन ॥ इति तत्तदग्रन्थभूत-
नारदवचनम् ॥ ५ ॥

येषामेताः क्रिया लोके प्रवर्तन्ते स्वरिक्थतः ।

विभक्तजनवगच्छेयुर्लेख्यमप्यन्तरेण तान् ॥—इति तत्तदग्रन्थभूत-
नारदवचनञ्चइति ॥ ६ ॥

एतदन्दीयापरेलमासीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिरासरे मयेय व्यवस्था
दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३६ ॥ सन १८३० साल तां २५ फेबरेल—

फोटेर पण्डितेर द्वाराय अजगतो हइयेन ये पांगचे प्राक्षण
गङ्गाजले सगुण करिते मुक्त हइते पारे किना, आर यदि स्यात्
सगुण करे तवे ताहार धर्म हाइन हइते पारे किना ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रमवलोक्य यादृशधोषो आतस्तदनुसारेणोत्तर
लिख्यते—

वागचीवापनामकप्राक्षणजातीयो गङ्गाजलेन शपथकरणस्य योग्यो
न भवति । यदि च तेन गङ्गाजलेन शपथ क्रियते तदा तस्य धर्महानि
भवत्येवेति शास्त्रानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

यथा गङ्गोदकं तोयं गोमयं वा तथा द्विजम् ।

असत्यं वापि सत्यं वा स्पृष्ट्वा दिव्यं करोति यः ॥

निम्नेटिकुलसयुक्ता रौरयः नरकं व्रजेत् ।

कर्ता कारयिता भद्रे तथैव नरकं व्रजेत् ॥ इति गायत्रीतन्त्रधृत

(पृ० ४४) महादेववचनम् ॥ १ ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३७ सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर उपर सओयाल-
सओयाल—

यद्यपि मृत राजा चित्रसेनेर स्त्री राणी इन्द्रकुमारी अवीरा

आपन ओयारिष अर्थात् आपन स्वामीर भातार पौत्र महाराजा तेजचन्द्र बाहादुरेर वर्त्तमाने सुपरेम कोटेर आदालतेर खरचार देना दान अर्थात् दाइक हईया सुपरेम कोटेर देना खरचा आदाय- कारण आपन दस्तली चित्रसेनेर त्यज्य फोन वागान विक्रय करिया थाके तवे शांखानुसारे ताहा सिद्ध हय किना । एवं यद्यपि मुद्दह महाराजा तेजचन्द्र बाहादुरेर महर करा लिपिद्वाराय राजा चित्र- सेनेर स्त्री इन्द्रकुमारीर प्रति उपरेर लिखित वाग्गान विक्रयेर ओ हस्तान्तरकरणेर क्षमता बोध हय, सेमते ओ वागान मजकुरान् विक्री सिद्ध हय किना इति ॥—

श्रीज्जयतितराम्

प्रमुत्तमवितप्रश्नपत्रं यद्गुरेजोराब्दप्रतिगद्यशत्रिंशदधिकष्टादशशता-
ब्दीयमाचर्चमासीद्वितीयदिनसम्बन्धिशुक्रवाचरे घटिक्रद्वयाधिकयामद्वया-
नन्तरं मया प्राप्तं तदुरजोत्थ यादृशबोधो जातस्तदनुगरेणोत्तरं लिखते ॥

यद्यपि मृतस्य राज्ञश्चित्रसेनस्यावीरया पत्न्या राश्या इन्द्रकुमार्या स्वपतिभ्रातृमेव महाराजतेजश्चन्द्ररायत्रिंशदुत्तरस्थे स्थानन्दरोत्तपधिकारिणि विद्यमाने सति सुप्रीमकोटोत्पद्यमानाधिकरणव्यपस्तया तथा तद्गर्भाधि-
करणव्यपपरिशोधनाय राज्ञश्चित्रसेनस्य त्यक्तः स्वायत्तीभूतः कश्चिदा-
रामो विक्रीतः स्यात्तदा शांखानुसारेण तादृशविक्रयः सिद्ध्यति, पुत्र-पौत्र-
प्रगौरहितस्य मृतस्य घने उत्तपधिकारिस्त्वेनाधिकारिणाः पत्न्या आपन्नि-
वारणार्थम् आवश्यककार्यान्वयार्थं च तत्तत्कार्योपयुक्तस्य तद्गोविक्र-
यस्य शांखानुसारेणाधिकारित्वात् । एवं यद्यप्यधिको महाराजतेजश्चन्द्र-
बाहादुरस्य मुदाङ्कितलिपिद्वारेण राज्ञश्चित्रसेनस्य पत्न्या इन्द्रकुमार्या उ-
परिलिखितायमाणां विक्रयप्रकारेण प्रकारान्तरेण वा हस्तान्तरकरण-
क्षमताया बोधो भवति, तथापि तेभ्योयमाणां विक्रयः सिद्ध्यति, उत्तपधि-
कारिणेन प्राप्तानवस्थतिवनया पत्न्या कृतस्योत्तपधिकारिसम्पत्त्या प्रश्न-
पत्रलिखितप्रकारकापलिशरकावश्यकव्यपपरिशोधनाय तदुरयुक्ततिवनवि-
कयस्य सिद्धेतिव्यत्यूस्तान् इति वज्जरेण चलितदायमागधोक्तवर्तकत-

द्वारकृतदायभागटीका-दायकप्रसंग-व्यवहारतत्त्व-नारदस्मृति-विवादार्णव-
सेतुविवादमहार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरोऽप्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥ १ ॥

कुटुम्भार्थमशक्ते तु गृहीतं व्याधितेऽथवा ।

उपलवनिमित्तं च विद्यादापकृतञ्च तत्—इति व्यवहारतत्त्वादि-
ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥ २ ॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि पत्न्यर्ण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानायमनविक्रयाः ॥ इति

एतान्यपि प्रमाणानि भर्ता यद्यनुमन्येत इति च नारदस्मृत्यादि-
ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ३ ॥

तथा च भर्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्यद्वा कर्म करोति
सुतभर्तृकपि त्वराशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत ।

इति विवादमहार्णवग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ ४ ॥

अक्षरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वाविंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमेइमासीयसतदशदि-
नसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीऽर्जुनयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३८—अशेष शास्त्राध्यापक श्रील श्रीयुक्त सद्गर वेद्योयानि
आद्यालतेर परिष्ठतजन सकल

सञ्जाल—

एक व्यक्ति रामकान्त भट्टाचार्य्य नामे छिल । ऐ रामकान्तेर
तिन पुत्र रामजय ओ कालीप्रसाद ओ रामसुन्दरभट्टाचार्य्य
हइयाछिल । बाहार मध्ये कालीप्रसाद निःसन्तान, आर रामजय

एक कन्या ओ एक स्त्री ऐ स्त्रीर गर्भे एक पुत्र राखिया आपन पिता ऐ रामकान्तभट्टाचार्य्येर वर्त्तमाने फौत् करे। तदपरे रामजय भट्टाचार्य्येर पुत्र भूमिष्ठ हइले किछु काल गते रामकान्तभट्टाचार्य्ये एक पुत्र, अर्थात् ऐ रामसुन्दरभट्टाचार्य्य ओ एक पौत्र अर्थात् ऐ रामजयेर पुत्रके ओयारिष एवं किछु भूम्यामि राखिया फौत् करे, आर ऐ सफल भूम्यादि रामसुन्दरभट्टाचार्य्य आर ऐ रामजयेर पुत्रे एजमालि दखले थाके। तस्य परे रामजयेर पुत्र आपन माता ओ भग्नीर सन्मुखेते अष्ट वत्सर वयः क्रमे फौत् करे। उहार फौतेर पर ताहार माता, अर्थात् रामजयेर स्त्री, आपन ऐ एक कन्याके राखिया फौत् करे। ताहार पर रामजयेर कन्यार तिन पुत्र सन्तान हय। ऐ तिन पुत्रे मध्ये एक पुत्रे - प्राप्त हइयाछे, ए द्यने दुइ पुत्र वर्त्तमान आछे। तदसेत्ताय रामसुन्दरभट्टाचार्य्य आपन पिता, रामकान्तभट्टाचार्य्य, ओ आपन मातार आद्धादि करिया एवं स्थावर वस्तुते दखिलकार थाकिया आपन नायालग दुइ पुत्र आर एक स्त्री अर्थात् ऐ नायालगेरदिगेर माताके राखिया फौत् करे। एद्यने रामसुन्दरभट्टाचार्य्येर ऐ स्त्री ओ नायालग दुइ पुत्र वर्त्तमान आछे एमते रामजयभट्टाचार्य्येर ऐ कन्यार द्वाधि रामजयेर हिस्सार भूम्यादिर प्रति अरौ किता। यदि स्यात् अर्शाय, तवे ताहार द्वाधि ऐ रामकान्तभट्टाचार्य्येर भूम्यादि वस्तु र प्रति कि आम्दान अर्शाइते पारे इति। शन १८३२ साल तारिख १६ जानेओरि मतावक शन १८३८ साल तारिख ७ माघ—॥

प्रमुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमार्चमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिगुप्तवासरे^१ घटिकाद्वयाधिक्यामद्वयानन्तरं मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते ॥

प्रश्नपत्रलिखितप्रकारकृच्छ्रान्ते सति रामबयभट्टाचार्य्यस्य दुहितुरयोगो रामबयभट्टाचार्य्ययोग्याश्रमभूम्यादिकं प्रति भवत्येव । अतएव रामजय-

भट्टाचार्यस्य पितृ रामकान्तभट्टाचार्यस्य स्वत्वास्पदीगूतभूम्यादिधनादांश-
परिमितभूम्यादिधनं प्रति तादृशामियोगोऽयुक्तः, यतो रामकान्तभट्टाचार्यो
राममुन्दरभट्टाचार्यनामानमेकं पुत्रमेकश्च पौत्रमर्थाजीवति पितरि मृतस्य
रामजयभट्टाचार्यस्य स्वकीयज्येष्ठपुत्रस्य पुत्रश्च संरक्ष्य मृतः । अतएव राम-
कान्तभट्टाचार्यस्य मरणानन्तरं तत्त्यक्तधने शास्त्रानुसारेण तदानीं विद्य-
मानयोः पुत्रपौत्रयोरेव तुल्याधिकारः, रामकान्तभट्टाचार्याख्ये पितरि जीवति
सति अथनपत्यस्य मृतस्य कालोपवादभट्टाचार्यस्य तद्द्वितीयपुत्रस्य पैतृका-
दिधने स्वत्वानुत्पादात् । एवञ्च सति रामकान्तभट्टाचार्यस्य यौगो यदि स्व-
जननी स्वभगिनीं चैकां संरक्ष्यानपत्य एव मृतः स्यात्तदा तत्त्यक्तधने
अर्थान्मूलरूपस्य रामकान्तभट्टाचार्यस्य त्यक्तधनादांशे तन्मातृरथात् राम-
जयभट्टाचार्यस्य पत्न्या एवाधिकारः तस्याञ्च मृतायां तत्संक्रान्तस्वपुत्रधने
तत्पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्त एवाधिकारिणो भवन्ति । तत्र रामकान्त-
भट्टाचार्यपौत्रस्य स्वपुत्रमारभ्य स्वपितुः प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य भगिन्याः
कश्चिदेकोऽपि पुत्रस्तन्मातृमरणसमये गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा यदासीत्त-
दा तस्याधिकारः जाते^१ च तस्याधिकारे पुनरुत्पत्त्यमानानां तद्भ्रात्रन्तराणा-
मर्थाद्रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदोहित्रान्तराणामप्यधिकारः समान एव
भविष्यति । सति च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृदोहित्रे तत्पितृव्यपुत्रा-
णामर्थात् राममुन्दरभट्टाचार्यस्य पुत्राणां प्रश्नपत्रलिखितानां नाधि-
कारः । यदि च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य स्वपुत्रमारभ्य स्वपितुः प्रपौत्र-
पर्यन्तरहितस्य मृतस्य भगिन्याः कश्चिदेकोऽपि पुत्रस्तन्मातृमरणसमये गर्भे
व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा नासीत्तदा तत्पितृदोहित्राणां स्वत्वान्यथानुपपत्त्या तद्-
भगिन्यास्तत्पितृदोहित्रोत्पत्तिमूलो^२ भूतायास्तत्सम्बन्धमूलीभूतायाश्च स्वपुत्रो-
त्पत्तेः प्राक्कालपर्यन्तं यथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितृद्वने दुहितु-
रधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च रामकान्तभट्टाचार्यपौत्रस्य पितृ-
दोहित्रे स्वतः तत्पितुः पार्वणश्राद्धपिण्डदातरि स्वतस्तत्पितुः पार्वणश्राद्ध-
पिण्डदानानधिकारिण्यास्तद्भगिन्या नाधिकारः । किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्रा-

णां वोपरिलिखितप्रकारेणाधिकारः—इति मङ्गलदेशचलितदायभागभीकृष्ण-
तर्कालङ्कारकृतदायभागटीका—दायतत्त्व-दायक्रमसंग्रह विवादमहार्थवादिसं-
ग्राह्यानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते मृते पुत्रे^१ तत्सुतमृक्यभागिनम् ।

कुर्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

समेतांशं स्वपिश्यन्तु पितृव्याप्तस्य वा सुतात्—इति दायतत्त्व-
विवादमहार्थवादिसंग्रहपुस्तकात्यायनवचनम् ॥१॥

यथा पैतामहे घने पितुः स्वाम्यं तथैव तस्मिन्मृते तत्पुत्राणामपि, न
तत्र सार्धकर्पविप्रकार्याभ्यां कोऽपि विशंपः । पार्ष्वण्यविधिनापि पियडदानेन
द्वयोरपि तदुपकारकत्वाविशेषात्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः ॥—इत्यादितत्त्वग्रन्थपुस्तकाश्वत्थवचनम् ॥३॥

पितुरपि प्रजोत्रपर्यन्ताभावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो घनिदौहि-
त्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥४॥

दृष्ट्वाद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोचितात्—इति तत्त्वग्रन्थ-
पुस्तकाश्वत्थवचनम् ॥५॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्रः इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही
तदभावे पितुस्सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवैमा-
त्रेयपुत्रः—इत्यादि च भीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥६॥

यद्यपि दुहितृभावे दौहित्रस्येव मगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्तथापि
तस्याः स्त्रीत्वेन पार्ष्वण्यपियडदत्ताभावाच्चाधिकारः । दुहितुस्तु दौहित्रात्
पूर्वमह्नादह्नात् सम्भवति इत्यादिविशेषवचनादेवाधिकारः इति भावः
इति भीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥७॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयमैमासीयचतुर्विंश-
तिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवाररे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

थीर्ज्जयतितराम् ,
थीर्वैद्यनाथमिश्रेण .

१ सदर देशोयानि आदालतेर रुक्कारि इङ्गरेजी संन १८३२
साल तारिक २३ माह फेब्रेओयारि मोताब्रक बाङ्गला १८३२ साल
१२ माह फाल्गुन रोज वृहस्पतिवार ए आदालतेर हाकिम बिचा-
रुं ओयालपोल साहेबेर बैठके—

महाराजा गोविन्दनाथराय—

आपीलाण्ट—

गुलालचन्द्र ओरफे नानका बाबु प्रभुति—

रेप्पाडण्टान—

आपिलेण्टेर उकिल मुनशी हसन आलि ओ रेप्पाडण्टान-
नेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल ओ सदासुख पण्डित हाजिर
आइलेन । ए मफर्दमा पूर्व कयेक तारिके कथवर्ट धरनेल सिली
साहेब हाकिमेर समचे रुक्कार ओ लालिसेर आरजि इत्यादि
प्रावेनसिएल कोडेर कागजात फयसाला पर्यन्त ओ ए आदालतेर
सओयाल ओ जओवाव पढागिया १८३१ साल १८ माह मे तारि-
खे कयेक प्रश्नेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डित हइते तलब हइया
ओहा दाखिल हओन वादे स्थकित छिल । गतो दिवस आमार
बैठके रुक्कार ओ लालिपेर आरजि इत्यादि कोडेर कागजात फय-
साला पर्यन्त ओ ए आदालते दाखिल हओा गुजिवाते ओ
ओहार जवाव पढा गिया दियावसान प्रयुक्त मुलतबि छिल । अद्य
पुनराय ऐ रुक्कार हइया ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ
मुशम्मात भाया कोडेर सओयाल ओहार उकिल मुनशी दादार

चकेसर साक्षरते दृष्टी हृदया बोध हइल ये विवादीय स्थानेर प्रकृत-
कर्त्ता माया कोडरेर स्वामीर उत्तमचन्द्रलाहार' मुनिचन्द्रके
आपन पोष्य एक पुत्र विवेचना करिया देशोन, ओ कोटेर व्या-
पार, ओ जमिदारीर कर्म सकल निर्वहण, ओ ए जमिदारि बहा-
लि, ओ ताहार दान विक्रय हइते स्त्री के बिमुख राखन कारण,
ओसि नियुक्त करिया, ताहार नामे ओसियतनामा लिखिया दिया
मृत्यु हय। कियत् कालानन्तर मुनिचन्द्र ओ पुष्यपुत्र विवेचना
बिना मेरे ओ मायाकोडरेर उत्तमचन्द्रलाहार श्री गोलाल चन्द्र
रेष्पानडेटके आपन पोष्यपुत्रताते प्रहण करे। आपिलाएट ताहार
पिता मृत उत्तमचन्द्रेर पिता खड्गसिंहेर बिनामे लाट इयाद्व-
पुरदिगर छय लाट खरिद करा उल्लेखे ऐ लाटसकल दखल
पाओन दाबिते मायाकोडरेर नामे नालिस करिया, डायरादिगर
दुइ लाट मुर्दायालेहार स्थाने लइया, मकईमा सोलहनामानुजाय
निष्पत्य कराइलेक, ओ फयशला जारते दुइ लाटेर उपर दखल
ओ काबेज हइल। तत्पर गोलालचन्द्र रेष्पानडेट उत्तमचन्द्रेर
पोष्य पुत्रता ओ आपनि उत्तमचन्द्रेर पोष्यपुत्र ओ ताहार स्था-
नापन्न धाकने सोलह ओ विक्रय बिपये मायाकोडरेर अक्षेमता
ऐ जाहाजे इयाद्वपुरदिगर चतुर्दश लाट दखल पाओन दाबिते
आपिलाएट ओ लाट नारायणपुरग्रामेर खरिददार गोपीचरण-
घडाल मुईइर कबुल दाबि ओ उभयेर सोलह सम्बलित दरखास्त
गुजराइलेन ये प्रविनसियान कोटेर हाकिमेर हजुर हइते
ताहादिगेर कबुल दाबि ओ सोलहनामा, जाहा आपिलाएट ओ
मुशम्मात मायाकोडरेर मध्ये हइल, ताहा नामञ्जूर; ओ अन्यथा
हइया मुहयेर हक्के डिगिरि ओ आपिलाएटके ताहार सावेक नालिश
जारिकरण कारण अनुमति हइल इति। यथा कामजात् अनुमो-
दन ओ मकईमार समस्त घृत्तन्त दृष्टे रेष्पानडेटेर पोष्यपुत्रता
साक्षीगणेर द्वाराय सार्वस्थ, ओ ए आदालतेर परिडतेर व्यव-

स्था हइते ओ अनुभव हइतेछे-ये उत्तमचन्द्रेर स्त्री मायाकोडर स्वामिर अनुमति थाकुन वा ना थाकुन उत्तमचन्द्रेर धर्सेर व्यव-
हाय्य जयनि शाखानुसार पोप्यपुत्र राखन ओ तत्परियत्तन क्षेमता राखे । ए कारण आमार समीपे गोपालचन्द्र रेप्पातडे-
एटेर पोप्यपुत्रता ओ जयनि शाखप्रमाण । ताहार सिद्धताते कोन सन्देह नाइ । किवल एइ सन्देह हइतेछे ये पोप्यपुत्र थाकिते मुस-
म्मात मायाकोडर स्वामीर त्यक्त धन स्वामीर असियतनामा लिखित नियमेर अन्यथाय जयनि शाखानुसारे हस्तान्तेरेर क्षमता राखे कि ना; ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था लिखित एवा-
रते-ये जयनि शाखानुसारे स्वामीर मृत्युरपर, यदि मृतव्यक्तिर स्त्री पुत्रवति थाके, तथा च ये प्रकार ताहार स्वामीर क्षमता छिल, तदनु रूप स्त्रीर प्रत्येक विषये क्षमता याछे-यपष्टता ओ बोधे सिद्ध आइसे ना, ये ताहार अभिप्राय कि कि स्वामी आपन जीवताव-
स्थाय ये प्रकार स्थावर विषय सोझे किम्बा विक्री अथवा दाने हस्तान्तर कारण^१ क्षमता राखित सेइमन उहार स्त्री स्वामी मर-
णान्ते पुत्र सन्तान थाकिते क्षमता राखे । अतएव एइ विषय ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने जयनि शाखे प्रकृतानुमति बोधकरण मनासिय बोध हैया हुकुम हइल ये एइ रुब कारिर नकल व्यवस्था सहित एइ हुकुमे ये व्यवस्था लिखित एवारतेर^२ अर्थ ओ तात-
पर्ये^३र बित्तारित, ओ एइ प्रनेर प्रत्युत्तर ये मायाकोडर उत्तम चन्द्रेर कायेम मोराम ओ पोप्यपुत्र गोपालचन्द्र थाकने. ओ उक्त मजमुने उत्तमचन्द्र असियतनामा लिखिया देओने ओ जयनि शाखानुसारे सोलह रुपे दोविर वस्तु मध्ये घोडा मान्दा ओ दावरा दुइ ताट आपीलाएट सावेक मुर्दइके छाडिया देओन क्षमता राखित किता-एक मासेर मध्ये लेखेन—एइ आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय, ओ ए रुबकारिर द्वितीय नकल व्यवस्था नकल सहित सहर मुरसिदावादेर जज साइवेर निकट एक मास

१. कस्य शक्ति साक्षीयान् पाठः ।

२. भाषे-दंत क्षत्रीयान् पाठः ।

मेयादे पृसेष्ट सम्बलित एह हुकुमे पाठान जाय ये रे एवारतेर अर्थ
ओ रे प्रस्तेर^१ प्रत्युत्तर जति अर्यात् जयनि शाखेर पण्डितेर स्थाने,
ये उमयेर सहित सम्पर्क ओ प्रयोजन नाराखे, लेखाइया आदालते
प्रेरण करेण इति ।—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिषाईश्रीयालपोलसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितैतदब्दीयफेवरवरीमासीयपत्रयोविंशतिदिवसोयवि सारपत्रान्तर्गतप्रश्न-
प्रतिरूपपत्रं तत्तमर्पितैतद्धर्माधिकरणोयव्यवस्थापत्रं च यदेतदब्दीयापरेल-
मासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे एवं तत्तमर्पितमसीयन्नामाख्यपत्र
प्रतिरूपपत्रं यत्तन्मासीयचतुर्दशदिनसम्बन्धिरानिवासरे मया प्राप्तं तद्व-
लोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रमुसमर्पितव्यवस्थालिखितस्य चैनशास्त्रानुसारेण पतिमरस्थानन्तरं
पुत्रपत्या अपि पत्न्याः पतिवत्कार्य्यमात्रकरणे स्वाच्छन्द्येनेति अस्यायमर्थः—
पुत्रे विद्यमाने पितुर्यादृशायादृशकार्य्यकरणे, अर्यात् स्थावरस्य दानविक्रय-
सन्धिप्रभृतिकार्य्यकरणे, चैनशास्त्रानुसारेणाधिकारः तथा पतिमरस्थानन्तरं
स्वेच्छाकृतपोष्यपुत्रे^२ विद्यमाने मातुरपि तादृशतादृशकार्य्यकरणे अधिकारः ।
एवं च सति मायाकोमराख्या प्रत्यर्थिनो गुलालचन्द्रस्य प्रमुसमर्पितप्रश्न-
पत्रे उत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रत्वेन प्रतिनिधित्वेन च मन्व्यमानस्य विद्यमान-
सायामपि उत्तमचन्द्रलिखिते प्रमुसमर्पितविचारपत्रलिखितार्थप्रतिपादके-
न्वासीयन्नामाख्ये पत्रे सत्यपि चैनशास्त्रानुसारेण सन्धिरूपेणाभियोग-
विपरीभूतानां स्थावरद्व्याणां मध्ये धोढामान्दा डावरेति च भाषार्था-
द्विलाटशब्दप्रतिपादस्थायवस्त्यैतद्धर्माधिकरणस्यावान्तरधर्माधिकरणस्य
चाधिने त्यागपूर्वकसमर्पणस्य क्षमतामरब्धदेव । यतः प्रमुसमर्पितासी-
यन्नामाख्ये पत्रे मतिचन्द्रं प्रत्युत्तमचन्द्रेण लिखितमस्ति—मम नाम रत्न-
धार्यमेकं बालकं स्वमत्तसिद्धं पोष्यपुत्रं रक्षित्वा तं सिद्धितं कृत्वा

ज्ञानापन्नं तं वाणिज्ये सराजकरस्थावरं चाभिपिक्तं त्वं करिष्यसीति ।
 अनेनोत्तमचन्द्रस्य पत्न्या मायाकोमराख्यायाः पोष्यपुत्रमह्यानुमते
 स्तत्पत्युरनवयमात् पुनरप्युत्तमचन्द्रेण मतिचन्द्रं प्रति तस्मिन्नेवासीयल्लामा-
 ख्ये पत्रे लिखितमस्ति मम स्त्री यदि वाणिज्ये व्यापारमुत्पापयितुमिच्छति,
 अथ च सराजकरस्थावरमस्मात्स्वत्वात्पदोभूतं भवदभिप्रायं विना कस्मैचि-
 ह्ददाति विनीक्ष्यते वा तन्नास्मत्सम्मतम्, त्वं तत्र प्रतिबन्धकतामास्थाप-
 दानं विक्रयं वा मा कारयेति । अनेन मतिचन्द्रस्यासीशब्दप्रतिपाद्यस्य
 जीवनावस्थायां तदनुमतिप्रन्तरेणोत्तमचन्द्रस्य पत्न्या मायाकोमराख्याया-
 स्तद्वधने दानविक्रयादिक्षमता नास्ति । किन्तुत्तमचन्द्रस्याज्ञानुसारेण
 मतिचन्द्रकृतस्योत्तमचन्द्रस्य पोष्यपुत्रस्य विद्यमानतायामपि असी-
 प्रतिपाद्यस्य मतिचन्द्रस्यानुमतौ कस्यां मायाकोमराख्यायास्तद्वधने दानविक्र-
 यादिक्षमता असीयल्लमाख्यपत्रानुसारेणाप्यस्त्येव । असीशब्दप्रतिपाद्यस्य
 मतिचन्द्रस्यासीयल्लामाख्यपत्रलिखितनिबन्धहितस्य मर्यादानन्तरं तदनुम-
 तेरसम्भावितत्वेन मायाकोमराख्यायास्तद्वधने दानविक्रयादिक्षमतायामपि
 बाधकभावः, असीयल्लामाख्ये पत्रे उत्तमचन्द्रस्याज्ञानुसारेणोत्तमचन्द्रप्रति-
 पाद्यमतिचन्द्रं प्रत्येव लिखितत्वेनान्यं प्रति अलिखितत्वात् । एवं च सत्ये-
 तद्विवादे जैनशास्त्रानुसारेण पतिमर्यादानन्तरं पत्यनुमतिप्रन्तरेणापि पोष्य-
 पुत्रमह्याधिकारिण्यास्तस्यागकरक्षक्षमतापक्षायाः पतिमर्यादानन्तरं पति-
 वत् स्वाच्छन्द्येन कर्ममात्राधिकारिण्याः पतिमर्यादानन्तरं पतिकृतासीय-
 ल्लामाख्यपत्रलिखिताज्ञानुसारेणाकृतपोष्यपुत्रस्य पतिकृतस्यासीशब्दप्रति-
 पाद्यस्य मरणेन निस्तन्देहेन पतित्यक्तमुदायपनत्तामिन्धारचोत्तम-
 चन्द्रनादारस्य पत्न्या मायाकोमराख्यायाः आर्थिनोऽभियोगविषयीभूतधन-
 विषयकामियोगेनाभियुक्ताया मायायां षड्ललाटशब्दप्रतिपाद्यान्तर्गतद्विलाट-
 शब्दप्रतिपाद्यस्य पतित्यक्तधनानां मध्ये अत्यल्पस्य त्यागपूर्वकसमर्पण-
 स्यार्थिना सह विवाहनिवारणफलकस्यावशिष्टललाटचतुष्टयशब्दप्रतिपाद्य-
 संरक्षणफलकस्य च क्षमताया निष्प्रत्यूहत्वात्—इति गौतमप्रदीपिकादिजै-
 नशास्त्रानुसारिणी व्यवस्था । अत्र प्रमाणानि अस्मद्दत्तप्राचीनव्यवस्था-
 लिखितानि सर्व्याण्येवेति ।

एतदन्दीयजूनमासीयषड्विंशतिदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२—रोवकारि मिछिल शदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिफिस पीयेर शाहेवेर बैठके ओयाक्के तारिख १६ माह आपरेल इं शन १८३२ साल मोतावक ८ बैशाख याङ्गला सन १२३६ साल रोज गृहस्पतिवार ।—

राधाचरणवर्णिक

छापल

१० छापल हाजीर आइल । छापलेर सओयाल इं सन १८३१ सालेर ५ शेतम्बर तारिखेर लिखित । एलाका जाहागिर नगरेर फोर्ट आपलेर हाकिम फेरिकेरापट् साहेवेर हुकुम । जाहाते छापलेर दावि डिसमिश हइयाछे । आ ये सनेर ७ दिजेम्बर तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम जाहा मोफशीरतरत् सदर आपलेर दरखास्त नामञ्जूर हय, ताहार एवं अन्य अन्य भरातवेर नाराजीते छापलेर सओयालेर सामील व्यवस्थाजातेर अनुमोदने ओ आधिरवक मते एइ आदालतेर पण्डीतेर व्यवस्था तलवे सावेक नामञ्जूर हओया सओयालेर छानि वजविलेर प्रार्थनाय एलाका जाहागिर नगरेर फोर्ट आपलेर दस्तखत ओ मोहरे वाङ्गला एवारतेर चारि फेता नकल व्यवस्था ओ सन १८३१ साल ५ शेतम्बर तारिकेर लिखित फोर्ट मजकुरेर एक वेता फयदला सम्बलित, जाहा एइ मासेर १२ तारिखे दखिल हइयाछिल, अनुमोदने आइल । हुकुम हइल ये सन १८३१ सालेर ५ शेतम्बर तारिखेर लिखित फोर्ट मजकुरेर फयदला माय नकल व्यवस्था, ये फोर्टेर फयदला ताहार बुनि-

यादे हइयाछे, एइ आदालतेर पखिहतेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय-जे पखिहत मौसुक एइ विशथेर जवाव एक सप्ताह मध्ये लिखेन—ये व्यवस्था भजकुर दोरस्त बटे कि ना इति ।—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुवहेनरीसिकिसपीयरसाहेबधर्माधिकरण -
लिखितैतद्वन्दीयापरेलमासीयोनिविंशतितमदिषसीयविचारपत्रानागतप्रश्नप्र -
तिरूपपत्रमेयं तत्समर्पितजाहाङ्गीरनगरसम्बन्धिकोटोपोलाख्यधर्माधिकरणीय-
जयपत्रं व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रसहितञ्च यदेतद्वन्दीयमैमासीयपञ्चमदिनसम्ब-
न्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ॥

अर्थिनो मातामही यदि स्वसंस्तपतिस्थावरदिधनस्य स्वभरणपोष-
णार्थं पतिकृतर्णापाकरणार्थं वा पत्सुरौर्ध्वदैहिकक्रियाद्यावश्यककार्यार्थं वा
हस्तान्तरं कृतवती स्यात्तदा प्रभुसमर्पितव्यवस्था शास्त्रसम्मतता भवति नोचे
दर्थिनोऽप्राप्तव्यवहारतायां हस्तान्तरपत्रे सलित्वेन पितृकृतृकृतनामलिखनेन
प्रतिनिधित्वेन पितृकृतृकस्वनामलिखनमात्रेण च शास्त्रसम्मतता न भवति,
पुत्रपौत्रप्रगौररहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते
वति तस्याश्च वर्तनाय एतानुपरिलिखितावश्यककार्यार्थं तत्तत्कार्यो
पयुक्तस्य पतिधनस्य हस्तान्तरकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वात् तदव्यतिरेकेण
हस्तान्तरकरणक्षमताया अशास्त्रीयत्वान्च—इति बह्मदेशचलितशयभाग-
दायतत्त्व दायमागटीका-दायक्रमसंग्रह-विवादार्णवसेतुविवादमङ्गार्यवादिग्रन्था-
नुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागदिग्रन्थभृतयाचवल्क्य-
वचनम् ॥१॥

वर्तनाशक्तावाधानमप्यनुमतं तत्राप्यशक्ती विकथयामपि—इति दाय-
भागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मर्तुकामेन वा मर्त्री उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रपत्तापि सा दाप्या घनं यद्यश्रितं सियाः ॥—इति विवादार्थ-
सेतुविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥३॥

रिक्त्यग्राही ऋणं दाप्यः—इति तत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

एवञ्च मर्तुरोर्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतम्—इति
दायभाग (पृ० १७३) ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

अपुत्रा शयनं मर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुजीतामरणात् सान्ता दायादा उर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभाग-
दिग्रन्थधृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥६॥

एतद्वद्वयजूनमासीयाश्च विरहितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवाक्ये मयेयं
न्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३—रोषकारि मिथिल सदर देशोयानि आदालत मो०
फलिकाता आदालत मञ्जुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस
पीयर साहेबेर बैठके ओयाके तारिक ६ माह माइ इ सन १८३२
साल मोतावक २८ वैशाख वादना सन १२३६ साल रोज
बुधवार ॥

आनन्दमोहनघोष—

मोशम्माद हरिप्रिया—

आपीलाष्ट

रण्याष्ट

आपिलाष्टेर सकल सदासुख परिडत हाजिर आइल । इं
सन १८२६ सालेर ६ शेतम्बर तारिखेर लिखित एलाका मुरसि-
दायादेर प्राविणसियान कोर्टेर फयरालार नाराजी ओजुहात
सम्बलित आपीलाष्टेर सओयाल सन हालेर १६ आपरेल

तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम मोतावक जाहा कोर्ट मजकुरेर सारटफिकिट माय आपीलाष्टेर सदर आपिलेर सओयाल अनु-मोदनानुसारे आपीलाष्टेर खोद किम्वा उकिलेर द्वाराय हाजिर आइशन, ओ ओजुहात दाखिलकरण जन्य आपीलाष्टेर नामे एतलानामा जारिर हुकुम छदेर हइयाछिल । उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ एइ आदालतेर तहविलदारेर दस्तखति उकिल मजकुरेर मेहन्यतआनार वावत भवलगो ३२५६ टाकार एक केता रशीद सम्बलित, जाहा ऐ माइ माहार २ तारिखे दाखिल हइयाछिल, सन हालेर १६ आपरेलेर अनु-मोदन हओया माय सारटफिकिट ओ गयरइ वरपेइ हइल । तत्परे आपीलाष्टेर उकिल एक केता हेवानामा बाङ्गला एवारतेर २ ठुइ टाका किम्मेतेर फिरिस्ती सम्बलित दाखिल करिल । दरियात हइल ये आपीलाष्ट एइ मोकईमार जामिनि खरचा कालीफान्तराय जमिनदारेर नामे कोर्टे दाखिल करियाछे । एवं ताहा तथाकार नाजीरेर तहकीकाते मातबर आसियाछे । ए प्रयुक्त प्रकाप ये आपीलाष्ट आपीलेर सामुदाइक सरापत बजाय आनियाछे, एवं एइ मोकईमा प्रीविशसीयान कोटेर प्रथम तज-विज हओया सदर आपीलेर जोग्य । एजन्य हुकुम हइल ये एइ मोकईमार शदर आपील मज्जूर एवं लम्बले दाखिल हय । तत्परे कोटेर फयछला ओ मौजेबात ओ आशत हेवानामा पढा-गेल । हुकुम हइल ये नकल फयछला ओजुहात सम्बलित ओ हे-वानामा एइ आदालतेर पण्डतेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये पण्डत मौदफ फयछलार लिखित हेवानामा मजकुरेर विषय सकलेर अनुमोदने एइ विशयेर जओयाव लिखेन जे हेवा-नामा मजकुरेर मोतावक मुदई या रेण्पाडष्ट आपन स्वामीर हिस्यार हफदार हय कि, किम्वा नाकालगी हालते उद्धार स्वामीर मातार साक्षातकार उद्धार स्वामीर मृतु हओोन सरचे आपी-लाष्टेर ओजुहातेर लिखित ओजरातेर अनुमोदने लोप हइयाछे

किंन इति । पण्डितेर सञ्चोयाव पौद्धार पर इङ्गरेजी सन १८३१
सालेर ६ आइनेर २ दोशरा दफार मोतावक मोनछेव हुकुम
छादेर हइवेक इति ॥—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुवदेनरोसिकिस्पोयरसाहेवधर्माधिकरण-
लिखितैतद्वर्माधिकरणमसौयनवमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं
तत्समर्पितं मुरशीदाबादाख्यनगरसम्बन्धिकोटरीलाख्यधर्माधिकरणीयज्ञ-
यपत्रप्रतिरूपपत्रमुज्जुहातसहकनिवेदनपत्रसहितं दानपत्रञ्च यत्तन्मासीरैकविंश-
तितमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तद-
नुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रमुसमर्पितदानपत्रानुसारेणार्थिनी अर्थादेतद्वर्माधिकरणप्रत्यर्थिनी
स्वपतिपोगराशस्याधिकारिणी भवति । मातरि जीवन्त्यामप्राप्तव्यवहारता-
वस्थायां चैतद्वर्माधिकरणप्रत्यर्थिनी पतिमरणेनैतद्वर्माधिकरणाय्युज्जुहात-
सहकनिवेदनपत्रलिखितान्तर्दृष्ट्या चार्थिन्याः स्वत्वलोपो भवितु न
शक्नोति, यतो दानपत्रे दात्रा स्वपुत्रो प्रति लिखितमस्ति स्वस्वत्वात्सदीभूत-
समुदायधनं पत्रजातसहितं स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण प्रसक्ततया स्वाभारिक-
बुद्ध्या रोगरहितेन स्वस्वत्वस्थागपूर्वकं दानं कृत्वा दानपत्रं लिखित्वा
युवाभ्यां मया दत्तम्, युवां सराजकरस्थावरस्थावरात्मकमत्सोदाजित-
समुदायधनमायसीकृत्य तुल्याशित्वेन भोगं कुदताम्, तत्र मया सह ममान्यै-
श्चोत्तराधिकारिभिः सह वा किञ्चित् सम्बन्धो नास्तीति । अनेनैव दानस्य
सर्वतोभावेन शास्त्रानुसारेण निष्पन्नत्वेनैतादृशदानोत्तरक्षणमेव दानप्रही-
नोरानन्दमोहनचोदस्याममोहनघोषाख्ययोर्दत्तपुत्रयोर्दानकृत्तव्ये । समस्वा-
मित्वस्योदगादेन तयोर्दानप्रहीनोर्धर्म्ये श्याममोहनचोपस्थ मरणेन तद्व्यो-
ग्यांशे सदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारः । सदुत्तराधिकारिणां मध्ये तस्य
पुत्रपौत्रपौत्राभावे तत्तल्लश अर्थादेतद्वर्माधिकरणप्रत्यर्थिन्याः प्रवर्णा-
धिकारित्वात् । श्रुते पितरि जीवन्त्यां च मातर्यप्राप्तव्यवहारतावस्थायाञ्च
कश्चिन्मरणेन सदुत्तराधिकारिणां तत्पक्षधने स्वत्वलोपो भवति इत्येत-

दिवापकशास्त्राभावाच्च । अथपि दानपत्रे स्वपुत्रौ प्रति लिखितमस्ति दात्रा युवामप्राप्तव्यवहारौ इदानीं सराजकरस्थावरास्थावरधने आयेत्तत्त्वं सम्पाद्य रक्षणावेक्षणकरणस्य योग्यौ न जातौ, अतः कारणात्मम पत्नी युवयो-
र्माता श्रीमतीसरस्वतीदासी सराजकरस्थावरास्थावरादिधनस्य रक्षणावे-
क्षणादिकरणपूर्वकं युवयोः प्रतिपालनार्थं मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यकार्यं नि-
युक्ता मया । युवयोः प्राप्तव्यवहारताप्यन्तं सराजकरस्थावरे मोक्त्यारीशब्द-
प्रतिपाद्यत्वेन सा मम पत्नी स्वनाम निवेश्य राजकरं दत्त्वा तदुपस्वत्वे जङ्गम-
धने च मोक्त्यारीशब्दप्रतिपाद्यं कार्यं कृत्वा युवयोः प्रतिपालनं रक्षणावे-
क्षणादितरयोपतशब्दप्रतिपाद्यं कार्यं करिष्यति । युवां प्राप्तव्यवहारत्वेन
निधनौ सराजकरस्थावरसमुदाये स्वस्वनाम निवेश्यैवं जङ्गमधने चायत्तत्वं
संपाद्य पुत्रपौत्रादिक्रमेण परमसुखेन भोगं कुर्वताम्, दानधिकपयोः स्वत्वा-
धिकारो युवयोः । मया सह तत्र कश्चित् सम्बन्धो नास्तीति लिखनेन मोक्त्या-
रीशब्दप्रतिपाद्यकार्यंनियुक्तत्वेन ज्ञातायामेतद्वर्माधिकरणार्थं जुहातसं-
ज्ञकनिवेदनपत्रेण प्रमुसमर्पितजयपत्रलिखितेतद्वर्माधिकरणार्थमुत्तरपत्रेण
चासीशब्दप्रतिपाद्यकार्यंनियुक्तत्वेन च ज्ञातायां मातरि जीवन्त्या मृतस्या-
प्राप्तव्यवहारपुत्रस्य तादृशोपरिलिखितप्रक्षरकदानानुसारेण मृते पितरि
जीवतः पुत्रत्वेन चोत्पन्नस्वत्पस्योत्तराधिकारिणां स्वत्वांतरत्तेप्रतिबन्धकत्वा-
त्तल्लिखनस्य इति यद्देशचलितमनुदायभागशुद्धितत्पदायतत्वदायभाग-
टाकाविवादाद्यवसेतुविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ मातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थपृथगाह-लक्ष्यवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

वस्तुतस्तु प्रदानं स्वाम्यकारणमिति मनूस्तेर्दानमात्रात् सम्प्रदानस्य
तद्विषयकज्ञानाभावाद्दशायामपि स्वत्वमुत्पद्यते पितुः स्वत्वोपरमात्तद्धने
गर्भस्थारयेव—इति शुद्धितत्त्वग्रन्थलिखनम् ॥३॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य
द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥४॥

पूर्वस्यामिस्तत्तन्निवृत्तिरेस्वामिस्तत्तोत्तत्तिफलकत्यागत्येन रूपेण
त्यागशक्तस्य दाघातोः—इत्यादि दाघभागटीकालिखनम् ॥५॥

प्रथम पुत्रस्तदभावे पीत्रस्तदभावे प्रपीत्रः—इति दाघभागटीका-
लिखनञ्चेति ॥६॥

एतदन्वीयतुलाइमासीयपञ्चमदिनतन्मन्विबृहस्पतिवासरे मयेयं व्य-
वस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीर्वचनायमिश्रेण

३११८ लं—

४—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानि सदर मोकाम
कलिकाता तारिख २१ जुन सन १८३२ साल मोवावके घाहला
६ आपाढ सन १२३६ साल दिवस बुहस्पतिवार श्रीयुत रिचार्ड
ओयालपोल साहेवेर बैठके ॥

पञ्चमलालसिंह ओगयरह
शिवरामसिंह

आपीलाएटान्
रेप्पाडेएट

आपीलाएटानेर ठकिल मुनसि होसन आलि ओ रेप्पाडेएटर
ठकिल मुनसि गोताम वतुल ओ सदासुख पण्डित ओ इन्द्र-
कुमारिर ठकिल मुनशि बु आलि हाजिर हइल । तबतिव मते
एइ मकईमा गतो भाइ मासेर ३१ तारिखे ओ गतो दिवसे
आमार बैठके उपस्थित हइया नालिसेर आरजि प्रभृति प्रविन्-
सीयान ओटेर कागच पत्रादि एवं तथाकार फयेसला पर्यन्त
पढा हइया दिवसावसान प्रयुक्त स्वकित छिल, अद्य पुनराय
उपस्थित हइया ए आदालतेर दाखिल हओया अजुहात ओ
जओयाव आर इन्द्रकुमारिर दरखास्त प्रभृति कागज पत्र
पढागेत । तत्परे रेप्पाडेएटर ठकिलगण सन १८१४ सालेर
दिजम्बर मासेर १६ तारिखेर लिखित ए आदालतेर डिगारि

एक केता ओ सन १८१३ सालेर आगष्ट मासेर १४ तारिखेर कालेकट्टरि परओयानार नकल २ टाका दामेर फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करिलेक, पढागेल । ताहार पर उभयेर उकिलदिगके जिज्ञासा गेल ये सन १२१८ साले जयरामसिंहेर मृत्यु हय, तखन ताहार कि बयेस छिल । रेप्पाडेण्टर उकिलगण जओयाव दिल ये उक्त जयरामेर बयेस २५ वत्सर, आर आपिलाण्टगणेर उकिल आर आपिलाण्ट पञ्चमलालसिंह, (ये) हजुरे हाजिर छिल, जओयाव दिलेक ये ४०१४५ वत्सर बयक्रमे मृत्यु हय । पुनुराय उभयेर उकिलदिगके जिज्ञासा गेल जे पक्षणे रेप्पाडेण्टर बयेस कतो वत्सर । रेप्पाडेण्टर उकिलगण जओयाव दिलेक ये रेप्पाडेण्टर बयेस एदयने आन्दाजि ४२ वत्सर ओ आपिलाण्ट जओयाव दिल ये प्राय ५० वत्सर हइवेक । पुनुराय आपिलाण्टके जिज्ञासा गेल ये जयरामसिंह हइते रेप्पाडेण्ट कतो वत्सरेर छोट हइवेक । जओयाव दिल ये ५१६ वत्सरेर इति । कागज पत्रेर द्वाराय बोध हइल ये रेप्पाडेण्ट विरधीय वस्तु दखल पाओनेर दुइ प्रकार दाखि राखे :—प्रथम एइये खोसालसिंहेर सूपार्जित विरधीय वस्तु जयरामसिंहेर नामे लेखात्राय । खोसालसिंह ताहार कर्ता ओ दखलिकार छिल । खोसालसिंहेर मृत्युर पर जयरामसिंहेर सहदर भाइ शिवरामसिंह रेप्पाडेण्टर दखले आछे, द्वितीय एइये यद्यपि विरधीय वस्तु जयरामसिंहेर त्यक्त हय, तबे जयरामसिंहेर मृत्युर पर आर ताहार वनिता मानकुडारि, ये ताहार एक कन्या, ऐ मानकुडारि ओ खोसालसिंहेर सद्याते, ओ जयरामसिंहेर द्वितीय कन्या खोसालसिंहेर साद्याते गुन सन्तान ना राखिया मृत्यु हय, शिवरामसिंहके अर्थ । एगते ए मकईमाय खोसालसिंहेर जयरामसिंह ओ रेप्पाडेण्टके हेवानामा लिजिया देओयार प्रति दृष्टि ना करिया एइ कथा जिज्ञासा करा ए आदालतेर पण्डितेर निकट उचित हइल-ये जयरामसिंहेर त्यक्त

वस्तु मानकुडारिर मृत्युर पर रेप्पाडेण्डर पिता खोसालसिंह ओ रेप्पाडेण्डके अथवा दयामयीर कन्या इन्द्रकुडारिके, ये आपन माता मानकुडारिर साक्ष्याते मृत्यु दय, ताहाके अर्शियेक । आर यदि स्यान् मसम्मात मानकुडारिर लिखिया देओया हेवानामा आदालतेर प्रासस्नानुमारे ताहा प्रमाण ना हओन प्रयुक्त ग्राह्य दय ना, किन्तु मृत दयामयीर स्वामी आपीलाण्ट पञ्चमलालसिंहेर ओजर मिटाइवार कारण, ए-मत हेवानामा यथार्थेर विशये शाखेर आज्ञा मते जिज्ञासा करा आविश्यक हइया हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एह हुकुमे ये निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाव रोवकारि सोपर्दे हओनेर तारिख हइते दुइ दिवसेर मध्ये लेखेन-ए आदालतेर परिडतेर हाओला कराजाय ।

प्रथम सओयाल—एइये विवादि ओ जमिदारिर कर्त्ता जयरामसिंह एक धनिता मानकुमारी ओ दुइ कन्या दयामयी ओ पार्वती ओ पिता खोसालसिंह ओ एक भाइ रेप्पाडेण्ड शिवरामसिंह (कि) राखिया मृत्यु दय । तत्परे दयामयी एक कन्या इन्द्रकुडारि नामे राखिया मृत्यु दय । ओ दयामयीर मृत्युर पर मानकुडारि आर मानकुडारिर मृत्युर पर पार्वती निःसन्ताना मृत्यु दय, ओ पार्वतीर पर खोसालसिंहेर मृत्यु दय । अतएव वक्त जमिदारि वाङ्मला मुलकेर चलित शास्त्रानुसारे शिवरामसिंहके अथवा दयामयीर कन्या इन्द्रकुमारि, ये मानकुडारिर-साक्ष्याते मरियाछे, ताहार कन्या इन्द्रकुमारिके पाँछे । आर यदि स्यात् मसम्मात पार्वती एक कन्या राखिया मरिया थाके, से कन्यार ओ खोसालसिंहेर मृत्युर पर मृत्यु दय, इहाते विशेषत किछु प्रभेद आछे कि ना ।

२—सओयाल—एइये खोसालसिंहेर ओ शिवरामसिंहेर वर्त्तमाने जयरामसिंहेर त्यक्त वस्तुर दान ओ हेवार अधिकार मुसम्मात मानकुडारिके आछे कि ना इति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतदधर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरिचार्डओआलपोलसाहेवधर्माधिकर-
णालिखितैतदन्दीयजूनमासीयैकविंशतितमदिवसोयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रति-
रूपपत्रं यदेतदन्दीयजुलाइमासीयनवमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

विवादास्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य स्वामी जयरामसिंहो यदि मानकुमा-
रीनाम्नीं पत्नीमेकां दयामयीपार्वतीनाम्न्यौ द्वे कन्ये लोसालसिंहनामानं पितरं
भ्रातरं चैकं शिवरामसिंहनामानमेवधर्माधिकरणप्रत्यर्थिनं संरक्ष्य मृतः
स्यात्, तदनन्तरं दयामयीनाम्नो जयरामसिंहस्य कन्यापीन्द्रकुमारीनाम्नीं
कन्यामेकां संरक्ष्य मृता स्यात्, एवं दयामयीमरणानन्तरं मानकुमारी मान-
कुम(१)रीमरणानन्तरं निःसन्ताना पार्वती मृता स्यात्, एवं पार्वतीमरणा-
नन्तरं लोसालसिंहोऽपि मृतः स्यात् तदा जयरामसिंहस्यसराजकरस्थावरे
तद्भ्रातुः शिवरामसिंहस्याधिकारः, एवं यदि पार्वती एकां कन्यां संरक्ष्य
मृता स्यात् सापि कन्या लोसालसिंहस्य मरणानन्तरं मृता स्यात्तदात्र
शास्त्रानुकायाः कश्चिद् विशेषो नास्तीति ।

अथ प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तरसुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाशवल्लभ्ययचनम् ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

लोसालसिंहस्य शिवरामसिंहस्य च विद्यमानतायां जयरामसिंहस्य पत्न्या
मानकुमार्याः स्वसंक्रान्तपतित्यक्तधनानाम्मन्ये पत्युः स्वर्गार्थं किञ्चिदन-
स्यापन्नवारणार्थं उक्तपयुक्तस्य च दानाधिकारितास्ति, तद्व्यतिरेकेण
स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण च दानाधिकारिता नास्ति-इति वज्रदेवचलितदाय-
भागदायतत्त्वदायभागीकृदायनिर्णयदायरहस्यनारदस्मृतिव्यवहारतत्त्वव्यव-
स्थाएवविवादार्यवसेतुविवादमङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रधने पौत्रप्रपीत्राभावे साध्याः पत्न्या अधिकारस्तत्रापि भर्तु-
स्वर्गमुद्दिश्य दाने यथाकथञ्चिच्छरीररक्षार्थं मक्षणे चाधिकारः । एतदति-
रिक्तयथेष्टाचरणे स्थावरविक्रयादौ च नाधिकारः—इति व्यवस्थार्णव-
ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

स्त्रीरृतान्यप्रमाणानि कार्य्याख्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाद्यमनविक्रयाः ॥—इति दायरहस्यनारदस्मृत्या-
दिग्रन्थभृतनारदवचनम् ॥२॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥ इति दायभागादि-
ग्रन्थभृतकात्यायनवचनञ्चेति ॥३॥

एतदब्दीयजुलाहमाद्योत्ततदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेय व्यवस्था
दत्तेति ॥—

श्रीज्जपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

५—रोवकारि मिसिल आदालते देओयानि सदर मोकाम
कलिकाता तारिख १६ जुन सन १८३२ साल मोतावके बाहला
तारिख ७ आपाढ १२३६ साल दिवस मङ्गलवार श्रीयुत रिचार्ड
ओयालपोल साहेबेर बैठके—

मृत दुर्गादासेर श्री मसम्मात प्रह्लमयिदेव्या साएला—

गतो माइ मासेर १७ तारिखेर लिखित सहर कलिकातार
हाथोयालि जेलार एक केता रिटरनेर सम्बलित तथाकार
रोवकारि एक केता ओ असियतनामा पौखिवाय । अद्य साएलेर
दरखास्त ओ ईशानचन्द्र ओ गयरहर दरखास्त ओ हरिप्रियार
चकिल सदामुखपरिहृत ओ राजचन्द्रेर चकिल मुनसि होसन
आलिर हाजिरिते पढागेल । तत्परे राजचन्द्रेर चकिल सादा

कागजे याजे पण्डितेर एक केता व्यवस्था गोजराइल, पढागेत । वोध हइलो ये त्यक्त वस्तु कर्त्ता गोकुलचन्द्रघोसालेर दुइ वनिता छिल । ताहार बढ तारिणी, छोट राजेश्वरी । तारिणीर गर्भे दुइ पुत्र, हरिनारायण ओ लक्ष्मीनारायण, ओ एक कन्या आनन्दमयी, आर राजेश्वरीर गर्भे दुइ पुत्र रामनारायण ओ गङ्गानारायण, ओ तीन कन्या कुङ्कारिदेव्या ओ गङ्गादेव्या ओ दयामयि । मसम्मात तारिणी सन १९८० साले, आर हरिनारायण सन १९८७ साले आपन स्त्री मसम्मात पार्वतीके राखिया, ओ लक्ष्मीनारायण सन १९०४ साले आपन स्त्री मसम्मात हेमलताके राखिया, ओ रामनारायण सन १९०९ साले आपन स्त्री मसम्मात हरिप्रियाके राखिया, ओ गङ्गानारायण अप्राप्त वयसे, ओ अविभाहे, ओ दयामयि निःसन्ताना मृत्यु हइल । हेमलतार दोहित्र नवचन्द्रचादुप्ये लक्ष्मीनारायणेर हिस्यार पर ओ हरिनारायणेर स्त्री पार्वतीर मृत्युर पर गोकुलचन्द्रेर दोहित्रगण आनन्दमयीर पुत्र ईशानचन्द्र प्रभृति, ओ गङ्गादेव्यार पुत्र दुर्गादास हरिनारायणेर हिस्यार पर, ओ हरिप्रिया रामनारायणेर हिस्यार पर बखलि-कार आछेन । आर गङ्गानारायणेर हिस्या उर्द्ध्वगामि हइया राजेश्वरीर दखले हइल । एदयने राजेश्वरी ओ कन्या कुङ्कारिदेव्यार सादयाते रामनारायणेर स्त्री हरिप्रियार सादयाते, ओ गङ्गादेव्यार पुत्र मृत दुर्गादासेर स्त्री ब्रह्ममयी, ये सन्तानाही किछु राखे ना, ताहार सादयाते, ओ आनन्दमयीर पुत्रगण ईशानचन्द्रदिगरेर सादयाते मृत्यु हइयाछे । ये हेतु चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्व उत्तराधिकारि प्रकारे उक्त व्यक्तिगणेर सत्वे शाखेर आद्या धातो हओन उचित हइल, कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे ये एइ विषयेर जओयाव, ये उक्त व्यक्तिगणेर मध्ये गङ्गानारायणेर त्यक्त वस्तु, याहा उर्द्ध्वगामि हइया ताहार भाता मसम्मात राजेश्व-

रीते अशियाछे, उत्तराधिकारि ओ सत्वाधिकारि के बटे,
आर ^१ गोकुलचन्द्रेर ओ मसम्मात राजेश्वरिर पार्वणेर
आद्ध ओ पिरडदान करखे काहार चमता आछे, समाहेर मध्ये
लेखेन—ए आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्गमाधिकार्याधिपतिभोतुरिचादं प्रोआलपोलसादेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयज्ञमासीयोनविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्र-
तिरूपपत्रं यदेतदन्दीयजुलाइमासीयनवमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं
सदयलोभ्य यादराबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिखते ।

प्रमुखमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य ^१ गङ्गानारायणस्य क-
धनस्योत्तराधिकारित्वेन सम्प्रानृराजेश्वरीसम्मान्तस्थाधिकारिणस्तद्विचारपत्र-
लिखितानां मध्ये ईशानचन्द्रप्रभूतपत्तितृदोहित्रा एव भवन्ति । एवं
विवादासरदीभूतधनाधिकारप्रयोगकगोकुलचन्द्रसम्प्रदानकराव्यंणभाद्रपिरड-
दानाधिकारितापीशानचन्द्रप्रभूवीनां तद्विचारणामेवास्ति । राजे-
श्वर्याः पृथक्पृथक्भाद्रपिरडदानाधिकारिता तद्विचारपत्रलिखितानां
मध्ये कदापि नास्ति, उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तधनायाः जिया मरणानन्तरं
तदन्तेतराधिकार्यधिकारप्रयोगकसम्प्रदानकरूप्यरूपाव्यंणभाद्रपिरडदान-
स्याभावात्—इति बहुदेशचलितमनुदायभागदायभागदीकादायतत्त्वदाय-
क्रमसम्प्रदायनिर्णयदायरहस्यशुद्धितत्त्वभाद्रतत्त्वव्यवस्थार्थविवादाव्यवसेतु-
विवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदोहित्रस्याधिकारो बाह्व्यो धनिदोहि-
त्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ १ ॥

प्रयाणामुदकं कार्यं त्रिपु पिरडः प्रवर्तते—इति मनुवचनम् ॥ २ ॥

न योपिदम्यः पृथग्दद्यादवसानदिनाहते—इति आद्रतत्त्वादिग्रन्थ-
भूतमुनिवचन चेति ॥ ३ ॥

एतद्बन्दीपञ्चाद्विंशतितमदिनसम्बन्धिनिवासरे मयेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्नपत्र—

६—यद्यपि कोनो व्यक्ति सन्तान सन्तति ना धाकाय आपन
परकालेर निमित्तक अन्तिमकाले बुझ भग्नि ओ भागिना
धाफिले ओ आपन पैतृक समुदाय वस्तु आपन शुरुके वाचनिक
दान करे, आर ऐ व्यक्ति मृत्युर परे ताहार अधिरा ओ
स्वामीर अनुमतिक्रमे ऐ स्वामीर मृत्युर ११ एगार बत्सर
गते दानपत्र लिखिया दैय—ए प्रकार दान शास्त्र सम्मत सिद्ध
घटे कि ना, आर ऐ मृत व्यक्ति वस्तुते भग्निरा उत्तराधि कारिणो
ओ हकदार हइते पारे कि ना, एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर यथाशास्त्र
दानपत्र दृष्ट करिया लिखिवेन—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्पितप्रश्नपत्रं दानपत्रञ्च यदङ्गरेवीशब्दप्रतिपाद्यद्वाविंशदधि-
काष्टादशशताब्दीवापरेलमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि केनचिद् व्यक्तिविशेषेण सन्तानाभावेन स्वकीयपरकालार्थं स्वाय-
मानधर्मये विद्यमानयोर्द्वयोर्मगिन्योर्विद्यमाने च भागिनेये स्वपैतृकसमुदायधर्म
स्वगुरुष्वे वाचा दत्तं स्यादेवं तस्यैव निःसन्तानव्यक्तिविशेषस्य परम्यानन्तरं
तस्यावीरया पत्न्या स्वपत्यनुमत्यनुसारेण स्वपतिमरणदिवसादारभ्यैकादश-
संवत्सरे गते एति दानपत्रं लिखित्वा दत्तं स्याच्छेतादृशदानं शास्त्रानुसारेण
सिद्ध्यति, स्वाम्यनुपत्या अस्वामिकृतस्यापि दानादेः सम्प्रदानादित्यत्वोत्पत्ति-
हेतुभूतस्य सिद्धेः शास्त्रोपत्तेन घनस्वामिपत्यनुमत्यानपत्यपतिमरणानन्तरं

प्रधानोत्तराधिकार्यवीरपत्नीलिखितदानपत्रप्रमाणस्य पतिवृत्तधर्मार्थदानस्य सिद्धौ बाधकसामान्याभावात्, धर्मार्थदानं यदि केनचित् स्वस्थेनात्तैर्न वा कृतं श्रावितं वा, अदत्त्वेव मृतश्चेत्तथापि तद्धनं सदुत्तराधिकारिणो राजा-
दापनीया इति विरोपतो लिखितत्वाच्च । एवं दानसिद्धौ सत्यां तस्यैव मृतव्यक्तिविशेषस्य भगिन्यस्तद्धने उत्तराधिकारिण्यो भवितुं न शक्नुवन्ति, तद्दानोत्तरवृत्तमेव धनिनो दातुस्तद्धने स्वत्वविच्छेदेन सम्प्रदानस्य स्वत्वो-
त्पादेन च धनिन उत्तराधिकारिणां स्वत्वोरत्तरसम्भवात्—इति घट्टदेशच-
लितमनुस्मृतिशाश्वत्कथस्मृतिदायभागदायभागटोकादायतत्त्वशुद्धितत्त्वदाय-
क्रमसंप्रद्विवादाद्यर्थवसैतुविवादमङ्गार्यावादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

स्वभागान् यदि ददयुस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुप्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-

धृतनारदवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाग्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

स्वस्थेनात्तैर्न वा दत्तं श्रावितं धर्मकारणात् ।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥—इति विवादमङ्गार्य-
वादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥३॥

तथा च स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्थामिकृतविक्रयोपि सिद्धयति
व्यवहारस्तथा—इति विवादमङ्गार्यवग्रन्थलिलानम् ॥४॥

प्रमाणं लिखितं मुक्तिः साक्षिणश्चेति कीर्तितम्—इति याज्ञवल्क्य-
स्मृत्यादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥६॥

वस्तुतस्तु प्रदानं स्वाग्यकारणमिति मनुवक्तेर्दानमात्रात् सम्प्रदा-
नस्य तद्विषयकज्ञानाभावदशायामपि स्वत्वमूत्पद्यते पितुः स्वत्वोपरमा-
प्त्यने गमस्यस्येव—इति शुद्धितत्त्वग्रन्थलिखनम् ॥७॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य
द्रव्ये स्यामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥८॥

पूर्वस्वामिस्वत्वनिवृत्तिपरस्वामिस्वत्वोत्पत्तिफलकत्यागत्वेन रूपेण
त्यागशक्तस्य दाघातोः—इत्यादि दायमागटीकालिखनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयजुलाइमासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेवं व्यवस्था
दत्तेति ॥—

श्रीजगन्मयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

७—सदर देओयानी आदालतेर पण्डितेर निकट सओयाल ।
३ आगस्त १८३२ साल ।

१—यद्यपि स्यात् कोन आसण जाति उदासीन अर्थात् बैरागी
संसारत्यागी हय, बिमहठाकुर स्थापन करिया थाके, ओ आपन
उदासीन अर्थात् संसारत्यागी बैरागी शिष्यगण वर्त्तमान धाकिते,
ओ आपन समुदय वस्तु रजपुत जाति एक व्यक्ति, ये ओ पुत्र
राखे, ओ संसारि हय, ओ ऐ उदासीनेर शिष्य हय, ताहाके हेवा
अर्थात् दानकरे । एमत दान शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना ।—

२—स्थावरास्थावर वस्तु विषये खयरान् अर्थात् उदासीन
व्यक्तिर दान संसारि कोन नांच जातीर हस्ते शास्त्रानुसारे सिद्ध-
बटे कि ना ?—

३—कोन उदासीन बैरागी, अर्थात् संसारत्यागी हइया
विग्रह स्थापन करिया आस्वाडाधारी हइया थाके, ओ उदासीन
संसारत्यागी घेला, अर्थात् शिष्यगण थाकनेओ यदि आपन
स्थावरास्थावर समस्त विषय रजपूत जाति न्यक्तिके, ये से
संसारि ओ ओ पुत्र राखे, एवं ऐ उदासीनेर शिष्य हय, एमते
ताहाके हेवा अर्थात् दानकरे, तवे ताहा शास्त्रानुसारे सिद्ध
बटे कि ना ।—

४—यदि कोन व्यक्ति सक्त पीडित हइया सुन्दर ज्ञान चैतन्य

ना थाके एतत् समये आपन सम्यक् स्थावरास्थावर वस्तु अन्य-
कोन व्यक्तिके हेवा अर्थात् दान करे ताहा शास्त्र सिद्ध बटे कि ना ?—

५—धैरागी उदासीन अर्थात् संसारत्यागी ओ ब्रजभूमि
निवासी ओ अवश्य ब्राह्मण जाति हइवेक । ओ आखाडाते
विग्रह स्थापन थाके कोन रजपूत, जाति ये से स्त्री पुत्र राखे, एवं
संसारि हय, से व्यक्ति हइते शास्त्रानुसारे विग्रहठाकुरेर पूजा
सेवा हइते पारे कि ना ?—

६—रजपूतजाति विग्रहठाकुर स्पर्श ओ पूजा करिते पारे
कि ना ?—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुममर्षिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयागस्ति-
मासीयतृतीयदिनलिखितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयचतुर्थदिन-
सम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशचोषो ज्ञातस्तदनुसारे-
णोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचिद् ब्राह्मणजातीयेनोदासीनेनापार्धैराग्यधर्मांशरणेन संसा-
रस्याग्निना देवप्रतिमां संस्थाप्योदासीनैष्वर्थात् संसारत्यागिषु धैरागिषु स्वकी-
यशिष्येषु विद्यमानेष्वपि स्वस्वशास्त्रदीभूतसमुदायधनं रजपूतजातीयादे-
कस्मै कस्मैचित् स्त्रीपुत्रवते संसारिणे स्वकीयशिष्याय च दत्त स्यात्तदैतादृश-
दान शास्त्रानुसारेण सिद्धयतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

स्वभागान् यदि दद्व्युस्ते निक्कीणीयुरयापि वा ।

कुर्युर्म्यथेष्टं तत्सर्वमीरास्ते स्वधनस्य वै—इति दायभागादिग्रन्थ-
धृतनारदवचनम् ॥२॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य
द्रव्ये रसामित्वम्—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

स्थावरास्थावरधनस्वाम्युदासीनव्यक्तिविशेषकृत् कसंसारिनीचनातिसम्प्रदानकदानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति शास्त्रे नोचनातिसम्प्रदानकदानस्य निषेधाभावात्—इति तृतीयप्रश्नस्योत्तरमपि प्रथमप्रश्नोत्तरेणैव पर्यवसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति—

अत्र प्रमाणानि प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणानि श्रीरघुदेवेति—

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचिदतिपीडितेन सम्बन्धान्नामैतन्वाभावदशायां स्वस्वत्वात्तदीभूतसमस्तस्थावरास्थावरधनमन्यसौ कसौचिदत्तं स्यात्तत्र तद्वानं यदि धर्मोक्तं स्यात्तदा सिद्ध्यति, तद्व्यतिरेकेण शास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति ।

अत्र प्रमाणम्—

स्वस्थेनात्तेन वा दत्तं धावितं धर्मकारणात् ॥

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो गात्र संशयः ॥—इति विवादभङ्गा-

र्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

अदत्तं तु भयक्रोधकामशोकहृगन्वितैः—इत्यादि विवादार्णवसेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

अदत्तन्तु भयक्रोधकामशोकहृगन्वितैः इत्यत्र भयाद्याः पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिना द्रष्टव्याः—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

कश्चिद्भूतभूमिनिवासी ब्राह्मणजातीयो वैराग्यधर्माचरणेनोदासीनो भवति अर्थात् संसारत्यागी भवति । तस्याखाढार्सनकस्थाने देवप्रतिमायाः स्थापनं भवति । केनचित्संसारिणा स्त्रीपुत्रपत्न्या रक्षपूतजातीयेन शास्त्रानुसारेण देवप्रतिमायाः (सेवा पूजा च भक्तिं न शक्नोति), ब्राह्मणद्वारा देवप्रतिमायाः पूजा सेवा च भक्तिं शक्नोतीति ॥

अत्र प्रमाणम्—

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च पृथिवीपते ।

स्वधर्मतत्परो विष्णुमाराधयति नान्यथा ॥—इति विष्णुपुराण-

वचनम् ॥१॥

सर्व्वयणैस्तु संपूज्याः प्रतिमाः सर्व्वदेवताः—इति वयदपुराण-
वचनम् ॥२॥

स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणां च पुनश्चर ।

स्पर्शने नाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वा शङ्करस्य च—इति स्कन्दपुराण-
वचनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

रक्षपूतजातीयेन देवप्रतिमास्थानं कर्त्तुं न शक्यते । देवप्रतिमापूजा
तु स्वयं कर्त्तुं न शक्यते । किन्तु ब्राह्मणद्वारा पूजां कारयितुं शक्यते—
इति मन्वादिधर्मशास्त्रानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाण्यानि पञ्चमप्रश्नोत्तरप्रमाण्यानि श्रोत्येवेति ।

एतदन्वीयागस्तिमासोवशोऽश्वदिनसम्बन्धिबृहस्पतिवासरे मयेयं व्यव-
स्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३२१८ ल०

८—रोवकारि मिहिल सदर देओयाणि आदालत मोकाम
फलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम थीयुत हेनरि सिफिस-
पीयेर साहेवेर बैठके । ओयाक्के तारिख ३० जुलाइ इज्जरेजी
सन १८३२ साल मोतावक बाझला सन १२३६ साल १६ श्रावण
रोज सोमवार ।—

पञ्चमलालसिंह ओ गन्धर्व्वेलाश

आरीलाएटान

शिवरामसिंह

रेफाडस्ट

आपीलाएटानेर वकिल मुनशी होसेन आलि ओ रेफाडस्टेर
वकिलान् मदासुख पण्डित ओ मुनशी गोलाम चतुज, इन्दर-

कोझारि र वकिल मुनशी तु आलि हाजिर आइल । एइ मोकद्मा एइ मासेर २३२४ तारिखे आमार बैठके दरपेप, आर तारिख मजकुराणे रोवकारि लिखित मत प्रथम आदालतेर कागजात पढा हइया, मुलतवि छिल, अथ पुनराय रोवकार आपीनेर मौजेवात ओ ताहार जओयाव एवं तत् समिभ्यारि अन्य २ कागजात एइ आदालतेर दाखिल हओया दुइ माकद्मार बावत अर्थात् एइ लम्बर ओ ३२२४ लम्बर, जाहाते एइ मोकद्मा रेण्वाडण्ट आपीलाण्ट ओ एइ मोकद्मार आपीलाण्टान् रेण्वाडण्टान् आछे, एइ मासेर १८ तारिखेर रोवकारि लिखित एइ आदालतेर हाकिम श्रियुत रिचार्ड ओयालपुल साहेबेर राय सम्बलित अनुमोदने आइल । ये हेतुक एइ मोकद्मार आपीलाण्टानेर ओजरात् निष्पत्येर अन्य आमार निकट एइ आदालतेर पण्डितेर पर छओयाल करा उचित हइल, एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल निचेर तफशोलेर लिखित छओयाल सम्बलित एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये ऐ पण्डित ताहार विस्तारित जओयाव लिखेन । यद्यपि स्यात् खोसालसिंह परिवर्त्तीय दान, ये मत आपीलाण्टान् जाहेर करितेछे, ताहा बाङ्गला सन १२१० साले आपन पुत्रगण जयराम ओ शिवराम दिगेर नामे लिखिया दिया थाके, आर तदनुजाइ जयराम आपन मृत्यु समय बाङ्गला सन १२१८ साल पर्यन्त हेवार वस्तु पर दखिलकार थाके, एवं तस्य खो मानकोझारि ताहार मृत्यु पर ऐ वस्तुते उत्तराधिकारि सुरते दखिलकार हय । एमते मानकोझारि चेमता स्वामीर वस्तु हस्तान्तर करणेर विशये पूर्व व्यवस्थाते ये प्रकार लेखा गयाछे ताहार किछु परिवर्त्त ओ सुधरण हइते पारे कि ना इति ॥

श्रीज्जेयतितराम

एतदभ्यापिकरणाधिपतिश्रियुतहेनरीविकिसपीयरसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेदन्दोयजुलाइमाधोयत्रिशत्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-

पत्रं यदेतदब्दीयागस्तिमासीयत्रयोदशदिनसम्प्रन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यद्यपि खोसालसिद्धेन बङ्गालाख्यदशाधिकद्वादशशतान्दे जयराम-
शिवरामाख्यस्वपुत्रद्वयसम्प्रदानकमेतद्वर्माधिकरणार्थमिन्द्रिष्टं विनिमय-
दानं कृतं स्यात्तदनुसारेण जयरामः स्वजीवनपर्यन्तमर्थाद्वङ्गालाख्याष्टादशा-
धिकद्वादशशताब्दपर्यन्तं दानकृतघने आयत्तत्वं सम्गदितवान् स्यादेवं
तस्य पत्नी मानकुमारी स्वरतिमरणानन्तरं पतित्यक्तघने उत्तराधिकारित्वेना-
यत्तत्वं सम्पादितवती स्यात्तदा मानकुमार्याः पतित्यक्तघनस्य हस्तान्तर-
करणक्षमताविषये पूर्वव्यवस्थायां यथा लिखितमस्ति, तस्य किञ्चिदपि
परावर्त्तनमन्यथा च न भविष्यति, यतो मानकुमार्याः पतित्यक्तघनस्य हस्ता-
न्तरकरणक्षमताविषये पूर्वव्यवस्थायां यथा लिखितं तथैतत्पर्यन्तलिखितपूर्वा-
न्ते सत्यपि शास्त्रानुसारेण कश्चिद्विरोधो नास्ति इति बङ्गदेशचलितदाय-
भागदायतत्त्वदायमागटीकादायनिर्णयदायरहस्यनारदस्मृतिव्यवहारतत्त्वव्यव-
स्थार्णवविवादाण्यवसेनुविवादमङ्गार्यादिप्रन्धानुसारिणी व्यवस्था । अत्र प्र-
माणान्येतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तपूर्वव्यवस्थालिखितानि सर्वाण्येवेति ॥—

एतदब्दीयागस्तिमासीयस्तविंशतितमदिनसम्प्रन्धिय सोमवासरे मयेयं
व्यवस्था दत्तेति ।—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

६—गोवर्कारि मिडिल सदर देओयानि आदाकृत मो०
कलिकाता आदालत भजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिफिस
पीयेर साहेबेर बैठके, ओयाक्के तारिख २७ माह जून २० सन
१२३२ साल, मोवाक वाङ्गला १५ आपाढ सन १२३६ साल
रोज बुधवार ॥—

दुर्जनसिंह ओ अर्जुनसिंह— आपीलाष्टान्
राउत गिरिधरसिंह ओ घनस्यामसिंह—
ओ चन्दरसिंह— रेप्पाडष्टान्

आपीलाष्टानेर उकिलान मुनशी होसन आलि ओ सदामुख पण्डित हाजिर आइल । जेला कानपुरे मोतालक उभयेर मीरुशी बाइय देहार मध्ये मौजे बाबतपुर ओ गयरह एगारो मौजे हिस्या करिया पाओनेर मोकर्द्दमार बाबते अन्य २ विषय सम्बलित ३५० टाका किर्म्मतेर दुइ बन्ध फागजे आपीलाष्टानेर सदर आपीलेर छओयाल वत् समिभ्यारि कागजात ओ शारदफिकिट सम्बलित अनुमोदन मते ६० सन १८३२ सालेर ५ जानेर तारिखे आपीलाष्टानेर नामे एतलानामा जारिर हुकुम ये एइ मोकर्द्दमार तजविज एलाइवादेर सदर आदालते, चाहे आर थद्यपि स्वात् आदालत मजकुरे तजविज ना चाहे, तिन भास मध्ये मौजेवात दाखिल करण जन्य बेरेलिर क्रोटेर हाकिमानेर नामे छादेर ह्य । ताहार जओ-यावे क्रोट मजकुरेर ऐ सनेर ५ आपरेलेर लिखित रिटरण ओ रोबकारि एतलानामा जारि हओन ओ ताहा आपीलाष्टानेर हातोer रशीद लिखिया देओन ओ हाजिर इइया नाराजीर मौजेवात दाखिल करणेer ओयादा सम्बलित माइ आपरेल मजकुरेर २६ तारिखे अनुमोदन हइया, तारिख मजकुरेर रोब-कारिर लिखित मत अन्य २ विषय सम्बलित शारदफिकिट ओ गयरह सेरेस्थाय राखनेर हुकुम छादेर हइया, तत्परे एइ मोकर्द्दमार तजविज एइ आदालते चाहनेर दुर्जनसिंहेर छओयाल दरपेस मते दुर्जन सिंह मजकुरेर गयेरहाजिर सरवे उक्त सनेर ३० माइ तारिखे हुकुम ह्य ये मुक्तवि थाके । ६० सन १८३१ सालेर २७ जुनेर लिखित एलाका बेरेलिर प्रीविनसीयान क्रोटेर फयल्ला आपीलाष्टानेर नाराजिर मौजेवात ओ उकीलान् मजकुरेर नामेर ओकालतनामा ओ

उकीलान् मजकुरानेर मेहन्यतआनार वावत मवलगे ४०७।३) टाकार एइ आदालतेर तहविलदारेर दस्तखति चकिल खरचार रशीद ओ कुडि टाका किर्मतेर फिरिस्ति, फिरिस्तीर लिखित दश केटा दस्तावेज सम्बलित यावा' एइ माह जुनेर २१ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अथ अनुमोदने आइल। तत परे आपीलाएटानेर चकिलानेर मध्ये सदासुखपण्डित एइ मोर्कईमार वावतेर क्रोटेर फयद्वला दुइ टाका किर्मतेर फिरिस्ति सम्बलित अथ दाखिल करिलेक। ज्ञातो हइया बोध हइल ये एइ मोर्कईमा प्रीबिनसीयान् क्रोटेर प्रथम तजविज हओया सदर आपीलेर योग्य, एवं खरचार जामिनदारेर दस्तखतेर एकरार ओ ताहार मातबरिर तहकीकात जेला कानपुरेर जज साहेबेर द्वाराय जेला मजकुरेर नाजीरेर मारफत आमले आसियाछे, एवं चकिलेर मेहन्यतआना एइ आदालतेर तहविले दाखिल हइयाछे। एजन्य प्रकाश ये आपीलाएटान् सदर आपीलेर शाम्बरू शराएत बजाय आनियाछे। ए प्रयुक्त हुकुम हइल ये आपीलाएटानेर सदर आपील मजूर एवं लम्वरे दाखिल हय। प्रबिनसीयान क्रोटेर फयद्वलाते प्रकाश, ये जेला ओ क्रोटेर परिदृष्टगण ये उद्धारदिगेर स्थाने व्यवस्था तजब हइया पितार जीवईशाय पितामहेर स्थावर वस्तु वीबिर पुत्रेर क्षेमतार विशय विभिन्नता वाक्यसकल आछे। एजन्य हुकुम हइल ये क्रोटेर फयद्वला मौजेवात सम्बलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये ए पण्डित जेला कानपुरेर प्रचलित शाखेर आछासकलेर अनुमोदने एइ विशयेर जओयाव व्यवस्था ये पितार जीवईशाय पितामहेर स्थावर वस्तु अंश करिया लओनेर हकदार पुत्र हइते पारे कि ना एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

एतद्द्रव्याधिकरणाधिपतिश्रीयुतदेनरीषिस्त्रिपीयरसाहेवधर्माधिकरणलि-
खितैतदन्दीयजुनमासीयसप्तविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नमतिरू-
पपत्रमेवं तत्संमर्षितैतद्विवादविषयनिविष्ट-ओजुहःतर्कशक्तिवेदनपत्रं फोटो-
पोलाख्यधर्माधिकरणोपजयपत्रञ्च यदेतदन्दीयजुताहमासीयसप्तदशदिनस-
म्बन्धितोमवाचरे मया प्राप्तं तद्व्यलोक्य यादृशबोधो आतस्तदनुसारे-
योत्तरं लिख्यते ॥—

जीवति पितरि पैतामहस्यायरधनस्यांशं कृत्वा ग्रहणस्याधिकारी पुत्रो
भवितुं न शक्नोति, जीवति पितरि पुत्राणां विभागकर्तृत्वाभावात् । यदि
पिता स्वपैतृकधनस्य विभागं कृत्वा पुत्रेभ्यो ददाति तदा तदग्रहणस्याधिकारी
पुत्रो भवितुं शक्नोति, जीवति पितरि पितुरेव विभागकर्तृत्वात्—इति कान-
पुरप्रदेशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयग्रन्थहारमाधयग्रन्थहारकौस्तुभग्र-
न्थहारमयूखमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अथ प्रमाणम्—

ऊर्ध्वं पितुश्च मानुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

मजेरन् पैतृकमृक्यमनीशास्ते हि जीवतोः ॥—इति मनुषच-
नम् ॥१॥

विभजेरन् सुताः पित्रोर्द्वयमृक्यमृणं समम्—इति मिताक्षरा-
वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतयासवल्लवचनम् ॥२॥

स्वातन्त्र्याहं पितरि जीवति तदिच्छे(यै)व विभागमिति तु पातित्यपारिग्र-
ज्यादिभिस्तदनहं पुत्रेच्छा(या)पि । तदुपरमे तु स्वेच्छाया निमित्तत्वमर्थसिद्ध-
मिति कालत्रयमेवानेन प्रकारेण—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखनम् ॥३॥

भ्रातृणां जीवतोः पित्रोः सहवासो विधीयते—इति वीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥४॥

जीवति पितरि पुत्राणामर्थादानविसर्गाक्षेपेषु न स्वातन्त्र्यम्—इति
वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृतहारीतवचनम् ॥५॥

जीवद्विभागे पितुः स्वातन्त्र्याद् अजीवद्विभागे पुत्राणां स्वातन्त्र्यात्—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

एतदन्दीयागस्तिमासीद्योनशिशुचमदिनसम्बन्धिषुषवास्तरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमित्रेण

१०—रोवकारि मिछिल मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलकसुन्दरराछसाहेवेर घेठके हओर तारिख सन १८३२ सालेर ३ सेतम्बर मोतावेक सन १२३६ सालेर २० भाद्र सोमवार ।

महाराजा गोविन्दचन्द्रराय
महाराणी कृष्णमणिदेव्या

आपीलाएट
रेष्पाडेएट

आपीलाएटेर एकिल सदासुकपरिबृत हाजिर आइल । आपीलाएटेर छओल एक हाजार टाका मूल्लयेर कागजेर पर सदर आपील मखुरिर प्रार्थनाय डिहिगञ्ज नाटोर ओ गायरह दखल पाइघार मोकहमाय मुयलगे आटानल्ये हाजार पाच शत एक टाका अष्ट आना पाँच कडा टाकार तायदादे एकिल मजकुर ओ मुनशी होछेन आलीर नामेर एक केता ओकालतनामा सहित ओ ए आदालतेर तहबिलदारेर दस्तखते उकिलेर मेहनतआनार बाबत एक हाजार टाकार रशीद एक केता ओ ए आदालतेर खरचार जेता हाओली सहर कलिकातार मोतालक एचयने काशीपुर निवाशी जगमोहनमल्लिक ओ रामकुमार पालेर नामेर जामिनि एक केता ओ सन हालेर २७ जुलाई तारिखेर प्रविनशील कोट मुरशीदावादेर फयसलार नकल

एक केता सन हालेर २६ आगष्ट तारिखे दुई टाका मूलत्येर कागजेर फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल हइयाछिल, अथ दरपेय हइया पाठ करागेल । ताहार पर गोविन्दचन्द्ररायेर उकिल सन १२२० सालेर १६ अम्रहायनेर राणी कृष्णमणि रेण्पाडण्टेर नामेर महाराजा विश्वनाथराय मोतओपकार लिखिया देओओ अनुमतिपत्रेर नकल एक केता ये ताहार निचे राणि कृष्णमणिर जओवाव जोडा देओओ आछे लम्बरे दाखिल करिलेक । दृष्टे आइल । यद्यपि आपीलाण्टेर सदर आपीलेर दरखास्ते हुकुम प्रकाश हओनेर पूज्य ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लओओ उचित बोध हइल, ए कारण हुकुम हइल ये एइ मोकर्हमा लम्बेर दाखिल हइया एइ रोवकारिर नकल ए आदालतेर फयल्ला हओओ १७४८ लम्बरेर मोकर्हमाय दाखिल हओओ अनुमतिपत्र सहित ए आदालतेर पण्डितेर हाओओला करा जाय एइ हुकुमे ये एइ रोवकारि पाओोर दिवस हइते तिन दिवसेर मध्ये अनुमतिपत्रेर लिखित सरतसकल ओ मजमुन दृष्टे निचेर लिखित हओओलसकलेर जओवाव दाखिल करे इति ।

प्रथम—एइ ये राणि कृष्णमणि आपन स्वामी महाराजा विश्वनाथराय मोतओपकार लिखिया देओओ अनुमतिपत्रानुसारे गोविन्दचन्द्ररायके आपन पुष्यपुत्रत्ते आनिया गोविन्दचन्द्रराय प्राप्तअवहारे पहुँछते ओ ताहार राजि व्यक्तित आपन जीवइशा पर्यन्त स्वामीर तेज्य विषयेर पर दखिलकार थाकितेः पारे कि ना ।

द्वितीय—एइ ये ऐ अनुमतिपत्रानुसारे महाराजा गोविन्दचन्द्ररायके पुष्यपुत्र लओओर पर राणि कृष्णमणिके एदयणे एइ विषयेर ये कोन हेतु द्वाराय गोविन्दचन्द्ररायके स्थाग करिया दोशरा व्यक्तिके पुष्यपुत्र करणेर क्षमता आछे किता इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्दम्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतप्रलकमुन्दरराससाहेवधम्माधिकरणलि-
खितैवदन्दीयतृतीयदिवसोयविचारपत्रान्तार्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्सम-
रितैतद्दम्माधिकरणनिष्पन्नाष्टचत्वारिंशदधिकसप्तदशशताद्वाङ्कितविवादविप-
यनिविशानुमतिपत्रञ्च यत्तद्दन्दीयतन्मासीयचतुर्ष्यदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशलोपो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

राज्ञी कृष्णमणौ मृतमहाराजविश्वनाथरायाभिवेयस्वरतिलिखितानुम-
तिपत्रानुसारेण गोविन्दचन्द्ररायामिधेयं स्वकीयदत्तकपुत्रताग्रानीय गोविन्द-
चन्द्ररायस्य प्राप्तव्यवहारतायामपि तदनुमतिमन्तरेण स्वभोवनपर्यन्तं
स्वपतित्यक्तधने आयत्तत्वं शास्त्रानुसारेण रक्षामित्वेन सम्पादयितुं न शक्नोति
पतिकृतदत्तकपुत्रमहयानुमत्या पतिमरणानन्तरं गृहीतदत्तकपुत्रस्यैव तत्-
पतित्यक्तसमुदायधने शास्त्रानुसारेण पुत्रत्वेन स्वत्वोत्पादेन रास्याः कृष्ण-
मण्यभिधानायाः पतित्यक्तधने पत्नीत्वेन स्वत्वोत्पत्तेः प्रतिबद्धत्वात् । यद्य-
प्यनुमतिपत्रे महाराजविश्वनाथरायेण स्वपत्नीं राज्ञीं कृष्णमणीं प्रति
लिखितमस्ति “असम्प्रमाणानन्तरं त्वं दत्तकपुत्रं रक्षित्वा सकलविषयस्य
कर्त्री भूत्वा रमहृते ईश्वरविग्रहाणां सेवां कृत्वा वशिष्टे ये द्वे मम पत्न्यौ”
तयोर्भोवनावधि प्रासाञ्छादन् त्वया देयमिति” तथाप्यनेन परश्रुमत्या
पतिमरणानन्तरं गृहीतदत्तकपुत्रस्य शास्त्रानुसारेण पितृत्यक्तसमुदायधनस्व-
मिनः प्राप्तव्यवहारतायामपि तद्विमत्यापि स्वामित्वेन राज्ञी कृष्णमणी स्वभो-
वनपर्यन्तं पतित्यक्तधने भोगवती स्थास्यतीत्यनवगमादिति ।—

अत्र प्रमाणम्—

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि, तदमावे दुहितृगामि—इत्यादि दाय-
भागादिग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥ १ ॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदमावे पौत्रस्तदमावे प्रपौत्रः इति प्रपौत्रपर्यन्ताभावे
पत्नीति च तदमावे दुहिता—इति च दायभागाटोकादायकमसंग्रहादिग्रन्थ-
लिखनम् ॥ २ ॥

सर्वे ह्यनोरसास्यैते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायमागादिग्रन्थ-
धृतदेवलयचनञ्चेति ॥ ३ ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रमुखमपितानुमतिपत्रानुसारेण महाराजगोविन्दचन्द्ररायस्य दत्तक-
पुत्रत्वेन ग्रहणानन्तरं राश्याः कृष्णामण्यभिधानाया इदानीं केनचिद्वेतुना
गोविन्दचन्द्ररायस्य त्यागं कृत्वा द्वितीयस्य दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणस्य क्षमता
नारित, शास्त्रानुसारेण गृहीतैकदत्तकपुत्रस्य पितृत्वसमुदायवने पुत्रत्वेन
स्वत्वोत्पादात् । यद्यप्यनुमतिपत्रे महाराजविश्वनाथरायेण स्वपत्नी राशौ
कृष्णमणीं प्रति लिखितमस्ति “अस्मिन्ग्रहणानन्तरं त्वमेकस्याधिकस्य वा
सत्सन्तानस्य दत्तकपुत्रत्वेन ग्रहणं करिष्यसि” —अनेन राश्याः कृष्णमण्य-
भिधानायाः दत्तकपुत्रैकग्रहणानन्तरं तस्मिन् विद्यमाने सति तस्यागं कृत्वा
द्वितीयदत्तकपुत्रग्रहणक्षमताया अनवगमात्—इति यद्गद्गदेशचलितदाय-
भागदायतत्पदावभागीकादायक्रमसंग्रहविवादाणां वसेतुविवादमङ्गार्यावादिग्र-
न्थानुसारिणो व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणानि—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितानि श्रीस्येवेति ॥ ३ ॥

एतदब्दीयस्मृत्यन्वराणीयदशमदिनसम्बन्धिषोडशाक्षरे मयैवं व्यवस्था
दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथनिश्रेण

११—सवंगुण उपमायोग्य श्रीयुत राजनारायण विद्याभूषण
परिद्धत आदालते देओनि जेला हुगलि अवगतेषु ॥—

सन १८३२ साल तारिख ७ आपरेल ।—

१३ लम्बरेर कैः कालिदासगद्गोपाध्याय दीः—

छानि बजविल आः प्रेमचन्द्रचौधारी दीः—

सओयाल धर्मदासचौधुरि ओ गुरुदासचौधुरि-दुइ सहो-
 दर एकात्र वर्तिते थाकिया, पैतृक स्वावर वस्तु प्रभृति भोग
 करिया, ताहार मध्ये ज्येष्ठ, ऐ धर्मदास आपनार दुइ पुत्र, वदन
 चन्द्र ओ प्रेमचन्द्रचौधुरि, आर आता ऐ गुरुदासचौधुरि ओ
 आपन माता सुन्दरिदेव्यार समिचे लोकान्त हय । तदन्तरे ऐ
 गुरुदास मजकुर आपनार ऐ भातपुत्रदिगेर सहित ऐ व वस्तुरे
 एकात्रवर्ति थाकिया किछु काल परे आपनार माता आर ऐ दुइ
 भातपुत्र ओ आपन प्रथम संसारेर घनितार गर्भजात वैकुण्ठनाथ
 नामे एक पुत्र ओ अदत्ता तिन कन्या ओ द्वितीय संसारेर सन्तान
 सन्तति विहिन घनिता गोविन्दमणिदेवीके राखिया लोकान्त
 हइले । ऐ गुरुदासेर पुत्र वैकुण्ठनाथ आपनार ज्येष्ठतात-पुत्र ऐ
 वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्रचौधुरि सहित एकात्रवर्ति पजमाले
 थाकिया आन्दाज ७ बत्सर वयक्रमे आपनार पितामहि ऐ सुन्दरि
 देव्या आर अदत्ता तिन भगि ओ अवीरा विमातार समिचे मृत्यु-
 हय । परे ऐ वैकुण्ठनाथेर अविरा विमाता ओ तिन अदत्ता भग्नि
 ओ पितमही सन्दरीदेव्या ओ ज्येष्ठतातेर पुत्र वदनचन्द्र ओ
 प्रेमचन्द्र सहित एकात्रमुक्त थाकिया वैकुण्ठनाथेर तिन भग्निर
 विवाह हइया, दुइ भग्निर पुत्र हइले ओ एक भग्नि पुत्रसम्भा-
 विता राखिया, वैकुण्ठनाथेर पितामहीर मृत्यु हय । तदन्तरे
 किछु काल बादे वैकुण्ठनाथेर विमाता गोविन्दमणीर मृत्यु हय ।
 ऐ वैकुण्ठनाथेर दुइ भग्नि, ओ ताहार पुत्रगण ओ एक भग्नि पुत्र-
 सम्भाविता ओ वैकुण्ठनाथेर ज्येष्ठतातेर पुत्र वदनचन्द्र ओ
 प्रेमचन्द्र चौधुरि वर्तमान आछे । अतएव वङ्गदेश चलित शास्त्रा-
 नुसारे ऐ गुरुदासेर वस्तुर योग्य अंश गुरुदास मृत्यु परे ताहार पुत्र
 वैकुण्ठनाथके पौडछिया छिल कि ना । यदि पौडछिया थाके तबे
 वैकुण्ठनाथेर मृत्यु हइले ऐ वस्तु वैकुण्ठनाथेर पितामहीके पौड-
 छिया छिल कि ना । यदि पौडछिया थाके तबे पितामही सुन्दरी
 देवी मृत्यु हइले उपरेर लिखित व्यक्तिदिगेर मध्ये के पाइते पारे-

इहारे व्यवस्था यद् सञ्चालेत् पासे लिखित्या ५ रोज मध्ये पाठाइवेन ॥—

एतत्प्रश्नानुसारेण मृतस्य गुरुदासस्य योग्यांशप्राप्तधने वैकुण्ठनाथोऽधिकार्यभूत् । पितामहपत्यन्तरहिते तस्मिन् मृते पितामही सुन्दरीदेव्याधिकारिण्यभूत् । तस्यां मृतायां वैकुण्ठनाथस्य पितृभानृपुत्रौ वदनचन्द्रप्रेमचन्द्रौ लब्धुं न शक्नुयाताम्, किन्तु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्राः प्राप्तुं शक्नुयुरिति त्रिकुपां परामर्शः ॥—

एइ सञ्चोयाल अनुसारेते गुरुदास मरिले वाहार योग्यांश वस्तुते वैकुण्ठनाथ अधिकारी हइया छिलो । पितामह पत्यन्तरहित सेइ वैकुण्ठनाथ मरिले पितामही सुन्दरीदेवी अधिकारिणी हइयाछिलो । सुन्दरीदेवी मरिले पर वैकुण्ठनाथेर पुत्र वदनचन्द्र ओ प्रेमचन्द्र पाइते पारे ना, किन्तु वैकुण्ठनाथेर पितृदौहित्रेरा पाइते पारे—एइ पण्डितदेर युक्ति ॥—

धर्मरत्नदायभागादिपु ग्रन्थेष्वत्र प्रमाणम्

यथा गौतमः—स्वामी श्रृक्ष्यक्यविक्रयसंविभागपरिमहाधिगमेपु—इत्यादि ॥

यथा मनुः—ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पितृकमृक्षमनीशास्ते हि जीवतोः—इत्यादि ॥

यथा मनुः—अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवाप्नुयात् ।

मातर्यपि च वृत्तायां पितुर्माता हरेद्वनम् ॥

यथा याज्ञवल्क्यः—पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तत्सुता गोत्रजः—इत्यादि ॥

धर्मरत्ने यथा—दौहित्रोऽपि ह्यमुत्रैव सन्तारयति पौत्रवत्—इत्यादि ।

सन १८३२ साल तः २० आपरेल ।

श्रीराजनारायणविद्याभूषणपण्डित ॥

श्रीर्जयतिराम्

प्रमुसमर्पितप्रश्नपत्र व्यवस्थापत्रं विचारपत्रञ्च यदेतदन्वीयसित-
म्बरमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिवृद्धसतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य याद-
शबोधो ज्ञातस्तदनुसारेण निवेदनं क्रियते ॥—

प्रमुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति सत्प्रश्नोत्तरव्यवस्थायां मृत-
पुत्र गुहदासस्य योग्यांशे तत्पुत्रो वैकुण्ठनाथोऽधिकार्यभूदिति ह्रगलोनिला-
ख्यधर्माधिकरणनियुक्तविद्यमानपरिहृतेन यल्लिखितं तत्सत्यमेव, किन्तु
पितामहपर्यन्तरहिते तस्मिन् मृते तत्पितामहो मुन्दरीदेव्याधिकारियभूदिति
यल्लिखितं तदव्यवस्थायां तत्र सत्यम्, वैकुण्ठनाथस्य भगिनीपुत्रं विद्यमानास्तु
तासां पुत्रसम्भावनायां सत्यां वैकुण्ठनाथस्य पितामहाः मुन्दरीदेव्यास्तत्पि-
तृदौहित्रानन्तरमधिकारिणस्तत्पितामहादप्यनन्तरमधिकारिणश्च वास्तवः-
धिकारस्यै अशास्त्रोक्तत्वात्, एवं वैकुण्ठनाथस्य पितृभ्रातृपुत्रो वदन-
चन्द्रप्रेमचन्द्री लब्धुं न शक्नुयाताम्, किन्तु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्राः
प्राप्तुं शक्नुयुरिति यल्लिखितं तदव्यवस्थायां तत् सत्यमेव । गुहदासस्य
मरणानन्तरं तदयोग्यांशे तत्पुत्रस्य वैकुण्ठनाथस्याधिकारे ज्ञाते सति तद्धनं
वैकुण्ठनाथस्यैव ज्ञातम् । अतस्तस्मिन् पुत्रपौत्रप्रपौत्रपौत्रदौहित्र-
पितृमातृभ्रातृभ्रातृपुत्रभ्रातृपौत्रपर्यन्तरहिते मृते सति तत्सत्यकथने विद्य-
मानेषु वैकुण्ठनाथस्य पितृदौहित्रेषु तत्पितृभ्यपुत्राणामधिकारस्याशास्त्रीय-
त्वात्—इति वज्रदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवा-
दार्णवतेतुविवादभङ्गार्णवादिग्रन्थानुसारेण निवेदनमिति ॥—

एतदन्वीयनवम्बरमासीयचतुर्दशदिनसम्बन्धिवृद्धसतिवासरे मयेदं निवेदनं
कृतमिति ॥

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

१२—रोयकारि मिशिल सदर देओयानि आदालत मो०
कलिकाता ई० सन० १८३२ साल कारिख १३ शैतम्बर मोतावेक

३० भाद्र सन १२३६ साल रोज बृहस्पतिवार ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत नाशानापल जान हालहेड साहेबेर बैठके ॥—

अनङ्गमञ्जरि—

आपीलाएट

फकिरचन्द्रसरकार—

रेष्पाडएट

एइ मोकदमा वर्त्तमानमासेर १० तारिसे उभयेर चकिलेर मोका-
यिलाय रोवकार हइया बाजे २ कागजात सुनानि हइया दिवायसान
प्रयुक्त स्थिति छिल, अथ पुनराय आपीलाएटेर चकिल मुनशीदादार
यक्त्स ओ रेष्पाडएटेर चकिल सदासुखपण्डितेर मोकायिलाय
दरपेय हइया जिला आदालतेर ओ एइ आदालतेर कागजात
मोनाहेजाय आशील । हुकुम हइल-ये एइ आदालतेर पण्डितेर
स्थाने एइ विषयेर व्यवस्था तलब करा जाय-ये यदि कोनो व्यक्ति
पोष्यपुत्र लय तवे ऐ पोष्यपुत्र राखन विषये शास्त्रानुसारे आपन
खीर स्वीकार आवश्यक बटे कि ना, ओ पोष्यपुत्र लओनेर विषय
तिन नियम आचरण आवश्यक । प्रथम—एइ ये सपिएडफ अर्थात्
ज्ञातिवर्गके समाचार दिया एकत्र करा आवश्यक ॥ द्वितीय—
राजाके ज्ञात करा ॥ तृतीय—यह करा ॥ ए मकईमार भावे
बोध हइल ये पोष्यपुत्र लओनेर कालिन किवल यज्ञ हइयाछे ।
प्रथम ओ द्वितीय नियम आमले आइरो नाइ । अतएव एइ
विशये एइ मत पोष्यपुत्रता सिद्ध हय कि ना इति ॥—

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतनाशानापलजानहालहेडसाहेबधर्मा-
धिकरणातिलितैतदन्दीपसितम्बरमासीयत्रयोदशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्र-
श्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिशनिवाधरे मया
प्राप्तं सदवलोक्य यादृशशोचो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि कश्चिद् व्यक्तिविशेषः पोष्यपुत्रं गृह्णाति तदा तत्पोष्यपुत्र-
ग्रहणविषये स्वपत्न्याः स्वीकारः शास्त्रानुसारेण वास्तवमावरणको न
भवति, अयापत्योर्मण्ये प्रचानोभूतेन पत्या पोष्यपुत्रग्रहणेनैव प्रतिपत्त-
न्त्या ज्ञायामा अपि तस्मिन् पोष्यपुत्रलोदोत्तेः शास्त्रीयत्वात्, पत्नीस्वीकारं
विना पत्युः पोष्यपुत्रग्रहणस्य शास्त्रनिषिद्धत्वाभावाच्च । एवं पोष्यपुत्रग्रहण-

विषये ये त्रयो नियमाः प्रश्नपत्रे आवश्यकत्वेन लिखिताः अर्थात् सपिरडा-
हान-राजनिवेदन-यज्ञास्तेषाम्मध्ये एतद्विवादे यदि पोष्यपुत्रमहणसमये
केवल यज्ञमवनमेवावगम्यमानं स्यात्तदा प्रथमद्वितीयनियमयोरर्थात् सपि-
रडाहान-राजनिवेदनयोरनिष्पन्नत्वेऽप्येतादृशं पोष्यपुत्रत्वं सिद्ध्यति, पोष्य-
पुत्रमहणविषये सपिरडाहान-राजनिवेदनयोः केवल दृढतरसाक्षित्वेनोपयो-
गित्वेन प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रलिखितेनैतद्विवादे पोष्यपुत्रमहणसमये
केवलं यज्ञ एव जात इत्यनेन यज्ञकरणपूर्वकपोष्यपुत्रमहणस्य निश्चितत्वेन
सपिरडाहानराजनिवेदनयोः प्रयोजनस्यार्थसिद्धत्वात्—इति दत्तकमीमांसा-
दत्तकचन्द्रिकादत्तकदीधितिदत्तकर्णयणदत्तकदर्पणविवादार्यावसेद्विवादमङ्गा-
र्यादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—॥

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रेण सुतः कस्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिरडोदकक्रियाहेतोर्यामसंकीर्तनस्य च ॥—इति दत्तकमीमांसा-
दत्तकचन्द्रिकादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

भर्तुः प्राधान्यात्तत्परिमहेणैव सिया अपि तस्मिन् पुत्रत्वसिद्धिः
भर्तुः परिगृहीतवस्त्वन्तरस्त्ववत्—इति दत्तकमीमांसाग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मधुरकैण सपूज्य राजानञ्च द्विजान् शुचीन् ।

राजात्र ग्रामस्वामी । बन्धूनाह्वय सर्वांस्तु ग्रामस्वामिनमेव चेति वृद्ध-
जीतमस्मरणात्—इति दत्तकमीमांसादि (दमी० पृ० ६६) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बान्धवाद्याह्वानं दृष्ट्यं राजाह्वानवत्—इति दत्तकमीमांसादि (दमी०
पृ० ६७) ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् इत्यादेः स्वबन्धूनाह्वय इत्यर्थः । एतेन स्वबन्धु-
भिर्ज्ञातः पुत्रो दायं ग्रहीष्यति, आद्यादिकञ्च करिष्यति, बान्धवारश्च तं न
विवारयिष्यन्तीति सूचनार्थम् । राजनिवेदनं चाप्येतदर्थमेव—इति विवाद-
मङ्गार्याव(२ विवा० १७३ स्त) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥

एतदन्दीयनवम्बरमासीयसप्तदशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीज्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण



१३—रोवकारि मिछित सवर देओयानी आदालत मोकाम फलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिफिस, पीयेर साहेवेर घेठक ओयाँक्के तारिख ५ सेतम्बर ३० सन १८३२ साल मोतावक वाङ्गला सन १२३९ साल तारिख २२ भाद्र रोज बुधवार ॥ —

मोछन्मात वेघुधामन—

छापला—

छापलार उकिल मुनशी अलिक्ला हाजिर आइल । छायेलार छओयाल सन हालेर २१ जुलाई तारिखेर जेला वेहारेर जल साहेवेर हुकुमेर नाराजीते ये आपन मातार वर्तमाने उहार स्वामीर अपुत्रक सृत्यु हओन सरवे मोछन्मात मुहा मोतओर्फार दौहित्रगण राधा ओ गोवर्द्धनेर मोतओर्फा मजकुरार सहित ओयारिष सानुद हओया ओ छायेलार ओयारिष साछद ना हओयार विशये छावेर हइयाछे । शाखानुजाइ मोतओर्फा मजकुरार सहित आपन ओयारिष शाछावर हुकुम छावेर हओनेर प्रार्थनाय उकिल मजकुरेर नामेर ओकालतनामा ओ लाला सुवंशलाल मोक्कारकारेर नामेर मोक्कारनामा ओ तारिख मजकुरेर जेला मजकुरेर आदालतेर रोवकारिर नकल एक केता ओ ३० सन १८०३ साले १९ अक्तुबरेर लिखित पत्ताका आजिमाघादेर आपीलेर रोवकारिर नकल एक केता, ओ ३० सन १८१६ सालेर १५ अक्तुबर तारिखेर जेला मजकुरेर डिगरिर नकल सम्बलित जाहा सन हालेर २७ अगष्ट तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य

-अनुमोदने आइल । हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल एवं
-छओयाल ओ तत्समिभ्यारि कागजात सम्बलित एइ हुकुमे एइ
आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये कागजात अनुमोदन
परे एइ बिपयेर जओयाव ये जेला वेहारेर जज साहेवेर हुकुम
तद्देशीय प्रचलित शाखानुबाइ घटे कि ना लिखेन इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतद्देनरीसिकिसूरीयखा हेवधर्माधिकरण-
लिखितैतदन्दीयसितम्बरमासीयपञ्चमदिवसीयत्रिचारपञ्चान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-
पत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादधिपदनिबिष्टपञ्चार्तं च यत्तदन्दीयतन्मासीयो-
विंशतितमदिनसम्बन्धिषष्ठ्युषवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणान्तरं लिख्यते ॥—

वेहारदेशीयनिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणाधिपतिकृतः सा तद्देशप्रच-
लितशाखानुसारिणी न जातास्ति । प्रभुसमर्पितपत्रमातैर्विशेषतोऽङ्गरेजी-
शब्दप्रतिपाद्यपोड्याधिकाष्टा दशयत्तान्दीयाकतृषरमासीयपञ्चदशदिवसीयवे-
हारदेशीयनिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणीयत्रयपत्रप्रतिरूपपत्रेण सल्लिखितध-
र्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नोत्तराभ्यां विवादास्पदोभूतधनमेतद्ध-
र्माधिकरणाधिन्या वेचूषामिन्याः स्वशुरस्य फतेहधामिन आसीत्, तन्म-
रणानन्तरं तत्पुत्रेण फेकूषामिना अर्थाधिन्या वेचूषामिन्याः पत्न्या पुत्रत्वेन
प्राप्तमिति ज्ञातम् । अतस्तद्धनं फतेहधामिनः पुत्रस्य फेकूषामिन एव
जातम् । अतस्तन्मरणोच्चर उदुत्तराधिकारिणामेव तत्राधिकारः । तदुत्तराधिका-
रिणाम्भ्ये तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्सत्या अधिन्या वेचूषामिन्या एव
प्रधानाधिकारिणात्, वेचूषामिन्यामधिन्या विद्यमानायामन्येयसाधिकारः,
मातरि विद्यमानायामनपत्नस्य कस्यचिन्मरणेन तत्सत्याः पुत्रपौत्रप्रपौत्रा-
भावे नति प्रधानाधिकारिण्या अधिकारो न भवतीत्येतद्विधायकशाखाया-
यात्-इति वेहारदेशप्रचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखन्यवहार-
माधयव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थ—

भूतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ १ ॥

पुत्राः पौत्राश्च दायं गृह्णन्ति तदभावे पत्न्यादयः—इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥ २ ॥

एतदन्दीयनपञ्चरमाधीकविंशतितमदिनसम्बन्धिविधवाधरे मयेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयवितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३३२५ लं—

१४—रोवकारि मित्रिल सदर देओयानि आदालत मोकाम
कोलिफाता आदालत मजकुरे हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्किश-
पियेर साहेबेर बैठके ओयार्के तारिख १० शेतम्बर ६० सन १८३२
साल मोताबक २७ भाद्र सन १२३६ साल बाङ्गला रोज सोमवार ॥

गोसाबीचन्द्रकविराज

आपीलायट

मोहम्मद जयमनि ओ कृष्णमणि मोतओफा—रेप्पाडण्टान

आपीलायटेर उकिल मुनसि हयदर आलि ओ रेप्पाडण्टानेर
मध्ये जयमनीर उकिल मुनसि गोलाम बतुल हाजिर आइल, एवं
इस्तहारनामा जारिहओयाते ओ कृष्णमनीर मोतओफार तरफेर
कोन ओयारिष ए आदालते हाजिर आइल ना । एइ मोकदमा
सेरेस्तादारेर फैफियत मते आमार बैठके दरपेप हइया प्रथम
आदालत जेला बिरमूमेर कागजात ओ द्वितीय आदालत मुर-
शिदावादेर कोटेर कागजात एवं ए आदालते दाखिल हओया
आन आपीलेर छओयाल जाहा, आपिलायट मौजेवात करार देय,

ओ ताहार जओयाव सेओ याय सात्तिदिगेर जोवानवन्दि अनु-
मोधने आइल । जयमनीर नकील मुनसि गोलांम यतुलेर प्रति
छओयाल-ये तुमि एइ आदालतेर दाखिल करा आपन जओ-
यावे लिखियाछ-ये कृष्णमनी आपन मृत्युकालिन मातवर,
मनिष्यदिगेर सात्ताते आपन हिस्सार बस्तुते उहाके हकदार करि-
आछे, ए प्रयुक्त जिहासा करा आइतेछे-ये लिखित पठितेर द्वाराय
कि अन्य कोन प्रकारे । आरज करिलेक-ये आमार मौखलेर
जओयावेते ए विषय पष्ट प्रकाश नाइ । ये हेतुक एइ मोकर्दमार
आपील शास्त्रेर विशयसकल अधिक तहकितातेर दृष्टे मञ्जुर
हइयाछे ताहार दृष्टे हुकुम हइल जे एइ मोकर्दमार कागजसकल
एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हेतुते पाठान जाय ये छभयेर
दाखिल करा कुरशीनामासकल ओ जेलार आदालतेर पण्डितेर
व्यवस्था ओ एइ आदालतेर पण्डितगणेर खाप आपील मञ्जुर
कालिन दाखिलकरा व्यवस्था अनुमोधने निचेर लिखित छओ-
यालसकलेर जओयाव लिखेन ॥

१—प्रथम—एइ ये १८८६ मास वयक्रमेर समय मृत्युर एक-
दिवस पूर्व भैरवेर जोवानि कत हेवा प्रमाण्य हय कि ना ॥

२—द्वितीय—यद्यपि स्यात् ताहार प्रमाण ना हय, तवे,
छभय विवादिर मध्ये कोन व्यक्ति भैरवेर उत्तराधिकारि मते हक
राखे ।

३—तृतीय—यद्यपि स्यात् खास आपील मञ्जुरि र समये एइ
आदालतेर दाखिल हओया व्यवस्थार द्वाराय प्रकाश ये सावेक
मुर्दइआनेर मध्ये एक जन कृष्णमनी पुत्रवती हओनेर उहेखेर
पीतार हिस्साय हकदार छिल । एइ चने प्रकाश ये कृष्णमनि ओ
ताहार स्वामि दुयेरि मृत्यु हइयाछे । ए प्रयुक्त कृष्णमनी मजकुरार
चेमता छिल कि ना-ये आपन हिस्सा जयमनीके ये प्रकार एइ आदा-
लतेर जओयावे लेखे समर्पन करे, आर ताहार अन्यथाय मोछ-
म्मात मजकुरार ओयारिप कोन व्यक्ति हइवेक, एवं सेरेस्तादार

एइ विशयेर कैफियत ये एइ मोकदमा इ० सन १८२२ साले मजूर हय, परे कि जन्य मुद्दव दश बत्सर पर्यन्त मुलतवि थाकिल-दाखिल कारण इति ॥—

श्रीर्जयतितराम

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुक्ताहेनरीसिक्किस्पोयरसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितैतद्वितीयवित्तव्यवस्थासीयदशमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूप-
पत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रज्ञातमर्थिनिविष्टानि प्रत्यर्थिनिवि-
ष्टानि च वंशावलीपत्राण्येवं बिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणनियुक्तपण्डित-
लिखितव्यवस्थापत्रमेतद्वर्माधिकरणनियुक्तपण्डिताभ्यां लिखितमेतद्विवा-
दस्यैतद्वर्माधिकरणविवेचनायोग्यत्वनिश्चयकालिकमर्थद्विभाषां स्वरा-
अपीलमजूरशब्दप्रतिपाद्यकालिकव्यवस्थापत्रं च यदेतदन्वीयाकतूबरमा-
सीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य पाटशोघो-
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

पण्मासाधिकाष्टादशवर्षवयस्केन^१ भैरवेण स्वमृत्योरेकदिवसपूर्व्यं यद्दानं
याचा कृतं तत् सिद्धयति प्रमुखमर्पितपत्रज्ञातैर्विशेषतो वीरभूमिप्रदेशीयजिला-
ख्यावान्तरधर्माधिकरणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नोत्तराभ्यां प्राप्तव्यवहारेण
प्रकृतिस्येन^२ च भैरवेण स्वस्वत्वात्सदीभूतधनस्य दानं कृतमित्यवगमेन^३
सादृशदानविद्वौ बाधकसामान्याभावादिति ।

द्वितीयप्रश्नोत्तरमप्यर्थद्वयैव पर्यवस्यमिति पृथङ् न लिखितमिति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥ १ ॥

दाने हि चेतनोद्देशविशिष्टात् त्यागादेव दातृव्यापारात् सम्प्रदानस्य
द्रव्ये स्वामित्वम्—इति दायमागग्रन्यलिखनम् ॥ २ ॥

अदत्तं तु मय्यग्रेवकामशोकरुगन्वितैः—इत्यादि विवादाण्यवसेनुविवाह-
भक्षणवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ३ ॥

भयादिरुगन्ताः^१ पञ्च प्रवृत्तिस्थितिविरोधिना द्रष्टव्याः^२ इति विवाद-
मङ्गलार्थादिग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्यर्थिनीनामर्थादेतदधर्माधिकरणप्रत्यर्थिनीनां मध्ये कृष्णमर्याः
पुत्रसम्भावनायां सत्यो पितृत्वकथनस्योत्तराधिकारित्वेनाधिकारे चाते सति
कृष्णमर्याः स्वसंक्रान्तपितृत्वकथनस्य जयमणीमुद्दिश्य यथैतदधर्माधिकरणो-
त्तरपत्रे जयमर्या लिखित तादृशसमर्पणस्य क्षमता पितृकृतार्थापाकरणादा-
वश्यककार्यार्थं सत्तत्कार्यं प्रयुक्तस्यासीत्, तद्व्यतिरेकेण स्वेच्छया
स्वाभिप्रायेण च नासीत् । यदि च कृष्णमर्या तदनं दानानुसारेण प्राप्तं
यद् धीरभूमिप्रदेशीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणनियुक्तपरिबतसंबन्धितृती-
यप्रश्नोत्तरार्थां कृष्णमणीजयमण्युभयोपस्थापितयवाव-उल-यवावसंश-
कपत्रेण चावगम्यते तदा तदनस्य कृष्णमर्याः सौदायिकस्त्रीधनत्वेन
तत्रोपरिलिखितपितृकृतार्थापाकरणार्थं तद्विनापि च स्वान्छन्द्येन समर्पणस्य
क्षमता आसीत् । एवञ्च सति कृष्णमर्याः जयमणीमुद्दिश्य तदनसमर्पण-
क्षमताया अस्तत्पक्षे कृष्णमणीमरणानन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृत्वकथनस्य
यदि कृष्णमणीमरणोत्तरमेतदधर्माधिकरणार्थिनी गोसाइचन्द्रकविराजस्य
पिता वैद्यनाथकविराजो विद्यमान आसीत्, तदा तस्य कृष्णमर्याः पितुर्ग-
ज्ञानारायणस्य पितामहदौहित्रत्वेनाधिकारे चाते सति जन्मरण्योत्तरं तत्पुत्रो
गोसाइचन्द्रकविराजोऽधिकारी भवितुमर्हति, यदि च कृष्णमणीमरणात्
पूर्वमेव गोसाइचन्द्रकविराजस्य पिता वैद्यनाथकविराजो मृतः स्यात्तदा
गोसाइचन्द्रकविराजस्य कृष्णमणीमरणानन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृत्वक-
थने अधिकारो भवितुं न शक्नोति, पितामहदौहित्रपुत्रस्य शास्त्रानुसारे-
णानधिकारात्, वैद्यनाथकविराजकृष्णमणयोर्मध्ये पूर्वं वैद्यनाथकविराजस्य
मरणं कृष्णमर्या वा मरणं चातमित्यस्य प्रभुसमर्पितपत्रजातैर्हानुमश-
क्यत्वात् । एवं प्रभुसमर्पितार्थिप्रत्यर्थिसमुपस्थापितवंशावलीपत्रलिखितानां
मध्ये केवलं जयमर्या एव विद्यमानत्वेन, तस्याश्च कृष्णमणीमरण-
नन्तरं तत्संक्रान्ततत्पितृत्वकथने अधिकारो भवितुं न शक्नोति, आतृदुहितः

पितृव्यधने शास्त्रानुसारेणाधिकारित्वात् । किन्तु कृष्णमशीमरणोत्तरं तत्-
संकान्ततरितृप्त्यर्कधने शास्त्रानुसारेण ये अधिकारिणोभधिकारिभृङ्गलापां
निविष्टाः तेषां मन्वे कश्चिच्चेद्विद्यमानस्तदा स एवाधिकारी भवितुं
शक्नोति । परन्तु स च क इति प्रभुत्वमर्पितपत्रजातैर्ज्ञातुमशक्य एव इति
षड्देशचलितमनुदायभागदायभागटीकादायतत्त्वदायक्रमसंग्रहशुद्धितत्त्वदा-
यरहस्यविवादार्णवसेतुविवादमहार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा जर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभा-
गादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारे असमर्थो बोद्धव्यः—इति
दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्याण्यबाहुरनापदि ॥

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थधृत-
नारदवचनम् ॥३॥

ऋक्ष्यमाही ऋणं दाप्यः—इत्यादि विवादमहार्णवादिग्रन्थधृत-
याज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

जडया कन्यया चपि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।

भर्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभा-
गादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥५॥

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागदिग्रन्थ-
धृतकात्यायनवचनम् ॥६॥

एवं पितामहप्रपितामहसन्तरेरपि दोहित्रान्तायाः पिण्डप्रत्यासत्ति-
क्रमेणाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥७॥

दोहिप्रश्च पिण्डदाता न च तत्पुत्रः—इति दायभागग्रन्थ-
लिखनम् ॥८॥

न दायं निरिन्द्रिया अदायार्च स्त्रियो मताः-इति श्रुतेः न दायमर्हति स्त्रीत्यन्वयः, पत्न्यादीनाम् त्वधिकारो विशेषवचनादविरुद्धः-इति दाय-भागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

एतदब्दीयदिशम्बरमासीयदशमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१५-मोकाम कलिकात्तार सदर देओयानि पण्डित प्रिति सओयाल ।

यद्यपि मोछलमान जातीय कोनो वेक्ति हिन्दु जातीय कोनो वेक्तिर स्त्रीके चुम्माइया ताहार पतिर असन्मदिते मोछलमान धर्म अनिवार मानस करे, अथवा हिन्दुजातीय कोन वेक्तिर स्त्री आपनार जातीय धर्मत्याग करिया मोछलमानेर धर्म स्वीकार करिते इत्सा करे, तवे पतिर नालिस मते हाकिम वेक्तिके मोछ-मर्मांत मजकुरा ओ मोछलमान वेक्तिदिगेर प्रार्थना हइते वारण राखा पौछे कि ना । यद्यपि पौछे, तवे कि प्रकार, ओ यदि स्यात् पे स्त्री मोछलमान हइया थाके, तवे ताहार पतीर जातीर किछु-हानि हय कि ना । इति सन १८३२ साल तारिख १० दिसम्बर ॥

श्रीज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यदेतदब्दीयदिशम्बरमासीयत्रयोदशदिन-सम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारं योत्तरं लिख्यते ॥—

यदि यवनजातीयः कश्चिद्व्यक्तिविशेषो हिन्दुजातीयस्य कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य स्त्रियं बोधयित्वा वर्याः स्त्रियाः पत्न्युत्तरानुमत्या च यवनजातीय-धर्मैर्भानेतुमिच्छति, अथवा हिन्दुजातीयस्य कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य स्त्री स्वजातीयधर्मस्य स्थापनं कृत्वा यवनजातीयधर्मस्य स्वीकारं कर्तुमिच्छति

तदा तस्याः स्त्रियाः पत्युस्तद्विषयकामिशोगे सति राज्ञस्तस्याः स्त्रियाः यवन-
जातीयस्य तद्व्यक्तिविशेषस्य च तत्तदिच्छाविषयीभूताद्वारणकरणमुचितं
भवति । एवं च सति राज्ञस्तयोस्त्वयुक्तदण्डादिकरणक्षमताप्यस्त्येव । यदि
च सा स्त्री यवनजाती प्रविष्टाऽभूत्तदा तस्याः पतिर्यदि तस्या यवनजातिभव-
नानन्तरमपि तथा सह स्त्रीपुंभर्माचरणादिकार्यं कृतवान् स्यात्तदा तत्संलग्ना-
जन्यरातकापनोदकयथाशास्त्रप्रायश्चित्तचरणं विना स्वजातावाचरणीयो
व्यवहार्यश्च भवितुं शास्त्रानुसारेण ॥ शक्नोतीति, एवं तस्याः स्त्रियाः पत्युः
स्वजातेर्हानिर्जाता । यदि च तस्याः स्त्रियाः यवनजातिभवनानन्तरं तत्पति-
स्तथा सह स्त्रीपुंभर्माचरणादिकार्यं न कृतवान् स्यात्तदा तत्पत्युस्तत्-
संलग्नाभावेन संलग्नजन्यप्रत्ययापनोदकप्रायश्चित्तं विनापि स्वजातेः कापि
हानिर्भवितुं न शक्नोतीति मनुमिताक्षराप्रभृतिधर्मशास्त्रानुसारिणी
व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अत्यतन्त्राः स्त्रियः पत्न्याः पुरुषेः स्वेर्द्विवा निशम् ।

विषयेषु च संजन्त्यः संस्थाप्या ह्यात्मनो वशे ॥ इति मनु (६।२)

यवनम् ॥१॥

दम्पत्योः परस्परधर्मव्यतिक्रमे सति अन्यतरहाने दण्डेनापि स्व-
धर्मव्यवस्थापनं राज्ञा कर्तव्यम्—इति मन्वर्थमुक्तावस्था (पृ० ३४५-३४६)
कुल्लूकभट्टव्याख्यानम् ॥२॥

यद्यपि स्त्रीपुरुषयोः परस्परमर्थिप्रत्यर्पितया नृपसमक्षं व्यवहारो नि-
षिद्धस्तथापि प्रत्यक्षेण कर्णपरम्परया विदिते तयोः परस्पराभिचारे
दण्डादिना दम्पती निजधर्ममार्गे राज्ञा स्थापनीयो—इति मिताक्षरा-
(पृ० २८८) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

एतदन्वीयदिशम्बरमासीयाद्यादरादिनसम्बन्धिप्रद्वलवाचरे मयेयं व्य-
वस्था दत्तेति ॥

श्रीजर्जप्रतितराम्
श्रीवैद्यनाथदिश्रेण

श्रीदुर्गा

१६—रोवकारी मिछिल सदर देओयानी आदालत मोकाम-
कलिकाता आदालत भजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सपीएर
साहेबेर बैठके ओयाक्कै तारिख १६ माह शैतम्बर ६० सन १८३२
साल मोतावरु ५ आश्विन बाङ्गला सन १२३६ रोज बुधवार-

दुर्जनसिंह ओ अर्जनसिंह
बाबत गिरिधरसिंह ओ गयरह—

आपीलाएटान्
रेष्पाहगटान्

आपीलाएटानेर उकिलान् मुनशी होरोन आलि ओ सदा-
सुखपण्डित हाजिर आइल । आपीलाएटानेर छओयाल एइ
मासेर ६ तारिखेर अनुमोदन हओया एइ आदालतेर पण्डितेर
व्यवस्थार प्रति ओजरात एव अन्य अन्य विशय सम्बलित
सादा कागजेर पर एक केता व्यवस्थार नकल दुइ टाका किर्मतेर
एक केता फेरस्त समेत, जाहा एइ मासेर ८ तारिखे दाखिल
हइया छिल, अनुमोदने आइल । हुकुम हइल ये आपीलाएटानेर
छओयाल एइ रोवकारि नकल ओ एइ मासेर ६ तारिखेर
रोवकारि नकल सम्बलित ओ एइ मोकर्दमार मोतालक साम्यक
कागजात एइ हुकुमे ये पण्डित साबेक व्यवस्था ओ आपीलाएटा-
नेर ओजरात ओ एइ मासेर ६ तारिखेर हओया एइ आदालतेर
रोवकारि प्रति अनुमोदन करिया जओयाव लिखेन-ये तत्
टटे साबेक व्यवस्थार किछु तर्वादिल जरूर आछे कि ना, आर
यद्यपि स्यात् ताहा धाके, ताहार सरेओयार कैफियत लिखेन-एइ
आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्गर्भाधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्सपीयरसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितैतदन्दीयसितम्बरमासीयोनविशतितमदिवसोयविवारपत्रान्तर्गतप्रश्न-

प्रतिरूपपत्रमेवं तत्समापितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रज्ञातमेतद्वर्माधिकरण्या-
र्थिनां निवेदनपत्रमेतदन्दीयसितम्बरमासीयपञ्चदिवसीयैतद्वर्माधिकरणीयवि-
चारपत्रं च यदेतदन्दीयनवम्बरमासीयपञ्चद्विदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।—

प्रभुसमापितोपरिलिखितपत्रज्ञातदृष्ट्या अस्मद्वैतद्विवादविषयनिविष्टपूर्व-
व्यवस्थायाः किञ्चिदपि परावर्धनस्यावश्यकता नास्ति, धर्मशास्त्रे कैनापि मु-
निना ग्रन्थकारेण वा जीवति घनस्वामिनि पितरि तत्स्वत्वास्पदीभूतं घनं यत्
स्वपित्रादिमरणानन्तरं उत्तराधिकारित्वेन पित्रा प्राप्तं तद्वनं तत्पुत्रैर्विभज्य
ग्रहीतव्यमित्यस्यालिखितत्वात्, कस्मिञ्चिदपि देशे तादृशव्यवहाराभावात् ।
यच्च एतद्वर्माधिकरणार्थिभिः स्वकीयनिवेदनपत्रे अस्मद्वैतपूर्वव्यवस्थायां
पैतामहधनं लिखितं तत्प्रमाणेषु पैतृकं घनं लिखितमिति विरोधो लिखित
त्वत् (?) सम्यक्तद्वयवस्थालिखितानां पण्यं प्रमाणानां मध्ये केवलं
प्रथमप्रमाणे मनुवचने एव पैतृकं घनमिति लिखितमस्ति । तत्र पैतृकं घन-
मित्यस्य पितृस्वत्वास्पदीभूतं घनमिच्छाशयः । तत्र पितृस्वत्वास्पदीभूतं घनं
यद्वनं पित्रा स्वैवैवोपाजितं तदापि भवति । यद्वनं पित्रा स्वपित्रादिमरणानन्तरं
स्वमात्रादिमरणानन्तरं योत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तदपि भवत्येव, पितृस्वत्व-
स्य तत्राप्यक्षतत्वात् । यथैतद्वर्माधिकरणार्थिभिर्विवादास्पदीभूतं घनं
स्वपैतामहमिति लिखितं तत्रापि तद्वनमर्थिनां पितामहस्य स्वोपाजितं न
भवति, किन्त्वर्थिनामेतद्वर्माधिकरणीयनिवेदनपत्रेणैव विवादास्पदीभूतं
घनं तत्पितामहेनाप्युत्तराधिकारित्वेनैव प्राप्तमिदस्य स्पष्टीकृतत्वेन, अतएव
यद्वनमर्थिनां पितामहेनार्थात् कीर्त्तित्वेन मूलभूतघनस्वामिनो विक्रमादित्य-
रायात् सप्तमपुरुषेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तद्वनं यद्यर्थिना पैतामहं
भवति तदा तद्वनमर्थिनां पित्रा अर्थाद्वरिघनसिद्धेन मूलभूतघनस्वामिनो
विक्रमादित्यरायादष्टमपुरुषेणोत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तद्वनमर्थिनां पैतृक-
मपि भवितुं शक्नोत्येव । इतरेषु तद्व्यवस्थालिखितेषु पञ्चसु प्रमाणेषु सामा-
न्यतो घनमित्यस्य लिखितत्वेन पितुः स्वोपाजिते क्रमागते च घनशब्दस्या-
विशेषात्—इति कानपुरप्रदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधव-
व्यवहारकौस्तुभव्यवहारमयूखमिताक्षराटीकादिग्रन्थानुसारेणोत्तरमिति ॥

एतदन्दीयदिशम्बरमासीयोनविंशतितमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेदमुत्तरं दत्तमिति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

१७—रोवकारी मिश्रित मोकाम कलिकांतार सदर दैओयानि
आदालतेर हाकिम श्रीयुत आलकसुन्दर रास साहेवेर बैठके
हओयार तारिख इज्जरेजी सन १८३२ सालेर ४ द्विजम्बर मोता-
वेक सन १२३६ वाङ्गलार २० अग्रहायन मङ्गलवार—

आनन्दकिशोर गुप्त वनाम श्रीमती जेमङ्करीदासी

छायलेर उकिल मुनशी गोताम यतुल हाजीर आइल। छायलेर
दओयाल ३२ टाका मूल्येर इष्टाम्प कागजेर पर आसाच्छादन
प्रभृति विशये मुः ५०० पाच शत कुडी टाकार मोकदंमार खास
आपील मञ्जुरेर शार्पनाथ उकिल मञ्जुरेर नामेर एक केता
ओकाततनामा ओ इ० सन १८३० सालेर २१ अस्तुवर तारिखेर
हओया नदिया जेलार आदालतेर एक केता फयसलार नकल
ओ इ० सन १८३२ सालेर १५ फिबरेल ओ सन १८२७ सालेर
१८ आपरेत तारिखेर हओया कलिकांतार फोट आपीलेर दुइ
केता फयसलार नकल ओ एक केता वेपस्था सहित, ये सन छालेर
= शेतम्बर तारिखे दाखिल हइयादिल, अच दृष्टे आइल। येहेतु
हुकुम हओनेर पूज्य शास्त्रेर विवरणं हात हओया उचित बोध
हइल, एतन्व हुकुम हइल ये एह रोवकारि नकल एइ हुकुमे ए
आदालतेर पण्डितके अर्पन कराजाय ये निचेर लिखित प्रनोत्तर
साहार पाइयार दिवसानधि एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति।

प्रश्न — खोशालचन्द्रराय तातुकात प्रभृति ओ करुणामयी
बनिता ओ करुणामयीर गर्भजात दुहिता श्रीमति चित्रादासीके
उत्तराधिकारिगणके राखिना लोमान्तर्गामी हय, तत्परें लिखित
श्रीमती करुणामयी स्वामीर तेज्य वस्तु पर ओ ताहार मृत्युर
पर तस्य कन्या श्रीमती चित्रादासी उक्त खोशालचन्द्रेर तेज्य
वस्तु पर दखिलकार हइलेन। तदपरें उक्त श्रीमती चित्रादासी
दुइ पुत्र अर्थात् भैरवचन्द्रगुप्त ओ आनन्दकिशोरगुप्तेर मध्ये

ज्येष्ठ भैरवचन्द्र गुप्त श्रीमती ज्येष्ठमङ्करीदासी वनिता ओ हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृति चारि कन्याके राखिया आपन माता श्रीमती चित्रादासीर समझे लोकान्तर हय, एवं उक्त श्रीमती चित्रादासीर द्वितीय पुत्र आनन्दकिशोर गुप्त उक्त खोशालचन्द्रेर तावत तेज्य वस्तु उपर दखिलकार हय । अतः पर जिज्ञासा करा जाइतेछे ये यदि उक्त आनन्दकिशोर आपन ज्येष्ठ भ्राता भैरवचन्द्रेर स्त्री श्रीमती ज्येष्ठमङ्करी दासीके, ओ पे श्रीमती ज्येष्ठमङ्करीदासीर मृत्यु पर साहार कन्यागण हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृतिके साहार दिगेर आविश्क अनुसारे प्रासाच्छादन ना देय, तबे धर्मदेशीय चलित शास्त्रानुसारे लिखित श्रीमती ज्येष्ठमङ्करीदासी ओ तत् पर-लोकान्तर तस्य कन्यागण श्रीमती हरसुन्दरी ओ दयामयी प्रभृति द्याएल आनन्दकिशोर गुप्तेर स्थाने प्रासाच्छादन पाइवार ज्येष्ठता राखे कि ना—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिभ्युनञ्जलकसुन्दरराससाहेबधर्माधिकरणलिखित-
साहजरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वित्रिशदधिकाष्टादशशताब्दीयद्विशम्बरमासीयषट् -
यदिवशीयविचारपत्रान्तर्गतप्रभप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयषट्दशदिन-
सम्बन्धिशनिवाररे मया प्राप्तं तदवलोक्य यः दृष्टव्यो जातस्तदनुसारेणो-
त्तरं लिख्यते—

प्रभुधर्मवितप्रनपनलिखितवृत्तान्ते सत्यानन्दकिशोरगुप्ते यद्युत्तरा-
धिकारिस्त्वेन प्राप्तमितृषनार्या स्वमातरि धीवन्त्यां मातामहधने अनुत्तर-
स्वत्वस्य मृतस्य भैरवचन्द्रस्य स्वकीयन्येष्ठभ्रातुः पत्न्याः श्रीमत्याः ज्येष्ठमङ्करी-
दास्याः; तन्मरणोत्तरं तत्कन्यानां हरसुन्दरीदयामयीप्रभृतीनामावश्यक-
प्रासाच्छादनं न ददाति तदा सा एव श्रीमतीज्येष्ठमङ्करीदासी प्रासाच्छादनो-
पयुत्तरपरविरक्तधनाभावे स्वजीवनपर्यन्तमानन्दकिशोरगुप्तस्य स्वकीय-
देवरस्य स्थाने प्रासाच्छादनप्रदण्य सप्तमां रक्षत्येव, एव तन्मरणोत्तरं
तत्कन्याकानां यदि विवाहो नाभूत्तदा तासां मध्ये अविवाहितास्त्वा एव

विवाहपर्यन्तं आसाञ्छादनोपयुक्तस्वपितृत्वकथनाभावे सति विवाहपर्यन्तं
 आसाञ्छादनग्रहणस्य क्षमतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्थाने रक्षन्त्येव । यदि न
 भैरवचन्द्रस्य कन्यानां सर्वसाधमेव विवाहो जातः स्यात् तदा तासां विवा-
 हितानां कन्यकानां मध्ये यासां आसाञ्छादनं स्वभर्तृकुलात् स्वभर्तृकुल-
 सम्बन्धिधनाद् वा स्वपितृत्वकथनाद्वा भवितुं न शक्नोति तदा ता अपि याव-
 जीवं स्वकुलोचितप्रासाञ्छादनग्रहणस्य क्षमतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्वपितृ-
 त्वस्य स्थाने रक्षन्त्येव । यापञ्च विवाहितानां आसाञ्छादनं स्वभर्तृकुलात्
 स्वभर्तृकुलसम्बन्धिधनाद् वा स्वपितृत्वकथनाद् वा भवितुं शक्नोति
 ताश्च प्रासाञ्छादनग्रहणस्य क्षमतामानन्दकिशोरगुप्तस्य स्थाने न रक्षन्ति,
 तासामापश्यकप्रासाञ्छादनस्य स्वभर्तृकुलादेरुपपत्तेः—इति बङ्गदेशचलित-
 दायभाग-दायतत्त्वदायभागटीका-दायक्रमसंग्रह-विवाहार्णवसेतु-विवादमङ्गार्य-
 चादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

सुतारचैपाञ्च भर्तव्या यावद्वै भर्तृसात्कृताः ।

अपुत्रा योपितश्चैषां भर्तव्याः साधुवृत्तयः ॥ इति दायभागान्दि (दाभा०

पृ० १०४) ग्रन्थभूतयाचवत्कथं (पृ० २२७ २।१४१) वचनम् ॥१॥

मृते भर्तार्यपुत्रायाः पतिपुत्रः प्रमुः स्त्रियाः ।

विनियोगार्थरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥

परिस्त्रीणे पतिकुले निर्गन्तुये निराश्रये ।

तत् सपियडेपु चासात्सु पितृपुत्रः प्रमुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागान्दि-

(दाभा० पृ० १७३) ग्रन्थभूतनारद(नास्मृ० १३।२८-२९) वचनञ्चेति ॥२॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयत्रिंशदधिकशष्टादशशताब्दीयमानवरोमासीमा-
 ष्टमदिनग्रन्थिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीःर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

४७०२ ल० ।

१८ फेरादि—गोलकमणीदासी सा० वेहाला परगणे वलिया आसामी—पीताम्बरहालदार १स्वय्य चेओया १सा० वेहाला परगणे वलिया, निमचौंद राय, १सा० मोदि परगणे मागुरा ।

मालिके जमीन सावेक रामचन्द्रहालदारेर ओयारिस श्रीनाथहालदारभट्टाचार्य । इहार हाल खरिदार हरचन्द्र हालदार सा० वेहाला परगणे वलिया १, दोसरा मालिके जमिन महाराजा नवकृष्णवाहादुरेर ओयारिस लावेक शिव-कृष्णवाहादुर ओ फाजीकृष्णवाहादुर सा० सहर फलिकातार सबाबाजार २ ।

१० दावि मौरसि जमिर लाखेराजी जमीर ओयारिसिते दखल कायेम हइवार प्रार्थनाय किर्मत सायदाद १५० टाका । एक वेक्ति गङ्गारामराय जानि छत्रि आपन सजातीते विवाह करे । विवाहिता खीर पत्ते एक पुत्र मदनराय । ऐ गङ्गारामराय एक-कपालिर कन्याके आसना करे । ताहार उदरे एक कन्या हय । ताहार नाम गोलकमणि । ताहाके छत्रि संगे विवाह देय । गङ्गारामराय लोकान्त हइवाते ऐ मदनराय आपन पितार स्थायर ओ अस्थावर विषय दखलिकार थाकिया सजातीते विवाह करे, एक कन्या हय । तस्य नाम बरदामणि । ऐ मदन-राय आपन पैतृक जे किछु ताबत आपन कन्या बरदामणिके दान करे, सरत् एइ जे पर्यन्त बरदामणिर विमाता जीवितमान थाकिवेक ऐ विषयेर ॥^(१) आना रकम उपस्वत्व हइले खोरपोष करिवेक, बरदार ॥^(२) आना थाकिवेक, बरदार विमातार लोकान्त हइले सोलो आना उपस्वत्त बरदार थाकिवेक । ऐ बरदार विमाता ऐ प्रकार दखलिकारि थाकिया आपन सपतिनि-पुत्री बरदामनिके सजातीते विवाह दिया फौत करे । बरदामनि आपन विमातार आद्व आदि करिया ऐ दानेर विशयेते दखलिकारि थाकिया किछु काल परे बरदामनि आपन स्वामिके राखिया लोकान्त

हृद्याद्धे । एतन्न ऐ गोलकमणि आपन पितार गङ्गारामरायेर
श्रोयारिस जानाइया नालिस करे । अतएव धर्मशास्त्र अनुसारे
ए विषय काहारे घटीवेक इति—

श्रोज्जयतितराम्

प्रमुसमर्षितप्रश्नपत्रं यदङ्कुरेजीशब्दप्रतिपाद्यद्वात्रिंशदधिकाष्टादशशता-
ब्दीयागस्तिमासीयत्रयोविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अत्र यद्यपि प्रश्नपत्रे लिखितमस्ति मदनरायस्य कन्या वरदामणी
स्वविमातुः आद्धादिर्कं कृत्वा तद्दानकृतघने श्रायत्तत्वं यस्याय किञ्चित्
कालानन्तरं स्वपति रलित्वा मृतेति, परन्तु वरदामण्या विमाता प्रश्नपत्र-
लिखितानां त्रयोणां मध्ये का भवतीति प्रश्नपत्रेण ज्ञातुं न शक्यते; तथापि
प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्तस्य सत्यत्वञ्चेत् तदा वरदामण्याः यदि कन्यापुत्र-
दौहित्रपौत्रप्रपौत्रसम्बन्धोपुत्रपौत्रप्रपौत्रभ्रातृभ्रातृपितृपर्यन्तानां मध्ये कश्चिन्ना-
स्ति चेत्तदा तत्तत्पुत्रेष्वधिकारः । प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्प-
दीभूतघनस्य वरदामण्याः कन्यावस्थायां पितृदत्तत्वेन सौदायिकलोचनत्वात्
कन्यावस्थायां पितृदत्तलोदायिकलोचने च कन्यामारम्भ पितृपर्यन्तानामुपरि-
लिखितानामभावे पत्युरधिकारस्यार्थसिद्धत्वात्—इति बङ्गदेशचलितदाय-
भागदायतत्त्व-दायभागटीका-दायक्रमसंग्रह विवादावर्षवसेतु-विवादमङ्गार्थवादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

ऊहया कन्यया वापि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।

भर्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभा-
गादि(दाभा० पृ० ७६)ग्रन्थवृत्तकाव्यायन(कास्पृ० ६०१ । पृ० १०६)
यचनम् ॥१॥

विवाहकाले तत्पूर्वापरकाले वा स्थिते यस्मिन् पित्रा दत्तं तत्र तु घने
प्रथमं कुमार्यास्तदनन्तरमूढायाः पुत्रवतीसम्भावितपुत्रयोस्तदनन्तरं च
यन्ध्याविधवयोश्चाधिकारः । सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रादेर्योक्तुक्तघनवत् क्रमेशा-

धिकारः—इति दायक्रमसंग्रहः (पृ० २३) विवादाग्न्यवसेत्वादिति (पृ० ५७) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तत्र यौतुकधने इति अस्तुत्य सर्व्वदुहित्रभावे पुत्रस्याधिकार इति । पुत्रभावे दोहित्रोऽधिकारीति । दोहित्रभावे प्रपौत्रस्तदभावे प्रपौत्र इति । तदभावे सपत्नीपुत्र इति । तदभावे सपत्नीपौत्रस्तदभावे सपत्नीप्रपौत्र इति । एतत्सर्व्व्यन्ताभावे ब्राह्मदेवार्पगान्धर्वप्राजापत्यारन्यविवाहपञ्चकलभ्ययौतुकधने भर्तृधिकारः—इति दायक्रमसंग्रहः (पृ० १६।२०) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥
वन्धुदत्तं तथा शुरुक्रमन्यायेयक्रमेव च ।

अप्रजायामतीताया धान्यशस्तदधानुयुः ॥—इति दायभाग-
(पृ० ६२) दायक्रमसंग्रहः (पृ० २०) विवादाग्न्यवसेतु (पृ० ६०) विवादभङ्गा-
र्णवादि (२ विवा० ४१५ क) ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (१।२।१४५) वचनम् ॥४॥

वन्धुदत्तमिति मातापितृभ्यां यदत्तम्, अतएव तत्पुत्राश्च भ्रातर एव
धान्यवाः तदाह वृद्धकात्यायनः—

पितृभ्याञ्चैव यदत्तं दुहितुः स्थावरं धनम् ।

अप्रजायामतीताया भ्रातृभ्यामि तु सर्वदा ॥ इति

मर्ज्जदापदेन ब्राह्मदिपैशाचान्तविवाहिताया अप्रजाया धनं भ्रातृ-
भ्यामेव भवतीति । स्थावरपदाद् दण्डापूपन्यायादेवापरस्य धनस्य सिद्धिः ।
वन्धुदत्तपदेन कन्यादद्यायां यत् पितृभ्यां दत्तं तदुच्यते—इति दायभाग-
(पृ० ६२) ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

प्रथमं सोदराणां तदभावे मातुः मातुरभावे पितुः एषां पुनरभावे
तस्मिन् भर्तुः—इति दायभागः (पृ० ६५) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥६॥

अङ्गरेजीशन्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिदशिकाष्टदशशताब्दीयज्ञानवरीयमासी-
यचतुर्दशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३३४१ लं .

१६—रोवकारी मिछिल शहर देओयानि आदालत सो० कलिकाता आदालत मजकुरे हाकिम श्रीयुतरिचार्ड ओयालपोल साहेबेर बैठके । तारिक ६ माह जानेर ई सन १८३३ साल मोता-बके बाङ्गला २७ माह पौष १२३६ साल दिवस बुधवार—

मोछर्मात लक्ष्मीप्रिया

आपीलएट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ जयचन्द्रचौधुरि, रेप्पाडेएटान

आपिलएटेर उकिल मचसि होसन आलि ओ हाजिर रेप्पा-डेएटेर उकिल सदासुकपण्डित हाजिर आइल, आर द्वितीय रेप्पाडेएट जयचन्द्रगय इयानामनामा ओ इस्ताहारनामा जारिते ओ खोद किम्बा उकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ । एइ मकईमा गते नवम्बर मासेर २६ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया नातिसि आरजि प्रभृति कागजात ना प्रिविन्धियाल कोटेर फयदला पर्यन्त ओ ए आदालतेर कागज-पत्र पढा हइया आपीलएटेर उकिलेर उक्त उदाहरण सेरेस्ता हइते बाहिर करनेर हुकुम छादैर हइया मुततयि छिल, अद्य करुणामयी ओ गणरह आपीलएटान ओ जयचन्द्रचौप ओ गणरह रेप्पाडेएटान ३०२६ तम्बरेर मोकई-मार कागजपत्र आर कमलाकान्त राय ओ गणरह वन्ताम गङ्गा-चरणसेन खास आपीलेर दरखास्त ओ ताहार सम्पर्तीय कागज-पत्रेर सहित आमार बैठके दरपेय हइया एइ दुइ मकईमार कोन-कोन कागज विशेषत एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था सकल प्रगाढ दृष्टे दृष्टी करा ओ पढा गेल । एवं एइ आदालतेर सन १८२७ सालेर २० ओ २८ नवम्बर तारिखेर लिखित दुइ केता रोवकारि ओ व्यवस्था एइ आदालतेर पण्डितेर कालीप्रसाद-राय छाएलेर मोकईमार ओ जे रेप्पाडेएटेर उकिल दुइ २ टाका किम्मेतेर फेरस्त तिन केतार द्वाराय दाखिल करिलेक, ताहा पढा गेल । तत्परे आपिलएटेर उकिलके जिज्ञाशा गेल ये पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथ कोन वतसरे, कि जयदुर्गार वर्तमाने, कि ताहार

मृत्यु पर जन्म हय । जथोयाव दिलेऊ ये सन १२२६ साले जय-
दुर्गार मृत्यु हय । ताहार मृत्यु पर सन १२३० साले पूर्णिमार
पुत्र व्रजनाथेर जन्म हय । योध हइल ये आपीलाष्ट जेला रङ्गपुर
ओ दिनाजपुरर संक्रान्तेर परगणे वयनपुर ओ गणरहर ग्राममफल
दाविर वस्तु हिस्या चारि आना पाच गण्डार दखल पाओनेर
दाविते एइ एजेदारे नालिस करे ये मुदाइयार स्वामि कृष्णचन्द्र-
चौधुरि पित्तामह मदाशिवचौधुरि दुइ पुत्र; प्रथम मुदाइयार
स्वामिर पिता रामचन्द्र, द्वितीय रामानन्द, मदाशिवेर मृत्यु पर
ताहार जमिदारि ओ गणरह ताहार दुइ पुत्र उभये विभाग पाइया
रामचन्द्र ज्येष्ठप्रयुक्त रकम नय आना, आर रकम मात आना
रामानन्देर हिस्या निर्धारित हय । रामचन्द्र तिन पुत्र कृष्णचन्द्र
ओ हरिश्चन्द्र ओ कृष्णानन्दके ओयारिप आर ऐ नय आनार
कम त्यक्त वस्तु राखिया मृत्यु हय । आर उभयेर विभागानुसारे
मुदाइयार स्वामी कृष्णचन्द्रके रकम चारि आना पाच गण्डा
आर कृष्णानन्द ओ हरिश्चन्द्रके रकम चारि आना पनरो गण्डा
पीछिल । एवं प्रत्येक आपन २ हिस्यार पर दखिलकार हइल ।
मुदाइयार स्वामि कृष्णचन्द्र दुइ छि, मुदाइया ओ जयदुर्गा एवं
मुदाइयार गर्भजात कन्या पूर्णिमा आर जयदुर्गार गर्भजात नाथा-
लक पुत्र कीर्त्तिचन्द्रके राखिया सन १२१२ साले मृत्यु हइले
कीर्त्तिचन्द्रेर नाम जारि हइले सन १२२० साले कीर्त्तिचन्द्रेर मृत्यु
हय । ताहार पर जयदुर्गार नाम जमिदारि ताहुते लेखा जाय ।
किन्तु मुदाइया ओ जयदुर्गा दुइ जतेइ एक अक्के जमिदारि
पर दखिलकार एवं उमुल तहसिलेर कर्मकर्ता छिल । परे सन
१२२६ सालेर पौष माहाते जयदुर्गारो मृत्यु हय । आर शास्त्रा-
नुसारे विरधीय जमिदारी मुदाइयार एवं ताहार दौहित्रेर सत्त
आछे । भैरवचन्द्र मुदाइयालेहे जथोयाव देय ये शास्त्रानुसारे
जयदुर्गार ओ कीर्त्तिचन्द्रेर पिण्डाधिकारि एवं बलवर्त्त ओयारिस
आमि इति ।

ब्रजनाथ राखे, कि कृष्णचन्द्रेर वैमात्रेय भ्राता हरिश्चन्द्रेर पुत्र
भैरवचन्द्र राखे । धार कृष्णचन्द्रेर त्याग्य वस्तु इहारदिगेर मद्धे
कोन व्यक्तिके पीछे—जओयाव दुइ समाह मद्धे लेखेन—एइ
आदालतेर पण्डितके हाओला करा जाय—इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतिचाडंओआलपोलसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितैतदब्दोयज्ञानवरीमासीयनवमदिवनीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिक-
पत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयत्रिंशत्तमदिनसम्बन्धिब्रुवयासरे मया प्राप्तं तदव-
लोक्य माहशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य कृष्णचन्द्रस्य पार्ष्वणश्राद्धगृह-
दानादिक्रियाकरणक्षमतां मृतस्य कृष्णचन्द्रस्य दौहित्रोऽर्थात् पूर्णिमापुत्रो
प्रबनाय एव रक्षति, न तु कृष्णचन्द्रस्य वैमात्रेयभ्रातुर्हरिश्चन्द्रस्य पुत्रो
भैरवचन्द्रः, एवं कृष्णचन्द्रस्य त्यक्तधनम्, यत्तन्मरणानन्तरं तत्पुत्रेण कीर्ति-
चन्द्रेण कीर्तिचन्द्रस्य मरणानन्तरं तन्मात्रा जयदुर्गाया च प्राप्तम्, तदने
यदि कीर्तिचन्द्रस्य भ्रातुर्जयदुर्गाया मरणसमये कीर्तिचन्द्रस्य भगिन्याः
पूर्णिमायाः कश्चिदेकोऽपि पुत्रोऽर्थाद् प्रबनायोऽन्यः कश्चिद् वा गर्भे व्यवस्थितो
भूमिष्ठो वा आसीत् सदा तस्याधिकारः । जाते च तस्याधिकारे पुनस्तत्स्य-
मानानां तदभ्रातृन्तराणामर्थात् कीर्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रान्तराणामप्यधि-
कारः समान एव भविष्यति । कृष्णचन्द्रस्य मरणानन्तरं तत्त्यक्तधनमुत्तरा-
धिकारित्वेन तत्पुत्रेण कीर्तिचन्द्रेण प्राप्तम्, अतस्तदनेकीर्तिचन्द्रस्यैव जातम् ।
अतस्तस्मिन्प्राप्तव्यवहारे अकृतविवाहे च मृते सति तस्य पुत्रमारभ्य
पितृपर्यन्ताभावेन तत्त्यक्तधनं तन्मात्रा जयदुर्गाया उत्तराधिकारित्वेन प्राप्त-
मपि जयदुर्गामरणोत्तरं कीर्तिचन्द्रत्यक्तधनं कीर्तिचन्द्रस्य मरणानन्तरं ये
कीर्तिचन्द्रस्योत्तराधिकारिणस्तेषामेव भवति, यथा पुत्रपौत्रपौत्ररहितस्य मृत-
स्य घने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि पत्न्या मरणोत्तरं
पत्न्यनन्तरं पत्युयै उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तदने भवति, तथा पुत्रमारभ्य

पितृपर्यन्तरहितस्य मृतस्य धने मातृस्त्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि मातृर्म्मरणोत्तरं मात्रनन्तरं पुत्रस्य ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्धनं भवति ।

प्रकृते तु कीर्त्तिचन्द्रस्त्रोत्तराधिकारिणां मध्ये कीर्त्तिचन्द्रस्य पुत्रमारभ्य वत्तिः कृष्णचन्द्रस्य प्रपौत्रपर्यन्तानां कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रादधाद् प्रजनाधात् पूर्वं कीर्त्तिचन्द्रस्य त्यक्तधनाधिकारिणां मध्ये इदानीं कश्चिन्ना-
स्तोति प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतयाऽवगमेन कीर्त्तिचन्द्रपितृदौहित्रा-
धिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्, सति च कीर्त्तिचन्द्रपितृदौहित्रे कीर्त्तिचन्द्रपितृव्य-
पुत्रस्य भैरवचन्द्रस्य नाधिकारः । यदि च कीर्त्तिचन्द्रस्य मातुर्जपतुगाया
मरणसमये कीर्त्तिचन्द्रस्यैकोऽपि पितृदौहित्रो गर्भे व्यवस्थितो भूमिष्ठो वा
नासीत्तदा कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्राणां स्वत्वान्पयानुपपत्त्या कीर्त्तिचन्द्रस्य
भगिन्याः पूर्णिमायास्तत्पितृदौहित्रोत्पत्तिमूलोभूतायास्तत्सम्बन्धमूलोभूतायाश्च
स्वपुत्रोत्पत्तेः प्राक्कालपर्यन्तं यथा पुत्रादिपक्षीपर्यन्तरहितस्य मृतस्य पितृद्धने
दुहितुरधिकारस्तथा भ्रातृधनेऽप्यधिकारः । सति च कीर्त्तिचन्द्रस्य पितृदौहित्रे
स्वतः कीर्त्तिचन्द्रस्य पितुः पार्ष्णश्राद्धपिण्डदातरि स्वतः कीर्त्तिचन्द्रस्य
पितुः पार्ष्णश्राद्धपिण्डदानानधिकारिण्याः कीर्त्तिचन्द्रस्य भगिन्याः पूर्णि-
माया नाधिकारः, किन्तु तस्याः पुत्रस्यैव, पुत्राणां चोपरिलिखितप्रकारेणा-
धिकारः— इति बह्वेदेशचलितमनुदायभाग-दायतत्त्व दायभागटीका-दायक-
मसंग्रह-श्राद्धतत्त्व-शुद्धितत्त्वविवादाणवसे-विवादभङ्गार्थादिग्रन्थानुसारिणी
व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्त्तते—इति मनुवचनम् ॥१॥

पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्यः मातामहेभ्यः प्रमातामहेभ्यः
वृद्धप्रमातामहेभ्यः सघोच्यताम्—इति श्राद्धतत्त्वादिग्रन्थः (अतः पृ०
२४३) भृतगोमिलवचनम् ॥२॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्तामावे पितृदौहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनि-
दौहित्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ ३॥

दृश्याद्वा तद्विभागः स्यादायव्ययविशोधितात्—इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतयाश्वल्लयवचनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ प्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो यन्धुः—इत्यादिदायभागादिग्रन्थधृतयाश्वल्लय-
वचनम् ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः॥--इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतयाश्वल्लयवचनम् ॥६॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, स्त्रीमात्राधिकारे अयमर्थो बोद्धव्यः—इति
दायभागग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही
तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्र (स्तदभावे)
पितृवैमात्रेयपुत्रः—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥८॥

यद्यपि दुहित्रभावे दौहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्त-
थापि तस्याः स्त्रोत्रेण पार्वण्यापण्डदातृत्वाभावाधिकाः, दुहितुस्तु
दौहित्रात् पूर्वमह्नादह्नात् सम्भवतीत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति-
भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥९॥

एतदन्दीयफेयरवरीमासीयपोडशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मयेयं व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीर्जयपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२०—रोयकारि मिस्त्रील शदर देओयानी आदालत मो० फजि-
काता आदालत मजकुरेर हाकीम श्रीयुत हेनरी सिकिसपीयेर
साहेबेर चेठके । तारिख १० जानेर इं सन १८३३ साल मोतावेक
वाङ्गला सन १२३६साल १६ भाष दिवस बुधवार—

शामरामदासवनाम वेहालचन्द्र मोतओफार छि, राधा-
चरण नाथालगेर भाता सुन्दरीदासी—

मोफलेप—

छापल हाजीर आइल । छापलेर छओयाल इ० सन १८३१
सालेर २० दिजम्बरेर लिखित जेला जिलहट्टेर एकटी जज-
साहेबेर फयदलार नाराजीर भोजेवातेर न्याय एइ मासेर १७
तारिखेर एइ आदालतेर हुकुम मोताबक जेला मजकुरेर तारिख
मजकुरेर फयदलार आर सादा कागजेर उपर एक केता व्यवस्था
सम्वलित, जाहा एइ मासेर २३ तारिखे दाखिल हइया छिल, अनु-
मोदने आइल । यद्यपि स्यात् तारिख मजकुरेर जजसाहेब मौछा-
फर फयदलार लेखा आछे जे काजोयार वस्तु दोकान मजकुर
मुर्दाआलेहेर स्वामीर स्वकृत थाकाते मुर्दाइ अर्थात् छापल
ताहार हकदार शाखागुजाइ हइते पारे ना । ए प्रयुक्त मोफनेशी
आपील मजुरि अथवा नामजुरि विषये चुदान्त हुकुम छादेर
हओनेर पूर्व हुकुम हईल जे छापलेर छओयाल एइ मोफर्दमार
फयदलार सम्वलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय
एइ हुकुमे जे जदि स्यात् दुइ भाता, एक जन प्राप्तव्यवहार, द्वितीय,
अप्राप्तव्यवहार, एकत्र थाके, आर आता प्राप्तव्यवहार आपन
सोपारिजित हइते दोकान कारवार जारि करे । ए प्रकारे छोट भाता
एमत दोकानेर किछु हिस्वार हकदार, एवं कि आन्दाज हइते
पारे कि ना-ताहार व्यवस्था एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण-
इति व्यवस्था दाखिल हओनेर परे कागजेर सामिल दरपेप हय—

श्रीर्जयतितराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिओयुतहेनरीविकिसपोवरसाहेबधर्माधिकरणा-
लिखितैतदन्दीयमानवरीमापीयत्रिरात्तमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रति-
रूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्धर्माधिकरणार्थिनिवेदनपत्रमेवद्विच.द्विपत्र-

निविष्टजपपत्रञ्च यत्तदन्दीयफेवरवरोमासीयचतुर्दशदिनसम्बन्धिवृद्धस्तितिवा-
सरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि द्वयोर्भ्रात्रोरेकत्रवाकिनोर्मध्ये एकः प्राप्तव्यवहारो द्वितीयधाप्राप्त-
व्यवहारो भवति, एवञ्च प्राप्तव्यवहारो भ्रात्रा स्वोपाज्जितधनात् इहे
वाणिज्यव्यापारं करोति, तत्र यदि प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्य-
व्यापारमूलीभूतस्वोपाज्जितधनं पैतृकादिषाधारणधनानुपघातेनोपाज्जितं
स्यात्, तदनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे कनिष्ठभ्रातुरपि शरी-
रायासश्चेद्यदेतत्तद्वर्माधिकरणाभिनिवेदनपत्रेणैवं प्रभुषमर्पितत्रयपत्रलि-
खितेन यद्यप्यर्थी कदाचिद् विवादस्यदीभूतवाणिज्यविषये कर्म कृतवान्
इत्यर्थिप्रत्यर्थिनोर्द्वयोरेव साक्ष्युपस्थापितवृत्तान्तेन ज्ञातमित्यनेन वावगम्यते
तदा तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्यं पञ्चधा विभज्य तत्र भागद्वयं कनिष्ठ-
भ्रातुर्मर्षितुमर्हति, साधारणपैतृकादिधनानुपघातेन स्वशरीरायासेन च
प्राप्तव्यवहारस्य ज्येष्ठभ्रातुस्तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपाज्जितधने अंश-
द्वयाधिकारित्वेन कनिष्ठभ्रातुरेकांशाधिकारित्वात् । अतएवैतादृशसाधारण-
धनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे द्वयोर्भ्रात्रोः शरीरायासत्त्वेन
पञ्चधाविभक्ततद्व्यापारोत्पन्नधने कनिष्ठभ्रातुरंशद्वयाधिकारित्वस्य शास्त्री-
यत्वात् । यदि च प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपा-
ज्जितधनं साधारणपैतृकादिधनानुपघातेन नाज्जितं स्यात् सदा साधा-
रणपैतृकादिधनानुपघाताज्जितं धनं ज्येष्ठभ्रातुरेवासाधारणं जातम् ।
अतस्तदनेन कृतो यो वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारे यदि भ्रातृत्वेनांशि-
त्वेनार्थात् साधारणप्रतियोगित्वेन कनिष्ठभ्रातुः शरीरायासस्तदा
तद्वाणिज्यव्यापारोत्पन्नद्रव्ये कनिष्ठभ्रातुस्तृतीयांशाधिकारः, ज्येष्ठभ्रातुरसा-
धारणधनशरीरायासाम्यां तदनोपाज्जितत्वेनांशद्वयाधिकारित्वेनशरीराया-
समानकर्तुः कनिष्ठभ्रातुस्तृतीयांशाधिकारित्वस्य शास्त्रीयत्वात् ।
यदि च प्राप्तव्यवहारेण भ्रात्रा तद्वाणिज्यव्यापारमूलीभूतस्वोपाज्जित-
धनं साधारणपैतृकादिधनानुपघातेन नाज्जितं स्वादेव तदनेन कृतो यो
वाणिज्यव्यापारस्तत्र व्यापारेऽपि भ्रातृत्वेनांशित्वेनार्थात् साधारणप्रति-
योगित्वेन कनिष्ठभ्रातुः शरीरायासोऽपि नासीत्, यदि चेत् शरीरायासस्तदा

सोऽपि भृत्यत्वेनार्थाद् वेतनप्राप्तित्वेन, यत्प्रभुसमर्पिततत्रयप्रल्लिखित-
सिद्धीदासोपत्यर्थिनीनिर्दिष्टोत्तरपत्रलिखिततात्पर्यार्थेनार्थाद् अर्थी तदा-
णिव्यव्यापारे भृत्यत्वेनार्थाद्देतनं गृह्यत्वा गुमास्ताशब्दप्रतिपाद्यत्वेन स्थित
इत्यनेनावगम्यते तदा तद्वाणिव्यव्यापारोत्तरपत्रद्रव्ये कनिष्ठभ्रातुरंशित्वेन
किञ्चिदपि ग्रहणाधिकारिता नास्ति, साधारणपैतृकादिधनाद्यनुपघातेन
स्थोपार्जितधनस्य ज्येष्ठभ्रातुरसाधारणधनत्वेनासाधारणस्वत्वात्सदीभूतेन
तेन धनेन कनिष्ठभ्रातुर्भ्रातृत्वेनांशित्वेनार्थात् साधारणप्रतियोगित्वेन
शरीरायासमन्तरेण ज्येष्ठभ्रातृकृततद्वाणिव्यव्यापारोत्तरपत्रद्रव्ये ज्येष्ठभ्रातु-
रेवासाधारणसत्त्वेन, तत्र कनिष्ठभ्रातुस्साधारण्याप्रतियोगिनः किञ्चिदपि स्व-
त्वाभावात्—इति चन्द्रदेशान्तर्गतश्रीदृष्टप्रदेशप्रचलितदायभागदायतत्त्व-
दायभागटीकादायकमसंग्रहविवादाखण्डसेतुविवादभङ्गाखण्डादिग्रन्थानुसारिणो
व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

साधारण समाप्तस्य यत्किञ्चिद्दाहनायुधम् ।

शौर्यादिनाप्नोति धनं भ्रातरस्तत्र भागिनः ॥

तस्य भागद्वयं देयं शंपास्तु समभागिनः—इति दायमागादिग्रन्थ-
भृत(दामा० पृ० १०७)व्याख्यचनम् ॥ १ ॥

यत्र पुनः साधारणधनमात्रेणैकस्य व्यापारोऽपरस्य धनशरीरायासा-
भ्यां तत्रैकस्यैको भागोऽपरस्य भागद्वयं न्यायावगतमेव निवृद्धम् । एतेन
चेतदपि सिद्धयति यत् साधारणधनोपघाते सति यस्य दायतोंऽशस्य
स्वल्पस्य महतो वोपघातस्तस्य तदनुसारेण भागकल्पना कार्या—इति
दायभाग(पृ० १०६।११०)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

तस्मात्साधारणधनोपघाताज्जितं धनं विभजेदिति विधिः—इति दाय-
भाग(पृ० ११५)ग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

तस्मादनुपघाताज्जितमर्जकस्यैव, नेतरेषामिति सिद्धम्—इति दाय-
भागग्रन्थलिखनम् (पृ० ११२) ॥ ४ ॥

एवं यत्रैकेन शरीरव्यापारमात्रेणोपघाते च स्वधनशरीरायासाभ्याम-

जितं तत्र शरीरायासमात्रेणाज्जकस्यैकांशित्वं घनशरीरायासान्ध्यामुज्ज-
कस्य द्वयंशित्वं न्यायसांम्यात्—इति दायक्रमसमग्र (पृ० २८) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥ ५ ॥

विभक्तेनाधिभक्तेन वा साधारणधनानुपधातेनापरव्यापारनैरपेक्ष्येण
च यदजितं तदज्जकस्यैव तदविभाज्यमितरेः—इति दायक्रमसमग्रग्रन्थ-
(पृ० २९) लिखनम् ॥ ६ ॥

एतद्वदीयमार्चमासीयचतुर्दशदिनसम्बन्धिवृहत्तरतिवासरे मयेयं व्य-
वस्था दत्तेति—

श्रीज्जयतितराम्—

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३३२५ लं—

२१—रोषकारी मिडिल सहर देओयानि आदालत मजकुरेर
हाकिम श्रीयुत हेनरि सिक्सपीएर साहेबेर बैठके, तारिख ५
फिब्रेल ई सन १८३३ साल गोतावेक यादगला सन १२३९ साल
तारिख २५ माघ दिवस मङ्गलवार—

गोशाजीचन्द्रकविराज

आपीलाएट

मोद्धर्मांत जयमनी जीवतमान

ओ कृष्णमणि मोतओफात

रेप्पाडएटान

आपीलाएटेर एकिल मुनशी हयदर आलि ओ रेप्पाडएटानेर
मध्ये जीवतमान एक जन मोद्धर्मांत जयमणिर एकिल मुनशी
गोलाम यतुल हाजिर आइल । एवं इस्तहारनामा जारि हओयाते
ओ कृष्णमणा मोतओफात रेप्पाडएटेर कोनो ओयारिश ए
आदालते हाजीर आइल ना । एइ मोद्धर्मा इत पूर्व ई० सन
१८३२ सालेर शेतम्बर माहार ० तारिखे आमार बैठके रोक्क-
कार एवं साम्यक फामजात पढा हइया तारिख मजकुरेर
रोक्कारि लिखित मते एइ आदालतेर एण्डितेर स्थाने व्यवस्था

तलब हइया आर व्यवस्था पौछिले पर गतो कल्य दरपेप हइया ताहार अनुमोघनान्ते दिवावसान प्रयुक्त मुलतवि छिल, अद्य मुनराय दरपेप हइल । एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार लिखित यओयावेर द्वाराय एइ मोकद्दमार आशल मुद्दाइयान मोछ्मर्मात कृष्णमणी ओ जयमनीके भैरवकविराजेर तरफेर जोवानि हेवार सत्त्वतार विषये जेलार आदालतेर व्यवस्था बहाल हइते छे । किन्तु जेलार फयल्लार द्वाराते, याद्व प्रविनशीयान कोटेर तजविज कालिन बहाल हइयाछे, प्रकाश ह्य ना ये कृष्णमणीर हक भैरयेर हेवार बुनियादे किम्बा आपन पिता गङ्गानारायणेर उन्नाधिकारिर हकेर बुनियादे डिगारि हइयाछे । ये कारण फयल्लता मजकुरेते उहार हक दुइ प्रकारेइ जम् (१) हइयाछे, आर एइ ज्ये एइ गिराय मोकद्दमार तजविजे मातबर हइयाछे ये हेतुक मोछ्मर्मात कृष्णमणीर प्रविनशीयान कोटेर फयल्लतार पर मृत्यु हइयाछे, परे एइ विशयेर तलास आर तजविज उचित ये कृष्णमनीर हिस्सार पर उभय विवादिर मध्ये कोन व्यक्ति हकदार हइते पारे । आर पण्डितेर व्यवस्थार द्वाराते प्रकाश ये यद्यपि स्यात् मोछ्मर्मात कृष्णमणी विवादीय वस्तु हेवार द्वाराय पाइया थाके, वस्तु मजकुरा ताहार स्वीधन हइवेक, आर उहाके स्वेमता आछे ये आपन इतला मते हस्तान्तर करिते पारे, ये प्रकार जयमनी रेप्पाडण्ट एइ आदालतेर आपीलेर मौजेवातेर जओयावे ताहा उहाके हेवाकरण प्रकाश करियाछे । आर यदि स्यात् विवादीय वस्तु मोछ्मर्मात मजकुराके पितृ उन्नाधिकारिर सुरते पौछियाछे, आर आपीलाण्टेर पिता वैद्यनाथेर परे, ये प्रकार मोकद्दमार कागजातेते प्रकाश, मोछ्मर्मात मजकुरार मृत्यु हइयाछे, तवे ए प्रकारे पण्डितेर व्यवस्था मते मोछ्मर्मात कृष्णमणीर हकीयतेर हकदार ना आपीलाण्ट ना रेप्पाडण्ट हइते पारे । यदि गङ्गानारायणेर ओयारिप, ये केहो थाके, उहार हक राखिवेक । एइ सकल विशयेर प्रति

दृष्टि हुकुम हुईल, ये जयमणीर प्रकाश करा मोद्यर्मांत कृष्णमणोर
 हेवार विषये ये प्रकार एइ आदालतेर आपोलेर मोजेवातेर
 यओयावे लिखियाळे, रेण्पाडयेदेर स्थाने साबुद तलवेर पूर्व एइ
 आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञाशा करानाय वे यदि स्यात्
 कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि उत्तराधिकारिर एवं दानेर दुइ
 युनियादे दरपेप करे, आर दुइ मतेइ डिगिर हासिल करे, आर
 सत्यरे आपन हकीयत दोशराके हेवा करिया मृत्यु करे-ए प्रकारे
 एमत हेवा सिद्ध हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम

एतद्घर्माधिकरणाधिपतिभोयुनहेनरीठिकिसरीवरसाहेवधर्माधिकर-
 णलिखितैतदन्दीयफेवरवरीमासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरू-
 पपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयपञ्चविंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं
 सदवशोक्य यादृशबोधो आतस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि काचित् स्त्री धनस्य प्राप्तीञ्छापुर्व्वकाभियोगमुत्तराधिकारित्वदाना-
 न्मां करोति, एवमुत्तराधिकारित्वदानान्मां ह्याभ्यामेव हेनुम्मां धर्माधिकर-
 णतो जपरत्रं प्राप्नोति, तदनन्तरं धर्माधिकरणोपबयरात्रानुसारेण स्वस्व-
 त्वात्तदीभूतधनमन्यस्मै दत्त्वा भूता स्वात्तदैतादृशदानं सिद्ध्यत्येव, उत्तरा-
 धिकारित्वदानान्मां ह्याभ्यामेव तस्याः स्वस्वत्वं तदने निश्चितत्वेन द्वयोर्मध्ये
 दानस्यापि तत्स्वत्वोत्पादकस्य सत्त्वात् । एतद्विवादरिपनिनिशास्मदुत्त-
 प्राश्नोन्वयवस्थालिखितप्रकारकतदानानुसारेण तस्यास्मिन् सीदाधिकस्त्री-
 धने स्वेच्छया दानाधिकारस्य निष्प्रत्यूहत्वात्—इति बह्वदेशचलितोपरि-
 लिखितव्यवस्थालिखितग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

तद्व्यवस्थालिखितग्रन्थमप्रमाणं पठप्रमाणञ्चेति । एतदन्दीयमान्च-
 मासीयादादयस्त्रिंशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
 श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२२—रोवकारि मिसिल सदर द्दओयानी आशालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबेर बैठके । तारिख २० फिबरेल ई सन १८३३ साल मों वाज्रला सन १२३६ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

मोक्षर्मात लक्ष्मीप्रिया

आपीलाएट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह

रेप्पाडेएटान्

आपीलाएटेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेप्पाडेएटर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल । आर द्वितीय रेप्पाडेएट जयचन्द्रचौधुरि इयानामा ओ इस्वाहारनामा जारि हओयातेओ सयं किम्बा उकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ । एइ मफर्द्मा गतो जानेर माहार ६ तारिखे आमार बैठके रोवकार एवं एइ मफर्द्मार साम्यक कागजात आर ३०२६ लम्बरेर मफर्द्मार कागजात आर कमलाकान्तराय ओ गयरह वनाम गङ्गाधरणसेनेर खास आपिलेर छओयाल ओ तत्समिभ्यारि कागजात पडा हइया तारिख मजकुरेर रोवकारि लिखित छओयालेर जओयाव एइ पण्डितेर स्थाने तलब हइया मुलतवि छिल, अब एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव दाखिल हओने पुनराय रोवकार आर गतो जानेर माहार २६ तारिखे अनुमोघन हओया भैरवचन्द्र रेप्पाडेएटर छओयाल अनुमोघने आइल । तत्परे हाजिर रेप्पाडेएटर उकिल सदासुखपण्डित मोट आपिलेर दाखिल करा रेप्पाडेएटर छओयालेर नकल एक केता दुइ टाकार किम्मेतेर एक केता फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करे, पडागेल । यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव हइते प्रकाश आछे ये कृष्णचन्द्रेर पुत्र किर्त्तिचन्द्रेर त्यार्य वस्तु, ये ताहार माता जयदुर्गाते आसिया, जयदुर्गार मृत्युते किर्त्तिचन्द्रेर भग्नी पूर्णिमार पुत्र प्रजनाथके अर्शे । किन्तु रेप्पाडेएटर उकिल जाहेर करे जे विवादीय जायेगा जयदुर्गार मृत्यु हओने भैरवचन्द्रेर दखले आइसे । एवं एखन

दृष्टि हुकुम हृदय, ये जयमणोर प्रकाश करा मोक्षमार्ग कृष्णमणोर
 हेवार विषये ये प्रकार एइ आदालतेर आपीलेर मीजेवातेर
 यओयावे लिखियाळे, रेप्पाडण्टेर स्थाने साबुद तलवेर पूज्वं एइ
 आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिज्ञाशा करायजे ये यदि स्यात्
 कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि उत्तराधिकारिर एवं दानेर दुइ
 युनियादे दरपेय करे, आर दुइ भतेइ डिगिर हासिल करे, आर
 तत्वेर आपन हकीयत दोशाराके हेवा करिया मृत्यु करे-ए प्रकारे
 एमत हेवा सिद्ध हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिभोयुत्रहेनरीसिकितरीवरसाहेवधर्माधिकर-
 णलिखितैतदन्दीयफेवरयरीमासोयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतमर्शनप्रतिरू-
 पपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयषड्विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं
 तदयलोक्य पादशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

‘यदि काचित् स्त्री घनस्य प्राप्तीन्द्वापूर्वकाभियोगमुत्तराधिकारित्वदाना-
 भ्यां करोति, एवमुत्तराधिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव हेतुभ्यां धर्माधिकर-
 णतो जयपत्रं प्राप्नोति, तदनन्तरं धर्माधिकरणोपजयवानुसारेण स्वस्व-
 त्वात्तदीभूतघनमन्यस्यै दत्त्वा मृता रथात्तदैवाहयदानं सिद्ध्यत्येव, उत्तरा-
 धिकारित्वदानाभ्यां द्वाभ्यामेव तस्याः स्वत्वस्य तदने निश्चितत्वेन द्वयोर्मध्ये
 दानस्यापि सरस्वतोत्पादकस्य सत्त्वात् । एतद्विषयविषयनिविश्रमहस-
 प्राचोनध्यवस्थालिखितप्रकारकतद्दानानुसारेण तस्यास्मिन् सोदाधिकारी-
 घने स्वेन्द्रया दानाधिकारस्थ निष्प्रत्यूहत्वात्—इति वङ्गदेशचलितोपरि-
 लिखितव्यवस्थालिखितग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

तद्व्यवस्थालिखितवचनप्रमाणं पठप्रमाणञ्चेति । एतदन्दीयमान्च-
 मासीयाष्टादशदिनसम्बन्धिमंगलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
 श्रीचैद्यनाथमिश्रेण

२२—रोवकारि मिसिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरे हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपोल साहेबेर बैठके । तारिख २० फिवरेल ई सन १८३३ साल मों वाङ्गला सन १२३६ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

मोछर्मात लक्ष्मीप्रिया

आपीलाष्ट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह

रेप्पाडेष्टान्

आपीलाष्टेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेप्पाडेष्टर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल । आर द्वितीय रेप्पाडेष्ट जयचन्द्रचौधुरि इयानामा ओ इस्ताहारनामा जारि हओयातेओ सय किम्बा उकिलेर द्वाराय हाजिर नाइ । एइ मकहमा गतो जानेर माहार ६ तारिखे आमार बैठके रोवकार एयं एइ मकहमार साम्यक कागजात आर १०२६ लम्बरेर मकहमार कागजात आर कमलाकान्तराय ओ गयरह वनाम गङ्गाचरणसेनेर खास आपिलेर छओयाल ओ तत्समिभ्यारि कागजात पढा हइया तारिख मजकुरे रोवकारि लिखित छओयालेर जओयाय एइ पण्डितेर स्थाने तलब हइया मुक्ततवि छिल, अद्य एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाव दाखिल हओने पुनुराय रोवकार आर गतो जानेर माहार २६ तारिखे अनुमोधन हओया भैरवचन्द्र रेप्पाडेष्टर छओयाल अनुमोधने आइल । तत्परे हाजिर रेप्पाडेष्टर उकिल सदासुखपण्डित क्रोट आपिलेर दाखिल करा रेप्पाडेष्टर छओयालेर नकल एक केता दुइ टाकार किम्भतेर एक केता फिरिस्तिर द्वाराय दाखिल करे, पढागेब । यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर जओयाय हइते प्रकाश आछे ये कृष्णचन्द्रेर पुत्र किर्त्तिचन्द्रेर त्यार्य्य वस्तु, ये ताहार माता जयदुर्गाते आसिया, जयदुर्गार मृत्युते किर्त्तिचन्द्रेर भग्नी पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथके अर्शे । किन्तु रेप्पाडेष्टर उकिल जाहेर करे जे विवादीय जायेगा जयदुर्गार मृत्यु हओने भैरवचन्द्रेर दखले आइसे । एयं एखन

पर्यन्त ताहार दखले आछे, आर पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर मृत्यु हइयाछे । आर मोछर्मात, पूर्णिमार सेत्रो रोग आछे, शास्त्रानुसारे वैमात्रेय भ्रातार किम्बा ताहार पुत्रेर त्याग्य वस्तु अधिकारित्व राखे ना । एतदभिन्न मोछर्मात पूर्णिमार विवाह, जाहार सहित निःश्राय्य हइयाछिल परे ताहार सहित ना हइया अन्य व्यक्ति सहित विवाह हइया पुत्र उत्पत्ति हय, आर ए प्रकार की एवं पुत्र पार्वण्ये आद्वे ओ पूर्वपुरुषेर त्याग्य वस्तु अधिकारि हय ना, आर जखन मुदाइआनेर दाधि कोटेर पण्डितेर व्यवस्था लिखित, ये लक्ष्मीप्रियार विवादीय जायगार अधिकारित्व नाइ, दृष्टे डिसमिस हय खन रेप्पाडेण्टर ओजरेर तत्त ओ तदान्त करणेर आविश्यक थाकिल ना । जे प्रकार प्रिविसियान कोटेर फयछला ताहार दृष्टान्त आछे । आर आपीलाण्टेर वकिल जिहासा मते जाहेर करे ये पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर एइ दयणे मृत्यु हइयाछे, आर एखन पर्यन्त ताहार पुत्र हओनेर सम्भावना आछे, आर मोछर्मात मज्जकुरार विवाह दुइ बार हय नाइ, एवं ताहार सेत्रि रोग नाइ इति । यद्यपि स्यात् मोछर्मा निष्पत्त्य हओनेर पूर्वं विचार अनुसारे उभय विवादीर ओजर निष्पत्त्य करा उचित । ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोबकारि नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित छओयालेर जओयाव आगतो मिछिले लेखेन एइ आदालतेर पण्डितके समर्पन करा जाय ।

१ प्रथम—एइ ये यदि स्यात् पूर्णिमार पुत्र व्रजनाथेर जन्म हइया मृत्यु हइया थाके, तवे किर्त्तिचन्द्रेर त्याग्य वस्तु, याहा व्रजनाथके आसियाछिल, ताहा ताहार माताके अर्शे कि ना ।

२ द्वितीय—एइ ये पूर्वपुरुषेर वस्तुते उत्तराधिकारि वेक्ति सेत्रि रोग जन्य ताहार अधिकारित्वते प्रतिबन्धक हय कि ना । यद्यपि स्यात् उक्त सेत्रिरोग अधिकारित्वर प्रतिबन्धक हय, तवे

अत्र प्रमाणम्—

मृते पितरि न क्लीबः कुष्ठयुग्मत्तज्जडान्धकः ।

पतितः पतितापत्यं लिङ्गी दायांशमाग्निः ॥—इति दायभागादि-

ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥१॥

कुष्ठी अहतप्रायश्चित्तः । कृतप्रायश्चित्तस्य पापमावादंशित्वम्,
पापस्यैवानंशितामूलत्वादिति साम्प्रतम्—इति विवादमङ्गारवग्रन्थ-
(पृ० २१२ क) लिखनम् ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि पूणिमाया विवाहः केनचिद् व्यक्तिविशेषेण सह निन्दारितोऽपि
पूर्वकथावहिर्भावान्येन केनचित् सह विवाहो जातः स्यादेवं तेन पुरुषेण
पूणिमायाः पुत्रो जनितश्चेत्तदा तस्याः पूणिमायाः किंवा तत्पुत्रस्य कीर्त्ति-
चन्द्रायकधने एतद्विषयविषयनिविष्टारमहत्तुल्यव्यवस्थालिखितप्रकारेणा-
धिकारो भवत्येव—इति बह्वेधचलितोपरिलिखितव्यवस्थालिखितग्रन्था-
नुसारिणी व्यवस्था—

एतदन्वेषमात्रमालीयड्विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं
व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२१—रोवकारि मिल्लिल सदर देशोयानि आदालत मोकाम ।
कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत रिचार्ड ओयालपूल
साहेबेर बैठके, तारिक २० फिवरेल ई सन १८३३ साल मोतावेक
वाङ्गला सन १२३६ साल तारिख १० फाल्गुन दिवस बुधवार—

दुलारसिंह ओ गयरह

आपीलाखटान्

राणी पद्मावती ओ गयरह

रेण्याढखटान्

आपीलाण्टानेर उकिलान् मुनशी होशान आलि ओ मुनशी आन्वांय आलि आर राणी पद्मावती रेप्पाडण्टेर उकिलान् सदासुखपण्डित लाला वस्तिलाल हाजिर आइल ओ आपीलाण्टानेर उकिल मुनशी दादार बक्स ओ रेप्पाडण्टेर उकिल मुनसी गोलाम बतुल बेयारामी ओजरे हाजिर नाइ । एइ मोहूर्तमा एइ मासेर १४ तारिखे आमार बैठके रोवकार हइया प्रीविनशीयान क्रोटेर नालिसि आरजि ओ गयरह कागजात लम्बर पर्यन्त पडा हइया मुलतवि छिल, अथ पुनराय रोवकार हइया प्रीविनशीयान क्रोटेर बाकि कागजात फयल्लता पर्यन्त एवं एइ आदालतेर कागजात अनुमोघने आइल । बोध हइल ये आपीलाण्टान् सावेक मुर्दाइयान परगणे पीयाखालि ओ गयरह महालते खेराजी ओ नासेराजी दखल पाओनेर दाविते एइ एजहारे नालिस करे ये परगणे पीयाखालि ओ गयरह मुर्दाइयानेर पितामह गरिबदासेर हासिल करा, उक्त गरिबदाप ताहाते जिनहईशा पर्यन्त दखलिकार थाकिया पाच पुत्र हरिसिंह ओ जयसिंह ओ रत्नसिंह ओ भातुसिंह ओ अचलसिंह मुर्दाइयानेर पिताके राखिया मृत्यु हय । हरिसिंह ओ ताहार मृत्युर पर शुभकरणसिंह तस्य पुत्र आर शुभकरणसिंहेर मृत्यु, ये सन १२१६ सालेर फाल्गुन माहाते हइयाके, ताहार पर पहुपतसिंह आर पहुपतसिंहेर मृत्युर पर रङ्गलालसिंह भ्रातृगण ओ पितृव्यदिगेर अनुमति ओ एतर्फाके पितृ-पितामह त्याग्य वस्तुर पर एवं चकदेनाओरि ओ गयरहर उपर, याहा ताहार मुनाफा हइते खरिद हय, कावेज ओ दखलिकार एवं उसुल तहशीलेर कर्मकर्ता थाकिया, भ्रातृगण ओ पितृव्यदिगेर एवं मुर्दाइयानेर प्रतिपालन करिते छिल । रङ्गलालसिंहेरओ सन १२३२ साले निःसन्तान ओ अविवाहित विष्णु ओछी मोकरार मृत्यु हइल, आर मुर्दाइयान व्यतिरेक चहारदिगेर उत्तराधिकारि ओ पिण्डाधिकारि द्वितीय केह नाइ, एवं शाखानुसारे मृत रङ्गलालसिंहेर आर्द्ध ओ क्रिया-

कम्मे दुलारसिंह मुर्दाहर हस्तेते हइयाछे, इति । राणी पद्मावती मुर्दाआलेहे जओयाव देय ये परगणे पौयाखालि हरिसिंहेर हासील करा, आर चकदेनाओरि ओ गयरह मुर्दाआलेहेर स्वामी पट्टपतसिंहेर पिता शुभकरणसिंहेर खरिदा । मुर्दाआलेहेर स्वामी पुण्यपुत्र राखनेर विषये उहाके अनुमति देय आर रङ्गलालसिंह कर्त्तापुत्र राखनेर भार उहार प्रति अर्पन करिया एक केता ओझीयतनामा ऐ विषयेर लिखिया मृत्यु हय । आर पूर्व पुरुषेर श्राद्ध ओ क्रियाकर्मते आपनि अशक्त थाकन प्रयुक्त स्याय्य वस्तु र कर्त्तार उत्तराधिकारि ताहार स्याय्य वस्तु हइते नैरास हइते पारे ना । आर अमृतलाल ओ चरखीलाल ओ काली-प्रसाद ओ विशनलाल मुर्दाआलेहेर जओयावेर मजमुन फछल करिया जओयाव गुजराय । आर प्रीबिनसियान कोटेर सज-विज कालिन मुर्दाइआनेर दाबि डिसमिस हय । यदि स्यात् फागजात हइते प्रकाश ये मुर्दाइआनेर आशल दाबि रङ्गलालेर स्याय्य वस्तु दावत, आर गरिवदास ओ गयरहेर स्याय्य वस्तु उल्लिक करार कारण किरल (?) पूर्व पुरुषेर परस्पर मृत्यु र विवरण प्रकाश जन्य लेखा गिया छे । आर आपीलाएटानेर एजहार एइ ये उहारदिगेर घंशे मैथिलि शाख चलन आछे—उचित बोध हय । एवं देष्पाड्यटओ ताहाते अस्वीकार नहे । ए प्रयुक्त एइ मोकईमार एइ सजविज ओ रोषकरण ये रङ्गलालसिंह, ये अविवाहित ओ निःसन्तान मृत्यु हइयाछे, ताहार स्याय्य वस्तु उत्तराधिकारित्व सभय विवादि ओ सुतीय व्यक्ति मध्ये कोन व्यक्ति मैथिलि देशेर प्रचलित शाखानुजाइक राखे । परे हुकुम हइल ये एइ रोषकारि नकल एइ हुकुमे ये छओयालेर यओयाव ये विवादीय जमीदारी हरिसिंह हइते हरिमिंहेर पुत्र शुभकरणसिंहे आर शुभकरणसिंहेर मृत्यु पर शुभकरणसिंहेर ज्येष्ठ पुत्र पट्टपतसिंहे, आर पट्टपतसिंहे मृत्यु पर शुभकरणसिंहेर फनिष्ठ पुत्र रङ्गलालसिंहे विणा विभागे अशिल । तत्परे

रङ्गलाल निःसन्तान ओ अविवाहित मृत्यु हय, राखिल मुर्दाइयान
अचलसिंहेर पुत्रगण आर अर्जनसिंह रणसिंहेर पुत्र आर
तुलसीसिंह भातुसिंहेर पुत्र गरिवदासेर पुत्रगण हरिसिंहेर आत-
वर्ग आर मोछर्मात पद्मावती मुर्दाआलेहे पट्टपतिसिंहेर स्त्री आर
शुभकरणसिंहेर दौहित्र उपेन्द्रलाल ओ दयालाल ओ गिरिधारी-
लाल ओ प्रेमलाल ओ जनकलालके परे । मैथिलि देशेर प्रचलित-
शास्त्र अनुसार रङ्गलाल मजकुरेर स्याप्य वस्तु इहारदिगेर कोन
व्यक्तिके अर्शिके-एक सप्ताह मध्ये वचन दृष्टान्त सम्बलित
लिखेन एइ आदालतेर परिदवके समर्पन कराजाय-इति ।—

श्रीर्जयतिराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीपुत्ररिचार्डओग्रालपोलसादेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयकेवरवरीमासीयविशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्र-
तिरूपनं यत्तदन्दीयमान्धर्मासीयपोडशदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं
तदपलोमय यादृशबोधो बातस्तदनुसारेणोत्तरं निरूप्यते —

यदि विवादात्पदोभूतसराबकरस्थावर (धनं) हरिसिंहस्य मरणान-
न्तरं तत्पुत्रेण शुभकरणसिंहेन प्राप्तम्, शुभकरणसिंहस्य मरणान्तरं
तज्ज्येष्ठपुत्रेण पुहपतिसिंहेन प्राप्तम्, तन्मरणान्तरं तदभ्रात्रा रङ्गलाल-
सिंहेनायात् शुभकरणसिंहस्य कनिष्ठपुत्रेणाविभक्तत्वेन प्राप्तम्, तदनन्तरं
रङ्गलालसिंहोऽधिकारितो निःसन्तान एवाचलसिंहस्य पुत्रानपिनः एवं रण-
सिंहस्य पुत्रमर्जनसिंहं भातुसिंहस्य पुत्रं तुलसीसिंहं चैवं पुहपतिसिंहस्य
पत्नी पद्मावतीनाम्नो प्रत्यर्थिनो चैवं शुभकरणसिंहस्य दौहित्रानुपेन्द्रलाल-
दयालालगिरिधारीलालप्रेमलालजनकलालान् सरदय मृतः स्यात्तदा
रङ्गलालत्यक्तधने रङ्गलालस्य पुत्रमारभ्य तत्प्रपितामहपुत्रपर्यन्तानामर्थाद्
गरिवदासस्य पुत्रपर्यन्तानामध्ये यदि कश्चिद्वास्ति तदा रङ्गलालप्रपितामह-
गरिवदासपौत्राणामर्थादर्थिप्रभृतीनां प्रमुक्तप्रश्नलिखितानामधिकारो रङ्ग-
लालभ्रातृपत्नी पद्मावती यावज्जीवं स्वमर्तृकुलोपयुक्त्यासाञ्छादनस्यावश्यक-

विधवाधर्माद्याचरयोपयुक्तस्य चाधिकारिणी भवति—इति विधिलादेश-
चलितमनुविवादचिन्तामणिविवादरत्नाकरविवादचन्द्रकल्पतरुप्रभृतिग्रन्थानु-
सारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादिविवादचिन्तामण्यादिग्रन्थभृतयाशु-
बलक्य वचनम् ॥१॥

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।

यस्त्वासजतरस्तेषां सोऽनपत्यधनं हरेत् ॥—इति विवादचन्द्रविवाद-
रत्नाकरादि (वि० पृ० ५६६) ग्रन्थवृत्तस्ति (पृ० २१६) वचनम् ॥२॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् ।—इति मनु-
वचनम् ॥३॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे मातृ-
गामि तदभावे पितृगामि तदभावे आतृगामि तदभावे आतृपुत्रगामि
तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि—इत्यादि विवादचिन्तामण्यादि-
ग्रन्थभृतविष्णुवचनम् ॥४॥

बन्धुरत्र सपिण्डः सकुल्यः सगोत्रः—इति विवादचिन्तामणि(पृ०-
२१६)ग्रन्थलिखनम् ॥५॥

सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते—इत्यादि विवादचिन्तामण्या-
दिग्रन्थभृतवृत्तस्तिवचनम् ॥६॥

भरणं चास्य कुर्वीरन् स्त्रीणामजीवनक्षयात्—इति विवादचिन्ता
मण्यादि(पृ० २५०)ग्रन्थभृतशङ्खवचनञ्चेति ॥७॥

एतदन्दीपापरेलमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिवधवापरे मयेयं व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२४—रोयकारि मिसिल सदर देओयानि आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुक्त रिचार्ड ओयाज़-पोल साहेबेर बैठके । तारिख २५ आपरेल ई सन १८३३ साल मोताबके बाङ्गला सन १२४० साल तारिख १४ वैशाख दिवस घृहस्पतियार—

मसम्मात लक्ष्मीप्रिया

आपीलाण्ट

भैरवचन्द्रचौधुरि ओ गयरह

रेप्पाडेण्डान

आपीलाण्टेर उकिल मुनसि होसन आलि ओ हाजिर रेप्पा-
डेण्ड भैरवचन्द्रचौधुरि उकिल सदमुखपण्डित हाजिर आइ-
लेन, आर द्वितीय रेप्पाडेण्ड जयचन्द्रचौधुरि इयानामनामा ओ
इस्ताहारनामा जारि हेतु आपनि किम्बा उकिलेर द्वाराय ए
आदालते हाजिर नाइ । एइ मोकदमा भित्त २ दिवसे आमार बैठके
रोयकार हइया एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ओ फागजात
आर उभयेर दाखिल करा दरखास्तादी पढा हइया ब्रजनाथेर
पिताके दरखास्त दाखिल करण हुकुम हइया मुलतवि छिल, अर
पुनुराय रोयकार आर ब्रजनाथेर पिता गौरमोहनचट्टोपाध्याय
दरखास्त ओ ब्रजनाथेर माता मोसम्मात पूर्णिमार दरखास्त पढा
गेल । यदि स्यात् एइ आदालतेर पण्डितेर पूर्व्वर ओ एइ जनेर
व्यवस्थासकलेर द्वाराय प्रकाश आछे ये कीर्त्तिचन्द्रेर स्याय्य वस्तु
ब्रजनाथके, आर यदि स्यात् पूर्णिमार पुत्र ब्रजनाथेर जन्म हइया
मृत्यु हइयाथाके, तबे कीर्त्तिचन्द्रेर स्याय्य वस्तु, याहा उत्तराधि-
कारि हेतुते ब्रजनाथके अर्शियाछिल, यदि ब्रजनाथेर इस्तक पुत्र
ना(?)पिता केह ना थाके, तबे ताहार माताके अर्शे, आर शेत्रि-
रोगेर प्रायश्चित्त करणेते सेत्रो रोगी व्यक्ति उत्तराधिकारि बाधि-
त्य(?)पूर्व्वपुरुसेर विशयेते हय ना । किन्तु ब्रजनाथेर पिता गौर-
मोहनचट्टोपाध्याय वर्त्तमान आछे । आर मोक्षम्मात पूर्णिमा
जाहेर करे ये बिबादीय वस्तु आमार पितार स्याय्य वस्तु, ओ
ताहार विज पुरुसेर, एवं उक्त मोसम्मात सन्तान हओनेर आ-

२५ अपरेल ई सन १८३३ साल मोतावक चाङ्गला सन १२४०
साल तारिख १४ वैशाख दिवस बृहस्पतिवार—

गोपालस्यहायेर अलि नओयावराय आपीलाएट

मोछर्मात भ गवती कोडर ओ गयरह रेप्पाडएटान्

आपिलाएटेर उकिल सदासुखपरिहृत ओ निलवेश्वमेन
पडमेनष्टोन वेलि साइव, मोछर्मात भगवतीकोडर रेप्पाडएटेर
सरफ हइते आपन नामेर एक केता ओकालतनामा ओ मेहनत-
आनार आवत एक केसा रसिद २५० टाकार पइ आदालतेर
तहबिलदारेर दस्तखति सम्बलिस दाखिल करिया, ओ जिहु-
लाल रेप्पाडएटेर उकिल मुनशी फकिर महम्मद हाजिर
आइलेन । एइ मासेर १० तारिखे पइ मोकईमा आमार घैठके
रोखकार हइया नालिसि आरजि ओ गयरह प्रविनशीयान
क्रोटेर कागजात १७४ लम्बर पर्यन्त पढा हइया दिवाचसान
प्रयुक्त मुलतवि छिल । अछ पुनुराय रोखकार एवं प्रविनशीयान
क्रोटेर पाछी कागजान फयछला पर्यन्त ओ एइ आदालतेर
कागजात दृष्टे आइल बोध हइल ये आपीलाएट साबेक मुईइ
बिवादीय ग्रामसकलेर दखल पाओनेर दाविते एइ एजहारे
नालिश करे ये बायबायान छलतुण्डसिंह, ये सन्तानादि
राखितो ना, आपन सहोदर भ्राता बाय छलतुण्डसिंहेर कन्या
मोछर्मात राधामोहनकोडरके छलतुण्डसिंहेर अनुमतिमते
आपन सन्ताने आनिया प्रतिगलन करिया, छलतुण्डसिंह
मजकुरके कहिलेक ये आमि राधामोहनकोडरेर बिवाह ओ
कन्यादान करिवो, कन्या मजकुरेर गर्भे प्रथम ये पुत्र सन्तान
हइयेक आमार बिपयेर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक ।
ताहार जओयावे छलतुण्डसिंह एकरार करिल आर उहाके
अनुमति दल ये कन्या मजकुरेर बिवाह ओ कन्यादान करे;
कन्या मजकुरेर प्रथम सन्तान आमार ओ तोमार बिपयेर ओ
मालामालेर मालिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक । तदनुसारे

कन्यादान करिल । नओयावरायेर पिता पेयारिलालेर अनुमति ओ अभिप्राय मते उपरेर लिखित विषये कन्यार विवाह नओयावरायेर सहित देशो याइया पुरोहित ओ गयरहर मन्मुखे कुशो आर गङ्गाजंलेर सहित कन्यादान एवं पुत्रिकापुत्रे वचने संकल्प करिज । ये प्रकार राघामोहनकोडरेर पुत्र गोपालस्यदारे जन्म हओनेर पर चूडाकरण ओ कर्णभेद ओ गगरह दाँडा-सकल आमले आनिया मृत्यु हइल । मोद्धर्मात भगवतीकोडर आमासी कैरादिर दाधि ओ एजहार अस्वीकार एवं कलतुण्डसिंहेर रायन्नजराजसिंहके पुण्यपुत्र ओ कर्त्तापुत्र करण एवं ताहार दस्तावेज वहाके लिखिया देशोन आर वन्नराजसिंह मजकुरेर शाखानुसारे कलतुण्ड सिंह मोतओफोर क्रिया ओ कर्म करण सम्बलित जओयात्र दैय । विचारकालिन मुर्दाइर दाधि डिशमिष हय इति ॥ यदि स्यात् चूटान्त हुकुम हओनेर पूर्व शाखेर आज्ञा कलतुण्डसिंहेर गोपालस्यदार पुत्रिकापुत्र ओ वन्नराजसिंह पुण्यपुत्र ओ कर्त्तापुत्र हओनेर विषये द्योय करण उचित हइल । एजन्य हुकुम हइल ये एइ रोयकारिर नकल ओ आपीलाण्टेर साक्षीगणेर एजहार ओ वन्नराजसिंहेर कर्त्तापुत्रे ओ सन्तानेर दस्तावेज सम्बलित एइ हुकुमे एइ आशालतेर पण्डितके समापन करा जाय ये निचेर लिखित छओयाक सकलेर जओयाव पश्चिम देश प्रचलित शाखानुसारे एक सप्ताह मध्ये, यतो शीघ्र हइते पारे, लिखेन ।

१—प्रथम—एइ ये एइ क्षणकार समय अर्थात् कलियुगे निःसन्तान व्यक्तिर आपन सहोदर भ्रातार कन्याके सन्तानत्वे लओन यथार्थ हय कि ना ।

२—द्वितीय—एइ ये यदि स्यात् आपीलाण्ट ओ वदार साक्षीगणेर एजहार कलतुण्डसिंहेर कन्या राघामोहनकोडरके कलतुण्डसिंह आपन सन्तानत्वे लओनेर विषये ओ कन्यादान ओ पुत्रिकापुत्रे कया, समथत कलतुण्डसिंह ओ कलतुण्डसिंह

ओ नओयावरायेर पिता पेयारिलालेर सहित स्थिर हओने ताहार दांडासकले आमले आना, याहा मुर्दाआलेहेर अन्य २ साक्षीगण हइते ओ मुर्दाहेर साक्षीगणेर एजहारे ऐ विषये सत्यता करे, कलंतुण्डसिंहेर पुत्रिकापुत्र गोपालस्यहाय हइल कि ना ।

३—तृतीय—एइ ये यदि स्यात् गोपालस्यहाय पुत्रिकापुत्र हओने उक्त व्यक्ति कलंतुण्डसिंहेर त्याज्य वस्तु माजिक ओ पिण्डाधिकारि हइवेक कि उहार ओ भगवतीकोऊर ।

४—चतुर्थ—एइ ये अजरराजसिंहके कर्त्ता पुत्र करण ओ सन्तानेते लओने, ये से आपन पितार जेष्ठ पुत्र ओ ताहार वयक्रम ३० बत्सरेर अधिक एव कयेक सन्तान आछे, उचित किम्या ताहार सत्यताते उक्त व्यक्तिर पिता मातार अनुमति ओ वयक्रमेर निर्द्धार्य एवं आहमवर्गेर ओ हाकिमेर गोचरेर नियम आछे ।

५—पञ्चम—एइ ये यद्यपि अजरराजसिंह कर्त्तापुत्रेर पर आपन आसल पिता ओ मातार आद्ध ओ क्रियाकर्म करिया ताहारदिगेर त्याज्य वस्तु दखलिकार हइया थाके, सबे ताहार कर्त्तापुत्रता यथार्थ ओ बहाल याकिवेक कि ना ।

श्रीर्जयतितराम्

एतदधर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतिरिचार्डओग्रालपोलसादेवधर्माधिकर-
णलिखितैतदन्दीयापरेलमाओयरअविशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रभ-
प्रतिरूपपत्रमेवं तत्प्रमर्शितायिसद्धिपुरपरमागितवृत्तान्तपत्राणि अजरराजसिंहस्य
कृत्रिमपुत्रविषयकपत्रम् । यदेतदन्दीयमैमासीयैकादशदिनसम्बन्धिशनिवाखरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य यादशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

अलियुगे निस्सन्तानेन व्यक्तिविशेषेण स्वकीयसहोदरभ्रातृकन्यायाः
सन्तानत्वेनार्थात् कन्यात्वेन ग्रहणं धर्म्मशास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति, धर्म्मः

शास्त्रे तादृशविध्यमावात्, अपुत्रेण सुतः कथ्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः—
इति विधेरेव धर्म्मशास्त्रीयत्वादिति—

तत्र प्रमाणम् ।

अपुत्रेण सुतः कथ्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसकीर्त्तनाय च ॥ इति दत्तकमीमांसादत्तक-
चन्द्रिकादिग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यप्यर्थिनस्तत्रिहिंष्टाक्षरुपस्थापितवृत्तान्तेन च सिलमन्तसिंहस्य
कन्याया राधामोहनकोमराख्याया कुलमन्तसिंहेन स्वसन्तानत्नानयन-
विषये कन्यादानपुत्रिकापुनविषये चोभयोः कुलमन्तसिंहसिलमन्तसिंहयो-
र्भेनावरायपिना प्यारीलालेन सह स्विरीकरणं यस्य रीतिसमुदायस्य भवन-
यत्प्रत्यर्थिनोऽन्वमातिगणैरर्थिषां विधादयेष च सत्यत्वमामोति तथापि
गोपालसहायः कुलमन्तसिंहस्य पुत्रिकापुनो न जात एतादृशपुत्रिकापुनस्त-
शास्त्रालिखितत्वात्, औरसदत्तकृनिमपुनातिरिक्तपुनाया कलियुगे विशेष-
पतः शास्त्रनिषिद्धत्वाच्च । एवञ्च सति कुलमन्तसिंहस्य पत्नी भगवती
कोमराख्या एव तत्प्रत्यक्षधने अधिकारिणी भवतीति तृतीयप्रश्नस्योत्तर-
मप्यर्थादत्रैव पर्यायसन्नमिति पृथङ् न लिखितमिति ।—

अत्र प्रमाणम्—

अनेरुवाहताः पुत्रा अपिमिथ्यैः पुरातनैः ।

न शक्यास्तेऽधुना कर्तुं शक्तिहीनतया नरे ॥ इति दत्तकमीमांसादत्त-
कचन्द्रिकादिग्रन्थधृतस्मृति(पृ० २०७, वचनम् ॥१॥

दत्तोरसेतरेषान् पुत्रत्वेन परिग्रहः ।

इमान् धर्म्मान् कलियुगे वर्ज्यानाहुर्म्मनीषिणः ॥ इति दत्तकमीमांसा
दत्तकचन्द्रिकाव्यवहारमयूषमिनादराटीकादिग्रन्थधृतशौनक्वचनम् ॥२॥

दत्तोरसेतरेषान् पुत्रत्वेन परिग्रह इति च शौनकेन पुत्रांतरनिषे-

धाद् दत्तोरसावेवाम्यनुज्ञायेते । दत्तरदं कृत्रिमस्याप्युपलक्षणम्-इति दत्त-
कमीमांसा(पृ० ३०)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पंली दुहितरश्चैव-इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थधृतयाश्वत्थयवचनम् ॥४॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि ब्रजराजसिंहस्य कृत्रिमपुत्रोक्तस्यमेवं सन्तानत्वे आनयनं यो ब्रज-
राजविहः स्वभित्तुज्येष्ठपुत्र एवं त्रिशद्वर्षाधिकवयस्कः, कतिपयसन्ताना अपि
तस्य सन्ति, तदा मिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुभाद्यनेक-
ग्रन्थमते तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं न सिद्ध्यति । दत्तकपुत्रग्रहणविषये ये ये
नियमाः मिताक्षरादिग्रन्थेषु लिखितास्ते सर्वे नियमाः कृत्रिमपुत्रविषयेऽपि
मिताक्षरादिग्रन्थेषु लिखिताश्च । एवमात्मीयवर्गस्य राज्ञश्च विज्ञापनमन्तरा
प्रकारान्तरेण तस्य कृत्रिमपुत्रतायाः सत्यत्वनिश्चये सति मनुमते तस्य कृत्रि-
मपुत्रत्वं सिद्ध्यति । मनुवचने केवलं सन्नातीपस्वकृत्रिमपुत्रीकरणयोर्द्वयोरेव
कृत्रिमपुत्रकरणे प्रयोजकत्वमिति—

अत्र प्रमाणम्—

एव क्रीतस्वयंदत्तकृत्रिमेवपि योज्यं समानन्यायत्वात्--इति मिता-
क्षरा(पृ० २२४)ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

क्रीतस्वयंदत्तकृत्रिमेवपि समानन्यायत्वादेकपुत्रज्येष्ठपुत्रयोजिपेधः-
इति वीरमित्रोदय(पृ० ६१०)ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

सदृशं यं प्रकुर्वीत गुणदेपविषह्मणम् ।

पुत्रं पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयस्तु कृत्रिमः ॥ इति मनु(६।१६६)
वचनम् ॥३॥

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि ब्रजराजसिंहः कृत्रिमपुत्रमवनानन्तरं स्वकीयजनकपितुः स्वज-
नन्या मातुश्च आदादिभ्याः कृत्वा तयोस्त्यक्तधने आयत्तत्वं संपादितवान्
स्यात्तदा तस्य कृत्रिमपुत्रत्वं मिताक्षरानुपरिलिखितग्रन्थानुसारेण न
सिद्ध्यति, मनुशुद्धिविवेकग्रन्थानुसारेण सिद्धमपरावर्त्य च भविनुं शक्नोति-
इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमा-

धनव्यवहारकोस्तुभदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाशुद्धिविवेकादिग्रन्थानुसारिणी
व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

गोत्रधृक्पथे जनयितुर्न मजेदत्रियः सुतः ।

गोत्रधृक्पथानुगः पिण्डो व्यपैति ददतः स्वधा ॥ इत्यत्र दत्रिममह-
एस्य पुत्रप्रतिनिधिप्रदर्शनार्थत्वात्— इति मिताक्षरा (पृ० २१५) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥१॥

स च पुत्रायकररय पिण्डप्रदः । निजपित्रादीनां पिण्डप्रदत्वं तस्य
तिष्ठत्येव— इति शुद्धिविवेकग्रन्थ (पृ० ३१ ख पं० ६) लिखनञ्चेति ॥२॥

एतदन्दीयबुनमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेयं व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सञ्चोक्त—

२६— एक स्त्रीलोक पतिर मरणान्तर आपन पिता माता
स्थावर अस्थावर किञ्चित् विषय पाइया पित्रालय वास करिया
भोगवाना थाकिया लोकान्तर हइले ऐ स्त्रीलोकेर पतिर सहोदर
प्रातार पौत्र ओ भर्तार भग्नीर पुत्र वर्त्तमान थाकाते ऐ अविरा
स्त्रीलोकेर मातृ पितृ संक्रान्त प्राप्त स्थावर अस्थावर विषय ऐ
हुइ जनार मध्ये काहाके अशिते पारे, यथाशास्त्र सञ्चोक्तेर
पाशे शाखेर निदर्शने उत्तर लिखिया पाठाइवा इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रसुसम्पितप्रश्नपत्रं यदेतदन्दीयबुनमासीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—
यदि काचित् स्त्री पतिमरणान्तरं स्वपैतृकं मातृकञ्च स्थावरास्थावरकिञ्चिद्वनं

प्राप्य स्वपित्रालये वासं कृत्वा तदने भोगवती भूत्वा मृता स्यादत्र विवादा-
 स्पदीभूतं धनं तथा उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तमिति प्रश्नपत्रेण स्पष्टतरतया
 श्रवणमात्तन्मरणोत्तरं तस्याः स्त्रियाः पत्युः सहोदरभ्रातुः पौत्रस्य वङ्गदेशी-
 याक्षरलिखितप्रश्नलिखितस्य तस्याः पत्युः सहोदरभ्रातुर्दौहित्रस्य वा पारसी-
 कलिपिलिखितप्रश्नलिखितस्य तस्याः पत्युर्भागिनेयस्य च तत्संक्रान्ततरि-
 तृत्पक्षधने तत्संक्रान्ततन्मातृपक्षधने च नाधिकारः । यथा पुत्रपौत्रप्रपौत्र-
 रहितस्य मृतस्य धने पत्न्या उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि पत्न्या
 मरणोत्तरं तद्वनं तत्त्वत्युत्तराधिकारिणामेव भवति तथा पुत्रादिपत्नीपर्यन्त-
 रहितस्य मृतस्य धने दुहितुश्च उत्तराधिकारित्वेनाधिकारे जाते सत्यपि दुहितु-
 र्भ्रमरणोत्तरं तत्पितुर्धनं उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्वनं भवति, प्रकृते तु
 तस्याः स्त्रियाः पत्युः सहोदरभ्रातुः पौत्रस्य तस्याः पत्युः सहोदरभ्रातुर्दौ-
 हित्रस्य वा तस्याः पत्युर्भागिनेयस्य वा तस्याः पितुर्भ्रातुश्च उत्तराधिकारित्वा-
 भावात्-इति वङ्गदेशचलित-दायभागदायतत्त्व-दायभागद्वयोः दायक्रमसम-
 विवादाण्यवसेतु-विवादभङ्गाण्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव-इत्यादि दायभागादिग्रन्थभूतयास्त्वबलव्यवचनम् ॥१॥

अपुत्रा शयनं मर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा उद्धर्धमाप्नुयुः ॥-इति दायभागादि-

ग्रन्थभूतकात्यायनवचनम् ॥२॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणं सीमात्राधिकारे अयमर्थो धोऽध्यः—इति
 दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति । ३॥

इद्वरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशद्विकाष्टादशशताब्दीयजुलाश्मासोयम-
 यमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेय व्यवस्था इति ।

श्रीर्जयतिविराम्

श्रीवेचनाशमिश्रेण

छाओल—

२७—रामचन्द्रसरकार नामे एक व्यक्ति आपन एक जोत-जमा ओ वैद्यनाथ नामक एक पुत्र राखिया लोकान्तर हय । परे वैद्यनाथ ऐ जमाय दखिलकार थाके । वैद्यनाथ मजकुरेरे दुइ स्त्री, तारामणि ओ राधामणि । तारामणि मजकुरार गर्भजात दुइ पुत्र गङ्गाधर ओ राजकुमार । राधामणि मजकुरार गर्भजात एक पुत्र, आनन्दकुमार एवं एक कन्या आदरमणि । साहार मध्ये आनन्दकुमारेर मृत्यु आपन पिता वैद्यनाथेर समझे हय । परे दुइ पुत्र, अर्थात् गङ्गाधर ओ राजकुमार ओ अदत्ता कन्या अर्थात् आदरमणी ओ आपन दुइ स्त्रीके वर्तमान राखिया वैद्यनाथ मजकुर परलोक प्राप्त हय । कियत्कालान्तर गङ्गाधर ओ राजकुमार आपन वैमात्रीय अदत्ता भग्नी आदरमणी ओ माता ओ विमाताके वर्तमान राखिया लोकान्तर हय । परे तारामणी मजकुरार मृत्यु हइले राधामणी मजकुरा साहार आर्द्ध आदि करिया आपन गर्भजात ऐ अदत्ता कन्या आदरमणीर विवाह दिया लोकान्तर हय । एइ क्षण ऐ वैद्यनाथ सरकारेरे पुत्रसम्भाविता कन्या आदरमणी ओ वैद्यनाथ मजकुरेरे पितृदौहित्र, अर्थात् रामचन्द्रसरकारेरे कन्यार पुत्र, श्री ईश्वरचन्द्रवसु वर्तमान । अतएव शास्त्र सम्मत वैद्यनाथ मजकुरेरे पैतृक स्थावरादि धनेर, अर्थात् जोतजमा मजकुरार, सत्ताधिकारिणी वैद्यनाथेर पुत्रसम्भाविता कन्या श्रीमती आदरमणी किम्बा ताहार पितृदौहित्र ईश्वरचन्द्रवसु अधिकारि हइवेक-इहार यथाशास्त्र ये व्यवस्था हय लिखिवेन इति—

श्रीज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदेतदब्दीयलुनमासीयपत्रदिनसम्बन्धिवृहस्पति-
वासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशशोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

पूर्वमज्ञादज्ञात् सम्भवतीत्यादिविशेषवचनादेवाधिकार इति भावः—इति-
श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनम् ॥२॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही
तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयः तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृ-
वैमात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्राणां पितृवैमात्रेयपौत्राणां क्रमेणाधिकारः
तदभावे पितामहदौहित्र०—इत्यादि श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग-
टीकालिखनञ्चेति ॥४॥

इद्वरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दोयहुलाइमासीयप्र-
थमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीज्जयतितराम्

१२ प्रथम प्रश्नः—

यद्यपि कोन व्यक्तिरा दुइ सहोदर, अर्थात् मध्यम ओ
कनिष्ठ भ्राता, आपनार्हेर ज्येष्ठ ओ तृतीय भ्रातार सहित
प्रार्थक्य इइया, आपनारा दुइ सहोदरे एकान्वयवर्त्तिते स्थावर
अस्थावर वस्तु उपार्जन करिआ, मध्यम भ्राता एक पुत्र राखिया
लोकान्त हय । ताहार पर क्रमे एकान्वयवर्त्तिते थाकिया ऐ मध्यमेर
पुत्र एक स्त्री, ओ कनिष्ठ भ्राता एक पुत्र ओ एक कन्या राखिया
मृत्यु हय । एमत् स्थले ऐ कनिष्ठेर पुत्र पीडित जीवनासंशय
इइया ऐ समुदय साधारणेर स्थावर अस्थावर वस्तु आपन
सम्भाविता पुत्रिनी भग्नीके दान करिते पारे कि ना—यथाशास्त्र
एइ प्रश्नेर प्रत्युत्तर लिखिवेन इति—

द्वितीय प्रश्न—

यद्यपि कोन व्यक्ति जीवनासंशय दृष्ट्या साधारण्ये कोन स्थावर अस्थावर वस्तु आपन भग्निके दान करिया ऐ दानपत्रे एतत् नियम राखे ये यदि स्यान् आमि ए यात्रा रत्ना पाद, एइ दानपत्र अकर्मण्य हइवेक; अतएव शास्त्रागुमारे एतत् नियमित दान सिद्ध घटे कि ना—

मधुमधर्पितप्रश्नपत्रं दानपत्रञ्च यदेतदन्दीयमैमासीयषोडशदिनमन्व-
न्विबृहस्पतिशसरे मया प्रप्तं तदन्वलोभ्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि चतुर्णां सोदरभ्रातृणां मध्ये द्वौ भ्रातरौर्ध्वान्मध्यमकनिष्ठौ
स्वकीयस्येतृतीयभ्रातृभ्यां सह पृथगतौ, सावेव द्वावेकात्रौ स्थावरास्थावर-
घनमुपाज्जयतः तयोर्मध्ये मध्यमो भ्राता एकं पुत्रं सरस्वर मृतः स्यात्, तद-
नन्तरं क्रमैश्चैकान्ने विधाया तस्यैव मध्यमस्य पुत्र एकं पत्नी संद्वय
मृतः, एष कनिष्ठो भ्राता एकं पुत्रं कन्धाञ्चैको रक्षित्वा मृतः स्यात् एवञ्च
सति तस्यैव कनिष्ठस्य पुत्रः पीडितो जीवनासंशयमापन्नः सन् तदेव साधारण्य-
स्थावरास्थावरसमुदायघनं सम्भाषितपुत्राद्यै स्वमेगिन्धै दत्तवान् स्यात्तदा
तद्दानं दातुः स्वांशयोगे सिद्धं भवितुं शक्नोति, तद्व्यतिरिक्ते सिद्धं भवितुं
न शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकरणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरथापि वा ।

कुर्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वघनस्य वे ॥ इति दायभागादि-
प्रत्यभृतनारदवचनम् ॥२॥

विभक्तस्येवाविभक्तस्थावरस्यापि स्वामिकृतदानादि सिद्ध्यत्येव अक्ष-
पातादिना पश्चादंशपरिचयसम्भवादिति भावः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कार-
दायभागीकालिखनम् ॥३॥

अत्र साधारणद्रव्यस्य समुदायस्यैकेन विक्रये परंशयोग्येऽसिद्धिः
स्वांशयोग्ये तु सिद्धिः-इत्यादि विवादमङ्गार्यवन्न्य(१. विवा० ३०५ क)
लिखनम् ॥४॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि कश्चिद्व्यक्तिविशेषो जीवनसंशयमापन्नस्तत्र साधारणस्यावरा-
स्थावरवस्तु स्वभगिन्स्य दत्त्वा तद्दानपत्रे एयं (तेन नियमो लिखितः यद्यहमेत-
द्रोगान्मुक्तो भूत्वा जीवामि तदैतद्दानपत्रमकर्मण्यं भविष्यति । अत एवैतादृशं
सोराधिदानं तद्दानकर्तृयोग्यांशेऽपि तद्दानकर्तुस्तद्रोगविमुक्तत्वेन वर्त्तमान-
तायां सिद्धं भवितुं न शक्नोति, यतस्तद्दानपत्रे दाया लिखितमस्ति यद्यहमे-
तद्रोगान्मुक्तो भूत्वा जीवामि तदा अस्मद्वर्त्तमानतायामेतद्दानपत्रमकर्म-
ण्यं भविष्यति, न तु वा सध्यं तथैव जातमिति । एवञ्च सति दानुस्तद्रागा-
न्मरणे सति तद्दानं दातुः स्वांशयोग्यं सिद्धं भवितुमर्हति । सोराधिदानमुरा-
पिसिद्धौ सिद्धं भवति उपाध्यसिद्धावसिद्धं भवति-इति बह्वदेशचलितमनुदा-
मभागदायतत्त्वदायक्रमसंप्रद्विषादमङ्गार्यवादिप्रन्धानुगारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाण्यानि चत्वारि ॥५॥

सांपाधिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादमङ्गार्यवन्न्यलिखन-
ञ्चेति ॥५॥

इद्वरेजीशब्दप्रतिभाषप्रयस्त्रिशद्विक्राष्टदशशताब्दीगनुनाश्मासीय-
अगदिनसम्बन्धिशुक्रवाहरे गण्यं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२६—ज० ३१ खास आशील—

इं १८७४ साल—

सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रवि प्रश्न—

यद्यपि स्यात् कोन व्यक्तिर दुइ पुत्रेर मध्ये ज्येष्ठ पुत्र एक

कन्या राखिया पिता वर्त्तमाने मरे, धार कनिष्ठ पुत्र पितार मरणोत्तर एक पुत्र राखिया लोकांतर करे—एमत स्थले ऐ कन्या ओ पुत्रे मध्ये के घनाधिकारी हवेक—यथाशास्त्र प्रश्नेर उत्तर लिखिवा इति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रज्ञातञ्च यदङ्गरेजीशब्द-
प्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकशताब्दीयजुनाइमासीयप्रथमदिनसम्बन्धितो -
मवाचरे मया प्राप्त, तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुगारेणोत्तर
लिखयते—

यदि कस्यचिद्द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये ज्येष्ठपुत्रः कन्यामेकां रक्षित्वा
जीवति स्वपितरि मृतः स्यादेवं कनिष्ठपुत्रः स्वपितुर्मरणोत्तरमेकं पुत्रं
रक्षित्वा मृतः स्यात्तत्र यदि पित्रा स्वस्वत्वास्पदीभूतं धनं विभज्य स्वपुत्राभ्यां
दत्तं स्याद् यत् प्रभुसमर्पितपत्रान्तर्गतद्वादशाङ्काङ्कितवङ्कालाख्याद्वादशाधि-
कद्वादशशताब्दीयकालगुणमासीयपञ्चदशदिनलिखितएकरानामासंस्तकपत्रे -
शावगम्यते तदा तदानानुगारेण तद्वने द्वयोः पुत्रयोः स्वत्वे जाते सति
द्वयोः पुत्रयोर्मरणानन्तरं तयोर्मे उत्तराधिकारिणस्तेषामेव तद्वनं भवति ।
तत्र द्वयोर्मध्ये ज्येष्ठपुत्रः पत्नीमेकां कन्यां चैकामेकं पुत्रं च विश्वनाथ-
नामानं सः क्षयं जीवति पितरि मृत इति प्रभुसमर्पितपत्रज्ञातैर्ज्ञातम् । एवं
च सति तदानानुगारेण ज्येष्ठपुत्रयोग्यांशे तत्पुत्रस्य विश्वनाथस्याधिकारे
जाते सति तद्वनं विश्वनाथस्यैव जातमतस्तन्मरणानन्तरं तत्पुत्रधने
तदुत्तराधिकारिणामेवाधिकारस्तदुत्तराधिकारिणाम्मध्ये तस्य पुत्रमारभ्य
पितृपर्यन्ताभावेन तन्मातुः कस्याया अधिकारे जाते सति कस्यामरणो-
त्तरं विश्वनाथस्य पितुः रामलोचननस्करस्य प्रपौत्रपर्यन्ताभावेन तत्पितु-
र्दोहित्रस्य भागवतमण्डलस्याधिकारः । पितरि मृते पुत्रं रक्षित्वा मृतस्य
कनिष्ठपुत्रस्यांशे तत्पुत्रस्याधिकारः । यदि च पित्रा स्वस्वत्वास्पदीभूतधनं
विभज्य स्वपुत्राभ्यां न दत्तं स्यात्तदा तद्वने पितुरेव स्वतःमस्ति । अत एव
जीवति पितरि मृतस्य ज्येष्ठपुत्रस्य पैतृकधने स्वत्वानुगतादाद् जीवति पिता-

महे मृतस्य पौत्रस्य च विश्वनाथस्यानपत्यस्य पैतामहधने स्वत्वानुत्पादाच्च तत्तदुत्तराधिकारिणां वद्धने नाधिकारः । किन्तु पितृपरस्मोत्तरं मृतस्य कनिष्ठपुत्रस्य पैतृकसमुदायधने स्वत्वोत्पादेन पैतृकसमुदायधनं तस्यैव जातम् । अतस्तन्मरस्मोत्तरं तदुत्तराधिकारिणामेव तत्राधिकारः । तदुत्तराधिकारिणांमध्ये तत्पुत्रस्यैव प्राधान्येनाधिकारः—इति वद्वदेशचलितमनुदायभागदायतत्पदायभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादाख्यवस्तुविवादभट्टार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादिप्राम्थुतयाश्रयत्क्यवचनम् ॥२॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदोहित्रस्याधिकारो योज्यो धनिदोहित्रस्यैव—इति दायभागप्रमथलिखनम् ॥३॥

पितर्युपरते पुत्रा विमज्जेयुर्जनं पितुः ।

अस्वाम्यं हि भवेदेषा निर्दोषे पितरि स्थिते ॥—इति दायभागादिप्राम्थुतयेवलवचनम् ॥४॥

तत्र प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रः—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकालिखनञ्चेति ॥५॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यव्याप्तिशब्दधिकृष्टादशशतान्श्यागस्तिमासोपश्रमदिनसम्बन्धिषोडशसरे मयेव व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३०—मोकाम कलिकात्तार सदर देओयानी आदालतेर पण्डित हड्डे सदर ब्रडेर मश्न :—

यदि स्यात् जेला सारङ्गबाशो छेत्रीयजातो राजा हरकुमारदत्त मीरुशी जमिदारिर पर दखिल काबिज थाकिया दुइ विवाहिता खीरगर्भजातक दुइ पुत्रके उत्तराधिकारि राखिया लोकान्तरहइल ।

परे ताहार ज्येष्ठ पुत्र राजा तेजप्रताप नामिक कुजाचार मते समुदय अवष्टक जमिदारिर पर सम्भोगी थाकिया आपन मृत्युर पूर्व वैमात्रेय भ्राता थाकितेश्रो अवष्टक जमिदारि मजकुर दइते २१ मौजा तिन स्त्रीर मध्ये एक स्त्री महाराणी तिलत्तमादेव्यार नामे दान करिया दानपत्रेर निचे एइ विवरण लेखे ये आमार परे महाराणी मौलुफ समुदय देहात जमिदारि मजकुर दान करा ग्रामसकल सम्बलित आपण एकचारे राखिया आपन कवज तद्धरूपे आणीवेक, चार समयेर हाकिमेर सरकारे मालगुजारि आदाय करिते थाकिवेन इति । ताहार दुइ वत्सर परे उक्त राजा निःसन्तान ऐ वैमात्रेय भ्राता राजा अमरप्रतापसेन ओ तिन स्त्रीके उत्तराधिकारि राखिया मरिल । ऐ तिन स्त्रीर मध्ये दानग्रहिता महाराणी उत्तराधिकारित्व एवं दानपत्र मजकुरेद्वाराय समुदय जमिदारिर पर दावि करितेछे । ओ मृत राजार वैमात्रेय भ्राता राजा अमरप्रतापसेन ताहार आपनार एकाम्रवर्ती एवं अंशी थाकार दाविते एइ विवरणे ये पैतृक जमीदारी हओन कारण एवं अवष्टक ओ मृत राजार कुष्ठज्यामहकालिन दानपत्र लेखा हओने दान असिद्ध, ओ महाराणीर खोरपोष भिन्न अन्य कोन स्वत्व ना थाकीवाते उत्तराधिकारिर दावि करिया आपनाके समुदय जमिदारीर सत्वाधिकारि ओ कर्ता करार दितेछे । अतएव शास्त्रानुसारे ऐ दुइ दाविदार मजकुरानेर मध्ये कोन व्यक्ति सकल जमीदारी मजकुरेद्वारा पर दखल पाइवार स्वत्व राखे ताहार व्यवस्था चलित शास्त्रसम्बलित रितमते लेखेन इति—

श्रीर्जयनितराम्

प्रमुखमर्षितप्रश्नपत्रं यदङ्करेजीशन्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयसितम्बरमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदधलोच्य यादशमोषो आतस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि सारनदेशीयः क्षत्रियजातीयः कश्चिद्वाजा हरकुमारदत्तनामा
व्यक्तिविरोधः क्रमागतसराजकरस्थावरादिघने आयत्तत्वं संशय द्वयोः पत्न्यो-
र्गर्भजातौ द्वौ पुत्रावुत्तराधिकारिणौ संरक्ष्य मृतः स्यात्, तदनन्तरं तस्य
प्येष्टपुत्रो राजा तेजःप्रतापसेनः स्वकुलोच्चिताचारानुसारेण समुदायसाधारण-
सराजकरस्थावरादिघने आयत्तत्वं संपादितवान् स्यात्तदा तन्मरणानन्तरं तस्य
पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावेन तत्पुत्राविपक्षसाधारणसराजकरस्थावरादिसमुदायघने
तद्वैमात्रेयभ्रातृ राजशोभनप्रतापस्यैवाधिकारः, साधारणसराजकरस्थावरादि-
घने अंशयन्तरानुमतिमन्तरेणैकस्य स्वांशयोग्येऽपि दानाद्यनधिकारित्वेन
साधारणसराजकरस्थावरादिममुदायघने दानाद्यनधिकारित्वस्यार्थसिद्धत्वात्
पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारणप्रतियोगिनि वैमात्रेयभ्रातरि
वियमाने सत्यप्यभिक्तघने पत्न्या अन्नधिकाराच्च । एवं राजशतेजःप्रताप-
सेनस्य पत्नीनां यावज्जीवं स्वभक्तुं कुलोच्चितासाक्षादनुपयुक्तघने आवश्यक-
विधयाधर्मासाधारणोपयुक्तघने आधिकारः-इति सारनदेशचलितमनुमि-
ताक्षरापीरभिप्रोदयव्यवहारमाधयव्यवहारमयूखव्यवहारशीस्तुभादिग्रन्थानुसा-
रिणी व्यवस्था—

अत्र भ्रमाणम्—

पत्नी हृद्दितरश्चेव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इति मिताक्षराविग्रन्थभूतयास्यवत्स्य-
वचनम् ॥१॥

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तप्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

सौदराणामभावे भिबोदरा धनमाजः—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥३॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्णातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री
संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितम्—इति मिताक्षराग्रन्थः, पृ० २२१)
लिखनम् ॥४॥

अविगतेषु द्रव्यस्य मध्यगत्वादेकस्यानीश्वरत्वात् सर्वोभ्यनुज्ञाऽव-
श्यं कार्या । विगतेषु तु विभक्तानुमतिनन्तरेणापि व्यवहारः सिद्धय-
त्येव—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥५॥

स्थावरस्य समस्तस्य गोत्रसाधारणस्य च ।

नैकः कुर्यात् कथं दानं परस्परमतं विना ॥—इति वीरमित्रोदयग्रन्थ-
धृतव्यासवचनम् ॥६॥

स्वर्प्यति स्वामिनि स्त्री तु ग्रासाच्छादनभागिनी ।

अविभवते धनांशे तु प्राप्नोत्यामरणांतिकम् ॥—इति वीरमित्रोदय-
ग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥७॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकषष्टादशशताब्दीयाकतूवरमासीय-
नवमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

२१—रोवकारि मिस्त्रिज सदर दैओयानि आदालत मो०
फलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुत हेनरी सिक्स-
पीयेर साहेवेर बैठके । तारिख २४ जुलाइ ई सन १२३१ मोतावके
बाङ्गला १० आबण सन १२४० साल दिवस बुधवार—

कृष्णकान्त पोर्दार—छापल

सन हालेर १७ जुन तारिखेर हओया एइ आदालतेर
हाकिम रिचाई ओयालपुल साहेवेर हुकुम मोतावक जेला जङ्गल
महालेर जज साहेवेर रिटरण^१ सन्वलित ओ ऐ सनेर २१ मार्च
लिखित तथाकार रोवकारि सहित एवं छापलेर छओयालेर
नकल, जादा जज साहेवेर मौझाफर रिटरखेर सासील एइ
आदालते पौडियादिल, हाकिम रोवकारि ओ राजचन्द्राय
छापलेर मोकदमा^२र फागजात सन्वलित अथ आमार बैठके
दरपेय हइल, अनुमोदने आइल । हुकुम हइल ये साचेक व्यवस्था
ओ सन हालेर २१ मार्च तारिखेर हओया जेला जङ्गल महालेर
जज साहेवेर हालेर रोवकारि एइ आदालते पण्डितेर निकट

एइ हुकुमे पाठान जाय थे परिद्धत मजकुर ऐ सकल अनुमोदन परे एइ विषयेर व्यवस्था थे उपरेर लिखित जेलार जजसाहेबेर रोवकारिर लिखित सुरत देवसेवार खरच ओ सेवाइतेर ओयाजिवि खरच मिनाह वादे धाकी उपसत्य डिकरिर टाका आदायेर जन्म जाहा सेवाइतेर नामे हइयाछे खरच हइते पारे कि ना—एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

एतदधर्माधिकरणाधिरिधोयुतहेनरोसिकिसपीयसाहेवधर्माधिकरण-
लिखिताङ्करेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकशतशताब्दीयगुणाइमासीय-
चतुर्विंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितपूर्व-
व्यवस्थापत्रमेतदब्दीयमान्मासीयैकविंशतितमदिवसीयजङ्गलमहालजिला-
ख्यावान्तरधर्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रञ्च यदेतदब्दीयागस्तिमासीय-
द्वादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य पाटशबोचो जातस्त-
दनुगारेणोत्तरं लिख्यते—

जङ्गलमहालजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रलिखि-
रावृत्तान्ते सायपि देवसेवार्थं व्यातिरिक्तस्य सेवाइतशब्दाव्यवस्थावश्यकव्य-
यातिरिक्तस्य देवत्रभूम्युपस्थित्वस्य व्ययो जयत्रलिखितरानतमुद्रापरिपोषना-
र्थम्, यज्जयपत्रं सेवाइतशब्दाव्यवस्था नाम्ना जातम्, भवितुं न शक्नोति,
देवत्रभूमौ तदुपसत्त्वे च देवमात्रस्यत्वेन तदितरस्यत्याभावात् । यश्च देवत्र-
भूम्युत्तरगदावश्यकदेवसेवार्थं किञ्चिद्विद्योव्यावशिष्टस्य रश्मिद्वारायर्थं
व्यवहारो देवनिवेदनं विनापि पाणिग्रानाम् स च शास्त्रनिषिद्धत्वेन शास्त्रा-
नुसारेण यथार्थं भवितुं न शक्नोति, शास्त्रनिषिद्धव्यवहारस्य शास्त्रानुसारे-
णाप्रामाणिकत्वात्, विशेषतश्चलितशास्त्रानुष्ठानामसत्यामेव लोकव्यवहा-
रस्य शास्त्रे प्रमाणत्वेनोन्यासाच्च, देवत्रनिषये विशेषतश्चलितशास्त्रानुष्ठाना-
माच्योनव्यवस्थाया एतद्व्यवस्थायाश्च प्रथमप्रमाणे मनुवचनेन एव स्पष्टो-
क्तत्वान्च—इति बङ्गदेशचलितमनुशासनाभागादपतत्त्वदायमागटोकादाय-
कमसप्रद्विवादासंसेतुविवादमङ्गारुवादिशब्दानुसारिणो व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

देवस्त्वं ब्राह्मणस्त्वं वा लोभेनोपहिनस्ति यः ।

॥ पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

प्रतिमादिदेवतार्थमुत्सृष्टं घनं देवत्वम्—इति मन्वर्थमुक्तावल्पां
कुल्लूकमदृश्याख्यानम् ॥२॥

तस्माच्छास्त्रानुसारेण राजा कार्याणि साधयेत् ।

वाक्याभावे तु सर्वेषां देशदृष्टमतं नयेत्—इति सर्वत्रयचनञ्चेति ॥३॥०॥

हङ्गरेबीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासोपर-
श्चविंशतितमदिनसम्बन्धिषोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयवित्तराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३२—रोषकारि मिश्रित सदर देशोयानि आदालत मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरे हाकिम श्रीयुत हैनरि सिक्कि-
पीएर साहेबेर बैठके । तारिख २ अक्तुबर ई सन १८३३साल
माताबेक बाग्लला १७आरिबन सन १२४०साल दिवस बुधवार—

कालीकिशोररायचौधुरि

छापला

छापलेर डकिलान मुनशी हुसुन आलि ओ मुनशा शुआलि आर
सदासुखपरिडत द्वितीय पक्ष रामवकसेर पक्ष हइते आपन नानेर
एक पेंता ओकालतनामा भैरवचन्द्रचक्रवर्तिर नामेर एक छेदा
मोकारनामा सम्बलित दाखिल करिया हाजिर आइले । छापलेर
छओयाल कोट मुरशीदावादेर हाकिम चारणर्प उलिपम इष्टीएर
साहेब ओ कोट जाहगीरनगरेर हाकिम केरिकेरापट साहेबेर
सन हालेर -६ जुन ओ २२ मार्च तारिखेर लिखिड हुकुमेर
नाराजिते जाहा देनदार जगदीश्वरीर हिस्वार निलामेर विशये

छादेर हय । छाएलेर माठा मोछर्मात मजकुरार जीवदशा पर्यन्त
 दखलि फावेजी जमिदारि निलाम नाहओयार प्रार्थनाय छाएलेर
 उकिलानेर नामेर ओकालतनामा ओ रामजयसागह्यालेर नामेर
 मोक्षारनामा ओ क्रोट मुरशीदावाद ओ क्रोट जाहागेरनगरेर
 सन हालेर २६ जुन ओ २२ मार्च ओ इङ्गराजी सन १८३१
 सालेर १६ मार्च तारिखेर लिखित तिन केता रोबकारी ओ
 इं सन १८२६ सालेर ६ एपरेलेर लिखित जेला मयमनसिहेर
 देओयानि आदालतेर फयछलार नकल तिन केता ओ वाङ्गला
 ए थारतेर छोलोलेनामार नकल एक केता आर जेलार गुजाराण
 जगदीश्वरीर दरखास्तेर नकल एक केता ओ इं सन १८६२
 सालेर २५ एपरेल ओ इं सन १८२६ सालेर ५ जुलाइ ओ २६
 एपरेलेर लिखित एइ आदालतेर नकल तिन केता ओ इं सन
 १८२६ सालेर ३ दिजेम्बरेर लिखित जेला मजकुरेर देओयानि
 आदालतेर एक केता रोबकारि नकल सम्वलित, जाहा अद्य
 मुनशी होशन आलि उकिल आर द्वितीय पक्ष रामवक्सेर पक्षेर
 एक केता छओयाल, जाहा सदासुखपण्डित दाखिल करिलेक, तिन
 केता सेओयाय तिन केता नकल फयछला पढागेल । यदि
 स्यात् मजुद कागजातेर द्वाराय प्रकाश हइतेछे—ये छाएल
 ओ मोछर्मात नारायणीदेव्या ओ जगदीश्वरीदेव्यार हकुफ
 छोलोलेनामार द्वाराय रफा हइयाछे, आर ऐ छोलोलेनामा जेलार
 आदालते मजुर ओ मातवर हइयाछे आर ताहार द्वाराय
 प्रकाश ये मोछर्मात जगदीश्वरीर मुत्युर पर ताहार हिस्सा
 छाएलके आर्शानिक । ए प्रकारे मोछर्मात मजकुरार देना आदायेर
 जन्ये ताहार हिस्सा बिकएर उपयुक्त हइते पारे कि ना—आमार
 निक्कट ए विषय शाखेर एलाका राखे । ए जन्ये चूडान्त हुकुम
 छादेर हओयार पूर्व हुकुम दइल ये छाएलेर छओयाल एवं उदार
 दाखिल करा कागजात ओ द्वितीय पक्षेर छओयाल सम्वलित एइ
 आदालतेर पण्डितेर अमे पाठान जाय—ये पण्डित मजकुर

द्योलेनामार लिखित सरतसकलेर अनुबोधने उपरेर लिखित
छओयालेर जओयाव एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण इति—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिन्धिसपीवरसादेवधर्माधिकरण-
लिखिताङ्गरेबीराम्दप्रतिपाद्ययस्त्रिरादधिकाष्टादशशताब्दीयाकृत्यरमासीय-
द्वितीयदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्सम्पत्तितैतद्विवाद-
विषयनिबिष्टपत्रजातञ्च यदेतदब्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसौम-
चासरे मया प्राप्त तद्वल्लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्यैतद्वर्माधिकरणार्थिनः पितु-
स्त्यक्तधने सन्धिपत्रानुसारेणैतद्वर्माधिकरणार्थिनो नारायणोदेव्याश्च जग-
दीश्वरीदेव्याश्च स्वयं निश्चितं स्याद्, एवं तदेव सन्धिपत्रं जिलाख्यावान्तर-
धर्माधिकरणे सत्यं जातं स्याद्, एवं तेनैव सन्धिपत्रेण जगदीश्वरीदेवी-
मरणोत्तरं तदायत्तीभूतोऽष्ट एतद्वर्माधिकरणार्थिनो भविष्यतीत्यवगम्यमानं
स्नात्, तदा जगदीश्वरीदेवीदेयश्रृणुपरिशोधनार्थं तत्जीवनपर्यन्तमुपस्वत्व-
भोगार्थं तत्पुत्रस्वत्वात्पदोभूततदायत्तीभूतोऽष्टो^१ विरूययोग्यो भवितुं न
शक्नोति सन्धिरप्रतादर्यार्थधर्मशास्त्रान्या तथैव पर्यवसानात्—इति बङ्ग-
देशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसम्रहविवादार्यवसेतुविवादभङ्गार्थवादि-
ग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था—

सर्वे हृषनीरसस्येते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतदेवलवचनम् ॥ १ ॥

न स्त्री पतिपुत्रकृतं न स्त्रीकृतं पतिपुत्रौ—इति विवादार्यवसेतु(पृ० २६)
विवादमहार्णवादिग्रन्थ(१ विवा० २०८ ख)धृतविष्णुवचनञ्चेति
॥२॥॥॥॥॥॥

इङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयदिशम्बरमासीयो-
नविंशतितमदिनसम्बन्धिवृहस्पतियासरे मयेयं व्ययस्या दत्तेति —

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३—रोवकारि मिछिले सदर देओयानि आदालत मोकाम
फलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुवहेनरीसिक्सपीयेर
साहेबेर बैठके । ८ तारिख अक्तुबर ई० १८३३ साल मोतावेक
बाङ्गला २३ आश्विन सन १२४० साल दिवस मङ्गलवार—

मोछर्मात भवानोदेव्या—

छाएला—

छाएलार उकिल मुनशी माहाम्मद हानीफ ओ सदासुक-
पण्डित ओ द्वितीय पचेर उकिल मौलुवि करम होशेन हाजीर
आइल । गतो फल्य छाएलेर छओयात दरपेप हइया गौरेर
प्रति मुलतयि छिल, अद्य पुनराय रोवकार हइल । यदि स्यात्
एइ मोकद्दमार हुकुम छादेर हओनेर पूर्व एइ विषयेर तहफिक
आविश्यक ये मोछर्मात ब्रह्ममयी ताहार स्वामी गोपीनाथ
चन्द्योपाध्याय ओझीनामा मोतावेक आपनी ओछो सरवराहकार
मफरर करगेर चेमता राखे कि ना । ए जन्य हुकुम हइल
ये एइ मोकद्दमार कागजात एइ विशयेर जओयाय तलवेर
जन्ये एइ आदालतेर पण्डितेर अग्रे पाठान जाय इति—

श्रीर्जयतिराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुवहेनरीसिक्सपीयरसाहेबधर्माधिकरण-
लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयकनूबरमासीया-
ष्टमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषय-
निविष्टपत्रजातञ्च यदेतदन्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीयदिनसम्बन्धिसोमवासरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो आतस्वदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

ब्रह्ममयो स्वपतिगोपीनायवन्वोपाध्यायकृतासीयन्नामाख्यपत्रानुसारेण स्वयं
धनरक्षकस्पर्धादीसीशब्दप्रतिपाद्यस्य सरवरगृहकारशब्दवाच्यस्य च नियोगक-
रणक्षमतां रक्षत्येव, मृते पितरि जीवत्यां च मातृव्यप्राप्तव्यवहाराणां पुत्राणां
धनरक्षणेपायकरणे मात्रपेक्षया अन्येषां मुहूर्त्तरत्नाभावात्—इति यज्ञदेश-
चलितदायभागदायतत्त्वव्यवहारतत्त्वविवादार्थवसेनुविर्वादभङ्गार्थादिग्रन्था-
नुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

अमातव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यस्यैयुर्वेन्धुमित्रेषु—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थ(दात० पृ० १८) (दाभा०-
पृ० ६२) धृतकात्यायन(कास्मृ० ८४५, पृ० १०२) वचनम् ॥ १॥

रक्ष्यं बालधनमाव्यवहारप्राप्तेः—इत्युपरिलिखितग्रन्थ(दाभा० पृ०
६१) धृतमुनिवचनम् ॥ २॥

तयोरपि पिता श्रेयान् बीजप्राधान्यदर्शनात् ।

अभावं बीजिनो माता तदभावे च पूर्वजः ॥—इति व्यवहारतत्त्वादि-
(व्यत० पृ० ६४।६५) ग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० पृ० ५८) वचनञ्चेति ॥

अद्वरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयज्ञानवरोमासी-
यपौडशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवाचरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३४—रोयकारि मिडिल सदर देओतानि आदालत मोकाम
फलिकाता आदालत मजकुरेर हाकिम हेनरि सिक्सपीयेर
साहेबेर बैठके । इं १८३३ साल थोके चारिख २१ नवम्बर
मोतावक बाङ्गला १२४० साल ७ अग्रहायन रोज बृहस्पतिवार
लोकनाथदत्त—

ओ जगन्नाथदत्त—

धनाम

कुबिर भाण्डारि

सापलानेर वकिल मुनशी हयदर आली हाजिर आइल । सन हालेर ३० जुलाएर हओओ जेला मेमनसिंहेर जज साहेवेर फयशला, जाहा सन १८३२ सालेर २७ आगष्ट तारिखे सदर आमिन आलार फयशलार तरदिदे सादेर हय, ताहार असम्मतिर सायलानेर सओओल एक टाका मूल्येर कागजे उपरेर तारिखेर लिखित^१ जेला मजकुरेर जज साहेवेर ओ सदर आमिन आलार दुइ केता फयसला ओ वकिल मजकुरेर नामेर ओकालतनामा सम्बलित, जाहा सन हालेर ६ आक्टोबर तारिखे दाखिल हइयाछिल, पढामेल । सापलानेर सओओलेर खास आपिल माछ अथवा अप्राछ विशय हुकुम छादेर हओओर पूर्व हुकुम हइल ये सओओल ओ गयरह कागजात एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठाइया हुकुमे देखओ जाय—ये कागजात दृष्टे ए विशयेर व्यवस्था यद्यपि ये रूप सदर आमिन आलार फयशलाय मुद्द सापलानेर वरफ हइते प्रमाण हेतु लेला आछे गुजरिया थाके, दासत्त साम्यस्थ निनिधे एमत प्रमाण हेतु जयार्थ गणा जाइवेक कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतदेनरीसिकिसगीयरसाहेवधर्माधिकरणा-
लिलिताङ्गरेनीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीये-
कविंशतितमदिबसीयविचारपञ्चान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रमेवं तत्समर्पितेतद्दिवा-
द्विपयनिविष्टपत्रचातञ्च यत्तदब्दीयदिशम्बरमासीयेऋविंशतितमदिनसम्बन्धि-
शनिवाधरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

सदर-श्रामीन-आलालसंशक्त्य जयपत्रे अर्थिनां पद्यतो यथा हेतुर्दा-
सत्वस्थिरीकरणार्थं लिखितः ॥ च दासत्वस्थिरीकरणार्थं यायातम्येन प्रमाणं

भवत्येव, तज्जयपत्रैरेतेषां 'दायादीनां शास्त्रोक्तपञ्चदशदासन्तर्गतदाया-
दुपागतत्वेनावगमात्—इति बह्वदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायकम-
सग्रहविवादाद्यवसेतुविवादभङ्गाद्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः—इत्यादि दायकमसंग्रह-
विवादाद्यवसेतुविवादभङ्गाद्यवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

अद्भरेणीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टदशशतान्दीयज्ञानवरीमासी-
यपोऽष्टादिनसम्बन्धिवृहस्पतिवाचरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जपतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

तरजमा

प्रथम छओल

३५—यदि स्यात् हिन्दुवर्गेर मध्ये कोनो ब्राह्मण व्यक्ति आपन
निकातन हइते निर्गत हइया अनुद्धिष हय ओ ताहार निदर्शन
ना पाओ जाय, तवे ताहार मृत्युर अवधारित कोन पय्यन्त
गणना हइवेक, एवं ताहार मृत्युर अवधारित गणनार समय कि
प्रकार व्यवहार तस्य मृते वचित हइवेक, एवं ताहार निज विशय
कोन अवधि मृत व्यक्तिर धन यला जाइवेक, आर ए विशये फत
बिबस नियम अवधारित आछे-ताहार व्यवस्था एतदेशीय चलित
शास्त्रानुजाइ श्लोक एवं ताहार तरजमार सहित बाझला
भाशाय ।

द्वितीय छओल

यदि स्यात् हिन्दु वर्णेर मध्ये कोनो ब्राह्मण व्यक्ति आपन
निकातन हइते निर्गत हइया अनुद्धिष हय ओ ताहार निदर्शन
ना पाओ जाय, एवं ताहार निज विशय अन्य कोन व्यक्ति
अतिक्रम आक्रम करिया ग्रहण करे, तवे १२ वत्सर मध्ये

केह उत्राधिकारित्वभावे ऐ व्यक्ति निज विशये दाविदार हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था एतदेशीय चलित शास्त्रानुसारे श्लोक एवं ताहार तरजमार सहित बाङ्गला भाशाय इति ।

तृतीय छओल

उपरेर लिखितव्य विशये ऐ अनुदेशी व्यक्ति स्त्री वर्त्तमान बाफिते ताहार अन्य कोन सरिक व्यक्ति ऐ अनुदेश व्यक्ति स्त्रीके अगिरा स्त्रीलोक एवं एक-अन्न-भुक्त ओ गृहवासी ओ निज प्रतिपाल्य कहिया उत्राधिकारित्त भावे ताहार विशयेर पर दाविदार हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था श्लोक वचन द्वाराय तरजमा सम्बलित बाङ्गला भाशाय—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुसमर्षितप्रनपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादश-
शताब्दीयनयम्बरमासीयोनत्रिशत्तमदिनसम्बन्धिषुक्लवासरे मया प्राप्तं तदव-
लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि हिन्दुजातीयानाम्मध्ये कश्चिद् ब्राह्मणः स्वकीयनिकेतनाभिर्गत्यानु-
द्दिष्टः स्यात्, तस्यैव निर्गतस्य वार्ता न प्राप्यते चेत् तदा तस्य मरणावधारणं
प्रस्थानदिनमारभ्य द्वादशसंवत्सरानन्तरं भविष्यति, एवं तस्य मृत्योरेवधार-
णसमये चायं व्यवहारः कर्तुं मुचितो भविष्यति—शास्त्रानुसारेणाधिकारिणा
पर्यानरं दग्ध्वा अहाशौचं विधाय आद्यआद्यादिकं कर्तव्यम् । एवं तत्त्वत्या-
सादीभूतधनं तन्मरणावधारणानन्तरक्षणमारभ्यैव तत्पुत्रक धनमिदमिति
व्यवहर्त्तव्यमिति । एवमेतद्विषये गमनदिनमारभ्य दशवर्षसमाप्तिसमय
एवावधारित इति ।

अत्र प्रमाणम्—

गतस्य न भवेद्दार्ढ्यं यावद् द्वादशवर्षिणी ।

प्रेतावधारणं तस्य कर्तव्यं सुतवान्धवेः ॥—इति शुद्धितत्त्वादि-

(शुत० पृ० २५६) ग्रन्थभूतनारदयचनम् ॥१॥

एवं पर्यानरं दग्ध्वा त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्—इति तत्तद्ग्रन्थभूतादिपुराण-

(शुत० पृ० ३१०) नचनञ्चेति ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चिद्ब्राह्मणवातीयो व्यक्तिविशेषः स्वनिचेतनाभिर्गत्यानुदिष्टः स्यात्तस्य वार्ता न प्राप्यते चेत्, एवं तत्स्वत्वास्पदोभूतधने उदासीनैर्बलाद् गृह्यमाणो^१ सति शास्त्रानुसारेणोत्तराधिकारिणः पत्न्यादयः मुहुत्तमत्वेन प्रोपितधनरक्षाकरणाय^२ एव तत्र विषये तन्मरणावधारणानन्तरं स्वत्वमूल-कोऽधिकारोऽव्याहतो न भविष्यति^३ इति स्वाधिकाराय च द्वादशवर्षमध्येषु तत्राधिकतु^४मभियोक्तुमर्हन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

अप्राप्तव्यवहाराणां धनं व्ययविवर्जितम् ।

न्यसेयुर्वन्धुमित्रेषु प्रोपितानां तथैव च ॥—इति दायभागादिग्रन्थ-धृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि सत्तद्ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥२॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रपौत्रपर्यन्तरहितस्यानुदिष्टस्य पत्न्यां वर्तमानायामभ्यन्तरेण केन-चित् कथञ्चिदप्यनुदिष्टधनेऽधिकतु^५ न शक्यते—इति च बह्मदेशचलित-दायभागादिग्रन्थसम्मता व्यवहरेति ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृत-याज्ञवल्क्यवचनञ्चेति ॥१॥

अग्रेकीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयज्ञानवरीमासीव-सप्तविंशतितमदिनसम्बन्धीयस्रोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवचनायमिश्रेण

प्रथम लेखार भाषा—

हुजुरेर सुपुर्द करा सओयाल, जाहा इरेजी सन १८३३ साले २६ नवम्बर मासे शुक्रवारे आसि पाइयाछिलाम, ताहार दृष्टे येमत बोध हइल तदनुसारे उत्तर लिखितेछि ।

प्रथम प्रश्नोत्तरेर भाषा—

यदि हिन्दु जातिर मध्ये कोनो ब्राह्मण बाटी हइते प्रस्थान करिया अनुदेश हइया थाकेन, ताहार कोनो समाचार ना पाओया जाय, त तवे ताहार मरण निश्चय १२ बत्सरेर पर हइवेक, आर ताहार मरण निश्चय हइले एइ प्रकार व्यवहार उचित हइवेक ये शास्त्रानुसारे ये अधिकारी हइवेक से पर्णनर अर्थात् पत्रेर निर्मित नराकार दाह करिया ३ दिवस अशीच ग्रहण करिया आच भाद प्रभृति कर्म करिवेक, आर ऐ अनुदेश व्यक्तिर धन ताहार मरण निश्चय यत्न हइवेक, ताहार पर क्षण अवधि ऐ धनके सूत व्यक्तिर स्थित धन बलिचा व्यवहार हइवेक, आर ए विषये गमन दिन अवधि १२ बत्सर पर्यन्त नियम आछे ।

इहार प्रथम प्रमाण—

शुद्धितत्त्वप्रभृति ग्रन्थ धृतनारदमुनिवचनेर भाषा—

बाटी हइते प्रस्थान करिले ऐ व्यक्तिर १२ बत्सर पर्यन्त यदि कोन समाचार ना पाओया जाय तवे ताहार पुत्र ओ जातिरा मरण निश्चय बोध करिवेक इति—

ओ द्वितीय प्रमाण—

शुद्धितत्वादि ग्रन्थ धृतआदिपुराणवचनेर भाषा—

ऐ प्रकार पर्णनर अर्थात् पत्रेर निर्मित नराकार दाह करिया त्रिरात्र अशीच व्यवहार करिवेक इति—

द्वितीय प्रश्नोत्तरेर भाषा—

यदि कोन ब्राह्मण व्यक्ति आपन बाटी हइते गमन करिया अनुदेश हइया थाकेन, ताहार कोन समाचार ना पाओया जाय,

आर ताहार धन अन्य कोन व्यक्ति आक्रमन करिया ग्रहण करे, तवे शास्त्रानुसारे ताहार ओयारिश, ये पत्नी प्रभृति ताहांगे ऐ प्रवासि व्यक्ति अति अन्तरङ्ग—ए प्रयुक्त ऐ प्रवासि व्यक्ति धनरक्षार एक्तियार करण जन्य आर ऐ विषये प्रवासि व्यक्ति मरण निश्चय हइले, ऐ पत्नी प्रभृतिर भावि हकीयतेर को-लोकसान ना इइवार कारन १२ वत्सरेर मध्ये ऐ पत्नी प्रभृति ओयारिश लोक ऐ वस्तु से आपन अधिकार करिवार निमित्त दावी करिते पारे इति—

इहार प्रथम प्रमाण—

दायभागादि ग्रन्थ धृत कात्यायनमुनि वचनेर भाषा—

नावाल्लगेर धन अयधार्थे व्यय ना करिया नाल्लगेर अन्तरङ्ग लोकेर स्थाने गच्छित रत्निवेक, आर प्रवासि व्यक्ति धनओ ऐ प्रकारे रक्षा करिवेक—इति ॥

द्वितीय प्रमाण—

दायभागादि ग्रन्थ धृत याज्ञवल्क्यमुनि वचनेर भाषा—

पुत्र ओ पौत्र ओ प्रपौत्र ना थाकिले मृत व्यक्तिर धन प्रथमे पत्नी पाय, परे दुहिता पाय, तत्परे दौहित्र पाय इत्यादि ।

तृतीय प्रश्नोत्तरेर भाषा—

अनुदेश व्यक्तिर पुत्र पौत्र प्रपौत्र ना थाकिले पत्नी थाकिते अन्य शरीके कोन क्रमे अनुदेश व्यक्तिर धने अधिकार करिते पारे ना । एइ सकल व्यवस्था याज्ञल्लार चलिख दायभागादि-ग्रन्थानुसारिणी ।

इहार प्रमाण—

दायभागादि ग्रन्थ धृत याज्ञवल्क्यमुनि वचनेर भाषा—

पुत्र ओ पौत्र ओ प्रपौत्र ना थाकिले मृत व्यक्तिर धन प्रथमे पत्नी पाय, परे दुहिता पाय, तत्परे दौहित्र पाय, तत्परे पिता, तत्परे माता, तत्परे भ्राता पाय—इत्यादि ॥

अङ्गरेजी सन् १८३४ साल तारिख सातइसा माह जानवरी रोज सोमवार एइ व्यवस्था आमी दाखिल करिलाम इति ।

३६—रामदास शर्मा मुफलेछ

मुद्दाइ

राधाचरण शर्मा ओ गयरह

मुद्दाआलेहे

सञ्चालेर फर्द रादर देओनी आदालतेर पण्डितेर निकट—

सञ्चालेर तपसि—

प्रथम सञ्चाल—

यदि नान्दिमुखेर आद्व स्वामी ओ ओर पचे हइते ना हइया थाके तबे एइ प्रकार विवाह सत्य हइते पारे कि ना—इति ।

द्वितीय सञ्चाल—

भ्राता ना थाकते ओ ज्ञाति सपिण्ड थाकिते यदि नान्दिमुख ना हइयाथाके तबे विवाह सत्य हइते पारे कि ना—इति ।

तृतीय सञ्चाल—

एइ सरते—ये एक व्यक्ति, आत्रिजाति ब्राह्मण, आपन कन्यार विवाह कोन व्यक्तिर सहित स्थिर करिया, थाकवान करिया ताहार मृत्यु हय । परे ऐ कन्यार विवाह अन्य व्यक्तिर सहित हइते पारे कि ना । आर यदि एक व्यक्ति, ये ताहार सहित विवाहेर कथोपकथन छिलो ना, विवाह करे—ताहा सत्य हइते पारे कि ना—इति ।

चतुर्थ सञ्चाल—

ऐ कन्यार विवाहेर समय ऐ कन्यार सपिण्डन ज्ञाति थाकिते सम्प्रदानेर क्रिया पुरोहित करिते पारे कि ना—यदि करिया थाके प्रामाण्य हइते पारे कि ना इति ।

सञ्चम^१ सञ्चाल—

यदि एक व्यक्ति एक जन खिलोकके, ये ऐ खिलोक ताहार खुडार भगनीर कन्या हय, एवं ऐ दुइ जने ज्ञातच खुडततो भ्राता

७।= पुरुष तफात हइया थाके, विवाहेर कया कहे, एवं कन्यार मातार सपिण्ड करखेर दिवस विवाह हइया थाके, तवे ए प्रकार विवाह सत्य बटे कि ना इति ।

षष्ठ सञ्चोख—

यदि एक व्यक्ति एक स्त्री जयकाली नामक ओ एक पुत्र, द्वितीय स्त्रीर गर्भजात राखिया फौत करे; परे ऐ पुत्र आपन पितार तेज्य वस्तु पर दखिलकार हइया एक अविवाहिता कन्या राखिया फौत करे, परे ऐ कन्या आपन पितार तेज्य वस्तु पर दखिलकार हय; परे एक व्यक्ति कहे—ये आमी सन १२२७ साले ऐ कन्याके विवाह करिया छि, ओ द्वितीय व्यक्ति कहे—जे आमी ऐ कन्याके सन १२२६ साले ओहार पितार वाक-दानालुसारे विवाह करियाछि, एवं आमार एक पुत्र ऐ कन्यार गर्भे जन्मियाछिल, ताहाते ए कन्यार मृत्यु हय, एवं ताहार आद्धेर दिवस ऐ पुत्र आपन पिता अर्थात् ऐ द्वितीय व्यक्तीर समीचे मृत्यु हय, ए विषये यदि मोतओफफात मजकुरार विवाह करा सत्य हय तवे जयकाली मजकुरा उन्नाधिकारिणी हय, कि ना । यदि विवाह सत्य ना हय । तवे कि आन्दाज उहाके अशे इति ।

सप्तम सञ्चोख—

यदि एकजन स्त्री आपन स्वामी ओ नाबालग पुत्र राखिया मृत्यु हय, ओ मोतओफफा मजकुरेर पितामहेर एक स्त्री मर्तमान थाके, परे ऐ नाबालग पुत्रेर आपन पिता मोछम्मात मजकुरार स्वामीर समीचे मृत्यु हय, तवे एइ दुइ जना, अर्थात् मेत-ओफफात मजकुरार स्वामी ओ पितामहेर थाकेन, इहार कोन व्यक्ति ओयारिश हइवेक इति ।

श्रीज्जयतितराम्

प्रमुसमर्षितप्रश्नपत्रं यदन्तरेबीशन्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशश-

ताब्दीयजुलाहमासीयपञ्चदशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशत्रोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यस्य कन्यायाश्च पक्षतो विवाहकर्माङ्गीभूतनान्दीमुखश्राद्धं यदि न जातं स्यात्तथापि विवाहः सिद्धो भवितुं शक्नोति, अङ्गभूतकर्मणोऽकरणेऽपि प्रधानसिद्धेः शास्त्रीयत्वादिति ।

अथ प्रमाणम्—

प्रधानस्याक्रिया यत्र साङ्गं तत्क्रियते पुनः ।

तदङ्गस्याक्रियायान्तु नावृत्तिर्न च तत्क्रिया ॥—इति तिथितत्त्वादि-
(वित० पृ० ११)अन्यभूतछन्दोगपरिशिष्टवचनम् ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि भ्रातृसत्त्वे सपिण्डसत्त्वेऽपि नान्दीमुखश्राद्धं न जातं स्यात् तथापि विवाहः सिद्धो भवितुं शक्नोतीति ।

अथ प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणमेवेति ।

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि कश्चित् श्रोत्रियब्राह्मणजातीयो व्यक्तिविशेषः स्वकीयकन्याविवाह-
कथोपकथनं केनचित्सह स्थिरीकृत्य वाग्दानं कृत्वा भूतः स्यात्, पश्चात्तस्याः
कन्याया विवाहोऽन्येन केनचित्सह कलौ भावितुं न शक्नोति, एवं
येन सह विवाहकथोपकथनं न स्थितं स यस्मै वाग्दत्ता कन्या तस्मिन्
निधमाने सति यदि विवाहं करोति तदा स विवाहः शास्त्रानुसारेण कलौ
न सिद्ध्यतीति ।

अथ प्रमाणम्—

दत्तायाश्चैव कन्यायाः पुनर्दानं परस्य च—इति कलिवर्ज्यप्रकरणे
उद्धाहृतत्वादि (पृ० ११२)अन्यभूतगुणिवचनम् ॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि तस्याः कन्याया विवाहसमये तस्याः सपिण्डसत्त्वे सम्प्रदान-
क्रियाकरणे कन्यादानाधिकारिणोऽनुमतिस्तदा पुरोहितेनापि सम्प्रदानक्रिया

कर्तुं शक्यते, नान्यथा । यदि च पुरोहितेन कन्यासम्प्रदानं कृतं स्यात्तत्र कन्यादानाधिकारिणोऽनुमतिश्चेत्तदा प्रमाणं भवति नोचेन्न भवतीति !

अत्र प्रमाणम्—

पिता पितामहो आता सकुल्यो जननी तथा ।

कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रवृत्तिस्थ परः परः ॥—इत्युद्गाहतत्त्व(पृ० १२६)

धृतमुनिवचनम् ॥१॥

स्वामिनोऽनुमतिसत्त्वे तु अस्वामिकृतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति, व्यवहारोऽपि तथा—इति विवाहमङ्गार्यवादिमन्ये(१ विवाह ३०३)लिखनम् ।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि सप्तमपुरुषवर्हिभूतपितृव्यसम्बन्धसमिश्रभगिनीकन्यया सह विवाहः कथोपकथनं कृतम्, एवं कन्यामातृसपिण्डीकरणदिने विवाहो जातः स्यात्तदा तादृशविवाहः सिद्ध्यति । तत्र तस्याः कन्यायाः मातुः पतिविहीनायाः सपिण्डीकरणं वस्तुतः शास्त्रतो यद्यपि नायाति, तथापि प्रश्नपत्रे लिखितमस्तीति कृत्वा मयोत्तरं लिखितमिति ।

अत्र प्रमाणम्—

मातृतः पञ्चमी त्यक्त्वा पितृतः सप्तमी त्यजेत्—इत्युद्गाहतत्त्वादि-
(पृ० १०६) धृतमुनिवचनम् ॥१॥

पतिपुत्रविहीनायाः स्त्रिया नास्ति सपिण्डीकरणम्—इति सप्तम्यधृतमुनिवचनम् ॥२॥

षष्ठप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येकः कश्चिद् व्यक्तिविशेषो अथकलीनाम्नीपत्नीमेका पत्न्यन्तरगर्भ-जातमेक पुत्रश्च सरक्ष्य मृतः स्यात्तदनन्तरं स एव पुत्रः स्वपितृव्य (१) त्यक्तधने आयत्तत्वं सम्भावाविवाहितां कन्यामेकां विहाय मृतः स्यात्तदनन्तरं सा कन्यारि स्वपितृत्यक्तधने आयत्तत्वं सम्भादितवती स्यात्, तदनन्तरं कश्चिद् वदति “वद्वालाख्यसप्तविंशत्यधिकद्वादशशतान्दे मयेयं विवाहिता” इति, द्वितीयः कश्चिद् वदति वद्वालाख्योनत्रिंशदधिकद्वादशशतान्दे तत्कन्या-पितृकृतशम्भानानुसारेण मयेयं विवाहितेति, एव तस्याः गर्भे मया एकः

पुत्रः जनित इति च, ततः सा मृता, एवं तस्याः श्राद्धदिने सोऽपि पुत्रः स्वपितुः समक्षं मृतः स्यादेवंविधविषये मृतायास्तस्याः विवाहस्य सत्यतायामसत्यतायां योमयथैव जयकाली उत्तराधिकारिणी भवितुं न शक्नोति, सपत्नी पुत्रदोहित्रत्यक्तघने मातामहविमातुः, सपत्नीपुत्रत्यक्तघने विमातुश्चेदानीं वज्रदेशचलितशास्त्रानुगारेणाधिकाराभावात् । किन्तु मूलभूतघनस्यापत्नीत्वेन यावज्जीवं स्वमर्तृकुलोचितप्रासाच्छादनस्यावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तघनस्य चाधिकारिणी भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

सर्वेषामपि तु न्यार्यं दातुं शक्त्या मनीषिणा ।

प्रासाच्छादनमस्यन्तं पतितो ह्यददद्भवेत् ॥—इति मनु (६।२०२)-

वचनम् ॥१॥

सप्तमप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्येका काचित् स्त्री स्वपतिमप्राप्तव्यवहारं पुत्रश्च संरक्ष्य मृता स्यादेवं तस्याः स्त्रियाः पितामहस्यैका पत्नी च वर्तमाना स्यात्, परचास्तोऽपि अप्राप्तव्यवहारः पुत्रः स्वपितुः समक्षं मृतः स्यात्, तदा पतिपितामहपत्न्योर्वर्तमानयोर्मध्ये पतिरेवाधिकारी भवति । तस्याः स्त्रियाः मरणानन्तरं विवादास्पदोभूततद्घनेऽप्राप्तव्यवहारपुत्रस्वत्वस्योत्तराधिकारित्वेन चातत्वेन तद्धनं तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य जातम् । अतस्तन्मरणोत्तरं तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य ये उत्तराधिकारिण्यस्तेषां गेव भवति, तस्याप्राप्तव्यवहारस्योत्तराधिकारिणां मध्ये तत्पुत्रमारभ्य दोहित्रपर्यन्ताभावेन तत्पितुरेवाधिकारस्य शास्त्रसिद्धत्वात् । जयकाल्याश्च घनिनोऽप्राप्तव्यवहारस्य मातामहविमातुः सपत्नीपुत्रदोहित्रस्य तस्यैवाप्राप्तव्यवहारस्य त्यक्तघनेऽधिकाराभावात्—इति वज्रदेशचलितमनुशायमागदायतत्वदायमागटीका-उद्गाह्यतत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ प्रातरस्तथा—इत्यादि तत्तदग्रन्यधृत-

याज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्तिशदधिकाष्टादशशताब्दीयफेरवरीमा-
सोयदशमदिनसमग्रन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतिराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३७—रुक्कारि मेहेल सदर देओनी आदालते मोकाम
कलिकाता आदालते मजकुरेर हाकिम हेनरि सिकिसपीयेर छाहे-
वेर बैठके । सन १८३३ ई० २८ माहे नवम्बर मोठावेक सन १२४०
याङ्गला १४ माहे अमहायन दिवस गृहस्पतिवार—

रतनचन्द्र ओ किरतचन्द्र

छापेलाम्

छापेलानेर सकल लालावस्तिलाल हाजिर आसिलेक ।
छापेलानेर छओल सन हालेर २४ जुलाइर हओो क्रोट आजि-
मावादेर हाकिम जेमछ हारिङ्गटोन छाहेवेर हुकुमेर नाराजिते
जाहा तामछ कटवरद छाहेवेर अभिप्रायेर ऐक्यसाय कोन व्यक्ति
अंशेर विना नामकरणे जायदाद निलामेर बावन छावर हय ।
हुकुम मजकुरेर तरदिद ओ० छापेलानेर दाखिल करा आमानत
टाका । फेरत हओोनेर प्रार्थनाय सन १८२६ ई० ११ शेतम्बरेर
लिखित हुकुम गोपालचन्द्र ओ प्यारिलालेर एक किता छओल
आर २६ जुलाइर मस्तवार लिखित क्रोट मजकुरेर हाकिमेर
रुक्कारिर नकल एक किता सम्बलित, जाहा एइ मासेर १५
तारिखे दाखिल हइया छिल, पढागेल । प्रकाश हइतेछे ये
आदालतेर कायदा ओ जावेता ओ प्रकार नहे ये एजमालिर डिग-
रिर हालते ररादि अंश सुरतेर कपक व्यक्ति मुदाआलेहेमेर पर
डिगरि जारी आमले आइशे । अतएव ए विषय वपरेर लिखित
प्रेवन्शीयान क्रोटेर हुकुम जावेता ओ दस्तुरेर अन्यथा नहियेक ।
- किन्तु जखन एजमालि डिगरि जारी जन्ये हुकुम हइल, घचित

द्विल जे डिगरिर टाका जे अन्दाज अंश किरतनचन्द्र अथवा गोपालचन्द्र, अथवा किरतचन्द्र हइते दाखिल हइया थाके ताहा फेरत दिया अंशेर विना निर्दिष्टे ते सुमुदय पैतृक विषयेर निताने मेर हुकुम छादर करेण । किन्तु चुडन्त हुकुमे छादरेर पूर्व हुकुम हइल जे एइ विशयेर व्यवस्था एइ आदालतेर पण्डित हइते, तलव हय ये पैतृक कर्त्तार वाचत डिगरिर आरि हालते यद्यपि सन्तानेरा पितार लोकान्तरे पैतृक स्वयं वस्तु पर अंश स्तरते दाखिलकार हइया थाकेन तवे डिगरिर टाका सन्तानदिगेर अंश हइते लओ जाइवेक, कि अंशेर विना निर्णय पितार स्वयं वस्तु हइते उसुल हइवेक । आर छेरेस्तादार, यदि स्यात्, एइ मकईमार प्रमान एइ आदालतेर सेरेस्ताय थाके गुजरायेन, इति ।

श्रीर्जयतितराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतदेनरीतिक्विसरीयसादेवधर्माधिकरण-
लिखिताङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यप्रयत्नशिक्षाष्टादशशतान्दीयनवम्बरमासीमा-
ष्टाविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीपदिशम्बरमा-
सीमाष्टाविंशतितमदिनसम्यग्निशनिवाचरे भया प्राप्तं तदवलोक्य पादश-
बोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

यदि पैतृकर्णपरिशोधनार्थं धर्माधिकरणतो जयपत्रे प्रकाशिते सति पुत्राः स्वपितृमरणोत्तरं तत्त्यक्तघने अशित्वेन आयत्तत्वं सम्पादितवन्तः स्यु-
स्तदा जयपत्रविषयीभूतपैतृकमृणं पुत्राः स्वस्वांशानुसारेण स्वस्वांशत एव दद्युः, यतः पितृपरमानन्तरं तत्त्यक्तघने पुत्राणां यथा अधिकारस्तथैव पैतृ-
कर्णपरिशोधनेष्वधिकारः । अतएव पितृमरणोत्तरमंशानुसारेण गृहीत-
पैतृकघनानां पुत्राणामंशानुसारेणैव पैतृकर्णपरिशोधनाधिकारस्य शास्त्रानुसारेण न्याय्यत्वात्—इति पाटलिपुत्रप्रभृतिदेशचलितमितात्-
सावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमाधवव्यवहारकौस्तुमादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

रिक्थग्राह^१ ऋणं दाप्यः—इति उपरिलिखितग्रन्थधृतयाश्वलक्ष्य-
वचनम् ॥१॥

पितृप्युपरते पुत्रा ऋणं दद्यु र्यथांशतः ।

विभक्ता अविभक्ता वा यो वा तामुद्दहेद्दधुरम् ॥—इत्युपरिलिखित-
ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥२॥

विमजेरमुताः पित्रोरुद्ध्वं रिक्थमृणं समम्—इति तच्चद्वग्रन्थधृतया-
श्वलक्ष्यवचनमिति ॥३॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयकिबरवरीमासी-
याद्याविंशतितमदिनसम्बन्धिषुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

ल० १४१५

१८—स्वकारि मिजिल आदालते सदर वेओनि मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम हेनरि सिक्सपीयर
छाहेवेर बैठके । सन १८३३ ई इओो तारिल २६ नवम्बर
मोतावेक सन १२४० बाङ्गला १२ अग्रहायन दिवस मङ्गलवार—

राजा पटनीमन ओ राय घनशीघन आपिलाण्टान् ।

राय मनोहरलाल स्वयं ओ अलि स्वरूप

जानिवे आनन्दलाल ओ हरजयलाल ओ

मुकुन्दलाल ओ हरवनशीलाल नावालगान् रेछपाडण्टान् ।

आपिलाण्टानेर चकिलान मुनशी होछन अलि ओ मुनशी
दादार वखश ओ रेछपाडण्टानेर चकिलान् मुनशी अलिउल्ला
ओ मुनशी गोलाम आहमद हाजिर आसिलेक ओ रेछपाड-
ण्टानेर तृतीय चकिल सदासुखपण्डित पिहित विधाय हाजिर

नाह । एइ मकदमा गत कल्य आमार बैठके उपस्थित आर गत कल्येर रुबकारिर लिखित उजुहाते अनेक कागजात पडा हइया दिवा अवसान जन्ये मलतवि रहिल । अद्य पुनराय उपस्थित । ओ उभय विवादिर विवाद वावत एइ आदालतेर मतफरकार रुबकारिसकल ओ एइ आदालत ओ क्रोटेर मिडिलेर गाँथा उभयेर दस्तावेज पडा गेल । यद्यपि चुडन्त हुकुम हओर पूर्व कयेक विषयेर जिज्ञाशा एइ आदालतेर पण्डित हइते आवश्यक घोष हइल, अतएव हुकुम हइल ये ऐ रुबकारिर नकल सम्बलित एइ आदालतेर ओ क्रोटेर सकल कागजात एक सप्ताह मियादे ऐ पण्डितेर निकट पाठान जाय ये वारानशेर पाठशालार व्यवस्था ओ सुप्रीम क्रोट ओ अन्य अन्य पण्डितेर दस्तखति व्यवस्था दृष्टान्तरे एइ विशयेर जओवा लेखेन । जे ओजएम वेवाडिन छाहैव हाकिमेर हुजुरेर वावत ऐ पण्डितेर जोवानि जओवा-सकलेर सुपरीन अथवा बदलानु हेतु, जहार जेकर ऐ हाकिमेर रुबकारिते लिखित आछे, किछु आवश्यक हय कि ना । आर यद्यपि ऐ पण्डितेर पूर्वैर राय वर्तमान थाके, तबे लेखेन ये उपरेर व्यवस्थाहाय मजकुरेर लिखित वचनसकल कोन विचारे अशुद्ध गणा जाइतेछे, आर आपन व्यवस्थार वुनपाद ओ कोन वचनसकलेर पर भवतनी आछे, सरेओर लेखेन । ओ यद्यपि आपिलाष्टानेर उकिल रेडपाइण्डानेर दाखिल करा व्यवस्था वावते मकदमा नेहालसिह आपिलाण्ट ओ चेत् रेडपाइण्टेर पक्षे विशेषत एइ विशयेर पर ओजरदार आछे ये ऐ मकदमार सभय विवादीय ब्राह्मण जाति छिलेन, आर ऐ मकदमार सभय आगरओला वंश जाति हयेन । अतएव उचित ये ऐ पण्डित ताहार पर दृष्ट करिया ऐ विशयेर जओवा, जे आगरओला जातिर मर्यादा निमित्ते व्यवस्था मजकुरेर किछु तफात आविश्यक आइसे, कि ना लेखेन । आर क्रोटेर मिडिलेर ६४ लम्बरेर दाखिल करा एइ आदालतेर साबेक पण्डित-

सकलैर व्यवस्था, जाहा मतफरकार मुकद्दमार विचारे एह आदा-
लते लओो गीयाछे, ऐ पण्डित ताहार पर ओ गौर ओ ताम्बुल
करिया जओोय लेखेन—ये तदनुसारे ओ तदान्तर ये सकल
तहकीकात आमले आशीयाछे, तद्दृष्टे व्यवहार किछु तबदिल
हेतु आवश्यक हइवेक, कि ना। ओ यदि स्यात् आवश्यक हय
ताहार जेकर लेखेन इति ॥

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिकिसग्रीयरसाहेबधर्माधिकरण-
लिखिताङ्करेकीशन्दप्रतिपाद्यत्रयस्त्रिंशदधिकाष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीय-
पञ्चविंशतितमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिकारपत्रमेवं तत्समपितैतद्वि-
धाद्विपर्यायविशेषपत्रातश्च यत्तद्विषयदिशम्परमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्ब-
न्धिशानियासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ।

वाराणस्यधिकरणकपाठशालास्थपण्डितलिखितव्यवस्थापत्रस्य सुप्रीम-
कोट्यख्यधर्माधिकरणनियुक्तपण्डिततदितरपण्डितसम्मतव्यवस्थापत्रस्य चा-
वलोकनेन श्रीयुक्तोलियमवेराडोनसाहेबामिधानैतद्धर्माधिकरणाधिपति-
कृतास्मत्संबन्धिप्रश्नस्यास्मद्वचनिकोत्तरस्य परावर्त्तनस्य शुद्धकरणस्य
चावश्यकता अधिदमि नास्ति । तथाहि श्रीयुक्तोलियमवेराडोनसाहेबा-
मिधानैतद्धर्माधिकरणाधिपतिकृतास्मत्संबन्धिप्रश्नध्यायमेव । यद्यपि हिन्दू-
जातीयः कश्चित् फलोमेका पञ्च दोहिवान्, येषां दोहिवानां माता विद्यमाने
स्वपितरि मृता स्यात्, द्वौ भ्रातृपुत्रौ च सरक्ष्य मृतः स्याद्, एवं क्रमागतधर्म
भ्रातृद्वयोर्मध्ये विभक्तं स्यात्तदं तस्य मृतस्य स्वर्त्तयः कस्य भवतीत्येकः ।
तदुत्तरं मया दत्तं 'तत्पत्नी प्राप्नुयात् ।' पुनः प्रश्नान्तरम्—'तत्पत्नीमरणोत्तरं
कस्य भवतीति । तदुत्तरं मया दत्तम्—'दुहिता यदि नास्ति तदा दोहित्राः
प्राप्नुयुः' इति । अत एवैतयोर्द्वयोः प्रश्नयोर्मध्ये प्रथमप्रश्नस्य यदुत्तरं
मया दत्तं तदेवोत्तरं तत्प्रश्नविषये वाराणस्यधिकरणकपाठशालास्थ-
पण्डितैः सुप्रीमकोट्यख्यधर्माधिकरणनियुक्तपण्डितैरन्यैरपि पण्डितैर्लि-

लितम् । तत्र कश्चिद्विशेषो नास्ति, तद्व्यवस्थाद्वयोर्मध्ये विभक्तकृत्स्न पतिधने' ॥ पृथ्वं पत्न्या पञ्चाधिकारः, इत्यस्य लिखितत्वात् ।

द्वितीयः प्रश्नो यस्तदधिपतिना मां प्रति कृतस्य च प्रश्नो वाराणस्य-
धिकरणकपाठशालास्यपरिदत्तान् प्रति गुपीमकोटादयधर्माधिकरणनि-
युक्तपरिदत्तान् प्रति तदितरपरिदत्तान् प्रति या तत्प्रश्नकर्तृभिर्यद्यपि न
कृतस्तथापि तैः परिदत्तैरेकानुपूर्व्याकृतंस्कृतव्यवस्थाद्वयोरधोभागे कात्यायन-
मुनियचनं वीरमिश्रोदयग्रन्थलिखिततद्वचनव्याख्यानं च प्रमाणं लिखित्वा
यल्लिखितं यत्तत्प्राप्तकृतत्परिरूपेणैक्यं नालम्बते । तस्यायं पर्यवसितार्थः ।
यद्विभक्तं पतिधनं पतिमरणोत्तरं पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिका-
रित्वेन पत्न्या प्राप्तं स्यात्, पत्नीमरणोत्तरं तद्धनं पतिभ्रातृपुत्रदौहित्रयोः
समवाये पतिभ्रातृपुत्रा एव प्राप्नुयुर्न दौहित्रा इति । तत्र वीरमिश्रोदय-
ग्रन्थलिखितस्य कात्यायनवचनस्य तद्वचनव्याख्यानस्य चायमेवाभिप्रायः ।
यदि विभक्तं पतिधनं पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तं
स्यात्तदा पत्नीमरणोत्तरं तत्तत्कान्तपतिधनं पत्युष्ये उत्तराधिकारित्वेन एव
गृह्णीतुः, न तु पत्युत्तराधिकारिण इति । तत्र च पत्युत्तराधिकारिणां मध्ये
“पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा तत्सुतः” — इत्यादि पाशवल्क्यादि-
वचनोक्तस्त्युत्तराधिकारिणां दुहित्रादीनामेवाधिकारः । तत्रापि प्रथमं दुहि-
त्रस्तदभावे दौहित्राणां तदभावे भ्रातृस्तदभावे पितृस्तदभावे भ्रातृणां तदभावे
भ्रातृपुत्राणां तदभावे पौत्रादीनां पाठक्रमेणाधिकारः । तत्र च पत्नी-
मरणोत्तरं विद्यमानायां दुहितरि विद्यमानेषु दौहित्रेषु विद्यमानायां मातरि
विद्यमाने च पितरि विद्यमानेषु च भ्रातृषु पतिभ्रातृपुत्रात् पृथ्वं पत्युत्तरा-
धिकारिषु एतान् विहाय पतिभ्रातृपुत्राणामधिकारो भवति — एतद्विधायक
पश्चिमदेशचलितधर्मशास्त्रान्तर्गतस्य कस्यापि ग्रन्थस्याभिप्रायो नास्ति ।
अतएव तत्तद्व्यवस्थालिखितपरिदत्तानां मतं पश्चिमदेशचलितशास्त्रबहिर्भू-
तमेव, तत्तत्परिदत्तैः स्वस्वव्यवस्थालिखितवचनानां वीरमिश्रोदयादिग्रन्थानां
चाशयानुद्भवैव लिखितत्वात् । अतएव वीरमिश्रोदयादिग्रन्थलिखित-

कार्यायनवचनं तद्व्याख्यानञ्च यत्तत्तत्परिहृतलिखितव्यवस्थामुक्तभूतप्रमाणमस्ति तदेतद्व्यवस्थाया अघोभागे प्रमाणत्वेन, एवं सर्वत्रैव वीरमित्रोदयादिग्रन्थे यत्तत्तिष्यन् पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे सत्युत्तराधिकारित्वेन पत्न्या प्राप्तं तद्धने पत्नीमन्थोत्तरं प्रथमं दुहितुस्तदभावे दौहित्राणामधिकारस्य बहुशो लिखितत्वात्, तद्विषयकयोर्वीरमित्रोदयादिग्रन्थलिखितप्रमाणान्यप्येतद्व्यवस्थाया अघोभागे प्रमाणत्वेन मया लिखितानि सन्ति । तैरेवैतत्सर्वं स्पष्टमिति ।

एवञ्च सति अस्मद्वत्तभोयुक्तोऽलियमवेराडोन साहेबमिधानैतद्वर्माधिकरणाधिपतिसमीपे वाचनिकोत्तरस्य प्रमाणान्यप्येतद्व्यवस्थाया अघोभागे लिखितानि सन्त्येवेति । एवं यानसिद्धान्तोऽर्थिनः जितुनाम्न्याः प्रत्यर्थिन्या विवादसम्बन्धिन्या व्यवस्थाया अगारबालाखण्डेयजातीयस्य मर्यादार्थमेतद्विषये कस्यचिद्विशेषस्यावश्यकता नास्ति । याज्ञवल्कीयापुत्रधनाधिकारप्रकरणेयवचने सर्ववर्गेष्वयं विधिः' इति । अस्य विशेषतो लिखितत्वात् । एवं कोटापीलाख्यधर्माधिकरणनिविष्टपत्रज्ञातान्तर्गतचतुःपट्टधक्काङ्कितव्यवस्था चैतद्वर्माधिकरणे विवादास्पदीभूतचनबाते ध्यायत्तत्त्वसम्पादकाशमयनकाले गृहीता, तदनुसारेण तदनन्तरं यद्यदनुसन्धानं धर्माधिकरणतो जातं तद्वदृष्टयानि श्रीयुक्तोऽलियमवेराडोन साहेबमिधानैस्तद्वर्माधिकरणाधिपतिकृताश्मत्सम्बन्धिप्रश्नस्यास्मद्वत्तवाचनिकोत्तरव्यवस्थायाः काचिदपि परावर्तनस्यावश्यकता नास्ति, तद्व्यवस्थायामपि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य विभक्तधने प्रथमं पत्न्यास्तदभावे दुहितुस्तदभावे दौहित्राणामधिकारस्य स्पष्टोक्तत्वात्-इति पश्चिमदेशान्तर्गतागारप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमाधवव्यवहारमयूखव्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

तत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दयादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थपृथक्कृत्यायनवचनम् ॥१॥

अथ च वचनार्थः—दायादा इत्यत्र कस्येत्यपेक्षायां शयनान्वितभर्तु-
रित्येवोपस्थितत्वादनुषज्यते—इति वीरमित्रोदयग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ प्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सख्यचारिणः ॥

एषामभावे पूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।

स्वर्थातस्य ह्यपुत्रस्य सर्ववर्ण्यप्यथं विधिः ॥—इति मिताक्षरावीर-
मित्रोदयव्यवहारमाधयव्यवहारमयूखन्यवहारकौस्तुभादिग्रन्थभूतयाज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥३॥

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तप्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिता-
क्षराग्रन्थलिखनम् ॥४॥

तस्माद्भिभक्ता संसृष्ट्यन्यपुत्रं स्वर्थाते पत्नी धनं प्रथमं गृह्णात्ययमर्थः
सिद्धो भवति—इति मिताक्षराग्रन्थलिखनम् ॥५॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्थातस्य विभक्तस्यासंसृष्टिनो धनं परिणीता स्त्री
संयता सकलमेव गृह्णातीति स्थितं, तदभावे दुहितरः—इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनम् ॥६॥

दुहित्रभावे दोहित्रो धनभाक्—इति मिताक्षरावीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

पत्न्यभावे दुहितरोऽपुत्रविभक्तासंसृष्टधनभाजः—इति वीरमित्रोदय-
ग्रन्थलिखनम् ॥८॥

यथा पितृधने स्वाम्यं तस्याः सत्स्वपि बन्धुषु ।

तथैव तत्सुतोऽप्रीप्ते मातृमातामहे धने ॥—इति वीरमित्रोदयग्रन्थभूत-
बृहस्पतिवचनञ्चेति ॥९॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधि क्वाष्टदशशताब्दीयफिक्वरवरीमाणी-
याष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेवं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१३४ लम्बर आपील—

इ० १८३१ साल

३६—सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति अपुत्रक एक विधवा कन्या आर ऐ कन्यार एक पुत्र एवं एक कन्या ऐ व्यक्ति वत्तमाने मरे । ताहार एक पुत्र आर सहोदर भ्रातार एक पुत्र राखिया लोकान्तर करे । आर ऐ व्यक्ति मरणान्ते ऐ वत्तमाना कन्यार पुत्रेर मृत्यु हय— एमत स्थले ऐ व्यक्ति स्थावरादिधने काहार अधिकार हय । आर पूर्वोक्त कन्या ओ दौहित्रगण वत्तमान याकिते ऐ व्यक्ति उदरामय ओ ज्वररोगावस्थाय आपन स्थावरादि धन सहोदर भ्रातार पुत्रके दान करिया ऐ दानपत्रे दौहित्रगणेर मोशाहेरा निर्णय करिया ऐ दानेर वस्तु र उपस्वत्व हइते दिवार विषये दानगृहीता व्यक्ति प्रति अनुमति लिखिया देय, तवे एमत दान शाखानुमारे सिद्ध वटे, कि ना—इहार यथाशास्त्र प्रत्युत्तर लिखिवा—इति ।

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमेतद्विवादविषयनिविष्टपत्रज्ञातञ्च यदङ्करेजोशब्दप्र-
तिपाद्यत्रपश्चिदधिकष्टादशशताब्दीयनवम्बरमासीयोनत्रिंशत्तमदिनसम्ब-
न्धिशुक्रवाचरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

यदि पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितः कश्चिद्व्यक्तिविशेष एकां विधवां दुहितरं
तत्पुत्रञ्चैकं स्वजीवनावस्थायां मृताया एवस्था दुहितुरेक पुत्र सहोदर-
भ्रातृपुत्रञ्चैकं संरक्ष्य मृतः स्यात् तन्मरणानन्तरञ्च विद्यमानायास्तत्क-
न्यायाः पुत्रस्य मरणं जातं चेदपि घनिनो मृतस्य त्यक्तधने तन्मरणका-
लोनविद्यमानपुत्रयोः सम्प्रति च वत्तमानाया दुहितुरेवाधिकारः । यतः
पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य त्यक्तधने प्रथमं पत्न्यास्तदभावे दुहितुरधि-
कारः, दुहितृष्वपि प्रथमं कुमार्ण्यास्तदभावे चोदायाः पुत्रवत्त्याः सम्भावित-

पुत्रायाश्चाधिकारः अत एव पितृमरणोत्तरं या कन्या पुत्रवती स्थिता तस्या अधिकारस्य धनिनो मृतस्य पुत्रमारभ्य कुमारीपर्यन्तरस्त्वस्य त्यक्तधने निष्पत्त्युदतया जातत्वेन आसाधिकारायां तस्यां विद्यमानायां तत्पुत्रस्य मरणेऽपि धनिनो मृतस्य त्यक्तधने तस्य अधिकारो नैव विनश्यति । अतस्तस्यां विद्यमानायां सत्संक्रान्तपितृधने तत्पितृदौहित्रस्यार्थात्तद्भगिनी-पुत्रस्य विद्यमानस्य तत्पितृभ्रातृपुत्रस्य च नाधिकारः । एवं पूर्वोक्तकन्या-दौहित्राणां विद्यमानतायामुदरामयन्वरोगावस्थायां स्वस्वत्वात्पदीभूतस्थावराधिधनस्य भ्रातृपुत्रसम्प्रदानकं यद्दानं तेन कृतं तद्दानपत्रे दानविषयीभूत-स्थावराधिधनोपस्थत्वात् स्वदौहित्राणां मासाञ्छादनदाना र्थमनुमतिर्दानप्रदी-तारं स्वभ्रातृपुत्रं प्रति लिखिता स्वाच्छदान(१)मेतद्विवादविषयनिविष्टप्रभुसमर्पित-पत्रजाततात्पर्यार्थेपिवेचनया पञ्चशास्त्रानुसारेण न सिद्धयति । कथञ्चिद्दानं जातं चेदपि दातृत्वेन मय्यमानस्य रोगार्त्तावस्थायामेतद्दानस्य जातत्वेनै-तादृशदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वाभावात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदाय-तत्त्वदायमागटीकादायक्रमसंग्रहविवादाख्यवसेतुविवादमङ्गार्णवादिग्रन्थानुसा-रिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाश्वस्त्य-वचनम् ॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी रिक्थं^१ गृहीयात्तदभावे चोढा—इति दायभागादिग्रन्थधृतपराशरवचनम् ॥

पुत्रवती सम्भावितपुत्रा चाधिकारिणी—इति दायभागग्रन्थ-लिखनम् ॥ ३ ॥

कुमार्यभावे चोढाया पुत्रवत्याः सम्भावितपुत्रायाश्च तुल्योऽपिका-रस्तयोरेकतरामावे एकतराधिकारः—इति दायक्रमसंग्रहग्रन्थलिखनम् ॥ ४ ॥

अदत्तन्तु मयक्त्रोपकामशोकरुगन्वितैः— इत्यादि विवादार्यवसेतु
विवादमङ्गार्यवादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥ ५ ॥

तत्र भयादिरुगन्वितान्ताः^१ पञ्चप्रकृतिस्थितिविरोधिनी द्रष्टव्याः—
इति विवादार्यवसेतु (पृ० १५३) विवादमङ्गार्यवग्रन्थ (१ विवा० ४८६ख)
लिखनञ्चेति ॥ ६ ॥

अङ्गरेजीरुग्प्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतः श्दीयमैमासीयनधम—
दिनसम्बन्धिगुणकासरे मयेयं व्यवस्था ६ चेति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

४० रोवफारि भिछिल आदालते देआयानि सदर मोकाम
कलिकात्ता इङ्गरेजी सन १८३४साल तारिख ६ माह माह मोता-
यक धाङ्गला सन १२४१साल तारिख २५ माह बैशाख रोज
मङ्गलवार आदालत मजकुरेर हाकिम श्रीयुव रावट हालडन
राटरि साहेबेर येठके—

रामगोपालदेओ वनाम

गङ्गुलचन्द्रतहविलदार
ओ कृष्णगोविन्दतन्तर
ओ जुगलकिशोरतन्तर
ओ हरेकृष्णतन्तर
ओ राजकिशोरतन्तर

छापल हाजीर हइल । छापलेग सओल एक टाका मुन्नेर
इष्टाम्प कागजेर पर दासत्वैर मकईमाय दासत्व ओ कार्पेयर
खेसारतह्मावत मवलगे १५ टाकार परिमाणे खास आपिल
माह हओनेर प्रार्थनाय एक केता जेला मयमनसिहेर फाजी

सदर आमिनेर फयसलार नकल ई सन १८२८ सालेर ३०माह दिजम्बरेर लिखित ओ एक केला जेला मजकुरेर जजसाहेबेर फयसलार नकल ई सन १८३३ सालेर १७ दिजम्बरेर लिखित सम्बलित, जाहा सन हालेर १३माह मार्च तारिखे दाखिल हइयाछिल, अद्य उपस्थित ओ दृष्ट हइल । जे हेतुक ए मकदमार उभये हिन्दुजाति हयेन, अतएव ए मकदमार फयसलासकलेर यथार्थ ओ अयथार्थर प्रति व्यवस्था लओन उचित बोध हइया छुकुम हइल जे समुदय कागजाते ए आदालतेर पण्डितके समर्पण करा जाय । उचित ये पण्डित कागजात अनुमोदन ओ दृष्ट पूर्वक ए विशयेर व्यवस्था ये ए मकदमार फयसलासकल बाङ्गला देश चलित शास्त्रमते यथार्थ बटे, कि ना—लिखिया महरमेर बन्देर पूर्व दाखिल करेख इति—

श्रीजर्जयतितराम्

एतद्गर्माधिकरणाधिपतिश्रीसुतारवटहालडनराटरीसाहेबगर्माधिकरणलिखितैतदन्दीयमेइमाषीयपत्रादिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपप्रमेयं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रजाल य यदेवदन्दीयमेइमाषीयसतमदिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादराबोषो आवत्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतद्विवादविषयनिविष्टमयमनसिहजिज्ञासुयावान्तरगर्माधिकरणनिपुणसदरशामीनपदामिषिकाजीशब्दप्रतिपाद्यकृताङ्गरेबीशब्दप्रतिपाद्याष्टविशस्यभिकाष्टादशशताब्दीयदिशम्बरमाषीयत्रिंशत्तमदिवसीयत्रयपत्रं बङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण यथार्थमेव भवति—इति बङ्गदेशचलितदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था—

अत्र प्रमाणम्—

यत्रापि चेक दासीगवादिकं बहुसाधारणं तत्रापि तत्तत्कालविशेषे वहनदोहनफलैर्न स्वत्वं व्यज्यते । तदाह बृहस्पतिः—

“एकां स्त्रीं कारयेत् कर्म ययाशेन गृहे गृहे” इति युक्त्या विभजनीयम्, तदन्यथानर्थकं भवेत्—इति च दासभाग (पृ० ६) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥१॥

अङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुस्त्रिंशदधिकाष्टादशशतान्दीयमेहमासीयसप्त-
विंशतितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(४१)—मोकाम फलिकातार सदर देखोनि आदालतैर इंग्रेजि सन १८३४ सालेर १८ जानेर मोतावक बाङ्गला सन १९६० सालेर ६ माघ शनिवार तारिखेर श्रीयुत ओलीयम ब्राडिन साहेब ऐ आदालतैर हाकिमेर पैठकेर रोवकारि—

७५ लं:—

सन १८३२ साल

राधानाथचौधुरि

आपीलाण्ट

श्रीमति कृष्णरमनिदास्या, कृष्णनाथ मोतओफार कन्या ओ परानचन्द्रनेवगी ओ राधाचन्द्रनेवगी नाबालगदिगेर माता—

रेप्पाडण्ट

आपीलाण्टेर उकिल सदासुखपण्डित हाजिर आइल । एइ मोकर्हमा कल्य ओ अद्य आमार पैठके रोवकार हइया जेलार तावत कागज ओ क्रोट आपिलेर कागजसकल ओ ए आदालतैर कागजसकल पाठ करा गेल । चुहन्त हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व निचेर लिखित प्रश्नसकलेर प्रत्युत्तर ए आदालतैर पण्डितेर स्थाने लओओ उचित घोष हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारि नकल मोकर्हमार कागज समेत ए आदालतैर पण्डितके एइ हुकुमे समर्पन करा जाय ये निचेर लिखित प्रश्नसकलेर प्रत्युत्तर एइ हुकुम प्राप्तेर दिवसावधि तिन सप्ताह मध्ये दाखिल करेन ।

प्रथम प्रश्न—कोन व्यक्ति हिन्दुर एक पुत्र तिन कन्या ओ एक सहोदर भ्राता ओ पैतृक वस्तु राखिया मृत्यु हय । ताहार पर ऐ मृत व्यक्तिर पुत्र अविवाहित समय बहार तिन सहोदरा भग्नो, ताहार मध्ये एक जनार दुइ पुत्र, ओ स्वामि आछे, आर दुइ जना पुत्रसन्तान राखे ना, वर्त्तमान याकितेओ पैतृक विषय आपन पितृसहोदरके हेवा करे । तवे ए प्रकार पैतृक विषयेर हेवादातार पितार दीहिन्नगण याकितेओ बाङ्गलादेशीय चलितशास्त्रानुसारे सिद्ध ओ यथायं बढे कि ना इति—

द्वितीय प्रश्न—यद्यपि स्यात् बाङ्गलादेशीय चलितशास्त्रानुसारे एइ हेवानामा सिद्ध बोध हय, तवे साक्षीदिनेर जवानबन्दि प्रभृति मोकईमार कागजसकलेर द्वाराय कोन एक द्वितीय हेतु ये हेवानामा अयथार्थेर विषये पाओ जाय-बादा विस्तारित लेखेन इति—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरण।धिपतिश्रीयुतश्रीलिपमवेराडिनवादेवधर्माधिकरणलिखितैतदन्दीयजानवरीमासीयाष्टादशदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपधर्मेवं तत्तत्प्रतिषेधद्विवादविषयनिविष्टपत्रजातं च यदेतदन्दीयजानवरीमासीयद्वाधिराक्षितमदिनसम्बन्धिबुधबाधरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि हिन्दुजातीयः कश्चिद्व्यक्तिविशेषः पुत्रमेकं कन्यात्रय सहोदरभ्रातरं चैकं पैतृकं धनं च संरक्ष्य मृतः स्यात्तदनन्तरं तस्य पुत्रोऽप्यविवाहित एव पुत्रद्वयवत्या एक स्यात् सधवाया भगिन्या अरण्योः पुत्ररहितयोर्दशैर्भगिन्योश्च विद्यमानतायामपि स्वपैतृकधनस्य दानं स्वपितृव्यमुद्दिश्य कृतवान् स्यात्तदोपरिलिखितानां भगिन्यादीनां मध्ये ये केचित्तद्धनमात्रोपजीविनस्तेषां यावज्जीवं स्वपितृकुलोचितग्राह्यान्नादनोपयुक्तादायश्यकधर्माद्याचरणोपयुक्ताश्च धनयद्वशिष्टं धनं तद्विषये तद्वानं सिद्धं भवतीति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बमङ्गलसनादेयं यदतिरिच्यते—इति विवादार्यवसेतुविवादभङ्गा-
र्यवादिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥२॥

स्वभागान् यदि दद्युस्ते विक्रीणीयुरयापि वा ।

कूर्युर्यथेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधन(स्य) वै ॥—इति दायभागा
दिग्रन्थधृतनारदवचनञ्चेति—

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

(ए)तद्विवादविषयानि विष्टपत्रजातैरेतद्दानस्यायपार्थताबोधकः कश्चिद्दे-
हुरयापि न प्राप्तः । यत्पार्थिवप्रत्यर्थिनोः प्रश्नोत्तराभ्यां दानसमये दातु-
राज्यक्षमरोगप्रस्तताऽवगम्यते, परन्तु तत्पत्रजातैर्दानपित्रुपरमसमये दातु-
रतद्भोगप्रस्तताया अवनवगमेन दानतुः स्वपित्रुपरमानन्तरं तत्प्रत्यक्षधने स्वत्वो-
त्पत्तेरिष्टितत्वेन कैश्चित् तत्पत्रजातैर्दानसमयात् पूर्वं प्रायश्चित्तकरण-
स्याप्यवगमेन तद्दानसमयात्पूर्वं कृतप्रायश्चित्तस्य स्वपित्रुपरमसमये अना-
ततद्भोगस्य पितृत्वक्षधने जातस्वत्वस्य तद्भोगप्रस्ततायास्तत्कृतदानस्याशाजो-
यवसम्पादकत्वाभावात्—इति बह्वेदाचलितमनुदायभागदायतत्त्वदायभाग-
टीकादायक्रमसंग्रहविवादार्यवसेतुविवादभङ्गार्यवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था-

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयम् ॥३॥

पतितानामपि स्वधनसाध्यप्रायश्चित्तश्रुतेः पातित्वेन सत्त्वनाशः प्रायश्चि-
त्तवैमूढस्य बोध्यः—इति दायतत्त्व(पृ० १६२)दायभागटीका(पृ० १६)विवाद-
भङ्गार्यवादि(२ विवा १४ ख १५ क)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

अङ्गरेजीशन्दप्रतिपाद्यचतुर्विंशदधिकाष्टादशशतान्दीयजूनमान(१)मा-
सीयद्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मथेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रकार अकथता राखे । एइ जे शाखानुसारे जे हेतुते हिस्सादार आपन हिस्सा ना पाय । यद्यपि हिस्सादारसे हेतु हइते सुध्य थाके, ओ द्वितीय अंशीयरा ताहार अंश जवरदस्ती मते ना देय । हाकिम विचार कालिन ताहार हिस्सा देओन, ओ यदि ऐ व्यक्ति आपन हिस्सा अन्य काहार नामे लिखिया दिया मृत्यु हइया थाके, हाकिम सेस विरोध निवारण कारण दस्तावेज मत आमले आनेन, ओ आपन हिस्सा ऐ व्यक्ति जाहाके दियाछे, ताहाके देन । कारण एइ—यद्यपि केह कोन दस्तावेज लिखे आर दस्तावेज मत आमले ना आनिया थाके, किम्बा अन्य केह दस्तावेजेर मजमुने विरोधीय हय, हाकिम ओहार दास्तावेज मत आमले आनान, ओ विरोधीय व्यक्ति हइते जरिमाना लपन । यदि स्यात् स्वयं हाकिम ओहार दस्तावेज मत अवलम्बन ना करेण, तये हाकिम आपन खाजना हइते दस्तावेजेर लिखित मत आमले आनेन । ओ ए आदालते जे एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था ए आदालतेर छओतेर जओवे दाखिल हइल ताहार खोजास । एइ जे ए प्रकार अवष्टक चिरायेर तमलिक ओ हेवा ए मलुकेर दस्तुर मत मितानुरा ओ गयरह पुस्तक अनुसारे सिद्ध हइते पारे ना । ए प्रयुक्त जे पाटसालार पण्डितदिगेर दुइ व्यवस्था ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था अनक्य हओने सर्व प्रकारे प्रत्यय हय ना । ए विशयेर सन्देह दुर करणार्थे कलिकात्तार सदर देओनि आदालतेर पण्डितेर निकट हइते ज्ञात हओओ आविरयक आछे जे एइ मोकदमास आसल दाबिदार माधोजी, जेसकल तद्विर हिस्सा तकसिमेर कारण ओ हक ओसुलेर कारण, जाहा चाइ ताहा आमले आनियाछे, अर्थात् आपन वर्त्तमाने ए नालिस आदालतेर स्थापन करियाछिल, ए कारण ए मोकदमा स्थापन हओनेते माधोजि आसल दाबिदार तरफ हइते जे आपन हिस्सा पाओनेर कारण ओ ताहार हिस्सा, जाहा हस्तान्तर हइया थाके, ताहा यथार्थ आछे—कि ना । ए कारण हुकुम हइल जे मोक-

हमा मलतवि रहे, आर आसल तिन किता व्यवस्था आर तम-
लिकनामार नकल राखिया आसल तमलिकनामा एइ हवकारि
नकलेर सम्बलित एइ आदालतेर रेजेष्टर साहेबेर इराजि चिठी
द्वाराय कलिकावार सदर देओनि आदालतेर रेजेष्टर साहेबेर
नामे सेखानकार पण्डितेर निकट व्यवस्था लओनेर कारण उक्त
आदालते पाठानो जाय । एइ प्रार्थना जे रेजेष्टर साहेब से आदा-
लतेर हाकिमद्वारेर ज्ञातसारे तिन केता व्यवस्था आर तमलिक-
नामा आर एइ हवकार सेखानकार पण्डितके समर्पन करिया
वानारस देशेर प्रचलित पुस्तकसकल अनुसारे इहार जबाब
सप्ताहेर मध्ये उक्त पण्डितेर निकट हइते लइया, आर एइ मक-
ईमार तत तुल्य दृष्टान्त वानारस देशेर इहार पूर्व्ये यदि कोन
मकईमा सेखाने निष्पत्य हइयायाके, तवे ऐ मकईमार फयसलार
नकल ए आदालते पाठान आर उपरेर लिखित बिषयेर तर्त-तदन्त
हओनेर परे ओछितेर बिषये किन्वा रघुनाथराओ मोतीका
रेग्गस्टेर फेराद्वारेर बिषये उचित हुकुम प्रकाश हइवेक इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्र तमलिकनामाख्य पत्र व्यवस्थापत्रनयं च सद्-
कुरेभीशब्दप्रतिपाद्यवतुल्लिख्यदधिकरणदशशतान्दीयवानवरीमासीयवतुर्वि-
शततमदिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तद्वचनोक्त्य ग्राह्यबोधो जात
स्तदनुसारेणोक्तं लिख्यते—

मूलभूतैतद्विवादाभिधोता माधवबीनामक कश्चित्सुरविशेषो वय-
दनुसन्धान स्वकीयमागत्य विमन्य प्रदशार्थं स्वकीयाभाधारणस्वत्वसम्पाद-
नार्थमुचितं भवति तथा कृतवानर्थात् स्वस्य वर्त्तमानताया धर्माधिकरणे
अयमभिधानस्तेनैवोत्पापित स्वान्, अतएवेतद्विवादोत्पापने सति अकृ-
तैतद्विवादनिर्णयस्वार्थाद्धर्माधिकरणतोऽदृष्टैतद्विवादपरिन्देदस्य मूलभू-
तैतद्विवादाभिधोक्तुर्माधवबीनाम्न सञ्जयात् स्वकीयाशस्य धर्माधिकरणतो
विमक्तस्य मापण्यार्थं तदीयायो यो हस्तान्तर गतः स्यात्तद्विवाद-उत्तरकारण

तत्वात् विभक्तधनदानसिद्धिमिताक्षरादिग्रन्थानुसारेण निष्पत्तूहत्वाच्च ।
एवं स्वस्वत्वनिवृत्तिः परस्वत्वापादनं च दानं च परो यदि स्वीकरोति
तदा सम्पद्यते, नान्यथा इत्यादि मिताक्षराग्रन्थे (पृ० १४१) धीरमित्रोदय-
ग्रन्थे च भोगप्रकरणे स्पष्टतरतया लिखितमस्ति । तत्र दानस्योभयदलयेः
स्वस्वत्वनिवृत्तिरूपप्रथमदलस्यैतावता दातृव्यापारेण निष्पन्नत्वेऽपि सम्प्रदान
स्वत्वोत्पत्तिरूपस्य द्वितीयदलस्य धर्माधिकरणतो विभक्तौ दातुरशे सम्प्रदान
भूतव्यक्तिविशेषभ्यायत्तत्वं विना अनिष्ठाद्यत्वेन धर्माधिकरणतो विभक्तौ
स्वशे सम्प्रदानायत्तो भवनात्मकस्य सम्प्रदानस्वत्वोत्पत्तिरूपद्वितीयदलहेतुभूतस्य
बहुकालसाध्यस्य राजाधीनतया दुष्करत्वेन मन्यमानस्य च कस्यचिद्
व्यक्तिविशेषस्थाऋषीशब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगकरणं विना अनिष्ठाद्यत्वेन
मन्यमानस्य च दात्रा स्वकर्तव्यस्य स्वदत्तस्वाशे सम्प्रदानायत्ती भवनरूपस्य
सम्प्रदानस्वत्वोत्पत्तिहेतुभूतस्य सम्प्रदानार्थं सम्प्रदानभूतव्यक्तिविशेषस्थाऋषी
शब्दप्रतिपाद्यत्वेन नियोगकरणस्यापि शास्त्रीयत्वात्, यतोऽविभक्तौऽपि स्वशे
ऋषीशब्दप्रतिपाद्यस्य नियोगकरणे शास्त्रविरोधो नास्ति । अथ च धीर-
मित्रोदयग्रन्थे यदि केनचित् स्वस्वत्वास्पदीभूतधनस्य दानं कृत्वा सम्प्रदान-
स्यापत्तत्वं मधुपानैव मृतं स्यात्तथापि राजा प्रतिग्रहीतुरायत्तत्वं दानसम्पादक
सम्पाद्यमित्यस्यापि विशेषतो लिखितत्वाच्च । एवं लक्ष्मीकान्तस्य कृत्रिम
पुत्रत्वपक्षे दानादिकं विनापि विवादादस्पदीभूतधने तस्य स्वामित्वमग्न्याहृतमेव
पुत्रत्वात्—इति वाराणसीप्रभृतिदेशचलितमनुमिताक्षराधोरमभोदयन्यव-
हारमाधवमयवहारमयूखन्यवहारकोस्तुभन्यवहारचिन्तामण्यविवादचिन्ताम-
ण्यविवादशतान्नयवादन्यवहारपतकपारिजातादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्येति—

अत्र प्रमाणम्—

कुतुम्भमस्तवसनादेयं यदतिरिच्यते—इति च रमित्रोदयादिग्रन्थभूत-
वृत्त्यावचनम् ॥११॥

कन्याम्यश्च पितृद्रव्यादेयं वैवाहिकं वसु—इति तत्तद्व्यवधृतदेवल
वचनम् ॥१२॥

यत्र नो । चलभूर्णता । नारदः । “विद्यमानेऽपि लिखिते जीवत्त्वपि हि साक्षिण । विशेषतः स्थावराणां यच्च मुक्तं न तत्स्थिरम्” ॥ दानरिक्तशाले-
पभोगनिरपेक्षस्येव स्तत्रोत्पादकत्वात् । किमिति । भोगलवोप्यवश्यं तत्रा-
पेक्षयत इत्याशङ्कायामुपपत्तिरुक्ता विज्ञानेश्वराचार्यैः । दानादेः परस्वत्वा-
पादनत्वात्^१ परकर्तृकस्वीकारापेक्षाऽवश्यं भावनीया^२ । स्वीकारश्च
त्रिविधो मानसो वाचिकः कर्माधिकः । ममेदमित्यभ्यवसायो मानसः ।
ममेदमित्याद्यभिलाषो वाचिकः । उपादानाभिभारशानादिरूपेणानेकप्रकारकः^३
कर्माधिकः । तत्र मानसं विना स्वत्वासम्भवात्स तावदावश्यक एव^४ ।
दानविशेषपुरस्कारेण शब्दप्रयोगविशेषनियमपाददर्शनादिचेष्टाविशेषनिय-
माच्च वाचिरुक्ताधिकारव्यावश्यकवित्ववसीयते । तत्र हिरण्यरत्नादी-
दातृकर्तृकजलत्यागादानन्तरमेव प्रतिग्रहीतुरुत्पादानादिसम्भवान् त्रिविधो-
ऽपि व्यापारः सम्पद्यते । क्षेप्रादी तु फलोपभोग विना कर्माधिकस्वीकारा-
सम्भवादल्पेनाप्युपभोगेनावश्यं भवितव्यमन्यथा दानकृपादेः सम्पूर्णता न
भवत्युत्तरकालिकम्यापारभावात् । तेन तत्सहितादागमान्तराद्विकल
आगमो दुर्गलो भवति । एतच्च द्वयोरगमयोः पूर्वपरभावानवगमे ।
तदवगमे तु स्वल्पभोगविकलोऽपि प्राक्तन एवागमो बलवान्, पूर्वेषां
दानादिना स्वत्वापगमे दानाद्यनन्तरासम्भवात् । न चैवं तस्य क्षेप्रादेर्मध्य-
गतत्वापत्तिः । पूर्वस्याभ्यापगमादुत्तरस्याभ्यानुत्पत्तेश्चेति^५ बाध्यम्, प्रति-
श्रुतम्यायेनापेक्षणीयत्वत्वस्यसत्त्वात् पूर्वस्वाम्यसत्त्वेऽपि राज्ञैव प्रतिग्रही-
प्रादेः कर्माधिकस्वीकारस्यानिःप्रतिपक्षस्य सम्पादनीयत्वात्—इति बोर-
मित्रोदय (१० २०७।२०८) प्र-वर्तित्वम् ॥३॥

यावत्त्वयः । “आगमेऽपि बलं नैव मुक्तिः स्तोकापि यत्र नो” ।
आगमे विद्यमानेऽपि भोगविरहात् तावत्काल स्वत्वार्थवृत्तिधीन
भवतीत्यर्थः — इति व्यवहारचिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥६॥

१. ०भारान०—अप० ।

२. भावनीय — अत्य० ।

३. उपपत्तिरुक्ता—अप० ।

४. स त्वावश्यक एव—विनि० ।

५. पूर्वस्याभ्यापगमाद्—बोमि० ।

याज्ञवल्क्यः । 'आगमेऽपि वलं नैव मुक्तिः स्तोत्रापि यत्र ना' ।
आगमे विद्यमानेऽपि मुक्तिविरहात् तावत्कलं स्वत्वं न सिद्ध्यतीत्यर्थः ।
अत्र यत्रान्यमुद्दिश्य केनचित् किञ्चिदत्तं तत्रोद्दिश्यस्य स्वीकारव्यञ्जकभोगा-
भावात् स्वत्वं न निश्चीयत इति न्याय एव मूलम्—इति च व्यवहार-
चिन्तामणिग्रन्थलिखनम् ॥१०॥

अतस्तत्र जलप्रक्षेपस्वः पात्रोद्दिश्यक उत्सर्ग एव ददाति नाविव-
क्षितः । दानस्यनिष्पत्तिस्तु तस्य सम्प्रदानकर्तृकस्वीकारे सत्येवेति
परमार्थः—इति वीरमित्रोदयः (पृ० २४३) ग्रन्थलिखनम् ॥११॥

न्यायाधिगमे तर्कोऽभ्युपायस्तेनाभ्यूह्य यथास्थानं गमयेत् । तस्मा-
द्राजाचार्यावनिन्दौ—इति मिवाचराः (पृ० १३०।१३१) ग्रन्थभूतगीतम-
वचनम् ॥१२॥

यथा नयत्यसृक्पातेर्भृगस्य भृगयुः पदम् ।

नयेत्तथानुमानेन धर्मस्थ नृपतिः पदम् ॥ इति मनुः (६।४४)

वचनम् ॥१३॥

यः स्वामिना नियुक्तस्तु दानायव्ययपालने ।

कुसीदकृषिवाणिज्ये निस्तृष्टार्थस्तु सः स्मृतः ॥

प्रमाणं तत्कृतं सर्वं लाभालाभव्ययोदयम् ।

त्वदेशे वा विदेशे वा स्वामी तच्च विसंवदेत् ॥ इति वीरमित्रोदय-

व्यवहारचिन्तामणिविवादचन्द्रः (पृ० १५०) विवादरत्नाकरकल्पतरुप्रभृति-
ग्रन्थभूतबृहस्पतिः (बृस्पृ० ६।२६।५० ६८) वचनम् ॥१४॥

निस्तृष्टार्थस्तु यो यस्मिस्तस्मिन्नर्थे प्रमुस्तु सः ।

तद्भर्ता तत्कृतं कार्यं नागयथा कर्तुमर्हति ॥ इति वीरमित्रोदय-

व्यवहारचिन्तामणिकृष्णतटप्रभृतिग्रन्थभूतकात्यायनः (कास्पृ० ४७०।५० ५६)
वचनम् ॥१५॥

पितृधनहारित्वं तु पूर्वस्य पूर्वस्याभावे सर्वेषामवशिष्टम् ।

न आतरो न पितरः पुत्रा रिक्त्वहराः पितुः । इत्योरसव्यतिरिक्तानां^१

પુત્રપ્રતિનિધીનાં સર્વેષાં રિવથહારિત્વાપ્રતિષાદનપરત્વાત્-ઓરતસ્ય તુ,
 એક એવોરસઃ પુત્રઃ પિત્ર્યસ્ય વસુનઃ પ્રમુઃ-ઇત્યનેનૈન રિવથમાસ્ત-
 સ્યોક્તતાન્—ઇતિ મિતાચ્છા, પૃ. ૨૧૫.)રિવથલિલ્લનચ્છેતિ ॥૧૬॥

અક્ષરેબીશબ્દપ્રતિપાદ્યચતુર્લિંગરધિકાષ્ટાદશશતાન્દીપતુલાદમાભીય-
 દ્વાદશદિનસમ્પન્નિચ્છનિવાસરે મદેય ઠાવસ્થા રૂઢિતિ ॥

શ્રીર્જયતિતરામ્

શ્રીચૈવનાથમિશ્રેણ

(૪૩)—રોયકારિ મિલ્લિલ આદાલત દેઓયાણિ સદર મોકામ
 કલિકાતા સારિલ ૩ માહ જુન સન ૧૮૩૪ અક્ષરેજી મતાવક
 ૨૨ માહ જ્યેષ્ઠ સન ૧૨૪૧ વાઙ્ગલા રોજ મન્નલવાર આદાલત
 મજકુરાર હાકિમ ઓયુત રાવરટ હાલડન રાટરિ સાહેવેર
 વેઠકે—

રામગોપાલદેઓ ધનામ ગોકુલચન્દ્ર તદ્દલિલવાર ઓ ગૈરહ ।
 છાપલ હાઝિર હૈલ । ગત માસેર ૬ તારિલેર હુકુમ મતે એ આદાલ-
 તેર પચિડત ચે વ્યવસ્થા દાલિલ કરિલેન સાહા તારિલ મજકુરેર
 દુષ્ટી હઓ છાપલેર સ્વાસ આપીલેર સઓયાલ યવં તત્સમ્પર્કીય
 અન્ય કાગજાતેર સહિત પઢાગિયા બોધ હૈલ ચે પચિડતેર
 લિલિલ વ્યવસ્થા તારીલ મજકુરેર રોયકારિર લિલિલ
 મઓયાલ મતાવક નહે । કારણ યદ્ ચે સઓલેર મમ્મે યદ્-
 મહદયાન અર્થાત્તરફલાની ચે ગોપાલભાણ્ડારિ ઓ ગયરહ ઉદાર-
 દિગેર પૂર્વપુરુષેર દાસ-દાસી હિલ, આથ પર્યન્ત હૈતે સેવા
 ઓ કાર્ય નિયુક્ત ઓ પ્રવચ્ત હિલ । ય દ્યને ઉદારા સેવા ઓ
 કાર્ય હૈતે ગરહાજોર હૈયાહે—નાલિસ કરે । સદર આમીન ઓ
 જજ સાહેવ આપનારદિગેર ફયસલાર વિસ્તારિત ત્રિવરણસકલેર

द्वाराय छाएल ओ गयरहेर पूर्व पुरुस मसम्मा हाडो फारिक-
छानिर खरिदा गोलाम, साव्यस्थानुसारे उद्धारदिगेर दावि, एइ
हुकुमे ये छाएल ओ गयरह दास्यत्वेर सेवा ओ कार्य करे
डिगारि करिलेन । ये हेतुक प्रकार्य बोध हइतेछे ये किवल हाडो
मजकुर दासत्वताय खरिद हइयाछिल ना, बाहार पुत्र-पौत्रादी
इहाते छाएल ओ गयरहेर दासत्व सिद्ध हओन विषये ये
'कयसलासकल हइयाछे, एमत कयसलासकल शास्त्र-सम्मत
यथार्थ बटे कि ना । अतएव हुकुम हइल ये पुनराय कागज-
सफल पण्डितेर हाओला करा जाय । उचित ये पण्डित उपरेर
लिखित विधरणे ज्ञात हओनान्तर बाहार जओव दुइ रोजेर
मध्ये दाखिल करेण इति ॥०॥

श्रीज्जेयनितराम्

एतदधर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतरावटंहालडनराटरीसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितैतदब्दीयजुनामासीयनृतीयदिवसीयविचारपचान्वर्गतप्रश्नप्रतिरूपप-
त्रमेवं तत्समर्पितैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रज्ञातं च यदेतदब्दीयजुनामासीय-
द्वादशदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जात-
स्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते ॥

एतत्प्रश्नपत्रलिखितवृत्तान्ते सति हाडोनाम्नः कयपत्रे केवलहाडोसंशको
दासत्वेन क्रीतो न तु तस्य पुत्रपौत्रादिरिति नियमो यदि लिखितः स्यात्तदा
दासत्वेन हाडोमात्रस्य क्रयेण तत्पुत्रपौत्रादीनां शास्त्रोक्तपञ्चदशदासानन्त-
र्गतत्वेनाशास्त्रोपबलात्कारकृतदासभावान्तर्गतत्वेन च तेषां दास्यविषये
जातं यज्यपत्रज्ञातं तच्छास्त्रसिद्धं न भविष्यति, अशास्त्रोपबलात्कारकृतदास-
मोचनस्य शास्त्रानुसारेण कर्तुमुचितत्वात् । यदि च तस्मिन् कयपत्रे केवल-
हाडोसंशको दासत्वेन क्रीतो न तु तस्य पुत्रपौत्रादिरिति नियमो न लिखितः
स्यात्तदा दासत्वेन हाडोसंशकस्य क्रयेण तत्पुत्रपौत्रादीनामपि शास्त्रोक्तपञ्च-
दशदासान्तर्गतत्वेन तेषां दास्यविषये जातं यज्यपत्रज्ञातं तच्छ्रुतसम्मतं
भविष्यत्येव, क्रीतद्रव्यमात्रोत्पन्नद्रव्यजातमात्र एव क्रयः स्वस्वस्य शास्त्र-

व्यवहारोभयसिद्धत्वाद्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायतत्त्वदायभागीकादाय
क्रमसमग्रविवादार्यवसेतुविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

एदृजातस्तथा स्वीतो लब्धो दायादुपगतः ।

अनारुलभृतस्तद्वदाहितः स्वामिना च यः ॥

मोक्षितो महतरचर्णाद् युद्धे प्राप्तः पण्ये जितः ।

तवाहमित्युपगतः प्रव्रज्यावसितः कृतः ॥

भक्तदासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाभृतः ।

विक्रेता चात्मनः शास्त्रे दासाः पञ्चदश स्मृताः ॥—इति दायनम
समग्रविवादार्यवसेतुविवादभङ्गार्थवादिग्रन्थभृतनारदवचनम् ॥१॥

चौरापहृतविस्तीर्ता ये च दासीकृता बलात् ।

राज्ञा मोक्षयितव्यास्ते दासत्वं तेषु नेप्यते ॥—इति विवादार्यवसेतु(पृ०
१६३)विवादभङ्गार्थवादिग्रन्थभृतनारद नास० पृ० ६८ वचनञ्चेति ॥२॥

अङ्गरेओशब्दप्रतिपाद्यचतुर्गिरादधिकाष्टादशशताब्दीयजुलाइमासी २
पञ्चविंशतितमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरं मयेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(४४)—रोवकारि मिजिल आदालत देओतानि सदर मोकाम
कलिकाता अदालत मजफुरार कायम मोकाम हाकिम धीयुत
तामस किमल रावटसन साहेबेर बैठके । ओके तारिख ४ माहे
जुन सन १९३४ साल ई मोतवेक २३ ज्येष्ठ सन १९४१ बाङ्गला
दिवस बुधवार—

मुळम्मात विश्वेश्वरिदेव्या मफ्लछा

आपिलाएट

ताराचान्दचट्टोपाध्याय ओ गयरह

रेण्याडएटान

आपीलाएटेर उकिल मुनसी हयदर आली ओ रेण्याडएटानेर
मध्ये ताराचान्दचट्टोपाध्याय हाजिर आइल । ह मोकईमा

सिरस्तादारेर कैफियत सम्बलित गत मेइ मासेर ३० तारिखे
आमार बैठके रोवकार हइया आपीलाखटेर उकिलेर स्थाने
आपीलेर सओलेर नकल उखव हइया स्थकित जिल, अद्य
आपीलेर सओलेर नकल दाखिल कराते पुनराय रोवकार
हइल, ओ फयसला ओ आपीलेर छओला ओ ए आदालतेर
परिहतेर व्यवस्था ओ सदर आपीलेर मज्जुरि सरब सम्बलित
रोवकारि हउटे आइल । जे हेतुक चुडन्त हुकुम सादर हओर
पूर्व आदालतेर परिहतेर निकट व्यवस्था तलब करा
मोर्हमार विस्तारित सहिव उचित बोध हइल, अतएव
हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित
समुदाय छओलेर जओव वाज्जला मुलुकेर चलिता साखानुसारे
ओहार वचन प्रमाण सहित आगत बुधवार दिवसे दाखिल
करेण—ए आदालतेर परिहतेर हाओला कराजाय ।

प्रथम सओल —

सरूपचन्द्र वित्तयेगागी वेकि एक पुत्र दिपचन्द्र ओ पद्ममणी
ओ दुर्गामणी दुइ कन्या राखिया मृत्यु हय । ओहार समुदाय
तेर्य वस्तु ओहार पुत्र दिपचन्द्रके पौड़िल । ओ दिपचन्द्र
आपन जीवइशा पर्यन्त अन्येर अंश वेतेरेक दखितकार
धाकिया सन १२०४ साले तस्य स्त्री वेदवति ओ तस्य कन्या
दासमनीके राखिया मृत्यु हय । वेदवति ताहार तेर्य विषये
दखिलकार हइया मुछर्माव दासमनिर विवाह देय, जे
दासमनीर पुत्र सर्वचन्द्र जन्मे । १२०६ साले दासमनी आपन
मातामही वेदवति ओ सर्वचन्द्र पुत्र, ओ सन १२२४ साले
सर्वचन्द्र आपन मातामही वेदवति ओ आपन स्त्री विश्वेश्वरि
सनमुखे मृत्यु हय । तदपरे सन १२२८ साले मुछर्माव वेदवति
मृत्यु हय । अतएव दिपचन्द्रेर तेर्य वस्तु दिपचन्द्रेर दोहित्र

सत्येचन्द्रेर स्त्रीके असिचेक, कि दीपचन्द्रेर भग्निर सन्तान-
दिगेके इति—

द्वितीय सञ्चोख—

यद्यपि दासमनि दीपचन्द्रेर वर्त्तमाने किम्बा ताहार मृत्युर
पर दीपचन्द्रेर स्त्री वेदवति वर्त्तमाने जमिदारिर मजकुरार उपर
दखल पाइया थाके, ऐ प्रयुक्त ओ दरखल ना पाओ प्रयुक्त ये
प्रकार प्रथम सञ्चोख लेखा गेल ओहार तेर्य्य वस्तुते दीपचन्द्रेर
दीहित्रेर स्त्री घिरवेश्वरि सत्वाधिकारि हओने ओ ना हओने
किम्बा दीपचन्द्रेर भग्निर सन्तानेरा सत्वाधिकारि हओने ओ
ना हओने शाख अनुसारे व्यवत्तिक्रम आछे कि ना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिकारिस्थानाभिषिक्तश्रीयुततामयकिमिलरावटसन्-
साहेबधर्माधिकरणलिखितैवदन्दीययुनमासीयचतुर्थदिवसीयविचारपनान्तर्ग-
तप्रश्नपत्रप्रतिरूपपत्र यदेतदन्दीययुनमासीयद्वादशदिनसम्बन्धितवृत्तित्वात्तरे
मया प्राप्त तदवलोक्य बाह्यबोधो जातस्तदनुगारेणोत्तर लिख्यते ॥—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दीपचन्द्रस्य कथने यदि तस्य पुत्रमारभ्य
तत्पितु स्वरूपचन्द्रस्य प्रपौत्रपर्य्यन्तानां न्ये कश्चनचास्ति तदा दीपचन्द्र-
स्य पितु स्वरूपचन्द्रस्य दीहित्राणामर्थात् दीपचन्द्रभगिनीपुत्राणामेवा-
धिकार इति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पितुरपि प्रपौत्रपर्य्यन्ताभावे पितृदीहिप्रत्याधिकारो बोद्धव्यो धनि-
दीहित्रस्यैव—इति दायभाष्यव्याख्यानम् ॥१॥०॥०॥०॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि दासमनी दापचन्द्रे स्वयंवरि विद्यमाने मृते वा दीपचन्द्रपत्न्या
वेदवत्या विद्यमाना वा अजकस्स्याचरात्मवृत्तदने आयत्तत्वं सम्पादितवती

स्यात्तत्र तस्या आयत्तत्वं यदि तत्पितृकृतदानानुसारेणामुत्तदा तदनस्य दासमन्याः पितृदत्तसौदायिककलौषनत्वेन दासमन्याः मरणोत्तरं तत्त्यक्तपितृ-
दत्तसौदायिककलौषने तद्दुहित्रभावे तत्पुत्रस्य सर्वचन्द्रस्य अधिकारे जाते
सति तन्मरणोत्तरं तत्त्यक्तधने सर्वचन्द्रस्य पुत्रपौत्रपणीत्ररहितस्य पत्न्या
विश्वेश्वरीदेव्या एवाधिकारः । सर्वचन्द्रपत्न्यां विश्वेश्वरीदेव्यां विद्यमा-
नायां सर्वचन्द्रप्रमातामहस्वरूपचन्द्रदोहित्राणां नाधिकारः । एवञ्च सति
विश्वेश्वरीदेव्या दीपचन्द्रदोहित्रपत्न्यास्तदनाधिकारित्वे दीपचन्द्रभागिनी-
पुत्राणां चानधिकारित्वे दीपचन्द्रत्यक्तधने श्रवमेव व्यतिक्रमो जातः । दीप-
चन्द्रस्य धनं तत्कृतस्वकुलशोदेश्यकदानानुसारेण तत्कन्यात्वत्वात्पञ्च-
त्तमरणोत्तरं तस्यास्त्यक्त धनमिति । तत्र च धने तत्पुत्रस्य सर्वचन्द्र-
स्याधिकारित्वेन तन्मरणोत्तरं तदेव धनं सर्वचन्द्रत्यक्तमिति च । यदि च
सराजकरस्थावरागतकतद्धने दासमन्या आयत्तलमुपरिलिखिततत्पितृकृत-
दानानुसारेण नाभूदथवा प्रथमप्रश्नलिखितरीत्या आयत्तत्वमेव नाभूत्तदा
प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रकारेण दीपचन्द्रभागिनीपुत्राणामधिकारित्वे दीप-
चन्द्रदोहित्रपत्न्या विश्वेश्वरीदेव्या अनधिकारित्वे च दीपचन्द्रत्यक्तधने
कश्चिद् व्यतिक्रमो नास्ति-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागशयतस्यव्यवहार-
तत्त्वव्यवहारमातृकादायमागटीकादायक्रमसंग्रहपिशादार्णववेदुविवादमङ्गार्य-
वादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ॥—

अत्र प्रमाणम् —

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

ऊढया कन्यया चापि पत्युः पितृगृहेऽथवा ।

भर्तुः सकाशात् पित्रोर्वा लब्धं सौदायिकं स्मृतम् ॥—इति दायभागः—

दिग्रन्थधृत काल्यायनवचनम् ॥२॥

विग्रहकाले तत्पूर्वापरकाले वा स्त्रिये यद्धनं पित्रा दत्तं तत्र तु धने
प्रथमं कुमार्यास्तदनन्तरमुढायाः पुत्रवतीसम्भाषित पुत्रयोस्तदनन्तरं वन्धा-
विधययोश्चाधिकारः । सर्वदुहित्रभावे पुत्रादेर्योनुकपनवत् क्रमेण-
धिकारः—इति दायक्रमग्रन्थलिखनम् ॥३॥

परमेश्वरिदत्त आछे, ओ देवदत्त मजकुरेर द्वितीय पुत्र सिवसिंह,
तस्य पुत्र आनकट्टीराय तस्य पुत्र सदाशिवराय तस्य पुत्र कृष्ण-
दत्तराय मुद्दइ वर्त्तमान, ओ देवदत्तराय मजकुरेर तृतीय पुत्र
हरदिसिंहराय, तस्य दुइ पुत्र भैरवदत्त ओ हनुमानदत्तराय मुद्दइ
वर्त्तमान आछे; ओ भैरवदत्तेर एक पुत्र सम्गुदत्तराय, तस्य पुत्र
भोलानाथराय मुद्दइ वर्त्तमान आछे; ओ देवदत्त मजकुरेर चतुर्थ
पुत्र जयकृष्णराय निसन्तान मृत्यु हय । अतएव जिज्ञाशा
कराजाय ये चण्डीदत्त मजकुर ब्राह्मन जाति आपन भग्निर-
सन्तान परमेश्वरिदत्तके कर्त्तापुत्र करियाछे, शास्त्रानुसारे सिद्ध
वटे कि ना ॥

द्वितीय प्रश्न :—

यद्यपि कर्त्तापुत्र असिद्ध हय, तवे देवानामार लिखित धन
ओ परमेश्वरिदत्तेर नामे एकरारनामा शास्त्र मत सिद्ध हइवेक
कि, ना, ओ एइ सभोलेर सम्बलति देवानामा ओ एकरार-
नामा ओ कुरशीनामा दृष्टि करिया मैथिलि शास्त्रानुसारे प्रति
उत्तर लिखेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र तत्संबलितं दानपत्रं संवित्पत्रं वंशावलीपत्रं च
यदङ्गरेगीशब्दप्रतिपाद्यचतुर्ल्लिखदधिकाष्टादशशताब्दीयापरेलमासीयद्वाविंश-
तितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति अर्थात् पितामहसौचादौ विद्यमाने सति
पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितब्राह्मणश्रवण्यनगदीदत्तमैथिलेन सोदरभगिनोपुत्रः पर-
मेश्वरोदत्तः कृत्रिमपुत्रः कृतश्चेत् स कृत्रिमपुत्रो मिथिलादेशीयशास्त्रानु-
सारेण सिद्ध्यति । यद्यपि दत्तकमीमांसाग्रन्थे ब्राह्मणानां मागिनेयस्य पुत्रता-

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तया—इत्यादि दायभागादिग्रन्थ-
भूतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥४॥

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणञ्चेति ॥५॥०॥०॥०॥

अङ्गरेवीशन्दप्रतिपाद्यचतुर्जिह्वादक्षिणदशशतान्दीयत्रयमासीतै-
कादशदिनसम्बन्धिसोमवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(४५)—इ सन १८३४ सालेर ७ एपरेल दिवस स(१)मवार पइ
आदालत अर्थात् जेला तिरहतेर देखोनि आदालतेर रोबकारि
द्वाराय मोकाम कलिकावार सदर देखोनि आदालते पण्डितेर
पर सञ्जोल—

हनुमानदत्तराय ओ भोलादत्तराय ओ गणेशदत्तराय

मुईश्यान

मृत चण्डीदत्तेर वनीता मुछम्मात छोलछनचौधुरायन

ओ परमेस्वरिदत्त

मुदाहालेहेम

मोर्ईमा कालेट्टरि सेरेस्वाय नाम लिखा ओ जेला तिहोतेर
आदालतेर मोतालके देहा निजामत हादि परगनार मीजे बछुल-
पुर ओ गयरहते दरल पाओर प्रार्थनाय मवलगे ८७३५ एगुन
मालगुजारि देहा निजामतेर वायदादे ॥

प्रथम प्रश्नः—

चौधुरि देवदत्तराय जाति ब्राह्मण । एहार चारि पुत्र । प्रथम
विरसिंहराय, ताहार पुत्र चण्डीदत्तरायनामे छिल । ताहार वनीता
नछम्मात छोलछन, ओ विरसिंहेर कन्या मुछम्मात चान्द्रावति
चण्डीदत्तेर सहोदरा भगि छिल, ओ चन्द्रावति मज्जुरार पुत्र

परमेश्वरिदत्त आछे, ओ देवदत्त मजकुरेर द्वितीय पुत्र सिवसिंह,
तस्य पुत्र आनकट्टीराय तस्य पुत्र सदाशिवराय तस्य पुत्र कृष्ण-
दत्तराय मुद्दइ वर्त्तमान, ओ देवदत्तराय मजकुरेर तृतीय पुत्र
हरदिगिहराय, तस्य दुइ पुत्र भैरवदत्त ओ हनुमानदत्तराय मुद्दइ
वर्त्तमान आछे; ओ भैरवदत्तेर एक पुत्र सम्मुदत्तराय, तस्य पुत्र
भोलानाथराय मुद्दइ वर्त्तमान आछे; ओ देवदत्त मजकुरेर चतुर्थ
पुत्र जयकृष्णराय निसन्तान मृत्यु हय । अतएव त्रिंशत्
कराजाय ये चण्डीदत्त मजकुर ब्राह्मण जाति आपन भग्निर-
सन्तान परमेश्वरिदत्तके कर्त्तापुत्र करियाछे, शाखानुसारे सिद्ध
वटे कि ना ॥

द्वितीय प्रश्न :—

यद्यपि कर्त्तापुत्र असिद्ध हय, तवे हेवानामार लिखित धन
ओ परमेश्वरिदत्तेर नामे एकरारनामा शाख मत सिद्ध हइवेक
कि, ना, ओ एइ सम्मोलेर सम्बन्धित हेवानामा ओ एकरार-
नामा ओ कुरशीनामा दृष्टि करिया मैथिलि शाखानुसारे प्रति
उत्तर लिखेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं तत्सबलितं दानपत्रं संवित्पत्रं यं शाखलोपत्रं च
यद्भरणीशब्दप्रतिपाद्यचतुर्लिंगदधिकाष्टादशशताब्दीयापरेलमातीयद्वाविंश-
तितमदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तद्वलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति अर्थात् पितामहगौत्रादौ विद्यमाने सति
पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितब्राह्मणजातीयचण्डोदत्तमैथिलेन सांदरभगिनीपुत्रः पर-
मेश्वरोदत्तः कृत्रिमपुत्रः कृतश्चेत् स कृत्रिमपुत्रो मिथिलादेशोपशाखानु-
सारेण सिद्ध्यति । यद्यपि दत्तकमीमांसाग्रन्थे ब्राह्मणानां भागिनेयस्य पुत्रता-

निषेधकं वचनं लिखितमस्ति, परन्तु तद्वचनं वास्तवं दत्तकपुत्रविषयकमेव,
 न तु कृत्रिमपुत्रविषयम्, अथ च सर्वस्मृतिप्रधानमनुस्मृतौ कृत्रिमपुत्रता-
 विषये मनुवचनोक्तसञ्जातोपत्तादेरेवाप्रयोजकता दृष्ट्वा सर्वत्र प्राचीना-
 र्वाचनैर्मैथिलनिबन्धकारैः स्वत्वग्रन्थेषु स्वसञ्जातीयः कश्चित् कृत्रिमपुत्र-
 कर्त्तव्य इत्येव लिखितः, भागिनेयः कृत्रिमपुत्रो न कर्त्तव्य इति निषेधकः
 केनानि न लिखितः, वर मैथिलैर्महामहोपाध्यायधर्मशास्त्रव्यवस्थापककेशव
 मिश्रैरत्र पितरं भ्रात्रादिव्यां कृत्रिमपुत्रः कृतस्तत्रानि १७ तृत्वेनैव निर्देशो न
 पुत्रत्वेन भ्रातृत्वेन—इति हेतुपरिशिष्टग्रन्थे लिखितमस्ति । एवञ्च सति पित्र-
 पत्न्या भ्रात्रपत्न्या च भागिनेयस्य दत्तकग्रामोपाध्यायलिखितपुत्रतानिषेध-
 प्रयोजकवैकल्यसम्बन्धस्याधिष्य नास्ति । एव दत्तकपुत्रस्य स्वजनकपित्रादीनां
 पितृदत्तत्वं निषिद्धमिति सर्वेषां निबन्धकाराणां सम्मतम् । मैथिलग्रन्थ-
 काराणां मते कृत्रिमपुत्रस्य स्वजनकपित्रादीनां पितृदत्तत्वं सम्पत्त्येव—इति
 शुद्धिविवेके कद्वश्रोपाध्यायैर्मैथिलैर्लिखितमस्ति । अतो मैथिलग्रन्थकारा-
 णां मते दत्तकपुत्रकृत्रिमपुत्रयोर्विषयमात्र एव महान् भेदोऽस्ति । अतएव मि-
 थिलादेशे सञ्जातीयः कश्चित् कृत्रिमपुत्रः निरते, तत्रानि पितामह
 पौत्राद्यपेक्षया स्नेहातिशयात् पुत्रगुणाधिक्यदर्शनाच्च प्रायसो मैथिलैः
 प्राक्षेपक्षयैर्विशेषतो भागिनेयः कृत्रिमपुत्रः क्रियते इति सर्वदैव तद्देश-
 व्यवहारः । एवञ्च सति मनुस्मृतिव्यवस्थायां मिथिलादेशीयग्रन्थानुसारेण
 तद्देशव्यवहृतायां ब्राह्मणानां भागिनेयस्य कृत्रिमपुत्रतायां मैथिलनिबन्ध-
 कारप्रणीतदत्तकग्रामोपाध्यायलिखितवचनबाध्यता नास्ति, यतस्तद्देशाचार-
 चात्याचारकुलाचारादिविद्वत्स्य कस्यचिदपि कर्मणो चापस्तदन्यदेशीय-
 ग्रन्थानुसारेण तदितरव्यतिप्रचलितग्रन्थानुसारेण तदन्यकुलपचलितग्रन्था-
 नुसारेण वा भवितुं न शक्नोति, देशाचारजात्याचारकुलाचारादिरपि
 मन्वादिवर्धमानास्ते प्रचलप्रमयात्वेनोपन्यासात् । यत्र विषयविशेषे स्वदेशीय-
 परदेशीयग्रन्थयोर्विशेषस्तत्र विषये स्वदेशीयग्रन्थस्यैव प्रारब्धेण प्रच-
 रस्य भवितुं युक्तत्वाच्चेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

सदृशं ये प्रकुर्वीत गुणदोषविचक्षणम् ।

पुत्रं पुत्रगुरौयुक्तं स विज्ञेयस्तु कृत्रिमः ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

अपुत्रेण सुतः काय्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसंकीर्तनस्य च ॥ इति कल्यतस्विवाइरत्ना-
करप्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥२॥

सद्गिराचरितं यत् स्याद्दाम्मिकैश्च द्विजातिभिः ।

तद्देशकुलजातीनामविरुद्धं प्रकल्पयेत् ॥ इति मनु(८/४६)-
वचनम् ॥३॥

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्माश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्माश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनु-
वचनम् ॥४॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः प्राक् प्रवृत्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रजाः प्रज्जुभ्यतेऽन्यथा ॥—इति बृहस्पति-
वचनम् ॥५॥

यस्मिन् देशे य आचारो व्यवहारः कुलस्थितिः ।

तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥—इति याज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥६॥

मन्वर्थविपरीता या सा स्मृतिर्न प्रशस्यते ।

वेदार्थोपनिबन्धत्वात् प्राधान्यं हि मनोः स्मृतम् ॥—इति बृहस्पति-
(पृ० २३३)वचनम् ॥७॥

यत्र पितृव आद्यादिर्वा कृत्रिमपुत्रः कृत्वास्तत्रापि पितृत्वेनैव निर्देशो
न तु पुत्रत्वेन आतृत्वेन । इति द्वैतपरिशिष्टग्रन्थलिखनम् ॥८॥

स च पुत्रस्वकर्णस्य पिण्डप्रदः निजपित्रादीनां पिण्डप्रदत्वं तस्य
तिष्ठत्येव— इति शुद्धिविवेकग्रन्थलिखनम् ॥९॥

केवल शास्त्रमाश्रित्य न कृतव्यो विनिरूप्यः ।

युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥—इति विवादचिन्ता-
मण्यादिग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् ॥१०॥,

स्मृत्योर्विरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यवहारतः ।—इति याज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥११॥,

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरालिखितरीत्या निषिद्धादेशीयशास्त्रानुसारेण कृत्रिमपुत्र-
तायाः सिद्धौ सत्या द्वितीयप्रश्नलिखितरीत्या कृत्रिमपुत्रतापामद्विद्वत्वेनाव-
गम्यमानायाप्युभयपक्षे परमेश्वरीदत्तोद्देश्यकदानपत्र सवित्पत्रं च चण्डी-
दत्तस्य दत्तावशिष्टे तत्फल्यार्थं यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोप-
युक्तादावश्यकविषयाधर्माद्याचरणोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे चण्डीदत्त-
नाम्नः कन्यकारपेत् कुमार्प्यस्तां विवाहोपयुक्तताया च स्वपितृकुलोचि-
तप्रासाच्छादनोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे अन्येषा तदनमात्रोपजीविनामपि
यावज्जीव चण्डीदत्तनाम्नो जीवनावस्थासदृशप्रासाच्छादनोपयुक्तादावश्यक-
धर्माद्याचरणोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे च सवित्पत्रलिखितत्रिमुखाख्यघट्ट-
सम्बन्धिशिवालयवन्दनगोहृदीकरणपरिष्कारोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे महि-
मिन्प्रामाण्योक्तदागोत्तमोपयुक्ताश्च घनादवशिष्टे च घने सिद्धपति ।
दानपत्रलक्षितत्राम्ना विवादास्पदीभूतघने चण्डीदत्तनाम्नः पुनरपिप्रपौत्र-
रहितस्य केनाबिद् सः साधारणसंस्थानवगमेन तयोः पत्रयोर्विवेचनया
शास्त्रानुसारेण देवद्रव्यस्य तस्मै कृत्रिमपुत्राय स्वशिष्यत्वेन भागिनेयत्वेन च
प्रीतिपूर्वकदानस्यावगमेन नैतादृशदानसिद्धौ बाधकसामान्याभावात्—इति
निषिद्धादेशवर्जितमनुस्मृतिबाधवहस्यलभृतिवृहस्पतिस्मृतिविवादचिन्तामणि-
रिवादलनाकरविवादचन्द्रकहस्वरुपरिजातद्वैतनिर्णयद्वैतपरिशिष्टशुद्धिविवेक-
शुद्धिचिन्तामणिरसुतेसारप्रवृत्तिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बमत्तवसनाद्देयं यदतिरिच्यते—इति विवादचिन्तामण्यादि-
ग्रन्थधृतवृहस्पतिवचनम् ॥२॥

सर्व्यस्यं गृहवर्जन्तु कुटुम्बमस्याधिकम् ।

यद्द्रव्यं तत् स्वकं देयमदेयं स्यादतोऽन्यथा—इति तत्तद्ग्रन्थधृतका-
त्यायन(६४० १ पृ० ७६)वचनम् ॥३॥

भृतिस्तुष्टया परममूल्यं स्त्रीशुल्कमुपकारिणे ।

अदानुग्रहसंप्रीत्या दत्तमष्टविधं स्मृतम् ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृतबृह-
स्पति(पृ० १३८)वचनम् ॥४॥

कन्याभ्यश्च पितृद्रव्याहेयं वेवाहिकं वसु । इति तत्तद्ग्रन्थधृतदेवल-
वचनम् ॥५॥

अनूदानान्तु कन्यानां वित्तानुरूपेण संस्कारं कुर्युः—इति तत्तद्ग्रन्थ-
(विधि० पृ० २१०)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥६॥

इशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दोयसितम्बरमासीयप्रथमदि-
नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया विचारपत्रप्रश्नपधदानपधसंवित्पत्रवंशावलीपत्रैः
सहितैर्यं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

प्रश्न :—

(४६)—यद्यपि कोन व्यक्तिर दुइ सन्तान धाके, आर ज्येष्ठ
सन्तान आपन पिता वर्त्तमाने ऐ पिता ओ भ्रातार यकान्नवर्तिते-
कोन स्थावर वस्तु आपन परिश्रम ओ क्षमतार द्वाराय उपाञ्जन
करे, आर पितार जीवदशा पय्यन्त ऐ वस्तु उभस्वर्त्त साधारणेर
स्वरवे आसियाथाके, एमत स्थले पितार लोकन्तपरे ऐ वस्तु
उभये दुइ भ्राताय अंश इइते पारे कि सोपाजित सरवे ऐ ज्येष्ठ
भ्राता समुदय ऐ वस्तु पाइवेक, आर यद्यपि कनिष्ठ भ्राता ऐ वस्तु
अंशेर हकदार हय, तवे कि आन्दाज पाइवेक—एइ प्रश्नेर
प्रत्युत्तर यथाशास्त्रे लिखिवेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र यदीश्वरीशन्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीय
जानवरीमासामष्टमदिनसम्बन्धिप्रद्वलवाचरे मया प्राप्त तदवलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते ॥

कस्यचिद् व्यक्तिविशेषस्य द्वयोः पुत्रयोर्मध्ये ज्येष्ठपुत्रेण जीवति पितरि
हेतुं सः भ्रात्रा च सहाविभक्ततादशायामव किञ्चित् स्थावर धन स्वशक्त्या
स्वायासेन ज्योपाजितं स्यात् अथ च पितुर्जीवनदशायपर्यन्तं तदुपस्वत्वं
साधारण्येन व्याप्यत स्थातत्र साधारण्यद्रव्यापघातेन तदनमजितं चेत्तदा
पितुर्निधनानन्तरं तद्द्रव्यं मित्रा विभज्य भागद्वयमुपाज्जकस्य ज्येष्ठस्यैका
भागं कनिष्ठस्य, ज्येष्ठस्य तदनं मित्राघनं चेत्, अथ च कनिष्ठोऽपि
तत्त्वमविद्यस्तदायकविद्या या भवत्, तदापि ज्येष्ठोपाजितविद्याघने तादृशस्य
कनिष्ठस्यापारलिखितप्रकारश्च तृयायाथापकारः, यदि च तत्रैव साधारण्य
द्रव्यानुपघातेन ज्येष्ठेन अजितमभूत्तदा तत्र धने स्वोपाजितत्वमात्रेणो
पाज्जकस्य ज्येष्ठमात्रस्यैवाधिकारो न त्वेकानवचित्तया कनिष्ठभ्रातुः स्वामित्वे
नाधिकारः । किन्तु भ्रातृत्वेनैव पौरुषयुद्ध्या वा यदि ज्येष्ठो भ्राता कनिष्ठ
भ्रात्रे किञ्चिद्दाति तदा तदनुसारेणोपाज्जकज्येष्ठदत्तपरिमितधने कनिष्ठस्या
धिकारः — इति बहुदेशचलितमनुदायभागदायत्वदायभागटीकादायक्रम
समहविद्यादार्यवसेनुविवादभग्नार्थवादिप्रधानुसारिणो व्यवस्था ॥

इश्वरीशन्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीयतितम्बरमासीयगजेन्दु
मितादनसम्बन्धिगुरुवाचरे मयेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्राव्यनाथमिश्रेण

(४७)--प्रश्न —

शूद्रादिर दत्तकपुत्रग्रहणकालीनं तन्निमित्तं शास्त्रसम्मतं किं
किं वर्मं कर्त्तव्यं उचितं, आर यदि स्यात् ग्रहणकालीनं तादृशं

कर्त्तव्य कर्म सकल हृदयाधाके, एवं तस्य पर दत्तक पुत्र ग्रहीतार मृत्यु हृदले कोनो ज्ञाति द्वारा ऐ दत्तक पुत्रे चूडाकरण इत्यादि हृदले ऐ दत्तक पुत्र सिद्ध हृदया ऐ ग्रहीतार स्वत्वे स्वत्वाधिकारि हृदले पारे कि ना इति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं यदङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यचतुर्जिह्वदधिकाष्टादश-
शताब्दीयापरेलमासीयषड्दशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदव-
लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

शुद्धादीनां दत्तकपुत्रग्रहणसमये एतानि कर्माणि शास्त्रतः कर्त्तुमुचि-
तानि भवन्ति । प्रथमतः पुत्रदानं तस्मिन्तृकृतम्, तस्मिन्ननुष्ठया तन्मातृकृतं वा,
तदनन्तरं व्याहृतिहोमादिकं विधाय ग्रहणं ग्रहीतृकृतम्, तदनुष्ठया ततः
लोकोक्तं वेति । यद्यपि दत्तकपुत्रग्रहणसमये पुत्रग्रहणाङ्गभूतानि सर्वाण्येव
कर्माणि जातानि स्युः, तस्मात् परं दत्तकपुत्रग्रहीतृर्भरणं जातं चेद्, अपि
केनचित् तज्ज्ञातिना तस्यैव दत्तकपुत्रस्य चूडाकरणादिसंस्कारा ग्रहीतृगोत्रे-
णार्थात्ग्रहीतृपुरुषस्य नामगोत्रे समुच्चार्यं जाताश्चेत्, तदा स एव दत्तकः
पुत्रो ग्रहीतृः पुत्रो भूत्वा ग्रहीतृत्वकधने स्वत्वाधिकारी भवत्येव—इति बङ्ग-
देशचलितमनुदायभागदायतत्त्वदामभागटीकादायक्रमसंग्रहविवादाण्येतेषु
विवादमङ्गार्यदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकादत्तकदीपितिदत्तकनिर्णयादिग्रन्था-
नुसारिणी व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

माता पिता वा दद्यातां यमङ्गिः पुत्रमाषदि ।

तद्वशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सुतः - इति मनुवचनम् ॥१॥

नत्वेकं पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद्धान्यत्रानुज्ञानाङ्गर्तुः । पुत्रं प्रतिग्रही-
ष्यन् बन्धूनाह्वय राजनि चावेद्य निवेशनस्य मध्ये व्याहृतिमिर्हुत्वा ।
अदूरवान्धवं बन्धुसचिरुष्टमेव प्रतिगृहीयाद्—इति दत्तकमीमांसादि-
(पृ० १०११०२)ग्रन्थधृतवशिष्टवचनानि ॥२॥

राजात्र ग्रामस्वामी । बन्धूनाह्वय सर्वोऽस्तु ग्रामस्वामिनमेवेति वृद्ध-
गौतमस्मरणात्—इति दत्तकमीमांसा (पृ० ६६) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

बन्धूनात्मपितृमातृबन्धून् ज्ञातीन् सपिण्डान् । बान्धवाद्याह्वानं
दृष्टार्थं राजाह्वानम्—इति दत्तकमीमांसा (पृ० ६७) ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

चूडाद्या यदि सस्त्रारा निजगोत्रेण वे इताः ।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते ॥—इति दत्तकमीमांसादि-
(पृ० ७४) ग्रन्थभूतकालिकापुराणवचनम् ॥५॥

दत्ताद्या अपि तनया निजगोत्रेण सस्कृताः ।

आयान्ति पुत्रतो सम्यगन्यबीजसमुद्भवा ॥—इति दत्तकग्रन्थभूत-
(पृ० ७४) कालिकापुराणवचनम् ॥६॥

तस्मादेषां पञ्चानां पुत्राणां शौनकवशिष्ठान्यतमविधिपरिमहेषौव
पुत्रत्व नान्यथा—इति दत्तकमीमांसा (पृ० १०६) ग्रन्थलिखनम् ॥७॥

तस्मादत्तकादिषु सस्त्रारनिमित्तमेव पुत्रत्वमिति सिद्धम् । दानप्रहणहो-
माद्यन्यतमाभावे पुत्रत्वभाव एव—इति दत्तकमीमांसा (पृ० १११) ग्रन्थ-
लिखनम् ॥ ८ ॥

सर्वे ह्यनौरसत्स्येते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागदिग्रन्थ-
भूतदेवतावचनञ्चेति ॥ ९ ॥

इष्टबीजन्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीयवित्तपरमासावगजेन्दु-
मितदिनसम्पत्तिगुणवत्कारे मयेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार सरजमा बाङ्गला भाषाय—

हजुरेर समर्पित करा सवाल, जाहा अङ्गरेजी सन १८३४
साले अपरेल मासेर १५ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आनि पाइ-
याखिलाम, ताहार दृष्टे वे मत बोध हल्ल तदनुसारे उत्तर
लिखितेछि—

प्रश्नोत्तरे भाषा—

शूद्रादिर दत्तक पुत्र ग्रहणकालीन शास्त्रानुसारे एइ सकल कर्म कर्त्तव्य उचित । प्रथमतः जनक पिता किन्वा तदनुमतिक्रमे जननी माता पुत्र दान करिवेक । ताहार पर ग्रहीता व्यक्ति किन्वा तदनुमतिक्रमे ताहार पत्नी व्याहृति होम प्रभृति शास्त्रानुसारे करिया पुत्र ग्रहण करिवेक । आर यद्यपि दत्तक पुत्र ग्रहणकालीन पुत्र-ग्रहणेर अङ्ग ये सकल कर्म ताहा हइया थाके, ताहार पर दत्तक पुत्र ग्रहीता व्यक्ति मृत्यु हयोयासे ताहार कोन ज्ञातिर द्वाराय ऐ दत्तक पुत्रेर चूडाकरण प्रभृति संस्कार ग्रहीता पितार नाम गोत्र उल्लेख करिया हइयाथाके, तबे ऐ दत्तक पुत्र सिद्ध हइया ग्रहीतार त्यक्त धने स्वत्वाधिकारी हइवेक । एइ व्यवस्था वज्रदेश चलित मनु ओ दायभाग ओ दायतत्व ओ दायभागटीका ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादार्णवसेतु ओ विवादभङ्गायाम ओ दत्तक-मीमांसा ओ दत्तकचन्द्रिका ओ दत्तकदीधिति ओ दत्तकनिर्णय ओ गयरह ग्रन्थ सम्मत बटे इति ।

प्रथम प्रमाण मनुवचन । ताहार भाषा—माता किन्वा पिता किन्वा उभये ग्रहीता व्यक्ति पुत्र ना थाका प्रयुक्त प्रीति पूर्वक आपन पुत्रके सजातीय ग्रहीता व्यक्तिके दान करे, ऐ पुत्र ग्रहीता व्यक्ति दत्तक पुत्र जाना जाइवेक । इति ॥ १ ॥

द्वितीय प्रमाण वशिष्ठ मुनिर वचन सकल, दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थेर लिखित । ताहार भाषा—ये व्यक्ति केवल एक पुत्र थाकिवेक से व्यक्ति ऐ पुत्रके काहाकेओ दिवेक ना । एवं ग्रहीता व्यक्ति ओ ग्रहण करिवेक ना । कारण एइ ये ऐ पुत्र ऐ जनकेर पूर्ण पुरुषेर सन्तानेर निमित्त थाकिवेक । एवं छोड़ोकर पतिर अनुमति व्यतिरेक पुत्र दिवेक ना, ओ जइवेक ना । एवं पुत्रग्रहण ये करिवेक से बन्धुलोकेर आह्वान एवं राजार निकट निवेदन ओ व्याहृति होम प्रभृति करिया बन्धुलोकेर साक्षात् ग्रहण करिवेक इति ॥ २ ॥

तृतीय प्रमाण—दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित । ताहार भाषा—द्वितीय प्रमाण वरिष्ठ मुनिरवचन । ताहाते लेखा आछे ये राजार निकट निवेदन करिया पुत्र ग्रहण करिवेक । ए स्थले राजा शब्दे ग्रामस्वामी, अर्थात् जमिंदार, जाना जाइवेक । कारण एइ ये वृद्ध भोक्तम मुनि कहियाछेन ये बन्धुसकल्लेर एवं ग्रामस्वामी अर्थात् जमिंदारेर आह्वान करिवेक । अर्थात् चहार-दिगके ज्ञातो कराइवेक इति ॥ ३ ॥

चतुर्थ प्रमाण दत्तकमीमांसा ग्रन्थलिखित । ताहार भाषा—बन्धुलोक ओ ज्ञातिलोकेर आह्वान यत्नपूर्वेक करिवेक । ए स्थले बन्धु शब्दे आत्मबन्धु ओ पितृबन्धु ओ मातृबन्धु ओ-ज्ञातिशब्दे सपिण्ड जाना जाइवेक; ओ यन्धु ओ सपिण्डेर आह्वानेर प्रयोजन एइ ये इहारदिगेर ज्ञातिसारे ये दत्तक पुत्र ग्रहण करिवेक से दत्तक पुत्र लोकेते प्रकाश हइवेक । येमन राज निवेदनेर प्रयोजन अर्थात् इहारदिगेर ज्ञातिसारे ग्रहीत दत्तक पुत्रके वेइ मिथ्या करिते पारिवेक ना ॥ ४ ॥

पञ्चम प्रमाण—दत्तकमीमांसा प्रभृति ग्रन्थ धृत कालिकापुराण-वचन । ताहार भाषा—वालकेर चूडाकरण प्रभृति संस्कार यदि ग्रहीतार नाम गोत्र उल्लेख करिया हइया थाके सवे दत्तक प्रभृति पुत्रेरा ग्रहीतार पुत्र हयेन । न तु वा दास वजा जाइवेक इति ॥ ५ ॥

षष्ठ प्रमाण—ऐ सकल ग्रन्थ धृत कालिकापुराणवचन । ताहार भाषा—दत्तक प्रभृति पुत्र यदि ग्रहीतार नाम गोत्र उल्लेख करिया संस्कृत हइया थाकेन सवे ऐ पुत्रेरा अन्येर औरस जात हइलेओ ग्रहीता न्यक्तिर पुत्रता सम्यक् प्रकारे प्राप्त हयेन इति ॥ ६ ॥

सप्तम प्रमाण—दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित । ताहार भाषा—दत्तक प्रभृति पांच प्रकार पुत्रेर प्रति शौनकमुनिर कथित किम्वा

वशिष्टमुनिर कथित ये प्रकार पुत्र ग्रहणेर विधान आछे ताहार मध्ये कोनो एक प्रकार विधान करिले ग्रहीतार पुत्रता सिद्ध हय । न तु वा हय ना इति ॥ ७ ॥

अष्टम प्रमाण—दत्तकमीमांसा ग्रन्थ लिखित । ताहार भाषा—ये हेतुक दत्तक प्रभृति पुत्रेर संस्कार करावेइ पुत्रता हय—एइ कथा स्थिर । अतएव दान किम्वा ग्रहण किम्वा व्याहृति होम प्रभृति, ये विधान नियमित आछे, ताहार मध्ये यदि कोनो एक कर्म्म ना हय तवे उहार पुत्रता सिद्ध हय ना इति ॥ ८ ॥

नवम प्रमाण—दायभाग प्रभृति ग्रन्थ घृत देवलमुनिवचन । ताहार भाषा—ये व्यक्तिर औरस पुत्र ना थाके, ताहार दत्तक प्रभृति पुत्रेरा घनाधिकारि हयेन इति ॥ ९ ॥

अङ्गरेजी सन १८३४ साले । सेतम्बरमासेर १८ तारिके दिवस बृहस्पतिवारे एइ व्यवस्था दाखिल करा गेल ॥—

(४८)—लं० ६ आपिल सन १८३४ साल—

हवकारि आदालते देओनि मों० राजपुर परगने खोरद नागपुरे एजेष्ट गवरनर' जानेरेल शाहेव बाहादुरे मोहकमा कापतान तामश डिनगेष एजेष्ट साहेवेर बैठके सन १८३४ सालेर २६ मार्च मोताबक सन १२४० साल १७ चैत्र मघोफके सन १२४१ सालेर ५ चैत्र दिवस रानिबार—

चेतरामतेओरि—

आपिलाष्ट

सावेक मुद्द—

आशानाथतेओरि—

रेष्पाडष्ट

सावेक मुद्दाआलेहे

मोकदमा मोजे खटका ओ मोजे देशवत परगने खोफरा मासने परगने खोरदनागपुरे मोहकमा सुमित्रातेओरिनेर

अर्द्धक हिस्साय दखल पाइवार बाबद एशिष्टष्ट कमिशनर साहेबेर फयसालार नाराजी ॥—

इहार पूर्व शन हालेर २८ फिवरेल ओ एइ मासेर १४ ओ २१ ओ २८ तारिखे एइ मोऊदमा हजुरे रुवकार हइया मुलतनि जिल। अय एइ मोऊदमा पुनराय उभयेर मोकाविलाय रुवकार हइल। गोविन्दनारायणतेओरि उभये सरिकानेर १ जना हजुरे हाजीर हइल। मिछिजेर समुदय कामपास ओ उभयेर कुराशनामा मोलाहेना हइया एइ बोध हय जे बासुदेवतेओरि उभयेर मुरस छितेन। ताहार दुइ पुत्र। ज्येष्ठ जगतमन तेओरि, कनिष्ठ कृष्णमन तेओरि। बासुदेवतेओरिर सन्तान हइते आपिलाएट चेतारामतेओरि अष्टम पुरुष ओ देष्पाडष्ट आशानाथतेओरि ओ गोविन्दनारायणतेओरि सष्ठ पुरुष जिल, आर कृष्ण मनतेओरि सन्तान हइते गोदलरामतेओरि पञ्चम पुरुष^१ थाकिआ, एक कन्या ओ सुमित्रातेओरिनि आपन छीके राखिया अपुत्रक मृत्यु हय। ओ ताहार कन्या सुमित्रा वर्त्तमाने आपन एक पुत्र सन्तान राखिया मृत्यु हय। ओ ताहार कन्यार सन्तान आपन वनिताके राखिया मृत्यु हय। आर जगतमनतेओरि ओ कृष्णमनतेओरि उभये पितार स्थावर अस्थावर सकल विसय अर्द्धाद अश करिया लइया दखिलकार थाकिया मृत्यु हइते। ताहारदिगेर उत्तराधिकारिरा पैतृक त्वक्त भने आपन २ हिस्सा मतो दखिलकार थाकिया, इहार मध्ये आपिलाएट चेतारामतेओरि देष्पाडष्ट आशानाथतेओरि ओ गबरह गोदलरामतेओरि मजकुरेर वनिता सुमित्राके ताहार स्वामिर ओ स्वामिर भातार हिस्सार विषय मौजे खदगा ओ मौजे देसवतेर अर्द्धक हइते वेदखल करिले। मोऊदमाव मजकुरार नालिस मते सन १८१८ सालेर ६ जुन तारिखे नेला रामगढा हइते मौजे खदगा ओ मौजे देशवत आमेर चारि आना रकम अर्थात अर्द्धक २ मोऊदमाव

सुमित्रार स्वामिर, अर्द्धक, ओ स्वामिर आतार अर्द्धक विषये
 दखल पाइया दखलकार छिल । परे सुमित्रा मजकुरा आपन
 दखलि ऐ दुइ मौजार समुदय हिस्सा मोवलगे ७५१ टाका पने
 रेष्पाडण्ट आशानाथतेओरिर निकट विक्रय करिया कोवाला
 ओ पनेर टाकार रशीद सन १८२१ सालेर २३ आपरेल मोतावक
 फसलि सन १२९८ सालेर ६ वैशाख तारिखे लिखिया दिया
 सन १८२१ सालेर २८ आपरेल तारिखे आपन स्वेच्छापूर्वक
 मौ शहरघाटीर काजिर मोहर ओ सन १८३१ सालेर ३०
 आपरेल तारिखे रेजष्टरि कराइया देय । तद्वाध आशानाथ-
 तेओरि विक्रीत विषयेर पर दखलकार आछे । सुमित्रातेओरिनि
 फसलि सन १२४० सालेर भाद्र माहाते फौत करे । ताहाते
 चेतारानतेओरि सुमित्रार स्वामिर सगोत्र प्रयुक्त ओ अपुत्रक
 फौत करणे आपनाके ताहार हिस्सार हिस्सादार करार
 दिया एइ नालिष करियार खोरद नागपुरे परगना हरेर
 एशिष्टण्ट कमिसनर साहेवेर सुमित्रार दखलि विषय आशा-
 नाथतेओरिर निकट विक्रय एव ताहाते ताहार दखलकार
 थाकार शाहदेते सन १८३३ सालेर २८ मे तारिखे मोकदमा
 डिपमिष करियाछेन । आपिलाष्ट ए फयसलाय नाराज
 हइया सन १८३३ सालेर ११ सेतम्बर तारिखे परगना हावेर
 खोरद नागपुर ओ गयरहेर कमिसनरि मोहकमाय आपिलेर
 दरखास्त करे । परे कमिसनरि वरखास्त हइया आमार मोता-
 लुक हओर समयेर मोकदमा एइ आदालते मोन्तजम हय इति ।
 रेष्पाडण्ट आशानाथतेओरि जाहेर करे ये सुमित्रार स्वामिर
 हिस्सा छिल ओ से विना आखेज ओ आपत्य आपन स्वामिर
 विशयेर पर दखलकार थाकिया आपन सेच्छा पूर्वक मौजे
 खटगा ओ मौजे देशओत ग्रामेर अर्द्धक मोवलगे ७५१ टाका पने
 आमार निकट विक्रय करिया, कोवालाय काजिर मोहर ओ
 रेजष्ट साहेवेर रेजष्टरि कराइया लिखियादेय । तद्वाध आभि

રેપ્પાડલ્ટ આમાર દસલે આછે । આર મુમિત્રા આપન દસલિ
 'જમિર મધ્યે ઇક નહરિ જમિ સારિટામ્બ ઓ વાવિ દુહ માલ્લ,
 કાઠાલ ૧ ઓ કદમ્બ ૧ કયાલ્લ ઘરકે દાન કરે । આપિલાલ્ટ
 તાહાતે મોજાદેમ હય ના ફલિ । યદિ સ્યાત્ રેપ્પાડલ્ટ આશા-
 નાથતેઓરિ જાહેર કરિતેછે જે મુમિત્રાતેઓરિનેર વિક્રયાતુસારે
 વિક્રિત વિશયેર પર દસલિલકાર આછે । આપિલાલ્ટ ચેતરામેર
 સહિત તાહાર ઇલાકા નાઈ, ઓ તાહાર સ્થરિદ સાધ્દેવ કરિયા
 કોવાલા ઓ પનેર ટાકાર રશીદ પેષ કરે । કિન્તુ પ્રકાશ હફતે
 છે જે મુમિત્રા વેઓ ઓ અચિરા થાકિયા સ્વામિર પૈતૃક વિપય
 આશાનાથ તેઓરિર નિકટે વિક્રય કરે । મિતાનુરા ઓ દાય
 ભાગેર તરજમાર કેતાવ મોલાહેજાય પ્રકાશ હફતેછે જે વેઓ ઓ
 અચિરા સ્ત્રિરે સ્વામિર પૈતૃક વિપય વાન વિક્રયેર જનવા
 કવાપિ નાઈ । એ કારણ હિન્દુદિગેર શાસ્ત્રાનુસારે ઓ વેશાચાર
 મતે મુમિત્રા વેઓ અચિરા રેપ્પાડલ્ટ આશાનાથ તેઓરિર
 નિકટે સ્વામિર પૈતૃક વિપય વિક્રય કરા ઓ આશાનાથ મજ-
 કુરેર તાહા સ્થરિદ કરા ઓ કોવાલા માફિક ઇસિષ્ટલ્ટ કમિ-
 સનર સાહેવેર હુકુમાનુસારે તાહાતે દસલિલકાર થાઠા સમ્પ(ક)
 પ્રકારે અયોગ્ય ઓ આદાલતેર માણેર યોગ્ય નહે । એ
 શાસ્ત્ર દ્વારા ઓ વેશાચાર મતે ઘોષ હય યે મુલ્લ ગોદલરાનેર
 ત્યજ્ય વસ્તુર પર તાહાર સગોત્ર દસલિ પાડવાર સત્વ રાલે કિન્તુ
 તરજમાય થઈ દૃષ્ટે અવગતિ હય જે પિતાર સમ્પ પુરુષ
 પચ્ચન્ત સપિલ્લ ઓ હિસ્યાય હકદાર । આર ઇમયેર કુરદ્વિનામા
 હફતે પ્રકાશ આછે જે વામુદેવતેઓરિ ઇમયેર મુવા । તાહાર
 દુહ સન્તાન । જ્યેષ્ઠ જગતમનતેયારિ ઇમયેર ધરના ઓ કનિષ્ઠ
 કૃષ્ણમનતેઓરિ । મુમિત્રાતેઓરિનેર સ્વામિ ગોદલરામતેઓરિર
 ધરના ઢિલ । દુહ જાતાર આપન પિતાર વિપય અર્દેક અર્દેક
 રકમ અંશ કરિયા લદ્યા દસલિલકાર થાકિયા મૃત્યુ હય, તાહાર-
 દિગેર 'ઓયારિશાન' આપનારદિગેર પૈતૃક હિસ્યા માફિક

दखिलकार आछे, आर आपिलाष्ट चेताराम वासुदेवतेओरि हइते अष्टम पुरुष ओ जगतमनतेओरि हइते सप्तम पुरुषे तफात, एवं वासुदेव हइते आशानाथ पष्टम पुरुष, ओ जगतमन हइते पञ्चम पुरुषे तफात, आर सुमित्रार स्वामि गौदलराम वासुदेव हइते पञ्चम पुरुष ओ कृष्णमनतेओरि हइते चतुर्थ पुरुष तफात आछे, ओ गोविन्द नारायणतेओरि आशानाथतेओरि न्याय वासुदेव मजकुर हइते पष्टम पुरुष एवं जगतमन हइते पञ्चम पुरुषे तफात । अतएव तरजमार केताव दृष्टे सपिण्डक अर्थात् सप्तम पुरुष अष्टम पुरुषे नाओयारिशी विषयेर हिस्साय कोनो स्वत्व राखे कि ना-सन्देह जन्मिल । एवं एतद्देशे एइ मोकदमा न्याय जे अष्टम पुरुषे केह सगोत्र नाओरिशि विशये दखल पाइयाछे कि ना तर्ज करा गेल । ताहाते केह कहिते ओ कोनो लिखित पठिव पेप करिते पारिवेक ना । अतएव ए विशयेर व्यवस्था ज्ञातो हओ आबिस्यक मते हुकुम हइल जे एइ रोवकारि नकल ओ उभयेर कुरछिनाना इङ्गरेजी ओ फारशी ए बातरे इङ्गरेजी चिठी द्वारा सदर दओनि आदालतेर हाकिमानेर निकट एइ प्रार्थनाय प्रेरित हय जे साहेबान मौसुफिल मिताचरा हइते एइ विशयेर व्यवस्था जे गोदलराम तेओरि अपुत्रकेर विषये के २ हिस्सार हक राखे—आदालतेर पण्डितेर स्थाने तलब करिया अनुग्रह पूर्वक आसल व्यवस्था मोलाहेजार कारण पाठान जे मोकदमा फयसल हय, आर व्यवस्था पीछ पय्यन्त ए मोकदमा मुलतबि थाके इति—

प्रमुसमर्षितविचारपत्रं वंशावलीपत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपादनमगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीषपञ्चदशदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य मादृशओषो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

गोदलरामत्रिवेदित्यक्तधनं यत् पुत्रपौत्रप्रपौत्रामावे सति तत्सत्या सुमित्रादेव्या उत्तराधिकारित्वेन प्राप्तं तत्र धने यदि गोदलरामत्रिवेदिदौहित्रस्तत्पत्नी-सुमित्रादेवीमरणोत्तरं विद्यमान आसीत्तदा तस्याधिकारस्तस्मिन् पुत्रपौत्र-

प्रपौत्ररहिते मृते सति तत्पत्न्या एव तदनाधिकार । यदि च गोदलराम त्रिवेदिदोदिन स्वमातामहा विद्यमानायामेव मृत स्यात्तदा तदोद्दिनस्य तदने ह्य वानुत्पादेन तत्पत्न्या अपि तदने नाधिकार, किन्तु प्रभुसमर्पित विचारपत्रवशावलीपत्रोभयलिखितवृत्तान्ते सति गोदलरामत्रिवेदिदृष्ट प्रापतामहवासुदेवत्रिवेदिनोऽतिदृष्टप्रपौत्रयोराशानाथत्रिवेदिगोविन्दनारायण त्रिवेदिनोरेव सन्निकृष्टसपिण्डत्वेन समानाधिकार, आशानाथत्रिवेदि गोत्रद्वारायणत्रिवेदिनो पूर्वं गोदलरामत्रिवेदित्तर्धने ये उत्तराधिका रित्यस्तेषा मध्ये कश्चिदिदानीं विद्यमानोऽस्ति न कस्यस्य प्रभुसमर्पितविचार पत्रवशावलीपत्राभ्यां स्पष्टतरतयाऽनवगम्यम्, आशानाथात्रिवेदिगोविन्द नारायणत्रिवेदिनोर्विद्यमानयोवासुदेवत्रिवेदिदृष्टातिदृष्टप्रपौत्रस्य कमलनाथ त्रिवेदिनो वासुदेवत्रिवेदिदृष्टातिदृष्टप्रपौत्राणां कलहारामत्रिवेदिदीपारामत्रि वाद्भवनरामत्रिवेदिचेतारामत्रिवेदिनां वासुदेवत्रिवेदिदृष्टातिदृष्टप्रपौत्रप्रपौ त्रस्य वचूरामत्रिवेदिनश्च नाधिकार, सन्निकृष्टसन्निकृष्टसपिण्डयोस्समानो दधाना च विद्यमानतायां सन्निकृष्टसपिण्डस्यैवाधिकारस्य मनुमिताक्षरादि ग्रंथसम्मतत्वात्—इति मनुमिताक्षरादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

इशवीर्यन्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगने दुर्मितान्दीयसितम्बरमासीयमुनि नेत्रमितदिनसम्भाषणनिवासरे मया विचारपत्रवशावलीपत्राभ्यां सादृश्ये व्यवस्था दत्तति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीर्वचनाथमिश्रेण

(४८)—मो० फलिफातार सदरदेओनि आदालतेर श्रीयुक्त ओलियमब्राह्मिन साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर बैठकेर सन १८३४ सालेर ठारिख १२ माह जुन मोतावेक सन १२४१ सालेर ३१ ज्यैष्ठ पृदस्पदि वारेर दिवसेर रोवकारि—

काशीच द्रमुस्तोफि

छापल

छापलेर उकिळ मुनशी शिवनारायण चट्टोपाध्याय हानिर

आइल । छाप्लेनर छयाल पइ जे श्रीमति कमलकुमारी छाप्लेनर अप्राप्तावय कन्यार स्वामिर वाटीते ताहार सासुडि पदुक्रमलदासीर निकटे जाइवार विषयेर सन १२३४ सालेर ३ मे तारिखेर जेला हुगलिर जज साहेबेर हुकुमेर नाराजिते एवं श्रीमतीकमलकुमारी मजकुरार ऐ पदुक्रमलदासीर वाटीते जजोार हित ह्योनेर प्राथेनाय ओ अन्य २ विशयसकलेर सहित उकिल मजकुरेर नामेर एक केता ओकालतनामा ओ सन १८३४ सालेर ३मे तारिखेर जेला हुगलिर आदालतेर रोवकारिर नकल १ केता ओ सन १२३२ सालेर १७ मे तारिखेर लिखित जेला मजकुरेर केलकट्टरि फाचारिर रोवकारिर नकल १ केता पइ मासेर ५ तारिखे दाखिल हइयाछिल, अच दृष्टे आइल । योध इइल जे लाट कुणाराम वाटी ओ गयरहेर तालुकदार रमेशचन्द्रदत्त छाप्लेनर अप्राप्तावय कन्या श्रीमतीकमलकुमारिके पिवाह करिया आठ मास जीवदशाय थाकिया श्रीमतिमजकुराके पुष्य पुत्र लओनेर अनुमति दिया उहाके उत्तराधिकारिणी ओ केशमत लाट कुणाराम वाटी ओ गयरह अनेक तालुक ओ जमीसकल ओ स्थावर ओ अस्थावर स्वनामी विनामी विशयसकल राखियो मृत्यु हय, ओ उहार मृत्युर पर श्रीमतीपदुक्रमलदासी मृत रमेशचन्द्रेर माता मृत मजकुरेर त्यक्त अनेक जायदाद, हस्तान्तर एवं कोनो जायदादे आपन नाम जारि करिया छाप्लेनर कन्याके आपन आयत्तते आनिवार मानसे हुगली जेतार आदालतेर एक केता दरखास्त गुजराय, ओ जेतार जज साहेब व्यवस्था लइया छाप्लेनर अप्राप्तावय कन्या श्रीमतीकमलकुमारीदासीके उहार सासुडिर वाटीते पाठाइवार हुकुम प्रकाश करेण छाप्लेनर ताहार असन्मतिते ए आदालते रुजु हय इति । जखन छाप्लेनर उकिल प्रकाश करे जे श्रीमती पदुक्रमलदासी अप्राप्तावय श्रीमतीकमलकुमारीर ओछिर हेतुते मृत रमेशचन्द्रेर ताथत त्यक्तविशये दखलिकार आछे । एवं छाप्लेनर छओले प्रकाश आछे ।

ये मृत रमेशचन्द्रदत्तेर अप्राप्तावय स्त्री श्रीमतीकमलकुमारी उद्धार सासुडिर सहित शत्रुता थाकार दृष्टे आपन स्वामीर वादीते जाइते असन्मत आछे। ए जन्य ए आदालतेर पण्डितेर प्रति नीचेर लिखित प्रश्न करा उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे रोवकारिर नकल पाओर गारिष हइते एक सप्ताह मध्ये निचेर लिखित प्रश्नेर उत्तर लेखेन, ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति।

प्रश्न :—

यद्यपि स्यात् एक व्यक्तिर अप्राप्तावय विधवा कन्या से ताहार स्वामी वर्त्तमान थाकिते कखन आपन स्वामीर वादीते ना गिया थाके ओ उद्धार स्वामी उद्धारके पुण्यपुत्र लइबार अनुमति प्राप्तावय हइले पर थाके ओ आपन स्वामीर वादीते जाओने ओ आपन सासुडि उद्धार जानत उद्धार शत्रु हय ताहार निकट वास करणे सम्मत ना हय, तवे बाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे श्रीमती मजकुरार आपन स्वामीर वादीते जाओने उचित बढे कि ना इति—

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिभोयुतश्रीलियमवेराडोनसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेशकीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीयजुनमासायद्वादशदिव-
सीपरिचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यदेतदस्त्रीयजुलाइमाधीयैकविंशतित-
मदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे भया प्राप्त तद्वलोभय सादराबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्यप्राप्तव्यवहारया अवीरयाः पतिकुलानुण-
र्म्पकाराख्योमथ्योदाधर्मादीना सरक्षय पतिपत्नीयेण देवरादिना भवितु
शक्यते चेत्तदा तस्याः पतिगृहगमनमेवोचित भवति, पतिपुत्र वशनाया-
स्त्रियाः सरक्षणादौ शास्त्रानुसारेण पतिपत्नीयपुरुषस्यैव प्रभुत्वात् । यदि
च तस्याः पतिकुले तद्देवरादिः कश्चित् पुरुषस्तत्सरक्षणादिकर्त्ता न भिद्यत
विरते वा तन तत्सरक्षणाद भवितु न शक्यते चेत्तदा तस्याश्चावीरया

मर्यादाधर्मादीनां स्वपतिकुलोचितं संरक्षणं पितृपत्नीयेणार्थात् पित्रा भ्रात्रादिना वा भवितुं शक्यते । तदैवादृशं पित्रादिकमपहाय स्वपतिगृहगमनं नावश्यकं भवति, पतिपुत्रविहीनायाः स्त्रियाः संरक्षणादौ पतिपत्नीय-पुरुषाभावे पितृपत्नीयपुरुषस्यैव प्रभुत्वात्—इति वङ्गदेशचलितमनुदाय-भागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीयनवम्बरमासीयैकादश-दिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५०)—कलिकात्तार सद्धर देओयानि आवाकतेर पण्डितेर प्रति प्रश्नः—

स्वरूपरामसेन जाति कायस्थ मृत्यु हृदयाछे । आपन भगिनीर कन्या सओयाय अन्य केह ओयारिप नाइ, एवं ऐ भगिनीर कन्यार एक पुत्र आछे । ए प्रकारे मृत स्वरूपरामसेनैर त्यक्त धन ताहार भगिनीर कन्या पाइते पारे कि ना इति ॥—

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुण-गजेन्दुमितान्दीयजुलाइमासीयवेदेन्दुमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

यदि मृतस्य कायस्थजातोवस्य स्वरूपरामसेनस्य भगिनी पुन्यधिनी पुत्रवती स्यात्तदन्यः कश्चिदुत्तराधिकारी नास्ति तदा मृतस्य स्वरूपराम-सेनस्य त्यक्तधने तस्या अर्थिन्या वयस्यधिकारो न भवति, किन्तु प्रश्नलि-खितवृत्तान्ते सति धर्मशास्त्रार्थविवेचनया फलतस्तत्पुत्रस्याधिकारो भवितुं शक्नोति—इति मनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीयदिशम्बरमासीयद्वितीय-

दिनसम्बन्धिमन्त्रवासे मया विचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सहितेय व्यवस्था
दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

सवाल—

(५१)—यद्यपि कोनो व्यक्ति कोनो स्त्रीके विवाह करिया
ऐ स्त्रीलोकेर सन्तान हइवार आसा व्यतीत हइले अन्य स्त्रीके
सन्तान हइवार प्रार्थनाय विवाह करे, आर ऐ स्त्रीलोकेर वयस
पन्द्रह बतसरहय, सेइ समय आसल स्याबरास्थाघर समस्त धन,
कि स्थोपाज्जित हय किम्बा ताहार पैतृक हय, आपनार भगिनीर
पुत्रदिगेके दान करे, आर ऐ दानेर तीन चारि बतसर पर
सेइ द्वितीय स्त्रीर पुत्र सन्तान उत्पन्न हइया थाके, ए प्रकारे
दानेर पर पुत्र हओयाते ऐ दान असिद्ध हइते पारे कि ना । आगत
सोमवार दिवस पर्यन्त एहार जयाब लिखेन, ओ आसल हेया-
नामा ए आदालतेर पण्डितेर निकट देवा जाय । इति सन १८३४
माल तारिख ११ दिजम्बर इति ॥ —

श्रीर्जयतितराम्

प्रश्नकृतप्रश्नस्योत्तरम्—

मरुतलितवृत्तान्ते सति दानवत्रिवेचनया धर्मशास्त्रानुसारेणैता-
ददातनं न सिद्धवति—इति बह्वेदशचलितननुदायभावादिमन्थानुधारिणी
व्यवस्येति ॥—

ईश्वरीशब्दप्रतिपालनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयपञ्चदश-
दिनसम्बन्धिमन्त्रवासे मया दानपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५२) सवाल पहिला—

कलकत्तेके सदर दीमानी अदाबतके पण्डितसे सवालका बन्द लिखा,
६ दिसम्बर सन १८३४ ईशवी ।

अगर कोई करजके रूपसे इच्छा दुसरे तथोरसे देन्दार कितिका होवे, अथोर सुदेके बाबत कुछ कथोच करार नहि हुआ होवये - इस सुदेमें शास्त्रके मताविक किस तथोरसे अथोर किस अन्दाजसे उसका सुदे मोकरर होये ॥—

सवाल दुसरा—

सुदेके सुदेके मकरमेमें शास्त्रके मताविक किस अन्दाजसे मकरर हये, इच्छाने जो रुपयाके सुदेके बाबत असल देनेके सेओआय देन्दारके तै लाजिम होता हय, तो शास्त्रमें कुछ हद उसका मकरर हये हया नहि । अगर हय तो अन्दाज उसका केतना हये ।

प्रथम सओयालेर बाङ्गला भाषा—

कलिकातर सदर देओआनि आबालतेर पण्डितेर प्रति सओयाल सकल लेखा गेल । ६ दिसम्बर सन १८३४ ईशवी ।

यदि कोनो व्यक्ति काहारो टाका कर्जकरूपे किम्बा अन्य प्रकारे धारे, आर सुदेर विषय कोनो करार किम्बा निर्धार्य ना हइया थाके । ए प्रकारे शास्त्रानुसारे कि प्रकारे ओ कि परिमाण सुदे पे टाकार मकरर करा जाइवेक इति ॥—

द्वितीय सओयालेर बाङ्गला भाषा—

सुदेर सुदेर विषये—शास्त्रानुसारे कि परिमाण नियम आछे, अर्थात् ये टाका सुदेर बाबत आशल टाका आदायेर सेओआय देन्दारके दिते हय, शास्त्र ओहार अवधि किछु नियमित आछे कि ना । यदि थाके, तवे कि परिमाण इति—

श्रीर्जयतितराम

श्रीमत्प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रमवलोक्य यादशमोघो ज्ञातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

प्रश्नोत्तरलिखिता वर्णक्रमेण वृद्धिर्भवति—इति मन्वादिधर्मशास्त्रानु-
सारिणी व्यवस्थेति—

ईश्वरोक्तमतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमितान्दीयदिशम्बरमासीवत्रयो-
र्विंशतितमदिनसम्बन्धमङ्गलवासरे प्रया प्रश्नपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५३)—रोवकारि मिश्रिल सदर देओयानि आदालत मोकान
कलिकाता आदालत मजकुरेर कायेम मेकाम हाकिम कृष्णाफर
ओएव इसमित साहेवेर बैठके । इ सन १८१५ सालेर ५जानेर
मोतावेक याङ्गला सन १२४१ सालेर २२पौष विवस सोमवार ॥—

राधाचरणवर्णिक

आपीलाएट

लक्ष्मीसहार ओ गयेरह

रेष्पाडएटान्

आपीलाएटेर उकिल सदासुखपण्डित ओ रेष्पाडएटानेर
उकिल मुनशी हयदर आलि एनिपन वेञ्चमेन एङ्गमेनेष्टीन बेली
हाजीर आइलेन । इहार पूर्व्वे गतो २९ ओ०दिशम्बर तारिख
सकले एइ मकईमा उत्थापन हइया तारिखसकलेर रोवकारि
लिखित हेतु मते मुलतवि अर्थात् स्थापित रहियाछिल । अद्य
पुनराय उत्थापन हइया मुहइ अर्थात् वादीर इसादीर जवानवन्दि
ओ प्रतिवादिदिगेर इसादीसकलेर एजाहार पडा हइल । मोकइ-
मार सामुदाइक हेतुसकले बोध हइया ए आदालतेर पण्डितेर
स्थाने कयेक विषय जिज्ञास्य आविश्यक मते हुकुम हइल ये
रोवकारि नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित प्रश्नसकलेर “प्रति-
उत्तर शीघ्र लिखेन—एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान
जाय इति ॥—

प्रश्न :—

पूर्व्व पुरुष लक्ष्मणवर्णिक राजुवनिक ओ जगमोहनवर्णिक

ओ रामकृष्णबनिक तिन पुत्रके राखिया मृत्यु हय । परन्तु राजु-
बनिक आपन बनिता श्रीमतीजगमोहिणीके राखिया अपुत्रक मृत्यु
हय । बाङ्गला सन १६२६ साले जगमोहिणी मजकुर परलोक
गतो हय, एवं जगमोहन अपुत्रक आपन ओ गङ्गामणीके राखिया
सन १२२६ सालेर पूर्वें मृत्यु हय । बाङ्गला सन १२२६ साले
ओ रामकृष्ण एक पुत्र गोपीकृष्ण ओ वारामणो ओके राखिया
मृत्यु हय । ओ वारामणिओ सन १२२६ सालेर पूर्वें परलोक
गत हय, ओ श्रीमतीबाङ्गलीर सहित गोपीकृष्णेर विवाह हय ।
ताहाते राममनी नाझी एक कन्या जन्यति हय । ए ताहार एक
पुत्र अर्थात् मुद्दई ओ रामकृष्णेर पुत्र गोपीकृष्ण बाङ्गला १२२८
साले परलोक गत हय । ए ताहार बनिता श्रीमतीबाङ्गलीर सन
१२३७ साले मृत्यु हय, ओ ताहार कन्या राममनीर सन १२२६
सालेर पूर्वें मृत्यु हय । एवम्भूत व्यापारे बाङ्गला-देशेर चलित
शास्त्रानुसारे राधाचरण बनिकेर मावामह गोपीकृष्णबनिक ओ
गोपीकृष्णेर पिण्ड्य रामकृष्ण भ्राता राजुबनिकेर ओ जगमोहिनीर
त्यक्त विषये के हकदार हइवे पारे, ओ सन्तति मजकुरार फोन
नैकटव कि भिन्न ओयारिस ना थाके विधाये ताहार त्यक्त वस्तु
राधाचरण बनिकके अशें कि ना इति ।

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तभीषुतकृष्णिरओएवइसमिद्वा-
देवधर्माधिकरणलिखितेशयोशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिताब्दोपबानधरी -
मासीयपञ्चमदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तदन्दीयत्मासीय-
नवमदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त-
दनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति राजबन्धित्यक्तपत्रे यत् पुत्रपौत्रप्रयोरभावे
सति तत्पत्न्या जगमोहिण्या उच्चराधिकात्तलेन प्राप्त तन्मरथोत्तरं तत्र
पत्रे राजबन्धिप्रारतपुत्रदौहित्रस्य राधाचरणबन्धियो धर्मशास्त्रानुसारे-

राधिकारो भवितुमर्हति । अत्र यद्यपि दायभागटीकादिग्रन्थलिखितापुत्रधनाधिकारिशृङ्खलायां भ्रातृपुत्रदौहित्रस्य नामोल्लेखो विशेषतो नास्ति, किन्त्वेतत्प्रश्नलिखितावस्थायां मनुस्मृतिसम्मतो भ्रातृपुत्रदौहित्राधिकारो दायभागादिग्रन्थाभिप्रेतो भवत्येव, धनिभ्रातृपुत्रदौहित्रस्यापि धनिभोग्यधनिदेयधनिपितृपार्वणभाद्रपिण्डदातृत्वेन धनिपारलोकिन्नेषकारकत्वात्, परम्परया धनिसपिण्डत्वाच्च—इति बह्वदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्तते ।

चतुर्थः सम्प्रदातैषाम्—इत्यादि मनु(६।१८६)वचनम् ॥१॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यास्तस्य तस्य धनं भवेद्—इति च मनुवचनम् ॥२॥

तस्माद् यथा यथा मृतधनस्य तदुपयुक्तत्वं भवति तथा तथाधिकारक्रमोऽनुसरणीयः—इति दायभाग(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

एवञ्च सर्वत्रोक्तरीत्या मृतधनस्य मृतार्थत्वमनुसन्धेयमुक्तक्रमेण—इति दायभाग(पृ० २१५)ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

प्रतिसम्बन्धिनां चाधिकारार्थं वचनकल्पनागौरवात् तदर्थितधनस्य च तदुपकारतारतम्येन तादर्थ्यसम्पादनस्य न्याय्यत्वात्, उपकारकत्वेनेव धनसम्बन्धो न्यायप्राप्तो मन्वादीनामभिगत इति निरवधविद्याद्योतेन द्योतितोऽयमर्थो विद्वद्गिरादरणीयः—इति दायभाग(पृ० २१५ २१६)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥५॥—

ईशवीशब्दप्रतिपात्रेपुण्यगजेन्दुमिताब्दीयवानवरीभाषीयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिषुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था इत्येति ॥—

श्रीज्जयतिवरासु

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

यदि पञ्चमर्षाभ्यन्तरे पुत्रं गृहीत्वानन्तरं पिता मृतः चूडादेरुन्तु न
इत तत्र तस्य पुत्रत्व सिद्धयति, तथा न चाङ्गनाथे प्रधानस्य बाधः—
इति विवादभङ्गार्थव. (२ विवा पृ० १७६ ख) ॥३॥

कात्यायन. १-स्वस्थेनाच्चेन वा दत्तम्-इत्यादि (कास्मृ० ५६६) ॥४॥

पुत्रेष्टिमिति वर्षत्रयस्याधिकारापत्तेर्न पुत्रेष्टिपूर्वकचूडादिभिः पुत्रत्वं
सम्पाद्यम् । शूद्रेण तदपि सस्कारमात्रादेवेति सव्यमनवद्यम् ।

धन्यवर्षसप्तमस्य कार्यं विप्रस्य पञ्चमे, इति वचनेन तत्क्रमस्य
पञ्चवर्षस्यैव उपनयनमुत्पत्त्यकालत्वेन मूलत्वात् तथा । शूद्रस्य तु विवाहा-
दिलाभः - इति दत्तकचन्द्रिका (पृ० २१।२२) ॥५॥

अत्रि —अपुनश्च सुतः काप्यो यादृक् तादृक् प्रयत्नतः ।

पिण्डोदकक्रियाहेतोर्नामसंस्मृतिर्नाय च ॥—इति ॥६॥

मनु —न भ्रातरो न पितरः पुत्रा दायहराः पितुः ।

तथा पिण्डदोऽशहरश्चेपा पूर्वाभावे परः परः ॥—इति ॥७॥

देवल —सर्वे ह्यनोरसस्येते पुत्रा दायहराः स्मृताः ॥ दायहराः

पूर्वाशहस्य —इति दायवत्त्वम् ॥८॥

मनु —उपपन्नो गुरौः सर्वैः पुत्रो यस्य तु दत्तमि. ।

स हरेतेव तद्विनाय सम्प्राप्तोऽप्यन्यगतः ॥—इति (६।१४१)

औरसाभावे सव्यरिवमहस्यमुक्तवान्, तदुपुत्तमोरसे सत्यर्थां शहर
त्वम्—इति दत्तकभाषाया (पृ० १०६) चेति ॥९॥

शुक्रादी १७६४ ॥ सवत् १८८६ खैरचैत्रस्य नवमदिपक्षीय-
व्यवस्था ॥०॥०॥०॥—

श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितस्य

मोकाम कलिकात्तार सदर देओनी आदालतेर इह
रेजी सन १८१४ सालेर २ दिसम्बर मोतावेक वाङ्मला सन

१२४१ सालेर १८ अग्रहायण मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुतउलियमवेराडिन साहेबेर बैठकेर रोवकारि—

वल्लवीकान्तचौधुरी वनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी ओ नवकान्त चौधुरी ।

छापलेर उकिल मुनशी आव्वाङ्ग आलि हाजिर आइल । ३२ टाका दामेर इष्टम्य कागजे छापलेर छओला गगरा परगनार तरफ मथुरापुरेर २॥ आडाइ मौजार दखल पाइवार, मोकदमर मः ३१७ टाकार दाखिले खास आपिल मञ्जुरिर प्रार्थनाय उकिल मजकुरार नामेर एक केता ओकालतनामा ओ गौरनारायण-शर्मांर नामेर एक केता मोक्षारनामा ओ सन हालेर ३० जुलाइ तारिखेर जेला पूरनिया जज साहेबेर एक केता फयल्लार नकल ओ सन १८२३ सालेर ६ आपरेल तारिखेर जेला मजकुरेर सदर आमिन आलार एक केता फयल्लार नकल ओ सन १८३३ सालेर २२ मार्च तारिखेर व्यवस्थार नकल एक केता ओ दोशरा तिन केता व्यवस्थार सहित गतो ५ नवम्बर गुजराइयाछिल, अच दृष्टे आइल । कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व शाखेर प्रकरण ज्ञात हओ । उचित बोध हइल । ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ छापलेर दाखिल करा सन १८३३ सालेर २२ मार्च तारिखेर नकल व्यवस्था एइ हुकुमे ये व्यवस्था मजकुर दिष्ट करिया लेखेत ये व्यवस्था मजकुर बाङ्गलादेशीय चलिता शाखानुसारे हइयाछे कि ना, यदि ना हइयाथाके, ऐ व्यवस्था मजकुरेर लिखित प्रस्नेर अबाध बाङ्गलादेशीय चलिता शाखानुसारे एइ रोवकारिर प्राप्तेर दिवस हइते एक सप्ताह मध्ये दाखिल करेण—एइ आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय इति—

श्रीज्जयतितराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतओलियमवेराडिनसाहेबधर्माधिकरण-

લિલિતેશવીશંદપ્રતિપાચનિગમગુણગજેન્દુમિતાન્દીયદિશમ્બરમાસીપદ્વિતી-
યદિતસીયવિચારપત્રાન્તર્ગતપ્રશ્નપ્રતિરૂપપત્ર યરીશવીશંદપ્રતિપાચેપુગુણ-
ગજેન્દુમિતાન્દીયજ્ઞાનવરીમાસીયપત્રમદિનસમ્બન્ધિચન્દ્રવાસરે મયા પ્રાપ્ત
તદવલોક્ય યાદશ્ચબોધો શ્રાવસ્તદનુસારેણોત્તર લિખ્યતે—

પ્રમુલમર્ષિતવ્યવસ્થા વક્ત્રદેશચલિતશાસ્ત્રાનુસારેણ આતાસ્તિ । તદ્-
વ્યવસ્થોપરિલિખિતપ્રશ્નલિખિતવૃષ્ણાન્તે સત્યેતાદૃશાં વ્યવસ્થા વક્ત્રદેશચલિત-
શાસ્ત્રમદિભૂતાસ્તિ ઇત્યસ્થાનવગમાદિતિ ॥—

દૈશવીશંદપ્રતિપાચેપુગુણગજેન્દુમિતાન્દીયફિયરવરીમાસીયપત્રમદિનસ-
મ્બન્ધિશનિવાસરે મયેદમુત્તર દત્તમિતિ ॥—

શ્રીર્જયતિતરામ
શ્રીવિદનાથમિથ્રેણ

(૧૧)—રુબકારિ મિહિલ આદાલતે દેઓનિ સદર મોકામ
ફલિફાતા વનેસસ્ત રાપરટ^૧ હાલડન રાટરિ સાહેબ હાકિમ
આદાલત મજકુરા ઇં સન ૧૮૩૫ સાલ વારિલ ૧૯ જાનવરિ
મોં સન ૧૧૪૧ સાલ ૭ યાધ સોમવાર—

કમલાકાન્તરાયેર 'શ્રી' રામદુર્ગા ઓ સમ્બુચન્દ્ર ઘનામ
ગઢાચરણસેન ।

સાયલાનેર ડકિલ મુનશી હોસન આલિ ઓ મેં મારફ
આગત્વરકુલાલ સાહેબ ઓ ફરિકસાનિર ડકિલ શ્રીરામરાય
ઓ વારકવન્દ્રરાય હાજિર હૈલ । ૯૬ માહાર ૧૪ તારિલેર
હુકુમાનુસારે સાપલાનેર ડકિલ શ્રીમતીર પુત્ર નૃસિંહસેન અન્ધ
થાકનેર ઓજર હદાદેર તરફ હૈલે પૂર્વે વપસ્થિત દુઓનેર વિશયે
૯૬ આદાલતેર સાચેરુ હાકિમ મેં કટવરટ થરનેલ સિલિ સાહે-
વેર વેઠકેર રુબકારિ નિસાન દેઓ દટ્ટી કરા ગેલ । તત્ દ્વારાય
વોધ હૈલ જે પ્રકૃત સાપલાનેર તરફ હૈલે શ્રીમતીર પુત્ર અન્ધ

थाकनेर ओजर पूर्व उपस्थित हइयाछिल । प्रकाश हइल जे कृष्णकिङ्कररायेर चारि पुत्र । ज्येष्ठ लक्ष्मीकान्तराय, द्वितीय कमलाकान्तराय, तृतीय जगमोहनराय, चतुर्थ सम्भुचन्द्रराय । पितार मरणेर पर चारि पुत्र पितार त्यग्य वस्तुते भोगि ओ अधिकारि छिल ताहाईर मध्ये प्रथम लक्ष्मीकान्तरायेर निःसन्तान मृत्यु हय, परे जगमोहनराय महेशचन्द्रराय नामे एक पुत्र ओ श्रीमती नामे एक कन्या राखिया फौत करे । ओ ऐ महेशचन्द्ररायेर फौतेर पर ताहार भग्नि श्रीमतीर गर्भ हइते एक अन्ध पुत्र हय, आर सायलानेर तरफ हइते श्रीमतीर पुत्र अन्ध थाकनेर ओजर इहार पूर्व उपस्थित हइयाछिल, तथा च पण्डितेर पर ए विषयेर कोन प्रश्न हय नाइ-जे साखानुसारे जन्मअन्ध व्यक्ति पैतृक धनाधिकारि हइते पारे कि ना । ए प्रयुक्त ओ जे हेतुक बोध हइल जे एइ आदालतेर पण्डितेर तरफ हइते एइ मकईमार पूर्व जे व्यवस्था दाखिल हइयाछिल ताहाते एइ प्रश्न करा जाय-जे महेशचन्द्रराय आपन पितृ-अंशे अंशभोगि थाकिया आपन भग्नि श्रीमती ओ कमला-कान्तराय ओ सम्भुचन्द्रराय पितृव्यविर्गे राखिया निःसन्तान मृत्यु हइयाछे, आर ताहार स्त्री ताहार मृत कायार सहित सति हइयाछे । एमते महेश चन्द्ररायेर त्यग्य वस्तु ताहार भग्नि श्रीमती, जाहार पदयणे पुत्र नाबालग आछे ताहाके अर्थ, कि ताहार पितृव्य कमलाकान्तराय ओ सम्भुचन्द्ररायके अर्थ । एइ प्रश्नेर उत्तर एइ चुम्बके लेखा जाय जे महेशचन्देर भग्नि श्रीमती ओ ताहार सन्तानके अर्थ, कमलाकान्तराय ओ ओ सम्भुचन्द्ररायपितृव्यरा अधिकारी हइवेक ना इति । आर ~ काशीनाथेर स्त्री करुणामयी दिगर आपिताष्टिथान ओ ~ चन्द्र-मालार स्वामी जयचन्द्रघोर रेण्वाडस्टेर ३२६ लम्बरेर मकईमार व्यवस्थाय इहार विपरीत लेखा जाय जे विरोधीय वस्तुर कर्तार अर्थात् कीर्त्तिनारायनेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रेर मरणेर

समय यदि साह्यार पुत्र ना थाके, तबे साह्यार पीतार दीहित्र
यदि पितामह वर्त्तमान थाके, तबे पितामह, तदभावे पितामही,
तदभावे पितृव्य, तदभावे पितृव्यपुत्र, तदभावे भ्रातृपौत्रगणके अर्थ।
एकारण हुकुम हइल ये एइ रुक्कारिर नइल पण्डितके अर्पन करा
जाय जे पण्डित बाङ्गसादेशेर चलित शास्त्रानुसारे एइ बिशयेर
व्यवस्था जे यदि श्रीमतीर गर्भजात सन्तान मानृगर्भ हइते अन्ध
ओ चक्षुरहित एवं ए पर्यन्त ऐ अन्धावस्थाते थाके, एमते
महेशचन्द्रेर स्यन्य धनेर घनाधिकारि ऐ पुत्र हय कि ना। यदि
ना हय, तबे कोन व्यक्ति साह्यार अधिकारि हइवेक, ओ इहार
जओव जे एइ मकईमा, ओ उपरेर लिखित लम्बरेर मकईमा
एक प्रकार ओ ऐक्यभाष सथा च बङ्गदेशेर चलित एकराखा-
गुजाइ, एकेर व्यवस्था अन्येर बिपरीत कि कारण दाखिल हइल;
एइ रुक्कारिर प्राप्तेर पर पाँच बिबस मध्ये दाखिल करेण; ताहा
दाखिल, ओ मोलाहजा हइले जे उचित हय हुकुम सादेर इह-
वेक इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीकुतएवरटहालडनराटरीसाहेबधर्माधिकर-
णलिखितेशवीरामदप्रतिपातेपुण्यगवेन्दुमिताब्दीयजानवरीमासीयाङ्गेन्दुमि-
तदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपअ यचदब्दीयकेनरवरीमासीयरसमि-
तदिनसम्बन्धिगुरुगणरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादशबोधो जातस्तदनुसारे-
णोत्तर लिखते—

यदि श्रीमतीगर्भजातः पुत्रो अन्धान्योऽर्थाद् गर्भत एव चक्षुरहितः
एतस्मालपर्यन्तमन्धावस्थायामेवास्ति उदा महेशचन्द्रस्यकथने स अन्धा-
वस्थायामधिकारी न भवति । एवञ्च सति श्रीमतीपुत्रान्तरस्य महेशचन्द्र-
स्यकथनाधिकारिण उत्पत्तेः प्राक्कालपर्यन्तं पूर्वं लेखितैतद्विवादविषय-
निविटास्मद्वत्तवरणालिखितरीत्या श्रीमत्येवाधिकारिणी भवति । तत्प्राश्न

धनाधिकारिपुत्रस्य पुत्राणां वोक्तौ तस्याः पुत्रस्य पुत्राणां वोपरिलिखित-
व्यवस्थालिखितरीत्या अधिकारः । मदेशचन्द्रत्यक्तधने सम्भावितपुत्रत्वेन
पूर्वलिलितैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थानुसारेण आताधिकारायाः
श्रीमत्या जीवन्त्या स्वत्वध्वंसस्य तद्गर्भजातपुत्रस्य मदेशचन्द्रत्यक्तधनाधिका-
रिणः स्वत्योत्पत्तेरेव जनकत्वाद्-इति वज्रदेशचलितमनुदायभागतट्टीकादाय-
क्रमसंग्रहदायतत्त्वविवादार्णवसेतुविवादमङ्गार्णवादिग्रन्थानुगारिणो व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम् —

अनंशौ क्लीबपतितौ जात्यन्वयधिरौ तथा ॥—इत्यादि दायभागादि-

(पृ० १०१) ग्रन्थधृतमनु (६।२०१) वचनम् ॥१॥

पतितस्तत्सुतः क्लीबः पङ्गुरुन्मत्तको जडः ।

अन्धोऽचिकित्सरोगात्तौ मर्त्यव्यास्तौ निरंशकाः ॥—इति दायभा-
गादिग्रन्थधृतयशुवल्क्यवचनम् ॥२॥

पूर्वलिलितैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थालिखितानि पञ्चप्रमा-
णानीति ॥५॥०॥

एवञ्च काशीनाथदत्तपत्नीकृष्णामयीप्रभृत्यर्थिनीनां चन्द्रमालापतिजय-
चन्द्रवोपप्रत्यर्थिनीस रत्नाभ्रगुणमिताङ्गाङ्कितविवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्य-
वस्थया सहैतद्विवादविषयनिविष्टास्मद्दत्तव्यवस्थाया विरोधशङ्कापरीहारः ।
इत्यवोच्यद्विवादप्रतिपादयेन्दुगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयद्वाविंशतितमदि-
वसीयश्रीयुतमान्तकीयूहेनरीटरम्बलसाहेवाभिधानैतद्वर्माधिकरणप्राचीनाधि-
पतिकृतोपरिलिखितरूपपञ्चाभ्रगुणमिताङ्गाङ्कितविवादसम्बन्धिविचारपत्रतदधो-
लिखितास्मद्दत्तप्रस्थाप्यमेव दृष्टव्यम् इति ज्ञात्वा पुनर्न लिखित इति
निवेदनम् ॥०॥०॥०॥—

इत्यवोच्यद्विवादप्रतिपादयेन्दुगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयविंशतित-
मदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मयेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीज्जयपतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५६) ल ३५८५ सदर—

रुक्कारि आदालते देशोयानि सदर मोकाम कलिकाचा
वैष्टक श्रीयुत जारअंष्ट्राकोएल साहेब कायेम मोकाम हाकिम ।
एइ आदालतेर सन १८३५ साल तारिख १८ फिरेशायादि
मोतावेक सन १२४१ साल ता० = फाल्गुन बुधवार—

कानाइलाल मफलळ

आपीलाष्ट

गोरा ओ दगु ओ गयरह

रेप्पाडष्टान्

आपीलष्टेर उकिलान् मुनशी दादार वक्स ओ सदासु-
पण्डित हाजीर आशालेन । रेप्पाडष्टान् एयालामनामा जारि
हओते ओ ताहार रशीद लिखिया देशोते ए पर्यन्त खोद
किम्बा उकिलेर द्वाराय हाजीर हइल नाइ । एइ मोरुईमा श्रीयुत
तामस पैमल रावरहसेन साहेब कायेम मोकाम हाकीमेर सन
१८३४ सालेर १६ भाइ जुलाइ तारिखेर हुकुमानुसारे आमार
वैठके रुक्कार ओ प्रचिनसन कोटेर नथीर सम्बलित आरजी
प्रभृति कागजात ३५ लम्बर पर्यन्त पढागिया आपीलष्टेर
उकिलदिगेर सम्मति क्रमे एइ मोरुईमार गतिक एइ
प्रकार स्थीर हइल, जे विरोधीय वस्तु जानकीरामेर स्वो
पाजित वटे, ओ जानकीराम ओ शीताराम, दुइ सहोदर
भाता ओ जानकीरामेर स्त्री बदनेर गर्भजात सन्तराम
ओ साधुराम, दुइ सन्तान, ओ ऐ दुइ सन्तान आपन पिता
अर्थात् जानकीरामेर सन्मुखे श्रीमत्या गोरा ओ श्रीमत्या
दगु दुइ भाय्या निःसन्तान वर्त्तमाना राखिया परलोक
हय । ओ शीतारामेर एक पुत्र अर्थात् कानाइलाल फरियादी ए
चेनकार आपीलाष्ट वर्त्तमान आछे । ओ जानकीराम मजबुर
आपन तावठ विषयेर तमलिकनामा आपन स्त्री श्रीमती बदनके
लिखिया दिवाते श्रीमत्या मजबुरा ऐ प्राप्त वस्तुर उपर आपन
जावदशा पर्यन्त भोगवाना थाकिया मृत्यु हइयाछे । ए द्यने
एइ मोरुईमा चूहन्त हुकुम देशोनेर पूर्व ए विषय ए आदालतेर

पण्डितेर निकट जाना आविरयक जे श्रीमत्यावदन मजकुरार मृत्युर पर शास्त्र प्रमाण उद्धार त्याज्य वस्तुर ओयारिस ओ स्वत्वाधिकारि श्रीमत्या गोरा ओ दुखुं उद्धार पुत्रवधूगण हइवेक, कि शीतारामेर पुत्र कानाइलाल हइवेक । अतएव हुकुम हइल जे एइ रुवकारिर नकल एइ हुकुमे जे उपरकार लिखित सओयालेर जओाव पश्चिम देशीय चलित शास्त्र प्रमाण एइ रुवकारिर नकल पाइशर पर एक दीवसेर मध्ये लिखिया पाठान एइ आदालतेर पण्डितेर निकट देओया जाय इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणपतिस्थानाभिपिक्तभीयुतजार्जइष्टाकोएलसाहेव-धर्माधिकरणलिखितेश्वीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासी-याष्टेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीया-क्लेन्दुमितदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्ताम्, तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्त्रदीभूतधनात् श्रीमत्या वदननाम्न्याः पुत्रवधोर्यावज्जीवं पतिकुलोचितप्राप्ताच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माणां चरणोपयुक्तधन विहायावशिष्टधने तत्पतिभ्रातृपुत्रस्याधिकारः—इति पश्चिम-देश चलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिप्रमाणानुसारिणी व्यवस्था ॥

द्वैश्वीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयेन्दुपक्षमित-दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मयेवं व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५७)—लं० २७१ सन १८३३ साल—

मो० कलिकातार सदर देओनि आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम आडिन साहेवेर बैठकेर सन १८३५ सालेर १७ फिव-

रेल मोठावेक वाढला सन १२४१ सालेर ७ फाल्गुन मङ्गळवार
दिवसेर रोवकारि—

विमलामयीदेव्या

आपिलाण्ट

श्रीमती अन्नपूर्णा ओ दिनाजपुरेर फाल्गुन साहेब रेष्पा-
दर्यान् आपालाण्टेर उकिल मौलवि करम होडेन हाजीर
आइल । सन १२३४ सालेर १६ दिवस्येरेर लिखित सदर पोर-
डेर साहेबलोकेर एक केता चिठी प्रेरित पर ओ आनार नकल
सम्बलित नः प्राप्त ओ अद्य हजुरे दरपेस हइया मोरुदमार
अनेक कागजसकलेर सहित दृष्टे आइल । स्थित कागजसकल
हइते बोध हइतेछे जे गौरीशङ्करराय ओ शम्भुचन्द्रराय ओ
ईशानचन्द्रराय तिन जन सहोदर भ्राता छिलेन । ओ मरकारेर
दानानुसारे मोसाहेरा एक २ व्यक्तिर मुबलगे २२३ टाका हि०
मोट मुः ८४६ टाका शालीयाना सरकार हइते माकरर दिल्ल,
ओ ए दयने शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरार जन्य विरोध उपस्थित
आछे । ए जन्य हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व शाखेर बेओरा
शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरार पचे ज्ञात हओन उचित बोध हइया
हुकुम हइल जे एइ रावकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित
प्रनोत्तर नकल रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पाँच दिवसेर मध्ये
लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय ।

परन :—गौरीशङ्करराय ओ शम्भुचन्द्रराय ओ ईशानचन्द्र-
राय तिन सहोदर भ्राता छिलेन । तहारदिगेर मध्ये गौरीशङ्कर
आपन पत्नी रुद्राणीके राखिया ओ ईशानचन्द्र आपन स्त्री गौर-
मनिके राखिया ओ शम्भुचन्द्र आपन वनिता मन्दोदरि ओ
आनन्दचन्द्र ओ नारायणचन्द्र ओ रामधन पुत्राण ओ विम-
लामयीदेव्या ओ अन्नपूर्णादेव्या कन्याण राखिया, ताहार पर
रुद्रानी गौरीशङ्करेर स्त्री ओ तत्परचान् उक्त आनन्दचन्द्र ओ
नारायणचन्द्र निःसन्तान, ओ ताहार पर उक्त मन्दोदरी एक

व्यक्तिरपर अन्य व्यक्तिर मृत्यु इय, ओ ए क्षणे उक्त शम्भु-
चन्द्रेर पुत्र रामधन ओ कन्यागण अन्तपूर्णा अविरा ओ विम-
लामयीदेव्या जीवदशाय आच्छेन । एजन्म जिह्वाशा करा जाइतेछे
जे उक्त शम्भुचन्द्रेर मोसाहेरा कि प्रकार उहार जीवित उत्राधि-
कारिगणेर मध्ये बाङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुसारे विभाग
हुइवेक इति ॥—

श्रीज्जयतितराम

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिधीयुत-ओलियमवेराडीनसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेशबीशब्दप्रतिपाद्येपुगुखगजेन्दुमिताश्रीयकेवरवरीमासीयाद्रीन्नु१७-
मितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तद्वक्ष्यतन्मासीयगजेन्नु-
१८मितदिनसम्बन्धियुधवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यददृशबोधो जात-
स्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते उति शम्भुचन्द्रस्य मासिकं यत्तन्मरणानन्तरं
तत्पुत्रैर्बिभिरर्थाद् आनन्दचन्द्रनारायणचन्द्ररामधनैश्चराधिकास्तिवेन प्राप्तं
तथ मासिके यदि आनन्दचन्द्रनारायणचन्द्रयोः पुत्रादिमातृपर्यन्तानां
मध्ये कश्चिन्नास्ति, तदा शम्भुचन्द्रपुत्रस्य रामधनस्याधिकारः, शम्भुचन्द्र-
कन्ययोरन्तर्पूर्णादेवो विमलमयीदेव्योर्ध्यावजीवं स्वस्वपतिकुलोचितप्राप्ताच्छा-
दनोपयुक्तावश्यकधर्माद्याचरणोपयुक्तस्वत्वपतिपक्षीयधनाभावे पितृत्वक्त-
मासिकाद्यनुसारेण यावजीवं पितृकुलोचितप्राप्ताच्छादनोपयुक्तावश्यकधर्मा-
द्याचरणोपयुक्तधने चाधिकारः—इति यद्ववेशचलितमनुदायभागादिग्रन्था-
नुसारिणो व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो प्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि दावभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

मृते भर्तार्यपुत्रायाः पतिपक्षः प्रमुः सियाः ।

विनियोगात्तरक्षासु भरणे च स ईश्वरः ॥

परिहीणे पतिकुले निर्मनुष्ये निराश्रये ।

तत्संप्रियेषु चासत्सु पितृपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-

ग्रन्थभूतनारदवचनञ्चेति ॥२॥०॥

इंशकीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणमजेन्दुमितान्दीयफेवरवरीमासीयवेदपक्ष २४

मितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे प्रश्नपत्रसहितेय व्यवस्था मया दत्तेति ॥

श्रीर्जयतिराम्

श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

(५८)—सञ्चाल करार ओयुत पण्डित आदालत जेले
जालालपुरः

प्रथमतः—

चलित शास्त्र मैथिली ओ दायभाग जातिर प्रति कि देशेर
प्रति । यदि जातीर प्रति हय तवे कोन कोन जातीर प्रति मैथिली
शास्त्र ओ कोन कोन जातीर प्रति दायभाग शास्त्र; ओ यदि
देशेर प्रति हय तवे कोन देशेर प्रति मैथिली शास्त्र, ओ कोन
देशेर प्रति दायभाग शास्त्र चलित हइवेक । ओ यदि कोन एक
व्यक्ति ये देशे मैथिली शास्त्र चलित सेइ देशी आपन स्थान
परित्याग करिया एइ बङ्गदेशे ये दायभाग शास्त्र चलित आछे
वसति करिया मृत्यु हइयाछे, ताहार सन्तानादि चतुर्थ पुरुष
पर्यन्त एइ देशे आछे । ताहारदिगेर मध्ये उत्तराधिकारित्व, ये
शास्त्रेर विषय राखे, विबाह उपस्थित हइले, ताहार विचार
कोन शास्त्र मते हय, ओ यदि ताहारदिगेर वर्तमान सन्तानादिर
मध्ये विवाहादि ओ श्राद्धादि क्रिया मैथिली शास्त्र मत चलित
थाके, तवे कोन शास्त्र मते, ओ यदि ताहारदिगेर ऐ सकल क्रिया
दायभाग सम्मत चलित थाके, तवे ताहारदिगेर विवाहादि
वस्तु विचार कोन शास्त्र मत हइवेक इति—

द्वितीय—

गङ्गा नामे एक अविरा स्त्री । ताहार स्वामीर भ्रातृपुत्र हेमञ्जलसिंह । ओ ताहार स्वामीर भ्रातृपौत्र नारायणसिंहके राखिया मृत्यु हय । इहाते ताहार स्यर्ज्य धनाधिकारि के हय—
दुइ शाखेर मत व्यवस्था प्रथक प्रथक लिखिवेन इति ।

तृतीय—

हेमञ्जलसिंहेर एक नाबालग पुत्र जओहेरसिंह नामे आपन विमातः चौराशी नाम, तत् गर्भजातक अविवाहिता एक कन्या ओ वेलकुमारि नामे जओयार सिंहेर एक सहोदरा भग्नी ओ नारायणसिंह नामे आपन पितार भ्रातृपुत्र राखिया मृत्यु हय । इहाते जओहेरसिंहेर तेस्य धनादि मैथलि शास्त्र मते काहाके ओ दायभागशास्त्र मते काहाके वर्त्त । ओ यदि जओहेरसिंह नारायणसिंहेर सहित एकाग्रमुक्त थाकिया मृत्यु हइयाथाके, किन्वा ऐ नारायणसिंहेर प्रथक अने मृत्यु हइयाथाके, एइ दुइ प्रकारे ऐ दुइ शास्त्र मते जओहेरसिंहेर धनाधिकारि के हय । एवं आपनाके इहाओ ज्ञातो करा जाइतेछे मे ऐ धनाधि^१ ताहारदिगेर सकलेर पैतृक । इहार यथाशास्त्र ये व्यवस्था हय प्रति छहओलेर निचे लिखिया ३ तिन दिवसेर मध्ये अथवा इहार पूर्व एइ अदालते पाठाइवेन इति ॥

श्रीदुर्गाशरणम्

समुदयप्रश्नेर सप्रमान उत्तर प्रश्नेर नीचे लिखन स्थानाभाव प्रयुक्त पृष्ठे उत्तर लिखितेछि—

प्रथम प्रश्नस्योत्तरम्—

अर्थात्^१ प्रथम सओलेर उत्तरं लिख्यते । चलित मैथिलि शास्त्र एवं बङ्गदेशीय दायभाग शास्त्र मुख्य देशेर प्रति नहे । पारिभाषिक

परिकीये पतिकुले निर्मन्त्रये निराश्रये ।

तत्तापयडेपु चासत्सु पितृपदः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-
ग्रन्थभूतनारदवचनञ्चेति ॥२॥०॥

ईशवीश्वन्दप्रतिपाद्येपुगुणमजेन्दुमितान्दीयफेवरवरीमासीयवेदपद २४
मितदिनसम्प्रन्धिमङ्गलरासरे प्रश्नपत्रसहितेय व्यवस्था मया दत्तेति ॥

श्रीर्जयतिस्वामि

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(५८,—सञ्जाल वरावर मीयुत पण्डित आदालत जेले
जालालपुरः

प्रथमतः—

चलित शास्त्र मैथिली ओ दायभाग जातिर प्रति कि देशेर
प्रति । यदि जातीर प्रति हय तवे कोन कोन जातीर प्रति मैथिली
शास्त्र ओ कोन कोन जातीर प्रति दायभाग शास्त्र; ओ यदि
देशेर प्रति हय तवे कोन देशेर प्रति मैथिली शास्त्र, ओ कोन
देशेर प्रति दायभाग शास्त्र चलित हइवेरु । ओ यदि कोन एक
व्यक्ति ये देशे मैथिली शास्त्र चलित सेइ देशी आपन स्थान
परित्याग करिया एइ बङ्गदेशे ये दायभाग शास्त्र चलित आछे
बसति करिया मृत्यु हइयाछे, ताहार सन्तानादि चतुर्थ पुरुष
पर्यन्त एइ देशे आछे । ताहारदिगेर मध्ये उत्तराधिकारित्व, ये
शास्त्रेर विषय राखे, विवाद उपस्थित हइले, ताहार विचार
कोन शास्त्र मते हय, ओ यदि ताहारदिगेर वर्त्तमान सन्तानादिर
मध्ये विवाहादि ओ आह्वादि क्रिया मैथिली शास्त्र मत चलित
थाके, तवे कोन शास्त्र मते, ओ यदि ताहारदिगेर ये सकल क्रिया
दायभाग सम्मत चलित याके, तवे ताहारदिगेर विवाहादि
वस्तुर विचार कोन शास्त्र मत हइवेरु इति—

द्वितीय—

गङ्गा नामे एक अचिरा स्त्री । ताहार स्वामीर भ्रातृपुत्र हेमञ्जलसिंह । ओ ताहार स्वामीर भ्रातृपुत्र नारायणसिंहके राखिया मृत्यु हय । इहाते ताहार त्यज्य धनाधिकारि के हय—
तुइ शास्त्रे मत् व्यवस्था प्रथक प्रथक लिखिबेन इति ।

तृतीय—

हेमञ्जलसिंहेर एक नाबालग पुत्र जओओहेरसिंह नामे आपन विमाता चौराशी नाम, तत् गर्भजातक अयिवाहिता एक कन्या ओ बेलकुमारि नामे जओओयार सिंहेर एक सहोबरा भग्नी ओ नारायणसिंह नामे आपन पितार भ्रातृपुत्र राखिया मृत्यु हय । इहाते जओओहेरसिंहेर तेध्य धनादि मैथलि शास्त्र मते काहाके ओ दायभागशास्त्र मते काहाके घर्त्त । ओ यदि जओओहेरसिंह नारायणसिंहेर सहित एकान्नमुक्त थाकिया मृत्यु हइयाथाके, किम्वा ऐ नारायणसिंहेर प्रथक अन्न मृत्यु हइयाथाके, एइ दुइ प्रकारे ऐ दुइ शास्त्र मते जओओहेरसिंहेर धनाधिकारि के हय । एवं आपनाके इहाओ ज्ञस्तो करा जाइतेछे ये ऐ घनाधि^१ ताहारदिगेर सकलेर पैतृक । इहार यथाशास्त्र ये व्यवस्था हय प्रति छहओलेर निचे लिखिया ३ तिन बिबसेर मध्ये अथवा इहार पूर्व एइ अदालते पाठाइबेन इति ॥

श्रीदुर्गाशरणम्

समुदयप्रश्नेर सप्रमान उत्तर प्रश्नेर नीचे लिखन स्थानाभाज प्रयुक्त पृष्ठे उत्तर लिखितेछि—

प्रथम प्रश्नस्योत्तरम्—

अर्थात्^२ प्रथम सओओलेर उत्तरं लिख्यते । चलित मैथिलि शास्त्र एवं बङ्गदेशीय दायभाग शास्त्र मुख्य देशेर प्रति नहे । पारिभाषिक

देशेर प्रति, अर्थात् देशस्थ लोकेर प्रति । मुख्य देश इहाके कहे । देशो नदी भूधरः कन्दरादिः । अतएव मुख्य देशेर प्रति नहे । शास्त्र जातिर प्रति बटे । किन्तु वङ्गदेशीय जीमूतवाहन कृत दायभाग शास्त्र वङ्गदेशीय सकलहिन्दुजातिर प्रति । मैथिलि शास्त्र मिताक्षरा मिथिलादेशवासिसकल हिन्दुजातिर प्रति । मिथिलादेशस्थ कोनो व्यक्ति स्वदेश त्याग करिया वङ्गदेशे क्रमे चतुःपुरुष बास करिया मृत्यु हइले, ताहार सन्तानादि यदि मिथिलार शास्त्रानुसारे विवाहादि क्रिया करे, तबे मिताक्षराशास्त्रानुसारे, यदि वङ्गदेशीय शास्त्रानुसारे विवाहादि क्रिया करे, सबे जीमूतवाहन कृत दायभाग शास्त्रानुसारे विरोधि वस्तुद विवाद भञ्जन अर्थात् उत्तराधिकारिर निर्णय हइवेक । इह। सर्वे-देशीय शास्त्रानुसारे यथाशास्त्र व्यवस्था इति—

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपण्डितस्य

द्वितीय प्रश्नस्योत्तरं लिख्यते—

गङ्गानाम्नी एक अविरा स्त्री । ताहार स्वामीर भ्रातृपुत्र हेमञ्जलसिंह एवं स्वामिर भ्रातृपौत्र^१ नारायणसिंहके ओरिश राखिया मृत्यु हइले, ताहार घने अर्थात् ताहार दाये ताहार स्वामिर भ्रातृपुत्र हेमञ्जलसिंह अधिकारि हइवेक । ताहार स्वामिर भ्रातृपुत्र^२ थाकिने भ्रातृपौत्र अधिकारि हइवेक ना । इहा वङ्ग-देश चलित जीमूतवाहन कृत दायभाग एवं मिथिलादेश प्रचलित मिताक्षरा शास्त्र सम्मत । यथाशास्त्र व्यवस्था उभय देशीय शास्त्र मते एक व्यवस्था प्रयुक्त पृथक लिखिलाम ना इति ॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपण्डितस्य

तृतीयप्रश्नस्य उत्तर लिख्यते—

हेमञ्जलसिंहेर एक नाबालग पुत्र जज्जोहेरसिंह आपन विमाता चौराशी नाम्नी एवं तत्तर्भजा एक वैमात्रेया अविवाहिता

भगिनी एवं बेलकुमारी नाम्नी एक सहोदरा भगिनी एवं पितार
भ्रातृपुत्र नारायणसिंह-एइ चारिके राखिया कि एकात्रे कि
पृथगत्रे थाकिया मृत्यु हइले । ताहार पैतृक धने एवं स्वकृत
धने सकल धनेइ अर्थात् ताहार सकल दाये ताहार पितार
भ्रातृपुत्र अर्थात् पितामह सन्तान नारायणसिंह अधिकारि
हइवेक । ताहार बिमाता एवं वैमात्रेया भगिनी एवं सहोदरा
भगिनी अधिकारिणी हइवेक ना । किन्तु बिमाता चौराशा
उभयदेशीय शास्त्र मते प्रासाच्छादन पाइवेक । इहा एतद्देश प्रचलित
जीमूतवाहन कृत दायभाग एवं मिथिलादेश प्रचलित मिताक्षरा-
शास्त्र सम्मत । यथाशास्त्र व्यवस्था उभयदेशीय शास्त्रे एक
व्यवस्था प्रयुक्त पृथक लिखिताम ना । विशेष एइ-तत्तद्देशीय
दायभाग मते अविवाहिता वैमात्रेया भगिनीर विवाहेर ये धन
व्यय ताहा नारायण सिंह जम्होहेरसिंहेर स्थावरास्थायर वस्तु
अष्टमांशिकांश अर्थात् जम्होहेरसिंहेर धन अष्ट भाग करिया
एक भाग दुइ आना दिवेक इति ॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपरिडितस्य ।

अत्र मैथिलशास्त्रमिताक्षरामते प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो वन्धुः शिष्यः सव्रह्मचारिणः ।

एवमभाये पूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ॥—इत्यादि मिताक्षराभूतयाज्ञ-

वल्क्यवचनम् ।

अनन्तरः सपियडाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति वचनञ्च ।

पित्रादिपितामहपर्यन्ताभावमुपक्रम्य पितृव्यस्तत्पुत्राश्च क्रमेण धन-
भाजः । पितामहसन्तानाभाये प्रपितामही प्रपितामहस्तत्पुत्रास्तत्सून-
वश्चेत्येवमासप्तमात् समानगोत्राणां सपियडानां धनग्रहणं वेदितव्यम्—
इति मिताक्षरापृ० २२३ लिखनञ्च ।

भगिन्यश्चासंस्कृताः^१ संस्कृतव्याः—इत्यादि मिताक्षरा(पृ० २०८)
लिखनम् ।

भ्रातृभगिन्याः समविभागं कृत्वा तयोरेकाशं चतुर्धा विभज्य
चतुर्भांशस्य एकाश दत्त्वा शेषं गृहीयात्—इति मिताक्षराटीका(या)ञ्च
(पृ० २०९) ।

दायभागमते प्रमाणम्—पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि याज्ञवल्क्य
वचनम् ।

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धन भवेत्—इति च वचनम् ।

असंस्कृतास्तु संस्कार्या भ्रातृभिः पूर्वसंस्कृतैः—इति याज्ञवल्क्य-
वचनम् ।

भगिनीनां संस्कार्यतामाह, नाधिकारिताम्—इत्यादि दायभाग-
(पृ० ६६)लिखनञ्च ।

पुंघनाधिकारे भगिन्यधिकारस्यालिरनात् नाधिकारः, न दायमहति
स्त्री—इत्यादि निषेधवचनञ्च ।

भरणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ।

नरकं पीडने चास्य तस्माद्यत्नेन न भरेत् ॥—इति (दायभागग्रन्थधृत)-
वचनम् ।

मात्रधिकारे गर्भधारणपोषणहेतुनिर्देशादिमातुर्नाधिकारः इति ॥

श्रीश्रीनाथविद्यावागीशपरिणितस्य

ल० ६३५७

मृत हेमञ्जलसिंहेर स्त्री चौराशी

वादी

मृत दयालसिंहेर पुत्र नारायणसिंह

पतिवादी

कलिकावार सदर देगानि आदालतेर परिणित स्थाने प्रश्नः

एष ये—

मजफरपुरजिलार अन्तःपाति पश्चिमदेशीय छत्रिवंशी
हेमञ्जलसिंह चतुर्थ पञ्चम पुरुष जायत एतद्देशनिवासि हइया ए

देशस्थ पैतृक वित्त ओ अवर्त्तमान खीर गर्भजात अप्राप्तवयसीय पुत्र जओोहेरसिंह ओ अविरा कन्या ओ द्वितीया स्त्री चौराशी वादि ओ ताहार गर्भजात हरकुमारी नामे एक अदत्ता कन्या वर्त्तमान राखिया मृत्यु हय । ताहार चतुर्थे वर्षान्तरे ऐ जओोहेरसिंह अप्राप्त वयसे मृत्यु हय । एतादृश स्थले ऐ वादि चौराशी ये एक अदत्ता कन्या राखे उक्त वित्त प्राप्ती हइवेक, कि नारायणसिंह जओोहेर सिंहरेर पितृश्य पुत्रसत्वे ऐ वित्ताधिकारि हइवेक । यथा शास्त्र व्यवस्था लिखिवेन । इति सन १८३४ साल तारिख ४ जुन, मोतावरु सन १२४१ साल तेरिख २३ ज्येष्ठ ॥—

श्रीज्जयतिराम

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रव्यवस्थापत्रविचारपत्राणि यानीशवीशब्दप्रतिपाद्य-
निगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासीयगुणनेत्र-२३—मिवदिनसम्बन्धिचन्द्र-
वासरे मया प्राप्तमथचेशवीशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बर
मासीयद्वितीयदिवसीयमत्कृतनिवेदनपत्रानुसारेण प्रभुसमर्पिततन्निवेदनपत्र-
सहितविचारपत्रं यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेब्रवरीमा-
सीयतृतीयदिनसम्बन्धिघमङ्गलवासरे मया प्राप्तम्, तेन ज्ञातमयं विवादो
वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेण निश्चय (इति) । तत्र कश्चिद्देशविषयकविरोधो
वादिप्रतिवादिनोर्मध्ये नोपस्थितः । अत एवैतद्विवादविषये वङ्गदेशचलित-
शास्त्रानुसारेण व्यवस्थालिखने सन्देहो नास्ति । अतस्तत्पत्रायतमवलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसार्युत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति हेमञ्जलसिंहो यद्यविद्यमानपत्नीगर्भजातम्
प्राप्तव्यवहारं पुत्रं यमाहिरसिंहनामानमेकामवीर्यं दुहितरं द्वितीयपत्नीं
चौरासीनाम्नीमधिनीं तद्गर्भजातामेका हरकुमारोनाम्नोमदत्ता कन्यां
विदाय मृतः स्यात्तदा हेमञ्जलसिंहस्यकषणे तत्पुत्रस्य यमाहिरसिंहस्य
अप्राप्तव्यवहारस्याधिकारः । तस्मिन् पुत्रादिपितृपणीवपर्यन्तरहिते मृते
सति तस्यकषणे प्रथमतस्तत्पितृदौहित्रस्याधिकारः । किन्तु यमाहिरसिंह-

पितृदोहित्रस्येदानीमजातत्वेन तदुत्पत्तेः प्राक्कालपर्यन्त यमाहिरसिंहवैमा
त्रेयभगिन्या हरकुमारीनाम्न्या अविवाहिताया एव अधिकारः । तस्याः
पुत्रेषु जातेषु तेषामेवाधिकारः । हेमञ्जलसिंहस्य मृतपत्नीगर्भजाताया
अवीराया दुहितुर्म्यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासान्छादनोपयुक्तावश्यकवि-
धवाधर्माद्याचरणपयुक्तपतिपक्षोपधनाभावे हेमञ्जलसिंहस्य कथनान्तर्गत-
तत्कुलोचितप्रासान्छादनोपयुक्तावर्यकविधवाधर्माद्याचरणपयुक्तधने चा-
धिकारः । अयिम्यारचोरासीनाम्न्या हेमञ्जलसिंहस्य द्वितीयपत्न्या अपि
यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासान्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणो-
पयुक्तधने तत्कन्याया हरकुमारीनाम्न्यारचाप्राप्तव्यवहारकालपर्यन्त तद्धन-
रक्षणादौ चाधिकारः । सत्त्वेव हेमञ्जलसिंहस्य दोहित्रेषु स्वतो हेमञ्जल-
सिंहस्य तत्पितृपितामहयश्च पार्वणभाद्रपिण्डदातृषु तेषां हेमञ्जलसिंह-
दोहित्राणामुत्पत्तिस्मभावनायामपि हेमञ्जलसिंहप्रातृपुत्रस्य अर्थाद् यमा-
हिरसिंहपितृपुत्रस्य नारायणसिंहस्य नाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितम-
नुदायभागदायतत्त्वायभागटोकादायक्रमसमग्रहविवादायवसेतुविवादभङ्गाय
चादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रयाणामुदक कस्य त्रिषु पिण्डः प्रवर्तते—इत्यादि मनुवचनम् ॥ १ ॥

अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्—इति च मनुवचनम् ॥ २ ॥

पितुरपि प्रपौत्रपर्यन्ताभावे पितृदोहित्रस्याधिकारो बोद्धव्यो धनिदोहि-
त्रस्येव—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥ ३ ॥

यद्यपि दुहित्रभावे दोहित्रस्येव भगिन्या एव प्रागधिकारो युक्तस्त-
थापि तस्याः सीत्वेन पार्वणपिण्डदत्त्वाभावाचाधिकारः । दुहितुस्तु दोहि-
त्रात् पूर्वमज्ञादज्ञात् सम्भवति इत्यादिविशेषोपवचनादेवाधिकार इति
भावः—इति भोड्भ्यवर्कालङ्कारकृतदायभागटोकालिखनम् ॥ ४ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो प्रातरस्तथा ।

तत्पुत्रो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
वचनम् ॥ ५ ॥

अभावे धीजिनो माता तदभावे च पूर्वत्रः—इति व्यवहारतत्त्वा-
दिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥६॥

तदभावे पुनः पितृदौहित्र इति । तदभावे पितामहस्तदभावे पितामही
तदभावे पितुः सोदरस्तदभावे पितुर्वैमात्रेयस्तदभावे पितृसोदरपुत्रपितृवै-
मात्रेयपुत्रपितृसोदरपौत्रपितृवैमात्रेयपौत्राणां कमेणाधिकारः—इति च
श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभागटीकाजिज्ञनञ्चेति ॥७॥—

ईशबोशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्चमासौयदशमदिनसम्ब-
न्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रव्यवस्थापत्रमत्कृतनिवेदनपत्रैर्वि-
चारपत्रैश्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(१६)—अशेषगुणालंकृत नानाराखाध्यापक श्रीयुव पीठा-
म्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य पण्डित आदालते देशोनि जेला-
बिरभूम सदन्तःकरणेषु—

यदि कोन विधवा खोलोक आपन तिन पुत्रेर सहित एक
अर्जे थाकिते दुइ पुत्र मरे, आर ऐ एक पुत्र आपन मातार
सहित एक अर्जे थाके, किम्वा प्रथक अर्जे थाके—एसत स्थले ऐ
मृत दुइ पुत्रेर धनाधिकारि चाहारदेर माता कि भ्राता के
हइवेक ?

पण्डितके उचित ये एइ सओलेर उओव संस्कृत भाषा
शब्दे एइ सओलेर पार्शे आपन दस्तखत भदुरे लिखिया श्रोज
मध्ये हजुरे पाठान इति—

श्रीदुर्गा शरणम्

प्रभुप्रेषितप्रश्नपत्रावलोकनेन यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणात्र प्रत्युत्तरं
लिख्यते—

दोहित्रपर्यन्तरहितयोर्मृतचर्त्तनोः स्थावरादिघने मातुरेवाधिका-
रित्वम्—इति वङ्गदेशप्रचलितदायग्रन्थादिग्रन्थसम्मतयेति ॥

श्रीकाली जयति

श्रीपीताम्बरतर्कवागीशभट्टाचार्य्येण ।

भाषा—

दोहित्रपर्यन्त बिहिन मृत ये दुइ व्यक्ति, ताहारदेर स्थावरादि
घने ताहारदेर मातार अधिकार हय, भ्रातार हय ना—इति
वङ्गदेश चलित दायभाग प्रभृति ग्रन्थ सम्मता व्यवस्था इति ।
समाप्तिकेयं व्यवस्थेति ॥

श्रीदुर्गा शरणम्

पितरि मृते ये भ्रातरोऽविभक्त्यस्तयोः पितृपर्यन्तौ उत्तराधिकारिरहितयो-
र्मध्यमकनिष्ठयोरुपरमे उद्धने माता अधिकारिणी । किन्तु तदानीं पैतृक-
ेश्वरसेवारक्षार्थमवश्योप्यवगोप्यार्थञ्च ज्येष्ठपुत्रेण यदद्यादिकं कृतं
तन्मात्रा पुत्रेण च परिशोध्य यदवशिष्टं धनं पश्चात् ताभ्यां विभजनीयम् ।
श्रृणुपरिशोधनान्तरमेव विभागविधानात्—इति विदुषाम्प्रामर्शः ।
तस्य भाषा—

पितार मृत्युर पर तिन भ्राता वर्त्तमान, पितृ पर्यन्त उत्तराधि-
कारि रहित मध्यम एवं कनिष्ठेर परलोक हइले पर सेइ दुइ
जनेर अंशे मातार रक्षणावेक्षणेर अधिकार हय । किन्तु ताहार
पर पैतृकेश्वरसेवा रक्षार निमित्ते एवं अवश्योप्य कुटुम्बादि
परिपालनेर कारण ये श्रृणादि हय ताहा ज्येष्ठ भ्राता ओ माता
दुइ जनके परिशोधन करिते हय । परिशोधनेर पर अवशिष्ट

धन ये थाके, ताहा दुइ जनेन्यथा योग्य वष्टन करिया लइवेक ।
किन्तु माता दानादि करिते पारेजा । स्मृतिशास्त्र मते ऋणादि
परिशोधनेर परविभाग विधान करियाछेन इति—

श्रीगोपाल(१) जयति—

श्रीहरिरामशर्मणाम् ।

श्रीराम : शरणम्—

श्रीगुरुचरणशर्मणाम् ।

श्रीराम : शरणम्—

श्रीकालीप्रसादशर्मणाम् ।

श्रीनन्दगोपालः शरणम्—

श्रीहरगोविन्दन्यायालङ्कारस्य ।

श्रीराम : शरणम्—

श्रीत्रिलोचनशर्मणाम् ।

श्रीराम : शरणम्—

श्रीरामचनशर्मणाम् ।

लं० २४ शराशरि आपिल सन १८३१ मच्छिया—

रोवकारि आदालते देओयानि जेला बिरभुम मैहार दुइक
पाटल साहेव एकटिन जज सन १८३४ मछिहा तारिख २६
सेतम्बर मोताबक सन १८४१ साल तारिख ११ आश्विन ।

विलाशमनिदेव्या वेलेमदार—मथुरानाथसिंह मोतार्जुन—

एइ मकदमा शायेक जजसाहेबेर हुकुम अनुसार एइ आदा-
लतेर पण्डित पीताम्बरतर्कवागीश ये व्यवस्था दियाछेन प्रतिवादि
मजकुर ताहाते एइ ओजारे राखे ये ऐ व्यवस्था शास्त्र मत नहे ।
शास्त्रे अतिक्रम दोपरा पण्डितवर्गेर व्यवस्था, जाहा आनि लइ-
याछि, ताहा दोरस्त आछे । ताहाते मताम्बेर मजकुर कएक जन
पण्डितेर दस्तखति एक खान व्यवस्था दरपेप करिलेक । इहाते
मोतार्जुन मजकुरेर ओजोर निवारनेर निमित्त आर एइ दुइ
व्यवस्था दरस्ति नदरोस्ति जानिवार निमित्त सदर देओयानिर
पण्डितवर्गेर स्थाने सत्य व्यवस्था रखव करोन आविश्यक
हइल । ए कारण हुकुम हइल ये एइ आदालतेर पण्डित पीता-
म्बरतर्कवागीशेर व्यवस्था आर मोतार्जुन मजकुरेर दाखिल करा
व्यवस्था एइ रोवकारिर नकलेर सम्बलित आर एइ रकम इरोज

चीटी सदर देखोयानिर आदालतेर हाकीमानेर हुजुरे पाठान जाय ये हाकिमान एइ पाठान दुइ व्यवस्था सदर पण्डितेर आगे एइ निमित्तक जानिवार अनुमति ये एइ दुइ व्यवस्था मध्ये कोन सत्य ओ शाख अनुसार, आर इहार एक कोन खेलाफ शाख हय पाठाइया एवं पण्डितदिगेर स्थान इइचे इहार सत्य व्यवस्था तलब करिया परे पण्डितमहारायेरदिगेर सत्य व्यवस्था ओफे इफि, एइ पीछिले साहा एइ आदालते पाठाइवेन इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपरं वीरभूमिप्रदेशीयबिलाख्यावान्तरधर्माधिकरण्या-
नियुक्तपण्डितसम्बन्धितधर्माधिकरण्याधिपतिकृतप्रश्नपत्र व्यवस्थापत्रद्वयद्व
यदीशचोशब्दप्रतिपाद्यनिगमगुणगजेन्दु १८१४ मिताब्दीयदिशम्बरमासीय-
प्रथमदिनसम्बन्धितचन्द्रवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो आस्तद-
नुसारेणोत्तर लिख्यते—

वीरभूमिप्रदेशीयबिलाख्यावान्तरधर्माधिकरण्याधिपतिकृतप्रश्नपत्रा-
मेव । यदि काचिद् विषया ओ स्वकीयैर्मित्रिभिः पुत्रैः सहैकान्ते स्थिता,
तदानीमेव द्वौ पुत्रौ मृतौ स्यातामेक पुत्रः स्वमात्रा सहैकान्ते पृथगन्ते
वा स्थितस्तदा मृतयोर्द्वयोः पुत्रयोर्द्वनाधिकारिणी माता भवति, किंवा
भ्राता भवतीति । तत्र तद्धर्माधिकरण्यानियुक्तपण्डितेन माता घनाधिकारिणी
भवति, भ्राता न भवतीत्युचर लिखितं तच्छास्त्रानुसारेण शुद्धमस्ति ।
अन्यैरनियुक्तपण्डितैश्च माता घनाधिकारिणी भवतीत्येवोत्तर लिखितम् ।
अतएवैतद्विषये द्वयोर्भ्यवस्थयोरैक्यमेवेति तद्विषये विचारस्यावश्यकता
नास्ति, द्वयोरेव व्यवस्थयोरेवद्विषये चङ्गदेशचलितशास्त्रीयत्वात् । किन्त्व-
नियुक्तैरन्यैः पण्डितैः स्वकीयव्यवस्थायामित्येवाधिकं प्रभुवृत्तप्रश्नात्
लिखितम् । किन्तु तदानीं पैतृकेश्वरसेवारक्ष्यार्थमवश्यबोध्यवर्गोपपन्नार्थं
च ज्येष्ठपुत्रेण यद्व्यादिकं कृतं तन्मात्रा पुत्रेण च परिशोध्य यदवशिष्टं
धन पश्चात्ताभ्यां विमर्शनीयमृणपरिशोधनानन्तरमेव विभागविधानादिति

विदुषां परामर्श इति । तत्रच प्रभुक्तप्रश्नाशयबहिर्भूतत्वेन विचारानर्हत्वमेवेति । विचारार्हत्वेऽपि वा दायभागादिग्रन्थे चायमेव विचारस्तद्विषये कृतः । पूर्वस्वामिकृतेषां दृष्टान्तान्यायिकमृशमुत्तराधिकारिभिः स्वस्वोपमुक्तांशानुसारेणावश्यमेव परिशोध्यम् । तत्रापि विभागकर्तृभिरुत्तराधिकारिभिस्तादृशशृङ्खलपरिशोधनं विना विभागो न कर्तव्य इति न नियमः । किन्तु विभागकर्तृणां धनिकस्य चेच्छा चेत्तदा शृङ्खलपरिशोधनानन्तरमेव विभागः । तेषामिच्छा चेद्विभागानन्तरमेव शृङ्खलपरिशोधनं भवितुं शक्नोतीति ॥—
अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थवृत्तयाशुबलव्यवचनम् ॥१॥

यच्छिष्टं पितृदायेभ्यो दत्तव्यं पेतृकं ततः ।

भ्रातृभिस्तद्विभक्तव्यमृणी न स्याद् यथा पिता ॥ इदं नारदवचनम् पित्रर्णशोधनावश्यम्मावार्थं न विभागकालार्थम् । अस्माच्च नारदवचनादयमर्थः सिद्ध्यति—यद् विभागकर्तृभिरुत्तराधिकारिभिरनुमत्यैव पित्रादयुक्तं विभजनीयं परिशोध्यं वा—इति दायभाग (पृ० २५) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशान्दप्रतिपातेषु गुणगज्जन्दुमिताब्दीयमान्चर्माधीयत्रयोदशदिनसम्बन्धिषु कथासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रप्रश्नपञ्चाभ्यां व्यवस्थापत्राभ्याश्च सहितमिदमुत्तरं दत्तमिति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीचैयनाथमिश्रेण

(६०)

श्रीसुब्रह्मण्यगुरुःशरणम्

चतुर्विंशदधिकाष्टादशशताब्दीयसोत्तम्वरमाधोषाश्च दशदिवसे प्रत्यधि-

न्योविवादविषये प्रवानसदनमीनाख्यधर्माधिकारिप्रेषितप्रश्नसंवलितप्रति-
रूपकपत्रमवलोक्य^१ यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

मृतशटकोपदासत्यक्तचनप्राप्त्यर्थं विरदमानयो. अमुकदासाख्यार्थ-
मुक्तप्रत्ययिन्योर्मध्ये^२ यद्यपि अमुकस्या शटकोपदासकन्या, तथाप्येतत्-
प्रतिरूपकपत्रलिखनानुसारेण सा पतिपुत्रविहीना^३ विधवेति^४ प्रतिभातीति
कृत्वैतादृशमृतशटकोपदासत्यक्तचने^५ तद्धर्मभ्रातृमृकदासस्याधिकारो न
तु अमुकस्याविधवाया.^६ वैष्णवानां मध्ये केचन वानप्रस्थाः, केचन ब्रह्म-
चारिणो भवन्तीति कृत्वैतादृशमृतशटकोपदासाख्यः स योगी चेदपि^७ वान-
प्रस्थान्तर्भूत एवेति कृत्वा तस्यक्तचनं तद्धर्मभ्रातृमृकदास एव प्राप्तुम-
र्हति, न तु अनुसाख्यविधवा—इति^८ शास्त्रसम्मतं व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्—

वानप्रस्थयतिब्रह्मचारिणा धनहारिणः ।

कनेणाचार्यसंछिद्यधर्मभ्रात्रेकतीर्थिनः ॥—इति मिताक्षराप्रभृति-
ग्रन्थवृत्तयांशः ॥ २१३७ ॥ वचनम् ॥ १॥

एव वानप्रस्थधर्मं धर्मभ्रातृत्वेनानुमतोऽपरो वानप्रस्थ एकतीर्थनि-
वासी एकभननिवासी^९ वा गृहीयाद्—इति दायभागः (पृ० २१७)
लिखनञ्चेति ॥ २॥ ०॥

श्रीसुब्रह्मण्यगुरुः शरथम्

श्रीसखारामशास्त्रिणः

मोहर पण्डित आदालत देमानि—

मुकामिले वालाचोपत मोहरिर मरमहादनवीस ॥

१. धर्माधिकारीप्रेषितप्रतीकम्—व्यप० ।

२. विरदमानयो अमुकदासाख्यार्थोऽमुक्तप्रत्ययिन्यो—व्यप० ।

३. पती—व्यप० ।

४. विधवेति—व्यप० ।

५. कृत्वे—व्यप० ।

६. योगी—व्यप० ।

७. सयोगिचेदपी—व्यप० ।

८. विधवेति—व्यप० ।

९. मीता—व्यप० ।

१०. ०-वेवास्त्रे—एकभननोवास्त्री—व्यप० ।

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रञ्च यदीशवीरानन्दप्रतिपाद्यनिगम-
गुणगजेन्दु १८३४ मिताब्दीयदीपम्बरमासीवपुनीन्दुमितदिनसम्बन्धिवृष-
वाचरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रभुसमर्पितव्यवस्था घर्म्मशास्त्रसम्मतता न भवति, कलौ वानप्रस्थाश्र-
मस्य निषेधादिति ।

ईशवीरानन्दप्रणिघ्नेषुगुणगजेन्दुमितान्दीयमान्चमासीयत्रयोदशदिनस-
म्बन्धिशुक्रवाचरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रव्यवस्थापत्राभ्यां सहितमिद-
मुत्तरं दत्तमिति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवेद्यानाथमिश्रेण

(६१)

श्रीहरिःशरणम्

महामहिमभीयुतधर्म्माधिकरणाध्यक्षब्रह्मादेवमहाशयसमीपेषु उपरि-
लिखितप्रश्नपत्रस्योत्तरं लिख्यते—

अपुत्रस्य मृतजयकान्तरायस्य समस्तधने पञ्चमपुरुषपीयशातिसकुल्यद-
यानाधरायरामनाथरायमातृष्वस्त्रीयमधुरानाथपोषाणां^१ मध्ये धनिदेयमाता-
महपिण्डदातृत्वात् मातृष्वस्त्रीयमधुरानाथत्वाधिकारो भवति—इति वक्त-
व्येष्टीयप्रचलितदायभागदायतत्त्वदायकमसंग्रहविवादभङ्गायैवमभूतिग्रन्थवि-
दां विदां सम्मता व्यवस्था साधोयसीति ॥

अत्र प्रमाणानि—

बहवो ज्ञातयो यत्र सकुल्या बान्धवास्तथा ।

यो ह्यासन्नतरस्तेषां सोऽनपत्यधनं हरेत् ॥१॥

अनन्तरः सर्पिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत् ।

अत ऊर्ध्वं सकुल्यः स्यादाचार्यः शिष्य एव वा ॥२॥

१. पुराणीयानां पीयशातिसकुल्यदयानाधरायरामनाथरायमातृष्वस्त्रीयमधुरानाथपोषाणां—२८५० ।

त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पियडः प्रवर्तते ।

चतुर्थः सम्प्रदातैषां पञ्चमो नोपपद्यते ॥३॥

सपियडभावे सकुल्यः—इति वृद्धस्पतिमनुबोधायनवचनानि ॥

तस्मात् तद्भोग्यपियडदातुरभावे तद्देयपियडदातुर्मातुलादेरधिकारो
न्याय्य एव—इति दा० भा० (पृ० २१०) । एतेन वृद्धप्रपितामहात्
प्रभृतयः पूर्वपुरुषा प्रतिनप्तुः प्रभृतयोऽधस्तनास्रयः^१ पुरुषाः एकपियड-
भोक्तृत्वाभावाद् विभक्तदायादाः सकुल्या इति आचक्ष्यते दा० भा०
(पृ० ११) । तस्माद् यो यस्तत्कुलोत्पन्नोऽतद्गोत्रोऽपि^२ स्वदौहित्रपितृ-
दौहित्रादिः अतत्कुलोत्पन्नो वा मातुलादिर्धनिनो मृतस्य मातृकुलगत-
त्रैपुरुषिकपियडदातृत्वा एव पियडसम्पन्नेन सपियडस्तस्य^३ तस्याप्यधि-
कारार्थं त्रयाणामिति वचनम् । आनन्तर्येण च विशेषार्थम् अनन्तर इति
वचनं वर्णनीयम् । तेन मृतभोग्यमृतदेयपित्रादित्रयपियडदातुः पितृदौ-
हित्रादेरभावे मृतदेयमातामहादिपियडदातृणां मातुलादीनामानन्तर्यक्रमे-
णाधिकारिकमो बोद्धव्यः । एतत्पर्यन्ताभावे सकुल्यः—इति दायभाग
(पृ० २१२।२।३) लिखनानि ।

मृतभोग्यपियडदात्रभावे बन्धुरिति मातामहमातुलादिः—इति दाय-
तन्त्रं (पृ० १६६) लिखनानि ।

ततः पितामहमातृदौहित्रोऽधिकारी धनिभोग्यप्रपितामहपियडदातृ-
त्वात् । तदभावे मातामहः तदभावे मातुलः तदभावे मातुलपुत्रः तद-
भावे मातुलपौत्रः तथा तदभावे मातामहदौहित्रोऽधिकारी—इति दाय-
क्रमसमूहः (पृ० ६) लिखनानि च ।

दौहित्रान्तप्रपितामहसन्तानाभावे^४ मृतदेयमातामहादिपियडभोक्तृ-
णां तद्दातृणां चासत्तिक्रमेण मातामहमातुलतत्पुत्रतत्पौत्रप्रमातामह-
तत्पुत्रपौत्राणां पूर्वपूर्वाभावे^५ परपरोऽधिकारी । एवं तेषां दौहित्राणामपि

१. प्रभृत्यभस्तना—न्य० ।

२. मापियड—न्य० ।

३. पुर्वापूर्वाभावे—न्य० ।

४. तदात्र ३—न्य० ।

५. दौहित्र—न्य० ।

मातामहवत् पितृतपितृपिण्डदानामधिकारः—इति विवादमज्ञार्थव
(२६३ फ)लिखनानि च इति ।

शकाब्दाः १७५६ ई० १८२४ साल १८ जुन ।

श्रीलक्ष्मीनारायणन्यायालङ्कारस्य सम्मता श्रीलक्ष्मीनारायणपण्डितस्य

लं० २११ इ० सन १८३४ साल—

रोवकारि मिछिल सदर देओयानि आदालत मो० कलिकाता
श्रीयुत मेष्टर हेनरि सिक्सपीएर साहेवेर बैठके । तारिख ३
मार्च ई० १८३५ साल मोताबके २१ फाल्गुन सन १२४१ साल
वाङ्मला दिवस मङ्गलवार—

रामनाथराय ओ गयरह

आपीलायटगन

मधुरानाथ ओरफे श्रीकान्तराय

रेग्माडण्ट

आपीलायटगणोर उकिल मेष्टर निलवेञ्चमेन एडमेनष्टीन
वेलि ओ रेग्माडण्डेर उकिल मेष्टर जीमिष कोलवरक सदरलेण्ड
साहेव हाजीर आइल । इतः पूर्व गतो सनेर २३ शेतम्बर तारिखे
आपीलायटगणोर सदर आपीलेर छओयाल ओ तत्समिभ्यारि
कागजात अनुबोधन अनुसारे उक्त तारिखेर रोवकारिर लिखित
प्रमाण एइ मोकईमा लम्बरे दाखिल हआयार हुकुम हय । एवं
अपीलायटगण जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था दाखिल
नाकरण प्रयुक्त एइ मोकईमार कागजात उलय हइयाछिल ।
तत्परे आपीलायटगणोर मध्ये रामनाथराय आपीलायटेर दरखास्त
उहार पूर्वरे मोकरर करा उकिलगणोर परिवर्त्ते हालेर उकिल
निलवेञ्चमेन एडमेनष्टीन वेलि साहेवेर नामे ओकालतनामा
दाखिल करण विषये दाखिल हओया विधाय गतो सनेर १८
ओ २३ दिजम्बर तारिखे उपस्थित हइया मिछिलेर समिभ्यार

राखनेर हुकुम हय । जेला पुरनियार जज साहेबेर रिटरण ओ
 १ दिजम्बर मजकुरेर लिखित तथाकार रोवकारि सम्बलित
 पौहुच्छान मते अद्य आपीलाष्टगणेर सदर आपीलेर छओयाल
 ओ कागजात सम्वलित आमार बैठके दरपेस हइया अनुबोधने
 आइल । एइ मोकरंमार विषये अन्य २ तदन्तेर पूर्व एइ विषय
 बोध करा आविश्यक ये जेलार आदालतेर पण्डितेर न्यवस्था
 जाहार दृष्टे जेलार जजसाहेब एइ मोकरंमार इनफछालेर हुकुम
 दियाछेन यथाथं ओ सत्य बटे कि ना—ए प्रयुक्त उक्त विषयेर
 बोध जन्य हुकुम हइल ये जेलार आदालतेर पण्डितेर न्यवस्था
 एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ये पण्डित
 मजकुर उक्त विषयेर जओयाव दुइ सप्ताह मध्ये दाखिल करेण ।
 ताहा पौहुछनेर पर उचित ये हुकुम ताहा छादेर हइवेक इति ॥—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्गर्माधिकरणाधिरतिभीयुतहेनरोलिकिसूरीपरसाहेबगर्माधिकरण-
 लिखितेश्चन्द्रमतिपायेपुण्यगजेन्दुमिताब्दीयमान्चमासीयतृतीयदिखसीयवि-
 चारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिस्पर्श तत्समर्पितन्यवस्थापत्रञ्च यत्तदब्दीयतन्मा-
 सोयाष्टेन्दुमितदिनसम्बन्धिबुधवाचरे मया प्राप्त तदवलोक्य भादराबोधो
 जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितन्यवस्था वङ्गदेशस्थलितशास्त्रानुसारेण जातास्तीति ।

ईशबीश्चन्द्रमतिपायेपुण्यगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासोपतृतीयदिनसम्ब-
 ण्धिबुधवाचरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रन्यवस्थापत्राभ्या सहितमिदमुत्तर
 दत्तमिति—

श्रीज्जयतितराम्
 श्रीविधनाथमिश्रेण

(६२)—महामहिम श्रीयुत खोदाबन्दान् न्यामत वरावरेणु—
व्यवस्थासकलेर तरजमा पारशी एवारते^१ ओ भापाय तैयार
हइया हजुरे दाखिल हइतेछे । ए प्रकार इस्तुर ए आदालते
आछे । किन्तु सम्प्रति केह पारशीनवीश मुनशी आमार काछे
नाइ, ये जाहार द्वाराय व्यवस्थासकल पारशी तरजमा कराइया
हजुरे दाखिल करि, ओ इहार पूर्व ए विषयेर बारम्बार हजुरे
निवेदन कारियाछि । किन्तु ए कर्म केह मुनशी नियुक्त हये
नाइ । अतएव निवेदन करितेछि ये कोन एक जन मुनशीके एमत
हुकुम हय व्यवस्थासकल तरजमा करेण, किम्वा यदि बाङ्गला
एवारते ओ भापाय व्यवस्थासकल तरजमा करिया दाखिल
करिते हुकुम हय, तवे प्रस्तुत मते बाङ्गला भापाय ओ एवारते^१
एक प्रकार तरजमा हइते पारे । ओ दुइ किता व्यवस्था तरजमा
बाङ्गला भापाय ओ एवारते आमार काछे प्रस्तुत आछे ।
किन्तु हजुरे हुकुम व्यतिरेके दाखिल करिते पारि ना । अतएव
आरज करिलाम, जैमत हुकुम हय, खोदाबन्दान मालिक, इहा
आरज करिलाम इति । तारिख २३ आपरेल सन् १८३५ साल
ईशवी ।

प्रतिपाल्यतम श्रीवैद्यनाथमिश्रस्य
निवेदनमेतदिति

(३)—सञ्जाल—

धनि विजि पुरुष काशीरामदासेर, कालीचरण ओ कीर्त्ति-
नारायण ओ रघुनाथ ओ कान्तनारायण, चारि पुत्र वर्त्तमाने मृत्यु
हय । तत् पर कालीचरणेर हरिनारायण ओ रामनारायण आ
राधागोविन्द तिन पुत्र ओ तिन सहोदर वर्त्तमाने मृत्युहय । तदन-
न्तर कान्तनारायण अविवाहित समय ओ कीर्त्तिनारायणेर विवा-

हेर पर निःसन्तति ऐ रघुनाथ भ्राता ओ कालीचरणेर पुत्र हरि-
नारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्द भ्रातृपुत्र वर्त्तमाने
मृत्यु हय। एवं कीर्तिनारायणेर खोरह मृत्यु हय। ओ पर ऐ रघुनाथ
हरिनारायण ओ रामनारायण ओ राधागोविन्द आपन भ्रातृपुत्र
सहित कीर्तिनारायण ओ कान्तनारायणेर पैतृक ओ सकुत धने
आपन निज अश सहित अविभक्त क्रमे भोग करिया श्रीमती भैर-
वीदास्या नामक एक अदत्ता कन्या राखिया मृत्यु हन। से मते
निवेदन कीर्तिनारायण ओ कान्तनारायण रघुनाथेर सहोदर ओ
रामनारायण इत्यादिर सुल्लता छिलेन, भ्राता ओ भ्रातृपुत्र
वर्त्तमाने निःसन्तान मरण हओते रघुनाथ मजकुरेर कि
पर्यन्त अंश पहुँचिया हरिनारायण ओ रामनारायण ओ
राधागोविन्देर सहित भैरवीदास्यार कि प्रकारे कि पर्यन्त अंश-
साहार यथाशास्त्र व्यवस्था चाहि इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्र प्रश्नपत्रञ्च यदेषबोधप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दु-
मिताब्दीयज्ञानवरीमासीयसगुणमितदिनसन्निधिभृगुवाचरे मया प्राप्तं
तद्वलोक्य यादृशबोधो भ्रातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति कान्तनारायणस्याकुतोद्भास्य पुत्रमारभ्य
पितृपर्यन्तरहितस्य मृतस्य माता यदि तन्मरणसमये विद्यमाना स्यात्, तदा
तत्पुत्रसमुदायधने तन्मानुरेवाधिकारः, तस्याश्च मृताया रघुनाथाख्यस्तत्-
सहोदरभ्राता विद्यमानश्चेत्तदा तत्पुत्रसमुदायधने रघुनाथाख्यस्य तद्भ्रातृ-
रेवाधिकारः। कीर्तिनारायणस्यापि निःसन्तानस्य मृतस्य पत्नी यदि विद्य-
मानाया कीर्तिनारायणस्य मातरि मृता स्यात्तदा कीर्तिनारायणस्य तत्पुत्रस्य-
अन्तिसमुदायधने तन्मानुरेवाधिकारः। तस्याश्च मृताया यदि रघुनाथाख्य-
स्तद्भ्राता विद्यमान आसीत्तदा तस्याधिकारः। एवञ्च शर्येतत्तत्ते रघुनाथ
तत्पुत्रसमुदायधनं यत्तस्य स्वाश्रयं यच्च ना तेनोपरिलिखितप्रकारेणोत्तरा-
धिकारित्वेन भ्रातृद्वयस्य तत्पुत्रस्य प्राप्तम्, तस्मिन् समुदायधने तस्य पुनमारभ्य

पत्नीपर्यन्तरहितस्य मृतस्यादत्तकन्याया भैरवीदास्या एवाधिकारः । हरि-
नारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानां ॥ त्रयाणां सोदरभ्रातॄणां स्वपितृ-
त्यक्तसमुदायधने समानाधिकारः । यदि चोपरिलिखितप्रकारेणोत्तराधिका-
रित्वेन प्राप्तपुत्रद्वयधना माता रघुनाथस्य मरणोत्तरमपि विद्यमाना आसीत्,
तदा तस्या मातुर्भर्तृरुत्तरं तत्संक्रान्तपुत्रद्वयधने मूचधनिनोः कान्तनारायण-
कीर्त्तिनारायणयोर्व्ये उत्तराधिकारिणस्तेषामेवाधिकारः । तत्र च तयोर्वत्तरा-
धिकारिणां मध्ये तयोः पुत्रमारभ्य भ्रातृपर्यन्ताभावेन तयोर्भ्रातृपुत्राणां-
मर्थाद्धरिनारायणरामनारायणगोविन्दनारायणानामेव समानाधिकारः । एव-
ञ्च सत्येतत्पक्षे रघुनाथकन्याया भैरवीदास्याः केवलं रघुनाथयोग्यांशे
रघुनाथत्यक्तधने अधिकारः । हरिनारायणरामनारायणगोविन्दनाय-
यणानान्तु स्वपितृयोग्यांशे कान्तनारायणकीर्त्तिनारायणयोः स्वपितृव्य-
योग्यांशे च समानाधिकारः । अत्र प्रश्नपत्रे कान्तनारायणकीर्त्तिनारा-
यणयोर्भ्राता तयोर्भर्तृसमये रघुनाथस्य मरणसमये वा विद्यमाना
आसीत् वेति लिखितं नास्ति । अतएव प्रकारद्वयेन व्यवस्था लिखितेति
निवेदनम्—इति बह्वेदं चलितमनुदायभागतश्चोदायतत्त्वदायकमसंग्रहवि-
वादाण्यवसेतुविवादमहार्णवादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्यादि दायभागदिग्रन्थभृतयास्तवल्न्यवचनम् ॥१॥

अपुत्रस्य मृतस्य कुमारी रिवथं गृहीयात्, तदभावे चोदा—इति दाय-
भागदिग्रन्थभृतपरास्तरवचनम् ॥२॥

अपुत्रा शयनं मर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायदा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दायभा-
गादिग्रन्थभृतकाल्याणनवचनम् ॥३॥

यद्वा पत्नीत्युपलक्षणम्, सीमात्राधिकारेऽयमर्थो बोद्धव्यः—इति
दायभागग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

इंशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगत्रेन्दुमितान्दीयापरेलमासीयवमुपलमितदिन-

सम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्रमुसमर्पितविचारपत्रप्ररनपनाम्ना सहितैय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थापत्रसङ्ख्या-२०१

हुजुरेर सोपरद करा रोबकारि ओ सञ्जाला जाहा इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर जानवरि मासेर ३० तारिखे दिवस शुक्रवारे आमि पाइया छिल्लाम ताहार विवेचना करिया ये मत घोष हइलो तदनुसारे अबाब लिखितेछि इति—

सञ्जालेर लिखित वृत्तान्तकमे अत्रिवाहित कान्तनारायणेर पुत्र अवधि पितृपर्वन्त रहित हइया मृत्यु हइले ताहार मरण समये यदि ताहार माता वर्त्तमाना छिल, तबे ताहार त्यक्त सकल वस्तुते ताहार मातार अधिकार हइयाछिलो । आर ऐ मातार मृत्यु हइले ताहार मरण समये रघुनाथनामे कान्तनारायणेर सहोदर भ्राता यदि विद्यमान छिल, तबे ऐ मातृसंक्रान्त कान्तनारायणेर त्यक्त धने ताहार भ्राता रघुनाथेर अधिकार हइया छिलो । एवं कीर्तिनारायण निःसन्तान मृत्यु हइले ताहार पत्नीर यदि उहार माता वर्त्तमाना थाकिते मृत्यु हइया थाके तबे कीर्तिनारायणेर त्यक्त ताहार पत्नीसंक्रान्त समुदाय धने कीर्तिनारायणेर मातार अधिकार हइयाछिलो । ओ कीर्तिनारायणेर मातार मरण समये यदि रघुनाथ नामे कीर्तिनारायणेर भ्राता वर्त्तमाने छिल, तबे ऐ वस्तुते ताहार अधिकार हइयाछिलो । ए प्रकार हइले रघुनाथेर त्यक्त समुदाय धन, याहा ताहार अश योग्य छिल, ओ ऐ व्यक्ति उपर लिखित प्रकारे दुइ भ्रातार त्यक्त धन उत्तराधिकारित्व प्रकारे पाइयाछिल,

ताहाते ताहार पुत्र-अवधि पत्नी पय्यन्त केह नाथाका प्रयुक्त ताहार अदत्ता कन्या भैरवीदासीर अधिकार हइवेक, ओ हरिनारायण ओ रामनारायण ओ गोविन्दनारायण एइ तिन जनेर केवल आपन पितृ योग्य अंशे समान अधिकार हइवेक । यदि स्यात् कान्तनारायण ओ कीर्त्तिनारायणेर माता ऐ दुइ पुत्रेर धन पाइया रघुनाथेर मृत्युर पर वर्त्तमाना छिल, एमत हय तवे ऐ माता मरिले ताहाते संक्रान्त ये ऐ दुइ पुत्रेर धन ताहाते कान्तनारायणेर ओ कीर्त्तिनारायणेर ये ओयारिश ताहार-दिगेर अधिकार हय । ताहाते ऐ दुइ जनेर ओयारिशेर मध्ये पुत्र अवधि भ्रातृ पय्यन्त ना थाकाते भ्रातृपुत्र ये हरिनारायण ओ रामनारायण ओ गोविन्दनारायण तिन जन ताहारदिगेर समान अधिकार हइवेक । ए प्रकार हइले ए पत्तेर रघुनाथेर कन्या ये भैरवीदासी ताहार केवल रघुनाथेर हिस्याते अधिकार हय, ओ हरिनारायण ओ रामनारायण ओ गोविन्दनारायणेर आपन पितार हिस्याते, ओ कान्तनारायण ओ कीर्त्तिनारायण ये दुइ पितृव्य ताहारदिगेर हिस्यातेओ समान अधिकार हइवेक इति । ओ सओयालेते कान्तनारायण ओ कीर्त्तिनारायणेर माता ऐ दुइ पुत्रेर मृत्यु समये ओ रघुनाथेर मृत्यु ममये वर्त्तमाना छिल कि ना-इहा किछु लेखा नाहि । ए जन्ये दुइ प्रकार लिखागेल इति ।

ए व्यवस्था बाङ्गलार चलित मनु ओ दायभाग ओ ताहार टीका ओ दायवत्त्व ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादाश्रयमेतु ओ विवादभङ्गाणव-प्रभृति ग्रन्थानुसारिणीति ॥—

इहार प्रथम प्रमाण दायभाग प्रभृति ग्रन्थेर धृत याज्ञवल्क्य मुनिवचन । ताहार भाषा—पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र-रहित मृत व्यक्तिर घन प्रथमे पत्नी पाय, पत्नी ना थाकिले कन्या पाय, कन्या ना थाकिले दौहित्र पाय, दौहित्र ना थाकिले पिता पान, पिता ना थाकिले माता पान, माता ना थाकिले भ्राता पान, भ्राता ना थाकिले भ्रातृपुत्र प्रभृति पाय इति ॥१॥

द्वितीय प्रमाण दायभाग प्रभृति ग्रन्थेर धृत पराशरमुनिर वचन । ताहार भाषा—पुत्र पौत्र प्रपौत्र पत्नी पर्यन्त-रहित मृत व्यक्तिर धन प्रथमे अविवाहिता कन्या पाय, अविवाहिता कन्या ना थाकिले विवाहिता कन्या पाय इति ॥२॥

तृतीय प्रमाण दायभाग प्रभृति ग्रन्थेर धृत कात्यायनमुनिर वचन । ताहार भाषा—पुत्र पौत्र प्रपौत्र ना थाकिले पत्नी यदि भर्त्तार शय्या प्रतिपालन करेन अर्थात् व्यवहारिणी ना हयेन तवे पतित्यक्त धन यावज्जीवन भोग करिवेन, अथवा व्यय करिवेन ना । पत्नी मरिले ऐ धन पतिर अन्य ये ओयारिप थाकिवेक ताहारा पाइवेक इति ॥३॥

चतुर्थ प्रमाण दायभागग्रन्थेर लिखित । ताहार भाषा—पत्नी पतिर त्यक्त धन यावज्जीवन अथवा व्यय ना करिया भोग करिवेन । ताहार पर पतिर अन्य ओयारिप पाइवेक । एइ नियम । याहा तृतीय प्रमाणे कात्यायनमुनिर यचने लिखा गेल ताहा केवल पत्नीर प्रति नहे, किन्तु स्त्रीमात्रेर प्रति । अर्थात् स्त्रीलोक येखाने अधिकारिणी हइवेक से सकल स्थाने ऐ नियम जाना जाइवेक इति ॥४॥

इहारेजी सन १८३५ सालेर आपरेल मासेर २८ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आमि इजुरेर सोपरद करा रोबकारि ओ सओयालेर सहित एइ व्यवस्था दाखिल करिलाम इति ॥—

(६४) सओल—

यद्यपि कोनो अवीरा स्त्रीलोक आपन पतियोग्य अंश स्थावर अस्थावर वस्तुते अप्राप्त ओ योत्राहिन थाकिया तदवस्तु-प्राप्तार्थे आपन स्वामीर बट्ट ज्ञाति थाकिवेशो जनेक ज्ञातिके एमत एकरार लिखिया दिया थाके ये ऐ जन नालिपेर द्वारा किम्बा अन्य कोनो रूपे ऐ अप्राप्त वस्तुते प्राप्त कराइते पारे, तवे ऐ वस्तु अर्द्धक अथवा ताहार किञ्चित ऐ प्राप्तकारक जन

आपन श्रम ओ खरचार्य पाइवेक, एमत अवीरा छीलोकेर एदप एकरार शास्त्र मत ग्राह्य कि ना, एवं अवीरा छीलोक आपन पति योग्य अंश वस्तु एरुप एकरारेर द्वारा अन्यके दिवार-ज्ञमता राखे कि ना । यदि राखे तवे सादार वर्त्तमान पर्यन्त कि ताहार अवर्त्तमानेओ इति ॥—

श्रीर्जयतितराम

प्रभुसमर्पितप्रनपत्रं विचारपत्रादिप्रयत्न यदोशबोशब्दप्रतिपाद्येपुण्य-गजेन्दुमिताब्दीयकेवरयरीमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते—

यदि काचिदवीरा स्त्री स्वपतियोग्यांशस्थावरास्थावरात्मकवस्तुनि धन-हीनतया आयत्तत्वसम्पादनायक्ता सती तद्वस्तुप्राप्त्यर्थं स्वपतिशक्त्यन्तर्गता-यैकस्मै कस्मैचिन् शतये एतन्नियमेन संवित्त्रं लिखित्वा दत्तवती स्यात्तथा हि भवान् धर्माधिकरणाभियोगद्वारेण प्रकारान्तरेण बोधरिलिखिताप्राप्तवस्तुनः प्राप्तिं कारयितुं शक्नोति चेत्तदोपरिलिखितविशदास्पदीभूतस्थावरास्थावर-स्याद्धं यत्किञ्चिद्वा स्वीयपरिश्रमस्य व्ययस्य वा विनिमये प्राप्स्यति इति । तत्र यदि सवित्प्रसन्नप्रदानभूतज्ञातिविशेषेण धर्माधिकरणाभियोगद्वारेण प्रकारान्तरेण वा तादृशाप्राप्तवस्तुनः प्राप्तिं तस्याः कारितवान् स्यात् तदैता-दृशा अवीरायाः स्त्रियास्तादृशनियमेन सवित्प्रसन्नं ग्राह्यं भवितुमर्हति, नो चेन्न भवति । एवमवीरा स्त्री स्वपतियोग्यांशवस्तुन एतादृशसंवित्त्रद्वारा अन्यस्मै दानक्षमतामप्युपरिलिखिततादृशनियमपूर्त्तां रक्षति, नो चेन्न रक्षति । रक्षणपक्षे तस्या अवीराया मरणानन्तरमपि तद्वस्तुस्य समान-कार्यकारित्वाद्—इति वद्वदेशचलितप्रनुदायभागतद्दोकादायतत्त्वदायकम-संग्रहविवादार्यवसेतुविवादमङ्गलार्णवादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

अत्र प्रमाणम्

अत एव वर्त्तनाशक्ती आधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्ती विक्रय-णमपि—इति दायभागप्रवलिख्यम् ॥१॥

स्वीकृतान्यप्रमाणानि कार्य्याण्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति विवादमङ्गलार्थवादिग्रन्थ-
भूतनारदवचनम् ॥२॥

सोपाधिदानमुपाप्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादमङ्गलार्थवग्रन्थलिल-
नञ्चेति ।

ईशदीयन्दप्रतिपाद्येपुगुणमजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयवमुपक्षदिनस-
म्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रतदतिरिक्तविचारपत्रादिप्रय-
सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

व्यवस्थार तरजमा चाङ्गला भाषाय—

हजुरेर सोपरद करा सओयाल ओ ताहार सेओयाय रोवकारि
प्रभृति तिन पैता कागच थाहा इङ्गेरेजी सन १८३५ सालेर
फेवरवरी मासेर ३ तारिखे दिवस मङ्गलवारै आमि पाइया-
छिलाम ताहा विवेचना करिया येमत बोध हइलो तदनुसारे
जवाब लिखितेछि इति—

यदि कोन अवीरा खीलोक आपन पतिर योग्याश स्थाव-
रास्थावर वस्तु ताहाते आपन अर्थ सामर्थ्य ना थाकाते दखल
करिते अचुम हइया ऐ वस्तु दखल पाइवार कारण आपन
स्वामीर छातिर मध्ये एक जनके ए प्रकार नियमे एकराद
लिखिया देय ये तुमि आदालते नालिपेर द्वाराय कि अन्य कोन
प्रकारे उपरेर लिखित वेदखलि वस्तुते आमार दखल कराइते
पारह तवे उपरेर लिखित स्थावर ओ अस्थावर—प्रभृति विरो-
धीय वस्तुर अर्द्धेक किम्वा किञ्चित् आपन परिश्रमेर ओ
अर्थव्ययेर परीवर्त्ते पाइवा इति । ताहाते ऐ व्यक्ति यदि आदालते
नालिशेर द्वाराय किम्वा अन्य कोनो प्रकारे ऐ वेदखलि वस्तुते ऐ
अवीरा खीलोकेर दखल सम्पादन करिया थाके तवे ऐ प्रकार अवीरा

स्त्रीलोकेर ए प्रकार एकरार ग्राह्य हइते पारे, ओ यदि ऐ प्रकारे कोनो तफात् हइया थाके तवे ग्राह्य हइते पारे ना । आर एइ रूप अवीरा स्त्रीलोक आपन स्वामीर योग्यांश वस्तुर ए प्रकार एकरारेर द्वाराय अन्य व्यक्तिके दिवार क्षमता उपरेर लिखित ऐ प्रकार नियम समापन हइले राखे, ओ ऐ नियम समापन ना हइले राखे ना, ओ ए पक्षे क्षमता राखनेर प्रति कोनो काल नियम नहे, अर्थात् ऐ अवीरा स्त्रीलोक ये पर्यन्त जीवदशाय थाकिवेक से पर्यन्त ऐ क्षमता राखनेर ये फल ताहा उहार नृत्यु हइले ओ समान इति । एइ व्यवस्था बङ्गदेशेर चलित मनु ओ दायभाग ओ ताहार टीका ओ दायतत्व ओ दायक्रमसंग्रह ओ विवादाणवसेतु ओ विवादभङ्गार्णव-प्रभृति ग्रन्थानुसारिणीति ॥

इहार प्रथम प्रमाण दायभागग्रन्थेर लिखित । ताहार भाषा— स्त्रीलोकेर खोरपोष प्रभृति अचल हइले आपन पतिर त्यक्त संक्रान्त वस्तुर बन्धक सिद्ध हइते पारे । ताहातेओ अचल हइले ऐ पतिर त्यक्त वस्तुर विक्रय सिद्ध हइते पारे इति ॥१॥

द्वितीय प्रमाण विवादभङ्गार्णव प्रभृति ग्रन्थ धृत नारदमुनिर वचन । ताहार भाषा—आप्तकाल व्यतिरेके स्त्रीलोकेर करा सकल कर्म असिद्ध, विशेषतः घर, दरोजा ओ भूमि, इहार दान ओ बन्धक ओ विक्रय आप्तकाल व्यतिरेके सिद्ध हइते पारे ना इति ॥२॥

तृतीय प्रमाण विवादभङ्गार्णव ग्रन्थ लिखित । ताहार भाषा— कोनो प्रयोजन सिद्ध हआधार निमित्ते कोनो नियमे ये किछु देय से प्रयोजन ऐ नियमे यदि सिद्ध ना हय तवे से देओया सिद्ध हइते पारे ना इति ॥३॥

इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर आपरेल मासेर २८ तारिखे दिवस मङ्गलवारे आभि हजुरे र सोपरह कर सवाल ओ ताहार सेओ-याय रोवकारि प्रभृति तिन केता कागज सहित एइ व्यवस्था दाखिल करिलाम इति ॥—

(६५) लं० २५८

सन १८३२ साल ईशवी

रोबकारि मिछिल आदालत देओयानि सदर मोकाम फलि-
काता आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुत तामस किमिल रावटसेन
साहेबेर बैठके तारिख २१ आपरेल सन १८३५ साल ईशवी
मोतावेक तारिख ६ माह वैशाख सन १२५२ साल बाङ्गला
रोज मङ्गलवार—

राजीवलोचनसतपति

आपिलाएट—

बेचारामराय

रप्पाडएट—

जिला मेदिनीपुरेर आदालत देमानीर एक केता रिटरण
ताहार तारिख २७ माह मार्च सन १८३५ साल ईशवी ओ
एक केता रोबकारि सहित ओ गयरह कागजात रप्पाडएटेर
असाक्षाते एखाने पहुचिया अथ मोकदमार कागजात समभि-
व्याहारे आपिलाएटेर उकिल मुनशी हसन आलि ओ खोद
रप्पाडएटेर साक्षाते रोबकार हइलो ओजिला मेदिनीपुरेर
आदालतेर कागजात ओ उधाकार फयसला पर्यन्त पाठ करा-
गेल । ओ उचित हइलो ये चूढान्त हुकुम सादर हओनेर पूर्ण ए
विषय दरियाफ करा ये जिला मेदिनीपुरेर आदालतेर पण्डितेर
दाखिल करा व्यवस्थासकल मोतावेक शाख मरओजे मुलुक
बाङ्गला किम्बा उडिस्यार दोरस्त बटे कि ना, आवश्यक बोध
हइया हुकुम हइलो ये दुइ केता व्यवस्था एइ हुकुमे ए आदालतेर
पण्डितेर निकट पाठान जाय ये व्यवस्थाजात मजकुर बङ्गदेश-
चलित शाखानुसारे किम्बा उडिस्या देशेर चलित शाखानुसारे
सिद्ध बटे कि ना । ओ सिरिस्तादार ए विषयेर कैफियत दाखिल
करेण ये मुद्दर दावी दिसमिस हइया दखल रप्पाडएटेर थाके
ओ डिगरिर टाका बेविलरफार फरिया पाइयाछे कि ना ।
यद्यपि पाइया थाके तवे सेह मकदमार लम्बर ओ फयसलार
तारिख निशान दिया कैफियत दाखिल करेण । आर रप्पाडएटके

बुद्धिया देया जाय ये तुमि आइन्दा मङ्गलबारे हाजिर ना थाकिवा तवे तोमार अपेक्षा मुलतवी ना राखिया भकदमा फयशला करा जाइवेक । अतएव तोमाके ज्ञात करा गेल इति ॥—

श्रीश्रीदुर्गा

न० ३६—

अस्योत्तरम्—

भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद् दानोद्देशेन वस्तुतेन वा प्राप्त-
व्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इति विद्वद्भिर्निर्णयि । पैतृकस्थावर-
भूमेरप्यप्राप्तव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इत्यपि मिताक्षरमतम् ॥

अथ प्रमाणम्—

स्थावरे तु स्वार्जिते पित्रादिप्राप्ते च पुत्रादिपारतन्त्र्यमेव ।

स्थावरं द्विपदञ्चेव यद्यपि स्वयमर्जितं ॥

असम्भूय सुतान् सर्वान् न दानं न च विक्रयः ॥—इत्यादि मिता-
क्षरालिखनम् ॥

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपरिडतैः

अस्य भाषा—

पुत्र-पौत्रादि-क्रमे भरणार्थं दत्त भूमि पाइया भोग मात्र करिते पारे । ग्रहीता किम्वा ताहार पुत्र अप्राप्तव्यवहार पुत्र सत्वे विक्रय करिते पारे ना । अर मिताक्षरा मते पैतृक भूमि पुत्रादि थाकिते विक्रय करिते पारे ना इति । सन १८३२ साल ५ आपरेल ॥—

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपरिडतैः

न० ३८

अस्योत्तरम्—

भरणार्थदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकत्वाद्वानोद्देशेन वस्तुतेन वा विक्रेतुं

न शक्नोते इति व्यवस्था तु मिताक्षरादायभागदायतत्त्वप्रभृतिष्वर्वाख-
सम्भता सर्वदेशसाधारणीति विद्वद्भिर्निरणायि ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

पैतृकतादृशनिव्यूढस्वत्ववद्भूमिमपि अप्राप्तव्यवहारपुत्रवान् विक्रेतुं न
शक्नोति—इति तु व्यवस्था मिताक्षरामात्रसम्भता इति विद्वद्भिर्निरणायि ।

दायभागवृज्जीमूतवाहनमते तु पितृपितामहादिसम्बन्धप्राप्ता भूमिमपि
अप्राप्तव्यवहारपुत्रवानपि विक्रेतुं शक्नोति, किन्तु विक्रेता मत्प्रवायी
भूषात—इति च विद्वद्भिर्निरणायि ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

तत्र प्रमाणानि—

दात्रमिसिद्धिनिमित्तत्वान् स्वत्वस्य २४।१।४ यथा याज्ञवल्क्य —

मणिमुक्ताप्रवालानां सत्त्वस्यैव पिता प्रभु ।

स्थावरस्य च सर्वस्य न पिता न पितामह ॥

पितामहश्चुतेस्तदनधिपय वचनम् । तत्रापि सत्त्वस्येत्युपादानात् सर्व-
स्य कुटुम्बवत्तनहेतोर्दानादानपथ ८।२।६ जीमूतवाहनदायभागप्रत्यकार ।

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

अस्य भाषा—

पुत्र पौत्रादि क्रमे भरणार्थं दत्त भूमि पाइया भागमात्र
करिते पारे । ग्रहीता किम्वा साहार पुत्र अप्राप्तव्यवहारपुत्र सत्त्वे
विक्रय करिते पारे ना । ए सत्त्वशास्त्रवित् पण्डितदेर निर्णय ।
इति जीमूतवाहनमतः ।

अप्राप्तव्यवहार पुत्र सत्त्वे पिता पैतृक फोन भूमि विक्रय
करिते पारे ना—ए कवक्ष मिताक्षरामत । दायभागमते पितृ-
पितामहादि सम्बन्ध प्रयुक्त अश रूपे प्राप्त भूमि अप्राप्तव्यवहार-
पुत्र सत्त्वेओ विक्रय करिते पारे, किन्तु विक्रयकर्तार पाप हय
इति । जीमूतवाहन दायभागप्रत्यकर्त्ता इति ।

ए देशे मध्ये उत्कलमन्तावलम्बि उत्कल ब्राह्मण आर ताहार-
दिगेर यजमान शिष्य उडिया सृष्टिकरण ओ त्रिपुत्रिय, वैश्य ओ
कान्यकुब्ज ब्राह्मण । इहारदिगेर मिताक्षरां मते व्यवस्था । राठीय
ब्राह्मण ओ दक्षिण राठीय कायस्थ प्रभृतिर दायभाग मते व्य-
वस्था । ए विवादे विक्रय कर्त्ता कोन जाति वाहा लइया विचार
करिते ह्य इति—

इति श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैरिख्यायि—

श्रीकमलाकान्तविद्यालङ्कारपण्डितैः

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिहरणाधिपतिभोसुनतामसकमिलरावटतेन साहेबवर्माधि-
करणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येयुगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयैकविंश-
तितमदिशोपयिधारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमेव तत्समर्पितरसगुणाद्वितव्यवस्था-
पत्रं वसुगुणाद्वितव्यवस्थापत्रञ्च यत्तदब्दोपतन्मासीयगुणपञ्चमितदिनसम्ब-
न्धिवृत्त्यतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशशोधो जातस्तदनुसारेणोचरं
लिख्यते—

प्रभुसमर्पितरसगुणाद्वितव्यवस्थायां वसुगुणाद्वितव्यवस्थायाञ्च प्रथमतो
लिखितमस्ति भरथार्यदत्तभूमेर्भरणमात्रफलकस्याहानोद्देशेन तत्सुतेन वा
अप्राप्तव्यवहारपुत्रवता विक्रेतुं न शक्यत इतीति । तत्र यदि दात्रा हानोद्देश्या-
येयं भूतया पुत्रवैभ्रादिक्रमेण भोक्तव्या, किन्त्वस्यां भूमौ मदीयं स्वत्वम-
स्त्येवेति नियमेन भरथार्यं तद्भूमिर्दत्ता स्यात्तदा तद्व्यवस्थालिखितं
तन्मतं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारेणोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा
शुद्धं भवतीति । एवं तत्तद्व्यवस्थायां पुनरपि लिखितमस्ति पैतृकभूमि-
मप्राप्तव्यवहारपुत्रवान् विक्रेतुं शक्नोतीति । तत्रापि यद्यप्राप्तव्यवहारपुत्रवता
पैतृकभूमिर्विन्नखिदिसम्पदकयास्त्रीयावरयक्रेतुं विना स्वेच्छयेव तद्भूमि-
विक्रीता स्यात्तदा तत्तद्व्यवस्थालिखितं तन्मतं वङ्गदेशचलितशास्त्रानुसारे-
णोत्कलदेशचलितशास्त्रानुसारेण वा शुद्धं भवतीति । एवं वसुगुणाद्वित-

વ્યવસ્થાયા પુનરપિ લિખિતમસ્તિ દાયમાગૃજીમૂતવાદનમતે તુ પિતૃપિતા-
મહાદિસમ્બન્ધપ્રાપ્તા ભૂમિમપ્રાપ્તવ્યવહારપુત્રવાનપિ વિનેતુ શક્નોતિ, દિન્તુ
વિવેતા પ્રત્યવાયો ભવતીતિ ચેતિ । તત્રાપિ ચલપ્રાપ્તવ્યવહારપુત્રવત્તા પિતૃ-
પિતામહાદિસમ્બન્ધપ્રાપ્તભૂમિવિન્યસિદિસમ્પાદકશાસ્ત્રીયાવશ્યદ્દેતુમિ- વૈશ્વ-
સ્થિતૃપિતામહાદિસમ્બન્ધપ્રાપ્તા ભૂમિવિનીતા સ્થાત્તદા તદ્વ્યવસ્થાલિખિતં
તન્મત ચક્ષુદેશચલિતશાસ્ત્રાનુસારેણોત્તલદેશચલિતશાસ્ત્રાનુસારેણ વા
શુદ્ધ ભવતીતિ ॥—

દૈશ્યવીશ્વવ્યવસ્થાપત્રપાણેપુગુણમન્ત્રે-દુમિતા-દીયાપરેલમા સીપાકુપદ્મિત-
દિનસમ્બન્ધિયુધવાસરે મયા પ્રમુસમર્પિતચિત્તારપત્રેણ વ્યવસ્થાપત્રામ્યાઞ્ચ
સહિતમિદમુત્તર દત્તમિતિ ॥—

શ્રીર્જયતિતરામ
શ્રીવૈદનાથમિત્રેણ

(૬૬)—જા. ૩૫૦ સદર—

સ્વકારિ મિલ્લિલ આદાલતે દેયોથાનિ સદર મોકામ કલિ-
કાના વૈઠક શ્રીયુત જાવર્જ્જ ઇષ્ટાકોપલ સાહેવ કાયેમ મોકામ
દાકિમ આદાલત મજકુરા સન ૧૨૩૫ સાલ તારિખ ૧૮ મે, મો. ૦
સન ૧૨૪૨ સાલ તારિખ ૫ જ્યેષ્ઠ ।

મલિલાલ ફલ્યાણસિંહ

આપીલબદાન

બ્રજલાલ ઓ શીતારામ ઓ ગયરહ

રેષ્પાડબદાન

આપીલસ્ટેનેર ડકિલ મુનશી ગોલામ આહમદ ઓ રેષ્પા-
ડબદાનેર ડકિલ જિમિશ કોઠલચોરક સદરલેબદ સાહેવ ઓ
મુનશી વાદારવસ્ક હાં હાજીર પ્રાશીલેન । ૧૬ મોકદ્દમા ૨૬
આપરેલ તારિલે આમાર નિકટ સ્વકાર હદયા ૪૬ નમ્બર ૧૪૪૦
કાગજાત પઢાગિયા દિવાલરાન પ્રયુક્ત ઓ યે માહાર ૨૮ તારિલે
રેષ્પા(ડ)બદાનેર ડકિલેર હાજીર ના હયોર જન્યે મુલતયિ બિલ.
પુનરાય અથ સ્વકાર હદયા વાકી કાગજાત પઢાગેલ । જે હેતુક

मिछिक्तेर कोगजात विवेचनार द्वाराय ओ मोकईमार गतिकेर दीष्टे एइ मोकईमार चूडन्त हुकुम हओनेर पूर्व एइ आदालतेर पण्डितेर निकट हइते एइ विशय जिझाशा करा आविश्यक ओ जरुर जे बेहार देशेर चलित शाखेर द्वाराय पिता ओ पितामहेर एमत सार्द्ध द्यमता आछे कि ना—ये आपन पुत्र ओ पौत्रेर विने अनुमतिते पैतृक स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे, ओ यद्यपि पुत्रेर परलोक हय, तबे पौत्रेर अनुमति आविश्यक राखे कि ना। ओ यद्यपि स्यात् तथाकार चलित शाखेर द्वाराय ए प्रकार वस्तु हस्तान्तरे निषेध थाके, तबे एमत स्थले ऐ विक्री अशीर्द्ध करखेर हाकीमके कर्त्तव्य ओ आविश्यक बटे कि ना, एवं पैतृक वस्तु समुदय किम्बा ताहार मध्ये किञ्चित हस्तान्तर करखेर विषये शाखेर मध्ये किछु विशेष पाओया जाय कि ना। आर एइ आदालतेर सेरेस्ता हइते एइ विशय ये इहार पूर्व एइ आदालते शुभे बेहारेर मोतालकेर कोन मोकईम्मात एमत कोन फयल्ला ये पैतृक विशय हस्तान्तर करखे सिद्ध अथवा असिद्ध हइबा थाके जाना आविश्यक। अतएव हुकुम हइल ये निचेर लिखित मत प्रश्न एइ कवकारि नकलेर सम्बलित एइ कवकारि पौछिबार तारिख हइते सप्ताह मेयाद मध्ये प्रत्युत्तर लिखिबार हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट पाठान जाय ओ एइ आदालतेर सेरेस्ता वारेर कर्त्तव्य ये तलबि कैफियत सेरेस्ता तल्लास ओ तहकीकात करिया गुजरान इति।

प्रथम प्रश्न :—

शुभे बेहारेर चलित शाख द्वाराय पिता ओ पितामहेर एमत सार्द्ध ओ द्य(म)ता आछे कि ना। ये—आपन पुत्र ओ पौत्रेर विने अनुमतिते पैतृक स्थावर वस्तु हस्तान्तर करे।

द्वितीयप्रश्न :—

पुत्रेर परलोक हइले पौत्रेर अनुमति आविश्यक राखे कि ना—

तृतीयप्रश्न —

यद्यपि तथाकार चलितशास्त्रर द्वाराय एतत् वस्तु हस्तान्तरैर
विशये निषेध थाक, तवे एतत् स्थले ए विष्की असिद्ध करिवार
हाकिमक कर्त्तव्य ओ आविश्यक चटे कि ना इति ।

चतुर्थप्रश्न —

पक्क वस्तु समुदाय अथवा साहार किञ्चित् हस्तान्तर करि
वार बिगये शास्त्रे किछु विशेष पाओया जाय कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्भूमाविकरणावपतिस्थानाभिपिक्तभोयुतवाग्बह्वाक'एलसादेव
वर्माविकरणलिखितेश्वरीशब्दप्रतिपात्रेपुगुणगने'दुमितान्दीयममासीयाष्ट
दशदिबसीयावचारपत्रान्तगतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तदन्दीयत'मासीयत्रयाविश
तितमदिनसम्बाधश नबासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्त
दनुसारेणोत्तर लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

बहारदेशचलितशास्त्रानुसारेण पुत्रस्य पौत्रस्य वा अनुमति बिना
पैतृकरयावरस्य हस्तान्तरकरणे पितु पितामहस्य वा स्वच्छया क्षमता
नास्तीति । द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैव पम्यवसितामति पृथङ् न
लिखितमिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रयालाना सर्वस्यैव पिता प्रभु ।

स्यावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामह ॥—इति मिताक्षरादि
प्र यशुतयाजवल्क्यवचनम् ॥१॥

तृतीयप्रश्नस्य उत्तरम्—

बहारदेशचलितशास्त्रानुसारेणैतादृशवस्तुनो हस्तान्तरविषये पितु
पितामहस्य वा स्वच्छया निषेधे सति शास्त्रनिषिद्धविक्रयाणिदकरण
धर्माधिकरणावपते वचन्यमवश्यम्भवतीति—

अत्र प्रमाणम्—

व्यवहारान् नृपः पश्येद्विद्वद्भिर्गोप्यैः सह ।

धर्मशास्त्रानुसारेण—इत्यादि विनाक्षरदिप्रत्यक्षतानुगतत्वं च नम् ॥१॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

पेटकवस्तुसमुदायस्य यद्विद्वद्भिरनुतो या हस्तान्तरकरणवियये शास्त्रे कश्चिद्विशेषोऽस्ति^१ । स च विशेषः प्रथमप्रश्नोत्तरप्रमाणे लिखितः—

इति वेदार्थदेयचलितमनुमिताक्षरबोरोमित्रोदयादिप्रमाणानुसारिणो व्यपस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणमेवेति ॥

इदं योऽर्थप्रतिपाद्येत्पुनश्च ज्ञेयमुक्ताब्दीयजुनमासीयनयमदिनसम्बन्धि-
मङ्गलवासरे मया प्रश्नपत्रसहितेन व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतिशराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६७) — सं २२२ सन १८३३ साल—

मोक्षम कलिकाता सदर देशोआनि आदालतेर धीयुत
ओलीयम घाडिन साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर पैठकेर १० सन
१८३५ सालेर २८ मे मोताबक यादल्ला सन १८४२ सालेर १५
ज्येष्ठ वृहस्पतिवारेर रोवकारि ॥—

भोलानाथदास

आपोलायट

श्रीमतीसवित्रा ओ गोपालकृष्ण ओ गायरह रेप्पाडरटान

आपोलायटेर उकिलमुनशी होछेन आलि ओ हाजिरा

रेप्पाडरट श्रीमतीसावित्रार उकिल राधाकृष्ण ओ गोपालकृष्ण-
सिंदेर उकिल सदासुखपरिदत हाजिर आइल । एइ मोकरमा

एइ मासेर १६ तारिखेर हुकुमानुसारे अद्य पुनराय दरपेस हइया ए आदालतेर पण्डितके हजुरे तलब करिया ये व्यवस्था कोटेर हाकिमेर तलबानुसारे पण्डित लिखियाछिलेन ताँहाके अर्पन करिया जिज्ञाश। करामेल ये एइ व्यवस्था दृष्ट करिया ताहार ये अर्थ यथार्थ हय बलेन। पण्डित दृष्ट ओ गओर करार पर कहिलेन ये प्रथम प्रनेर शेपेर प्रत्युत्तरेर विशयेर अर्थ एइ ये ये पुत्र आपन माताके मन्द कहे से पुत्र, ये पत्येन्त प्रायश्चित्त ना करे, उत्तराधिकारिहेतुते कोन एक सत्वे स्वत्वाधिकारि हइते पारे। ना जखन भोलानाथदास इलफ करिया कहियाछे ये ताहार बिमाता व्यभिचारिणीर कर्मे इच्छुक हइया मानेर लाघव करियाछे, ओ व्यभिचारिणीर कर्मेकरार हेतुते शास्त्रानुसारे जातीर व्यवहार हइते बाहिर हइयाछे, उपरेर लिखित विशय हाकिमेर तजविजे साबुर हय नाइ। एवं उक्त व्यवस्थार मध्ये ए विशयेर कोन बिस्तारित ये एमत मन्द कहने कि प्रकार प्रायश्चित्त करिते हइवेक लेखा नाइ। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ ये ए विशयेर जओव, ये बिमातार पछे उपरेर लिखित विशय सम्बन्ध करणे ओ साहा साव्यस्त ना हओने उहा बक्ता पुत्रेर पछे बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे कि प्रकार प्रायश्चित्त उचित, ओ ये प्रकार पापेर प्रायश्चित्तेर जन्य शास्त्रेर मध्ये किछु मेयाव निःधाव्य आछे कि ना। बबि थाके, तवे ताहार प्रकाश हओनेर दिवस हइते कत दिवस मध्ये प्रायश्चित्त करिवेक—एइ रोवकारि पाओर तारिख हइते तिन दिवस मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति ॥—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिभीयुतओलियमबेरादीनसाहेबवर्माधिकरण-
लिखितेशबीशन्दप्रतिपाद्येयुगुयगजेन्दुमिताब्दीयमेहमावीयाष्टविंशतितम-

दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयजुनमासीयाष्टमदिनसम्बन्धिसोमवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशचोधो जातस्तदनुसारेणांतरं लिख्यते—

व्यभिचारदोषरहिताया विमातृ राजसन्निधौ शानपूर्वकं न्यभिचारदोषख्यापनात्यन्ताभ्यासजनितपापप्रशमनाय द्वादशवार्षिकं महावतं कर्त्तव्यम् । तत्राशक्तौ साशीतिशतसंख्यकधेनुदानं तन्मूल्यस्य वा चत्वारिंशदधिकपञ्चशतकार्पाण्यस्य तत्तुल्यस्य सुवर्णस्य रजतस्य वा दानं कर्त्तव्यम्, दक्षिणा च गोशतं तन्मूल्यं वा कार्पाण्यशतं देयम् । एतत् प्रायश्चित्तं संवत्सरमध्य एव कर्त्तव्यम् । संवत्सरानन्तरमुपरिलिखितैस्तप्रायश्चित्तस्य द्विगुणं प्रायश्चित्तं कर्त्तव्यम्—इति मनुप्रायश्चित्तविवेकप्रायश्चित्ततत्त्वादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ॥

अत्र प्रमाणम्—

अनृतन्तु समुत्कर्षे राजगामि च पेशुनम् ।

गुरोश्चालीकनिर्वन्धः समानि वसहृत्यया ॥ इति मनु(११।५५)-

वचनम् ॥ १ ॥

अकामतो द्वादशवार्षिकं कर्त्तव्यम्, तदशक्तावशीत्युत्तरपयस्विधेनुशतं देयम्, तदशक्तौ चत्वारिंशत्पूराणोत्तरचूर्णीपञ्चशतमूल्यं हिरण्यदिकं देयम्, दक्षिणायां गोशतदानाशक्तौ चूर्णीशतमेकं देयम्—इति प्रायश्चित्तविवेक(पृ० ८८)ग्रन्थलिखनम् ॥ २ ॥

स्मृतिसागरे देवलः—कालातिरेके द्विगुणं प्रायश्चित्तं समाचरेदिति । कालातिरेके संवत्सरातिरेके संवत्सराभिशास्तस्य बुधस्य द्विगुणो दमः इति मनुवचनेन—इति प्रायश्चित्ततत्त्व(पृ० ४७४)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥ ॥०॥०॥०॥

इशवीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमितान्दीयजुनमासीयत्रयोविंशतितमदिनसम्बन्धिभङ्गलवासरेमया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतिस्वामि

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६८)—लं १४ सन १८३४ साल खास आपिल—

रुक्कारि मिल्लि सदर देशोनि आदालत मोकाम कलि-
कावा आदालत मजकुरेर कायेम मोकाम हाकिम एडमोयार्ड
जान हारिस्टन साहेवेर बैठके ३० सन १८३५ साल तारिख
२६ मे मोतावक बाद्गला सन १२४२ साल तारिख १६ ज्येष्ठ
दिबस शुक्रवस ? ॥—

रत्नाकरविपुइ ओ पुरिविपुइ आपिलाएटान

साधुचरणाविबिगञ्जन ओ गयरह रप्पाडएटान

आपिलाएटानेर उकिल मुनशी दांदारवक्स खाँ हाजिर
आइल । रप्पाडएटान तालपत्रे सडिया अचर ओ मन्नमुने पत्तैला
नामार रशीद लिस्त्रिया दियाओ हाजीर हय नाइ । अय एड
मोकदमा एकतरफा सुरत आमार बैठके उपस्थित हइया मोक-
दमार कागजात मोनाहेजाय बोध हइल ये वादि अर्थात्
आपीलाएटान नेहालपुर जमिदारिर मध्ये रकम (१५८) आना
आपनारविगेर पेटुक एजहारे दखल देलाइया पाइवार दाविते
जेला फटकेर देशोनि आदालते नालिस करे । प्रतिवादिगण आप-
नारविगेर जओवा वादिदिगेर एजहार ओ दावि हइते अस्वीकार
हइया गुजराइलेक । जेलार जजसाहेवेर तजबिजे मुदइयानेर
हबेक डिफरि हुकुम सादेर हय, एवं सेइ डिफरि आपिलेर
आदालते रद हय, ताहार पर खास आपील सुरत ए आदालते
उपस्थित हय । एइ मोकदमार कागजात द्वारा प्रकाश ये जमिदारि
मजकुरार मालिक मुदइयानेर प्रपितामह पद्यनाभ विविगञ्जनेर
मृत्युर पर तिन पुरुष पर्यन्त मत्तओफा मजकुरेर हासील
करा वस्तु प्रधान पुत्रेर नाने कलेक्टरि ओ गयरहते नामाङ्कित
हय, ओ आमलि सन ११६५ साले पूर्व पुरुष मजकुरेर आसल
ओयारिसानदिगेर मध्ये प्रथकात्र हइया स्थावर वस्तु हिस्सा
करिया नय । ए द्यने उभय विवादिर मध्ये एइ विवाद
प्रकाश ये आपिलाएटान प्रकाश करे ये आसल पूर्व पुरुष

मजकुरेर सकल ओयारिसान जमिदार ओ हकदारेर न्याय विधादेर वस्तुते दखिलकार स्थित । प्रधान पुत्रेर नाम जारि धाकिते येवाक जमिदारिर हकदार ओ गालिक से नहे इति । उभयेर प्रपितामह पद्मनाभ विविगछनेर सोपाजित ओ त्यक्त सकल जमिदारि करार दिया रेणाडण्ट जाहेर करे ये सुइइयान आपिलाएटान ऐ जमिदारिर हकियत ओ कर्तृत्व ओ दखिलकारिर पचे किछु एकाका राखे ना, वरं आपोलाएट-दिगेर पिता मालगुजारिर उमुल तहशिल कामज पत्र लिखित पडित करा पत्र ऐ जमिदारिर परखि ओ मददगारि धर्म्म नियुक्त धाकिया रेणाडण्टदिगेर स्थाने मोशाहेरा लइयाछे । अतएव प्रथम एइ विषय बोध करा आविश्यक हइल ये एन काल गतो होार परे ए द्यने ऐ जमिदारिर परस्पर उत्तराधिकारि-दिगेर मध्ये विभाग हइते पारे कि ना । ए कारण हुकुम हइल ये एइ रुबकारिर नकल कागजत सम्वलितएइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर हाओला करा जाय ये मोरुइमार कागजत दृष्टे फटकेर जलित शास्त्रानुसारे एइ विषयेर व्यवस्था ये एनो काल गतो परे विरोधि जमिदारि पूर्वोक्त पूर्व पुरांर उत्तराधिकारिदिगेर महित एछेने वण्टक हइते पारे कि ना—एक समाह मध्ये लिखेन इति ॥०॥

श्रीर्जयतितराम्

एन धर्म्माधिकार्याधिर तस्थानाभि विक्तधौनुएइओवाइंजान हासिएटोन-
हा ऐवधर्म्माभिइरखलिउनेउकोउन्दप्रतिनादेनुगुगजन्दुमितान्दीवर्ममाधी-
येननिउत्तमदिबधीवाइनारएवान्तर्गतप्रश्नप्रतिरुग्नेवं तलामां ईदितद्विवादनि-
पयनि विद्वारसीक लेभिजातय यत्तदन्दीवकुलमासीयननुयंदिनमन्निपदृश्य-
तिवाधरे मया प्राप्तं तदवलोक्य नादशकोचो वातन्वदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

गते चैतानि काले इदानीमपि विवादास्तद्भूतसमाचकारस्यावस्य

विभागस्तद्धनस्वाम्युत्तराधिकारिणां मध्ये भिन्नु योग्यो भवति—इति कटक-
देशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवसेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अविभक्ते निजे प्रेते तत्सुतमृत्त्यमागिनम् ।

कुर्वीत जीवनं येन लब्धं नैव पितामहात् ॥

लभेताशं स पिश्यन्तु पितृव्याद्वापि तत्सुतात् ।

स एतांशस्तु सर्वेषां भ्रातॄणां न्यायतो भवेत् ॥

लभते तत्सुतो वापि—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थवृत्तकाल्पाचन-
वचनम् ॥१॥०॥

ईशवीरबद्धप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयज्ञानमासीयाद्विपक्षमितदिन-
सम्बन्धिशनिवासरे मया प्रसुप्तमपितैतद्विवादनविष्टपत्रजातविचारपनाभ्यां
सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६६)

श्रीर्ज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रलकसिन्दरज्ञानकालविनसाहेवधर्मा-
धिकरणकवेदाम्यप्टेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयप्रथमदिनसम्बन्धिनचारपत्र-
संबलितेत्तन्मधुरादेव्यायिनीप्राणकुण्डकुण्डलालप्रत्ययिषिवादनविष्टपत्रजात-
यदेतदब्दीयैतन्मासीयपष्ठदिवसोयशनो घटिकैकोत्तरयामद्वये मया प्राप्तं तद-
वलोनय यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर दीयते—

एतद्विवादनविष्टपत्रजातमवलोनय कश्चिद्धर्मचन्द्रनामा पुरुषः सर्वदेव
स्वपत्नीपुत्रपत्न्योः स्वविभक्तासकान्तस्थावरास्यावरसकलघनस्य स्वदौहित्र-
विहारीलालसम्प्रदानकं दानपत्रं विलिख्य स्वपत्नीपुत्रपत्नीदौहित्रौस्त्वक्त्वा-
ममार । पुनस्तत्तत्तल्लो देवाणि स्वपतिदत्तघनस्य दानपत्रं तस्मा एव दौहित्राय

दत्त्वा पुत्रवधूँ दौहित्रं च विहाय स्वर्लोक्मगमदिति निश्चितम्भया । तत्रैत-
प्रकारके वृत्ते सा स्नुषा प्राप्तदानपत्रविहारोलालपुत्राभ्यां प्राणकृष्णकृष्ण-
लालाभ्यां स्वश्वशुरधनं लब्धुमीहमाना धिवदते । तत्रैवं विषये धर्मचन्द्र-
तत्पत्नीदत्तदानपत्रमनुसृत्य तद्वनादयिनीमदत्त्वा प्रत्ययिनोः पितुः किञ्चित्
प्राप्नोति न वा । अथ तद्दानपत्रमनुसृत्य नाप्नोति चेत्तदा धर्मचन्द्रस्य
मातामहस्य धने विहारोलालस्य दौहित्रत्वेन किञ्चित् स्वत्वमंशं वा
प्राप्नुमहति न वा । प्राप्नोति चेत्तस्मिन्नुः कथं तत्स्नुषायाश्च श्रीगोपाल-
पुत्रपत्न्याः कीदृग् (अशः) इति प्रश्नः । तत्र तेन धर्मचन्द्रेण तद्दान-
वसरे तस्माद्वनात् स्वरत्न्यै पुत्रपत्न्यै च पृथक्त्वेन किञ्चिद्दत्त्वा तद्दानपत्रं
दत्तमिति दानपत्रादिभ्यो प्रतीतेस्तद्दानमसिद्धं भवितुमर्हति, सर्वस्वदानादु-
त्तराधिकारितत्वे सर्वस्वदाननिषेधस्य सकलनिवन्धसिद्धत्वात् । तथा च
तद्वनं धर्मचन्द्रस्यासीत् । अथ धर्मचन्द्रमरणात् तद्वनं तत्पत्न्या
देवाया आसीत्, दौहित्रादिसत्त्वे विभक्तापुत्रमृतधने पत्न्यधिकारस्य सर्वधि-
सम्मतत्वेन प्रसिद्धत्वात् । अथ धर्मचन्द्रमरणाद्देवाप्राप्तं तद्वनं देवाया
'अपि दातुं न शक्यते पूर्वोक्तहेतोरत्रापि तुल्यत्वात्, विशिष्योत्तराधिकारि-
सत्त्वे स्त्रियाः स्थापतेयस्थापरादिदाननिषेधाच्च । तथा च यद्यपि मिताक्षरावि-
ग्रन्थेषु स्नुषाधिकारो न गणितो गणितश्च दौहित्राधिकारस्तथापि श्वश्र्वा
देवाया मरणात्तद्वनं मथुरादेवी तत्स्नुषा प्राप्नुमहति', पत्न्योत्तराधिकारि-
शून्यविभक्तमृतधने सत्त्वपि दौहित्रादिपुत्राधिकारिषु स्नुषाधिकारस्य सर्वदे-
शीयानादिसिद्धलोकव्यवहारसिद्धत्वात् । लोकव्यवहारस्यापि शास्त्रसम्मतत्वात्,
लोकव्यवहारपरोधे प्रबाप्रबोमादिदोषाणां कीर्तनाच्च । परन्तु तथा नयुपा-
देव्या विवादास्पदीभूतं गृहव्ययं भाटकादिरूपेण भोगेन भोक्तव्यमेव, परं
न तद्दानव्ययादिकं कुर्याद् आवश्यकं विना, उत्तराधिकारिसत्त्वे तन्निषेधात् ।
अथ यदि पूर्वोक्तदोषसद्भावेऽपि प्रमुखा अनादिसिद्धलोकव्यवहारो नाद्रि-
यते' तदा देवाया मरणात् तद्विहारिण एव आसीत्, तस्य दौहित्रत्वेन प्रच-

लोचराधिकारित्वात् । तन्मरणात्तत्पुत्रकां प्राणकृष्णकृष्णलालयोपसीत्,
पितृधने पुत्राधिकारस्य निर्विवादसिद्धत्वात् । परञ्चास्मिन् पक्षे विहारीलाल-
पुत्राभ्यां मधुरया भरणमवश्यमेव कर्तव्यम्, तस्या मूलधनिनः पुत्रवधू-
त्वात्, विहारीलालस्य च धर्मचन्द्रस्थानीयत्वादेतादृश्या भरणस्य लोका-
प्रसिद्धत्वात् । अथार्थिपित्रोर्विभागस्तु न सम्भवति मानुलेन तदा पुत्रयोर्वि-
भागस्य शास्त्रलोकोभयविरुद्धत्वाद् इत्येतद्देशप्रचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रो-
दयविवादचिन्तामणिप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेयमिति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

स्वकुटुम्बाविरोधेन देयं दारसुतादते ।

नान्वये सति सर्व्वस्व यच्चान्यस्मै प्रतिश्रुतम् ॥ इति मिताक्षरादि-
सकलनिबन्धधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

गृह्णात्यदत्तं यो मोहाद् यश्चादेयं प्रयच्छति ।

दण्डनीयाबुभावेतौ धर्मज्ञेन महीक्षिता ॥—इति विवादरत्नाकरे
नारदवचः ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि सकलनिबन्धधृत-
याज्ञवल्क्यवचनम् ॥३॥

भर्त्रा प्रीतेन यदत्तं त्रिये तस्मिन्मृतेऽपि तत् ।

सा यथारम्भमश्नीयाद्दद्याद्वा स्थावरादते ॥—इति मिताक्षराधृत-
वचनम् ॥४॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्माः आरूपवर्तिताः ।

तथैव ते पालनीयाः प्रज्वा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥

अनापरक्तिर्भवति यत्न कोशश्च नश्यति ॥—इत्यादीनि वीरमि-
त्रोदयादिपुत्रानि बृहस्पत्यादिवचांसि ॥५॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।

मुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दायादा उर्द्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति तत्रैव
कात्यायनवचनञ्चेति ॥६॥

यावत्सो विधवा नाय्यो ज्येष्ठेन स्वशुरेण वा ।

गोत्रजेनापि चान्येन भर्त्तव्याच्छादनाशनेः ॥—इत्यपि तत्रैव नारद-
वचनञ्च ॥७॥

एतदन्दीयदिसम्बरभासीयविशतिदिवसीयशनी दत्तेष्व व्यवस्था मयेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीहीरानन्दमिश्रेण

संशोधितमिदं व्यवस्थापत्रं पण्डितहरदयालमिश्रनागरीनवीतेनेति ॥

श्रीदुर्गा शरणम्

रोवकारि मिल्लि आदालते देभोयानि सदर गोकाम
पलाहावाद मानस्टुक हुनरि टरम्बर साहेब आदालत मजकुरेर
हाकिमेर बैठके तारिख २० जानेर सन १८३५ साल इ० मोताबके
तारिख ६ माघ सन १२४२ फल्लि रोज मङ्गलवार ॥

मथुरा दलोइ —

आपीलाएट—

प्राणकृष्ण ओ कृष्णलाल, बेहारीलालेर पुत्र—रेण्वाडएटान्—

आपीलएटेर उकिल लाला लछमनसिंह ओ रेण्वाडएटेर उकिल
मिरजारङ्गीनवेग हाजीर हइल । एइ मकई मा सन १८३४ सालेर
२१ दिजम्बर तारिखेर हुकुम अनुसारे प्रथक प्रथक तारिखे आमार
बैठके रोवकार आर ऐ सकल तारिखेर रोवकारिसकलेर
लिखित कागजात पढा जाइया मुलतवि छिल । अथ पुनराय
रोवकार हइया बोध हइल ये आपीलाएट सावेक मुइया आप-
नार स्वामीर पिता धरमचौंदर विषय तिन खान बाटीर देखल
पाओनेर दावीते मुद्दाआलेहेमार नामे नालिस करे । मुद्दाआले-
हेमार जयाबेर खोलसा एइ ये मुद्दाआलेहेमार पिता बेहारी-
लालके ऐ बेहारीलालेर मातार पिता धरमचौंद आपनि यत्तमाने

हइते प्रति पालन करिया आपनार काइम मोकाम करिया । पुण्य पुत्र करिया फरजन्दीनामा लिखाइयादेन, आर आपन नामेर खालीसा सरिफारनाम वादसाहेर हुजुर हइते मुहा-
 आलेहमार पिता बेहारिलानेर नामे लिखियादेय । ओ ताहार फौत परे मोछम्मात देओयानविधि धरमचादेर स्त्री आदालतेर साहेवेर दस्तखति दस्तावेज लिखिया उहार हाओयाले करे,
 आर आपन विशय साबुत करणेर निमित्ते सन १८१२ सालेर १२ सेतम्बर तारिखेर लिखित धरमचादेर मोहरि फरजन्दीनामा दस्तावेज ओ सन १८१५ सालेर २३ नवम्बर तारिखेर लिखित धरमचादेर स्त्रीर लिखिया देओया दस्तावेज वरपेस करिलेक,
 आर एइ आदालतेर पण्डित सन १८१४ सालेर १ दिजम्बर तारिखेर हुकुम अनुसारे एक केता व्यवस्था एइ खोलासाय जे मिरिलेर कागजात हइते प्रकाश हय ना—ये धरमचादे हेवानामा लिखन कालिन आपनार स्त्रीके किम्बा आपनार पुत्रवधूके किछु दिया थारे, तवे से हेवानामा ग्राह्य हइते पारे ना । आर हेवा अग्राह्य करण ऐ मालेर मालिक धरमचादे हय । ओ धरमचादेर फौत परे उहार स्त्री मालिक हय ।
 धार ऐ मालेर हेवा उहार स्त्रीर करणेर चमता नाइ । आर यद्यपि मितान्तरा पुथिते पुत्रवधूर हकियतेर शुमार लेखे नाइ, आर दीहिनेर हकियतेर शुमार लिखियाछे, तथापि मोछम्मात देओयानेर फौत परे ऐ मालेर अधिकार आपीलएतेर हइवेक । यदि ये केइ विशय बिना सरिकि राखिया फौत करे, आर ताहार पुत्र ओ पौत्र ओ स्त्री ना याके, आर पन्था ओ दीहित्र ओ गयरह ओयारिप धाके, तथापि ऐ माल पुत्रवधुर हकियते पोछन चीर काल हइते देशेर रक्षम आर रेओयाज सकल मुलुके न्याय्य आछे । आर ताहा शास्त्रेते ओ न्याय्य आछे, आर आपीलएतेर तान बिक्कि करणेर चमता नाइ । आर यदि रेओयाज अग्राह्य नय तवे देओयानेर फौत परे बेहारिलाल, जे दीहित्र ओयारिस

आछे, उहाके पौछिवेक दाखिल करिलेक इति । ए कारण
एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था लिखनेर धाराय प्रकाश
आछे ये मिताचरा पुथिते पुत्रेर खीर हकिएतेर शुमार किछु लेखा
नाइ, दीहिनेर हकिएतेर शुमार लेखा आछे; ताहाते ओ ऐ रछम
ओ रेओयाज चिरकालेर ओ शाखेर पछिन्दो लिखीयाछे,
आर मेघनाटनसाहेवेर तैयारि दायभागेर तरजमा केतावेते
प्रकाश ये यदि कोन व्यक्तिर पुत्र पौत्र ना थाके ताहार विषयेर
मालिक ताहार दीहित्र हइवेक, पुत्रवधु हइवेक ना, जाहार
स्यामी आपन पितार सुमुखे मरे—ए निमित्त चुडन्त हुकुम
आवेर करगोर पूर्व कलिकाता सदरेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था
तलब करा आर एइ विषय जानियार निमित्त ये एइ धारार
मकदमाते रछम रेओयाज अपेक्षा शाख बलवान कि चिरो-
कालेर देशेर रछम रेओयाज ये प्रकार एइ आदालतेर पण्डितेर
व्यवस्थाते लिखा आछे, ओ ताहा यदि शाखेर बहिर्भूत हय
सवे रेओयाज हओयार योग्य हइवे पारे कि ना । मोनाछव बांध
हइया हुकुम हइल ये मकदमा अद्य मुलतवि थाके, आर एइ
रोवकारिर नकल एइ आदालते पण्डितेर व्यवस्था नकलेर सहित
एइ आविश्यके ये एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था मोलाहेजार
परे तलब करा व्यवस्था दाखिल करेण—एइ आदालतेर रेजष्टर
साहेवेर चिठीर द्वाराय मोकाम कलिकातार सदरेर रेजष्टर
साहेवेर निकट पाठान जाय इति ॥—

श्रीर्जयतितराम

प्रभुसमर्पितविचारपत्रे व्यवस्थापत्रञ्च यदीश्वरीयन्दप्रतिपाद्येपुगुण्य-
गजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयाष्टाविंशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया
प्राप्ता तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

धर्मचन्द्रनामा कश्चित् पत्न्यां पुत्रपत्न्याञ्च विद्यमानायां स्वस्वत्वा-
त्स्वदीभूतस्यावगास्थावरसमुदायघने विहारोलालनाम्ने स्वदीदिनाय दत्त-

वान'—इति प्रसुप्तमर्षितव्यस्थापनेण शवम् । एवञ्च सति धर्मचन्द्रस्य धनं तत्पत्न्यास्तत्पुत्रपत्न्याश्च यावज्जीव स्वस्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्त चेत्तदा तादृशधने तद्धानं सिद्ध्यति । धर्मचन्द्रस्य धनं यदि तत्पत्न्यास्तत्पुत्रपत्न्याश्च यावज्जीव स्वस्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तातिरिक्तं न भवति तदा तद्धानं न सिद्ध्यति । एवञ्च सति तद्धानस्यासिद्धत्वात् पक्षे धर्मचन्द्रस्यैकधने तन्मरणानन्तरं तस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्राभावे तत्पत्न्या देवानाम् या एवाधिकार आसीत् । तस्याञ्च मृतानां तस्य धर्मचन्द्रस्य काचिदुद्दिता चेद्विद्यमाना तदा तस्या अधिकार आसीत् । तदभावे धर्मचन्द्रस्य दौहित्राणामेवाधिकारः । किन्त्वेवञ्चेदपि धर्मचन्द्रपुत्रवध्वा जीवति धर्मचन्द्रालये स्वपतिपितरि मृतपतिकाया यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्ते धर्मचन्द्रस्यैकधना-तर्गतधने अधिकारः । तत्र च धर्मचन्द्रपुत्रवध्वाः पतिपुत्रादिविहीनत्वेनानन्यपतिकाया धर्मचन्द्रस्यैकधनमात्रोपजीवि-या धर्मचन्द्रदौहित्रैः सह विरोधे सति पृथक्त्वेन यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनग्रहणस्य आवश्यकतैव । तदतिरिक्तधन एव धर्मचन्द्रदौहित्राणामधिकारः । एव च सति परिचमये शीयैर्धर्मशास्त्रार्थविशारदैरन्यैर्वा धर्मशास्त्रार्थानुष्ठातृभिः शिष्टैः प्राचीनैर्जीवति पितरि मृतस्य पुनस्य पत्न्या विद्यमानाया स्वदौहित्रेषु विद्यमानेष्वपि पुत्रवध्वा यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तमात्रमेव धनमस्तीति ज्ञात्वा यावज्जीव पुत्रवध्वा एवाधिकारो न्यायः । दौहित्राश्चेत्तदमाधिकारिणस्तदा तेषां पुत्रवध्वा सह विरोधोऽस्तीत्यतस्तस्या यावज्जीवं प्रासाच्छादनाद्यावश्यकविधवाधर्माद्याचरणमपि न निर्वहतीति विविच्य यावज्जीव पुत्रवध्वा एव तद्धने अधिकारोऽस्त्विति व्यवहृतस्तन्मूलश्चेत् पुत्रवध्वा यावज्जीव स्वपतिकुलोचितप्रासाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तवशुत्वैकधने तस्या अधिकारस्तदा धर्मशास्त्रीययुक्तिसिद्धरेतादृशव्यवहारस्य धर्मशास्त्राविरुद्धस्य

धर्मशास्त्रानुसारेण प्रचारयोग्यताया बलवत्त्वं भवितुं शक्नोति, अन्यथा प्रचारयोग्यताया बलवत्त्वं भवितुं न शक्नोतीति पश्चिमदेशचलितमनुमिता-
क्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्तवसनादेयं यदतिरिच्यते—इति वीरमित्रोदयादिग्रन्थधृत-
बृहस्पतिवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतो गोप्राज्ञो बन्धुः शिष्यः सवस्त्रचारिणः ॥

एषामभावे पूर्वस्य धनभागुत्तरांतरः ॥

स्वर्ग्यतस्य क्षत्रपुत्रस्य सर्ववर्णेष्वयं विधिः—इति मिताक्षरादिग्रन्थ-
धृतपाञ्चवक्त्रवचनम् ॥३॥

यावत्प्राग् विधयाः साध्यो ज्येष्ठेन स्वशुरेण वा ।

गोप्राज्ञेनापि चान्येन भर्तव्याञ्छादनारणेः ॥—इति वीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥४॥

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न कर्तव्यो विनिर्यायः ।

युक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥—इति तत्तद्ग्रन्थधृत-
बृहस्पतिवचनञ्चेति ॥५॥

इंशवीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिताब्दीयबुलाइमासीयद्वितीयदिन-
सम्बन्धिबृहस्पतिवाक्ये मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यवस्थापत्रं च यत्तदब्दी-
यकेपरवरीमासीयगुणवर्णितदिनसम्बन्धिशनिवाक्ये मया प्राप्तं ताभ्यां
सहिता प्रभुसमर्पितविचारपत्रान्तरमंगरेबोलिखनञ्च यत्तदब्दीयमेमासीयशरे-
न्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्रवाक्ये मया प्राप्तं ताभ्यां च सहितेयं व्यवस्था
दत्तेति ॥—

श्रीज्जयतिहराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७०) रोवकारि मिश्रिल सदर देओयानी आदालत मोकाम कलिकाता आदालत मजकुरे हकिम श्रीयुत हेनरि सिफिस-
पिएरसाहेबेर बैठके । तारिख १६ भाइ ३० १८३५ साल मोताबके
६ ज्यैष्ठ १२४२ साल चाङ्गला दिवस मङ्गलवार ॥—

रामकृष्णराय

छायेल

छायेलेर उकिल सदासुखपण्डित ओ द्वितीय पत्त फाली-

किशोररायेंर उकिल मुनशी होसन आलि हाजिर आइल । सन
हालेर २३ आपरेल तारिखेर हुकुमानुसारे जेला मयमनसिंदेर
देओयानी आदालतेर जजसाहेबेर रिटरण ओ इ० १८३५ सालेर
५ आपरेलेर लिखित तथाकार रोवकारि ओ साचीगणेर एज-
हार सम्वलिष्ट ई १८३४ सालेर २८ जानेओयारिर छायेर
हओया एइ आदालतेर हुकुमेर प्रत्युत्तरे छओयालादि कागज-
सकलेर सहित अद्य दरपेप हइया पढागेल । रिटरणेर सम्वलित
जजसाहेबेर प्रेरित साचीगणेर एजहारेर द्वाराय प्रकाश ये
नारायणीदेव्या ओ जगदीश्वरीदेव्यार स्थाने रामनृसिंहराय
डिगारिदारेर पाओना कर्ज टाका ताहार किछु जमीदारिर कम्म
निर्वाह अर्थात् सरकारि मालगुजारि आदायेते आ किञ्चित
गोलकमनिर सावेक देना परिशोधे खरच हइयाछे । ओ कोन
सन्देह प्रनाश हय ना ये कर्जार टाका मजकुर उक्त देव्यादिगेर
सेच्छा ओ बाङ्गला सिद्धिने निज तछरुपे खरच हइयाछे । ए
जन्य उचित ये एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशयेर
प्रत्युत्तर दुइ समाह मेयादे तलब हय, ये उपरेर लिखनानुसारे
उक्त देव्यादिगेर हिस्यार वस्तु, याहा ई १८३३ सालेर १२ जाने-
ओरिर जेलार जजसाहेबेर रोवकारिर लिखित रफानामा ओ
छोलेनाभार द्वाराय उक्त देव्यादिगेर जीवदशापर्यन्त स्थैर्यता
पाइयाछे, डिगारिदारेर हासील करा डिगारि परिशोध विक्रय
हइते पारे कि ना । एवं एइ आदालतेर पण्डितेर उचित ये
उपरेर लिखित छओयालेर प्रत्युत्तर लिखने गोरिप्रसादचौधुरि

चनाम जयमालाचीधुराणीर ८३५ जम्बरेर मोकईमार इ १८२७ सालेर ७ फिक्करोयारिर लिखित पइ आदालतेर व्यवस्था पुंव खजे आवेदेकडोएव एस्फानुद्ध द्वाएलेर मोकईमार दखन इ १८३३ सालेर १६ दिजम्बरेर लिखित आपन दाखिल करा व्यवस्था प्रति, जाहार प्रसङ्ग इ १८३४ सालेर १० फिक्करोयारिर आमार रोवकारिते लेखा आळे, अनुबोधन करेण । आर यदि स्यात् पूज्जेर ओ पइ चनकार व्यवस्था-सकलेते किहु अन-अक्य ह्य, उचित ये उक्त पण्डित ताहार विस्तारित हेतु लिखेन, पुंव पइ विरायेरो प्रत्युत्तर लिखेन—ये यद्यपि स्यात् देव्यादिगेर हिंस्या उद्धारदिगेर उभय ओ कालीकिशोररायेर छोलेंनामोर दण्डे, जाहार द्वाराय देव्यादिगेर हकीयत जीवदशा पर्यन्त स्थैर्यता पाइयाळे, निकय हइते ना पारे, ओ प्रकार देनादार-दिगेर अर्थात् उक्त देव्यागयेर देनार सामुदाईक टाका, जाहा जमीदारिर मुनाफार जन्य खरच हइयाळे, निज खरचे व्यय ह्य नाइ, उक्त कालीकिशोरेर स्थाने तलब हइते पारे कि ना, आर से तलब पइ चने हइते पारे कि, उक्त देव्यादिगेर मृत्युर पर इति ॥

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिधीयुतदेनरीठिकिसपीयरसादेवधर्माधिकरण-
लिखितेशबोशन्दप्रतिपात्रेपुगुणगजेन्दुमितान्दीयमैमासीबोनपिरातितमदिव-
शीपविचारपत्रान्तर्भूतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयबुनमासीचाष्टमदिनसम्ब-
न्धितचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ॥—

प्रभुहृतविचारपत्रलिखितानुसारेण नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योरंगी
यो तयोर्जीवनपर्यन्तमीशशोशन्दप्रतिपात्रमगुणगजेन्दुमितान्दीयजानवरी-

मासीयार्कमितदिवसीयजिलाख्यावान्तरधर्माधिकरण्याधिपतिवृत्तविचारपत्र-
 लिखितनिष्पत्तिपत्रसन्धिपत्रान्म्या स्थिरता प्राप्तौ, जयपत्रकारयितृणा व्यक्ति-
 विशेषाणा जयपत्रलिखितमृणपरिशोधनार्थं विक्रययोग्यं भवितुं न शक्नुतः,
 राजस्वीकृतछन्धिपत्रे तद्विक्रयस्य निषेधात् । शास्त्रानुसारेण कालीकिशोररा-
 याभिषेयस्य दत्तकपुत्रस्याप्राप्तव्यवहारताया तत्स्वत्वास्पदीभूतसमुदायधनस्य
 राजस्वसर्वतोभावेन रक्षकत्वेन राजकरदानार्थमप्राप्तव्यवहारपाकरणीयमृण
 शास्त्रानुसारेण केनचित् कर्तुंभावश्यक न भवति । एवमप्राप्तव्यवहारापाकर-
 णीयमृणपरिशोधनमपि तस्याप्राप्तव्यवहारताया केनचिच्छास्त्रानुसारेण
 कर्तुंभावश्यक न भवति, शास्त्रे अप्राप्तव्यवहारतायामृणपरिशोधनस्य विशेषे-
 षतो निषेधात्, कालीकिशोररायाभिषेयस्य प्राप्तव्यवहारतायाञ्च तदेवमृण-
 परिशोधनस्य राजकरदानस्य च तन्मात्रकर्तव्यत्वेन तदितरेषा तदप्रहीतृमा-
 नूतितामहीप्रभृतीना कर्तव्यत्वाभावात् । एव गौरीप्रसादचतुर्दशीयस्यार्थिनो
 जयमालाचतुर्दशीया^१ प्रत्यर्थिन्या पञ्चत्रिंशदधिकवस्तुशतपरिमिताकृतवि-
 वादनिविष्टे तद्वर्माधिकरणीयेशवीशब्दप्रतिपाद्याद्विप्लवगजेन्दुमिताब्दीय
 फेवरवरीमासीयसप्तमदिनलिखितव्यवस्थायाः खाजाअवयटकटीयरहृपानु-
 सस्यार्थिनो विवादसम्बन्धिन्या ईशवीशब्दप्रतिपाद्याग्रिगुणगजेन्दुमिताब्दीय-
 दिशम्बरमासीयाङ्के न्मुमितदिनलिखितास्मद्वत्तव्यवस्थाया भिन्नविषयकत्वेना-
 नैक्यशङ्कैव नावतरति । तथाहि गौरीप्रसादचतुर्दशीयस्यार्थिनो विवाद-
 सम्बन्धुपरिलिखितव्यवस्थायामित्येव लिखितमस्ति—मृत्युञ्जयशर्मण्यः
 प्राप्तजयपत्रलिखितमृणं यदि शिवप्रसादस्यावरयकभाद्राद्यौद्भवदैहिकक्रि-
 यार्थं स्वभरणपोषणार्थं वा तन्मात्रा जयमालया कृत स्यात्तत्परिशोधन
 यदि स्वसंश्रान्ततदीयशुबिक्रय विना न भवति, तदा जयमालोपस्थापितवृत्ता-
 न्तस्य सत्यत्वे असत्यत्वे वा तदर्थमुपरिलिखितमृणपरिशोधनोपयुक्तस्य
 तदीयाशान्तर्गतस्य विक्रयो भवितुर्महति, न तु स्वेच्छया स्वाभिप्रायेण वा,
 जयमालया कृतस्य मृणस्य परिशोधनार्थमिति । एतल्लिखनस्येदं बोधम्—
 शिवप्रसादचतुर्दशीयस्य त्यक्तधन तस्य पुत्रमारभ्य पितृपर्वन्ताभावे तद्-
 प्रहीतृमात्रा जयमालयेत्तराधिकारित्वेन प्राप्तम्, अतएव जयमालाजीवनप

स्यन्तमन्येन फेनचिदुत्तराधिकारित्वेन धनिनः शिवप्रसादस्यावश्यकथाद्वाद्यौ-
 र्ध्वदैहिकक्रियाजातं जयमालाया भरणपोषणञ्च शास्त्रानुसारेण कर्तुं न
 शक्यते, केवलं जयमालयैव कर्तुं शक्यत इति साक्षाच्च कटीयर इष्ट-
 फानुसंस्थार्थिनो त्रिवादसम्बन्धिभ्यां व्यवस्थावामित्येव लिखितमस्ति । यदि
 मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्य एतद्वर्माधिकरण्यार्थिनः पितुस्त्यक्तधने
 सन्धिपत्रानुसारेणैतद्वर्माधिकरण्यार्थिनो नारायणीदेव्याश्च जगदीश्वरीदे-
 व्याश्च स्वत्वं निश्चितं स्यात्, एवं तदेव सन्धिपत्रं जिलादवावान्तरधर्मा-
 धकरणे सारं जातं स्यात्, एव तेनैव सन्धिपत्रेण जगदीश्वरीदेवोमणोत्तरं
 सदायत्तीभूतान् एतद्वर्माधिकरण्यार्थिनो भविष्यतीत्यवगम्यमानं स्यात्, तदा
 जगदीश्वरीदेवीदेव्यश्चणपरिशोधनार्थं तज्जीवनपर्यन्तमुपस्वत्वभोगार्थं तत्-
 पुत्रस्वत्वादीभूतदायत्तीभूतानां विक्रययोग्यो भवितुं न शक्नोति, सन्धिप-
 त्रतात्पर्यार्थं धर्मशास्त्राभ्यां तथैव पर्यवसानादिति । एतद्विलनस्येदं बीजम्—
 मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्य त्यक्तसमुदायधने उत्तराधिकारित्वेन,
 कालीकिशोररायाभिधेयस्य तदीयदत्तकपुत्रस्य स्वत्वं शास्त्रानुसारेण जातम्,
 न तु जगदीश्वरीदेव्यास्तत्पत्न्या नारायणीदेव्यास्तन्मातृव्येति । अथ च
 मूलधनिनो रामकिशोररायाभिधेयस्यावश्यकथाद्वाद्यौर्ध्वदैहिकक्रियाजातं
 सत्त्वलोमातृप्रभृतीनां भरणपोषणञ्च तदीयश्चणपरिशोधनं तद्देवराजकर-
 दानं च तदीयदत्तकपुत्रेण कालीकिशोररायाभिधेयेनैव कर्तुमावश्यकं भवति,
 न ॥ तत्पत्न्या जगदीश्वरीदेव्या, तन्मात्रा नारायणीदेव्या वेति । यदि नारा-
 यणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योरशयोर्नारायणीदेवाजगदीश्वरीदेव्योः कालीकिशो-
 ररायाभिधेयस्य सन्धिपत्रानुसारेण नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योर्जीवनप-
 र्यन्तमुपस्वत्वभोगोपयुक्तमावस्वत्वयोरुपरिलिखितानुसारेण विक्रययोग्ययोर्भ-
 वितुमशक्ययोरधमर्णयोर्नारायणीदेवीजगदीश्वरीदेव्योर्द्वैयमृणमुद्राजातं का-
 लीकिशोररायाभिधेयमूलधनिदत्तकपुत्रस्वत्वात्पदीभूतसराजकरस्थावरस्य वृ-
 द्ध्यर्थमेव व्यधितम्, नतु स्वस्वीयव्ययार्थं व्यधितमित्यवगम्यमानं भवति,
 तथाप्युपरिलिखितोत्तरदृष्ट्या सन्धिपत्रलिखितनियमज्ञातविवेचनया च समु-
 दायश्चणयाचनं कालीकिशोररायाभिधेयस्यान्तिके इदानीं जगदीश्वरीदेवी-
 नारायणीदेव्योर्मरणावसानम्तरे वा कदाचिदपि भवितुं न शक्नोति, सन्धिपत्रता-

त्यर्थांशान्नाभ्या तथैव पर्यवसानाद्—इति बह्वदेशचलितमनुदायभागा-
दिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

अराजके हि लोकेऽस्मिन् सर्व्वतो विद्रुते मयात् ।

रक्षार्थमस्थ सर्व्वस्य राजानमसृजन् प्रभुः ॥ इति मनु(७।३)-

वचनम् ॥ १ ॥

वालदायादिकमृष्य तावद्राजानुपालयेत् ।

यावत् स स्यात् समावृष्टो यात्रचातीतशैरावः ॥ इति मनु(८।२७)

वचनम् ॥ २ ॥

नाप्राप्तव्यरहरैश्च पितर्युपरते ष्वचित् ।

काले तु विधिना देय वसेयुर्नरकेऽन्यथा ॥ इति विवादार्यावसेतु

(पृ० २८) विवादभङ्गार्थवादिग्रन्थधृतकात्यायन(का० सू० ५।५२।पृ० ६।९)-

वचनम् ॥ ३ ॥

सर्व्वे ह्यनीरसस्येते पुत्रा दायहराः स्मृताः—इति दायभागादिग्रन्थ-

धृतदेवलवचनम् ॥ ४ ॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।

तत्सुतः—इत्या द दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥ ५ ॥

न त्री पतिपुत्रहत न लीकृतं पतिपुत्री—इति विवादार्यावसेतुविवाद

भङ्गार्थवादिग्रन्थधृतविष्णुवचनञ्चेति ॥ ६ ॥

ईशवीर्यदप्रतिनात्रेपुगुणगबेन्दुमितादीयजुलाहमासीयेन्दुपद्ममिवदि-

नसम्पन्नमङ्गलवासरं मया प्रभुसमर्पिताविचारपत्रसहितेय ॥ ७ ॥

दत्तेत ॥—

श्रीज्जयतितराम्

श्रीवैचनाथमिथेण

(७१)—मोकाम कलिकातार सवर दमानि आदालतेर सन
(८३५ सालेर १६ जुन मोठायक धादला सन १२४० सालेर ३

आपाद मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुन ओली-
यमत्राडिनसाहेवेर बैठकेर रोवकारि—

ल० २८६ सन १८३३ साल

वीरेन्द्रनारायणचीधुरि ओ गायरह

आपीलायटान

श्रीमती सत्यभामादेव्या

रेष्पाडएट

आपीलायटदिगेर उकिल सदासुकपण्डित ओ रेष्पाडएट
उकिलेदिगेर मध्ये गुनशी आमिनहीन महम्मद हाजिर आइल।
अथ ए मोकदमा उपस्थित हइया जेलार ओ ए आदालतेर कागज-
सकल पाठ करागेल। कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व ए आदा-
लतेर पण्डिते स्थाने व्यवस्था तल्लव करा उचित बोध हइल।
ए कारण हुकुम हइल ये पइ रोवकारिर नकल पइ हुकुमे ये निचेर
लिखित विशयसकलेर उत्तर पञ्चम दिवसेर मध्ये दाखिल
करेण, ए आदालतेर पण्डितके अर्पन कराजाय।

प्रश्न-एक व्यक्ति हिन्दुर पाँच पुत्र छिल। ताहारदिगेर मध्ये
दुइ पुत्र आपन २ पितार समिते निःसन्तान लोकान्तर हय, ओ
ताहार पर ऐ हिन्दु व्यक्ति मृत्यु हय, ओ ताहार मृत्यु पर उहार
वर्तमान तिन पुत्रगन आपन २ पितार तेज्य वस्तु पर विभाग
द्वाराय दखलीकार हयेन, ओ तिन भ्रातार मध्ये दुइ भ्रातार
उत्तराधिकारिगण आपन २ पितार तेज्य विशयेर पर दखलीकार
आछेन, ओ एक भ्राता एक छाँ ओ एक कन्या राखिया लोकान्तर
हय, ओ मृत व्यक्ति छी स्वामीर तेज्य विशयेर पर दखलीकार
हइया आपन कन्यार विवाह देओनेर पर ऐ विशयसकल आपन
कन्या ओ जामाताके हेवा करे, ओ ऐकन्या ओ जामाता हेवार-
द्वाराय ऐ विशयेर पर दखलीकार हयेन, ओ ताहारदिगेर नाम
केलकटारि सेरेस्ताय दाखिल हय। ताहार पर उक्त कन्या आपन
मातार समिते एक पुत्र राखिया लोकान्तर हय, ओ उक्त पुत्र
उत्तराधिकारि द्वाराय आपन मातार तेज्य वस्तु पर दखिल ओ
उहार नाम ताहार पितार अर्थात् उक्त कन्यार स्वामिर नाम

सम्बलित कालेकट्टरि सेरेस्ताय जारि ह्य । तत्परे उक्त पुत्र आपन पिता ओ भातामहिर समिचे लोकान्तर ह्य । ओ ऐ पुत्रे मृत्युर पर उक्त पुत्रे पिता ऐ सकल विशयेर पर हेवार-द्वाराय ओ उत्तराधिकारिरूपे दखिल हइया ताहा आपन द्वितीय ओके हेवा करिया ऐ खोर नाम कालेकट्टरि सेरेस्ताय जारि करिया दियाछे । अतएव मृत व्यक्तिर स्त्री आपन कन्या ओ जामाताके ये हेवा करियाछे ताहा बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारं सिद्ध बटे कि ना, ओ मृत व्यक्तिर गोष्टीर पञ्चम पुरुशीय खुडततो भ्रातृपुत्रगणेर दाओ । ये ऐ मृत व्यक्तिर ओ ठाहा खीर उत्तराधिकारिद्वाराय आछे, हेवार विशयेर संक्रान्ते ए हेतुते ओ ये उक्त भ्रातृपुत्रगणेर पक्ष हइते हेवानामा लिखित पठित समये कोन एक आपस्य ना हइया थाके, तवे अशे कि ना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणधिपतिभूयुतस्रोतियमवेरादिनसादेवधर्माधिकरण लिखितेश्वीरन्दप्रतिपात्रेयुगुगजेनुमितान्दीयनुनमासीपरसेनुमितदिवसी-यविचारपद्मान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तदन्दीयनुलाइमासीयमुनिमितदिन सम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशशेषो छातस्तदनुसारेणो-त्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्य मृतस्य स्थावरादिधने भाताधिकारया पत्न्या यदि स्वानन्तरोत्तराधिकारिण्यै सम्भावितपुत्रायै स्व कन्यायै तत्पतये च स्वसकान्तपतिस्थावरादिधन दत्त स्यात् तदा तद्दान बङ्ग देशचलितशास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, पत्न्यनन्तरोत्तराधिकार्यनुमत्या पत्नी-कृतस्वसकान्तपतिस्थावरादिधनदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वेन, पत्नीकृतस्वानन्त-रोत्तराधिकार्युद्देश्यकदानसिद्धेः शास्त्रीयत्वस्यार्थसिद्धत्वाद्, जामातुर्देश्यक-दानस्यापि कन्यासम्प्रदानतायाः दान्या जामातु-पृथक्त्वत्वेच्छायामपि

ब्राह्मणजातीयवामाजुदेश्यकदानस्यादृष्ट्यर्थतायाश्च शास्त्रोपत्तात्, पत्न्याः स्वसंकान्तपतिस्थावरादिष्वनस्यादृष्ट्यर्थं दानक्षमताया अपि शास्त्रसिद्धत्वाच्च । एवं धनिनो मृतस्य पञ्चमपुरुषीयसगोत्रभ्रातृपुत्रैर्मृतस्य धनिनस्तत्पत्न्याश्चोत्तराधिकारित्वेनाभियोगो दानविषयीमृतस्य वस्तुन उतरिलिखितोत्तरदृष्ट्या तेभ्यो भ्रातृपुत्रेभ्यः सकाशाच्चदानपत्रलिखनसमये तद्दानविषयकप्रतिबन्धकताया असम्बादनदृष्ट्या च शास्त्रानुसारेण साकांक्षो भवितुं न शक्नोति, तद्दानसमये तेषां भ्रातृपुत्राणामप्रतिषेधरूपाया अनुमतेरपि तद्दानसिद्धिसम्बादकहेत्वन्तर्गतायाः उक्तात्-इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागदायतत्त्वाद्विग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

एतान्यपि प्रमाण्यानि भर्ता यद्यनुमन्यते ।

पुत्राः पत्युरभावे च राजा वा पतिपुत्रयोः ॥—इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थधृतनारदवचनम् ॥१॥

यदत्तं दुहितुः पत्ये स्त्रियमेव तदन्वियात् ।

मृते जीवति वा पत्यौ तदपत्यमृते स्त्रियाः ॥ इति दायभाग (पृ० ७५)-ग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

दात्रमिसन्धिनिमित्तत्वात्स्वत्वस्य—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥३॥

विष्णुं जामातरं मन्ये—इत्युद्गाहसत्त्वाद्विग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥४॥

मृते भर्तारि साध्वी स्त्री ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता ।

स्नाता प्रतिदिनं दद्यात् स्वगर्भे सतिलाञ्जलीन् ॥

कुर्याच्चानुदिनं भक्त्या देवतानाञ्च पूजनम् ।

विष्णोराराधनञ्चैव कुर्यान्नित्यमुपोषणम् ॥

दानानि विप्रमुल्येभ्यो दद्यात् पुण्यविप्रदये ।

उपवासांश्च विविधान् कुर्यान्ज्वायोदिताञ्जुषे ॥

लोकान्तरस्थं भर्तारमात्मानञ्च वरन्ने ।

तारयत्युभयं नारी नित्यं धर्मपरायणा ॥—इति दायभागादि(दाभा०
 पृ० १६४।१६५)ग्रन्थधृतव्यासवचनम् ॥५॥
 प्रार्थ्यमानोऽर्थिना यत्र यो ह्यर्थो नाभिधातितः ।
 दानकालेऽथवा तृप्यतीं स्थितः सोऽर्थोऽनुमोदितः ॥—इति प्राय-
 श्चित्तविवेकादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥६॥
 पत्नी दुहितरश्चैव पितरो भ्रातरस्तथा ।
 तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य-
 वचनञ्चेति ॥७॥

ईशवीर्यशब्दप्रतिपानेपुगुणगजेन्दुमितान्द्रीयागस्त्यमासीत्पञ्चमदिनतम-
 निधनुषवासरे मया प्रमुक्तमपितविचारपत्रसहितेय व्यवस्था दत्तति ॥

श्रीर्जयतितराम्
 श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७२)—ज० २१६

रुक्कारि मेखल आदालते देओयानी सदर मोकाम कलि-
 कात्ता पजलाछे श्रीयुत जावर्ज इष्टाकोएल साहेब हाकिम आदालत
 मजकुरा सन १८३५ साल ता० ६ जुलाई मोतावेक सन १२४२
 साल वारिस २० आपाद ।

गुरुप्रसादवसु

आपिलाष्टर

महेन्द्रनारायणवसु

रेप्पाडएद

आपिलाष्टर उकिल मुनशी राधाकृष्ण ओ रेप्पाडएदर
 उकिल वंशीवदनमित्र हाजिर आसिल ओ मिछितेर कागजात
 मोलाहेजा हइल । ये हेतुक पइ मोकदमार चुडन्त हुकुम छादेर
 हओनर पूर्ण पइ आदालतेर पण्डितेर निकट पइ विशय ये
 कायस्थ जाति गङ्गानारायणनामक एक व्याक्तर तिन पुत्र छिल,
 ताहार मध्ये एक पुत्रेर विवाहकालिन किछित भूमि, ये पुत्रेर
 विवाद हइलो, ताहार शसुरेर स्थाने प्राप्त हइल, एवं तद्भूमिर

दानपत्र यत् द्वारा दान कृत इहलो, गङ्गानारायणेर नामे लिखित इहल, ए स्थले गङ्गानारायणेर परलोकानन्तर ऐ भूमि पूर्वोक्त-व्यक्तिर तिन पुत्र समान अंश करिया लइवेक, किन्वा ऐ विवाहकर्ता व्यक्ति, जाहार विवाहोपलक्षे ऐ भूमि प्राप्त इहल, सेइ व्यक्ति पाइवेक, जिज्ञाशा करा आधिशयक-ए प्रयुक्त हुकुम इहल ये एइ रुयकारिर नकल उपरेर लिखित प्रश्नसम्बलित एइ आदा-लतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये पूर्वोक्त प्रश्नेर प्रत्युत्तर याङ्गलादेशीय चलित शास्त्रानुमारे एइ हुकुम पौडछनेर तारिख अवधि पञ्चम दिवसेर मध्ये दाखिल करेण इति ॥—

श्रीज्जयतिनराम्

एतद्दर्माधिकारखाधिपतिभोगुतजाज्जइहाकोएलसादेवधर्माधिकारण लिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमितान्दीयजुलाइमासीपरस मेउदिवसी यविचारपन्नान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तइन्दीयतन्मासीपरसरेन्दुमितदिनसम्बन्धिहुवषासरे मया प्राप्त तदघलात्त यादराशोचो जातस्तदनुसारेयोचरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सात गङ्गानारायणस्य मरणानन्तरं विवादा-स्तदीभूतघने गङ्गानारायणस्य प्रयागामेव पुत्राणां समानाधिकारः—इति, यज्ञदेशचलितमनुशासनादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम् -

प्रदानं त्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पितर्युपरते पुत्रा विभजेयुर्द्वनं पितुः—इति दायमागादिग्रन्थभृतदेवस-
वचनञ्चेति ॥२॥॥॥॥॥॥॥

इहवीशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमितान्दीयागस्त्यमासीपरसमितदिनसम्ब-
न्धिवृहस्पतिनासरे मया प्रशुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दर्शयति ॥—

श्रीज्जयतिनराम्

श्रीविद्यनाथमिश्रेण

(७३)—मोनछर्फ डिगिरि जारिर लम्बर १२४३३

रोयकारि आदालते देओयानि जेला वर्द्धमान एजलास मे०
जेमछ करटिछ साहेव काइम मोकाम जज सन १८३५ मछिया
वारिख ४ आपरेल—

गोकुलचन्द्रमिश्र डिगिरिदार मतफाँ— बादि—

कार्तिकमोण्डल देयेनदार— प्रतियादि—

दयाकुमारि ओ सुन्दरकुमारि— ओजोरदार—

खन्दकार नाछेरदिन माहम्मद ओ कृष्णधनमुखोपाध्याय
दयाकुमारि बकिल एजंत होशेन, सुन्दरकुमारि उकिलेर मध्ये
एक उकिल मिछिले हाजिर हइलो । परे मिछिलेर कागज मोला-
हेजा हइया बोध हइलो जे एइ मकरमा ४/१) १ टाका आदाय
कारण डिगिरिदार मोतफाँ नरूप हइते किस्तिबन्दि जारिर दर-
खास्त गुजराण ओ प्रतिबादिर जायदाद कोक हइले परे दया-
कुमारि मजकुर सन १२४१ सालेर १६ ज्यैष्ठ्य वारिखे आपन
मुकाबिलाय एऊ केता दरखास्त एइ मजमुने एइ आदासते
दाखिल करिलेक—ये उहार पुत्र गोकुलचन्द्रमिश्र फौत करियाछे,
ओ उहार समस्त विशय ओ ठाकुरसेवा प्रभृति उहाके दान
करियाछे, ओ मोतफाँ मजकुरेर विशय दखलिकार, ओ ओया-
रिप आपनि आछे, आर एइ मकरमा तजबिलेर निष्पत्तेर प्रार्थना
करिलेक, आर सन १८३४ सालेर १४ जुन वारिखेर आपनार
दरखास्तेर उपरेर लिखित हुकुम अनुसारे दानपत्रेर निचेर
लिखित तिन जोन साक्षी हाजिर आनिया तिन जोन साक्षीर
एजाहार, ओ सन १२४१ सालेर २० वैशाख वारिखेर लिखित
दानपत्र दाखिल हइले परे सुन्दरकुमारि एऊ केता दरखास्त उहार
स्वामि गोकुलचन्द्रमिश्रेर फौत हओया ओ आपनि ऐ मोतफाँ
मजकुरेर मालामालेर दखलिकार ओ ओयारिप ओ उहार
स्वामी उहाके पुष्यपुत्र करणेर अनुमति देओया, एवं सकल
विसय उहाके मालिक कराने ओ चाबि छोडान प्रभृति आपन

जीवदपाय मातर्त्वर लोकेर सादयाते अर्पन करा, ओ दया-
कुमारिर एजाहारि दानपत्र नितान्त मिध्या-एइ सकल
वित्तान्ते सन १८३४ सालेर ३० जुलाई तारिखे दाखिल
करिलेक । एइ मकदमा पूर्व सन हालेर १० फेवरवरि तारिखे
रोवकार हइया ऐ तारिखेर लिखित रोवकारि अनुसारे दोपरा
बिषयेर कैफियात पुरुपोत्तमदासमोहोन्तेर स्थाने तल्लव हइया
सुन्दरकुमारिर उकिलेर पर जे सकल लोकेर साक्षीते सुन्दरकुमा-
रिर स्वामी गोकुलचन्द्रमिश्र आपन समस्त विशयेर भालिक
सुन्दरकुमारिके करा ओ उहाके पुण्यपुत्र करयेर अनुमति
दैओया साबुद हइवेक-ऐ सकल लोकेर नामे इशमनविसि
दाखिल करिते हुकुम हय । तदनुसारे सुन्दरकुमारिर उकिल सात
जोन साक्षिर नामे इसमनविषि दाखिल करिले । साक्षिर पर
सफिना जारि हइले परे परान आच(१)प्य ओ रामचाँदराय ओ
कार्तिकघोष ओ लक्ष्मी वैओया एइ चारि जन हाजिर हइले
उहारदिगेर एजहार याज्ञना अक्षर ओ एवारते आलाहिदा
२ फर्दे नओया जाय इति । अद्य दयाकुमारि मजकुर एक केता
दरखास्त एइ मजमुने जे मदन मजकुरेर वयेय' दश वारो
वत्सर, ओ मदन मजकुर सुन्दरकुमारिर सहोदर भ्राता निमि-
त्तक शास्त्रानुसारे जज्ञ उपवित हइले परे पुण्यपुत्र लओनेर
विधान हए ना, ओ उहार पितार फौत परे उहार पितार गोत्रेके
विधान हइते पारे ना; ओ सुन्दरकुमारिर एक केता दरखास्त
एइ वित्तान्त ये मृत समय कोनो दान सिद्धि हये ना । आर
स्वामिर अनुमति क्रमे आपन सहोदर मदनठाकुरके पुण्यपुत्र
करियाछे-एइ सकल अन्य २ वित्तान्त दाखिल करिलेक इति ।
एइ मकदमाय एइ प्रकार व्यवस्था तल्लक आविस्वक जे यदि
केहो आपन वर्त्तमान थाकिते मृत्यु समय ज्ञान पूर्वक परकालेर
पुन्येर निमिर्त्त आपन गुरुर साक्षीते आपन माताके दान करोनेर

एकरार लिखित पद्धिरे द्वाराय ह्यौक किम्या ताहार वाक्याव-
द्वाराय हक, दान करिया फौत करे । ए प्रकार दान साखेरे
विधान कि ना, ओ गुरुर एजहार कोन त्रिशवेते शिष्येरे पचे
काफि ह्य कि ना, आर कोन एक पुत्र दश कि द्वादश वत्सर
वयक्रम ह्योयाते ओ ताहार यज्ञोपवित हइलेओ पितार फौत
परे आपन पितार गोत्रेते ए पुत्रे भग्नपुत्र मजकुरके आपन
मातार अनुमतिते पुष्यपुत्र लइते पारे कि ना । ए कारण हुकुम
हइल ये एइ रोयकारिर नकल डिमरि जारिर नयिर सम्यलित
इहरेजी चोठीर द्वाराय सदर देओयानि आदालतेर हाकिमेर
हुजुरे एइ प्रार्थनाय पाठान जाय-ये उररेर लिखित वृत्तान्तेर
सओयालेर जबाब शास्त्रानुसारे ऐ आदालतेर पण्डितेर स्थाने
लइया एइ आदाअते प्रेरण करिते आज्ञा ह्य इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुत्तमर्षितविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नपत्रमेतद्विश्वदक्षिण्यनिविष्टपत्रज्ञात
मङ्गरेजीलिलनञ्च यदीशचोश०३प्रतिपात्रेपुगुणगजेन्दुमिताश्लोयमैमासीय-
शरे-दुमितदिनसम्बन्धिशुनवाचरे मया प्रप्त तदवचोक्य यादशबोचो जात-
स्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशदान दातुं पत्न्या यात्रजीव दातृकुलो-
चितप्रासादद्वादनोभयुकावश्यकविधवाधम्माद्यावरणापमुत्तातिरिक्ते दानुस्व
त्वाशडीभूतधने शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति । एव गुह्यस्य शिष्यं प्रति
विषयविशेषे प्रश्नप्रमाणं भवत्येव । एवमेकमात्रपुत्रस्य कस्यचित् तमक
पुत्रे दशवर्षवत्स्कं द्वादशवर्षवत्स्कं वा जनकगोत्रेण जनकमरणानन्तर
भुपवीत तद्मग्नौ स्वमातुस्सुमतिप्राप्तेण दत्तरूपरूपेण ग्रहीतुं न
शक्नोति—इति बद्धदेशचक्षितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी ०५वस्येति—
अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यजारणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

कुटुम्बभक्तमसनाहेयं यदतिरिच्यते—इति विवादभट्टार्थवादिग्रन्थ
इतद्वत्सतिवचनम् ॥२॥

अदत्तन्तु भयबोधकप्रमशोकरुगन्धितः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृत-
नारदवचनम् ॥३॥

अत्र भयादिरुगन्धितान्ताः पञ्च प्रकृतिस्थितिविरोधिनो द्रष्टव्याः—
इति तत्तद्ग्रन्थलिखनम् ॥४॥

संस्थेनात्तेन वा दत्तं आवितं धर्मकारणात् ।

अदत्त्वा तु मृते दाप्यस्तत्सुतो नात्र संशयः ॥—इति तत्तद्ग्रन्थ-
धृतकाल्याणवचनम् ॥५॥

न स्त्री पुत्रं दद्यात् प्रतिगृहीयाद्वा अन्यथानुज्ञानादुत्पत्तिः—इति दत्तरु-
मीमांसादिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥६॥

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः ।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युः—इत्याद्युपरिलिखितग्रन्थधृतकालिकापुराणव-
चनञ्चेति ॥७॥

ईशवीशान्दप्रतिगच्छेपुगुणगजेन्दुमितान्दीयागस्त्यमासीपगुणेन्दुमितदि-
नतश्चन्धिबृहस्पतिवासरे मया प्रगुप्तमपितविचारपत्रैतद्विवादविषयनिषिष्ट-
मत्रजाताङ्गरेबोलिखनैः संहितैर्बन्धवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जपतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(७ .)—प्रश्नः—

संन्यासीदासनाम्नः कस्यचिद्वनिनो द्वितीयस्त्रीजात एकः पुत्रो वर्त्तते,
एका द्वितीया स्त्री वर्त्तते, एका पुत्रवधूर्वर्त्तते । इदानीं मृतसंन्यासीदासस्य
स्थावरादिधने एतेषां मध्यं कस्याधिकारः—इति धर्मशास्त्रानुसारेण
न्यवस्था लेखनीया ॥

अस्योत्तरम्—

तत्तद्वचनानुसारेण—

संन्यासीदासस्य द्वितीया स्त्री एवं द्वितीयास्त्रीजातनोपालकपुत्रः एवं
प्रथमास्त्रीजातप्रथमपुत्रवधूपुं सन्तु मृतसंन्यासीदासस्य स्थावरादिधने द्वितीय-

स्त्रीजातनावालकपुत्रस्यैवाधिकार एव, न ॥ प्रथमास्त्रीजातपुत्रवन्वोरिति-
तिदुपा परामर्श ॥०॥

अत्र प्रमाणम्—

पितर्युद्ध्वङ्गते पुत्रा विभजेयुर्द्धन पितुः ।

अस्वाम्य हि भवेदेषा निर्दोषे पितरि स्थिते ॥—इति दायभागधृत-

नारदवचनम् ॥ अपरम्—

ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ।

भजेरन् पेटुकं स्क्वभमनीशास्ते हि जीवतोः ॥—इति दायभागधृत

मनुवचनम् ॥०॥

श्री दुर्गा

सन्यासीदासेर दुइ स्त्री । प्रथमा स्त्रीते एक पुत्र हय, परे
द्वितीया स्त्रीते एक पुत्र हय, ऐ पुत्र नावालक । प्रथमा स्त्रीते ये
पुत्र हय साहार बिबाह हइयाछे^१ । इतो मध्ये ऐ सन्यासी-
दास नगर फलिकाता सिमुलिया मध्ये ४ काटा भूमि आपन
नामे क्रम^२ करिया आपनि वत्तेमान थाकिते प्रथमा स्त्रीर ओ
प्रथम पुत्रेर काल हय । परे ऐ सन्यासीदासेर द्वितीय स्त्री एव
ऐ नावालक पुत्रः एष मृतपुत्रेर वधू- एइ तिन व्यक्तिके राखिया
सन्यासीदास परलोक प्राप्त हय । एइ छने वक्त भूमीर घाटो
आछे । ताहाते ऐ तिन व्यक्ति वर्त्तमान आछेन । ऐ सन्यासी-
दासेर विषय काहार प्राप्त हइवेक- यथाशास्त्र व्यवस्था दिते
आज्ञा हय इति ।

उत्तर :—

सन्यासीदासेर द्वितीया स्त्रीजात नावालक पुत्रः, एव द्वितीया
स्त्री, प्रथमा स्त्रीजात मृतपुत्रवधू- इहाश्शेरेर मध्ये सन्यासीदासेर
स्थावरदि धनेते द्वितीयस्त्रीजात नावालक पुत्रेर हइयेक इति,
इहार प्रमाण —

श्री श्रीदुर्गाशरणम्

(७५)—रोयकारी मिछिल सदर देओयानि आदालत मोराम कलिकाता आदालत मजकुरेर हारिम श्रीयुत हेनरि सिफिस पिपर साहेबेर बैठके । तारिख १३ जुलाई इन्हरेनी सन १८३५ साल मोताबके थाङ्गला सन १२४० साल तारिख ३० आषाढ दिवस सोमवार ॥—

कुराईचन्द्रकविराज

आपीलायट

मोछर्मात जयमनी ओ कृष्णमनि ओ कृष्णमनीर मृत्युर पर मोछर्मात जयमनी ओ जयमनीर मृत्युर पर नृसिंहराय—रेण्डा-डण्ट ।

आपीलायटेर उकिल मुनशी हयदर आलि ओ रेण्डाडण्टेर उकिल मुनशी गोलाम बतुल हाजीर आइल । जेला यिरभूमेर देओयाणा आदालतेर जजसाहेबेर रिटरण्ड ३० सन १८३५ सालेर २१ मार्चेर लिखित तथाकार रोयकारी सम्बलित ओयारिप साबुदेर लओयाजिमा कागजात सम्बलित मोरुद्मार कागजातेर सामिल अथ दरपेस हइया, ऐ सनेर २ जुनेर रोयकारि समिभ्यार पढागेत । हुकुम इइल जे एइ मोरुद्मार रेण्डाडण्टीते नृसिंहरायेर नाम लेखा जाय । परे अन्य २ कागजात अनुबोधने बोध हइलो जे १ सन १८३१सालेर १०सेतम्बर तारिखे एइ मोरुद्मार कागजात व्यवस्था तलवेते एइ आदालतेर पण्डितेर निबट पाठान गियाछिल, आर ताहार उत्तरे सहकिक हय जे मोछर्मात जयमनी ओ कृष्णमनी ओ भैरव कविराजेर जोयानि हेवा उचित बट, किन्तु प्राविणसीयान कोटर डिगरिर पर, जाहार द्वाराय जेकार फयदला उक्त मोछर्मातदगेर हक्के बहाल धाऊं, उक्त मोछर्मात कृष्णमणीर मृत्यु हय, आर मोछर्मात जयमणी जोवाणी हेवार बुनियाद उहार हिस्साते दाविदार हय, एव एइ आदालतेर पण्डित जिझाशा मते ए प्रकार हेवा सत्य लिखेन । इ सन १८३३ सालेर १३ माइ ताहार सत्य ताबत

हकिकेर हुकुम जेलार जजसाहेवेर नामे छादेर हय । ताहार उत्तरे जजसाहेव ऐ सनेर २६ दिशम्वरेर लिखित रोवकारी तहकिकेर लथ्योयाजिमा सम्बलिष्ट एइ आदालते पाठान । किन्तु मोछर्मात जयमणीर मृत्यु हओया जन्य जे इति मध्ये हइयाछे, उक्त मोछर्मातेर ओयारिप हाजीरेर जन्य इस्तहार जारि हओया प्रयुक्त मोकईमार तजविज स्थकिद छिल, अथ तहकिकेर कागजात ओ गयरह ओ साचीगणेर एजहार अनुबोधनेसे जयमणीके मोछर्मात कृष्णमणीर जोवानि हेवा सत्वताय पीछिल । किन्तु एइ मोकईमार डिगिरि हाशील करा ओ एकात्र प्रयुक्त नितान्त अनुमान हय जे ए प्रकार हेवा यदि स्यात् हइयाथाके, तवे उक्त तहकिकेर द्वाराय सामुदाईक विवादीय वस्तु मोछर्मात जयमणीर हक्कें पीछे । किन्तु उक्त मोछर्मातेर मृत्यु जन्य उक्त मोछर्मातेर ओयारिशेर जन्य एइ मोकईमार पिवाद पुनराय हइल । एइ प्रकारे जे उभय विवादिर पूर्व पुरुष मोनहरकविराजेर दीहित्रेर पुत्र गुरते विवादीय वस्तुते आपीलाएत हक राखे, कि नृसिंहदेव, जे आपनाके मोछर्मात जयमनीर स्वामीर द्वितीय पत्तेर छीर पुत्र अर्थात् उक्त मोछर्मातेर स्वपत्निपुत्र करार देच, ओयारिप हइवेक । ए प्रयुक्त ए विशयेर प्रकाश जन्य हुकुम हइल जे एइ आदालतेर पण्डितेर निकट कागज पाठान जाय एइ हुकुमे जे उपरेर लिखित विशयसकलेते अनुधापन करिया उहार उत्तर दुइ समाह मध्ये लिखेन, आर से पर्यन्त हुकुम हओया स्थकिद थाके इति ॥—

श्रीज्जयतिराम

एतदभ्याधिकरणाधिपतिश्रीयुतहेनरीसिक्किपीयरसाहेवधर्माधिकरण-
लिखितेशचीशब्दमतिपात्रेभुगुणगजेन्दुमितान्दोयबुजाइमासीयगुणेन्दुमितदि-
नसीयविचारपत्रान्तर्गतपत्रप्रतिरूपपत्रमेतद्विवादनिमित्तपत्रजातत्र यत्तदन्दो-
यतन्मासीयाद्रिपक्षमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदपलोक्य
यादृशयोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति जयमनीमरखोत्तरं विवा-
दास्त्रदीभूततत्त्वकसौदायिकस्त्रीधने तस्याः प्रपितामहदौहित्रपुत्रसपत्नीपु-
त्रयोस्त्वमवाचे सपत्नीपुत्रस्याधिकारः—इति वद्वदेशुचनितमनुदायभ.गादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

दौहित्रपर्यन्तानन्तरमेव सपत्नीपुत्रः—इत्यादि दायक्रमसंग्रहग्रन्थ-
लिखितम् ॥१॥

ईशब्रीशब्दप्रतिपाद्येपुरुषगजेन्दुमिसाग्दीयसितम्बरमासीयनवमदिन-
सङ्ग्रन्धिपुत्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रैतद्विवादनविष्टपत्रजातैः
सङ्गतेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जनयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

३५६ ल० सदर—

(७६) रोवकारि मिर्झिल सदर देओयानि आदालत मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरे हाकिम श्रीयुत हेनरि सिकिस-
पीयेरसाहेबे वेठरं । तारिख २२ जुलाइ इस्लामेजी सन १८३५
साल मोतायके ७ आवण बाहला सन १२४६ साल दिवस
घुधवार ।

शिटवरतसिंह

आपीलाएट

मोहम्मद कुडा ओ गयरह

रेण्याडएटान्

आपीलाएटेर उकिलगणेर मध्ये मुनशी गोत्राम आहम्मद ओ
मोहम्मद कुडा ओ मोहाएलसिंह दुइ जन रेण्याडएटानेर उकिल
सदासुख पण्डित हाजीर आइल, आर रच्यालाल रेण्याडएट
मोटेर इयालामनामा एवं पइ आदालतेर एतलानामा जारि
हओयातेओ हाजीर नाहि । पइ आदालतेर कायम मोकाम
हाकीम एडओयार्ड जान हारण्टी साहेबे ३ सन १८३५ साले

१७ मार्चर लिखित हुकुमानुसारे एइ मोकईमार कागजात
 आमार चैठके दरपेप हइया उक्त तारिखेर हाकिम मौज्जेवर
 लिखित रोवकारिर राय ओ प्रथम आदालत सदर आमिनेर
 तजविजेर वाचतेर कागजात इस्तक नालिशी आरजि ओ तथा-
 कार फयल्ला पर्यन्त ओ द्वितीय आदालतेर वाचत जज
 आपीलेर कागजात इस्तक मौजेवात ओ तथाकार फयल्ला ओ
 क्रोट आजिमावादे दाखिल हओया मौजेवातेर न्याय खास
 आपीलेर दरखास्त ओ क्रोट मजकुरेर हाकिम जिमिस हारवटीं
 साहेव ओ खास कमोसनर वाचतो आलियाट साहेवेर इ०
 १८२६ सालेर २२ अपरेल ओ इ० १८३३ सालेर १५ अपरेल
 तारिखेर लिखित खास आपील मज्जुरिर विशयेर राय आर
 ताहार नामज्जुरिर विषये उक्त क्रोटेर हाकिम छेजलि तामप
 कटवरट साहेवेर इ० सन १८३२ सालेर ६ जुलाई तारिखेर
 लिखित राय ओ एइ आदालतेर दाखिल हओया मौजेवातेर
 जआयाव सामुदाइक पढान गेल । यदि स्यात्—प्रकाश ये एइ
 मोकईमा जेलार आदालते तथाकार पण्डितेर व्यवस्था मते
 फयल्लेज हय, आर मेष्टर वारडो आलियाट साहेव खास
 आपीलेर मज्जुरिर रोवकारिते उक्त व्यवस्थार सत्त्वतार प्रति
 सन्देह आनेन । ए अन्य चुडन्त हुकुम छादेर हआनेर पूर्व एइ
 आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशयेर बोधकरण ये जेलार
 पण्डितेर व्यवस्था शास्त्रानुसार उचित बदे कि ना । कर्त्तव्यत्व
 दृष्ट हुकुम हइल ये एइ रोवकारिर नकल पण्डितेर नामेर
 दुइ केत। सआयाल ओ पण्डितेर पत्त हइते वाहार उत्तरेर नकल
 सम्बलित एइ आदालतेर पण्डितेर इनकट पाठाइया हुकुम
 देओया जाय जे उक्त पण्डित उपरेर लिखित विशयेर उत्तर
 दुइ सप्ताह मध्ये लिखेन, एवं एइ विशय ये यदि स्यात् विवादीय
 वस्तु साधारण थाकाय किम्वा साधारण ना थाकाय व्यवस्थार
 कोन तफात हइवेक कि ना ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिभ्योयुतदेनरीसिदिसपीयरसाहेवधर्माधिकरणलि-
खितेशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिता-दीयजुलाइमाखीयदाविशतितमदि-
वसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपर उक्तमपिखिलाख्यावान्तरधर्माधि-
करणनियुक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नद्वय तत्परिहृतदत्तोत्तरद्वयम् यत्तद-दीयाग
स्तिमासीपण्डितिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबो-
धो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

विवादास्पदीभूतधनमसाधारण्य चेत्तदा खिलाख्यावान्तरधर्माधिकरण
नियुक्तपण्डितलिखितव्यवस्था परिचमदेशचलितशारनानुसारिणी भवति ।
विवादास्पदीभूतधन साधारण्य चेत्तदोपरिलिखित-व्यवस्था परिचमदेशचलित
शास्त्रानुसारिणी न भवति ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिता-दीयसितम्बरमाखीयनवमदिनसम्ब-
न्धिवृषवासरे मया प्रभुसम्पत्तिविचारपत्रखिलाख्यावान्तरधर्माधिकरणनि-
युक्तपण्डितसम्बन्धिप्रश्नद्वयतत्परिहृतदत्तोत्तरद्वयेन सहितेय व्यवस्था दत्तेति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

यदि'कश्चिदनरत्याः पत्नीं विहाय मृतस्तर्हि तदने तत्पत्न्य
धिकारिणी, अपुत्रधन पत्न्यभिगामि—इति विष्णुवचनात्, अपुत्रा शयन
भक्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता, पत्न्येव दद्यात्तत्पितृ कृत्स्नमश लभेत
च इति बृहन्मनुवचनाच्च ॥ मित्राक्षरादायभागादिमहाप्र-धानुसारेणैव
•यदस्येति—

वदति'त्रिपाठिश्रीबोधकृष्णशर्मा ।

(७७) सदर देमानि आदालतेर पण्डित प्रति प्ररतः—

छुयरे जातिर पात्रर नख काटीले ओ विवाहेर समय ताहार-

॥ स्वस्येव लिखिता ।

• वदतिरूपेण लिखितोपकृष्णशर्मा ।

दिगेर माथाते सूत्र धरिले नापीतदिगेर जातिर पर किछु
आघात हए कि ना । उचित ये तुमि यथाशास्त्र प्रश्नेर निचे ताहार
उत्तर लिखह । इति सन १८२५ तारिख २७ माइ मोतावेक
सन १२४२ तारिख १४ ज्यैष्ठ ।

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीशवीरशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दु-
मिताब्दीयजुलादमासीयतृतीयदिनसम्बन्धिगुणवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

अस्मद्वृत्तास्त्रे विशेषत एतद्विषयकविधिनिर्णयविद्वानो नोपलब्धौ,
अतएव ह्युपर इति प्रसिद्धजातीयपादनखवपने विवाहसमये तज्जातीय-
शिरसि छत्रधारणे च नापितजातीयानां जातिव्याघातस्तद्देशे व्यवहृतश्चे-
त्तदा तत्तत्कर्मकरणे नापितजातीयानां जातिव्याघातः शास्त्रतो भवत्येव ।
तद्देशे एषं व्यवहारो न चेत्तदेवं शास्त्रतो न भवति—इति बङ्गदेशचलित-
मन्यादिधर्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थोत ॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्मावित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं प्रतिपालयेत् ॥ इति मनुवचनम् ॥ १॥

इशवीरशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमिताब्दीयचितम्बरमासीयवेदेन्दुमितदि-
नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रप्रश्नपत्राभ्यां सङ्क्षिप्तं
व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८८)

ल० : २२५ सदर

ल : ६४२३, कोट ढाका

मो० कलिकातार सदर देओनि आदालतेर इं : सन १८२५

સાહેબ ૫ આગષ્ટ મોતાવેઠ વાઙ્ગલા મન ૧૨/૨ સાહેબ ૨૧ આવળ
વુધવાર દિવસેર પે આદાલતેર હાકિમ શ્રી મુન થોલાયમ પ્રાદીન
સાહેબેર પેઠાર રોયઠારિ--

ઈશાનચન્દ્રદાસ ઓ ગાયરહ

પ્રાણકુળદાસ

આપીલાણટાન

રેવડાણટ

આપાલાણટદિનેર ઉકિનગણેર મધ્યે એક વ્યક્તિ તારકચન્દ્ર-
રાય ઓ મદામુલપણિટ ઓ મુનશી રાધાદુગ્ગ, રેવડાણટ
ઉકિલગણ હાતીર આદેજેન ઓ શ્રીરામરાય આપીલાણટદિનેર
દ્વિતીય ઉકિલ ઓ મુનશી હોઝેનઆતી રેવડાણટ નૃતીય ઉકિલ
હજુરે હાતીર નાહ. એ મોકદમા એ આદાલતેર સાયેઠ કાપન
મોકામ હાકિમ દેવજીને હાકિમ જાજી રેવડાણટઆપલ સાહેબેર સન
હાલેર ૧૮ આપરલ તારિસેર હુકુમાનુસારે અથ આમાર પેઠઠ
ઉપસ્થિત હય્યા. જેલાર આદાલતેર કચરાલા ઓ અન્ન ૨ દોપરા
કાગજાત હાકમ મૌસુફેર એ તારિસેર રોયઠારિર વિસ્તારિત
લિખિત ગાયેર સમ્બલિત પાઠ કરાગેલ. ફોન હુકુમ દેઓનર
પૂર્વ નિચેર લિખિત વિશયેર પ્રત્યુત્તર એ આદાલતેર પાણડતેર સ્થાન
લઓ ઉચિત ઘોષ હયલ. એ કારણ હુકુમ હયલ એ એ રોયઠારિર
નફલ એ હુકુમે એ નિચેર લિખિત વિશયેર પ્રત્યુત્તર એ રોયઠારિર
નફલ પાઓર દિવસાવધિ પચ્ચમ દિવસેર મધ્યે લેલેત--એ
આદાલતેર પાણડતેરે અપન કરાજાય.

પ્રશ્ન :- થયપિ સ્થાત્ એક વ્યક્તિ હિન્દુ, એ તાહાર માટ
વિષય કાન ત લુકેર કચલ ઘય આનાઝિલ, તાહાર મધ્યે ચારિ
આના આપન કર્તમાન આક ઓ દુહ આના આપન દ્વિતીય મૃત
સીર ગર્ભ તાતા કન્યાકે હેરા કરે, ઓ એ કન્યા આપન સ્વામીર
મૃત્યુર પર દશ વત્સર વયઘમે આપન વિમાતાર સમિત્તે લોકાન્ત
હય તવે ઘટ્ટદેશાય ચલિત શાસ્ત્રાનુમારે એ કન્યાર તેજ્ય વિશયેર
ઉત્તરાધિગામિ તાહાર વિમાતાર કિમ્વા તાહાર સ્વામીર પિતા
હયેઠ હયિ ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरस्याधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराहीनसाहेबधर्माधिकरण-
लिखिते शयोशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमितान्दीयागस्तिमासीयपञ्चमदिवसीय-
विचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयपञ्चमदिवसीयषष्ठ-
दिनसम्बन्धिवृद्धसतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति तद्वर्णनान्वक्तव्येन एवशुशोऽधिकारी भवति ।
इति वृद्धदेराचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—
अत्र प्रमाणम्

ततः एवशुरः — इति दायभागटीका (पृ० २१८ लिखनम् ॥१॥

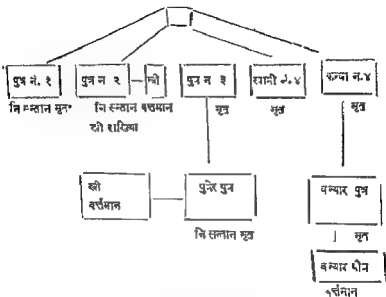
इति शयोशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमितान्दीयसितम्बरमासीयवेदेन्दुमितदि-
नसम्बन्धिवृद्धसतिवासरे मया प्रभुनमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८६) कोन व्यक्तिर द्वितीय ओ तृतीय पुत्र आपन २ भ्रमेर द्वारा
कयेक माम लाभ करिल । ताहार पर द्वितीय पुत्र निःसन्तान एक
स्त्री राखिया नरिल । तृतीय पुत्रेर पुत्रओ निःसन्तान एक स्त्री
राखिया मरिल, एवं ऐ स्त्री एखन पय्यन्त निःसन्तान वर्तमान
आछे । इहासे जिह्वासा करा जाय—१ प्रथम सओयाल—एइ ये
ऐ द्वितीय पुत्रेर विधवा स्त्री एवं तृतीय पुत्रेर पुत्रनधूर ऐ कयेक
ग्रामे अधिकार थाके कि ना, यदि थाके तवे कि पय्यन्त थाके—
२ द्वितीय सओयाल—एइ ये द्वितीय ओ तृतीय पुत्रेर
भगिनीर पुत्रेर ऐ कयेक ग्रामे अधिकार थाके कि ना ॥

एइ व्यवस्था चारानस देसेर चानित शास्त्रानुगारे देओया जाय इति ॥

कुरचीनामा



श्रीर्जयतितराम

प्रभुसमर्पितवक्त्रदेशीयाक्षरप्रश्नपत्रं वरावलीपत्रं च यदीशबोशब्दप्रति-
पात्रेपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयाकृत्वरमासीयाद्गुणमितिदिनसम्बन्धिवृहस्पतिवा-
सरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता
ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थिताः, एवं द्वितीयपुत्रो विद्यमाने
च भ्रातृपुत्रे मृतः स्यात्तदा मृतस्य पितृव्यस्य पत्न्या यद्वज्रं स्वपतिविभवो-
चितप्रासाच्छादनोपयुक्तवश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधने अधिकारः ।
यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये
साधारणा न स्थिताः, अथवा साधारणा अपि विभक्ता आसन्, एव
च एव द्वितीयः पुत्रो धीवति भ्रातृपुत्रे च मृतः दशतदा मृतस्य

पितृव्यस्यासाधारण्यस्वत्वात्पदीभूतधने विभक्तधने वा तत्पत्न्या एव यावज्जीवमधिकारः । यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थिताः, अथ च स एव द्वितीयः पुत्रो मृते च भ्रातृपुत्रे मृतः स्यात्तदा द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजित-ग्रामसमुदायेषु द्वितीयपुत्रस्यैव साधारण्यप्रतियोगिनोऽसाधारण्यस्वत्वोत्पत्तेस्तत्पत्न्या एव विवादात्पदीभूतसमुदायग्रामेषु यावज्जीवमधिकारः एव । तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि विद्यमाने पितरि मृतः स्यात्तदा तस्य पितृधने असाधारण्यस्वत्वानुत्पत्तेस्तत्पत्न्या अपि तदने नाधिकारः, किन्तु यावज्जीवं स्वपतिविमबोचितग्रामाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधने अधिकारः । तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि मृते पितरि पितृव्ये च जीवति मृतः स्यादेवं द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामा द्वितीयपुत्र-तृतीयपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थितास्तदा मृतस्य तृतीयपुत्रपुत्रस्य पत्न्या यावज्जीवं स्वपतिविमबोचितग्रामाच्छादनोपयुक्तावश्यकविधवाधर्माद्याचरणोपयुक्तधनेऽधिकारः । तृतीयपुत्रस्य पुत्रो यदि मृते पितरि पितृव्ये च जीवति मृतः स्यादेवं द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामा द्वितीयपुत्र-तृतीयपुत्रयोर्मध्ये साधारणा न स्थिताः, अथवा साधारणा अपि विभक्ता जातास्तदा मृतस्य तृतीयपुत्रपुत्रस्यासाधारण्यस्वत्वात्पदीभूतधने विभक्तधने वा तत्पत्न्या एव यावज्जीवमधिकारः । यदि च द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्राभ्यामुपाजिता ग्रामाः पितृव्यभ्रातृपुत्रयोर्मध्ये साधारणाः स्थिताः, अथ च तृतीयपुत्रस्य पुत्रो मृते पितरि पितृव्ये च मृते मृतः स्यात्तदा द्वितीयपुत्र-तृतीयपुत्राभ्यामुपाजितग्रामसमुदायेषु तृतीयपुत्रपुत्रस्यैव साधारण्यप्रतियोगिनोऽसाधारण्यस्वत्वोत्पत्तेस्तत्पत्न्या एव विवादात्पदीभूतसमुदायग्रामेषु यावज्जीवमधिकार इति ।

अत्र प्रमाणम्—

श्ली दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गात्रजो बन्धुः शिष्यः सखलचारिणः ॥

एषामभावे पूर्वस्य धनभागुत्तरोत्तरः ।

स्वर्ग्यातस्य तृपुत्रस्य सर्ववर्णेष्वयं विधिः ॥ इति मिताक्षरावीरमित्रो-
दयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥१॥

पत्नी शृङ्गीयादित्येतद्वचनजातं विभक्तश्रावृक्षीविषयम्—इति मिता-
क्षराग्रन्थलिखनम् ॥२॥

तस्मादपुत्रस्य स्वर्ग्यातस्य विभक्तस्यासृष्टिर्नो धनं परिणीता स्त्री
सायता सकलमेव शृङ्गीतीति स्थितम्—इति मिताक्षरा (पृ० २२१)ग्रन्थ-
लिखनम् ॥३॥

स्वर्ग्याते स्वामिनि स्त्री तु मासाच्छादनमागिनी ।

अविभवते धनारो तु प्राप्नोत्यामरयान्तिरुम् ॥ इति वीरमित्रो-
दयादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥४॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्

द्वितीयपुत्रतृतीयपुत्रयोस्त्यक्तधने तयोर्भगिनीवीरस्याधिकारप्रतिपादक
शास्त्राभावाद्वाङ्मसाद् विना नाधिकारः—इति वागण्क्षीप्रदेशचलित-
मनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥ —

ईशावीरचन्द्रप्रतिपालेपुगुणगजे-कुमिताक्षरीयदिशम्बरमासीपदशमदिन-
सम्बन्धिषट्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रवशावलीपत्राभ्या सहि-
तेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८०) श्रीगणेशाय नमः । अवधूराय धूरीणाय-सन्ममराया भ्रातरः
सहोदरा आसन् । तेषा मध्ये अवधूरायनाम्ना-वदायादापाञ्चितप्राप्तः परदस्त-
गता निवप्रयत्नन स्वभोग्ये आनीतः । स प्राप्तः पूर्वोपाजितादन्यः । यदा
अवधूरायेण मामार्थवादिना सह विवाद आरब्धस्तदा धूररायेण तदुभयाना
न स्त्राकुतः, उक्तं च नाह विवद करिष्यामीति, स्वाद्योऽपि न शृङ्गीतः ।
तदनन्तरं आमविभागावसरे अवताररायोऽवधूरायात्मजः हरिमोविन्दरायो

धुरीरायात्मजः सर्वज्ञितयस्मरनामयात्मजः तेषां मन्त्रे हरिगोविन्द-
रायेण भागो न स्वीकृतः, उक्तं मन्त्रिणा भागो न गृहीतस्तस्मादहमपि न
ग्रहीष्यामीति । ग्रामविभागावसरे रामजतनयप्रभृतय उत्तमा आसन्,
परजार्तिवदालकाः हरिगोविन्दरायात्मजाः । साम्प्रतं हरिगोविन्दराय त्मजा
रामजतनप्रभृतयो भागमर्थयन्ते । ते पितृतिरस्कारेण पूर्वं विना भागो न
स्वीकृतः, अतो भागार्हा न भवन्ति वा भवन्तीति प्रश्ने--

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितसंस्कृतप्रश्नपत्रं पारशीकप्रश्नपत्रञ्च यदीयवीशब्दप्रतिपाद्ये-
पुगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्वमाभीयचतुर्धदिनसम्बन्धिमन्त्रनिवासरे मया
प्राप्तं तदधस्तोत्रं यादृशबोधो जातस्तदनुगारेणोत्तरं लिख्यते-

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सवि विवादास्वदीभूतग्रामस्येदानीं विभागमर्थयन्तो
हरिगोविन्दरायात्मजा रामजतनरायप्रभृतयो विभागार्हा न भवन्त्येव । अन्य-
दायादोपाज्जितग्रामे यथा पितृपितामहाभ्यां द्वाभ्यां विक्रयेण तयोर्द्वयोः स्वत्व-
नाशे न पौत्राणां स्वत्वनाशो भवति, तथा पितृपितामहयोः स्वांशमहयोपेक्षा-
मूलकस्वत्वनाशेनाप्राप्तव्यवहागाणां पौत्राणो विभागमर्थयतामपि स्वत्वनाशः
शास्त्रविवेचनया भक्तिं शक्तोत्थेन इतिपश्चिमदेशवर्जितमनुमिताक्षरावीर-
मित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ।—

अत्र प्रमाणम्—

संविभागक्यप्राप्तं पित्र्यं लब्धं च राजतः ।

स्थावरं सिद्धिमाप्नोति मुक्त्या हानिभुगेक्ष्ये ॥ इति वीरमित्रोदयादि-
(पृ० २०१)ग्रन्थवृत्तवृत्तिः (पृ० ७३)वचनम् ॥१॥—

ईशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमाभीयार्कमितदिन-
सम्बन्धशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितसंस्कृतप्रश्नपत्रपारशीकप्रश्नपत्राभ्यां
सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८१) प्रश्नः—

यथाशास्त्रानुसारे पण्डितेः प्रति जिज्ञास्य हृदयाळे—

१ दफा—

यद्यपि एक व्यक्ति धर्माकाङ्क्षी हृदया तीर्थयात्रा करिया २० बत्सरेर मध्ये आपन वासस्थाने पुनरावित्ति ना हृदया सव्यदा प्रज्ञात थाके, ताहाचे एइ जिज्ञास्य ये ऐ संवाद रहित व्यक्तिः जीवनावशेष विवेचित हय कि ना ।

आर ऐ व्यक्तिः समुदाय वस्तु दान प्रहीता व्यक्तिःसकले ऐ अज्ञातसवादी अर्थात् अनुहरिय व्यक्तिः तीर्थयात्रार पूर्वकृत उइल प्रमाण प्राप्त वस्तु ऐ लिपिर निर्धारित मते आपन २ अंश विभाग करिया लहते पारे कि ना, येमन एक मृत व्यक्तिः इष्टेदेर न्याय—

२ दफा—

एवं ऐ व्यक्तिः आपन वासस्थाने २० बत्सरेर मध्ये किम्या परे पुनरावित्ति हइले उहार निज वस्तुसकलेर मालिकत्व रहित हृदया अनधिकारि हइवे कि ना—इहाइ पण्डितेः व्यवधार अविश्यक हइयाळे, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आज्ञा हय इति ।

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं प्रश्नपत्रञ्च यदीशवीरचन्द्रप्रतिपाद्येयुगुणगजेन्दु-
मिताश्रीयागस्तिमासोयद्वाविशतितमदिनसम्बन्धिशनिवासरे प्रभुसमर्पित-
विचारपत्रान्तरञ्च यत्तदन्दीयसितम्बरमासोयदशमदिनसम्बन्धिनृदस्यतिवासरे
मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति प्रस्थानदिनमारभ्य विंशतिवर्षपर्यन्तं
संवादरहितस्य भरण्यावधारणं शास्त्रतो भवति । एवञ्च सति तदीय^१

समुदायघनं तत्कृत-उद्देश्यप्रतिपाद्यलिपिनिर्द्धारितस्वस्वांशानुसारेण दान-
ग्रहीतारो मृतस्य कस्यचित् त्यक्तघने तदुत्तराधिकारिन्यायेन विभज्य ग्रहीतुं
शास्त्रतः शक्नुवन्तीति ।

अत्र प्रमाणम्—

गतस्य न भवेद् वार्त्ता यावद् द्वादशवापिन्दी ।

प्रेतावधारणं तस्य कर्त्तव्यं सुतचान्धवैः ॥—इति तिथितत्त्वादि(पृ०
२०) ग्रन्थधृतयमवचनम् ॥१॥

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनुवचनम् ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

य एव प्रस्थितो व्यक्तिपित्रोः यदि विंशतितृत्वात्परमस्ये तत्परतो वा
पुनरागच्छति तदा प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितानुमितप्रस्थितप्रण्यावधारणप्रमुक्त-
स्वत्वनाशस्तस्य स्वकीयघने न भवति । प्रस्थानेन सम्भाषितस्वत्वनाशस्य
प्रस्थितागमनेन बाधितत्वात् । किन्तु प्रथमप्रश्ने दानोद्देशो लिखितः ।
तत्र दाने यद्यपि नियमो दानुर्यद्यहं जीवामि न जीवामि योभययैव दान-
ग्रहीतृणां तद्वन्नं भविष्यति तदेवाह्यदानेन दातुः स्वत्वत्यागेन स्वामित्व-
राहित्यं शास्त्रोक्तमेव । यदि तद्दाने अयं नियमो यद्यहं जीवामि तदा तद्वन्नं
भवेवास्ति, यदि न जीवामि तदा दानग्रहीतृणां भविष्यति, तदा दातुर्जायिन-
दद्यायां दातुः स्वत्व(ऽ)त्यागेन स्वामित्वराहित्यं न भवति—इति वङ्गदेश-
चलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र श्रीहल-शब्दप्रतिपाद्यलिपिमहद्वा प्रश्नयोरप्ययः सम्पन्न
शतोऽथ एवैवमुत्तरं लिखितमिति निवेदनम् ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितद्वितीयप्रमाणम् ॥ १ ॥

तोषाभिदानमुपाध्यसिद्धावसिद्धम्—इति विवादभङ्गाण्यग्रन्थलिख-
नञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यपुगुणगजेन्दुमितान्दीयदिराम्भरमाद्योपमुनोन्दुमित-

दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवाररे मया प्रमुक्तमपितोपरिलिखितमिच.रात्रद्वय-
प्रश्नपत्रैः सहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीज्जयतिनराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८०)—रोषकारि मिद्धित सदर दैओयानि आदालत मो० कलिकाता । आदालत मज्जकुरेर हाकिम थोयुत हेनरि सिक्स-
पियेर साहेवेर बैठके तारिख ६ आगष्ट ई सन १८३१ साल
मोताबके २२ आबण सन १८४२ साल बाद्गला दिवस
वृहस्पतिवार ।—

बैठल

छाएल—

छाएलेर पचेर एक बेता ओकालतनामा मुनशी आढवाँछ
आलि दाखिल करिया हाजीर आइल । इतः पूर्व ई सन १८३५
सालेर २० जुलाई तारिखे थोलिएम बेराडीन साहेवेर ऐ सनेर
१६ जुनेर छादेर हओया हुकुम मोताबक छाएलेर छओयाल
तत्समिभरारि कागजात उपस्थित हइया छाएलेर गरहाजीरि
प्रजुक्त मुलतवि छिल, अथ पुनराय उपस्थित हइल । एइ आदाल-
तेर हाकीमान थोलिएम बेराडीन साहेव ओ डेविड इश्मीट
साहेवेर २ जानेओयारि ओ १६ जुनेर छादेर हओया रायेर सहित
पढागेल । यदि स्थाव ऐइ छओयाल छरछरि आपील मज्जरि
प्रार्थनाय घटे, ई सन १८१४ सालेर २६ फागुनेर ३ दफार २
धारार लिखित प्रकरणसकल ताहार मज्जरि अन्य प्रकाश
नाइ, ये तट्टे मज्जरि योग्य हय, आर जज साहेवेर फयदलार
उपर, जाही रेजष्टर साहेवेर फयदलार पर हय, ताहार ब्यास
आपील प्रचलित कानन मते मज्जर हइते पादे ना । ए प्रजुक्त
आमार राय थोलिएम बेराडीन साहेवेर १६ जुनेर लिखित
राएर सहित एइ प्रकारे अक्य हय—ये ताहार मज्जरि हुकुम

छादेर हइते पारे ना । किन्तु यदि स्यात् एइ आदालतेर तावेर कोन आदालते नितान्त आइनेर बढिभूव कोन हुकुम छादेर हय, आर से मोकईमा खास आपील मसुरिर योग्य ना हय, ताहार दोरस्त करा ए आदालत हइते उचित । तट्टे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने एइ विशय जिज्ञाशा उचित जे छापल ओ अन्य २ मुर्दाआलेहमेर गोलामीर विशयेर मोकईमा शाख मतो तहकिह हइया निष्पत्त्य हइयाछे, कि ना । परे हुकुम हइल जे एइ रोबकारिर नकल डेविड इप्पीट साहेब हाकीमेर तल्लव मते, ये कागज पौछियाछे, ताहा सम्बलित एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय ये उक्त पण्डित उपरेर विशयेर जओयाव लिखेन । यदि स्यात् जजसाहेबेर फयल्लाय तजविजेर कोन व्यतिक्रम प्रकाश हय तवे ताहार शोधन करार जन्य हुकुम छादेर हइते पारे, आर यदि पण्डितेर जओयावेर द्वाराय व्यतिक्रम प्रकाश ना हय, ए आदालतेर हस्तार्पनेर कोन कारण हइते पारिवेक ना इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीमुतहेनरीसिक्सपीयरसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेग्रन्थशब्दप्रतिपाद्येगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयपट्टदिवसीयवि-
चारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्समपिंतैतद्विवादविषयनिविष्टपत्रमात्रं च
यच्चदब्दीयतन्मासीपरपट्टमितदिनसम्बन्धिषष्ठ्युषषावरे मया प्राप्त तदवलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते —

एतद्धर्माधिकरणाधिनिस्तदितरप्रत्ययिनां च दासत्वविषयकविवाद-
निष्पत्तिश्चास्त्रानुसारेण जातस्ति-इति मन्वादिशास्त्रानुसारिणी व्यवस्येति ।

अत्र प्रमाणम् —

गृहज्ञातस्तथा क्रीतो लब्धो दायादुपागतः—इत्यादि नारदनचनम् ॥१॥

इत्यवीशब्दप्रतिपाद्यस्त्रगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरोमासीयशिवमित-
दिनसम्बन्धिषष्ठ्युषषावरे मया प्रमुक्तपिंतविचारपत्रैः उद्विवादविषयनिविष्ट-

पत्रजाते सन्निधेय व्यवस्था दत्तति ॥

श्रीर्जयतिराम्
श्रीर्धनाधमिश्रेण

(८३)

श्रीदुर्गा शरणम्

सवालैर तरजमा—

यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दु आपन वृद्ध प्रपितामहेर सहोदर भ्रातार पौत्रेर वश ओ आपन वृद्ध प्रपितामहेर वैमात्रेय भ्रातार पौत्रेर वश एइ दुइ व्यक्ति ओयारिश राखिया मरियाछे, ए प्रकारे शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिएर त्यक्त धन, अस्थायर हउक, किम्बा स्थावर हउक, विभक्त हउक, किम्बा अविभक्त हउक, उभयेर वशक अशिवेक, किम्बा मृत व्यक्तिएर वृद्धप्रपितामहेर सहोदर भ्रातार पौत्रेर वश, ये अव्यवहित सम्पर्की बटे, केवल सेइ पाइवेक इति ।

मूल पूर्य नाहार दुइ पन्ना

एक पन्नार दुइ पुत्र

द्वितीय पन्ना

नाहार मध्ये एक पुत्र

द्वितीय पुत्र

नाहार पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

तस्य पुत्र

श्रीर्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रद्वयं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्ये-
गुणगजेन्दुमिताब्दीयागतिमासीयद्वाविंशतितमदिनसम्बन्धिसनिवासरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशत्रोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतधनिवृद्धप्रपितामहसहोदरभ्रा-
तृगौत्रवंशमृतधनिवृद्धप्रपितामहवैमात्रेयभ्रातृपौत्रवंशयोर्मध्ये मृतधनिवृद्ध-
प्रपितामहसहोदरभ्रातृपौत्रवंशस्यैव मृतधनित्यक्तविवादस्वदीभूतधने मृत-
धनिसन्तिकृष्टसर्वस्वत्वेनाधिकारः-इति पश्चिमदेशचर्जितमनुमिताक्षरादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्--

अनन्तरः सप्तविंशत्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्-इति मिताक्षरादि-
ग्रन्थधृतमनुवचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजानवरोमासीयरसेन्दुमित-
दिनसम्बन्धिसनिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितैर्यं
व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण



(८४) रथकारि मिश्रिल आदालते देशोयानि सदर मोकाम
कलिकाता आदालत मजकुरार हाकिम श्रीयुक्त आर्जुन इष्टाकोयेल
साहेबेठ बैठके । सन १८३५ तारिख ११ डिसेम्बर मोताबके
सन १८४१ वाङ्गला तारिख २७ अग्रहान रोज शनिवार ॥

४८४ लम्बर सदर—

जगन्नाथवसु

रामकानाइवसु

आपीलाष्ट

रेण्याडेष्ट

आपीलाएटेर उकिल सिवनारायनचट्टोपाध्याय उपस्थित
हइल । रेप्पाडेष्ट स्वततः वा उकिलतः उपस्थित नाइ । मक-
ईमा तरतिव नम्बर मते वत्तेमान वत्सरेर ? डिसेम्बर तारिखे
आमार बैठके रुबकार हइया कतक कागजाव दष्टिर परे ऐ
दिवसेर रुबकारिर लिखित हेतुते मोलतवि छिल, अद्य पुनराय
रुबकार हइया हिसावेर विषये आपीलाएटेर उकिलेर कथार
आभाप विवेचनाय उचित हइल ये मिछिलेर सम्बलिष्ट २ दुई
जाता एइ आदालतेर खाजाञ्चीर जिम्बा करा जाय । जे से
रामकानाइवसुर खातार लिखित अड्डसकल, जाहा तारिखी-
वरणवसु ओ जगन्नाथदासेर नामे लिखित आछे, जगन्नाथ-
दासेर खातार अड्डसकलेर सहित, जाहा रामकानाइवसुर नामे
लिखित आछे, मोकावेला अर्थात् ऐक्य करिया समान अथवा
न्यूनातिरेक, जाहा प्रकाश हय, ताहार कैफियत दाखिल करे ।
एव जे हेतु प्रकाश आछे जे करियादी रामकानाइवसु पिता ओ
एइ मकईमार एक जना आसामी तारिखीवरणवसु उहार पुत्र
एवं करियादिर निकट एइ मकईमार दाबिर टाका कर्ज लओन
आसामिर सहित अर्थात् पिता पुत्रेर एक स्थान वास ओ एकान्न-
भूक्तेर समय प्रकाश आछे । अतएव आदालतेर पण्डितेर स्थाने
ए विषयेर प्रश्न, जेमत प्रकार विषये पिता कश्चिंक पुत्रेर प्रति
कर्जा टाका प्राप्ति जन्य नालिश ए प्रदेशेर चलित शास्त्र मते
वैध एवं यथार्थ बटे कि ना, आविश्यक । अतएव हुकुम हइल जे
एइ रुबकारिर नकल एइ विषयेर उत्तर लिखनेर इदिते जे यदि
स्यात् पुत्र पितार स्थाने एकेत्र वास ओ एकान्नभूक्त अवस्थाय
टाका कर्ज नय, ताहा प्राप्ति जन्य पुत्रेर प्रति पितार नालिस
वैध ओ यथार्थ बटे कि ना-एइ आदालतेर पण्डितेर निकट
प्रेरित हय, एवं मकईमार मिछिलेर सम्बलिष्ट खाता आदालतेर
खाजाञ्चीर जिम्बा हय-जे से उपरेर लिखित मत कैफियत १ एक
सप्ताहेर मध्ये गोजराय इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतजार्जइष्टकोएलसाहेवधर्माधिकरणलि-
खितेश्वरीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयशिवमितदिव-
सीयविचारपणान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासीयमुनोन्दुमितदिन-
सम्बन्धिगुरुवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते ॥—

यदि पितापुत्रयोरेकपाकेन वसतोर्मध्ये पुत्रः पितुः सकाशाद् श्रुयं
गच्छति तदा तत्प्राप्त्यर्थं पुत्र प्रति पितुरभियोगः शास्त्रविहितो न
भवति—इति वक्ष्यदेशचलितमनुदायमागविवादमङ्गार्यवादिग्रन्थानुसारिणी
व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

आतृणामथ दम्पत्योः पितुः पुत्रस्य चैव हि ।

आर्तिभाव्यमृणं साक्ष्यमविभक्ते न तत्सृतम् — इति विवादमङ्गार्य-
वादि (१ विवा० १५२ क , ग्रन्थभृतयाशुवल्क्य (पृ० २१५२) वचनम् ॥१॥

ईश्वरीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिसम्बरमासीयदिङ्मित
दिनसम्बन्धिगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था इति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण



(८५) मोकाम कलिकातार सदर देशोनि आदालतेर इ० सन
१८३५ सालेर १६ दिजम्बर मोतावेक वाङ्गला सन १२४२ सालेर
२ पीप बुधवार दिवसेर श्रीयुत ओलीयम ब्राडिन साहेवेर
चैठकेर रोवकारि—

भिक्षुनारायणसिंह वनामे तिलकधारिसिंह ओ भिक्षुधारि-
सिंह ओ गायरह ।

झायेलेर उकिल मुनशी ओलीरज्जा हाजिर आइल । पञ्चाश

टाका मूल्येर इष्टाम्पेर पर छायेलेर दरखास्त मौजे भजापट्टीर अर्द्धक ओ मौजे नओरद्वावादेर मोद्धलमेर चारि आना ओ मौजे नोमा ओ मौजे दिखि ओ गायरहर मोट सोल आनार वारो आना हिश्यार दखल पाइवार ओ हकीयतेर तजविजेर ओ कालेकट्टीर केतावे नाम लेखाइवार मोर्द्धमाय जमा रलेर तिन गुण ओ वचनेवादि टाका मुबलगे एक हजार दुइ सत शतशष्टी टाका साढे दश आनार संख्याय स्वास आपिल मजुर हओनेर प्रार्थनाय उकिल मजकुरेर नामेर उकालतनामा ओ सन १८३३ सालेर ८ जुलाई तारिखेर लिखित तेरहोत जेलार सदर आम्तिनेर तजविज करा एक केता डिगिरि नकल ओ सन १८३४ सालेर २० आगष्ट तारिखेर ऐ जेलार जजसाहेबेर एक केता फयसालार नकल ओ सन १८१६ सालेर ३० जुलापर लेखा जेला मजकुरेर रेजष्टर साहेबेर एक केता फयसालार नकल ओ सन १८१६ सालेर २३ जुलाईयेर प्रकाश हओतो तेरहोत जेलार आदालतेर पण्डितेर एक केता व्यवस्थार नकल सम्बलित, ये एइ भासेर प्रथम दिवसे दाखिल हइयाखिल, अद्य दरपेप हइया दृष्टे आइल। कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व शाखेर विवरण ज्ञात हओतो उचित बोध दइल। ए कारण हुकुम हइल ये एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे ये निचेर लिखित विशयेर प्रत्युत्तर नइल रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पञ्चम दिवसेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय।

प्रश्नः—यद्यपि स्यात् तेरहोत जेला निवासीय दुइ व्यक्ति हिन्दु पैतृक विशयेर पर साधारण्ये दखलीकार ओ उदारा देनादार, एवं उभयेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण थाके, आर एमन कोन विशय उद्दादिगेर ना थाके जे ताहा हइते उद्दादिगेर देनार टाका परिशोध हइते पारे ओ उदारा अनुपाये पैतृक विशय अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण थाकितेओ आपन ० महाजनेर देना परिशोधये

विक्रय अथवा तमलीक करे, तबे ऐ विक्रय ओ तमलीक पश्चिम-
देशीय चलित शास्त्रानुसारे सिद्ध बदे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकारणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराडीनसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेशचोशब्दप्रतिपाद्येषुगुणगजेन्दुमिताश्रीपदिशम्बरमासीमरगेन्दुमित-
दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयवेदपक्षमित-
दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रति-
पाद्यं च शास्त्रानुसारेण सिद्धयति—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरा-
प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥ —

अथ प्रमाणम् —

अप्रातर्व्यवहारेषु पुत्रेषु पोत्रेषु चानुज्ञानादावसामर्थ्येषु भ्रातृषु वा
तथाविधेष्वविमक्तेष्वपि सर्व्वकुटुम्बव्यापिन्यामापदि तत्सोपण्ये चावश्य-
कर्त्तव्येषु च पित्रादिश्राद्धादिषु स्थावरस्य दानाद्यमनविक्रयमेकौऽपि समर्थः
कुर्याद्—इति मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

ईशनीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताश्रीयकेशरयरोनासीपैकादश-
दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रकहिनेयं व्यवस्था
वर्त्तेति ॥ —

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(८६) प्रथम प्रश्नः—

यदि कोनो व्यक्ति दुइ स्त्री राखिया लोकान्तर हय, आर
ताहार ज्येष्ठा स्त्री अघोरा, कनिष्ठा स्त्रीर गर्भजातक कन्यार एक
पुत्र अर्थात् मृता व्यक्तिर दौहित्र सन्तान थाके, तबे एतद्देशीय
चलित शास्त्रसम्मत उत्तराधिकारि के इहते पारे ?

द्वितीय प्रश्नः—

यद्यपि एतद्देशीय चलित शास्त्रानुसारे दोहित्र सन्तान उत्तराधिकारि ह्य, तवे ऐ ज्येष्ठा अवीरा स्त्रीर जीवनावधि भरण-पोषणार्थर किं हइवे पारे । सन १८३५ साल तारिख २७ जुलाई मो० सन १८४२साल तारिख १२श्रावण ।

श्रीज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रद्वयं च यदोशबोशब्दप्रतिपाद्येपुगुण-गजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयशिवनेत्रमितदिनसम्बन्धिगुहवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ।

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य धनिनो द्वे पत्न्यो जीवन्त्यौ चेत्तदा द्वयोः पत्न्योरेव मृतस्य धनिनस्त्यक्तस्थावरसामुदायधने यावज्जीवं समानाधिकारः । तयोर्द्वयोः पत्न्योर्मध्ये एका चेज्जीवन्ती, तदा केवलं तस्या जीवन्त्या एव यावज्जीवं मृतधनित्यक्तसमुदायधने अधिकारः । जीवन्त्योर्द्वयोः पत्न्योर्जीवन्त्यां वैकस्यां पत्न्यां मृतधनिदुहितुर्दोहित्रस्य वा मृतधनित्यक्त-धने नाधिकारः इति ।

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यर्थादत्रैवपर्यवसन्नमिति पृथक् न लिखितम्—
इति वङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभूत-याशयलक्ष्यवचनम् ॥१॥

इशबीशब्दप्रतिपाद्यरघुगुणगजेन्दुमिताब्दीयफेवरवरीमासीयगजेन्दुमित-दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं न्यवस्था दत्तेति ।

श्रीज्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

(८७)—मोकाम कलिकावार सदर देओयानि आदालतेर इ० सन १८३५ सालेर १४ जुलाइ मोतावक वाङ्गला सन १२४२ सालेर ३१आपाठ मङ्गलवार दिवसेर ऐ आदालतेर हाकिम श्रीयुत ओलियम ब्राडीन साहेवेर बैठकेर रोवकारि—

गोलोकनारायणराय

छापल

छापलेर उकिल सदासुखपण्डित हाजीर आइल । छापलेर छओलात ओ तह्दार सम्बलित कागजात, जे ए आदालतेर सावेक हाकिम रिचार्ड ओआलपोल साहेवेर बैठकेर मोतालक छिल, अथ आमार बैठके दरपेप हइया पाठ करा गेल । कोन हुकुम देओनेर पूर्व निचेर लिखित विषयेर प्रत्युत्तर ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओओ उचित बोध हइल, ए कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित विषयेर प्रत्युत्तर रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि पञ्च दिवसेर मध्ये लेखन-आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय । एइ हेतु जे श्रीमती तारिणी किछु टाका मृत कालोप्रसादरायेर पुत्रगण श्यामसुन्दर देओ प्रभृतिर स्थाने कर्ज लय, ओ शेष ताहा परिशोध ना हओने ऐ श्यामसुन्दर प्रभृति आदालतेर डिगिरि ऐ श्रीमतीतारिणीदेव्यार नामे हाशील करिया चारि पाच बत्सर पय्यैन्त, जे ऐ श्रीमती जीवइशाय छिल, ताहा चारि ना करिया उद्धार मृत्युर पर डिगिरि चारिर दरखास्त छापलेर नामे जे उत्तराधिकारि हेतुते मोट परगने भओलेर नय आनार मध्ये तिन आना ऐ श्रीमतीर तेज्य अंशेर पर दखलीकार हइयाछिल, जेलार आदालते गुजराय, ओ छापल आपत्य करे जे ऐ श्रीमतीर स्वकीय अनेर टाकार लओओ देओन आमार पर नाइ । ए अन्य जिज्ञासा करा जाइते-छे जे बङ्गदेशीय चलितशास्त्रानुसारे ऐ श्रीमतीर देना परिशोध करा छापलके उचित हय कि ना-इति ।—

श्रीज्जयतितराम

प्रभुसमर्पितेश्वरीशन्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमितान्दीयबुलादमासीयवे -

देन्दुमितदिवसीयविचारपत्र उत्प्रतिरूपणितं च तदन्दीयागस्तिमासीय-
दिह्मितदिनसम्बन्धचन्द्रवासरे मया व्यवस्थालिखनार्थं प्राप्तम् । किन्तु
तद्विचारपत्रान्मृततारिणीदेवीत्यक्तं यत्र तस्याः स्त्रोधनमासीत्, तत्प्रति-
पुत्रादिपरित्यक्तं वा तत्सम्बन्धमासीदिति, किं वा तारिणीदेव्या एतद्व्य-
क्तिमयं कृतमिति, तारिणीदेव्या सहैतद्धर्माधिकरण्यार्थिनः कः सम्बन्धः
इति च चिन्तयन्नातु न शक्यते । तस्मिन्निश्चयान् विना प्रभाराशादितव्यवस्था
भवितु न शक्नोतीति । अतो निवेदयामि । यथा आशा तथा कर्तव्यमिति
निवेदनमिति ।

ईशवीर्यशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमितान्दीयदिशम्बरमासीयगुणपद्ममित-
दिनसम्बन्धचन्द्रवासरे भवैतन्निवेदनं कृतमिति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रतिपाल्यतमश्रीवैद्यनाथमित्रस्य निवेदनमिति ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरण्याधिपतिश्रीसुतश्रीलियमवेशदीनसाहेब धर्माधिकरण
लिखितेशवीर्यशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दुमितान्दीयगुणपद्ममासीयवेदेन्दुमितदि-
वसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र यत्तदन्दीयाग स्तमासीयदिह्मित-
दिनसम्बन्धचन्द्रवासरे तत्प्रमुधर्माधिकरणलिखितेशवीर्यशब्दप्रतिपाद्यरस-
गुणगजेन्दुमितान्दीयफेरवररोमासीयवसुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर यत्तद-
न्दीयतन्मासीयवेदपद्ममितदिनसम्बन्धचन्द्रवासरे च मया प्राप्तं तद्वज्रोत्प-
सादशब्दोपां वातस्तदनुसारेणात्तरं लिख्यते—

प्रमुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सतीशवीर्यशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दु-
मितान्दीयफेरवररोमासीयवसुमितदिवसीयप्रमुकृतविचारपत्रद्वय्या च तारि-
ण्यादेनोक्ततर्थापरिशांभनमविना याज्ञानुसारेण कर्त्तव्यं न भवति-इति,
वद्भदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्था ।

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवे-
तदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेन व्यवस्था
दत्तेति ।

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्ज्जयतितराम्

प्रभुकृताज्ञानुसारेण निवेद्यते—

प्रभुसमर्पितेशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुलाइमासीयवे-
देन्दुमितदिबलीयविचारपत्रं तदब्दीयागस्तिमासीयेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्र-
वासरे यद्यपि मया प्राप्तम्, किन्तु कर्मबाहुल्यवशात्तत्समये तदन्तर्गत-
प्रश्नाशयो नावगतो यदैतस्योत्तरं लेखनीयं तदैवैतस्य प्रश्नस्थायोऽपि
सम्यग्ज्ञातव्य^१ इत्येव मनसि निधाय प्रभुसविधौ निवेदनं न कृतम् । एत-
स्मिन्नेवावसरे श्रीयुतहेनरीसिक्विमपीयरसादेवामिधानैतदधर्माधिकरणप्राची-
नाधिपतिमिराङ्गस्त निवेदनलिखनार्थमेकमाशापत्रमीशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगु-
णगजेन्दुमिताब्दीयागस्तिमासीयेन्दुगुणमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे प्राप्तम्,
तदनन्तरं तन्निवेदनलिखनमत्कर्तव्येतरैतरकार्यसमुदायव्यप्रेण प्रभुसमर्पित-
प्रश्नस्य प्रश्नान्तरजातस्य वा तत्पूर्वमपि प्राप्तस्योत्तरलिखने श्रीधोभ्वरपूजार्थ-
धर्माधिकरणावकाशात् पूर्वमवकाशशेषोऽपि न प्राप्तः । अनन्तरं त्रैपु-
णमितदिनपरिमितो धर्माधिकरणस्वावकाशोऽपि श्रीधोभ्वरपूजार्थमुरहितः ।
अत एव श्रीयुतहेनरीसिक्विमपीयरसादेवामिधानैतदधर्माधिकरणप्राचीना-
धिपतिमिराङ्गस्त तन्निवेदनपत्रं त्रिलिङ्गेशवीशब्दप्रतिपाद्येपुगुणगजेन्दुमिता-
ब्दीयनवम्बरमाधोयरसेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रवासरे दत्तम् । तदनन्तरं
च यद्यप्रश्नजातं प्रभुसमर्पितप्रश्नात् पूर्वं परतो वा प्राप्त तस्य तस्योत्त-
रलिखनप्रवृत्तेनापि यस्य व्यवस्थाजातस्य मत्कर्तव्येतरैतरकार्यस्य वा

श्रीमतां प्रभूणामेतद्गर्माधिकरणाधिपतोनामवान्तरधर्माधिकरणपतीनां वा आज्ञावशात् शीघ्रता जाता, तद्व्यवस्थाबाधं प्रथमतो लिखित्वा दत्तम्, तत्तत् कर्म च कृतम् । अनन्तरं प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरलिखनप्रवृत्तेनापि यद्विषयप्रयं प्रभुसन्निधौ निवेदितं तस्य त्रितयस्य ज्ञानं प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरलिखने अत्यावश्यकं जातम् । तस्य त्रितयस्य ज्ञानं विना प्रभुसमर्पितप्रश्नस्योत्तरं दातुमशक्तेनागत्य प्रभुसन्निधौ निवेदितमिति निवेदनमिति ॥

ईश्वरोद्योगप्रतिपाद्यसगुणगजेन्दुमितान्दीयकेवरवरीमासोयाङ्कपञ्चमि-
तदिनसम्बन्धचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितमिदं निवेदनपत्रं
दत्तमिति ।

श्रीजर्जयतितराम्

प्रतिपाद्यतमश्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा शरणम्

(८८)—जिला फ्टकेर दिमानि आवालतेर सदर आमिन आलार बैठकेर सवाल । मोकाम कलिकावार सदर दिमानि आवालतेर पण्डितानेर प्रति । प्रथम सवाल एइ ये, कय ओ विक्रय प्रभृति मोकदिमार विपयेते शाखेर आज्ञासकल हिन्दु-जातीर मध्ये बाङ्गला ओ ओडिस्या ओ वेहार ओ तैलङ्ग ओ महाराष्ट्र देशेर एक प्रकार बटे, कि पृथक् पृथक् इति ।—

द्वितीय सवाल एइ ये, हिन्दुजातीर मध्ये कय ओ विक्रयेर स्थले केना ओ विक्रेतार स्वीकार कराते कय विक्रय सिद्ध हय, कि मूल्येर समस्त टाका दिले सिद्ध हय, कि किञ्चित् मूल्य दिले ओ निलेओ सिद्ध हय इति ।—

तृतीय सवाल एइ ये, यद्यपि कोनो व्यक्ति हिन्दु जाति आपन स्त्री ओ अप्राप्त व्यवहार पुत्र विद्यमान थाकिते पैतृक कोनो स्थावर किम्ब। स्वोपाज्जित कोनो स्थावर काहारो निकट विक्रय करे, तवे ए प्रकार विक्रय शाखालुसारे सिद्ध बटे कि ना इति ।—

श्रीर्जयतितराम

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रद्वयञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्येपुण्य-
गजेन्दुमिताब्दीवाक्त्वरमासीयाद्धपक्षमितदिनसम्पन्निवृहस्पतिपाधरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते—
प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

हिन्दुजातीयकथनिकयप्रभृतिविवादविषयकशास्त्राणां यज्ञदेशो उत्कल-
देशे वेङ्गदेशे त्रैलोक्यदेशे महाराष्ट्रदेशे च क्वचित् क्वचित् स्थलविशेषे
एकाप्यस्तीति ॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

क्रयविक्रयस्थले समस्तमूल्यप्रदणपूर्वकक्रैतृविक्रेतोः स्वीकारेण विक्र-
यस्य सिद्धिर्भवति । किञ्चिन्मूल्यप्रदणोऽपि विक्रयस्य सिद्धिर्न भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

मत्तोन्मत्तेन विक्रीतं हीनमूलं भयेन वा ।

अस्वतन्त्रेण मूढेन त्याज्यं तस्य पुनर्भवेत् ॥—इति वीरमित्रोदयादि-
(पृ० ४४१)ग्रन्थधृतवृहस्पति(पृ० १५५)वचनम् ॥१॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यदि केनचित् पत्न्यां विद्यमानायामप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेष्वपि विद्यमानेषु
कृपागतं स्वोपाजितं वा स्थावरं शास्त्रोपावश्यककार्यार्थव्यतिरेकेण विक्रीतं
स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण न सिद्ध्यति, शास्त्रोपावश्यककार्यार्थव्यतिरेकेण
विक्रीतं स्यात्तदा शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति—इति कटकप्रदेशचलितमनु-
मिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

मणिमुक्ताप्रवालानां सर्वस्यैव पिता प्रभुः ।

स्थावरस्य तु सर्वस्य न पिता न पितामहः ॥—इति मिताक्षरा
प्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

ये जाता येऽप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्तिं ते ऽप्यभिक्रान्तान्ति न दानं न च विक्रयः ॥—इति मिताक्षरादि-

(पृ० २०० ग्रन्थपूतमुनिवचनम् ॥२॥)

अप्राप्तव्यवहारेषु पुत्रेषु पोत्रेषु चानुज्ञानादावसमर्थेषु भ्रातृषु वा तथा-
विधेयविभक्तेष्वपि सर्व्वकुटुम्बव्याग्न्यामापदि तरंगोपे चावश्यकर्तव्येषु
पित्रादिश्राद्धादिषु स्थावरस्य दानाधमनविक्रयमेकैऽपि समर्थः कुर्वाद्—
इति मिताक्षरा (पृ० २००) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईश्वरीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताक्षरीममर्चमासोयदिद्वमितदिन-
सम्बन्धिबृहत्सतिवासरे मया प्रभुवमपितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितैः
व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्—

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(२९) मोराम कलिकात्तार मदर देओनि आदालतेर इङ्गरेजी
सन १८३६ सालेर ७ जानेर मोता(ब)के बाङ्गला सन १२४२ सालेर
२४ पौष बृहत्सतिवार दिवशेर गे आदालतेर हाकिम श्रीयुत
ओलियम प्राडीन साहेबेर रोयकारि ।—

फाशीचन्द्रमुस्तोफि

छायेल—

छापलेर बकिल शिवनारायणचट्टोपाध्याय हाजीर आइल ।
सन १८३५ सालेर १९ दिशम्बरेर लिखित हुगलि जेलार आदा-
लतेर एक केता रिटरण तथाकार एऊ केता रोयकारि ओ ओछि-
नामार नरुल ओ गयरह ऐ रिटरखेर सम्बलित सन मजकुरेर
३१ आगष्टेर प्रकाशित ए आदालतेर हुकुमेर जओावे प्राप्त ओ
अय दरपेय हइया छायेलेर छओाल ओ गरह ऐ छओालेर
संक्रान्तेर कागजसकलेर सहित ओ ए आदालतेर पण्डितेर व्य-
यम्था हप्ते आइल । ए आदालतेर पण्डितेर व्ययस्थार लिखित
हइयाछे जे यदि एऊ व्यक्ति अविरा कन्यार स्वामि कुनेर स्वामिर
भ्रातार न्याय प्रभृति जे ताहा हइते ऐ अथोरा खोर धम्म ओ लज्जा

मानेर रक्षणावेक्षण हइते पारे थाके, तवे आपन स्वामीर गृहे अवीरा खोर जाओन कर्त्तव्य वटे, ओ यद्यपि ऐ प्रकार ना थाके, ओ ऐ कन्यार पितृकुलेर पिता ओ भ्राता प्रभृति थाके जे ताहा-
देर हइते ऐ कन्यार धर्म प्रभृति लज्जा मानेर रक्षणावेक्षण हइते पारे, तवे ताहा त्याग करिया कन्या मजकुरार आपन स्वामिर गृहे जाओन आविश्यक राखे ना; वरं स्वामिकुलेर एक व्यक्ति पुरुस रक्षणावेक्षणेर उपयुक्त ना थाकार सम्भवे ऐ छीर रक्षणा-
पेक्षण ऐ स्त्रीर पितृकुलेर मनुष्यदिगेर पर उचित वटे। किन्तु व्य-
वस्था मजकुरा श्रीमती कमलकुमारिर स्वामि मृत गमेशचन्द्रेर लिखिया देओ। ओछिनामा विष्ट व्यक्तिरेक लिखित हइथाछे। ए
कारण हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल ओ प्राप्त ओछिनामा एइ हुकुमे जे नकल रोवकारि प्राप्तरे दिवसावधि पञ्चदिवसेर मध्ये बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे लेखेन जे ओछिनामा मज-
कुरार विष्टे अप्राप्तव्यवहारा श्रीमतीकमलकुमारी स्वामीर ग्रहे आपन शाशुडिद निकट थाकन आविश्यक वटे, अथवा ताहार पितार निकट थाकिते पारे—ए आदालतेर परिडितके अपन करा जाय इति।

श्रीकृष्णः शरणम्

परमपूजनीयश्रीमतीब्रह्माकुमारीदासी माता ठाकुराणी श्रीचर-
णाम्बुजेपु।

लिखितं श्रीरमेशचन्द्रदत्तकस्य ओछियतनामापत्रमिदम्।
कार्यनञ्जागे^१ आमि सारिरिक पीडाय अत्यन्त पीडित,
एवं जीवन संशय बोध हइतेछे। अतएव एह्यने आमार
होप बाहाल आछे, आपन ओ श्रीमतीकमलकुमारीदासीके
पुत्रपुत्र लओनेर अनुमति पत्र लिखिया दिया आमार पैतृक
ओ सोपार्जित मनकुला ओ गएर मनकुला दोरोवस्त विपयेर

एवं आमार ऐ खीर ओ ताहार लओओ ऐ पुष्यपुत्रेर रक्षणा ओ हेफाजत कारख आपनाके ओछि मकरर करिया लिखिया दितेछि—जे आपने मालिक निचेर वपसील सकल कर्म करिवेन ।

१ दफा । दोरवस्त एमलाक मनकुला ओ गयेर मनकुला, जे फिल्लु आमार दखले आछे ओ जाहा आमार सरिकानेर निकट हइते बुक समुक्त करिया लइते बक्री आछे,—ताहा बुक समुक्त करिया लइया तावत विषये दखिलकार थाकिया हेफाजत करिवेण, एवं देना ओ पाओना जाहा आछे ताहा बुक समुक्त करिया दियेन ओ लइवेन ॥—

२ दफा । नित्य-नैमित्तिक क्रिया-कलाप ओ संसारेर खरच-पत्र अर्थात् परिवारेर भरण पोषणादि समय मत करिवेन ॥—

३ दफा । आमार ओ आमार अनुमत्यानुसारे यथाशास्त्र जे पुष्यपुत्र लइवेक, ऐ पुष्यपुत्रेर एवं आमार ऐ खीर रक्षणा-पत्तन आपने करिवेन । जावत ऐ पुष्यपुत्र वयेस-प्राप्त ना हय तावत समुदाय विराय ओछि सुरत आपनकार दखलकबजे थाकि-वेक । ऐ पुष्यपुत्र वयेस-प्राप्त हइले आपने ताहाके समजाइया दितेन । यद्यपि पुष्यपुत्रेर वयेस-प्राप्त हओनेर मध्ये आपने कोन पीढाय अथवा अन्य कोन कारखे जीवन संशय बुकेन, तवे आपन परिवर्त्त अन्य काहाके स्वातिर्जमा मते ओछि मकरर कारिबार एखेयार आपनकार थाकिल ॥—

४ दफा । आमार पैतृक ओ सोसर्जित कालेकट्टरि माल-गुजारि समपर्कीय ओ पत्तनि ओ दरपत्तनि तालुकात जे आछे, ताहाते आमार एलागाएत खरच-पत्रेर बाहुस्यताय ओ अन्य देना परिशोधे सन हालेर सदर मालगुजारि आदायेर अनेक असंस्थान आछे । आपने ऐ तालुकातेर मध्ये कोनो एक अथवा बतौधिक तालुक पत्तन करिया दरपत्तन दिया ताहार पन बाहाय ऐ असंस्थान मालगुजारि सरबराह करिया विषय रक्षा करिवेन । इति सन १२३७ साल तारिख ६ कार्तिक—

श्रीरामदत्त

सां० देवानन्दपुर ।

श्रीगोविन्दपाल

सां० देवानन्दपुर ।

इशादी

श्रीवैद्यनाथमित्र

सां० हाजीपुर पं० चौगुहा ।

श्रीपाँचकडिघोष

सां० गडु ।

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरखाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमवेराडोनसाहेवधर्माधिकरण -
लिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्यरसगुणमजेन्दुमिताब्दीयप्रानवरीमासीयमुनिमित -
दिवसीयविचारपत्राभ्यस्तगतप्रश्नप्रतिरूपपत्र तत्समर्पितासीयन्नामाख्य पत्रं
च यत्तदब्दीयफेवरवरीमासीयशिवमितदिनसम्बन्धिवृहत्सतिवासरे मया
प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितासीयन्नामाख्यपत्रदृष्ट्वा अप्राप्तव्यवहारायाः भीमत्याः
कमलकुमार्याः पतिवृद्धे श्वभूषन्निधानस्थितेः शास्त्रानुसारेणावश्यकता
नास्ति स्त्रोत्वेन स्वतोऽस्वतन्त्रायाः स्यन्तररक्षकत्वस्याशास्त्रीयत्वेन तस्य
पितृसन्निधौ(१)ने स्थितिर्भवितुमर्हति—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादि-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

पिता रक्षति कीमारे भर्ता रक्षति यौवने ।

रक्षन्ति स्यान्निरेपुत्रा न सी स्वातन्त्र्यमर्हति ॥—इति मनु(६।३)-

वचनम् ॥१॥

भर्ता रक्षति यौवन इत्यादि प्रायिकम्, अभर्तृपुत्रायाः सचिहितायाः
पित्रादिभिरपि रक्षणात्—इति कुल्लूकभट्टकृतमन्वर्थमुक्तावलीग्रन्थ(पृ०
३४६)लिखनम् ॥२॥

मृते भर्तृर्ग्यपुत्रायाः पतिपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ।

विनियोगात्तरक्षासु मरणे च छ ईश्वरः ॥

परिस्त्रीयो पतिकुले निर्मन्त्रये निराश्रये ।

तत्सपिण्डेषु चासत्सु पितृपक्षः प्रभुः स्त्रियाः ॥—इति दायभागादि-
(पृ० १७३।१७४) ग्रन्थधृतनारद (१३।२८-२९) वचनञ्चेति ॥३॥

ईशवीशन्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दोयापरेल मासोयेपुमितदिन-
सम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुमर्पितविचारपत्रासीवद्वामारुपमात्राम्यां
प्रहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६०)—रुक्कारि मित्रिल मोकाम कलिकाता सदर देशो-
यानी आदालतेर सन १८३६ सालेर मार्च मासेर स्याष्टादस
दिवस बुधवारे डिवड इसमिट साहेब-कायेम मोकाम हाकिमेर
बैठके ॥—

जगतचन्द्रअधिकारि—

साएल

साएलेर उकिल निलमनिबन्धोपाध्याय हाजीर हइल । सन
१८३५ सालेर दिजम्बर दशम दिवसेर जिला बर्द्धमानेर जज
साहेबेर ओ जिलार पण्डितेर व्यवस्थानुसारे सायेलेर पर्थ
मधुसूदनबडाल प्रतिवादिर पूर्वपुरुषेर स्थापित ओ प्रकाश करा
श्रीधीश्वरठाकुर-ठाकुराणी सूत्रजाति सेबकेर दिगेर वाडिते लइया
जाइवार अनुमतिते मकदेमा निष्पत्य करियाछेन, ए कारण
साएल ताहाते असम्मत हइया श्रीमन्दिर हइते ठाकुर-ठाकुराणी
अन्यन्तरे लइया जाओया रहित हुकुम छाने हओनेर प्रार्थनाय
आपन सओल आर उकिलेर नामेर ओ कालतनामा ओ सन १८३५
सालेर दिजम्बरमासेर दशमदिवसेर ऐ जिला आदालतेर रुक्-
कारिर नकल ओ साएलेर सन १८३२ सालेर आगष्टमासेर
सप्तदशदिवसेर हुकुम देओया दरखास्तर नकल आर सन १८३५
सालेर जानेओरि मासेर चतुर्दश दिवसेर हुकुम देओया मधुसूदन

बडाल प्रतिवादिदरखास्तर नकल आर ओ जिला आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था नकल सम्बलित एइ मासेर पञ्चम दिवसे सेरेस्ताय दाखिल हइयाछिल, अद्य तारिखे दरपेस हइया पडा-
गेज इति । जिला मजकुरेज जज साहेबेर मतो सनेर दिजम्बर मासेर दशम दिवसेर रुबकारि द्वाराय प्रकाश हइल जे जिलार पण्डित सदर आमिनेर काछारिते उभय बिबादीर जे सकल साक्षी गुजरियाछे तदनुसारे उभय बिबादीर पूर्व मुठसेर रीति अनुसारे ठाकुर-ठाकुराणीजीउके वाहारदिगेर शूद्रजाति सेवकेर वाटीते लइया जाओया प्रमाण हइयाछे । एवं ओ पण्डित सदर आमिनेर व्यवस्था द्वारातेओ ठाकुर-ठाकुराणीजिउर शूद्रसेवकेर दिगेर वाटीते गमने देवत्त हानि हओया किछु बोध हय ना । ये हेतु एक बार तथाय गमन करियाछिलेन, ए कारख सापलेर प्रति किछु हुकुम छादेर करार पूर्व ए आदालतेर पण्डितेर द्वाराय एइ व्यवस्था तलब करा उचित हइल जे यदि ब्राह्मणेर प्रकाशीत ठाकुर ओ ठाकुराणीजिउ एक बार शूद्रजाति सेवकेर दिगेर वाटीते गमन करिया थाकेन, तवे पुनराय पूर्व रीति अनुसारे ठाकुर-ठाकुराणी शूद्रसेवकेरदिगेर वाटीते गमन कारिते पारेन कि ना । एवं यदि गमन करेन ताहाते वाहार-दिगेर देवत्तर किछु हानि हय कि ना । एमते हुकुम हइल जे ए आदालतेर पण्डित बल्लदेशेर चलित शाखानुसारे उपरेर लिखित वित्तान्तेर व्यवस्था पञ्च दिवसेर मध्ये दाखिल करेण । व्यवस्था दाखिल करा पर्यन्त सओयाल स्थकिद थाकिल इति ॥—

श्रीर्जयतिराम

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतस्त्रिविदशमिष्टसाहेव-
धर्माधिकरणलिखितेश्वरीशन्दप्रतिपावरसगुणगजेन्दुमितान्दोयमार्चमाओ-
यरसेन्दुमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपत्रं यत्तदन्दोयत्तमाओर-

दिपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्राश्न्यजातिप्रकाशितदेवताविग्रहाभ्यामेकवारं केनचिन्निमित्तेन शूद्र-
जातिसेवकस्य गृहे गतं चेत्तदनुसारेण पुनरपि तन्निमित्तवशाञ्छूद्रजाति-
सेवकस्य गृहे ताम्ब्यां विग्रहाभ्यां गन्तुं शक्यते । तद्वेतुवशाञ्छूद्रजाति-
सेवकगृहगमनेन चैतादृशविग्रहयोर्देवत्वहानिर्न भवति-इति बङ्गदेशचलित-
मन्वादिधर्म्मशास्त्रानुसारिणी व्यवस्येति ।

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणीधर्मांश्च धर्म्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥ इति मनुवचनम् ॥१॥

देशजातिकुलानाञ्च ये धर्म्माः प्राक् प्रवर्त्तिताः ।

सथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥ इति बृहस्पति-
वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीयाङ्कमितदिन-
सम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतिविराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६१)~तरजमा सवालात—

जिला तिरहुतेर कायेस मोकाम सहर आमीन आला सैयद
अबदुल ओ आदिद खान बहादुरे वैंठकेर सवाल सदर
दिमानी आदालतेर पण्डितानेर प्रति ओ वाराणसेर पाठशालार
पण्डितानेर प्रति—

मदारीलालेर उत्तराधिकारि राममञ्जनसिंह आपीलाण्ट
ओ तालेवरसिंह रप्याढरदेर मोकहिमाते मैथिल देशेर चलित

शास्त्रानुसारे ओ बाराणस देशेर चलित शास्त्रानुसारे ओ नदियार चलित शास्त्रानुसारे यवाव लिखेन—इति ।

प्रथम सवाल—एइ ये मैथिलदेशेर चलित शास्त्रानुसारे चिमागेर अर्थ कि—इति ।

द्वितीय सवाल—एइ ये मैथिलदेशेर चलित शास्त्रानुसारे साधारण्य कय प्रकार बटे—इति ।

तृतीय सवाल—एइ ये ए प्रकार कोन साधारण्य आछे, ये हिन्दुजातिर सन्तानहीन कन्यासकलेर अधिकार पितार मृत्युर पर पितामहेर सपिण्ड विद्यमान থাকिते पितृपितामहेर त्यक्त धने हय कि ना इति ।

चतुर्थ सवाल—एइ ये यद्यपि कोनो व्यक्ति आपन पितामहेर पौत्रसकलेर सहित विवाद उपस्थित करिया आपन अंशेर डिगिरि आपालत हइते पाइया ओइ डिगरी अनुसारे दखिलकार हइया आपन जीवन पर्यन्त पृथक् पृथक् असूल बहसील करिया मरियाथाके, तवे एमत विषयेर विभाग बला याइवेक कि ना इति ।

पञ्चम सवाल—एइ ये यद्यपि कोनो व्यक्ति हिन्दु आपन पितामहेर (पौत्र सकलेर सहित पृथगन्व ओ कारोवार ओ दान ओ ग्रहण ओ आय ओ व्यय पृथक् पृथक् करिया ओ पितामहेर त्यक्त किञ्चित भूमि अविभक्त राखितो, ओ ओइ भ्रातासकल आपन आपन अंशेर परिमित असूल तहसील पृथक् पृथक् करितेछिलेन—ए प्रकारे ओइ पितामहेर त्यक्त स्थावर विभक्त जाना जाइवेक कि, अविभक्त जाना जाइवेक । ओ ए प्रकार साधारण्य कन्यार अनधिकारेर कारण हइते पारे कि ना इति ।

षष्ठ सवाल—एइ ये यद्यपि पितामहेर पौत्रसकलेर मध्ये क्रमागत स्थावर विभक्त ना हइया थाके, ओ ओइ स्थावरेर उपरस्वत्व अंशीसकल आपन आपन अंशेर अनुसारे पृथक् पृथक् असूल ओ तहसील करिते थाकेन—तवे ए प्रकारे ओइ स्थावर विभक्तेर मध्ये गणना हइवेक कि ना, ओ ओइ स्थावर विभक्त-

पदेर अर्थ इद्वेक कि ना, ओ ओइ स्थावर विभक्त पदेर अर्थेर मध्ये गणित इद्वेक कि, अविभक्त पदेर अर्थेर मध्ये गणित इद्वेक इति ॥

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रं च यशीशबोशन्दप्रतिपागेगुणगजेन्दु-
मताब्दीयसितम्बरमासीयगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिभृगुवासरे मया प्राप्तं
तद्वलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोक्तं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तत्तदेकदेशे प्रादेशिकस्वत्वव्य-
वस्थापनं मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण विभाग इति ।

अत्र प्रमाणम् —

विभागो नाम द्रव्यसमुदायविषयाणामनेकस्वाम्यानां तत्तदेकदेशोऽ-
व्यवस्थापनम्— इति मिताक्षरा (पृ० १६७) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

विभागशब्दस्त्वनेकस्वाम्यानां द्रव्यसमुदायविषयाणां तत्तदेकदेशो व्य-
वस्थापने शक्तः— इति वीरमित्रोदयादि (योग० पृ० ५२२) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

एकदेशोपासत्यैव गोभूहिरण्यादावुत्पन्नस्य स्वत्वस्य निनिगमना-
प्रमाणाभावेन वेशपिक्रयवहारानर्हतया अव्यवस्थितस्य गुटिकापातादिना
व्यञ्जनं विभागः— इति दायभाग (पृ० ८) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मिथिलादेशचलितशास्त्रानुसारेण साधारण्यमनेकविधमस्ति । तत्
सर्वमघोलिखितवचनजातेष्वेव स्पष्टमिति ॥

अत्र प्रमाणम्—

दानमहणपश्ववष्टहृत्तेनपरिग्रहाः ।

विभक्तानां पृथग् ज्ञेयाः पाकघर्मागमव्ययाः ॥— इति विवादरत्नाकर-
(पृ० ६०६) विवादचिन्तामणि (पृ० २५३) विवादचन्द्र (पृ० ८७)
मिताक्षराक्षीरमिश्रोदय (पृ० ७१६) दायभाग (पृ० २३०) दायतत्त्व (पृ०

१७६) विवादाशुं वसेतु (पृ० ८३) विवादभङ्गाशुं वादिग्रन्थभृतनारद (नाम-
सं० पृ० १५६) वचनम् ॥१॥

साक्षित्वं प्रातिभाष्यं च दानं ग्रहणमेव च ।

विमक्ता आतरः कुर्युर्नो विमक्ताः कथञ्चन ॥—इति वत्सद्वयभृत-
नारद (नामसं० पृ० १५६) वचनम् ॥२॥

येपायेताः क्रिया लोके प्रवर्तन्ते स्वच्छवधतः ।

विमक्तानवगच्छेयुर्लोक्यमप्यन्तरेण तान् ॥ इति वत्सद्वयभृतनारद-
(नामसं० पृ० १५७) वचनम् ॥३॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

मृते पितरि विद्यमानेषु पितामहसपियडेपु पितृपितामहस्यक्तधने येन
साधारण्येन सन्तानरहितदुहितृणामधिकारो न भवति, तत्साधारण्यद्व
भ्रातृणां पितृव्यभ्रातृपुत्रादीनां वा सपिण्डानां परस्परमविभक्तधनाना-
मेकपात्रेन वसतामेकत्र पितृदेवद्विजाचर्चनमायव्यादिकमपि कुर्वतां परस्पर-
मृणप्रातिभाष्यसाक्ष्यादिकमप्य (पा) कुर्वतां^१ तत्तत्कर्मजातमेवेति ।

अत्र प्रमाणम्—

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

चतुर्थप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशं धनं विभक्तमध्ये गणितं भवितुं
शक्नोतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

पञ्चमप्रश्नस्योत्तरम्—

पञ्चमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतत्प्रश्नलिखितपितामहस्यक्तं साधारं
धनं विभक्तमध्ये गणितं भवितुं शक्नोति, एतादृशसाधारण्यद्व कन्या-
धिकारप्रयोगकं भवितुं न शक्नोतीति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ॥

पठप्रश्नस्योत्तरम्—

पठप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशं स्यावरं विभक्तमध्ये गणितं भविष्यति, एतादृशं स्यावरं विभक्तरदवाच्य भविष्यत्येतादृशं स्यावरं विभक्तपदार्थान्तर्गतञ्च भवति ॥—इति मिथिलादेशचलितमनुविवादरत्नाकर-विवादचिन्तामणिवल्लभरूपारिजातविवादचन्द्रप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी धारा-णसीप्रदेशचलितमिताक्षरावीरमित्रोदयव्यवहारमयूखव्यवहारमाधवव्यवहार-कौस्तुभादिग्रन्थानुसारिणी नदियाप्रदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रम-संग्रहविवादाणवसेनुविवादभण्डार्णवादिग्रन्थानुसारिणी च व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ।

ईशवीशन्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमासीपरसेन्दुमितदिन-सम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

१०१ लं जारि—

(६२)—जेला चल्बिस परगनार मोतालक चौकि नवाव-गञ्जेर मोनछफी काछारि हइते सदर देमानि आदालतेर भोयुत पण्डितेर निकट व्यवस्थाकारख सओल पाठान जाय ।

श्रीमतीपार्वतीदासी साकिन नैहाटी ५० हाविलीसहर—

डिगारिदार

श्रीमतीठाकुराणीदासी ओ रामनारायणमित्र— देनदार
कालीप्रसादमित्र ओ वेनिमाधवमित्र ओ मधुसूदनमित्र—
नाबालगदिगेर माता श्रीमतीकरुणामयीदासी—मोजाहेम ।
गोविन्दचन्द्रमित्र सा० गैहाटी ५० कलिकाता—

दोपरा मोजाहेम

दा० २७३।।।॥ टाका माय खरचा—

यद्यपि कमललोचनदे आपन स्थावर ओ अस्थावर विषये ओ आपन स्त्री श्रीमतीठाकुराणीदासी ओ दुइ कन्या श्रीमती-
करुणामयीदासी ओ आनन्दमयीके राखिया परलोक हय आर
करुणामयीदासीर गर्भजातक सन्तान श्रीयुवमधुसूदनमित्र ओ
वेनिमाधवमित्र ओ कालीदासमित्र नाबालग वत्तमान थाके—
एमत दशाय ऐ करुणामयीर माता श्रीमतीठाकुराणी कमललोचन-
देर स्त्री ऐ करुणामयीर स्वामी रामनारायणमित्रेर सम्बलित
कमललोचन मजकुरेर खरिदा ब्रह्मोत्तर ॥१ जमि बन्धकेर द्वाराय
टाका कर्ज लइया थाके, आर डिगरि हओनेर पर डिगरि जारि
द्वाराय प्रविनामार लिखित जमि ऐ कमललोचनेर त्यागी वस्तु
फोक हइया थाके, तथे कमललोचनदेर दौहित्र लोक थाकिते
ताहार त्यागी वस्तु ऐ ठाकुराणीदासी ओ रामनारायण मजकुरेर
देनाय विक्री हइते पारे कि ना । यदि ठाकुराणी मजकुरा ऐ
टाका आपन निज खरच किम्या आपन स्वामीर गयातीथं
पिण्डदान किम्या आपन द्वितीय कन्यार विवाहेर फारण लइया
थाके—एमत तृतीय हेतुते कमललोचन मजकुरेर त्यागी वस्तु
हइते ठाकुराणीदासीर देना परिशोध हइते पारे कि ना इति ।

श्रीर्जयतितराम

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्र च यदीश्वरीशब्दप्रतिपाद्येपुण्यगजेन्दु-
मितान्दीयदिशम्बरमासीयगुणपद्ममितदिनसम्बन्धिबुधवाधरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुषारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य मूलधनिनः कमललोचनदेनाम्नो
दौहित्रेषु विद्यमानेषु कमललोचनत्यक्तधने पत्नीत्वेन जाताधिकारया
ठाकुराणीदास्या मृतधनिपत्न्या प्रश्नलिखिततदर्थं यदि शास्त्रीयावश्यक-
काम्याथं व्यतिरेकेणार्हात् स्वेच्छया स्वामिप्रायेण वा कृतं स्यात्तदा तदण-
परिशोधनार्थं कमललोचनत्यक्तधनस्य विक्रयो भवितुं न शक्नोति; यदि

च ठाकुराणोदासी तदेव ऋणं शास्त्रीयावरयकक्राव्याप्यार्थमर्थात् स्वकीयभरण-
पोषणायथ स्वपत्न्युः भ्राताद्यथ द्वितीयकन्याविवाहायथ वा कृतवती
स्यात्तदा कमललोचनत्वकषणात् ठाकुराणोदासीकृत्यपरिपोषणं भवितुं
शक्नोति—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यव-
स्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागादिग्रन्थभूतयावत्त्वम्-
वचनम् ॥१॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

भुञ्जीतामरणाय ज्ञान्ता दयादा उद्धर्त्तापुत्र्युः ॥ इति दायभागादि-
ग्रन्थभूतकात्यायनवचनम् ॥२॥

भर्तुरीर्ध्वदेहिर्हिक्रियायथं दानादिकमप्यनुमतमिति । वर्चनाशक्ती-
बाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्ती विवक्ष्यमाणोति च-दायभागग्रन्थ-
लिखनम् ॥३॥

कन्या वैवाहिकञ्चैव प्रेतक्रय्येषु यत् कृतम् ।

एतत् सर्वं प्रदातव्यं कुटुम्बेन कृतं प्रभोः ॥ इति व्यवहारतत्त्वादि-
ग्रन्थभूतकात्यायन (आरम्भ ० ५४३.५० ६८) वचनञ्चेति ॥४॥

हैशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयशिवमितदिनस-
म्बन्धिषष्ठ्यवाक्ये मया प्रमुक्तमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६३)—लं० ६७० सदर—

इ० सन १८३६ सालेर १६ मार्च मो० वा० सन १२४२ सालेर
८ चैत्र शनिवारेर श्रीयुव जार्ज इष्टाफोएल साहेब विचारा-
दूर्ध्वेरे आधिपत्येर मोकाम कलिकातार सदर देओयानी आदा-
लतेर मिद्धिलेर रुबकारि—

राणीजयदुर्गा

आपीलाएट—

राणीकृष्णमणी

रेप्पाडएट—

आपीलाएटेर उकिल वर्ग सदासुखपण्डित ओ वंशीवदन मित्र ओ रामना(रा)यण उपस्थित हइल । रेप्पाडएट एयानाम-नामा ओ एस्तहारनामा जारि हओनेओ स्वततः वा उकिलतः उपस्थित हइल ना । अद्य एइ मकईमा संख्यार शृङ्गनामते आमार आधिपत्ये समग्र हइया मिछिलेर कागजसकल पठित हइल । अवधारित हइल ये मोदाहया अर्थात् वादी उभयेर स्वीकृत विमलादास्यार स्वोपाजित सामुदाइक अर्द्धक मौजे राणी प्रानेर अर्द्धक अर्थात् उक्त मौजेर ।) चारि आना अंश पाओनेर दावि उपस्थित करे । मोदाहेहा अर्थात् प्रतिवादी राणीजयदुर्गा विमलादास्या कथिक विक्रयेर आपत्य उत्थापन करिलेक । जेलार सदर आमीन सेइ विक्रयके अबीरा खीर पक्ष हइते अशीद्ध विवेचना करिया वादीके डिक्री देन । ऐ डिक्री आपीले जेला रङ्गपुरेर जजसाहेबेर अग्रे अङ्गिकार पत्र विक्रीर न्याय साज्यस्थ ना हओनेर घोषे स्थिरतर रहिल, एवं विषय हस्तान्तर हओन सिद्ध वाक्येर विशेष हओनेर निमित्त आपील खास प्राह्य हइल । अतएव उपरोक्त विक्रयपत्र साठ्यस्थ कि असाठ्यस्थ—अनुसन्धाने साक्षिगणेर उक्तिसकल दृष्टी करणेर पूर्वें उचित हइल जे आदालतेर पण्डितके जिज्ञासा जाय जे । विधवा स्त्री, जाहार सन्तान सन्तत्यादि जीवहपाय नाइ, एवं स्वहस्ते विषय उपाज्जन करे, से विषय हस्तान्तर करणेर क्षमता राखे कि ना । हुकुम हइल जे एइ रुवकारिर नकल एइ आद्वाय जे आदालतेर पण्डित लिखित प्रश्नेर उत्तर २ दुइ सप्ताहेर मध्ये दाखिल करेण आदालतेर पण्डितेय निकट प्रेरित हय—इति ॥

श्रीज्जयतितराम्

एतदम्माधिकारणाधिपतिओयुतअज्जंइशाओएलवाहेवम्माधिकरण-

लिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दीयमान्वमासीयाद्वेन्दुमितदि-
वसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं तत्तदन्दीयतन्मासीयमत्रपक्षमितदिन-
सम्बन्धचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोशो जातस्तदनुसारेणो-
त्तरं लिख्यते ॥—

मृतसन्तानया विधवया स्त्रिया यदि स्वयमेव धनमुपाजितं स्थातदा
तस्या विधवायास्तद्वनहस्तान्तरकरणक्षमतास्त्वेव—इति बङ्गदेशचलितमनु-
दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

सौदायिके सदा स्त्रीणां स्वातन्त्र्यं परिकीर्तितम् ।

विक्रये चैव दाने च यथेष्टं स्थावरेष्वपि ॥—इति दायभागादि-

(पृ० ७६ 'ग्रन्थधृतकात्यायन(कास्मृ० ६०६।पृ० ११०)वचनम् ॥१॥)

पतिमरणोत्तरं च विधवाया न कश्चित् स्वामी, किन्तु भरणादि-
कर्ता गुरुरेव स्वगुरादिः, अतस्तदानीमजिते स्वातन्त्र्यमेव—इति
विवादभङ्गार्थं २, पृ० १६४ के 'ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईशबोशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दीयमैमासीयरसेन्दुमितदिनस-
म्बन्धचन्द्रवासरे मया प्रमुसमर्पितविचारपत्रसहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीजैयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६४) सर्वशास्त्राभ्यापक पण्डित आदालत देओनि सदर
मोकाम फलिकाता सतचरित्रेषु—

प्रथम प्रश्नमिदम्—

यद्यपि कोन श्रीलोक किछु दिव्यादि राखिया निःसन्तान मृत्यु
हय । ततपरे ताहार त्यर्ज्य धनेर उपर ताहार स्वामीर पितामहेर
सधवा एक कन्या एवं ऐ कन्यार एक दत्तक पुत्र एवं ऐ मृता स्त्रीर
स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातृपौत्र राधागोविन्दनामक एक जना
आर ऐ मृता स्त्रीर स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातृपुत्रवधु श्रीमती-
लक्ष्मीप्रियानाम्नी एक जना एवं तस्य दत्तकपुत्र गोविन्दकीशोर

नामक दाविदार हय; तवे यथाशास्त्र ऐ सकल दाविदारानेर मध्ये कोन व्यक्ति ऐ भूतार त्यज्य घनाधिकारि हइवेक, एवं दत्तक पुत्रेर माता वर्त्तमान थाकिले दत्तक पुत्रके घन पौछिते पारे कि ना— एहार यथाशास्त्र उत्तर लिखिवा । परन्तु दुइ किता वंशावली-पत्रिर नकल तोमार ज्ञातार्थे प्रश्नपत्र सम्बलित पाठान जाइतेछे इति । १ माहे मार्च सन १८३६ इङ्गरेजी मतावक सन १२४२ वा० तारिख १६ माहे फाल्गुन ॥

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्र वंशावलीपत्रद्वयं च यदीशवीरशब्द-प्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्चमासीयद्विपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गल-वासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो वास्तस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति हरिश्चन्द्ररायस्य कृतत्वक्षीसंक्रान्त-घने मृतायाः स्त्रियाः पत्युः पितामहस्य सप्तशकन्याया दत्तकपुत्रस्यार्धा-न्मृतघनिहरिश्चन्द्ररायपितामहदौहित्रस्यैवाधिकारः—इति; एवं दत्तकपुत्रस्य मातरि विद्यमानायामपि दत्तकपुत्रस्यैवाधिकारः—इति वङ्गदेशचलितमनु-दायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि दायभागाविग्रन्थभूतयाश्वत्थस्य-यचनम् ॥१॥

पितामहप्रपितामहसन्ततेरपि दौहित्रान्तायाः पितृदप्रत्यासत्तिकमे-णाधिकारो बोद्धव्यः—इति दायभागग्रन्थलिखनम् ॥२॥

पितृव्यप्रीतामावे पितामहदौहित्रस्याधिकारः—इति दायभागटीका- (पृ० २१८) दायक्रमसंग्रह (पृ० ८) प्रभृतिग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

ईशवीरशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजूनमासीयाङ्कमितदिनसम्ब-न्धिवृहस्पतियासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारवंशावलीपत्राभ्याञ्च उदितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥ —

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६५) यदि कश्चिद्विरपत्यो ब्राह्मणः स्वभार्या समीपवर्तिनः सपिण्डाश्च त्यक्त्वा भूतस्तदा तत्समीपवर्तिनि सपिण्डे विद्यमाने लम्ब-पतिधना तत्तलो स्वभर्तुः स्थावरधन पत्रकरणपूर्वक कस्मैचिद्वत्तवतो चेत्, तत्तत्कीकृतं दानमप्रामाणिकम् ।

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्यार्थ्याहुरनापदि ।

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति विवादचन्द्रप्रस्थ-कृतनिवृत्तिप्रकरणभूतार्थवचनादिति ॥ —

सही—कल्याणमिधपण्डित

आदालत दिवानी जिले तिरहुत बकलम

रामनाथमिधपण्डित ।

शरीराजं स्मृता त्राया पुण्यापुण्यफले समा ।

यस्य नोपरता भार्या देहासं तस्य जीवति ।

जीवत्यर्द्धशरीरेऽयं कथमन्यः समाप्नुयात् ॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती व्रते स्थिता ।

स्त्रीकृतान्यप्रमाणानि कार्यार्थ्याहुरनापदि ॥

विशेषतो गृहक्षेत्रदानाधमनविक्रयाः ॥—इति दासभागविवादचन्द्र-स्थकाशयनवृत्त्यति (पृ० २११) वचनादिति ॥—

सही—कल्याणमिधपण्डित आदालत दिवानी

जिले तिरहुत बकलम

रामनाथमिधपण्डित ।

ल० ३५६ सदर—

५० सन १२३६ सालेर १७ मे मोतावक सन १२४३ सालेर ५ ज्यैष्ठी मङ्गलवारेर प्रकाश्य मोकाय कलिकात्तार सदर देओयानि आदाजतेर मिजिलेर शेवकारि चक आदालतेर हाकिम श्रोयुत जार्ज इष्टा कोवेळ साहेबेर नेसस्ते—

गम्भिरराय, ताहार भृत्युर पर विजयराय ओ गायरह—

आपीलागटान

रेषानडेगटान

मोछमात घनेश्वरी ओ गयेरह

आपीलागटानेर चकिल बजरङ्गीलाल ओ रेषानडागटानेर चकिल मुनशी दादारबक्स हाजीर हइल । एइ मोकईमा अद्य तरतिथ नम्बर मते आमार नेसस्ते रोवकार हइया मिछिलेर कागजात पठोत हइल । ताहार मध्ये ये जेला विरोदतेर आदालतेर पण्डितेर दुइ व्यवस्था मोलाहेजा हइल । यदि स्यात् उक्त दुइ व्यवस्थार मध्ये रेजेष्टर साहेबेर सओयाल ओ जजसाहेबेर सओयालोर मध्ये विभिन्नतार प्रति दृष्टोते आमार निकट कोतो प्रभेद प्रकाश नाइ । किन्तु जे हेतुक प्रकाश आछे—जे एइ मकईमार खाश आपील लिखित व्यवस्थासकलेर लेहाजे मञ्जुर हइयाछे, ए जन्य ए आदालतेर पण्डितके उक्त व्यवस्थासकलेर लिखित जओयावेर यथार्थता तिरहुतेर चलित शास्त्र अर्थात् मैथिल अनुसारे जिज्ञासा जन्य ताहा समर्पन उचित विवेचना हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारिर नकल मोकईमार नथिर प्रन्थितो आसल दुइ व्यवस्था समेत एइ आदालतेर पण्डितेर निटक पाठान जाय । एइ हुकुम, ये उक्त पण्डित दुइ व्यवस्था दृष्टेर पर एइ विषयेर जओयाव जे लिखित व्यवस्थासकल तिरहुत जेलार चलित शास्त्र अनुसारे यथार्थ बदे कि ना—एह सप्ताइ मेयाव मध्ये दाखिल करेन इति ॥

श्रीज्जयतितराम

एतदधर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतबान्धवदृष्टाकोएलसाहेबधर्माधिकरणा-
लिखितेशोशब्दप्रतिपाद्यस्वमुखगजेन्दुमितान्दीयमैमासीयमुनीन्दुमितदिव-
सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रअप्रतिरुत्तरत्रमेव तत्तत्प्रवर्तितोरभुक्तिभिज्ञाख्यायान्तर-
धर्माधिकरणानियुक्तगणितलिखितव्यवस्थाद्वयं च यत्तदन्वीषतन्मासीय-
गजपद्ममितदिनसम्बन्धितनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधा-
जातस्तदनुसारेणोचरं लिख्यते ॥—

પ્રભુસમર્પિતવ્યવસ્થાદ્વયોસ્તાત્પર્યાર્થસ્ત્વયમેવ—કસ્યચિદનપત્યસ્ય મૃતસ્ય બ્રાહ્મણસ્ય પત્ન્યાઃ સ્વસંક્રાન્તપતિસ્થાવરાદિધનસ્ય પતિસમિપ્તેષુ વિદ્યમાનેષ્વન્યસ્મૈ હસ્તાન્તરકરણે હમતા નાસ્તિ, કિન્તુ યાવજીવં ભોગાધિકાર इति । તત્પ્રભુસમર્પિતવ્યવસ્થાદ્વયોપરિલિખિતપ્રશ્નદ્વયલિખિતવૃત્તાન્તે સતિ મિથિલાદેશચલિતશાસ્ત્રાનુસારેણ યથાર્થમેવ ભવતિ. પ્રભુસમર્પિત-વ્યવસ્થાભ્યાં તદ્વ્યવસ્થાદ્વયોપરિલિખિતપ્રશ્નાભ્યાં ચૈતદ્વિવાદે પત્ન્યાઃ સ્વસંક્રાન્તપતિસ્થાવરાદિધનસ્ય હસ્તાન્તરકરણહમતાનોંધકશાસ્ત્રીયાવશ્યક-હેતુવગમાદિતિ ॥—

ઈશ્વરીશબ્દપ્રતિપાદ્યરમુખગજેન્દુમિતાન્દીયજુનમાસીયદ્વાવિશતિતમ-દિનસંબન્ધિબુધવાસરે મયા પ્રભુસમર્પિતવિચારપત્રાભ્યાં વ્યવસ્થાપત્રાભ્યાં ચ નિવેદનપત્રેણ ચ સ્મૃતિયં વ્યવસ્થા દત્તેતિ ॥—

શ્રીજ્ઞયતિતરામ્

શ્રીવૈદ્યનાથમિશ્રેણ

(૯૬)—૯૩ લ૦ સદર—

૬૫ સન ૧૮૩૬ સાજેર ૬ એફરેલ મોતાવક સન ૧૨૪૨ સાજેર ૨૬ ચૈત્ર તારિલ બુધવારેર પ્રકાશ્ય મોકામ કલિકાતાર સદર દેઓયાણી આદાલતેર રોવકારિ ઉક્ત આદાલતેર હાકિમ શ્રીયુત જાજર્જ ઇષ્ટાફોયેલ સાહેબેર પજલાગે—

રામનાથસિંહ—

આપીલાઈટ—

રાજારૂપસિંહ ઓ રાધેકૃષ્ણ—

રેપ્પાડેઈટાન—

આપીલાઈટેર ઓકિલ મુનશી દાદારવકસ ઓ રેપ્પાડેઈટાનેર ઓકિલ મુનશી અલીઝલ્લા ઉપસ્થિત હૈલો । એદ મોરુદના અથ તરાતિવ નમ્બર મટે આમાર નેસત્તે રોવકાર હૈયા મિલ્લિતેર તરાતિવ નમ્બર મટે આમાર નેસત્તે રોવકાર હૈયા મિલ્લિતેર કાગજસકલ વિવેચનાય જાના ગેલો જે મુરુદઆન અર્થાત રેપ્પા-ડેઈટાન રાજારૂપસિંહ ઓ રાધેકૃષ્ણદે નઓયાન પરગનાર દત્તેટ ઓ ગયરહે મોજાહાયેર પર હક-સપ્પા સુરતે દસલ કરણેર દાવિતે

विक्रेता धुरमनसिंह ओ खरिदार रामनाथसिंह नामे जेला साहावादेर देओयाणी आदालते नालिस करिलेक । जेलार जज साहेवेर तजविजे आदालतेर मौलविर स्थाने फनओया अर्थात् व्यवस्था लइया सफा अनुसारे बिरोधोय वस्तुर प्रति मुद्दाइआनेर दावि यथार्थ हथोनेर विशय डिक्री करिलेन ओ सेइ डिक्री द्वितीय निष्पत्त्य स्थाने एलाका आजिमावादेर ग्रेविनशीयन कोटे बहाल करिल, जे वर्तमान आपीलास्ट ताहाते नाराज हइया ए आदालते आपील खास बपस्थित करिलेक । सन १८३३ सालेर २३ जुलाई तारिखेर रोयकारि मते एइ आदालतेर हाकिम रायट हालडन राटर साहेवेर नेसस्त हइते मञ्जुर हइलो । जे हेतुक प्रकाश जे आपील खास मञ्जुरि कारण—ये जाहार उभय पक्ष हिन्दुजाति, से मकदमा तजविज हओया शरा अर्थात् जवनीव धर्मशाखेर अधिकारिके जिज्ञास्यमते । अतएव अन्य विषयसकल तजविजेर पूर्व आदालतेर पण्डितके व्याभोरा जिज्ञाशा उचित । यथा उभय पक्षेर उक्ति प्रकाश करिलेक जे यदि जजसाहेवेर फयशालार लिखित सओयालसकलेर जओयाव बेहारदेशेर चलित शाखानुसारे ए आदालतेर पण्डितेर स्थाने लओया जाय लभ्यजनक हइवेक । अतएव हुकुम हइलो जे एइ आदालतेर पण्डित निचेर लिखित सओयालसकलेर जओयाव दुइ सप्ताहेर मध्ये दाखिल करेण, ओ रोयकारि नकल बाङ्गला तरजमार सहित आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय ॥—

१ प्रथम सओवालि—

देओट तालुकेर हिस्यादार धुरमलसिंह विक्रेता, बाबु रामनाथसिंह खरिदार, राजरूपसिंह ओ राधेकृष्णसिंह इक-सफा तलविर ओजरदार, आर मौराशी तालुक मजकुरार हिस्यादारान, एवं चतुथे पट्टी, जाहाते विक्रेता बेसरिक आछे, ताहारो हिस्यादार राजरूपसिंह ओ राधेकृष्ण ओजरदारेर दाओट तालुकेर

मध्ये अन्य एक मौज्जार खरिदार रुक बाबुरामनाथसिंह । यदि-
स्यान् विक्रेता आपन अंश बाबुरामनाथसिंहेर निरुद्ध बिक्री करे,
उपरेर लिखितेर प्रति विवेचनाय राजरूपसिंह ओ राधेकृष्णेर
हकसफा अर्शे कि ना ॥—

२ द्वितीय सञ्चोयाल—

धूरमलसिंह विक्रेता बाबु रामनाथसिंह खरिदारके सन १२१५
फाल्गुनीर लेखा एक चेता वयनामा मवलगे तिन सत टाकार
कये दे(य), ओ बायनार तारिल हस्ते एक मासेर मध्ये कवाला
लिखिया दिवार ओ तत्कालीन पानेर वाकि मवलगे एक हजार
पञ्चाश टाका लइवार एकरारे लिखिया देय । इति मध्ये राजरूप-
सिंह ओ राधेकृष्ण एक मास गतो हओनेर पूर्व्वे अर्थात् सन
१८२८ सालेर १६ मै तारिले तिन सत टाका उपस्थित करिया
मलवे लओया सुरत अर्थात् तत्परता चेष्टा करिलेक, फलिताथै
प्रादालते दाखिज करिलेक । ए प्रकार विषय एमत आनामत
हक-टाका रक्षा करणार्थ फलदायक हय कि ना ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाभिगतिभोगुतत्राग्नेयशकोएलसहेवधर्माधिकरण-
लिखितेशयोशन्दप्रतिपादयसमुत्पन्नवेन्दुमिताशोयापरेलमासोयविचारपत्रा-
भर्गतप्रश्नप्रतिरुपार्थ यत्तद्विद्वद्भक्तमासोयसंनमितदिनसम्बन्धितनिवा-
मरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुमर्मांतप्रथमप्रश्नलिखितविवेचनया धर्मशास्त्रानुसारेण राजरूप-
सिंहाराधेकृष्णयोर्द्वन्द्वकारान्दपतिरावो भवितुं न शक्नोतीति ॥

अथ प्रमाणम्—

व्यवहारान् नृपः पश्येद्विद्वद्भिः साक्षात् सह ।

धर्मशास्त्रानुसारेण—इत्यादि मितानुवादिसम्यक्प्रवृत्तयश्चरन्त्यः (२१)

वचनम् ॥१॥

यद्ये कर्ताता वहवः पृथग्धर्माः पृथक्क्रियाः ।

पृथक्कर्मागुणोपेता न तत्कार्येषु सम्मताः ॥२॥

स्वभागान् यदि दधुस्ते विक्कीणीयुरथापि वा ।

कुर्यादर्थेष्टं तत्सर्वमीशास्ते स्वधनस्य वै ॥ इति बीरमित्रोदयादि-
ग्रन्थधृतनारदचवनद्वयम् ॥३॥—

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितद्वितीयप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति एतादृशमूल्यस्थापनं हक-
काशब्दप्रतिपादयत्य रत्नार्थं धर्मशास्त्रानुसारेण कलदायकं न भवति— इति
वेहारदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ।

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणत्रयमेवेति ॥३॥—

यद्यपि महानिर्वाणतन्त्रग्रन्थे हककाशब्दप्रतिपाद्यविषये उपरि-
लिखितव्यवस्थाया विरुद्धमपि लिखितमस्ति, किन्तु महानिर्वाणतन्त्रग्रन्थो
धर्मशास्त्रान्तर्गतो न भवति। अत एव तद्ग्रन्थानुसारेण व्यवस्था न
लिखिता इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीरशब्दप्रतिपादयसगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुनमासोयद्वाविंशतितम-
दिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रवहितेयं व्यवस्था
वच्येति ॥—

श्रीज्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६७)—लम्बर—११६

मोकाम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डित
समीपे प्रश्न एइ—

कालीकान्तबल

आपीलाएट

पार्वतीदास्या

रेण्पाडएट

यदि कोन व्यक्ति तिन पुत्र ओ एक स्त्री राखिया मृत्यु हय,
ओ ताहार स्त्री ओ पुत्र दिगेर अनेक्यताभाव अर्थ, तवे एतद्देशीय

चलित शास्त्रानुसारे ऐ मृत व्यक्तिर स्त्री पुत्रदिगेर समक्षे पतिर-
वित्तेर अंश पुत्रदिगेर समाप्त मते पाइते पारे कि ना । यदि पुत्र-
दिगेर समाप्ते वित्तासि ना हय, तवे कि परिमाणे वित्तासि हय-
एह्यार उत्तर लिखिवेन इति । १८३६ ता. ८ फेब्ररओररी मोतावेक
वज्रला सन १२४२ तारिख २७ माघ ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितभरनरत्रं विचारपत्रं च यदोशवीशन्दप्रतिपाद्यरसगुण-
गजेन्दुमिताब्दीवमाचर्चमासोयद्विपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्राप्तं
तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कश्चिद्व्यक्तिविशेषकोऽन् पुत्रानेकां पत्नीं च विहाय मृतः स्यात्,
अथ च मृतस्य पत्न्या सह मृतस्य पुत्राणामप्यग्निमातृपुत्राणां मध्ये पुत्रकृत-
वित्तधनविभागद्वारेणानैक्ये सति अर्थात् त्रिभिः पुत्रैर्मर्त्ये भागमदत्त्वा
वित्तधनं समाशेन विभज्यते, तदा मातापि पुत्रसमाशे प्रक्षीतुमर्हति,
पुत्रकृतवित्तव्यक्तधनविभागोपक्रमं विनैव मात्रा स्वेच्छयेव विभागं कृत्वा
पतित्यक्तधनांशयाचनेन अनैक्ये सति माता वित्तमानेऽन् पुत्रेषु पतित्यक्त-
धनांशं पुत्रांशं समाशानुसारेण प्राप्तुं मर्हति, किन्तु यावज्जीव
स्वपतिकुलोचितमासाच्छादनोपयुक्तधनावश्यकविषयाधर्माद्याचरणोऽनुक्त-
धनस्य चाविकारिणी भवति—इति वक्ष्यदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानु-
सारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पितरि चोपरते सोदरभ्रातृमिविभागे कियमाणे मात्रे पुत्रसमाशो
दातव्यः—इतिदायमाणं (पृ० ६७) ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

भरुणं पोष्यवर्गस्य प्रशस्तं स्वर्गसाधनम्

नरकं पीडने चास्य तस्याद् यत्नेन ते भवेत् ॥ इति दायभागादि-
ग्रन्थभूतमनुवचनम् ॥२॥

पिता माता गुरुर्भार्या प्रजा दीनाः सयाश्रिताः ।

अभ्यागतोऽतिथिश्चैव प्रोष्यवर्गं उदाहृतः ॥ इति दासमामटीका (पृ० ३४) धृतमनुवचनञ्चेति ॥३॥

ईशवीश्वरप्रतिपादरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयबुलाद्गमासीयगुणेन्दुमितः
दिनसम्बन्धिपुष्यवृक्षे मया प्रसुप्तमर्षितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां इक्षुरेजीपत्रा-
भ्यां च सदितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीजर्जयतितराम् श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(६८) लं० २०२ सन १८३३ ।—

मोकाम कलिकातार सदर देओयानी आबालतेर मिछिलेर
रुक्कारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत जार्ज इष्टाकोयेल साहे-
वेर नेमस्ते इराजी सन १८३६ सालेर १६ आपरेल मोतावक
वाङ्गला सन १२४३ सालेर ५ वैशाख शनिवार प्रकाश्य—

शिवनारायणचौधुरि

आपीलाण्ट

राधाप्यारीदासी ओ गयरह

रेष्पाण्डेयटान

राधामोहनमित्र

जेबार मोजाहेम

मधुसूदनदास

एइ आदालतेर छायेल

आपीलाण्टेर उकिलवर्ग जेमेप कोलत्रोक सदरलेण्ड साहेव
ओ सदासुखपरिडत ओ रेष्पाण्डेयटानेर उकिल ताराचौदबन्धो-
पाध्याय ओ राधामोहनमित्रेर उकिल गौरहरिवन्धोपाध्याय ओ
मधुसूदनदासेर उकिल शिवनारायणचट्टोपाध्याय उपस्थित हइल ।
एइ मकई मा अपरिमित तारिखे आमार नेमस्ते रुक्कार हइया
मिछिलेर कागजसकल पठित हइल । बोध हइल जे मोईइ
आपीलाण्ट लाट राधानगर आपन सरिदा पर्वनिर हकियते

દસલ પાઓનેર દાવિતે વચનામાર લિલિત મૂલ્ય ઓ તાલુકેર
 ઉપસ્થર્ત મલતેગ ૭૦૫૧ ટાકાર તાયદાદે રાધાપ્યારિદાસી ઓ
 કુપ્પુદાસદર્ત ઓ તિલકરામદર્ત આસામીયાનેર નામે હુગલિ-
 જેનાર દેઓયાનિ આદાલતે પદ્દ એજદારે નાલિશ કરે જે રામ-
 ગોપાલદર્ત ત્હાર ભાતુગણ તિલકરામદર્ત ઓ રઘુનાથદર્તેર
 સહિત અન્ન પ્રથક હથોનેર પરે સન ૧૨૨૧ સાલે આપન ઉપાલ્લન-
 હથતે નાટ રાધાનગર તાલુક પર્તની સુરતે સ્વરિદ કરિયા દલિલ
 ઓ કાવેજ હથા સોકાન્તર હય । તાહાર મૃત્યુર પર તાહાર
 વનિતા રાધાપ્યારીદાસી આપન સ્વામીર જ્યેષ્ઠ ભાતા તિલકરામ-
 દર્ત ઓ પોષ્ય પુત્ર ઓ વૌહિત્ર કુપ્પુરામદર્તેર સરવરાહકારિર
 દ્વારા દલિલકાર હથા સવર જમિદારેર જમિદારિ સેરેસ્તાય
 આપન નામે લાલિલ કરાથા નામ જારિર લિપિ લાસિલ
 કરિયા સ્વામિર અળ પરિશોધ ઓ માલગુજારિર વાકિ નિમિત્ત
 ઉક્ત તાલુકેર સામુદાઈક હકુક સન ૧૨૩૮ સાલેર ૨૩ ફાલ્ગુણ
 તારિલે મલતેગે પાંચ હાજાર ટાકા પને કરિયાવિર હસ્તે વિક્રય
 કરિયા, તાહાર વચનામા સાત્તિગણેર સાદીતે ઓ રેજેષ્ટરી નિશા
 નીતે લિલિયા દિયા, સારિજ ઓ લાલિલ કરાથા ફરિયાદિકે
 ઓ લાલીલકાર કરાર પરે ઉક્ત રાધાપ્યારિ અન્ય પ્રતિવાદિગણેર
 કુપરામર્શે ફરિયાદિર હસ્તે વિક્રય કરા અસ્વીકાર સમ્બલિત
 ફૌજદારિતે દરસાસ્ત ગોજરાય ઓ ઉક્ત રાધાપ્યારી ઓ તિલક-
 રામદર્ત ઓ રઘુનાથદર્તેર પર્તની દાવિ સુરતે ઓ જગમોહન-
 મિશ્રેર ઓયારિશ રાધામોહનમિશ્રેર ઉક્ત નાટેર ચારિ આના
 રકમે દરપર્તનીદારિ પદે દસલ થાકનેર હુકુમ ઓ લમ્બરિ નાલિ-
 સેર અનુમતિ ફરિયાદિર પ્રતિ છાદેર કરાય । આસામીયાન
 તાહાર જઓયાવે પદ્દ અસ્વીકારી હથા વિરોધીય તાલુક જે
 રાધાપ્યારીર સ્વામી રામગોપાલદર્તેર સોપાલ્લિત ઓ તાહાર ભાતુ-
 વર્ગેર સહિત પ્રથકાન્ને થાકા મુનકીર, વરં પ કાલ પર્યન્ત તાહાર-
 દિગેર તાવત કારવાર સાધારણે ઓ એજમાલોતે થાકા પ્રકાશ

करे, एवं करियादिर दरपेश करा कवाला जाल ओ कित्रिम करार दिया शास्त्र मते उक्ता राधाप्यारिर कन्या ओ दौहित्र वत्तमाने दान ओ विक्रय अशीध्य वयान करे। जेतार जज-साहेव जुरिरदिगेर राय, ए विषयेर विशेष तहकीकाते जे विरोधीय तालुक रामगोपाल दर्तेर स्वोपाखित कि तिन सरिकेर अंश आछे, हइया आपन रायेर ऐक्यताय तदानुसारे सन १२३४ सालेर ३ मार्चय तारिखे लिखित फयसलार कारणमकले करियादिर दावी छिपमिप करिलेन। एइ प्रकारे जे करियादी, यदि राधाप्यारिदास्यार हिस्यार प्रति कोन दावि राखे, प्रथम नालिश उथापन करणेर क्षमता आछे। मोहइ ताहाते नाराज हइया एइ आदालते आपिल करियाछे—जे हेतुक आमार निकट राधामोहनमिश्रेर मोजाहेमो सओयालेर प्रति, जे आपनाके विरोधीय तालुकेर चतुर्भांशेर दरपत्तनीदार करार देय, एइ विवेचनाय जे से ए मर्हमा आसापियानेर मध्ये नहे। केवल दर पत्तनीदार मात्र, कोन हुकुम छादेर करा आपिश्वक नाइ, ओ मधुसूदनदासेर अर्पित दरखास्तेर प्रति ओ जे सं आपन खरिद करिया ए आदालते दाखिल करियाछे, कोन हुकुम उपयुक्त बोध हय ना। जखन ए मर्हमा निष्पत्य हइवेक एवं विरोधीय वस्तु, आपीलाण्ट किम्वा रेफाण्डेण्ट, जाहार हक, हइवेक, ताहार पर दावि उपस्थित करा व्यतिरेके उहार देखलेर हुकुम हइते पारे ना। अतएव ताहा परित्याग करिया ए मर्हमा आसल अव-स्थार प्रति मोहनलालखॉ आपीलाण्टेर मर्हमा प्रसङ्ग ताहा राणी सिरोमखी रेफाण्डेण्टेर नामे सन १८१२ सालेर २१ आगष्ट तारिखे एइ आदालत हइते निष्पत्य पाइयाछे। एवं आमार अनुमाने ताहार लिखित हेतुसकल जावदीय उत्तराधिकारी जाहारा हस्तान्तेर समय जीवतमान याके ताहारदिगेर सम्मति ओ अनुमति भिन्य स्वामीर त्याग्य सामुदाइक विषय हस्तान्तर करणेर विषये अशीद्ध बोध हय। अनुष्ठान करा गेल। ताहाते

आपीलएटेर उकिल कहिलेक जे आमि अनुमान करि से मक-
ईमा दान विषयक, ताहाते पण्डितवर्गेर लिखित जे व्यवस्था
ताहा एइ चिकी विषयक, मकईमार सहित कौन सम्पर्क नाइ ।
ए जन्य ए विषय शास्त्रवेत्ताके जिज्ञाशा करा उचित बोध हइल ।
अर्थात् एइ आदालतेर पण्डितके जिज्ञाशा करा जाय जे से
उपरेर लिखित फयमला दृष्टी करणेर परे सकल उत्तराधिकारि,
जाहारा विक्रयपत्र लेखा हइवार समय जीवईसाय छिल, ताहार-
दिगेर अनुमति भिन्न टाकार परिघर्षे स्वामीर त्याग्य सामुदाइक
भूम्यादि विक्रयेर प्रति विधवा स्त्रीर चमता विषये शास्त्रे आज्ञा
बयान करे, ओ ए विषये स्वामिर श्रुत थाकुन वा ना थाकुन
कोन प्रभेद अछे कि ना; एवं यदि स्यात् स्वामीर त्याग्य सामु-
दाइक भूम्यादि विक्रय फारिते ना पारे, तबे तन्मध्ये कि परिमान
विक्रय करिवा चमता राखे—पट्ट करे । अतएव हुकुन हइल जे
मकईमा अद्य मोलतबी थाके, एवं उपरेर लिखित विषयमकलेर
जिज्ञाशा करेण । एइ सबकारि नकल एइ आदालतेर पण्डितेर
निकट प्रेरित ह्य इति ॥

श्रीज्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकारस्याधिपतिभ्योयुतजार्जइष्टाकोएलसाहेबधर्माधिकरण-
लिखितेद्यबोसन्दमतिपायसगुणगजेन्दुमितान्दीयारेलमासपयसेन्दुमित-
दिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिस्तरत्र यत्तदन्दीयमेइमासीयशिवमित-
दिनसम्बन्धिपुष्यवासरे तत्समर्पितरसगुणगजेन्दुमितान्दीयजुलाइमासीयमुनि-
मितदिवसीयविचारपत्रान्तरञ्च यत्तदन्दीयतन्मासीयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धि-
पुष्यवासरे च भया श्रुत्वं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेण प्रमु-
समर्पितविचारपत्रलिखितक्यत्रावलोकनेन-चोत्तरं लिख्यते—

विक्रयपत्रलिखनकालीनविद्यमानोत्तराधिकारिभिरसमुदायानुमतिमन्तरेण
राजतमुद्राविनिमये पन्थाः स्वसंक्रान्तसमस्तपतिस्थावरादिधनस्य विक्रयकरण-

क्षमता शास्त्रीयावश्यककार्यार्थमर्थात् पतिकृत्यपरिशोधनार्थं पत्नीर्द्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं पतिकुटुम्बभरणार्थं स्वभरणपेषणाद्यर्थं चास्त्येव । पत्नी शास्त्रीयावश्यककार्यार्थं व्यतिरिक्तस्वेच्छया स्वपरत्नानन्तरं विद्यमानपत्युत्ताभि-
कारित्वत्वंनाशकविक्रयकरणक्षमतां न गृह्णीत्येवात्र विशेषः । एवञ्च सति पतित्यक्तस्थापरादिघनान्तर्गतेन यावता घनेन पतिकृत्यपरिशोधनस्योपरि-
लिखितावश्यककार्यान्तरस्य वा निर्व्वाहो भवति विधवायास्तत्परिमितपति-
त्यक्तस्थापरादिघनस्य विक्रयकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वमेव । यदि च पतित्यक्तस्थापरादिभमुदायघनस्य विक्रयमन्तरेण पत्नीकृत्यशास्त्रीयावश्यक-
कार्यजातस्य तदन्तर्गतस्य कस्यचिदपि कार्यस्य वा निर्व्वाहो भविष्यति न
शक्यते, तदा तत्तत्कार्यस्य निर्व्वाहार्थं पत्न्याः पतित्यक्तस्थापरादिसमुदाय-
घनस्य विक्रयकरणक्षमतायाः शास्त्रीयत्वमेव—इति वङ्गदेशनलितदाय-
भागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

ऋययमाही ऋणं दाप्या—इति विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतवाक्य-
वहक्यवचनम् ॥१॥

मर्तृकामेन वा भर्त्रा उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रपञ्चापि सा दाप्या घन यथाश्रितं स्त्रिया ॥ इति विवादार्णवसेतु-
विवादभङ्गार्णवादिग्रन्थधृतकात्यायनवचनम् ॥२॥

भर्त्रा जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद्यद्वा कर्म करोति मृतमर्तृ-
कापि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत—इति
विवादभङ्गार्णवग्रन्थलिखनम् ॥३॥

मर्तुरीर्द्ध्वदैहिकक्रियाद्यर्थं दानादिकमप्यनुमतमिते । वर्त्तनाशक्ता-
वाधानमप्यनुमतम् । तत्राप्यशक्तौ विक्रयणमपि च—इति दायभाग
ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥४॥

ईशकोशब्दप्रतिपादयामुपगमेन्दुभिर्जातैश्चक्रुलाइमाशोयइन्दुपद्ममित-

दिनभ्रमन्निधुषणागरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रेण चतुर्भिर्व्यवस्थापत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्वरिततराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

अत्र प्रमाणम्—

पश्यन्नन्यस्य ददतः क्षिति यो न निवारयेत् ।

त्वामी सतापि लेख्येन पुनस्तान्न समाप्नुयात् ॥ इति बृहस्पति (पृ०

७५)वचनादिति—

सही - रामनाथमिश्र, पण्डित अदालत दिवानी
जिले—तिरहुत ॥

श्रीश्रीदुर्गा

(१००) - जं० १६४—

मोतफरका सन १८३६ इ०—

रोवकारि मिछिल आदालत देओनि सदर मोकाम कलि-
काता श्रीयुत डेविड इरामितसाहेब कायेम-मोकाम हाकिम आदा-
लय मज्जकुरार बैठके । तारिख १८ जून सन १८३६ इ० मोतावक
६ आपाद सन १२४३ वाङ्गला रोज शनिवार ॥—

मोछमात रुकमन—

साएला—

साएलार उकिल तारकचन्द्रराय हाजिर हइलो, गत रोजेर
हुकुमानुसारे जिला भागलपुरेर जजसाहेबेर गत २८ माइ माहार
लिखित रोवकारि ओ रिटरण जाहा एइ आदालतेर हाल सनेर
२४ मार्च माहार लिखित रोवकारिर जवाबे एइ मकदेमार
कागजात ओ ताहार इंजेरि तरजमा सम्बलित पौछियाछिल,
अद्य साएलार सओल ओ गयरह कागजात सहित उपस्थित
हइया विवेचना हइल । जे हेतुक साएलार सओल प्रति नातरु-

(१०१)—पण्डितेर पर सञ्जाल—

श्रीरामराममुखोपाध्याय नामे एक जन छिल । ताहार चारि पुत्र । ज्येष्ठ श्रीरामलोचनमुखोपाध्याय, द्वितीय श्रीराममोहनमुखोपाध्याय, तृतीय श्रीरामतनुमुखोपाध्याय, चतुर्थ श्रीताराचंदमुखोपाध्याय । ताहार मध्ये राममोहनमुखोपाध्याय निःसन्तान फीत करियाछे । आर बाकी तिन जनार ओयारिस वर्त्तमान आछे । ऐ रामराममुखोपाध्याय आपन ब्रह्मोत्तर देठ विद्या जमि बागान आपन एक कन्या कहणामर्षादेवीके दान करे । ताहार दानपत्र एक केता सन ११७४ सालेर २५ वैशाख तारिखेर लिखित दाखिल हइयाछे । ऐ दानपत्रेर शाइद हय नाइ । अतएव जिज्ञास्य एइ ऐ दानपत्रे दानदत्तार ओयारिसान अर्थात् ताहार पुत्रसकल सत्ते यदि दान हइया थाके, आर ऐ दानदत्तार पुत्रेरा सेइ दानपत्रे यदि सात्ति ना हइया थाके, आर दानदात्तार ओयारिशानेर अनुमति व्यतिरेके ऐ दान यदि हइया थाके, तबै एमत दान सिद्ध हय कि ना—यथाशास्त्र इहार व्यवस्था, जाहा हये, लिखिवेन इति । सन १८३६ साल तारिख १२मे ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुत्तमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयञ्च यदीशधीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दीयजुनमासीयवेदेन्दुमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवाशरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति दातृत्तराधिकारिणां विद्यमानतायां दानं यदि वास्तवं जातं स्याद्, एवं तद्दानपत्रे दातृपुत्राः साक्षिण्यो नैव जाताः स्युः, दातृत्तराधिकारिणामनुमतिमन्तरेण तद्दान जातं स्यात्, तत्र तद्दानविषयीभूतं धनं दातृवश्यभर्त्तव्यकुटुम्बभरणोपयुक्तातिरिक्तचेत्तदा तद्दानं शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, तद्दानविषयीभूतं धनं दातृवश्यभर्त्तव्यकुटुम्बभरणोपयुक्तातिरिक्तं न चेत्तर्हि तद्दानं न सिद्ध्यति—इति बङ्गदेशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

कुटुम्बभक्त्यसनादेयं यदतिरिच्यते—इति विवादमङ्गार्यवादिग्रन्थ-
धृतवृद्धस्वतिवचनम् ॥१॥

परममूल्यं भृतिस्तुष्ट्वा स्नेहात्प्रत्युपकारतः ।

स्त्रीशुल्कानुग्रहाय च दत्त दानविदो विदुः ॥ इति तत्तद्ग्रन्थधृतनारद-

(नामसं० पृ० ६०)वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीरानन्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीरसितम्बरमासोपमुनिमित-
दिनसम्बन्धिबुधवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्रैः सहितेयं
व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीज्जयतितराम्—

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१०२)—महामहिम श्रीयुत अभ्यापक महाशय बराबरेपु—
निवेदन ।

प्रथम प्रश्न :—

एक व्यक्ति धनि आपन स्वोपाजित तथा विघ्नपाजित स्थाव-
रास्थावर माय इमारतादि भद्रासन बाटी घागान पुष्करणी तथा
प्रज्ञोत्तर जमि आपन भोग-दखले फायेम थाकिया ओयारिस
चारि पुत्र । ताहार ज्येष्ठ प्राप्त वयस, मध्यमदीगर नाबालगके ऐ
सकल वस्तुते भोग दखले राखिया सन १९०२ साले लोकान्त
हयेन । ताहाते ऐ ज्येष्ठ सहोदर ऐ सकल वस्तु उपाधत्य तथा
किञ्चित २ आपन उपाज्जन-द्वारा ऐ संसार भरण पोपन आन्दाज
१७ वतमर करियाछेन । ताहार मध्ये जमिदारलोक तथा इजारा-
दारलोक कोन ० जमि आटक करियाछिल, ताहाते ऐ एकान्त-
भृत्ति ऐ ज्येष्ठ सहोदर ए जमिर दलिल ओ भोग सममाण देखा-
उया आपन परिशमेर द्वारा ऐ जमिर फमल छाड करिया खालाम

करियाछेन । अतएव ए द्यने ऐ जमिर किरूप अंश हइवेक्, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आझा हय ॥—

द्वितीय प्रश्न :—

ऐ चारि सहोदरेर मध्ये तृतीय आता आपन वनिता ओयारिप राखिया ऐरूप एकात्रवृत्ति थाकिया लोकान्त ह्येन । ऐ मृत व्यक्ति वनिता ओ तिन सहोदर एकात्रवृत्ति थाकिया ताहार मध्ये मध्यम विदेशस्थ हइया आपन चाकुरि द्वारा प्रतिपालन नित्य नैमित्तिक क्रिया आन्दाज २० वत्सर करियाछेन, आर पैतृक भद्रासन वाटी भग्न हइयाछिल, ताहाते अनेक टाका खरब-पत्र-पूर्यक उत्तम करियाछेन । ए द्यने ऐ वाटीर किरूप अंश हइते पारिवेक, शास्त्रानुसारे व्यवस्था आझा हय ॥—

तृतीय प्रश्न :—

ऐसकल ग्रहोत्तर जमिर मध्ये कोनो जमि जमिदार आटक करियाछिल । ताहाते मध्यम ओ कनिष्ठ सहोदर विदेशस्थ प्रजुक्त ज्येष्ठ सहोदर आबालते आपन नाम जारि करिया साधारण्ये धन व्यय करिया ऐ जमिर नालिस करिया आलास करियाछेन । ए द्यने ऐ डिगिरि जमिर किरूप अंश हइवेक व्यवस्था लिखिते आझा हइवेक ॥—

चतुर्थ प्रश्न :—

ऐसकल सहोदरेर मध्ये मध्यम सहोदर संसार प्रतिपालन करिया आसिते छिलेन । अकुञ्जान मते किछु टाका कर्ज हइयाछे । अतएव ए द्यने ऐ संसार भरण-पोषण देना ऐ व्यक्ति परिशोध करिवेक, कि ऋण परिशोध हइया अंश हइवेक, ताहार शास्त्रानुसारे व्यवस्था आझा हय, निवेदनमिति ॥—

श्रीज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रं च यदीशजीशन्दप्रतिपाद्यरसगुण-
गजेन्दुमितान्दीयागस्तिमासीयाभ्रपवमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं
नदवल्लोत्थ यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिखने —

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतां भूमिं समं चतुर्धा विभाज्यैकैको भागश्चतुर्णां भ्रातॄणां भवतीति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

विभजेरन् सुताः पित्रोरुद्धवंशव्ययमृणं समम्— इति दायभागादि-
ग्रन्थधृतयाशकल्यवचनम् ॥१॥

पितेव पालयेत् पौत्रान् ज्येष्ठं भ्रातॄन् यवीयसः ।

पुत्रयच्चापि यत्तेरन् ज्येष्ठे भ्रातरि धर्म्मतः ॥— इति मनुवचनम् ॥२॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

द्वितीयप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति विवादास्पदीभूतमद्रासनवाट्याः समं भागचतुष्टयं कृत्वा एको भागो ज्येष्ठस्य, एको भागो मध्यमस्यैको भागो मृतस्य भ्रातुः पत्न्याः, एको भागः कनिष्ठस्येति ॥

अत्र प्रमाणम्—

प्रथमप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणद्वयम् ॥२॥

विधुयाद्वेच्छतः सध्वान् ज्येष्ठो भ्राता यथा पिता ।

भ्राता शक्तः कनिष्ठो वा शक्त्यपेक्षा कुले स्थितिः ॥ इति दायभा-
गादि (पृ० ६२) ग्रन्थधृतनारद (नभसं० १३५) वचनम् ॥३॥

परत्नी दुहितरश्चैव— इत्यादि दायभागादिग्रन्थधृतयाशकल्य-
वचनम् ॥४॥

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तत्तद्वस्त्रस्रग्भूमोनाम्पत्ये काचिद्भूमिः सराजकरस्थाचराधिपतिप्रतिबद्धा सती ज्येष्ठसहोदरेण साधारण्यघनव्ययेनाभियोगेन च स्वायत्तकृता स्यात्, तदा तस्यां भूमौ द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितानां चतुर्णां समानांश एव भवतीति ।

अत्र प्रमाणम्

द्वितीयप्रश्नोत्तरलिखितप्रमाणचतुष्टयमेवेति ॥५॥

चतुर्थप्रश्नस्योत्तरम्—

चतुर्णां सोदरभ्रातृणां मध्ये मध्यमसहोदरेणाशक्त्या यदृशं भ्रातृ-
चतुष्टयसाधारणकुटुम्बमस्त्वर्थं कृतं स्यात्, तदृशं सर्वैरेवांशिमिः स्व-
स्वांशानुसारेण परिशोधनीयम्—इति वदन्देशचलितमनुदायभागादिग्रन्थानु-
सारिणी व्यवस्येति ॥

अत्र प्रमाणम्—

पितृव्यभ्रातृपुत्रस्त्रीदासशिष्यानुजीविमिः ।

यद् दृष्टीतं कुटुम्बार्थं तद्दृष्टी दातुमर्हति—इति विवादभङ्गार्थवादि-
ग्रन्थ(१ विधा० १९५ ख)धृतबृहस्पति(पृ० ११८)वचनम् ॥१॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगणेन्दुमिताम्बोपाकृत्वरमासोयतुतीयदिन-
सम्बन्धिनश्चासरे मया प्रभुत्वमर्पितप्रश्नपत्रविचारपत्राभ्यां सहितेवं
व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीज्जयतितराम
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

कलिकातार सदर देओनि आदालतेर पण्डितेर प्रति सओ-
याल, एइ ये—यद्यपि ए-वी-नामे दुइ जन सहोदर भ्राता छिलो ।
ताहार मध्ये ए-नामे एक पुत्र राखिया बीनामे द्वितीय भ्राता
विद्यमान थाकिते मृत्यु हय । एवं बी-नामे द्वितीय भ्राता एक
पत्नी एवं कयेक कन्याके राखिया एवं आपन स्वोपाजित ओ
असाधारण धन राखिया आपन भ्रातृपुत्र अर्थात् ए-नामक
आपन भ्रातार पुत्र विद्यमान थाकिते मृत्यु हय । अतएव जिह्वाशा
करा जाइतेछे जे ओइ बी-स्यक्त धन ओइ बीर स्त्रोके किम्वा
कन्याके किम्वा भ्रातृपुत्रके अशिवेरुद्धार व्यवस्था बारा नश-
रे र चलित शास्त्रानुसारे लिखेन इति ।—

श्रीर्जयतितराम

प्रभुसमर्पितशृङ्गरेबीशन्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्रं यदौशवीर्यन्दप्रतिपाद्य-
मुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयजानवरीमासीयगजपक्षमितदिनसम्बन्धिशनिवासरे
मया प्राप्तं तदवलोक्य प्रभुप्रेषितगुरुचरणवसुकिरानीशन्दप्रतिपाद्यमुखोच्च-
रितशब्दार्थविवेचनया च यादृशबोधो ज्ञातस्तदनुसारेणोच्चर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति योजामक शक्तिविशेषतत्त्वजनने
तत्पत्न्याः, पत्न्यभावे दुहितृणा चाधिकारः—इति वाराणसीप्रदेशचलित-
मिताक्षरावीरमिश्रोदयादिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्येति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चेष्ट—इत्यादि मिताक्षरादिग्रन्थभूतपाठबलस्य (२।१३५)-
वचनम् ॥१॥

अनरत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि—इत्यादि तत्तद्ग्रन्थ (मिता० पृ०
२२७) वृत्तविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीर्यन्दप्रतिपाद्यमुनिगजेन्दुमितान्दीयकेरवरीमासीपरसमितदिन-
सम्बन्धिवन्दवासरे मया प्रभुसमर्पिताक्षरेबीशन्दप्रतिपाद्याक्षरप्रश्नपत्रसहि-
तेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

(१०३)—२३६ सन १८३४ ई—

ई सन १८३६ सालेर २४ दिसम्बर मोतावेक वाङ्गला सन १२४३
सालेर ११ पीप तारिखेर सदर देओयानी आदालतेर मिद्धिलेर
रोवकारि उक्त आदालतेर हाकिम श्रीयुत उद्दममनी साहेबेर
वेठके—

मोद्धमावसूर्यकुञ्जर

कारसिद्ध ओ गयरह

आपीलाएट

रेपराडेएटान

आपीलाएटानेर तरफ एइ मरुईमार हामफालेव ई सन १८३६

सालेर १४६६तम्बरेर मकदमार उकिल चारलेस जेमेस कोलत्रोक सदरलेण्ड साहेब ओ मुनशी महम्मद हानिफ ओ एड मकदमार रेण्पाडण्टानेर उकिल चारलेस फ्रेञ्च साहेब ओ बलबन्तसिंह मत्कार ओ नम्बर मजकुरेर मकदमार रेण्पाडण्टानेर तरफ उकिलान तारकचन्द्र ओ श्रीरामराय उपस्थित हइल ओ एड मकदमार आपीलाण्टेर उकिलान सदासुखपण्डित ओ मुनशी दादारबक्स पीडित ओजरे उपस्थित नाइ । एड मकदमा वर्तमान मासेर २२ तारिखे तरतीब नम्बरमते आमार बैठके रोवकार हइया ३३ नम्बर-पर्यन्त कागजात दृष्टीपरे दिवा अवसान प्रयुक्त मोलतवि छिल, अछ पुनराय रोवकार हइया मिछिलेर दाखिल हओया व्यवस्था सकल पठित हइल । जे-हेतुक आमार निकटे निचेर लिखितमते आदालतेर पण्डितके निज्ञाशा आविश्यक-एजन्य हुकुम हइल जे एड रोवकारिर नकल एड हुकुमे जे आदालतेर पण्डित निचेर लिखित सओयालेर जघाय २ दुइ दिवस मेबादे दाखिल करेण-आदालतेर पण्डितेर निकट प्रेरित हय ओ आदालतेर पण्डितेर निकट हइते जवाब आसा पर्यन्त मकदमा मोलतवि थाके ॥—

यदि स्यात् ग्रिहत-जेला निवासी हिन्दुजाति कोन एक व्यक्ति दुइ स्त्री राखिया लोकान्तर हय एवं उक्त व्यक्तिर मृत्युर परे ऐ दुइ स्त्री आपनार दिगेर स्वामीर त्याग्न विषये अधिकारिणी थाकिया प्रत्येक स्त्री आपन आपन गर्भेर एक एक कन्या राखिया सुता हय एवं ऐ उभय कन्यार मध्ये एक जन एक पुत्र राखिया सरे, अपरा एक पुत्र-प्रसूता हइया उक्त पुत्रेर सहित जीवित । ओ वर्तमाना थाके—ए विधाय मृत व्यक्तिर त्याग्न वस्तु जे कन्या मरियाछे ताहार पुत्रे कि जे कन्या एक पुत्रेर (सहित) वर्तमाना आछे ताहाते अर्शिवेक; किम्वा कि । एवं यद्यपि मृा व्यक्तिर ज्ञातिगण, जाहार दिगेर सम्पर्क ऐ मृतेर सहित तिन किम्वा चरि पुरुषेर दुर हय, वर्तमान थाके—ए मृत व्यक्तिर

त्याज्यं वस्तुते ताहार दिगेर प्राप्यता ओ यथार्थतार प्रति शाखेर
आज्ञा कि आछे-ए विपयेर उत्तर मैथिलशाख जाहा त्रिहत
प्रदेशेर चलित तदनुसारे लेखेन इति—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतउद्ग्रममनीसाहेबधर्माधिकरणलिखि-
तेशवीशन्दप्रतिपाद्यरसगुणजेन्दुमितान्दीयदिसम्भरमासीयवेदपक्षमितदिव-
सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मासीयरसपक्षमितदिन-
सम्बन्धितचन्द्रबाधरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-
णोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति प्रप्रौत्रपर्यन्तरहितस्य मृतस्य
स्थवरादिधने जाताधिकारिणोर्दनिपत्योरपरमे विद्यमानपुत्राया दुहितरे-
वाधिकारः ; दुहित्रभावे दौहित्राधिकारः इति कल्पतरुमदनपारिजातविवाद-
रत्नाकरस्मृतिसार-ग्रन्थेषु लिखितः । किन्तु विवादचिन्तामणिविवादचन्द्र-
ग्रन्थेषु न लिखितः इति तृतीयपुरुषीयसपियडानां चतुर्थपुरुषीयसपियडानां
वा अधिकारप्रतिपादकमिथिलादेशचलितशास्त्राचार्यमर्यादधोलिखितग्रन्थ-
जातानां परस्परं विरुद्धमाज्ञाजातमधोलिखितप्रमाणजातेष्वेव स्पष्टीकृतं
विस्तरभयाद् व्यवस्थाया न लिखितम् इति निवेदनम् इति मिथिलादेशच-
लितमनुविवादचिन्तामणि-विवादरत्नाकर-विवादचन्द्र-कल्पतरु-मदनपारि-
जातस्मृतिसारप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

विष्णुः—अपुत्रस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि तदभावे
दौहित्रगामि तदभावे मातृगामि तदभावे पितृगामि तदभावे भ्रातृगामि
तदभावे भ्रातृपुत्रगामि तदभावे यन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि इति ।

बुद्धिदौहित्रानन्तरं पुनः बृहस्पतिः—तदभावे आतरस्तु भ्रातृपुत्रा-
सनाभयः ।

सकुल्याः बान्धवाः शिष्याः श्रोत्रियाश्च घनाहकाः ॥—इति कल्पतरु-
ग्रन्थलिखनम् ॥१॥

दुहितृभावे दौहित्रो धनमाक् । यदाह विष्णुः—

अपुत्रपौत्रसन्ताने दौहित्रा धनमाप्नुयुः ।

पूर्वेषान्तु स्वधाकारे पौत्रा दौहित्रका मताः ।

अयमर्थो गान्धर्वक्येनापि दुहितरश्चैव इत्यत्रैवकारेण द्योतितः ।

दौहित्रस्याप्यभावे पितरो धनभाजौ—इति मदनपारिजातग्रन्थलिखनम् ॥१॥

दुहितृदौहित्रानन्तरं बृहस्पतिः

तदभावे आतरस्तु आतृ-पुत्राः सनाभयः ।

सकुल्या बान्धवाः शिष्याः श्रोत्रियाश्च घनाहेकाः ॥—इति विवाद-
रत्नाकर (पृ० ५१५) ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरो आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः शिष्यः सधनचारिणः ॥

एषामभावे पूर्वस्य धनभाग्युत्तरोत्तरः - इत्यादि विवादचिन्तामणि-
(पृ० २००) विवादरत्नाकर (पृ० ५६५) विवादचन्द्र (पृ० ८०) प्रभृति-
ग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्य (२।१३५) वचनम् ॥४॥

अनपत्यस्य धनं पत्यभिगामि तदभावे दुहितृगामे तदभावे मातृ-
गामि तदभावे पितृगामि तदभावे आतृगामि तदभावे आतृपुत्रगामि
तदभावे बन्धुगामि तदभावे सकुल्यगामि—इत्यादि विवादचिन्तामणि-
(पृ० २३५) विवादचन्द्र (पृ० ८२) विवादरत्नाकर (पृ० ५६५) प्रभृति-
ग्रन्थधृतविष्णुवचनम् ॥५॥

स्वपुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्रस्तदभावे साध्वी भार्या तदभावे
दुहिता तदभावे माता तदभावे पिता तदभावे आता तदभावे तत्पुत्रस्तद-
भावे आसन्नसपिण्डस्तदभावे यथाक्रमं व्यवहितसपिण्डस्तदभावे आसन्न-
सकुल्यस्तदभावे यथाक्रमं व्यवहितसकुल्यः—इत्यादि विवादचिन्तामणि-
(पृ० २४३) ग्रन्थलिखनम् ॥६॥

बृहस्पतिः

यथा पितृधने त्वाम्नं तस्याः सत्स्वपि बन्धुषु ।

तथैव तत्सुतोपीष्टे मातृमातामहे धने ॥

मनुः—

दौहित्रो ह्यसितम् ऋक्थमपुंसस्य पितुर्हरेत् ॥

स एव दद्यात् द्वौ पिण्डौ पित्रे मातामहाय च ॥

एतद्वयं मात्राद्यभावे पत्नीदुहितरः—इत्यादि कमानुरोधेन—इति

विवादचिन्तामणि (पृ० २३६) अन्यलिखनञ्चेति ॥७॥

इंशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्द्रीयफेवरवरीमासीपगञ्जमित-
दिनसम्बन्धिवुधवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

तरजमा सवाल—

(१०४)—अलिफ ओ वे दुइ भ्राता छिलो । ताहार मध्ये कनिष्ठ भ्राता अर्थात् वे पित्रादि-क्रमगत धनोपघातव्यतिरेके किछु धनोपार्जन करिलेक । ताहाते ज्येष्ठ भ्राता अर्थात् अलिफेर किछुइ स्वत्य छिलोना । वरं आपन जीवदशा-पर्यन्त अलिफ किछुइ अंश ऐ धनेर पाय नाइ ओ एक पुत्र राखिया मृत्यु हइलो । ताहार पर कनिष्ठ भ्राता आपन छौ ओ कन्या सकलके राखिया मृत्यु हइलो, एवं उक्त व्यक्ति पुत्र किम्बा पौत्र किम्बा प्रपौत्र किछुइ राखे ना । अतएव प्रश्न करा जाइतेछे जे उपरे ये प्रकार लिखा गेलो ताहाते ऐ कनिष्ठ भ्रातार त्यक्त धने ताहार स्त्रीक अर्शिवेरु किम्बा ताहार स्त्रीके ना अर्शिया ताहार ज्येष्ठ भ्रातार पुत्रके अर्शिते पारिवेरु इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितपारसीशब्दप्रतिपाद्याचरप्रश्नपत्रमंगरेजीशब्दप्रतिपाद्याचर-
पत्र च यदोशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्द्रीयफेवरवरीमासीपगञ्ज-
मितदिनसम्बन्धिवुधवासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते मति वेनामकव्यक्तिविशेषत्यक्तधने
तत्पत्न्याः पत्न्यभावे दुहितृणां चाधिकारः—इति वाराणसीप्रदेशचलितमनु-
मिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम् —

पत्नी दुहितरश्चैव—इत्यादि मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थधृतयाश्वस्वय-
(२।१३५)वचनम् ॥१॥

अनपत्यस्य धनं पत्न्यभिगामि तदभावे दुहितृगामि—इत्यादि तत्तद्-
ग्रन्थ(मिता० पृ० २१७)धृतविष्णुवचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीरशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयफेरवरीमासीयगुणपक्ष-
मितदिनसम्बन्धिवृद्धस्यतिवासरे मया प्रभुसमर्पितपारशीशब्दप्रतिपाद्याक्षर-
प्रश्नपत्राक्षरेओशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्राभ्यां सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥—

श्रीर्जयतितराम् श्रीर्विघनाधमिश्रेण

(१०५) —मोकाम कलिकावार सदर दैद्योनि आदालतेर
इंसन १८३६ सालेर १९ मे मोतावेक बाङ्गता सन १२४९ सालेर
७ ज्यैष्ठ वृहस्पतिवार दिवसेर श्रीयुत ओल्लियेग घाडिनसाहेवेर
वैठकेर गैवकारि—

भेकनारायणसिंह—

वनाम—

तिलकधारसिंह ओ भेकनारायणसिंह ओ गयरह छापलेर
उकिलदिगेर मध्ये एक व्यक्ति मुनशी दादारवक्स ओ द्वितीय
पक्ष सदाशिवसिंह ओ भनकसिंह ओ तिलकधारिमिंह खोद ओ
मृत रङ्गलालसिंह ओ अमृतलालसिंहेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण
ठाकुरसिंह ओ कालुसिंह ओ भुवनसिंहेर ओल्लिर उकिल मुनशी
होळेन आलि हाजिर आइलेन । द्वितीय पक्षेर छयोतल कवेक
विषयेर सम्बलित उदारदिगेर उकिलेर नामेर एक वंता ओकाल-

लतनामा ओ लाला काशीप्रसादेर नामेर मोक्षारनामा सहित जे एइ मासेर १२ तारिखे दाखिल हइयाछिल अछ दरपेस हइया छापलेर खास आपीलेर छओल ओ गायरह पे छओलेर एला-कार कागजसकलेर सहित ओ छापल जे सकल कागज सन हालेर १४ आपरेलेर दरपेस हओ। आपन छओलेर सम्बलित गुजराइया छिल, दिष्टे आइल। परे द्वितीयपक्षेर वकिल गोपाल-चन्द्र ओ गायरह आपिलाएदान, बाबु कुङ्करसिंह रेष्पाडएदेर २६०५ नः मोरुईमार सन १८३० सालेर ३ आपरेल तारिखेर एनफज्जालि रोवकारिद नकल एक केता दाखिल करिलेक, पाठ करा गेल। तदपरे छापलेर दाखिल करा मोतिलाल ओ कल्यान-सिंह आपीलाएदान प्रजलाल ओ गायरह रेष्पाडएदिगेर मोरुईमार सन १८३५ सालेर १ जुलापर ए आदालतेर हाकिम श्रीयुत जाले इष्टाकोपल साहेवेर बैठकेर रोवकारिद नकल दिष्ट करिया ऐ मोरुईमार मिछिल सेरेस्ता हइवे तलय करिया मोरुईमा मजकुरेर दाखिल हओ। ए आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था दिष्ट करिया घोष हइजो जे ए आदालतेर पण्डित वैद्यनाथमिध ये व्यवस्था ए मिछिले दाखिल करियाछैन ताहा ऐ मोतिलाल ओ कल्याणसिंहदिगेर मोरुईमार दाखिल हओ। एहार व्यवस्था विपरीत। आर युद्यपि स्यात ए मोरुईमार ओ मोतिलाल ओ गायरहेर मोरुईमार प्रश्नसकलेर लिखित शब्दसकल जाहेरा अन्यथा हइयाथाके। किन्तु ए दुइ मोरुईमार प्रश्नसकलेर मर्म एकर आकार राखे एजन्य आमार निकट ए मोरुईमा द्वितीय धार विवेचनार जोग्य, ओ ए मोरुईमार आपिल खास मजूरिद जोग्यघोष हइया हुकुम हइल जे छापल एक मास संख्यार मध्ये खास आपिलेर वक्की सरतसकल आमले आने आर कागजात मोर ओब करिबार अन्य ए आदालतेर कायेम मोकाम हाकिम श्रीयुत डेओट इपमिट साहेवेर हजुरे पाठान जाय, आर एइ

रोवकारिर नकल पद हुकुमे जे ए मोकदमा ओ मोतिलाल ओ गायरहेर मोकदमार प्रश्नसकलेर मम्म ओ अभिप्राय एक दुइ बाते ओ दुइ मोकदमार घेपरित्य व्यवस्थासकल देशेनर कारण कि, नकल-रोवकारि प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन—ए आदालतेर पसिहवके अर्पन करा जाय इति ॥—

श्रीर्जयतितराम्

एतदधर्माधिकरणाधिपतिश्रीयुतश्रीलियमबेराडोनसाहेबधर्माधिकरणा-
लिखितेशबीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमितान्दीयमैमाधीयाङ्गेन्दुमितदिव-
सीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यच्चदन्दीयजुनमासीयगजेन्दुमितदिन-
सम्बन्धिशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य आदृशबोधो जातस्तदनुसारेणो-
त्तरं लिख्यते ॥—

प्रभुसमर्पितैर्द्विवादविषयकप्रश्नस्त्वथवेव । यदि तोरभुक्तिगिज्ञा-
ख्यावान्तरदेशनिवासिनो द्वौ हिन्दुजातीयौ स्वस्वपित्रादिक्रमागतस्थावरधनं
साधारण्येन भुञ्जानौ श्रृणुप्रस्तावप्राप्तव्यवहारपुत्रवन्तौ च स्वस्वपित्रादि-
क्रमागतस्थावरभित्तश्रृणुपरिशोधनोपयुक्तधनरहितावशक्त्या श्रृणुपरिशोध-
नार्थमप्राप्तव्यवहारस्य स्वस्वपुत्रस्य विद्यमानतायामपि स्वस्वपित्रादिक्रमागत-
स्थावरधनस्य विक्रयणं तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च कृतवन्तौ स्याताम्,
तदैवाहशविक्रयस्तमालिकशब्दप्रतिपाद्यं च पश्चिमदेशचलितशास्त्रानुसारेण
सिद्धवति न वेति । अनेन श्रृणुपरिशोधनस्योपायान्तररहिताभ्यां स्वस्वपित्रा-
दिक्रमागतस्थावरधनविक्रयतमलिकशब्दप्रतिपाद्यकृत्यभ्यां हिन्दुजातीयाभ्यां
तद्व्यपिशोधनरूपस्यातोवावश्यकस्य कर्मणः सम्पत्त्यर्थमप्राप्तव्यवहारपुत्र-
वद्भ्यां पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयणं तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च
कृतमिति निश्चितम् इति । एतादृशावश्यककार्याग्रे दासकृतस्यापि धनि-
पित्रादिक्रमागतस्थावरधनविक्रयस्य तमलिकशब्दप्रतिपाद्यस्य च सिद्धे-
शशास्त्रीयत्वेन श्रृणुपरिशोधनोपयुक्तधनान्तररहितेन श्रृणुप्रस्तेन पित्रा कृतस्य
तद्व्यपिशोधनार्थमप्राप्तव्यवहारस्य पुत्रस्य विद्यमानतायां पित्रादिक्रमागत-
स्थावरधनविक्रयस्य तमलिकशब्दप्रतिपाद्यस्य च सिद्धेः शास्त्रीयत्वस्य

निस्तन्दिग्धतया अर्थसिद्धत्वात् । सर्वत्रैव शास्त्रे विशेषतो लिखितमस्ति
 आवश्यककार्थार्थं पितृकृतं पित्रादिकमागतस्थावरधनविक्रयणं तमलिक-
 शब्दप्रतिपाद्यं च शास्त्रोपमेव भवति । अतएव प्रभुकृतैतद्विवादविषयको-
 परिलिखितार्थप्रतिपादकप्रश्नस्योत्तरव्यवस्थायां प्रमुखमपि तदप्रश्नलिखित-
 वृत्तान्ते सत्येतादृशविक्रयस्तमलिकशब्दप्रतिपाद्यं च शास्त्रानुसारेण सिद्धव-
 तीति मया लिखितमिति । मल्लाल-कल्याणसिद्धार्थस्त्रजलाल सीताराम-
 प्रभृतिप्रत्यर्थिकविवादविषयकश्रीयुतबार्जहृष्टाकोएलसाहेबाभिधानैतद्वर्मा-
 धिकरणाधिपतिकृतविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नानामध्ये प्रथमप्रश्नस्वयमेव ।
 वेदार्देशचलितशास्त्रानुसारेण भित्तुः पितामहस्य वा पुत्रस्य पौत्रस्य वा अ-
 नुमतिं विना पित्रादिकमागतस्थावरधनस्य हस्तान्तरकरणञ्चमतास्ति न वेति ।
 पुत्रस्य मरणानन्तरं पौत्रानुमतेरावश्यकतास्ति न वेति द्वितीयः । यदि च
 पित्रादिकमागतस्थावरधनस्य तद्देशचलितशास्त्रानुसारेण विक्रयस्य निषेध-
 स्तदा धर्माधिकरणाधिपतिभिस्तद्विक्रयस्य परावर्त्तनं कर्तुमावश्यकं भवति-
 न वेति तृतीयः । पित्रादिकमागतवस्तुमुदायस्य यस्मिन्निद्वस्तुनो वा हस्ता-
 न्तरकरणविषये शास्त्रे किञ्चिद्विशेषः प्राप्तुं शक्यते न वेति चतुर्थः । एतेषां
 चतुर्णां श्रीयुतबार्जहृष्टाकोएलसाहेबाभिधानैतद्वर्माधिकरणाधिपतिकृत-
 विचारपत्रलिखितानां प्रश्नानां मध्ये कुत्राप्येतादृश पदं नास्ति येनैत-
 द्दिक्रयस्यावश्यककार्थार्थताया बोधो भवितुं शक्नोति । अतएवेतैश्चतुर्भिः
 प्रश्नैः पित्रादिकमागतं स्थावरधनमावश्यककार्थार्थमन्तरेणाधातुं स्वेच्छयैव
 पश्चा हस्तान्तरं कृतमित्येव निश्चितं भवति । अतएव मया तत्रोत्तरं लिखितं
 भित्तुः पितामहस्य वा पुत्रानुमतिं विना पौत्रानुमतिं विना वा पित्रादिकमा-
 गतस्थावरधनविक्रयस्य स्वेच्छया चमता वेदार्देशचलितशास्त्रानुसारेण
 नास्तीति । अनेनावश्यककार्थार्थं पित्रादिकमागतस्थावरधनविक्रयस्य
 चमता सामान्यतः पुत्रानुमतिमन्तरेण पौत्रानुमतिमन्तरेण वा भित्तुः पिता-
 महस्य वास्त्येवेति । अस्य स्पष्टत्वेन शास्त्रानुसारेण अनुमतिदानानर्हता-
 व्यवहारपुत्रानुमतिमन्तरेण श्रृङ्खपरिशोधनरूपातीरावश्यककार्थार्थं तद-
 परिशोधनोन्मुक्तफनान्तररहितस्य भित्तुः कन्मागतस्थावरधनविक्रयस्य चमता
 शास्त्रानुसारेण स्पष्टतैव । श्रीयुतबार्जहृष्टाकोएलसाहेबाभिधानैतद्वर्मा-

धिकारणाधिपतिकृतोपरिलिखितविवादविषयकविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नाशयानां प्रभुकृतैतद्विवादविषयकावश्यककार्यार्थविक्रयतमलिकशब्दप्रतिपाद्यप्रतिपादकप्रश्नाशयस्य च मेदः स्पष्टतर एव । तद्व्याख्यानस्यावश्यकता नास्ति । अत्रातन्व्यवधारस्य पुत्रस्य पित्र्यमानतायां तदनुमतिमन्तरेणावश्यककाम्यार्थं पित्रा कृतस्य क्रमागतस्यावरधनविषयकहस्तान्तरस्य तिदिविषयिणी पश्चिम-देशचलितशास्त्रानुसारिणी व्यवस्थाप्येतद्वर्माधिकरणे पूर्णं जाता । तदनुसारेण तद्विवादनिष्पत्तिरप्येतद्वर्माधिकरणे जातास्तीति निवेदनमिति । इशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमार्चमासीयगभपक्षमित-दिनसम्बन्धिपद्मगलवासरे मया प्रमुखमर्पितविचारपत्रसहितेदमुत्तरं दत्तमिति ।

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

श्रीकृष्णः सहाय

(१०६)—पण्डिते पर सञ्जाल—

काशीनाथचौधुरिनामे एक व्यक्ति फौज करियाछे । ताहार सपिण्ड ज्ञाति अर्थात् तिन पुरुषीया ज्ञाति केह ओयारिस नाइ । एइ स्थले ऐ काशीनाथेर मातुल रामवयसिमलाइ ओयारिस हइते पारे कि ना ऐ मोतओफार पञ्चम-पुरुषान्त ज्ञाति ऐ काशीनाथ मोतओफार ओयारिस अर्थात् उच्चराधिकारि हइते पारे धाङ्गलादेशेर चलन शायानुसारे इहार जे व्यवस्था ताहा ऐ सञ्जोयालेर दक्षिणपार्श्वे लिखिवेन । इति सन१२३६वर्षा१६ आगष्ट मो० सन १२४३ तां ५ भाद्र ॥—

श्रीर्जयतितराम्

प्रमुखमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयमद्वारेवीशब्दप्रतिपाद्यपत्रं यदी-
शवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयमुनीन्दुमितदिनस-

स्वन्विशनिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते —

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतस्य काशीनाथचतुर्दशीणस्य
स्यक्तघने यदि तस्य पुत्रमारभ्य मातामहपर्यन्तानामध्ये कश्चिन्नास्ति
तदा तन्मातुलस्य रामज्येष्ठिमलाइनाम्न एवाधिकारः—इति बङ्गदेशचलित-
मनुदायभागदायतत्त्वदायभागदीक्षादायक्रमसमर्हस्विवादायवसेतुविवादभङ्गा-
र्यावप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति ॥ —

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ।

तत्सुतो गोत्रजो बन्धुः—इत्यादि उपरिलिखितग्रन्थधृतयावत्स्य-
(२।१३५)वचनम् ॥१॥

प्रपितामहसन्तानस्य दौहित्रान्तस्य मृतभोग्यपिण्डदातृभावे मृत-
देयमातामहादिपिण्डदानेन पिण्डानन्तर्याम्मातुलादिग्रहणार्थं 'बन्धु-
पदं' प्रयुक्तवान् याज्ञवल्क्यः । मनुना तु पिण्डदानानन्तर्यवचनेनैव
दर्शितं मृतदेयमातामहादिपिण्डत्रयस्य मातुलादिभिर्द्वौयमानत्वान् मातु-
लाद्यर्थत्वं धनस्य धनद्वारेण तस्यापि पिण्डदातृत्वात्—इति दायभाग-
(पृ० २०६)ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

तदभावे मातामहस्तदभावे मातुल—इत्यादि दायक्रम संग्रहग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥३॥

ईशवीर्यशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमाद्योपरकमितदिन-
सम्बन्धिगुरुकासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्करेवीर्यशब्दप्रतिपाद्यत्राभ्या-
विचारपत्राभ्यां च सहितेय व्यवस्था दत्तेति ॥ —

श्रीज्जयतिराम्

श्रीवचनाथमिश्रेण

(१०७)—नोकाम कलिकावार सदर देओनि आदालतेर
पण्डितेर पर सओल्लः करियादि श्रीधुनाथराय ओ श्री राधा-
नाथराय ओ श्रीगोपीनाथराय सा० कपिलेश्वर पराणो उसडा

आसामी कुँदपाड़ा साकीनेर श्रीसमशेर खाँ वनामे जमि दखल पाओवत नालिस करे ऐ मोकईगार एक व्यवस्था लओओ आधिश्चक हईल । विवरण एइ—फरियादियान जे जमिन्दखलेर प्राधेनाय नालिस करे ऐ जमि पूर्व पट्टीदास सिद्धान्तेर छिल । ऐ पट्टीदास एक पुत्र जगन्नाथपञ्चानन आर दीहित्र फरियादियानेर पिता भवानीशंकररायके राखिया लोकान्तर हयेन । आर ऐ जगन्नाथ आपन जीवितमान पय्यँन्त आपन पितार विषयेते भोगवान थाकिया अगुवक आपन स्त्री यशोदादेव्या ओ भवानीशंकररायके राखिया लोकान्तर हयेन । यदि ऐ अवीरा यशोदादेव्या सन १२१८ साले आपन स्वामिर अणपरिशोद अर्थ ऐ विरोधीय जमी आसामिके विक्रय करिया थाके आर सेइ विक्रयानुसारे ऐ जमिते आसामि भोगवान थाके आर ए काल पय्यँन्त फरियादियानेर पिता ए विषयेर कोन आपत्त ना करिया थाके, तवे शाखानुसारे ऐ विषय सिद्ध हय कि ना । आर फरियादियानेर दावि ऐ विषयेर पर अर्शे कि ना—इहार व्यवस्था बाङ्गलार चलन शाखानुसारे जे हय एइ सओलेर दक्षिण पार्शे लिखिवेन । इति सन १८३६ साल १६ शेतम्बर ॥

श्रीर्जयतितराम

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रद्वयमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीयमहेन्दुमितदिन-सम्बन्धिनिवासरे मया प्राप्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-ओचरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति अवीरया यशोदादेव्या यदि स्वसंक्रान्तपतिस्थावरधनस्य विक्रयस्वपतिकृतार्थपरिशोधनार्थमेव वास्तवं कृतः स्यात्तदेतादृशविक्रयशस्यानुसारेण सिध्यति एषं तद्विक्रयस्य सिद्धौ सत्यामर्पिनां चाभियोगस्तद्विषये शास्त्रीयो न भवतीत्यर्थसिद्धमेव—इति वङ्गदेशप्रचलितमनुदायमागादिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

अथयमाही ऋणं दाप्यः—इतिविवादार्यवमेतुविवादमन्तार्यवादि-

(१ विवा १७६ ल) ग्रन्थपुतवाक्यवल्गु (२१५१) वचनम् ॥१॥

मर्तुकामेन वा मर्त्ता उक्ता देयमृणं त्वया ।

अप्रश्नापि सा दाप्या धनंयथाश्रितं स्त्रिया ॥—इति तत्तद्ग्रन्थ(पृ०६०)

(१ विवा २०६) पुतकाशयन(कास्मृ० ५४७ापृ० ६६) वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दोयमैमासीयार्कमितदिनन-
भन्विभुक्तवासरे मया प्राप्तवमर्पितप्रश्नपत्रेण विचारपत्राभ्यामद्वरेदोशब्द-
प्रतिपाद्याक्षरपत्रेण च संहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१०८)—तं १४७ सन १८३५ साल मो० कलिकातार सदर
वेधोनि आदालतेर इ० सन १८३७ सालेर २ मार्च मोतावेक
वाङ्मला सन १८४३ सालेर २० फाल्गुन वृहस्पतिवार दिवसोर
श्रीयुतओलीयमन्नाडीनसाहेब पे आदालतेर हाकिमेर बैठकेर
रोवकारि—

श्रीमसितओषकलकुडर—

आपीलाएट

श्रीमतिनन्दकुडर ओ गैरह—

रेप्पाहएटान

आपीलाएटेर उकिल लाला वस्ति ओ रेप्पाहएटानेर उकिल-
गण मुनसि हुचन आली ओ जेमेछ कुलवरूक छदरलपलाएड साहेब
जे छदरलपलाएडसाहेबेर नामेर, ओकालतनामा अद्य गुजगियाछे
हाजीर आइलेन ए आदालतेर हाकिम श्रीयुतओरुममनिसाहेबेर
गत २१ फिशरिओयारिर हुकुमानुसारे ए मकदमा गतकल्प
आमार बैठके रुवकार ओ गत कल्पेर रुवकारिर बिस्तारित
लिखित फागजसकल पाठ इइया स्थकित छिल । अद्य पुनराय
रुवकार इइया सदर आमीन अलार ओ जजसाहेब मकदमार

पकी कागजसकल ओ ए आदालतेर कागजसकल प्रसंसीय हाकिमेर गत २१ फिब्रिओयारिर रोबकारिर लिखित राएर सम्बलित पाठ करा गेल । परे आपीलाएटेर उकील सन १२०७ फसलिर ११ कार्तिकेर लिखित श्रीमति सुगन्धाकुङ्करेर लिखिया देया हेवानामार नकल एक केता दुइ टाका मूल्येर किरिस्तिर द्वाराय लम्बरे दाखिल करिलेक दृष्टे थाइल बोध हइलो जे भोलासिंहनामक श्रीमतिसुगन्धानामक एऊ ओ श्रीमतिनन्दकुङ्कर ओ वदनकुङ्कर दुइ कन्या व्यातित द्वितीय उत्तराधिकारि राखितो ना, ओ उक्त भोलासिंह आपन निज दखील ओ वण्टकि पैत्रीक विषय आपन खीर सम्मतिते आपन कन्यार दिगेरके जवानि हेवा करिया हेवा नामा लिखिया देओर जन्य आपन ओ श्रीमतिसुगन्धाके अनुमति करियाछे तदनुसारे श्रीमतीसुगन्धा उहार स्वामि भोलासिंहेर मृत्युर पर आपन स्वामि अनुमत्यनुसारे आपन जामातागण अर्थात् मित्रजितसिंह ओरफे बुलाकिसिंह उक्त नन्दकुङ्करेर स्वामि ओ केनरसिंह उक्त वदनकुङ्करेर स्वामि नामे हेवानामा लिखिया दियाछे ओ तदनुसारे मित्रजितसिंह ओ केनरसिंह श्रीमतीसुगन्धार सम्मतिते कालेट्टरि सेरस्ताय आपन-आपन नाम दाखिल करिया अनेक दिवस हेवा करा विषयेर पर दखिल ओ कायेज आछे । ओ शाखेर वृत्तान्त हात हओओ एइ विषय जे भोलासिंहेर एमत क्षमता जे आपन निज दखलि मीरुशी विषयेर अंश जे अनेक दिवस वण्टक इइयाछे आपन कन्यागत ओ जामातागणके आपन खीर सम्मतिते हेवा करिते पारे कि ना, आर ए प्रकार हेवा मैथिल देशीय चलित शास्त्रानुसारे ग्राह्य ओ सिद्ध वटे कि ना । उचित बोध हइल ए जन्य हुकुम हइल जे एइ रोबकारिर नकल एइ हुकुमे जे उपरेर लिखित विषयेर प्रत्युत्तर एइ रोबकारिर नकल प्राप्त दिवसावधि एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन ओ आदालतेर परिदतके अर्पन करा जाय इति—

एतद्वर्माधिकरणाविपत्तिभूयुतश्रोत्रियमवेपथीनसाहेवधर्माधिकरण --
लिखितेशबोशन्दप्रतिपाद्यमुनिगुणयजेन्दुमिताब्दीयमार्चमासीयद्वितीयदिव -
सीयद्विचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यच्चदन्दीयतन्मासीयमुनिपक्षमितदि-
नसम्बन्धिचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोशो आतस्तदनुसारे-
णोत्तर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितवृत्तान्ते सति भोलाविहनामा कश्चिद्
व्यक्तिविशेषः पित्रादिकमायतस्वावचीभूतविभक्तविषयस्य स्वगतीसम्भत्त्या
स्वकन्याम्भो जायादुभ्यो दानं कर्तुं शक्नोति । एतादृशदानं च मिथिला-
देशचलितशास्त्रानुसारेण विध्यति—इति मिथिलादेशचलितमनुविवाद-
चिन्तामणिद्विवादचन्द्रविवादरत्नाकरकल्पतरुमदनपारिजातस्मृतिछारप्रभृति-
ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्येति—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यकारणम्—इति मनु(५।१५२)वचनम् ॥१॥

पश्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात् प्रत्युपकारतः ।

सीशुल्कानुमहार्थं च दत्तं सप्तविधं विदुः ॥—इति कलरतद्विवाद-
रत्नाकर(पृ० १३३)प्रभृतिग्रन्थपूतनारद(ना० ख० पृ० ६०)-
वचनम् । २॥

तान्येष तु प्रमाणाणि भर्ता यद्यनुमन्यते—इति नारदस्मृत्यादिग्रन्थपूत-
नारदवचनम् ॥३॥

ईशवीशान्दप्रतिपाद्यमुनिगुणयजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयनक्षमितदिनस-
म्बन्धिचन्द्रविवादरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखितेषं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीज्जयतिहराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१०६)—प्रश्न वनाम परिहृत आदालते सदर देशोनि—

१, दत्तं दानविशेषं विदुः—इति पाठे, पाठः ।

यद्यपि कोन वेक्तिर कुलाचारे एवम रित थाके ये अवीरा
 स्त्री ओ कन्या ओ दीहित्रेर नाम जमिदारिते जारि हइवेक नाइ,
 आर यद्यपि उभय विवाहिर पूर्व पुरुषादगेर आपसे ऐमत एकरार
 लेखा पढा हइया, ऐ रित चलित थाके, तवे पुनराय शास्त्रानुसारे
 व्यवस्थार आविश्यक हय कि ना । यद्यपि आविश्यक हय, तवे
 अवीरा स्त्रीर नाम ताहार स्वामीर त्यक्त वस्तुते जारि हइते पारे कि
 ना—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे एइ प्रश्नेर पार्शे लिखिबेन इति—

श्रीर्ज्जयतिनराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं चाङ्कुरेश्वरप्रतिपाद्याक्षरपत्रमा-
 शापत्रञ्च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमाचर्ममासीयदि-
 भित्तदिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
 सारेणोत्तरं लिख्यते—

यद्यपि कस्वचिद् वंशे अवीरापत्न्यकन्यादीहित्राणां नामनिर्देशः
 सराजकम्पनावरतिपदे न भवतीति व्यवहारो नातिप्रतिवादिनोः पूर्वपुरु-
 षाणां परस्परसंविरत्रेण प्रचलितः स्यात् तदा कुलाचारविरुद्धव्यवस्थाया
 एतद्विषये आवश्यक्ता नास्ति—इति बह्वदेशचलितमनुदायभागप्रभृति-
 ग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

जातिजानदान् धर्मान् श्रेणीधर्माश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्माश्च स्वधर्मं परिपालयेत् ॥—इति मनु-
 वचनम् । १॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासीयवाणपद्ममित-
 दिनसम्बन्धिशुक्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्कुरेश्वरप्रतिपाद्याक्षर-
 पत्राभ्यां वचारपत्राभ्याञ्च सहितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्ज्जयतिनराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(૧૧૦)—રોબકારિ મિલિત સદર દેશાયાતી આદાલત મોકામ કલિકાતા । વક આદાલતેર કામ મોકામ હાકિમ ધીયુત કાણશીપ કરુણ હપમીત સાહેબેર વેઠકે । તારિખ ૪ માર્ચ ૧૯૩૭ રેજી સન ૧૮૩૭ સાલ મોવાવક ૨૨ ફાલ્ગુન સન ૧૨૪૩ સાલ વાઙ્મલા દિવસ શનિવાર—

પઞ્જાનન્દદાસ વનામ રાધાચન્દ્રવાલ્લ

છાપ્તેર ઘઠિત મુનશીઆમીનદિનમહમ્મદ હાજીર આદલ । ૩૨ ટાકા ફિર્મતેર કામજેર ઉપર છાપ્તેર ત્રાસ આપીતેર છમો-યાલ જેતા મેરનિપુરેર આમીશશન જજસાહેબેર કૃત સન ૧૮૩૬ સાલેર ૨૬ શેતમ્બરેર ફયલ્લાર દુકુમેર નારાત્રાતે, જાહા તથાકાર સદર આમીનઆલાર સન ૧૮૬૪ સાલેર ૪ શેતમ્બરેર લિલિત ફયલ્લાર વહાલિતે છાદેર હુકમાલે, મીજે ગોશમદાર દરજલ પાઓ-યાર મોરુદમાવ મયલમે ૧૮૩૯ (૧ ટાકાર વાવેદાદે ત્રાપ આપીલ મજુરિર ઝમેદે ઝલિલ મજકુરેર નામેર) એક પેતા ઓઠાલતનામા મન્નલિત ઓ ઘોરાચન્દ્રસિંહ ઓ બિનદુકીશોર ધોપેર નામેર એક પેતા માંઠારનામા ઓ જેતાર દેઓયાનિ આદાલતેર ઉપરેર નિલિત તારિયેર દુદ પેતા ફયલ્લાર નકત આમીશશન જજ સાહેબ ઓ સદર આમાન આલાર તરવિઝી, જાહા ગતો ફિરેલ માદાર ૮ તારિયેર દારિત હુકમાલિ, અરા ઉપસ્થિત હુકમા પઢા ગેજ । ટિનોય દુકુમ છાદેર હઓનેર પૂર્વ પદ્દિ રિપયેર સઓવાલ કરા જે એક સ્વકિ હિન્દુજાતી વસતિર યાટી ત્યાગ કરિયા અસ્થ વળુ-દરતે તફાત હુકમા ઉદામિન ઓ તોધેયાશી હુક, ત્યાર તાદાર અત્ય વળુ દરતે તફાત હઓયા મુરત વિપ વત્સર ગતો હુક, અર એ સમયે ફિલુ મિલકિયત સ્પરિદ કરિયા મોગયાન ધાકિયા રિપનેદેદ નામે એક ઝન મિલોઠકે ઓવારિસ રારિયા મરે । એ પ્રકારે રદાલિત સ્વકિર ઓવારિસ રામ્બાલુગાદ ઉક મોમ્મમાંત દરવેઠ, ફિ મદરત-ગમ્મંમ્મ આતવવળુ । આર યદિ રગત રામ્બ મતે રદાઓન સ્વકિર ઓવારિસ એક માદમ્મમાંત હુક,

ओ प्रकारे उक्त मोक्षर्मातेर उदासीन व्यक्तिर त्याज्य वस्तु दखल करा ओ विकथेर चेमता आछे कि ना एइ आदालतेर पण्डितेर स्थाने उचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारि नकल छओयाल प्रभृति कागज सम्बलित एइ हुकुमे जे पण्डित मोक्षक उपरेर चाओया प्रश्नेर उत्तर एक सप्ताह मध्ये लिखेन-पाठान जाय, आर से पर्यन्त हुकुम छादेर हओया मुलतवि थाके इति—

श्रीर्जयतिराम

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुतक्रान्तोसककण्डूइसमित-
याहेवधर्माधिकरणलिखितेशबीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीपमा-
र्चमासोयधेदमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र तत्समपितैतद्-
विवादविषयनिविष्टलिखितादिकं च यत्तद्वन्दीयवन्मासोयनसमितदिनसम्ब-
न्धिचन्द्रबासरे मया प्राप्त तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिखयते—

प्रसुप्तमर्षितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति धनिनो मृतस्य पुत्रशेखरप्रौढा-
भावे सति मृतधनित्यक्तवने तत्तस्या दोषनदेहनाम्ना एवाधिकारः,
तस्याश्च मृतपतित्यक्तधनवधायत्तोकरणक्षमता शास्त्रविद्वैष, एव हस्तान्तर-
करणक्षमता तु शास्त्रोपावश्यककार्यार्थमन्तरेण नास्ति-इति धर्मशास्त्रा-
नुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

अपुत्रा शयनं मर्तुः पालयन्ती गुरो स्थिता ।

मुजीतामरणात् क्षान्ता दायादा उर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति काश्यापन-
वचनम् ॥१॥

ईशबीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीशुभमासोयप्रथमदिनसम्ब-

निधगुरुवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रेणैतद्विवादविषयनिविष्टलिखित-
जातैश्च सदितेयं व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१११) सरजमा रोवकारि—

नकल रोवकारि आदालत दिमानि जिला चाटीग्राम हेनरी-
मोरसाहेब कायेम मोकाम जजेर बैठके तारिख ८माइ अकतूबर
सन १८९६ आठारह सय छत्तिस ईशवी—

प्रतापनारायणचक्रवर्ती, साकिम दुर्गापुर डिगरीदार,
परमानन्ध चक्रवर्ती ओ रामधन ओ रामलोचन ओ
प्रतापनारायण ओ समाकान्त ओ लक्ष्मीनारायण ओ रामकीशोर
ओ रामशरण ओ रामकान्त ओ शिवप्रसादठाकुर ओ राममोहन
ओ द्वितीय रामलोचन ओ रामप्रसाद ओ द्वितीय परमानन्द
ओ फारोनाथ ओ वेचन ओ रामदास ओ विजयनाथ
प्राध्यापकल साकिमान दुर्गापुर ओ उत्तरदुर्गापुर ओ मुरालीपुर
ओ गोपालपुर ओ मिठारा ओ मटमारिया तरफसानियान्—
मोकदिमा इजराय डिगरी समाज—

हेजुदेर हुकुमानुसारे एइ मोकदिमा मौलवी अबदुल गजीद
नॉ पाहादुर सदर आमिन आलार निकटे दरपेश दइयादिलो ।
गत अगस्त मासेर २० तारिखे ऐ सदर आमिन आला डिगरी-
दारेर सहित तरफसानोमकलके एकत्र बसिया आधार करिते
आज्ञा दिलेन, ओ लक्ष्मीनारायणचक्रवर्ति तरफसानी ऐ सदर
आमिनआलार हुकुमेर नाराजोते एक पेता दरगास्त अपिल
मरसरीर बाबति गत सितम्बर मासेर ७ तारिखे गुजराइजेक, ओ
पूजहार कलिके ये इहार जे प आदालत दइते मदर दिमानी

आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था लइवार कारण आज्ञा हइयाछिलो, तरफसानीसकल ऐ डिगरी जारि हओयाते खालास पाइयाछे । ऐ आज्ञार बहिर्भूत ऐ सदर आमीन आला ऐ डिगरी जारिर समये तरफसानीसकलके ऐ डिगरीदारेर वाटीते आहार करिते हुकुम दिया तरफसानीसकलेर जातिर प्रति शत्रुता करितेछे, ओ सन १८३६ सालेर २० सितम्बर तारिखे लक्ष्मीनारायणठाकुर ओ रामधन ओ कमलाकान्त ओ प्रताप ओ भञ्जन ओ रामलोचन ओ वैद्यनाथठाकुर-गणेश उकिल सेख अहमदुल्लाहेर साक्षते सरसरी आपीलेर सयाल ओ सदर आमीन आला मौसुफेर सन १८३६ सालेर २० अगस्त तारिखेर रोवकारिर नकल छप्पे आइलो । घोष हइलो ये उभय विवादिर एइ प्रकार विवाद बटे ये सदर दिमानी आदालतेर हुकुम एइ प्रकार आसियाछे । ये आदालतेर पण्डितेर स्थान हइते व्यवस्था लइया एइ डिगरी एजराय करा जाइवेक । अतएव आदालतेर पण्डित व्यवस्था दाखिल करियाछे—ये शास्त्रानुसारे एइ डिगरी यथार्थ बटे । ताहाते मुद्दाआलेहगण विरोध करिया एइ प्रकार आपत्ति करे ये एइ आदालतेर पण्डित ये व्यवस्था दियाछे से व्यवस्था चाटप्रामेर व्यहेरालोकेर प्रति बटे । ऐ प्रकार रसम रयाज व्यहेरालोकेर रवाजेर बरखेलाफ बटे, ओ तरफसानीगण निजामपुरेर बटे, ओ तरफसानीदिगेर उकिन्न प्रकाश करिलेक ये चाटप्रामेर लोक निजामपुरेर व्यहेरालोकेर सङ्गे सकल कर्म आदार व्यवहार करे नाइ इति । ओ ऐ सदर आमीन आलार स्थान हइते आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थार नकल तलब करार आज्ञा ओ ऐ व्यवस्थार नकल सदर दिमानी आदालतेर प्रबल प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठाइवार हुकुम ओ सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर स्थाने व्यवस्था तलब करा एइ प्रकार जे एइ डिगरी निजामपुरेर दस्तुर माताविक किम्बा चाटप्रामेर दस्तुर मोताविक जारि हइवेक—हुकुम दिवा गेलो, ओ उभय विवादि निजामपुरेर

सामाजेर वटेन, ओ सदर दिमानी आदालत हइते जबाब आसा पर्यन्त एइ डिगरी जारि मकुफेर हुकुम सादर हइलो इति । ओ अद्य आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था नकल सदर आमीन आलार स्थान हइते ए आदालते पौछिलो । अतएव हुकुम हइलो ये आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था नकल याहा ऐ सदर आमीन आलार स्थान हइते आसियाछे एइ रोजकारि सहित ओ अङ्गरेजी बिठोर सम्बलित सदर दिमानी आदालतेर प्रबलप्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय । सवाल एइ ये, उभय बिबादि निजामपुरेर वासिन्दा वटेन, ओ जाति ब्राह्मण वटेन, ओ व्यवहेरासकलेर पुरोहित वटेन, ओ नेजामपुरेर व्यवहेरार यजन-पूजन कराते मुद्दके मुद्दाआलेह ब्राह्मणसकल, जाति हइते बहिर्भूत करियाछिलो । ताहाते मुद्दै पण्डित सदर आमीनेर आदालते नालिस करिया आपन हक के डिगरी हासिल करियाछिलो । ओ ऐ डिगरी आपिल आदालते अर्धात जलसाहेवेर निकट बहाल थाकिलो । ऐ डिगरी जारो हओवार समये रसम-रवाजेर तकरार दरपेश हइया सवाल सदर दिमानी आदालत पर्यन्त गुजरियाछिलो । ओ ऐ सदर दिमानी आदालते हाकिमान हुकुम दिबाछेन—ये एइ डिगरी पण्डितेर व्यवस्थानुसारे जारी करो । ओ पण्डित आदालति एइ प्रकार व्यवस्था दाखिल करिलेक—ये एइ डिगरी बाधार्थ, ओ मुद्दाआलेहसकलके मुद्दैर सहित एकत्र आहार व्यवहार करा आवश्यक, ओ एजराय डिगरी आमले आइलो । ओ ए हुकुम ओ ऐ व्यवस्थाते मुद्दाआलेह तकरार करे । ओ मुद्दाआलेहसकलेर उजुर एइ प्रकार वटे—ये ऐ मुद्दाआलेहदिगेर सहित निजामपुरेर बेदारा दिगेर जवन-पूजनेर विषये निजामपुरेर बेदारादिगेर सक्के एइ मोकहिमा उपस्थित हइया निजामपुरेर बेदारा एइ एजहार करे ये आमरा निजामपुरेर बेदारा वटी, आमार-दिगेर रसम रवाज चाटिआमेर बेदारादिगेर ओ ब्राह्मणसकलेर

प्राचीन रसम-रवाज हइते भिन्न प्रकार बटे, ओ ऐ आदालतेर पण्डितेर' व्यवस्था चाटग्रामेर बेहारादिगेर रसम-रवाजेर विषये बटे इति । ए कारण सवाल करा जाइतेछे कि यद्यपि नेजामपुरेर वासिन्दा लोकेर रसम-रवाज हइते भिन्न प्रकार रसम-रवाज ये सठल लोकेर रसम-रवाजेर विषयेर एइ व्यवस्था आछे, हय एइ व्यवस्था शास्त्रानुसारे यथार्थ बटे कि ना । वास्तव सवाल एइ आछे-ये यद्यपि एइ आदालतेर पण्डितेर व्यवस्था शास्त्रानुसारे यथार्थ हय, तवे यदि नेजामपुरेर वासिन्दा ब्राह्मणसकल ओ बेहारासकलेर रसम-रवाजेर विपरीत हय, तवे नेजामपुरे जारी हइते पारिवेक कि ना । आर यद्यपि कोनो देशे पुरोहित-यजमानेर मध्ये पूर्व हइते पुरुषानुक्रमे ये रसम-रवाज जारी थाके, यद्यपि ए रसम-रवाज जारी हओर तारिखेर निग्रय ना थाके, एइ प्रकार रसम-रवाज नितान्न चलित बाइ, बर चलनेर बिरुद्ध बटे । तथापि प्राचीन रसम-रवाज, जाहा ओहादिगेर शाखेर न्याय चलित बटे, ऐ रसम-रवाज ऐ नेजामपुरेर वासिन्दा लोकेर बटे कि ना । ऐ सदर दिमानी आदालतेर प्रबलप्रताप हाकिमान अनुग्रह पूर्वक एइ विषयेर व्यवस्था सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर स्थाने लइया एइ आदालते प्रेरण करेण इति । अद्य मने १८९६ साल ईशवी तारिख २८ माह तबस्वर डिगरीदारेर उकिल रामसुन्दरदत्त आरज करिलेक ये डिगरीदारेर मोक्कार रामकुमार हजुरे ए विषय आरज करिवार कारण हाजीर छिलो ये मुद्दाआलेहसकल बेहारा जाति बटे, ओ गुलाम ओ लोडो आपने आपन घरे मेतइसकल यजन-पूजन जलाञ्जलि करितेछे । नथीर सामिल साहिदिगेर एजहारेर द्वाराय ॥ विषय निश्चित ओ ए कथा रोवकारिते लिखा जाय इति । उकिलेर प्रार्थना मते रोवकारि लेखा गेलो, किन्तु ए विषय सवालेर सहित सम्पर्क

राखे ना । ए विषय एक तजविजेर स्थान वटे । सवाल ये प्रकार लेखा गेलो सेइ यथाथे वटे-ए विषयेर यवाव आसिवार परे दुइ व्यवस्था दृष्टि करिया ओ कामजात ओ उभय विवादीर सवाल ओ यवाव मोलादिजा करिया डिगरी जारी विषयेर उचित हुकुम देया जाइवेऊ इति ॥—

श्रीदुर्गा शरणम्—

श्रीयुक्तजानलुइयजजसाहेबमहाशयप्रेरितान्येतानि विवादपत्रादीन्पवलो-
क्याथ व्यवस्था लिख्यते—अत्रार्थो एतद्देशीयवेहारानामशूद्रविशेषगृहकृत-
यजनपूजनादिव्यापारः प्रत्यधिभिरन्यवहारार्थो नैव भवेदिति विदुषां परामर्शः ।
एतद्देशीयवेहारानामशूद्रविशेषानीतजनयानस्य एतद्देशीयप्रधानब्राह्मणशू-
द्रादिभिः क्रियमाणत्वाद् विशेषतोऽत्राधिवत् प्रत्यधिनामपि फेराद्विन् ताद-
रावेहारानामशूद्रविशेषाणां यजनपूजनादिव्यापारकरणेऽपि अव्यवहार्यत्वा-
भावस्य तात्तिभिर्निरुक्तत्वाद्, “येषु स्थानेषु यस्माच्च धर्माचारश्च यादृशः,
तत्र तन्नावस्येते धर्मस्तथैव तादृशः”—इति शुद्धितत्त्वधृतवचने देहाविशे-
पीयपारम्पर्यकमागतयादृशधर्माचारस्तादृशस्याभिमतत्त्वज्ञापनावचेति ।

अस्यार्थः—

श्रीयुक्त जान लुइय जज साहेब महाशय कर्तृक प्रेरित एमकल
फागज पत्र अपजोक्तन करिया ए विषये व्यवस्था लेखा जाइतेछे ।
ये ए डिमोदार एतद्देशीय वेहारा शूद्रेर गृहे यजन-पूजनादि
व्यापार कराते आसामि-कर्तृक अव्यवहार्यवे हइते पारे ना ।
कारण एउदेशीय वेहारा शूद्रेदेर^१ जलाचरणादि व्यवहार एतद्दे-
शीय प्रधान ब्राह्मण ओ शूद्रादिसकले करिया आसितेछे, एवं
विशेषत एइ फेरादिर मत कोन आसामि वेहारा शूद्रेर यजन
पूजन करातेओ ताहार व्यवहार्यत्वे साक्षि कर्तृक कथित आछे,
एवं ये स्थाने यादृश शौच ओ यादृश धर्माचार, से स्थाने ताहा
अवमत हइवे ना, ताहाइ प्रचलित दइवे-एइ शुद्धितत्त्व धृत वचनेते

पूर्वापर यादृश धर्माचार रूप व्यवहार ये देशे येमन चलिया
आसितेछे, ताहार अभिसतत्व ज्ञापन करियाछेन-बोध दइल
इत्यादि । इं सन १८३५ तारख १ आमेले—

श्रीअखिलचन्द्रन्यायरत्नशर्म्मणाम्

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रं व्यनस्यापत्रमङ्कुरेक्षीशब्दप्रतिपाद्याक्षरपत्रं च
यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यरसगुणगजेन्दुमिताब्दीयदिशम्बरमासीयगुणेन्दुमित-
दिनसम्बन्धमङ्गलवासरे मया प्राप्त तदवलाक्य यादृशबोधो जातस्तदनु-
सारेणोत्तर लिख्यते । —

प्रभुसमर्पितविचारपत्रनिबितवृत्तान्ते सति चट्टग्रामप्रदेशीयजिलाख्या-
वान्तरधर्माधिकरणनियुक्तपरिण्डतलिखितव्यवस्था नेजामपुरप्रदेशवासिना-
मधिप्रत्ययिनां ब्राह्मणानां प्रचलितव्यवहारानुसारिणी चेत्तदैव नेजामपुर-
प्रदेशवासिनावधिप्रत्ययिनो ब्राह्मणा प्रति शास्त्रसिद्धा भवेतुमर्हति,
नेजामपुरप्रदेशवासिनामधिप्रत्ययिनां ब्राह्मणानां कथञ्चिदपि प्रचलित-
व्यवहारविरुद्धतया ज्ञातुं शक्यने चेत्तदा नेजामपुरप्रदेशवासिनावधिप्रत्य-
यिनो ब्राह्मणा प्रति शास्त्रतः प्रचलितं नार्हति ; एव कस्मिंश्चिद्देशे पुणेहित-
यत्नमानयोर्द्वयोः पूर्वपुरुषपारम्पर्यक्रमेण कश्चिद्व्यवहारोऽनिश्चितप्रचारदि-
वसोऽपि यदि तेषां तादृशप्राचीनव्यवहारः शास्त्रसाम्येन प्रचलितः स्यात्तदा
तादृशव्यवहारो नेजामपुरप्रदेशवासिनामधिप्रत्ययिनां ब्राह्मणानां शास्त्रतः
समोचीनो भवत्येव—इति नेजामपुरप्रदेशचलितमनुस्मृत्यव्याख्यवल्क्यस्मृति-
वृहस्पतिस्मृतिशुद्धितत्त्वव्यवहारतत्त्वव्यवहारमातृकामस्मृतिप्रन्थानुसारिणी व्य-
वस्थेति ॥

अत्र प्रमाणम्—

जातिज्ञानपदान् धर्मांश्च श्रेणीधर्मांश्च धर्मवित् ।

समीक्ष्य कुलधर्मांश्च स्वधर्मं परिपालयेत् ॥ इति मनु-

चचनम् ॥१॥

यस्मिन्देशे य आचारो व्यवहारः कुचस्थितिः ।

तथैव परिपाल्योऽसौ यदा वशमुपागतः ॥—इति याज्ञवल्क्यस्मृति-
प्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥२॥

देशजानिकुलानां च ये धर्माः प्राक् प्रवर्तिताः

तथैव ते पालनीयाः प्रजा प्रक्षुभ्यतेऽन्यथा ॥—इति बृहस्पतिस्मृति-
प्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥३॥

केवल शास्त्रमाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः ।

शुक्तिहीनविचारेण धर्महानिः प्रजायते ॥—इति बृहस्पतिस्मृति-
व्यवहारसंन्यवहारमानुषाप्रभृतिग्रन्थधृतबृहस्पतिवचनम् ॥४॥

येषु स्थानेषु यच्छीचं धर्माचारश्च यादृशः ।

तत्र तत्रावमन्येत धर्मस्तत्रैरतादृशः ॥—इति शुद्धितत्त्व(पृ० २७५)-
प्रभृतिग्रन्थधृतमरीचिवचनम् ॥५॥

देशानुशिष्टं कुलधर्ममप्रयं सगोत्रधर्मं नहि संत्यजेच्च—इति
शुद्धितत्त्व(पृ० २७६)प्रभृतिग्रन्थधृतवामनपुराणवचनञ्चेति ॥६॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्यान्तरव्यग्रतया चैतद्व्य-
वस्थायाः फलिन्यतरत्वेन चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् बिलम्बो जात इति
निवेदनमिति ॥—

ईशवीर्यन्दप्रतिपाद्यमुनिगुणमजेन्दुमितांशीयजुवमासीयमुनीन्दुमित-
दिनसम्बन्धियनिवासरे मया प्रभुगमयितव्यवस्थापत्रविचारान्तादरेजीरन्द-
प्रतिपाद्याचरपत्रैः सहितेयं व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीर्ज्जयतिहराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(११२ :—मो० कलिकानार सदर देओनि आदालतेर ३० सन १८३७ सालेर १५ फिवरेल मोतावेक बाङ्गला सन १२४३ सालेर ५ फाल्गुन बुधवार दिवसेर श्रीयुत ओलियम ब्राडिन साहेब ऐ आदालतेर हाकिमेर रुबकारि—

सिउछहाय ओ कुञ्जबेहारीलाल—

बनाम

मोछम्मातान् मञ्जणबिबि ओ गैरह—

छापलानेर उकिल तारकचन्द्रराय, फरिकछानिर उकिल गण मुनशी दादारबक्स ओ श्रीरामराय हाजीर आइलेन । छापलानेर खास आपीलेर छओल ओ ऐ छओलेर सम्पर्कीय कागजसकल, जे सन १८३६ सालेर २१ दिजम्बर तारिखे बर-पेप एवं छापलान दरवारिलालेर पुत्रगण हओर विषये दरवारिलालेर एकराेर निदर्शन दाखिल करणेर हुकुम छापलानेर उकिलेर प्रति प्रकाश हइया स्थकित छिल, अथ पुनराय दरपेस हइया सन १८२१ सालेर ८ जानेर तारिखे हुकुम हओर वैजनाथ छहायेर दरखास्तेर नकल ओ सन १८२० सालेर ६ आपरेल तारिखे लिखित जेला भागलपुरेर देओनि आदालतेर नकल रुबकारि ओ सन १८१३ सालेर १४ शैतम्बर तारिखे लिखित ऐ जेलार आदालतेर फयछलार नकल सम्मिलित, जे सन १८३६ सालेर २१ दिजम्बर तारिखे हुकुमानुसारे छारलानेर उकिल दाखिल करियाछिल, दृष्टे आइल । छापलान कहेन जे उद्वारा दरवारिलालेर पुत्रगण एवं उत्तराधिकारिगण घटेन, ओ फरिकछानि ऐ दरवारिलालेर आपन आतपुत्र । वैजनाथछहायेर उत्तराधिकारिगण जे कहेन छापलान दरवारिलालेर डेमनितायफादार सौर गर्भे जन्मियाछे, ओ एइ इयने उक्त दरवारिलालेर विवाहिता स्त्री गर्भजात कन्या श्रीमती मल्लार तेजय

विषयेर अन्य उभय विधादिर विवाद उपस्थित आछे । ए अन्य कोन हुकुम प्रकाश हओनेर पूर्व ए मोकद्दमार शाखेर वृत्तान्त ज्ञात हओओ चचित बोध हइया हुकुम हइल जे एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित प्रश्नोत्तर नकल रुयकारि प्राप्तेर दिवसावधि एक सप्ताह मध्ये लेखेन ए आदालतेर पण्डितके अर्पन करा जाय इति—

प्रश्न :—

‘यद्यपि स्यात् एक व्यक्ति हिन्दुर अविवाहिता स्त्री अर्थात् उद्धार टेमनि हइते सन्तान उत्पत्ति हइयाथाकं, आर ऐ व्यक्ति कोन एक आदालते आपनाके ऐ पुत्रेर पिता एवं आज्ञा दर्शाइया नालिस करे, तवे उक्त पुत्र ऐ व्यक्तिर मृत्युर पर ऐ व्यक्तिर उपरेर प्रसङ्ग फरा एकरारेर हउते ऐ व्यक्तिर आपन भ्रान्तपुत्र उत्तराधिकारिगण धारितेओ ऐ व्यक्तिर विषयेर हकदार यश्चिन ओ बङ्गदेशीय चलित शास्त्रानुसारे हइते पारे कि ना इति—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्दर्माधिकारणाधिपतिश्रीयुगश्रीजयमवेराहोनसाहेबदर्माधिकरण-
लिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताश्रीयफेरवररामासायबाणेन्दु-
मितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिकारपत्र यत्तद्देश्यमान्वंमावापयिव-
नेत्रेन्दुमितदिनसम्प्रविधचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवज्ञास्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतधनिवर्णाक्तवेशेरो यदि
ब्राह्मणः क्षात्रयो वैश्यो वा स्यात्तश्च तस्यैव व्यक्ति.यशोरस्य त्यक्तधने
अविवाहितस्त्रीगर्भजातस्य पुत्रस्य नाधिकारः, किन्तु धनिना मृतस्योत्तराधि-
कारिणामनुकूलत्वे यावज्जीवं प्रासाञ्छादनभागिता भवति । यदि च मृत-
धनिव्यक्तिविशेषः शूद्रजातोयस्तस्य यदि धनिनो मृतस्य विवाहितस्त्रीगर्भ-
जातकन्यादौदित्राणां मध्ये कश्चित्तास्ति, तदा तस्यैव व्यक्तिविशेषस्य त्यक्त-
धने अविवाहितस्त्रीगर्भजातस्य पुत्रस्य मृतधनिभ्रातृपुत्रस्य नियमानताया-

मधिकारः—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानु-
सारिणी बद्धदेशचलितदायभागदायतत्त्वदायक्रमसमूहप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी
च व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

जातोऽपि दास्यां शूद्रेण कामतोऽशहरो भवेत् ।

मृते पितरि कुर्युस्तं भ्रातरस्त्वर्द्धभागिकम् ॥

अभ्रातृको हरेत् सत्त्वं दुहितृणां सुतादते ।—इति मिताक्षरा-
दायभागप्रभृतिग्रन्थभृतयाज्ञवल्क्य धननम् ॥१॥

शूद्रेण दास्यां समुत्पन्नः पुत्रः कामतः पितुरिच्छया भागं लभते ।
पितुरूर्ध्व्यन्तु यदि परिणीता पुत्राः सन्ति, तदा ते भ्रातरस्तं दासीपुत्रमर्द्ध-
भागिकं कुर्युः, स्वभागादर्द्धं दद्युरित्यर्थः । अत्र परिणीतापुत्रा न सन्ति
तदा कृत्स्नं धनं दासीपुत्रो गृह्णीयात् । यदि परिणीतादुहितरस्तपुत्रा
वा न सन्ति तत्सद्भावे त्वर्द्धभागिक एव दासीपुत्रः । अत्र च शूद्रग्रह-
णाद् द्विजातना दास्यामुत्पन्नः पितुरिच्छयाप्यंशं न लभते, नाप्यर्द्धं
दूरत एव कृत्स्नं किन्त्वनुकूलश्चेज्जीवनमात्रं लभते—इति मिताक्षरा (पृ०
२१६) ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

शूद्रस्य पुनरपरिणीतदास्यादिशूद्रापुत्रः पितुरनुमत्या पुत्रान्तर-
तुल्यांशहरः—इति दायभाग (पृ० १४३) ग्रन्थलिखनञ्चेति ॥३॥

व्यवस्थान्तरलिखनग्रन्थतया स्वकर्त्तव्यकार्यान्तररूपग्रन्थतया चैतद्व्यवस्था-
दाने एतावान् विलम्बो जातः इति निवेदनमिति ॥—

ईशवीरानन्दप्रतिपाद्यमुनियुष्मजगन्नुमिताब्धेयबुनमासीषद्विपक्षमितदिन-
सम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रनिवेदनपत्राभ्यां सहितेषु
व्यवस्था दत्तेति ॥

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

तरजमा सञ्चाल—

(११३)—जिला साहावादेर सदर आमिन आला सैयद
मनौथर अलि मोराम गाटर मुनिसिफेर आपिल लम्बर ३:५—
नरकुसिह मुहाआलेह आपोलाएट बनान मेघसिह ओ
अक्षरसिह
रग्गड्डटान्—

मोराम कलिकातार सदर देओयानि आदालतेर पण्डितेर
प्रति सवाल । एइ ये, यद्यपि एह व्यक्ति हिन्दुजाति आपन मौरु-
शी धन हइते किञ्चित आपन पुत्र ओ भ्रातपुत्र विद्यमान
थाकिते भगिनीपुत्र ओ पितृष्वसृपुत्रेर प्रतिपालनेर दृष्टे ऐ व्यक्ति-
के दान करिया एवं अशी करिया ताहार दस्तावेज, जाहार
नकल एइ सवालसकलेर सङ्गे आछे लिखिया दिया थाके । तवे
ए प्रकार दस्तावेज शास्त्रानुसारे सिद्ध ओ यथार्थ ओ दानप्रहीता-
सकलेर स्वत्वेर प्रति गुणशायक हइवेक कि ना, एवं दानकर्ता
अर्थात् अंशोकारकसकलेर जीवदशाय दानकर्तासकलेर पुत्र-
पौत्रादिर प्रतिबन्धकता ताहाते अरिंते पारियेक कि ना इति ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्गरेओशब्दप्रतिपाद्यत्तरपत्र दस्तावेज-
शब्दप्रतिपाद्यत्रमाशानय च यदोशबोशब्दप्रतिपाद्यनुनिगुणगजेभुमिता-
ब्दोयज्ञानवरीमाओयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्राशरे मरा प्राप्त तदव-
लोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यत्रं
तत्तत्रलिखितनियमजातदृष्टिनिवेचनाभ्या शास्त्रानुसारेण सिद्ध्यति, एवं
दानप्रहीतृणां स्वत्वे प्रमाण भवति । दानकर्तृणां विद्यमानतायां तेषां
पुत्रपौत्रादीनां तद्विषये प्रतिबन्धकता न सम्भवति—इति पश्चिमदेशचर्जित-
मनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्यन्ते ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यस्वरणम्—इति मनुचचनम् ॥१॥

परममूल्यं भृतिस्तुष्ट्या स्नेहात् प्रत्युपकारतः ।

सीशुल्कानुग्रहार्थं दत्तं दानविदो विदुः ॥—इति मिताक्षरा (पृ० २४५) बोरमित्रोदय (पृ० ३६७) प्रभृतिग्रन्थभृतनारद (नमसं० पृ० ६०) वचनम् ॥२॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्तव्यकार्यान्तरव्यग्रतया रोगग्रस्त-
तया चैतद्व्यवस्थादाने यत्तावान् विलम्बो जाय इति निवेदनमिति—

ईश्वरीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगत्रेन्दुमिताश्रीयजुनमाक्षीयमुनिपद्ममिव-
दिनसम्पन्निधमङ्गलयासरे मया प्रभुवमर्पितप्रश्ननमविचारपत्राङ्कुरेणोद्य-
प्रतिपाद्याक्षरपत्रदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रैः प्रभुयाचितनिवेदनेन च सहितेयं
व्यवस्था दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्
श्रीविद्यनाथमिश्रेण

श्री श्रीदुर्गा

(११४)—ज० २३६ ई सन १८३५ साल—

रोबकारि मिछिल मोकाम फलिकातार सदर देओयानि
आदालत इक्त आदालतेर कावेम मोकाम हाकिम भीयुत फाण्णशोप
करुण इपमित साहेबेर बैठके—तारिख २२ माह जुन इङ्गरेजी
सन १८३० साल मोताबक बाङ्गला सन १२४४ साल तारिख १०
आषाढ दिवस वृहस्पतिवार ।

दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अछि आलमचन्द्रधर—
आपीलाएट—

विलयगोविन्दबडाल ओ गवरह— रेण्पाडएटान—

आपीलाएटार उकिल मुनशी होसेन आलि ओ हाजोर
रेण्पाडएट विजयगोविन्दबडालेर उकिल जिमिष कोलवरुह

श्रीदुर्गा

तरजमा सञ्चाल—

(११३)—जिला साहाबादेर सदर आमिन आला सैयद
मजीअर अलि मोहम्मद गाटर मुनिसिफेर आपिल लम्बर ३:५—
नरकुसिंह मुहाआलेह आपीलाएट वनाम मेघसिंह ओ
अक्षरसिंह
रफाडरटान्—

मोकाम फलिकुतातर सदर देशोयानि आदालतेर पण्डितेर
प्रति सवाल । एइ ये, यद्यपि एक व्यक्ति हिन्दुजाति आपन मौरु-
शी धन हइते किञ्चित आपन पुत्र ओ भ्रातृपुत्र विद्यमान
थाकिते भगिनीपुत्र ओ पितृपुत्रमृपुत्रेर प्रतिपालनेर दृष्टे ऐ व्यक्ति-
के दान करिया एवं अशी करिया ताहार दस्तावेज, जाहार
नकल एइ सवालसकलेर मज्जे आछे लिखिया दिया धाके । तबे
ए प्रकार दस्तावेज शाखानुसारे सिद्ध ओ यथार्थ ओ दानप्रहीता-
सकलेर स्वत्वेर प्रति गुणदायक हइवेक कि ना, एवं दानकर्त्ता
अर्थात् अंशोकारकसकलेर जीवदशाय दानकर्त्तामकलेर पुत्र-
पौत्रादिर प्रतिबन्धकता ताहाते अशिते पारिवेक कि ना इति ॥—

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रमङ्गरेबीशब्दप्रतिपाद्यपत्र दस्तावेज-
शब्दप्रतिपाद्यप्रमाणापत्र च यशोशयोशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिता-
ब्दीयज्ञानवरीमानीयगुणेन्दुमितदिनसम्बन्धिशुक्रवाक्ये मन्त्रा प्राप्त तदव-
लोक्य यादृशबोधो बातस्वदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुसमर्पितप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सत्येतादृशदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यप्र-
त्ययलिखितनियमबातदृष्टिविवेचनाभ्या शाखानुसारेण सिद्धचति, एव
दानप्रहीतृणां स्वत्वे प्रमाण भवति । दानकर्त्तृणां विद्यमानतायां तेषा
पुत्रपौत्रादीनां तद्विषये प्रतिबन्धकता न सम्भवति—इति पश्चिमदेशचलित-
मनुमिताक्षराचार्यमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

प्रदानं स्वाम्यस्मरणम्—इति मनुवचनम् ॥१॥

पर्यमूल्यं भृतिस्तुष्ट्वा स्नेहात् प्रत्युपकारतः ।

सौगुल्कानुग्रहायञ्च दत्तं दानविदो विदुः ॥—इति मिताक्षरा (पृ० २४५) वोरमिचोदय (पृ० २६७) प्रभृतिग्रन्थधृतनारद (नमसं० पृ० ६०) चचनम् ॥२॥

व्यवस्थान्तरलिखनव्यग्रतया स्वकर्त्तव्यकार्यान्तरव्यग्रतया रोगग्रस्त-
तथा चेतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति—

ईशश्रीरामचन्द्रप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्द्रमुनिवाक्यश्रीयजुनमाषीयमुनिपञ्चमित-
दिनसम्बन्धिमङ्गलवाचारे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नरत्नविचारपत्राङ्गरेजीराम-
प्रतिपाद्याक्षरपत्रदस्तावेजशब्दप्रतिपाद्यपत्रैः प्रशुपाचितनिवेदनेन च सहितेन
व्यवस्था दत्तेति —

श्रीर्जयतितराम
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्री श्रीदुर्गा

(११४)—ल० २२६ ई सन १८१५ साल—

रोबकारि मिथिल मोकाम कलिकातार सदर देओयानि
आदालत उक्त आदालतेर कायेम मोकाम हाकिम श्रीयुत फ्राणशीप
करुण इपमित साहेवेर बैठके—तारिख २२ माह जुन इहरेजी
सन १८२७ साल मोताबक बाङ्गला सन १८४४ साल तारिख १०
आपाठ दिवस बृहस्पतिवार ।

दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अलि आलमचन्द्रधर—

आपीलाष्ट—

विजयगोविन्दबडाल ओ गयरह— रेष्पाइस्टान—

आपीलाष्टेर उकिल मुनशी होसेन अलि ओ हाजीर
रेष्पाइस्ट विजयगोविन्दबडालेर उकिल जिमिष कोलवरुह

सदरनेएड माहेवं हाजीर आइल । गतो कल्य एइ मोकईमा
 आमार घेंठके उपस्थित । प्रथम आदालत सहर मुरशीदाबादेर
 कागज सकल आर एइ आदालतेर दाखिल हओया मौजेबात
 ओ जओयाव प्रभृति साम्यक कागज एवं अन्य २ दलिलसकल
 जाहा गतो कल्य उभये दाखिल करियाछिल, पडा इइया दिवा-
 यसान प्रजुक्त मुकतवि छिल, अथ पुनराय उपस्थित हइल ।
 रेष्पाइएटेर उकिल भैरवचन्द्रन्यायवागीशेर एककेता व्यवस्था
 ओ रामतनुरामन्यायवागीशेर एक केता व्यवस्था ओ वेदकण्ठ-
 शर्मा एक केता व्यवस्था ओ शिवनाथशिरोमणिएर एक केता
 व्यवस्था, एकुने चारि केता, ताहार चारि केता तरजमा सम्बलित
 आर दुइ कई फिरिस्त न आठ चट्टा किर्मतेर दाखिल करितेक ।
 बोध इइल जे आपीलाएट मुईइ एक आना अष्ट गोएडा दुइ
 कडा दुइ कान्ती जमिदारि प्रभृतिर दखल पाओनेर दाविते
 सबलगे ६५८० ॥६॥ टाकार तायदावे विजयमोषिन्दबडाल
 प्रभृति मोईआलेंहेर नामे सहर मुरशीदाबादेर आदालते नालिस
 फरे । तथाकार जज साहेब आपन ठजविज कालिन वॉहार
 आपन फयसलार लिखित हेतुते एइ मोकईमार व्यवस्था तलवे
 तिन कई सओयाल सहर मुरशीदाबाद ओ जेला नदिया ओ
 जेला धिरभूमेर देओयानी आदालतेर पण्डितदिगेर नामे पाठान
 तिन जेलार पण्डितदिगेर व्यवस्थासकल सानन्दमर्यादासीर
 तृतीय पुत्र, जे उक्त सानन्दमयीर आता महानन्ददत्त ओ तस्य
 बनितार मृत्युर पर जन्मियाछे, सत्त्व ना राखा बिवाये पोछिले
 पर उक्त व्यवस्थासकल एवं जजसाहेब मोछफेर फयसलार
 लिखित अन्य २ व्यवस्था अनुआइ इङ्गरेजी सन १८३५ सालेर
 २१ जुलाइ तारिखे मुईइ आपीलाएटेर दावि डिसमिस ह्य ।
 मुईइ आपीलाएट ताहार असम्मतिते आपीलेर द्वाराय एइ
 आदालते उपस्थित आने, आर ताहा इङ्गरेजी सन १८३६ सालेर
 ३१ मार्च्चेर हओया एइ आदालतेर रोयकारि लिखित हेतुते

श्रीयुव रावरट हाल डन राटरि साहेव हाकिमेर बैठके द्वितीय विवेचना ओ गीरेर जोन्य चोव ह्य इति—

जे हेतुक कोन हुकुम प्रकाश करखेर पूर्व निचेर लिखित मतो तिन सओपाल पद आदालतेर पण्डितेर स्थाने जित्तीरय उचित । प्रथमत, एइ जे मुरशीदाबाद मोतालगेर जङ्गीपुर साकि-नेर कुत्तीचन्द्रदत्त आपन पुत्रगण महानन्ददत्त ओ परमानन्द-दत्त ओ कन्यागण आनन्दमयीदासी ओ सानन्दमयीदासी ओ पुरणानन्दमयीदासी ओ जमीदारि डिहिगणकर प्रभृति विपय राखिया देह त्याग करे । ताहार मृत्युर पर महानन्ददत्त ओ परमानन्ददत्त दुइ पुत्र आपन २ पितृ-वस्तुर पर दखलीकार धाकिया उक्त परमानन्ददत्तेर विवाह ना करिया मृत्यु ह्य । ताहार मृत्युर पर महानन्ददत्त आपन पितार तावत वस्तुर पर दखलिकार हइया आपन बनिता द्रवमयीदासीके ओयारिस राखिया निःसन्तान परलोक प्राप्त ह्य । ताहार मृत्युर पर द्रवमयी बहार आपन स्वामीर स्थावरादि विपयेर पर दखलि-कार हइया स्वामीर भग्नीगण आनन्दमयी ओ सानन्दमयी ओ आनन्दमयीर गर्भजात पाँच पुत्र ओ सानन्दमयीर गर्भजात दुइ पुत्र ओ उक्त मृत महानन्ददत्तेर अवीरा भग्नी पुरणानन्द-मयीर सन्मुखे मृत्यु ह्य । ततपरे आनन्दमयीर स्वामी देह त्याग करे, आर सानन्दमयीदासीर गर्भे तृतीय आर एक पुत्र जन्मे । परे जे पुत्र महानन्ददत्त ओ तस्य बनिता द्रवमयीदासीर मृत्युर पर मृत महानन्ददत्तेर भग्नी सानन्दमयीदासीर गर्भे जन्मियाछे, से पुत्र शाखानुजाइ महानन्ददत्त ओ तस्य बनिता द्रवमयीर स्थावरादि धन हइते द्वितीय आवागणेर तुल्याश पाइते पारे कि ना । आर यदि इहार पर सानन्दमयीदासीर गर्भे पुनर्वीर पुत्र जन्मे, से पुत्र महानन्ददत्त ओ तस्य बनिता स्थावरादि वस्तु हइते बहारदिगेर तुल्याश पाओनेर सत्वाधिकारि हइते पारे कि ना । द्वितीय, सुबे उडिस्या ओ बाङ्गलार शाख ओ व्यवहार प्रथम

सञ्चोयालेर लिखित विषये अन्वय आछे, किन्वा किछु अनैक्य ।
 तृतीय, ये हेतुक आनन्दमयीर पाच पुत्र ओ सानन्दमयीर दुइ
 पुत्र, साम्यक सात जन्त, आनप २ मातुल मृत महानन्ददत्तेर
 मृत्युर पर रित मते आदालते नालिस करिया आपन २ सत्वे
 डिगारि हासिल करिया तदानुजाइ सात जना आपन २ अंशेर
 पर आदालतेर हुकुमेर द्वाराय सरकारेर ताहुते नाम जारिते भोग-
 यान हइया धाके । ए विषय अष्टम पुत्रेर, जे महानन्ददत्त ओ
 तस्य बनिता द्रवमयीदासीर मृत्युर पर जन्मियाछे, ताहार सत्वेर
 अन्यधार कोन हेतु हइते पारे, कि ना । ए प्रयुक्त हुकुम हइल
 जे एइ रोषकारि नकल एइ मोकईमार फयसलार सम्बलित
 एइ आदालतेर पण्डितेर निकट एइ हुकुमे पाठान जाय जे
 उपरेर लिखित तिन सञ्चोयालेर उत्तर एइ हुकुम पौछार दिवस
 हइते तिन दिवसेर मध्ये लिखिया दाखिल करेण, आर अर एइ
 मोकईमा स्थकित थाके इति—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्दर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिरिक्तभीषुतक्रान्तरीयकदण्डशमित-
 साहेबधर्माधिकरणनिमित्तेश्वरीशन्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितांशोपगुन-
 मासीयद्विपक्षमितदिवसीयविचारप्रशान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपत्रं तत्समर्पितत्रयपत्रं
 च यत्तदन्दीयतमासीयमुनिपक्षमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवाचरे मया प्राप्तं
 तदवलोकनयादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रथमप्रश्नलिखितवृत्तान्ते सति मृतमहानन्ददत्तस्य भगिन्याः सानन्द-
 मयीदास्या गर्भतो महानन्ददत्तस्य उत्तल्या द्रवमयीदास्याश्च मरणानन्तरं
 बनितो जनिष्यमाणपुत्रश्च महानन्ददत्तस्य उत्तल्या द्रवमयीदास्याश्च त्यक्त-
 रथावरप्रनृक्षिधनतोऽधोलिखितप्रथमप्रमाणेन भ्रात्रन्तरतुल्यंशभागी भवितुं
 शक्नोति । किन्तु अधोलिखितद्वितीयतृतीयप्रमाणान्यां भ्रात्रन्तरतुल्यंशभागी
 भवितुं न शक्नोतीति—

अत्र प्रमाणम्—

ये जाता येप्यजाताश्च ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।

वृत्तिश्च तेऽभिकांक्षन्ति वृत्तिलोपो विगर्हितः ॥—इति दापभा-
गादिग्रन्थभृतमनुवचनम् ॥१॥

वृत्तिलोपः पितामहधने निरंशकत्वम्—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कार-
कृतदायभागटीकालिखनम् ॥२॥

कमागतजीवनोपाय एव वृत्तिशब्देनोच्यते—इति विवादभङ्गाख्यं व-
ग्रन्थलिखनम् ॥३॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

यद्यपि उत्कलदेशे प्राधान्येन प्रचलितग्रन्थः शम्भुकरवाजपेयी विद्या-
करवाजपेयी च । तयोर्वारंवारमन्वेषणेऽप्यद्यापि सौ ग्रन्थी न प्राप्तौ ।
तावद्व्या ताभ्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रस्यैक्यमनेक्यं वेति निश्चयो न जातः ।
किन्तु उत्कलदेशे मिताक्षराप्रभृतिग्रन्थानुसारेणापि व्यवस्था भवति । अत-
एवोत्कलदेशे चलितशास्त्रव्यवहाराभ्यां वङ्गदेशचलितशास्त्रव्यवहारयोः
प्रथमप्रश्नलिखितविषयभेदोऽस्त्येवेति—

तृतीयप्रश्नस्योत्तरम्—

तृतीयप्रश्नलिखितविषयो महानन्ददत्तस्य तत्तल्या द्रवमयीदास्याधो-
परमानन्तरं जनितस्याष्टमपुत्रस्य स्वत्वस्यान्वयाकारको भवितुमर्हति, यतः
शास्त्रानुसारेण राजाज्ञया च व्यक्तीभूतप्रादेशिकस्वत्वात्पदीभूततत्तद्भ्रात्रो
महानन्ददत्तस्य तत्तल्या द्रवमयीदास्याश्चोपरमानन्तरं जनितस्य पूर्वपन-
स्वामिमृतमहानन्ददत्तपितृदौहित्रस्य स्वत्वं भवितुं नार्हति—इति वङ्गदेश-
चलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

सहृदंशो निपतति सहृत् कन्या प्रदीयते ।

सहृदाह ददानीति श्रीश्वेतानि सतां सहृत् ॥ इति मनु-
वचनम् ॥१॥

अस्यतन्त्राः प्रजाः सर्वाः स्वतन्त्रः पृथिवीपतिः--इति व्यवहार-
तत्त्व (पृ० ६४) विवादाख्ये वृत्ते तु विवादप्रज्ञाख्ये वृत्ते प्रभृतिग्रन्थभूतनारद (ना-
सं० २६।पृ० २६) वचनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशन्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयागस्त्यमासीद्विपक्षमित-
दिनसम्बन्धिशनिवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रादिसहितेयं व्यवस्था
दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्—

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीर्जयतितराम्

(११५)—तरङ्गमा सवाल—

यद्यपि रामगोपालमित्र नामे एक व्यक्ति कायस्थ जाति
गुडवा तालुका जमोदारी खरिद करिया ताहाते दखिलकार
छिलो । उहार पत्नीर गर्भे तीन पुत्र । प्रथम महतापराम, द्वितीय
गुलावराम, तृतीय मानिकराम जन्मियाछिलो । ताहार मध्ये ऐ
महतापराम ओ मानिकराम केवल आपन आपन स्त्रीके उत्तराधि-
कारिणी राखिया आपन पिता रामगोपालमित्रे साक्षाते निस्स-
न्तान मरियाछे । ओ ऐ मृत दुइ भ्रातार खोगण ए दयण पर्यन्त
विद्यमाना आछेन । इहार पर गुलावराम द्वितीय पुत्र ओ आपन
पितार साक्षाते आपन चारि जन पुत्रके अर्थात् अनूपराम ओ
दुर्लभराम ओ मुकुन्दराम ओ माधवरामके राखिया मृत्यु दय ।
ओ रामगोपाले मृत्युर पर ऐ गुलावरामे पुत्रगणे नाम समस्त
जमिदारीते दाखिल हइया लेखा गेलो । ताहार पर गुलावरामे
प्रथम पुत्र अनूपराम ओ तृतीय पुत्र मुकुन्दराम केवल आपन
आपन स्त्रीके राखिया क्रमे परलोक प्राप्त हइलेन, ओ द्वितीय
पुत्र ऐ दुर्लभराम आपन कनिष्ठ भ्राता माधवराम ओ अनूप-

रामेर स्त्री ओ मुकुन्दरामेर स्त्री सहित साधारण ओ एकान्ते
 ऐ जमींदारीते दखिलकार थाकिया एक स्त्री ओ अविवाहिता
 एक कन्या ओ आपन फनिष्ठ भ्राता माधवरामके राखिया परलोक
 गमन करिलेक । ताहार पर ऐ अविवाहिता कन्यार विवाह ऐ
 कन्यार पनेर टाका व्यय करिया किम्वार् ऐ जमींदारीर उपस्वत्वेर
 द्वाराय माधवरामेर कर्तृत्व थाकिते हइलो । ताहार पर ऐ मइता-
 परामेर स्त्री ओ गानिकरामेर स्त्री ओ अनूपरामेर स्त्री ओ मुकुन्द-
 रामेर स्त्री ऐ जमींदारीर उपस्वत्व हइते आपन आपन खोरोपोसेर
 उपयुक्त धन लइवार नियम करिया कलकटरीते ऐ जमींदारीर
 नादाबी घिपयेर दरखास्त गुजराइया ऐ जमींदारीर दाबी हइते
 निरास हइलेन । ए दयखे ओइ मृत दुर्लभरामेर स्त्री ओइ माधव-
 रामेर अंश आठ आना जमींदारी ओ चारि आना जमींदारी
 ओइ चारि जना अवीरा खोगणेर खोरोपोपेर अन्ये मिनहा दिया
 वाकि चारि आना जमींदारीर हिस्सा आपन स्वामीर अंश करार
 दिया, आपन स्वत्वेर एजहारे ओ आपन मृत्युर पर आपन
 कन्यार स्वत्वेर एजहारे आदालते नालिस करियाछे—ए प्रकारे
 वल्लदेशेर चलित शास्त्रानुसारे मृत दुर्लभरामेर स्त्री ओइ
 जमींदारीर चारि आना अंशेर स्वत्वाधिकारिणी बदे कि
 ना इति—

श्रीर्जयतितराम

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रमङ्गरेबीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाशपत्रद्व
 यरीशधीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयापरेलमाधीयवेदपद्ममितदि-
 नखम्बन्धचन्द्रनाथरे मया प्राप्तन्तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारे-
 शोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितविषये मूलधनिनो रामगोपालमित्रस्य मर्यान्तरं
 विद्यमानानान्तर्लोपाशामर्याद् गुलावरामस्य धनिद्वितीयपुत्रस्य पुत्राणाम-
 नूपरामदुर्लभराममुकुन्दराममाधवरामाणां मूलधनिनो रामगोपालमित्रस्य

त्यक्तस्यावगादिषमुदायघने पौत्रत्वेन समानाधिकारे जाते सति तेषाम्मध्ये दुर्लभमस्य पुत्रपौत्रप्रपौत्ररहितस्योपरमे तद्योग्यांशे अर्थाद्रामगोपाल-
मित्रस्य दुर्लभमपि तामहस्य त्यक्तचतुर्थ्यांशे दुर्लभमपल्या एवाधि-
कारः-इति वज्रदेशचलितमनुदायभागप्रभृतिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्येति—

अत्र प्रमाणम्—

पत्नी कुहितरश्चैव पितरौ आतरस्तथा ॥—इत्यादि शयभागादि-
ग्रन्थधृतशब्दस्यवचनम् ॥१॥

प्रथमं पुत्रस्तदभावे पौत्रस्तदभावे प्रपौत्र इति । प्रपौत्रपर्यन्ताभावे
पत्नी च ।—इति श्रीकृष्णतर्कालङ्कारकृतदायभाग्योक्तलिखनञ्चेति ॥२॥

सदरदिमानीधर्माधिकरणसम्बन्धिस्वकर्त्तव्यकार्यवातन्यप्रकृत्या बहुदिना-
न्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति
निवेदनमिति । देशवीर्यन्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिश्रबन्दीपतितत्त्वरमा-
सीपैकादशदिनसम्बन्धिसम्बन्धवाचरे मया प्रमुखमपितप्रश्नपत्रविचारपत्राङ्ग-
रेषीर्यन्दप्रतिपाद्यलिपिभिः सहितेभ्य अवस्था पारशीकलिपिनिर्मितउत्पति-
रूपत्रयेण प्रमुयाचितनिवेदनपत्रेण च सदरदिमानीधर्माधिकरणे एतद्व्य-
वस्थाप्रतिरूपरचणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपारशीकलिभित्प्रश्नप्रतिरूपैश्च
सहिता इत्येति—

श्रीज्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

श्रीदुर्गा

(११६)—प्रश्न वनाम पण्डित आदास्तते सदर देओयानि—
एर ये, रामपृथादेन्या आपन स्वामी ओ पुत्रेर लोकान्तरेर पर
आपन पुत्रवधूर समिद्व्याय आपन स्वामिर पूर्वं पुठपेर विपयेर
मध्ये किञ्चित् भूमि अर्थात् पे विरधीय वस्तु आपीलाएट

सावेक मुद्दर पितार सहित आपन भग्नीर गर्भयात कन्या श्रीमतिदेव्यार विवाह देओन कालिन कुलमर्यादा सरवे आपीलाएटेर पिताके दान करिवे पारे कि ना । यद्यपि करिते पारे, तवे तन्निमित्त शास्त्र सम्मत पुत्रवधूर सम्पत्तिर आविश्यक आछे कि ना—इहार उत्तर यथाशास्त्र एइ प्रश्नेर पार्शे लिखि-वेन इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं निवेदनपत्रमङ्गरेजोरब्दप्रतिपाद्य-
लिपिमाहापत्रञ्च यदीश्वरोऽप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयापरेलमा-
सीयवेदपक्षमित्तिनसम्बन्धिनम्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

एतत्प्रश्नलिखितविषये श्रीमतीदेव्या विवाहसमये कौलिकमर्यादार्थं
विवादास्पदीभूतकिञ्चिद्भूमिदानं रामप्रियादेव्याऽवश्यकर्तव्यं चेत्तदा राम-
प्रियादेवीपुत्रवधूसम्पत्त्या रामप्रियादेवीकृतदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं
भवितुमर्हति । तद्वानसिद्धौ रामप्रियादेव्याः पुत्रवध्वा अनुमतिरप्यावश्यकी ।
यदि च श्रीमतीदेव्या विवाहसमये कौलिकमर्यादार्थं विवादास्पदीभूत-
किञ्चिद्भूमिदानं रामप्रियादेव्याऽवश्यकर्तव्यं नासीत्तदा रामप्रियादेव्याः
पुत्रवध्वा अनुमत्तावपि रामप्रियादेवीकृतदानं शास्त्रानुसारेण सिद्धं भवितु-
मर्हति—इति बङ्गदेशचलितमनुशासनाभासभूतिग्रन्थानुसारिणो व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

मर्ता जीवन् यथा यस्य पोषणादिकं यद् यद् वा कर्म करोति
मृतमतेऽपि स्वशक्त्यनुसारेण तथैव तस्य पोषणं तच्च कर्म कुर्वीत—
इति विवादमङ्गार्यवग्रन्थलिखनम् ॥१॥

स्वामिनोऽनुमतिसरत्रे तु अस्वामिरुतविक्रयोऽपि सिद्ध्यति, व्यवहा-
रोऽपि तथा—इति तद्ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

मृते भर्तारं साध्वी सो ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता ।

स्नाता प्रतिदिनं दद्यात् स्वभर्त्रे सलिलाञ्जलीन् ॥

कुर्याच्चानुदिनं मस्त्या देवतानाम् पूजनम् ।

विष्णोरासधनञ्चैव कुर्याच्चैत्यमुपोषणम् ॥

दानानि विप्रमुत्स्येभ्यो दद्यात् पुण्यविवृद्धये ।

उपवासांश्च विविधान् कुर्याद्दासांदिताञ्छुभे ।—इति दायभागादि-
ग्रन्थवृत्त्यासवचनम् ॥१॥

अपुत्रा शयनं भर्तुः पालयन्ती गुरौ स्थिता ।

भुञ्जीतामरणात् क्षान्ता दयादा ऊर्ध्वमाप्नुयुः ॥—इति दाय-
भागादिग्रन्थवृत्त्यासवचनम् ॥४॥

सदरदिमानीषर्माधिकरणसम्बन्धित्वकर्त्तव्यकार्यज्ञातव्यप्रतया बहुदिना-
न्यासप्रतिक्रियाप्रस्तुतया चैतद्व्यवस्थादाने एतावान् विलम्बो जात इति
निवेदनम् इति । ईशवीर्यशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुयिताम्दीयसितम्बर-
मासीथैकादशदिनसम्बन्धित्वचन्द्रवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्राङ्गरेजीशब्द-
प्रतिपाद्यलिपिनिवेदनरश्मिर्विचारपत्राम्याञ्च सहितेषु व्यवस्था पारशोकलिपि-
निर्मिततत्प्रतिरूपपत्रेण प्रभुयाचितनिवेदनपत्रेण च सदरदिमानीषर्माधि-
करणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरत्नार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपवङ्गदेशीयलिपि-
निर्मितन्यवस्थाप्रतिरूपैश्च सहिता दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिथ

श्रीश्रीदुर्गा

(११७) प्रश्नः—

यदि कोन अंशानामाव जीवतमान वेत्तीर अवर्त्तमान वेत्तीर

१. गुरुत्वेनो दयात् पुण्यविवृद्धये—५५० ।

सहित अंश हथोरार कथा लेखा थाके, से अंशनामा शाखानुसारे माह्य हइते पारे कि ना इति—

श्रीर्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रं विचारपत्रद्वयं विभागपत्रमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्य-
लिपिमाहापत्रञ्च यदोशबीशब्दप्रतिपाद्यगुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयमैमासी-
याङ्कमितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

यदि कस्मिंश्चिद्विभागपत्रे विद्यमानव्यक्तिविशेषस्याविद्यमानव्यक्तिविशेषेण
सहितांशभवनं लिखितं स्यात्तदा तद्विभागपत्र स्वतोऽविद्यमानव्यक्तिविशेष-
स्यांशप्राप्तितात्पर्येण ग्राह्यं भवितुमर्हति, अविद्यमानव्यक्तिविशेषस्य
स्वतोऽंशप्राप्तकत्वाभावात्; किन्तुविद्यमानव्यक्तिविशेषोत्तराधिकारिणामंश-
प्राप्तितात्पर्येण ग्राह्यं भवितुमर्हति— इति वदन्नेवचलितमनुदायभाग-
प्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

सदरदिमानीधर्माधिकरणसम्बन्धित्वकर्त्तव्यकार्यं धातव्यप्रतया बहु-
दिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैतद्व्यवस्थादाने विलम्बो जात इति निवेदन-
मिति—

ईशबीशब्दप्रतिपाद्यगुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीपचायपक्ष-
मितदिनसम्बन्धिमङ्गलवासरे मया प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्रविभागपत्रविचार-
पत्रद्वयमङ्गरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभिः प्रभुशान्तिनिवेदनपत्रपारशीकलिपिनि-
र्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्राभ्यां च सहितेयं व्यवस्था एतद्वर्माधिकरणे
एतद्व्यवस्थाप्रतिरूपरङ्गणार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रवद्वेसीयलिपिनिर्मि-
तप्रश्नपत्रपारशीकलिपिनिर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रैः सहिता दत्तेति—

श्रीर्जयतितराम्

श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मोकाविला श्रीवैद्यनाथमिश्र

(११८)—तं० ३२१ सन १८३५ सालेव—

रुक्कारि मिज़िल आदालते सदर देओयानि मोकाम कलि-
काता । बैठक जान रास हेचिसन साहेब उक्त आदालतेर काएम
मोकाम हाकिम सन १८३७ साल ता० ६ सेवम्बर मोवावेक
सन १२४४ साल तारिख २२ भाद्र दिवस बुधवार—

सिउस्वहायसिंह ओ गयरह— आपीलास्टान—

चेताकुडर ओ ओमेदकुडर— रेग्नाडेण्डान्—

आपीलास्टेर वकिलगण मुनशी होसनआलि ओ जिमिस-
चारलेस कोलवरक सदरलेण्डसाहेब ओ मिरकविथ होसन
ओ काजि पेगाम्बर वरस मोकारगण ओ हाजिर रेग्नाडेण्डर
वकिल मुनशी गोलाम आहम्मद हाजिर आसित । गतो आगष्ट
माहार १० तारिखे ए मकदमा आमार बैठके पेस हइया सकल
कागज पत्र पढा जाइया मुलतवि जिल, अच पुनराय पेस हयाते
घोष हइल जे एइ आदालतेर फयजला अनुसारे केहरसिंहेर
हिस्सा ताहार कन्या ज्ञानकुडरेते अर्शे, आर केहरसिंहेर द्वितीय
कन्यार पुत्र तोतासिंह, जे ज्ञानकुडरेर मृत्युर पर सत्व राखितो,
ज्ञानकुडरेर सादशते मृत हय, आर ताहार पर ज्ञानकुडर
आपन कन्या ओमेदकुडरके राखिया मरे । आर ए दयमे उक्त
तोतासिंहेर पुत्र सिउस्वहायसिंह आर तोताकुडरेर भ्राता नाथु-
सिंहेर पुत्र नरेन्द्रनारायण ओ गयरह, जे तोतासिंह आपन
मातार सादशते फौज करियाखिल, आसल मालिक केहरसिंहेर
वस्तुर उत्तराधिकारि सुरते ऐ हिस्सार दावि राखे । ए कारण
चूडान्त हुकुम हओनेर पूर्व एइ मकदमाते शाखेर हुकुम ज्ञातो
हओया एइ विपयेते, जे विवादीय हिस्साते उभयेर मध्ये के स्वत्व
राखे, उचित हइया हुकुम हइल जे एइ रुक्कारि नकल एइ
हुकुमे जे विवादीय हिस्सार प्रति दृष्टी आर दाबिदारानेरदिगेर
प्रति दृष्टी जे ताहारदिगेर प्रसङ्ग उपरेलेखा गेल (विचार) करिया-
लेखेन जे पश्चिम प्रचलित शाख अनुसारे केहरसिंहेर हिस्सा,

जाहा ज्ञानकुडरेते पौद्धियाळिल, ज्ञानकुडरेर मृत्युर पर ताहार कन्याके किम्बा केहरसिंहेर दौहित्रगण नाथुसिंहेर पुत्रगणके ओ तोतासिंहेर पुत्रके पौछिचेक—एइ आदालतेर पळ्ळितके समर्पन करा जाय इति—

श्रीज्जयतितराम्

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तभोयुवशानरासदेचिसनसाहेव-
धर्माधिकरणलिखितेशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बर -
मासीयरसमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तदब्दीयतन्मासी-
यगजेन्दुमितदिनसम्बन्धिचन्द्रबासरे मया प्राप्तन्दयलोचय यादृशबोधो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रभुधर्मपितविचारपत्रलिखितविषये ज्ञानकोमराख्यासंक्रान्तकेहरसिंह-
स्यकांशे ज्ञानकोमराख्याया उपरमानन्तरं तत्कल्पायाः स्वत्वं मिताक्षरा-
बालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीकाप्रभृतिग्रन्थानुसारेण भवितुमर्हति—इति
पश्चिमदेशचलितमिताक्षराबालम्भट्टविरचितमिताक्षराटीकाप्रभृतिग्रन्थानुसा-
रिणी व्यवस्येति—

अत्र प्रमाणम्—

पितृमातृपतिभ्रातृदत्तगन्धन्युपागतम् ।

आधिवेदनिकाद्यं च स्त्रीधनं परिकीर्तितम्॥—इति मिताक्षरा-
धीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥१॥

पित्रा मात्रा पत्या भ्रात्रा च तदत्तं यच्च विवाहकाले अग्नावधि-
कृत्य मातुलादिभिर्दत्तम् । आधिवेदनिकमधिवेदननिमित्तमधिविधत्त्रिये
दद्यादिति वक्ष्यमाणम् । आद्यशब्देन ऋक्षकयसंविभागपरिग्रहाधिगम-
प्राप्तमेतत्स्त्रीधनं मन्वादिभिरुक्तम् । स्त्रीधनशब्दश्च योगिको न पारिभा-
षिकः, योगसम्भवे परिमापाया अयुक्तत्वाद्—इति मिताक्षरा-
ग्रन्थलिखनम् ॥२॥

यथा मातृधनग्रहणे दुहितृदौहित्रीदौहित्रपुत्रपौत्रादिकमस्तथा पितृ-
धने पुत्रपौत्रप्रपौत्रपत्नीदुहितृदौहित्रदौहित्र्यादिकमस्य प्रत्यासत्तितार-

तम्येन न्यायप्राप्तत्वात् स्वीघ्रं दुःहेतुणामप्रचानामप्रतिष्ठितानाद्येति
गीतमवचनस्य पितृघनेऽपि समानत्वादित्यनुपदमेवोक्तवता विज्ञानेश्वरेण
सूचितत्वात् तत्सम्मतमपीदमिति—इति बालभट्टविरचितमिताक्षरटीका-
रामन्यालिखनञ्चेति ।

श्रीर्जयतिराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(११६) ल० २६३ सन १८३३ साल—

रोवकारि मिछिल आदालत सदर देओनी मोकाम फलि-
काता तारिख २१ सेप्टेम्बर सन १८३७ साल मोताबके ६ आश्विन
सन १२४४ बाङ्गला श्रीयुत चारलिस हारिडिङ्ग साहेब फायम
मोकाम हाकिमेर बैठके—

बल्लभिकान्नचौधुरि

अपीलाएड

नवकान्तचौधुरि—

रेग्पाडएड

आपीलाएडेर उकिल मुनशी आवास आलि ओ रेग्पाडएडेर
उकिलान्त मुनशी वंशीयदनमित्र ओ रामप्राणराय हाजिर आशी-
लेन । अथ एइ मकदमा तरतिव मोताबके आमार बैठके दरपेश
हइया आदी ओ द्वितीय ओ एइ बिचारस्थानेर ताबत कागजात
पढा गेलो । यदि स्यात एइ मकदमाय रेग्पाडएडेर पुष्य-पुत्र
राखनेर विशये जेहा ओ एइ आदालतेर पण्डितलोकेर निकट
जिज्ञाशा गियाछिल, ताहाते पण्डितान् आपन २ जओवाय पुष्य
पुत्र सिद्धि हओनेर विशये लिखियाछेन । विशेषत एइ मकदमाय
हुकुम हओनेर पूर्व मन्देह भञ्जनार्थ एइ आदालतेर पण्डितेर
निकट कएक विशय जिज्ञाशा आविश्यक हइया हुकुम हउल
जे एइ रोवकारि नकल एइ हुकुमे एइ आदालतेर पण्डितेर
स्थाने समर्पन करा जाय जे निचेर लिखित प्रदनसकलेर जओवा
चङ्गदेशीय चलित शाखानुसारे काछारि बन्देर पर एक सप्ताहेर

मध्ये दाखिल करेण । प्रथम, एइ जे, यदि कोन पीडित व्यक्ति पीडाते अज्ञान हइया रय, आर ततकालिन् कोन एक व्यक्ति एक बालकके लइया ऐ पीडित व्यक्तिके कहे जे तुमि पुण्य पुत्र लइया, आर से समय ऐ पीडित व्यक्ति मुखे हइते हौं शब्द निर्गतो हय, तवे शास्त्रानुसारे एइ प्रकार पुण्य पुत्र सिद्धि हइते पारे कि ना । द्वितीय एइ जे, पुण्य पुत्रे विशये शास्त्रानुसारे वयेशेर किछु निरपन आछे कि ना । यदि निरपन थाके, तवे सेइ निरपन जावदीय हिन्दु जातीर निमित्ते, कि हिन्दुर मध्ये सकल जातीर विभिन्न्य बटे-विस्तार करिया लिखेन इति—

श्रीर्जयतितराम्

एतद्धर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिपिक्तभौयुतचारलिसद्वारिडिगसाहेब-
धर्माधिकरणालिखितेशबोशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बर-
मासीयेन्दुपक्षमितदिवसीयविचारपञ्चान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्रं यत्तद्विन्दुयनव-
म्बरमासीयेन्दुपक्षमितदिनसम्बन्धितृदशतिवाधरे मया प्राप्तद्वलोक्य
यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

रोगाभिभूतस्याज्ञानावस्थायां केनचिदेकं बालकमादाय तमेव रोगाभि-
भूतव्यक्तिविशेषमुद्दिश्य त्वं दत्तकपुत्रं ग्रहीष्यसीत्युक्तौ रोगाभिभूतव्यक्ति-
विशेषमुखतो हौं इति शब्दप्रयोगे सत्येवभूतदत्तकपुत्रस्याज्ञानानुसारेण न
विद्वयति, दत्तकपुत्रताविद्विषमवादकशास्त्रीयनियमजातनिष्पत्तेः प्रथम-
प्रश्नलिखितविषयतो ज्ञातुमशक्यतया तत्रियमजातनिष्पत्तिमन्तरेण दत्तक-
पुत्रतासिद्धेशास्त्रीयत्वस्य भविनुमशक्यत्वादिति—

अत्र प्रमाणम्—

पुत्रं प्रतिग्रहीष्यन् बन्धूनाहय राजनि निवेद्य निवेशनस्य मध्ये व्या-
हृतिमिहुत्वा अदूरवान्यवे बन्धुसबिकृष्टमेव प्रतिगृहीयात्—इति दत्तक-
मोमांसा (५० १०२) प्र(भू)तिग्रन्थधृतवशिष्ठवचनम् ॥१॥

द्वितीयप्रश्नस्योत्तरम्—

ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यजातीयानामुपनयनप्राक्कालपर्यन्तं शूद्रजातीयानां विवाहप्राक्कालपर्यन्तं दत्तकपुत्रता शास्त्रीया भवति—इति यज्ञदेशचलितदत्तकमीमांसादत्तकचन्द्रिकाप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

चूडाद्या यदि संस्कारा निजगोत्रेण वै कृताः ।

दत्ताद्यास्तनयास्ते स्युरन्यथा दास उच्यते ॥—इति दत्तकमीमांसाप्रभृतिग्रन्थधृतवचनम् ॥१॥

एवञ्च चूडाद्या इत्येतद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिणा द्विजातीनामुपनयनलाभः, शूद्रस्य तु विवाहलाभः—इति दत्तकचन्द्रिकाग्रन्थलिखनञ्चेति ॥२॥

ईशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनवम्बरमासीवगुणपद्मि-
तदिनसम्बन्धिषड्विंशत्यतिवासरे प्रभुषमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था मया
दत्तेति—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

(१२०)—तरजमा रोवकारि—

जम्बर ६१३१ । रोवकारी मिसिल आदालत दिमानी सदर मोकाम इलाहाबादे तारिख २५ माह अपरेल सन १२३७ ईशवी मोताबिक ५ माह बैशाख सन १२४४ फसली, रोज मङ्गलवार ओलियम मनकटन् साहेब कायम मोकाम हाकिम आदालत मजकुरार बैठके इति—

मोसम्मात ललुमना ओ ठाकुर—

आपीलाखटान्

वेचनलालेर मृत्युर पर चाहार पुत्र मुकुन्दलाल—रप्पाडखट

आपीलाखटेर ओकीलगण शेख महम्मद सफी ओ लाला-

मथुरादास ओ रष्पाडण्टेर ओकीलगण मीलची इनामुल्लाह ओ
 लाला रामचन्द्र हाजीर हइलेन । ओखियम फिलमेकडीक साहेब
 हाकिमेर सन हालेर फिवरवरी मासेर तेइसा तारिखेर हुकुमा-
 नुसारे ए मोकहिमा अद्य आमार बैठके रोवकार हइया जिलार
 दुइ आदालतेर कागजात ओ चाराणसेर कोर्ट आपील आदाल-
 तेर कागजात ओ ए मोकहिमार तजविज-सानीर कागजात ओ
 ओइ हाकिमेर राय सम्बलित सन हालेर फेवरवरी मासेर तेइसा
 तारिखेर लिखित ओइ हाकिमेर रोवकारि लिखित विस्तीर्ण
 हेतुसकल ओ सन १८२३ ईशवीर अपरैल मासेर दशइ १०
 तारिखेर रजिस्तर साहेबेर फैसलार सम्पर्कीय फौजदारी आदालतेर
 कागजात ओ भजनलाल मदै ओ मोसम्मावलजुमना मुदाआलेहेर
 मोकहिमार कागजात ओ जज आपीलेर ओइ मोकहिमार
 सन १८२४ ईसवीर जुन मासेर १४ चौदही तारिखेर फैसलार
 सम्पर्कीय कागजात पढा गेलो । अतएव ए मोकहिमाते कलिका-
 तार सदर दिमानी आदालतेर पण्डितेर निकट हइते व्यवस्था
 तलब करा आविश्यक घोष हइया हुकुम हइलो ये नीचेर लिखित
 विस्तीर्ण सवाल ये प्रकार एइ रोवकारीते लिखा आछे सेइ
 प्रकारे लिखिया एइ रोवकारीर नकल सम्बलित ओ ऐ आदाल-
 तेर रजिस्तर साहेबेर चिठीर सहित कलिकातार सदर दिमानी
 आदालतेर रजिस्तर साहेबेर निकट पाठानो जाय ये कलिकातार
 सदर दिमानी आदालतेर रजिस्तर साहेब कलिकातार सदर
 दिमानी आदालतेर पण्डित हइते ओइ सवालेर जबाब लइया
 ए आदालते पठाएन इति । सवाल एइ ये, यद्यपि दुइ भ्राता
 ताम्बुलि जाति पैतृक स्थावर धन विभागेर पर आपन आपन
 अंशेते दखिलकार छिलेन, ओ ओइ दुइ भ्रातार मध्ये एक जन
 एक स्त्री ओ एक अविवाहिता कन्या राखिया मृत्यु हइया थाके,
 ओ ओइ स्त्री आपन कन्यार विवाह कराइया थाके । ताहार पर
 ओइ कन्यार मृत्यु हय । ताहार पर ओइ मृत भ्रातार स्त्री आपन

पतिर विभक्त धने दखिलकार छिलो, द्वितीय पति करे। ए प्रकारे जिज्ञासा करा जाइतेछे ये मृत व्यक्ति पत्नीर द्वितीय पति करण शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना। यद्यपि सिद्ध ह्य तवे आपन प्रथम पतिर स्थावर धन याहा ओइ छीर दखले आछे। ताहा पाइवेक, किम्वा ओइ छीर दखली स्थावर धन ओइ छीर प्रथम पतिर आताके अशिंवेक। ओ यद्यपि ए विषयेर खुलासा शास्त्रे ना पाओया जाय तवे देशाचार ओ जात्याचार प्रमाण जाना जाइवेक कि ना। ओ एइ सवालेर यवाव बाराणस देशेर चलित शास्त्रानुसारे लेखेन इति—

श्रीज्जयतिराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रमङ्गरेषोऽशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाशपत्रं च यदीशवी-
शब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेंद्रमुनिताम्रदीपमैमासोयाङ्कपङ्कमितदिनसम्बन्धिवन्द-
वाचरे मया प्राप्तदवलोक्य यादृशबोधो आतस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

ताम्बुलिकजातीययोर्द्वयोर्भागोः पैतृकस्थावरधनस्य विभागानन्तरं
स्वहारांश्च आयत्तव्यं सम्पादितवतीरेकस्य पत्नीमेकमविवाहितां कन्यामेकां
विहाय मृतस्य पत्नी स्वकन्याविवाहं कारितवती स्यात्, पश्चात् सा विवाहिता
कन्या परलोकं जगाम, तदनन्तरं च मृतस्य भ्रातुः पत्नी स्वपतिपक्ष-
विभक्तधने आयत्तव्यं सम्पाद्य पत्यन्तरं कृतवती चेत्तत्पत्यन्तरं करणं यद्यपि
वाञ्छीक्रीणां शास्त्रविदं न भवति। किन्तु वाञ्छीभिन्नानामपि स्त्रीणां
कतिनित्प्रभेदाः शास्त्रे उक्ताः। तेषाम्प्रभेदानां तृतीयस्यैरिणीस्त्रीलक्ष्य
मिताक्षरप्रभृतिग्रन्थेषु स्पष्टतया लिखितम्। तददृष्ट्या बाराणसीप्रभृतिदेशे
ताम्बुलिकजातीयस्त्रीणां पत्युपरमानन्तरं पत्यन्तरकरणं व्यवहृतं चेत्तदेतद्वि-
वादसम्बन्धिन्या मृतस्य भ्रातुः पत्न्याः शास्त्रानुसारेण तृतीयस्यैरिण्याः
पत्यन्तरकरणं उच्चातीयव्यवहारानुसारेण सिद्धं भवितुं शक्नोति। एवमुपरि-
लिम्बितप्रकारेण तस्याः स्त्रियाः पत्यन्तरकरणस्य सिद्धौ सत्यामुत्तमधिका-
रित्वेन स्वायत्तीभूतप्रथमपतित्यक्तधने यावज्जीवं तस्या एवाधिकारस्तस्या-
जीवनान्ततत्प्रथमपतिभ्रातृर्जापिकारः, उत्तराधिकारित्वेन स्वत्योःतत्पत्यन्तरं

केनचिद्दोषेण तत्स्वत्वनाशस्य शास्त्रानुसारेण भवितुमशक्यत्वात्-इति
बाराणसीप्रदेशचर्चितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यव-
स्थेति —

अत्र प्रमाणम्—

सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते ।

सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सतां सकृत् ॥—इति मनु(६.४७)

वचनम् ॥१॥

न द्वितीयश्च साध्वीनां क्वचिद् भर्तापदिश्यते ॥—इति मिताक्षरावीर-
मित्रोदयप्रभृतिग्रन्थधृतमुनिवचनम् ॥२॥

मृते भर्त्तरि तु प्राप्तान् देवार्दानपास्य या ।

उपगच्छेत् परं कामात् सा नृतीया प्रक्रीचिता ॥—इति उपरिलिखि-
तग्रन्थधृतनारद(नास्मृ० ५० । पृ० १७६)वचनम् ॥३॥

जातिजानपदान् धर्म्मान् श्रेणोधर्म्मांश्च धर्म्मवित् ।

सगीद्व्य कुलधर्म्मांश्च स्वधर्म्मं प्रतिपालयेत् ॥—इति मनुवचनम् ॥४॥

पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा—इत्यादि मिताक्षरावीरमित्रो-
दयप्रभृतिग्रन्थधृतयाज्ञवल्क्यवचनम् ॥५॥

पत्नी गृहीयादित्येतद्वचनञ्चातं विभक्तभ्रातृस्त्रीविषयम्—इति मिताक्ष-
राग्रन्थलिखनम् ॥६॥

एतेषां विभागात् प्रागेव दोषभाक्त्वेनांशित्वम्, न पुनर्विभागोत्तर-
मपि दत्तविभागापहरणम्, प्रमाणाभावात्—इति वीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥७॥

कलिकाताम्बामहानगरसम्बन्धिसदरदिमानोधर्म्माधिकरणसम्बन्धित्व-
कर्त्तव्यकार्यञ्चातव्यमतया बहुदिनान्वात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चैद्व्यवस्था-
दाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनम् । इति देशवीशब्दप्रतिपाद्य-
मुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयनचम्बरभासीयमुनिपञ्चमितदिनसम्बन्धित्वचन्द्रवासरे
मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रांगरेजीशब्दप्रतिपाद्यलिपिभ्यां संहितेयं व्यवस्था
पारशीकलिपिनिर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण प्रमुयाचितनिवेदनपत्रेण कलि-

ज्ञातव्यमहानगरसम्बन्धितदरदिमानीधर्माधिकरणे एतद्व्यवस्थाप्रतिरूप-
रक्षणायमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रपारशीकलिपिनिर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रवि-
चारपत्रप्रतिरूपपत्रैश्च सहिता दधेति—

श्रीज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

मुकाबिला श्रीवैद्यनाथमिश्र

(१२१)—तरजमा रोवकारी—

रोवकारो आदालत दिमानी जिला फतेहपूर जाननेयाबलि-
सरेबाज साहेब जजेर बैठके । तारिख २ जुन सन १८३७ ईशवी ।
गङ्गापुत्रदिगेर ओ जमुनापुत्रदिगेर घृत्ति क्रमागत धन बटे कि
यजमानेदिगेर फमत क्षमता आछे ये आपन आपन इच्छा मते
याहाके तुष्ट हइया दिते चाहेन ताहाके दिते पारेन— ए बिषय
सदर दिमानी आदालतेर पण्डित हइते स्थाव हओया आवश्यक
बोध हइया हुकुम हइलो ये एइ रोवकारीर नकल अङ्गरेजी चिठीर
सहित मोकाम एलाहाबादेर सदर दिमानी आदालतेर प्रबल-
प्रताप हाकिमानेर हजुरे पाठान जाय, ये उपरेर लिखित ओइ
पण्डितेर निकट हइते ए बिषय स्थाव हइया ए आदालते अनुग्रह-
पूर्वक प्रेरण करेण इति—

श्रीज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितविचारपत्रसूचीपत्राद्वारेबीरन्दप्रतिपाद्यालिनिमाशापत्रञ्च यदो-
शबीरन्दप्रतिपाद्यप्रनिगुणगजेन्दुमितान्नीयशुलाहमाशोबरसमितदिनसम्ब-
न्धितगुणवाचरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो चातस्तदनुसारेणोत्तरं
लिख्यते—

गङ्गापुत्राणां यमुनापुत्राणां च वृत्तिः प्राचीनपुरोहितानां तेषां कमागतः भवितुमर्हति प्राचीनपुरोहितान्तां पुरोहित्यङ्गमानिषारप्रशंभुशालीय-
दोषमन्तरेण यज्ञमानाः परित्यज्य स्वस्वेच्छया पुरोहितान्तरं कर्तुं न शक्नु-
वन्ति इति-पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षरावीरमित्रोदयप्रभृत्येवमनुसारिणी
व्यवस्थेति ॥—

अत्र प्रमाणम्—

ऋत्विजं यस्यजेद्याज्यो याज्यं चत्विक् स्यजेद्यादि ।

रातं कर्मण्यदुष्टं च तयोर्दण्डः रातं रातम् ॥—इति वीरमित्रो-
दय (पृ० ३८३) प्रभृतिग्रन्थधृतमनु (८।३८८ इवनम् ॥१॥

कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानोघर्माधिकरणसम्बन्धि-
स्वकर्त्तृपकार्यजातव्यप्रतया बहुदिनान्यात्यन्तिकरोगग्रस्ततया चेतद्व्यवस्था-
दाने एतावान् विलम्बो जात इति निवेदनमिति । ईशवीर्यन्दप्रतिपा-
द्यमुनिगुणगजेन्दुमिताश्रीयनयम्बरमाषीयमुनिपञ्चमितदिनसम्बन्धिवम्ब्रवासरे
मया प्रभुसमर्पितविचारपञ्चाङ्गरेजीशन्दप्रतिपाद्यलिपित्स्वीपदैः सहितैर्य
व्यवस्था पारशीकलिपिनिर्मितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रेण प्रभुपाचितनिवेदन-
पत्रेण कलिकाताख्यमहानगरसम्बन्धिसदरदिमानोघर्माधिकरणे एतद्व्य-
वस्थाप्रतिरूपरत्नार्थमेतद्व्यवस्थाप्रतिरूपपत्रप्रसारशीकलिपिनिर्मितव्य-
वस्थाप्रतिरूपविचारपत्रप्रतिरूपपत्रैश्च सहिता दद्या इति ॥

श्रीजर्जयतितराम्

श्रीवेद्यनाथमिश्रेण

भोकाविला श्रीवेद्यनाथमिश्र—३

श्रीश्रीहरिः

(१२२)— न० २१२ सन १८३५ सालेर—

रुक्कारि निजिल आदालते देओयानि सदर मोहाम कलि-

काला बैठक ज्ञान राम हेचिसन साहेब, उक्त आदालतेर काश्म मोकाम हाकिम । सन १८३७ साल तारिख ६ सेतम्बर मोठावके सन १२४४ साल तारिख २२ भाद्र बुधवार—

सिउस्वहायशाहुर मृत्युर पर ताहार पुत्र गोपाललालेर ओयालि-

बदामुकुडर

आपीलाएट

बुनियादिसिंह

रेप्पाडेण्ट

गतो मार्च माहार २८ तारिखे एइ मऊईमा आमार बैठके

पेस हइया सकल कागज-पत्र पढा जाइया रानी कृष्णमनी आपी-
लाएट ओ राजा उदअन्तसिंह रेप्पाडेण्ट एइ मऊईमार एइ
आदालतेर फयछेला मोनाहेजा करयेर कारण आर मृत आपी-
लाएटेर उत्तराधिकारि हाजिरेर निमित्त इस्ताहार जारि करणेर
कारण मुजतबि छिल । अथ पेसकारेर ज्ञात करान मते जे मृत
आपिलाएटेर उत्तराधिकारि सायुदेर वावत रिटरन फामेल
पौछिया मृत आपिलाएटेर जाएगाय गोपाललालेर अलि मोझर्मात
बादामुकुडरेर नाम लेला गियाछे; आर ताहार तरफ हइते मुनसि
होसन आलिर नामे ओ जिमिस चारलेस कोलवरफ सदरलेण्ट
साहेबेर नामे ओकालतनामा दाखिल हइयाछे । उक्त उकिलगयेर
हाजिरिते आर रेप्पाडेण्टर गरहाजिरिते जे पयालामनामा
जारिते रसिद् लिखिया देओयातेओ उकिलेर द्वाराय किम्ब) खोद
हाजिर नाइ । पुनराय पेस हइवाय बोध हइल जे काजियार प्राम-
सकल पूर्ण हइते ७००० टाका आगामिते इस्तफ सन १२२३
नागाद सन १२२६ फसलि साववत सरमियादे आपीलाएटेर
पितार इजारा छिल, आर ऐ आशामिर टाका आदापर ओ-
यादा इजारार अन्तसनेर अन्ते छिल । यदि स्थात बाहा ओयादा
मते आदाय ना हय, तवे ऐ टाका आदाय पर्यन्त इजारा बाहाल
थाकिवेक । इहार परे बुनियादिसिंह रेप्पाडेण्ट ओ प्रताप
सिंहेर पिता खडगनारायण ४३०० टाका तममुकसकलेर द्वाराय
उक्त इजारादारेर निकटहइते लइया १२२५ साले काजियार प्राम

सकल आर दोसरा ग्रामसकल आर रेप्पाडेण्ट आर प्रतापसिंह नावालग पुत्रगणके उत्तगधिकारि राखिया फौत करे । ताहार पर तमसुकेर टाका तलय तागादाय खडगनारायणेर अनिता मतिकुडर नावालगदिगेर माता काजियार ग्रामसकल १२००१ टाकाते वयवेल ओफा राखिया किर्म्मतेर टाका हइते आशामिर टाका आर तमसुकेर टाका मिनाह दिया चाकि टाका आपनि लय । यदि स्यात्, रेप्पाडेण्ट प्रकाश करितेछे जे मतिकुडर वयवेल ओफार द्वाराय काजियार ग्रामसकल हस्तान्तर करणेर जेमता राखे ना, आर इजारार आगामि टाका आदाएर ओयादा इजारार अन्त सने, न चेत् ताहा आदाय पर्यन्त इजारा बाहालेर शरत छिल । आर इजारा बाहालेते रेप्पाडेण्टर विषये स्थव्य वैतितो कोन खेति छिल ना । किन्तु चुडान्त हुकुम हओनेर पूर्व शाखेर हुकुम जाना एइ विषएते जे मतिकुडरेर निकट हइते तमसुकेर टाका तलय करा आर तमसुक ओ गरहेर टाका आदाय कारण काजियार ग्रामसकल हस्तान्तर करणेर मतिकुडरेर जेमता छिल कि ना उचित हइतेछे । ए कारण हुकुम हइल जे एइ रुबकारि नकल एइ हुकुमे जे निचेर लिखित प्रश्नेर उत्तर पश्चिम देशीय प्रचलित शास्त्र अनुसारे रुबकारि पौछिवार तारिख हइते एक सप्ताहेर मध्ये लेखेन, एइ आदालतेर पारडवकं समापन करा जाय ।

प्रथम, एइ जे, खडगनारायणेर लिखित तमसुक ओ गरहेर टाका मतिकुडरेर निकट हइते तलय करा उचित छिल, कि ना ।

द्वितीय, एइ जे, यदि स्यात् नावालगगणेर अलि मतिकुडरेर निकट हइते तमसुक ओ गरहेर टाका तलय करा उचित हय, तवे उहार इजारार विषय परिवर्त्त कारियार ग्रामसकल वयवेल ओफा राखिया तमसुकेर टाका आर आशामि टाका किर्म्मतेर टाका हइते मिनाह करणेर जेमता छिल कि ना इति—

श्रीर्ज्जयतितराम

एतधर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तभीयुतज्ञानरासहेचिसनसाहेवध-
र्माधिकरणलिखितेश्वीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमा-
सीयरसमितदिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नचातप्रतिरूपपत्रं यत्तदन्दीयतन्मा-
सीयगजेन्दुप्रतिदिनसम्बन्धचन्द्रवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशदोषो
जातस्तदनुसारेणोत्तरं लिख्यते—

प्रथमप्रश्नस्योत्तरम्—

प्रभुसमर्पितविचारपत्रलिखतविषये खड्गनारायणलिखितसंक्षेपप्रभृति
राजसमुद्रायाचनकरणं मतिकोमराख्यासन्निधौ शास्त्रानुसारेणोचितज्ञासीत् ।
पुत्रेषु विद्यमानेषु पितृश्रद्धांशकरणस्थ^१ प्रथमतः पुत्रैरेवकर्तुमुचितत्वात् ।
द्वितीयप्रश्नस्योत्तरमप्यथा^२ त्रैव पर्यवसितमिति पृथङ् लिलिखितमिति निवे-
दनम्—इति पश्चिमदेशचलितमनुमिताक्षगवीरमिश्रोदयप्रभृतिग्रन्था-
नुसारिणीव्यवस्थेत—

अत्र प्रमाणम्—

श्रुणुमात्मीयवत् पित्र्यं पुत्रेदेयं विभावितम्—इति मिताक्षरा (पृ०
१५२) प्रभृतग्रन्थधृतवृत्तरूपति (पृ० ११७ वचनम् ॥१॥

तत्र क्रमोऽप्ययमेवपित्रभावे पुत्रः—इति मिताक्षरा (पृ० १५२) ग्रन्थ-
लिखनञ्चेति ॥२॥

इयवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयसितम्बरमासीयरसमितदि-
नसम्बन्धिपुष्यवासरे मया प्रभुसमर्पितविचारपत्रसहितेयं व्यवस्था इत्येति—

श्रीर्ज्जयतितराम्
श्रीवैद्यनाथमिश्रेण

श्रीदुर्गा

(१२३)—१०० ल० जारी—

जे०। चव्विस परगणार मतालक चांकि नवावगञ्जेर मोन-

छफी काछारि हइते सदर देओनि आदालतेर श्रीयुत पण्डितेर निकट व्यवस्थार कारण सओल एइ—

गुरुप्रसादराय—१

डिगरिदारान्

इन्द्रनारायणराय—१

सा. काठालिया—

परगणे कलिकाता ।

श्रीमतीगुणमयीदासी

देनादार—

सा. सुकचर प० ऐ—

दावि २१७१६ टाका—

मा० जारिर खरचा—

यद्यपि देनादार श्रीमत्या गुणमयीदासीर स्वामी रघुनाथ-
वल्लभ स्थावर ओ अस्थावर विद्यादि एवं श्रीराखालवल्लभ
नामक अप्राप्तवयेष एक नाबालक पुत्र एवं स्त्री दासी मजकुराके
राखिया लोकान्त हय । ऐ रघुनाथ मजकुरेर लोकान्तेर परतस्य
वनिता अर्थात् दासी देनादार मजकुरा अप्रओल जन्य ऐ नाबालक
पुत्रर प्रतिपालनार्थे ऐ डिगरिदारानेर निकट सुखा तामाकु कर्ज
लहया व्यवसा करिया ऐ नाबालगेर प्रतिपालने खरच करे । ऐ
तामाकुदेर किर्मंत परिशोद ना हओते डिगरिदार मजकुरान
नालिपेट द्वाराय डिगरि हासिल करिया ऐ डिगरि जारि करिया
ऐ रघुनाथ, मतेश्रोफार जायदाद १४ दाफा जाहा ऐ नाबालगेर
हक ताहा कोक कराइयछे । अतएव शास्त्रानुसारे नाबालक
राखालवल्लभेर पिता श्री रघुनाथ वल्लभ मवओफार जायदाद
श्रीमतीगुणमयीदासीर देना परिशोदाथे विक्रय हइते पारे कि—
इहार व्यवस्था इति—

श्रीज्जयतितराम्

प्रभुसमर्पितप्रश्नपत्र विचारपत्रमङ्गरेजोलिपिमाञ्जपत्र च यदीशवी-
शब्दप्रतिपादमुनिगुणगजेन्दुमितान्दीयमैमासीयत्राणेन्दुमितदिनसम्बन्धिच -

(१२४)—संश्लेषण—

यद्यपि कोन एक व्यक्ति हिन्दु आपन जातीय धर्म हइते जात्यन्तर हइया अन्य धर्मावलम्बीय हय, आर ताहार स्त्री आपन जातीय हिन्दु धर्म अवलम्बीय थाकिया आपन ऐ स्वामीर निकट जाइते अशान्मतो हय, तबे हिन्दुदिगेर शास्त्रानुसारे ऐ स्त्री आपन जात्यन्तरीय स्वामी हइते विच्छेद हइया आपन पितृ पि भ्रातृ आलये थाकिते पारे, किम्वा विचारकर्ता हाकिम आपन क्षमताय ऐ स्त्रीके ताहार ऐ जात्यन्तरीय स्वामीके अर्पन करिते पारेन—इहार व्यवस्था शास्त्रानुसारे जाहा हय, एइ प्रश्नेर प्रति उत्तर लिखेन इति—

श्रीर्जयतिराम

प्रमुखमर्षितप्रश्नपत्रं विचारपत्रमङ्गरेवीशब्दप्रतिपाद्यलिपिमाहापत्रं च यदीशवीशब्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीयजुबाइमासीपरसमितदिनय - म्वन्निबृहस्पतिवासरे मया प्राप्तं तदवलोक्य यादृशबोधो जातस्तदनुसारेणोत्तर लिख्यते—

प्रश्नलिखितविषये हिन्दूजातीया काचित् स्त्री स्वजातीयधर्मान्तरता सती स्वजातीयधर्मान्तरतायन्तरधर्मान्तरानुष्ठानपतिवन्निधौ गन्तुमसम्भता चेत्तदा स्वजातीयधर्मान्तरतायन्तरधर्मान्तरानुष्ठानपतिविरहिता एव पितृभ्रातृ-वां गृहे स्थातुं शक्नोति, एवं राश्यापि शास्त्रानुसारेण स्वजातीयधर्मान्तरतायन्तरव्यवहर्तृपतिवन्निधौ स्थापयितुं योग्या न भवति-इति मनुदायभागविवादभङ्गाण्वमितद्वारावीरमित्रोदयप्रभृतिग्रन्थानुसारिणी व्यवस्थेति—

अत्र प्रमाणम्—

नाटः प्रयजितः क्लीबः पतितो राजकिल्बिषी ।

लोकान्तरगतो वापि परित्याज्यः पतिः स्त्रियाः ॥ इति विवाद-भङ्गार्थवप्रभृतिग्रन्थपृतदेवलवचनम् ॥१॥

दम्पत्योः परस्परधर्माव्यतिक्रमे सत्यन्यतरज्ञाने दण्डेनापि स्वधर्माव्यव-

दरबारे हाजिर नाइ। एइ मकदमा सन हालेर २१ सेप्टेम्बर तारिखे
आमार बैठके दरपेस हइया मिछिलेर कागजसकल दृष्ट करणेर
पर तारिख मजकुरेर रोवकारीर लिखितानुसारे कएक प्रश्न एइ
आदालतेर पण्डितेर स्थाने जिझाएय हइया स्थकित छिल। परे
अथ रोवकार हइया पण्डितेर दाखिल करा एइ मासेर २३ तारि-
खेर लिखित व्यवस्था दृष्टे आइल। ताहाते एइ मकदमार खास
आपील मजकुरेर पूर्वें एइ आदालतेर पण्डित एइ आदालतेर
सोओलोर जओवे जेलार आदालतेर पण्डितेर व्यवस्थाय रेष्पा-
डएडेर पुष्य पुत्र सिद्धिर विषये जेलार पण्डितेर व्यवस्था जधार्थ
लिखियाछेन। आर पण्डित मौछफेर हालेर दाखिल करा व्यव-
स्थार द्वाराय जेलार आदालतेर व्यवस्थार अनक्यो बोध हइतैछे।
अतएव हुकुम हइल जे पुनराय शावेक व्यवस्था ओ एइ आदालतेर
पण्डितेर हालेर व्यवस्था ओ जेला आदालतेर पण्डितेर व्य-
वस्थार नकल एइ रोवकारिर नकल सम्बलित एक सप्ताह मेयादे
पण्डितेर स्थाने समर्पन करा जाय जे आपन सावेक व्यवस्था
ओ हालेर व्यवस्था ओ जेला आदालतेर व्यवस्थार मजमुनेर प्रति
विचक्षण विवेचना करिया। रेष्पाडएडेर पुष्य पुत्रेर विषये जाहा
यधार्थ हय विवरण करिया लेखेन, एइ आदालतेर पण्डितेर
कैफियत दाखिल करा पर्यन्त एइ मकदमा स्थकित थाके इति—

श्रीज्जयतितराम

एतद्वर्माधिकरणाधिपतिस्थानाभिषिक्तश्रीयुलचारलिपहारडिगसाहेब-
धर्माधिकरणलिखितेशबीसन्दप्रतिपाद्यमुनिगुणगजेन्दुमिताब्दीवनवम्बरमा-
सीयगजपद्ममितादिवसीयविचारपत्रान्तर्गतप्रश्नप्रतिरूपपत्र तत्समर्पितमदत्त-
प्राचीनोर्वाचीनव्यवस्थाप्रतिरूपपत्र विज्ञास्याचान्तरधर्माधिकरणयुक्त-
पण्डितलिखितव्यवस्थाप्रतिरूपपत्रं न यत्तदन्दीयदिशम्बरमासीयमुनिमित-
दिनसम्बन्धिवृहस्पतिवासरे मया प्राप्तस्तद्वक्तोक्त्य यादृशोपो जातस्तदनु-
सारेण निवेद्यते—

व्यवस्थार सूची

सन १८२४ साल ई

- | | |
|---|---------------------------------------|
| <p>१—बाबु हरप्रकाशसिंह
मृत राजा देलगञ्जनदेशी
पत्नी ओ भ्राता ओ भ्रातृपुत्र याकिते के अधिकारि हय,
एहार व्यवस्था</p> | <p>आपीलाएट
रणाडएट
१-४</p> |
| <p>२—दुल्लीपाडे ओ गयरह
काशीपाडे ओ गयरह
एक पुत्र दत्तक करिते पारे कि ना
ओ महाभाक्षणीय वृत्ति हस्तान्तर करिते पारे कि ना, एहार व्यवस्था</p> | <p>आपीलाएटान
रणाडएटान
४-७</p> |
| <p>३—मृत प्यक्तिर भ्रातृपुत्र ओ भ्रातृपौत्रे उत्तराधिकारि हओयार
व्यवस्था</p> | <p>८-९</p> |
| <p>४—मुख्यमात दिपु
गौरीराऊर
उत्तराधिकारि व्यवस्था</p> | <p>आपीलाएट
रणाडएट
९-१०</p> |
| <p>५—शेख मोलामअली वनामे मिरजा एयरहिम बेग
हिन्दूजातीय ओलोक यवनबाति प्राप्त हय, ताहार उपार्जित द्रव्य के
पाव एहार व्यवस्था</p> | <p>१८-२०</p> |
| <p>६—रामसेवकसिंह
मृत हानारिदमनसिंह ओ गयरह
उत्तराधिकारि व्यवस्था</p> | <p>आपीलाएट
रणाडएटन
२०-२२</p> |
| <p>७—बगमोहनमुखोपाध्याय
पञ्चाननचट्टोपाध्याय प्रभृति
उत्तराधिकारि व्यवस्था</p> | <p>आपीलाएट
रणाडएटन
२२-२४</p> |

- ८—स्वरणकारजातीर गुञ्जेर व्यवस्था २४-२६
 ६० सन १८२५ साल
- ९—भीमति हेमलताचौधुरायी आपीलाएट
 भीमति पद्ममणि रणाडएट
 उत्तराधिकारि व्यवस्था २६-३२
- १०—श्यामसुन्दरमहेन्द्र आपीलाएट
 कृष्णचन्द्रभरमवरराय (पापड) रणाडएट
 दासीर सम्भवात पुत्र सम्पर्कीय व्यवस्था ३२-३६
- ११—मृत व्यक्ति दत्तकपुत्र ओ औरसपुत्रेर सहित विभागेर व्यवस्था ३६-३७
- १२—योगिजातीर स्त्री सती हज्रोयार व्यवस्था ३८
- १३—मृत व्यक्ति शोषाभित धन पिता ओ भ्राता ओ पुत्रदिगेर सहित विभागेर व्यवस्था ३८-४०
- १४—प्रियागसिंह आपीलाएट
 अयोध्यासिंह रणाडएट
 औरसपुत्रेर सहित दत्तकपुत्रेर विभागेर व्यवस्था ४०-४३
- १५—धर्मचन्द्र ओ गयरह शायेलान
 देहालये सेवाइत नियुक्त करवाधिकारेर व्यवस्था ४३-४८
- १६—धर्मचन्द्र प्रभृति शायेल
 ऐ उपरैर लिखित विषयेर व्यवस्था ४८-५१
- १७—जानकीनाथराय प्रभृति आपीलाएटान
 गद्दागोविन्दचोपाध्याय रणाडएट
 उत्तराधिकारि व्यवस्था ५२-६१
- १८—मृत राजा अरिमहंनशाहि आपीलाएट
 शिवदयालउपाध्याय रणाडएट
 मृत व्यक्ति भ्राता ओ भातपुत्रेर मध्ये के उत्तराधिकारि हय, एहार व्यवस्था ५६-५८
- १९—मादण सोदण नुर मन्नि के विवाह करिया ऐ बुद्ध जनके एकत्र रखिते पारे कि ना, वाहार व्यवस्था ५८-६०

- २०—कुन्दनगिर आपीलायट
दुर्गागिर ओ गयरह रप्पाडयटान
दिन्दूर औरस जात यवनीगर्भवातेर कोन जाति व्यवहार हय, इहार
व्यवस्था ६१-६३
- २१—ब्राह्मणजाति सरिकि मते मदिरा चोतल व्यापारेर व्यवस्था
६३-६४
- २२—मृत व्यक्तिकर प्येठ पुत्रेर ओ ओ कनिष्ठ पुत्रेर सहित विभागेर
व्यवस्था ६४-६७
- २३—दास दासीके विक्रय करिवार व्यवस्था ६७-७०
- २४—कृतदास मोक्षेर व्यवस्था ७०
इं० १८२६ साल
- २५—मृत भवाणीचरणचन्द्रेर उत्तराधिकारि राधावल्लभचन्द्र ओ गयरह
आपीलायटान
मृत गोविन्दचन्द्रचौधुरि उत्तराधिकारि जगचन्द्रचौधुरि ओ गयरह
रप्पाडयटान
देवत्रेर मोकररी पाटार व्यवस्था ७१-७६
- २६—राधावल्लभचन्द्र ओ गयरह आपीलायटान
जगचन्द्रचौधुरि ओ गयरह रप्पाडयटान
ऐ उपरेर लिखित विसयेर व्यवस्था ७६-७८
- २७—मित्रजित्सिंदेर अली भीमती मनुबिबि शाएला
स्वामीर मानुलपुत्र उत्तराधिकारि हथोवार व्यवस्था ७८-८२
- २८—भ्रमति सुलङ्ग्या आपीलायट
श्यामाप्रसादनन्दि ओ गयरह रप्पाडयटान
उत्तराधिकारि व्यवस्था ८२-८५
- २९—कमलाकान्तघोसाल ओ गयरह
बनामे रामहरिनन्दिग्रामि ओ गयरह
प्रहोत्तर घमि दानेर व्यवस्था ८६-८८

३०—भवाणीलाल वनामे हरीशचिविर मर्फदमा

उत्तराधिकारीर व्यवस्था

८६-६३

३१—मृतगौरिप्रसादचौधुरि

आपीलाएट

मुसम्मात अयमालाचौधुराणो

रफादएट

मातृसंक्रान्त पुत्रपत्नेर विमयेर ओ उत्तराधिकारिर व्यवस्था

६३-६७

३२—मृत व्यक्तीर सतम पुरुष अति ओ मातुलपुत्र, इहार मध्ये उत्तराधि-
कारिर व्यवस्था

६७

३३—सत प्रकार आगमेर व्यवस्था

६७-६८

३४—कुशलरायेर उत्तराधिकारिदिगेर विभागेर व्यवस्था

६८-१०१

३५—मृत व्यक्तीर तिन स्त्री, ताहारदीगेर सात पुत्र, ताहार विभागेर
व्यवस्था

१०१-१०४

३६—प्रसादसिंह राजपूत जातेर औरस एवं धानुक जातेर स्त्रीर गर्भे
उत्पन्न हइयाझिल, ताहार खोरपोयेर व्यवस्था

१०४

३७—भ्रातृपुत्र थाकिते दौहित्रके कृत्रिमपुत्र करिते पारे कि ना, ताहार
व्यवस्था

१०५

३८—स्वामीर अनुमविते दत्तक राखियाछे, सेइ दत्तक उत्तराधिकारि
हओव्वार व्यवस्था

१०५-१०६

३९—आजमीर देशेर सम्मर्कीय व्यवस्था, बल्लदेश दासभाग मते दत्तक-
पुत्रेर सत्वे सिद्ध बटे कि ना, ताहार व्यवस्था

१०६-१०७

इ० १८२७ साल

४०—छप्राप्तव्यवहार शिवनाथयेपेर पत्ने अति बल्लयमवशु वनामे
भानुमजी दास्या । स्त्रीपत्नेते पुत्र ओ मृतपुत्रेर स्त्रीर उत्तराधिकारिर
व्यवस्था

१०७-११०

४१—नवकिशोरदास खयेञ्ज

ताहार देवा उत्तराधिकारिर व्यवस्था

११०-११४

४२—शङ्करदास आयेल

स्त्रीवन्धकेर व्यवस्था

११४-११७

४३—नद्धिराम	आपीलाष्ट	
मुशम्मात आनन्दिवाह	रणाडष्ट	
सर्ति हेवार व्यवस्था		११८-१२०
४४—राममोहनघोष बनामे रामघोनराय ओ गयरह हिन्दूर परवेर		
बन्दर दिने पत्युने तालुकेर निलेम हओनेर व्यवस्था		१२०-१२३
४५—छन्दाविह	आपीलाष्ट	
मुशम्मात दुर्गाकुमार	रणाडष्ट	
स्री कन्या सत्वे हेवार व्यवस्था		१२३-१२७
४६—छन्दाविह	आपीलाष्ट	
मुशम्मात दुर्गाकोटर	रणाडष्ट	
उत्तराधिकारिर व्यवस्था		१२७-१२९
४७—रायवंशीधर बनामे मनोहरलाल		
उत्तराधिकारिर व्यवस्था		१२९-१३१
४८—आनन्दिलाल	सायेल	
ओ रायधुमनलाल	सायेल	
उत्तराधिकारिर व्यवस्था		१३१-१३४
४९—अभिमानराय	सायेल	
हकतपदादारेर दाओयार व्यवस्था		१३४-१३६
५०—भवाणीचरणदत्त	सायेल	
स्रीतोकेर दस्तावेज देओयार व्यवस्था		१३६-१३८
५१—गणेश	आपीलाष्ट	
बिनसिया	रणाडष्ट	
देवरके सौगा करार व्यवस्था		१३८-१४१
५२—गणेश	आपीलाष्ट	
मुशम्मात बेलसिया	रणाडष्ट	
सौगा करार ओयारीसेर व्यवस्था		१४१-१४३

५३—सरकार

मुद्दं

श्रीमरायोराय शतिर श्रीयारिष श्री दण्डधारिचौवे श्री भाम
मुर्दायालेहेम । अनुमरणेर व्यवस्था १४३-१४५

५४—कालीप्रशादराय

सायेल

अप्राप्तव्यवहारेर घन विम्वार व्यवस्था श्री उत्तराधिकारि
व्यवस्था १४५-१४७

५५—रामप्रसादबन्दोपाध्याय

आपीलायट

आपन अप्राप्तव्यवहारा कन्या अन्नपूषादिव्यार पत्र हइते श्रीमति देव्या
श्री गयरह रणाडयटन
मुष्यादेव्या श्रीजरदार
पितृघने दुइ कन्यार अधिकार हरया एक कन्या मरिले ऐ घने ऐ
कन्यार पुत्र श्री ऐ कन्यार भगि, इहार मध्ये कइहार अधिकार—
इहार व्यवस्था १४७ १५१

इ० सन १८२८ साल

५६—देविदयाल प्रभृति

आपीलायटन

हरहोरसिंह

रणाडयट

राय बसिवार व्यवस्था

१५१-१५३

५७—बयसामगिर बनामे मायागोर श्री देविगीर

गुहर त्यक्त घन पाइया आपन चेलार असम्मतिते हस्तान्तर करे,
ताहार व्यवस्था १५४-१५६

५८—सपत्नी श्री ताहार कन्या श्री ताहार पुत्र याकिते स्वामीर विना

अनुमतिते पुष्यपुत्र करिते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था १५७

५९—नपरभिन्न श्री राजोवभिन्न

आपीलायटन

रामदुमारचट्टोपाध्याय प्रभृति

रणाडयटन

स्वामीर त्यक्त घन पाइया तत्परे आपन दीहित्रके देवा लिखिया
दिया परे बिक्री कये, ताहार व्यवस्था १५८-१६२

- ६०—मुखभात ज्ञानकोटर ओ वयाकोटर आपोलाएटन
 दुःखपहनसिह ओ दोवदत्त रण्डाडएटन
 कन्या पितृघनाधिकारिणी हदया पुत्रवधूके यदि ऐ धनेर देवा करणेर
 समता ना राखे, तवे ऐ धनेर स्वत्वाधिकारी के हदवेक, ताहार
 व्यवस्था १६२-१६६
- ६१—कोनो गृहस्थकन्यार मूल्य ना लइया कोनो लोटेर नफरेर मङ्गो
 विवाह देय, ओ ऐ कन्यार सन्तान ऐ दातेर मनोयेर दासदासो
 हदवेक कि ना, ताहार व्यवस्था १६६-१६८
- ६२—अप्राप्तव्यवहार राजा शशीभूषणदेवरायेर पक्षे-अलि कमलाकान्त-
 चक्रवर्त्ति आपोलाएटन
 गुणगोविन्दचौधुरि रण्डाडएटन
 मातार सोरपोतेर जमीर विक्रयेर व्यवस्था १६८-१७१
- ६३—रत्नसिंह सायेल
 कोनो छो स्वामीर धने उत्तराधिकारिणी हदया कन्या ओ दोहित्र
 ओ स्वामीर श्रावधुत्र रत्निमा मरे, इहार मध्ये के उत्तराधिकारि
 हदवेक, ताहार व्यवस्था १७२-१७४
- ६४—राजाधरवाचस्पति सायेल
 एजमालि उमिशारि मध्ये दुइ भाइ बन्धक राखे, ताहार मध्ये आर
 दुइ भाइर अनुमति लयन आविश्यक राखे कि ना, ताहार व्यवस्था
 १७५-१७६
- ६५—जयराजधामि स्वयं ओ मृत बसोविधामिर स्त्री दिपुधामिनीर अप्राप्त-
 व्यवहार पुत्र रामचन्द्रधामिर पक्षे अलि प्रकारे आपोलाएटन
 मुशनधामि रण्डाडएटन
 स्वामीर बिना अनुमतिरे पुण्यपुत्र करिते पारे कि ना, ओ ताहाके
 वृत्ति देवा करिते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था १७७-१८०
- ६६—राजा गिरीशचन्द्र राय आपोलाएटन
 मृत राजा ईशानचन्द्रदेवरायेर अप्राप्तव्यवहार पुत्रगण राजकोटर
 नरहरिचन्द्रदेवराय प्रभृतिर उल्लि

राजा उमेशचन्द्रराय

रग्गाडण्ट

अविभाज्य राज्येर प्रतिनिधि ये मसेहेण, ताहा पुत्र-पौत्रादि कमे
हओनेर व्यवस्था १८०-१८४

६७—जयमण्डिदेव्या प्रभृति

आपीलायटन

फकिरचन्द्रचक्रवर्ति

रग्गाडण्ट

देवर्त्तर ओ देवसेवाते माता ओ पत्नी इहार मध्ये के अधिकारिणी,
ताहार व्यवस्था १८४-१८८

६८—मृत बाबु अभयनारायणसिंहेर ओ मुशम्मात पुनितकोडर ओ
कन्या मुशम्मात अश्वमेचकोडर सोयल

अविभक्त स्थावरेर पत्नी ओ कन्या ओ सपिएरेर सहित् उत्तरा-
धिकारिर व्यवस्था १८८-१९२

६९—अविभक्त स्थावरेर निबांण विन्ध्य फणते इकस्वाशारेर दाविर
व्यवस्था १९२-१९३

इ० १८२९ साल

७०—राजचन्द्रराय

सायेल

देवघरेर उपस्वर्त्त विकोर व्यवस्था

१९३-१९६

७१—बाबु गङ्गामठादनायण

आपीलायट

बाबु लक्ष्मीनायण

रग्गाडण्ट

ओकृत व्यवहारेर अतिदेर व्यवस्था

१९६-१९९

७२—मुशम्मात दुलालदेह ओ सोनोसिंह

आपीलायटन

सेमाबितराय ओ कीर्तिराय

रग्गाडण्टन

पतिर विभक्त वस्तुते पत्नीर दानेर क्षमता आछे कि ना ओ अवि-
भक्त वस्तुते पत्नीर हस्त हय कि ना, ताहार व्यवस्था १९९-२०२

७३—गोवर्द्धनलाल

आपीलायट

मोहनलाल ओ मृत मोहनलालेर उत्तराधिकारि गङ्गामठाद
रग्गाडण्टन

यणत करिवार ओ मृत पुत्र छत्ते एक पुत्रके दानेर व्यवस्था
२०२-२०६

- ७४—इलधरमुखोपाध्याय
अग्रपूजादेव्या प्रभृति
श्रीलोकेर देवार व्यवस्था
आपोलाष्ट
रम्भाडयन
२०६-२०६
- ७५—आकवरराय प्रभृति मफलेष आपोलाष्टन
यदुनाथसिंह ओ सादेवसिंह प्रभृति रम्भाडयन
अप्राप्तव्यवहारे अंग विक्रयेर व्यवस्था
२०६-२१२
- ७६—जयशमधामि स्वयं उच्छि प्रकारे मृत बलोसिधामिर श्री दिपु-
धामिनोर अप्राप्तव्यवहार पुत्र रामचन्द्रधामिर पत्ने आपोलाष्ट
मुशनधामि रम्भाडयन
पतिर अनुमति व्यतिरेके दत्तक करिते पारे ना, ताहार व्यवस्था
२१२-२१६
- ७७—शिओवकशमिभ वनांमे देवोपसादपांडे प्रभृति
बालाणेर दौहित्र पुष्यपुत्र करिवार व्यवस्था
२१७-२१६
- ७८—आनन्दाधराय अप्राप्तव्यवहारेर अक्षिगण भवाणीप्रसादचौपुरि
ओ विश्वनाथचकदार आपोलाष्ट
राणी जगदम्बा रम्भाडयन
२१६-२२१
- ७९—देवर्तार जमिदारिअ भिक्वेर व्यवस्था
२२१-२२३
- ८०— " " " " २२३-२२४
- ८१— " " " " २२४-२२६
- ८२—कन्या पितृ-घने अभिचारिणी हदया आपन नाबालक पुत्रेर मरण
पोषणादि कारण पितृवस्तु विक्रय करिते पारे कि ना, ओ निवा ओ
माता याकिते अन्य व्यक्ति अक्षि दइते पारे कि ना, ताहार व्यवस्था
२२६-२२८
- ८३—कृष्णलोचन प्रभृति
तारामसिदास्या प्रभृति
आपोलाष्टन
रम्भाडयन
नाबालक पुत्रेर मृतमातुल इइते प्राप्त स्पावर वस्तुर कृप आनार
कम नाबालकेर माता विक्रय करे, ताहार व्यवस्था
२२६-२३४

- ८४—बदनचन्द्रसिंह ओ अमात्यव्यवहार रामनारायणघोषेर पिता जीवन-
कृष्णघोष आपिलाष्टान
राधानाथसिंह रणायण
उत्तराधिकांशर व्यवस्था २३४-२३८
- ८५—पुत्रवधूकृत स्वगुरेर रथावर वस्तु विक्रयेर व्यवस्था २३८-२३९
- ८६—गङ्गागोविन्दसेन फैरादी
रामलोचनसाहा आशामी
पुत्र सत्ये ऐ पुत्रेर स्त्रीके दान करे, ताहार व्यवस्था २४०-२४६
- ८७—नन्दकुमारगोस्वामी ओ रामचन्द्रगोस्वामीदिगेर फैरादी
वैष्णवानन्दगोस्वामीदिगेर आशामी
गोस्वामीदिगेर भायक महलेर व्यवस्था २४६-२४९
- ८८—अमात्यव्यवहार आता अमात्यव्यवहार आता अंश सहित विक्रय करेण
ताहार व्यवस्था २५०-२५१
- ८९—विक्रय करिया दखल दिया पुनर्बार देखल करे ताहार व्यवस्था
२५१-२५३
- ९०—सरति देयार व्यवस्था २५४-२५५
- ९१—विवाहकाले कन्याके कोन रथावर वस्तु देय, ताहार व्यवस्था
२५५-२५७
- इं० १८३० साल
- ९२—गोपालचन्द्र प्रभृति आपिलाष्टान
बाबु कोंडरसिंह रणायण
दानेर व्यवस्था २५७-२६१
- ९३—अमात्यव्यवहार हरनाथसिंहेर याता मुयम्मात स्वदो विवि ओ
चपत नेजामदिनेर माता मुयम्मात करिमन ओ अमात्यव्यवहार
अलोचरयेर माता मुयम्मात पत्र ओ मुयम्मात यादामु ओ मुयम्मात
उदासी सायेलगवा
उत्तराधिकांश ओ सोस्वोदेर व्यवस्था २६१-२६५

६४—वाधु माधोसहाय ओ वेनिसहाय अप्राप्तव्यवहारगणेश मोकार
 वाधु रामचरणलाल आमिलाष्ट
 मोशम्मात वदामो प्रभृति रणाडयटन
 पत्पनुमति व्यतिरेके दत्तक करा ओ पतिर वस्तु देवा करणेश
 व्यवस्था। २६५-२७०

६५—कन्दर्पसिंह मोफलेरा आमिलाष्ट
 मृत राबा मोहनलालखॉर खीगण राणी मुगन्धलता ओ राणी
 धन्वजता प्रभृति रणाडयटन
 ओयारिणेश व्यवस्था २७०-२७६

६६—विष्णुराम मुद्दद पापत
 धीरचन्द्रबहुवा जमिदार परगणे घूमर्मा मुदाआले
 ओ गयरह
 उत्तराधिकारि व्यवस्था २७६-२७८

६७—परामानिकि लम्ब्येर व्यवस्था २७८-२८०

६८—व्याधिग्रस्येर ओयारिणेश व्यवस्था २८०-२८१

६९—कालीप्रसादरायपोषाल आमिलाष्ट
 दुर्गामसाद रणाडयट
 व्याधिग्रस्येर ओयारिणेश व्यवस्था २८१-२८४

१००—मुशम्मात चित्रादसी सायेश
 पुत्र याकिते पुत्रयधूके देवा करे, ताहार व्यवस्था २८४-२८९

१०१—*वितार जीवटराय पैतृक अथवा पैतामद सभतिर विभाजन पुत्र
 करिते पारे कि ना, एहार व्यवस्था २८९-२९५

१०२—कोभानि बाहादुर, अर्थात सबा, ओयारिणेश इइचे पारे कि ना,
 ताहार व्यवस्था २९५-२९८

१०३—खीधने देवार व्यवस्था २९८-३००

ई० १८३१ साल

- १०४—काशीनाथदत्त मोतकार स्त्री कल्याणमयी ओ गयरह आपीलाएट
चन्द्रमाला मोतकार स्वामी जयचन्द्रघोष २५गडयटान
भविष्यत् पितृदौहित्रे उत्तराधिकारि व्यवस्था ३००-३०६
- १०५—श्रीउमलुकिह आपीलाएट
रामप्रकाशकिह २५गडयट
देवार व्यवस्था ३०७-३१३
- १०६—राजा गोविन्दनाथराय आपीलाएट
गोलालचन्द्र ओरफे लालकावाण २५गडयट
दत्तकपुत्रे जेहनशाखेर व्यवस्था ३१३-३२२
- १०७—कमलाकान्तराय ओ शम्भुचन्द्रराय ओ गयरह चायेल
भगिनीर ओषारिपेर व्यवस्था ३२२-३२५
- १०८—आनन्दमयी देवी चायेला
भगिनीर उत्तराधिकारि व्यवस्था ३२५-३२७
- १०९—मृत काशीनाथदत्तेर स्त्री कल्याणमयी प्रभुति आपीलाएटान
चन्द्रमालार पति जयचन्द्रघोष २५गडयट
भविष्यत् पितृदौहित्रे उत्तराधिकारि व्यवस्था ३२८-३३१
- ११०—दलमर्दनछाहि आपीलाएट
राजा पृथ्विपतिछाहि ठाहार मूलुर पर लक्ष्मणाहादुरेर छलि ओ
माता राजेश्वरकोटर ओ मोशम्मात मदनकांडर २५गडयटान
दत्तकेर व्यवस्था ३३१-३३६
- १११—बदनचन्द्रहाजदार ओ गयरह बनामे रामचंद्रमुल्लोपाध्याय चाएल
छपोरा स्त्री चतुर्किछित् दानेर व्यवस्था ३३६-३४१
- ११२—भरलार्य प्राप्तितुधना कन्या मरखेर पर ऐ धन के पाय, हहार
व्यवस्था ३४२-३४३
- ११३—कन्या ओ धनि वर्त्तमाने मृत कन्यार पुत्र, हहार मध्ये के ऐ धन
पाय हहार व्यवस्था ३४३-३४४

- ११४—पुत्र ओ मृतपितृक पौत्र, इहार विभागेर व्यवस्था ३४५-३४६
- ११५—मथुराराय ओ लक्ष्मणाराय
राजु पादक
आपीलाखटान
रणाखण्ड
सत्ति हेवार व्यवस्था ३४६ ३४८
- ११६—स्वामीर आद्वेरे जम्ये देवसेवा सहित देवर्चर देओवार व्यवस्था
३४६-३५०
- ११७—मृत राधाकृष्ण उक्तलेर उत्तराधिकारि व्यवस्था ३५१
- ११८—उत्तराधिकारि अनुमतिते अवीरास्रोक्त विरुयेर व्यवस्था
३५१-३५३
- ११९—कनज मादण बाङ्गालाय याव करे, ताहार उत्तराधिकारि
व्यवस्था ३५३-३५६
- १२०—रामप्रसादचक्रवर्ति
पेनका ओ पाचि वेओया
आपीलाखट
रणाखण्ड
दास-दासीर व्यवस्था ३५६ ३५८
- १२१—कृतप्रायश्चित्तेर पत्नी उत्तराधिकारिणी हस्ते पारे कि ना, इहार
व्यवस्था ३५८-३५९
- १२२—बद्वेश्वरीर मर्कटमा, ओयारीसेर व्यवस्था ३५९-३६१
- १२३—विधवा स्त्रीलोक आपन स्वामीर पैतृकधने अधिकारिणी हय कि
ना, ताहार व्यवस्था ३६२
- १२४—उत्तराधिकारि अनुमतिक्रमे दानविद्विह व्यवस्था ३६३-३६४
- १२५—उपपत्तीर गर्भजातपुत्रके दान करे, इहार व्यवस्था ३६४ ३६८
- १२६—पुत्रकर्तृकविभागो मातार भाग हय कि ना, ओ अप्राप्ताया माता
मरिले ऐ मातृयोग्यासे कन्यार अधिकार किम्बा पुत्रेर अधिकार
एह प्रकार सओयालेर व्यवस्था । काथीर पण्डितेरा ये लेले,
ताहार उपर व्यवस्था ३६९-३७६
- इं० १८३२ साल—
- १२७—भैरविदासि
उत्तराधिकारि व्यवस्था
चनामे
नवकृष्णावसु
३८६-३८८

१२८--बदनचन्द्रसिंह श्री महेशचन्द्रसिंह वनामे मथुरामोहनपालित
अप्राप्तव्यवहार आचार अथ विक्रयेर व्यवस्था ३८८-३९२

१२९--विश्वेश्वरिदेवी वनामे ताराचन्द्रचट्टोपाध्याय
उत्तराधिकारि व्यवस्था ३९२-३९४

१३०--दुर्गादेव
कुनियादसिंह
शोलानामार व्यवस्था ३९५-३९७
इ० सन १८१२ साल

१३१--भैरवीदासी वनामे नचकृष्णधनु
उत्तराधिकारेर व्यवस्था ३९७-४००

१३२--भोलानाथराय फेरदी
मृत रामस्मरणरायेर स्त्री श्रीमति सावित्रा श्री गोपालकृष्ण श्री
मदनमोहनसिंह श्री मृत काशीचन्द्रसिंहेर स्त्री आसामीयान
सवित्रार १४१० फाति हिस्सा जमिदारि कअग्याला अविद
करिया ताहा दखल पाओयार मकदमार व्यवस्था ४००-४०३

१३३--भोलानाथराय फेरदी
सावित्रा श्री गोपालकृष्णसिंह श्री गयरह आसामीयान
मातार दोष प्रकाश करिले पितृश्लु पाओयार निषेध कि ना,
इहार व्यवस्था ४०३-४०५

१३४--मृत रामस्मरणरायेर पुष्यपुत्र भोलानाथराय फेरदी
दे मृत व्यक्तिर स्त्री सावित्रा श्री गोपालकृष्णसिंह
श्री गयरह आसामीयान
पूअोक व्यवस्था पुनर्निरीक्षण प्रकर तथा पुष्यपुत्रे उत्तराधिकार
व्यवस्था ४०५-४०७

१३५--उत्तराधिकारेर व्यवस्था ४०७-४०९

ई० सन १८३२ साल

- १३६—वागवे ब्राह्मण गङ्गाजले सगुण करिते मुक्त हइते पारे कि ना ?
आर यदि स्यात् सगुण करे तवे ताहार धर्मे हाइन हइते पारे
कि ना, इहार व्यवस्था ४०६
- १३७—लागान विक्रय सिद्धि व्यवस्था ४०६-४११
- १३८—उत्तराधिकारेर व्यवस्था ४११-४१५
- १३९—महाराजा गोविन्दनाथराय आपीलाएट
गुलालचन्द्र ओरफे नानकाबाबु प्रभृति रेग्नाडएटन
पति मरणानन्तर पोष्यपुत्र ग्रहणाधिकारेर शीतमप्रतीय जैन
शास्त्रानुसारिणी व्यवस्था ४१५-४२०
- १४०—राधाचरणवर्षिक छापल
पतिधने ओर उत्तराधिकार विषयक व्यवस्था ४२०-४२२
- १४१—आनन्दमोहनघोष आपीलाएट
मोशम्मात हरिप्रिया रेग्नाडएट
दानपत्रानुसारिणी धनविभागव्यवस्था ४२२-४२६
- १४२—पद्मलालसिंह ओगयरह आपीलाएटान्
शिवरामसिंह रेग्नाडएट
दान ओ देवार अधिकार सम्बन्धि व्यवस्था ४२६-४३०
- १४३—मृतदुर्गादासेर श्री मसम्मात ब्रह्ममयीदेव्या सादला
दाहिनेर घनाधिकार विषयक व्यवस्था ४३०-४३३
- १४४—अवीरा ओर दान सिद्ध्यसिद्धि निर्णय व्यवस्था ४३३-४३५
- १४५—कोन उदासीन ब्राह्मण उदासीन वैश्यी शिष्यगण वर्तमान याकिते
ओ यदि आपन समुदाय वस्तु ओपुत्रवान् संसारी अब्राह्मण उन्मूल
जाति व्यक्ति उदासीनेर शिष्य हइले, वाहाके दान करे-एइ प्रकार
दान शास्त्रानुसारे सिद्ध हय कि ना, वाहार व्यवस्था ४३५-४३८
- १४६—पद्मलालसिंह ओ गन्धर्वलाल आपीलाएट
शिवरामसिंह रेग्नाडएट

उत्तराधिकार सूत्रे प्राप्त धन स्वी हस्तान्तर करिते पारे कि ना इहार
व्यवस्था ४३८-४४०

१४७—दुर्जनसिंह ओ अर्जुनसिंह आपीलाएतान
राउत गिरिधरसिंह ओ धनश्यामसिंह ओ बन्दरसिंह रेखाडएतान
पितार जीवदशाय पितामहेर स्थावर वस्तु अथ करिया लघोनेर
हकदार पुत्र हइते पारे कि ना, इहार व्यवस्था ४४०-४४४

१४८—महाराजा गोविन्दचन्द्रराय आपीलाएत
महाराणी कृष्णमण्डिदेव्या रेखाडएत
इत्तक पुत्र ग्रहण विषयक व्यवस्था ४४४-४४७

१४९—बालिदास गङ्गोपाध्याय दी :
छानि तजविज आः प्रेमचन्द्र चौधारी दी :
उत्तराधिकारेर व्यवस्था ४४७-४५०

१५०—अनन्तमञ्जरी आपीलाएत
फकिरचन्द्रसरदार रेखाडएत
वैष्णव पुत्र ग्रहण विषयक व्यवस्था ४५०-४५३

१५१—मोक्षभूषण पंचुशामन छापला
उत्तराधिकारेर व्यवस्था ४५३-४५५

१५२—गोदाभीचन्द्रकविराज आपीलाएत
मोक्षभूषण वयमणि ओ कृष्णमणि मोतओषा रेखाडएतान
दानेर सिद्ध-असिद्ध विषयक तथा उत्तराधिकार नियम व्यवस्था
४५५-४६०

१५३—मोक्षलमानबाबोर केन व्यक्ति हिन्दूजातीय कोनो व्यक्तिर छोके
शुभ्रादिस उदार पतिर अस्वभाविते मोक्षलमान धर्म अनिवार
मानस करे अथवा हिन्दूजातीय कोनो व्यक्तिर छो आपनार जातीय
धर्म त्याग करिया मोक्षलमानेर धर्म स्वीकार इन्दा करे तये पतिर
नालिख मते हाकिम न्यायिके मोक्षभूषण मन्त्ररा ओ मोक्षलमान
न्यायिकेन प्रार्थना हइते कारण करिया सखा मुक्ति सिद्ध कि

ना ? यदि ऐ स्त्री भोक्तृलभान इत्या याके, तबे ताहार पतिर
जातिर किछु क्षानि हय कि ना, एह विषयेर व्यवस्था ४६०-४६१
१५४--दुर्जनसिंह ओ अर्जुनसिंह
राउत गिरधरसिंह ओ गयरह
उत्तराधिकारिर व्यवस्था
आपोलाइटान्
रस्ताडस्टान्
४६२-४६४

१५५--सन् १८२३ साल इज्जरेजी--

आनन्दकिशोरगुप्त वनाम भीमतीक्ष्णमङ्गीदासी
भ्रातृस्त्री वर्तमाने भ्रातृकन्यारदिजेर आनन्दकिशोरगुप्तेर स्थाने
ग्रामाच्छादन पाइवार चमता गखे कि ना, इत्यादिर
व्यवस्था ॥ ४६५-४६७

१५६--गोलकमणिदासी

कौरादि

सा० वेहाला प० बालिया
पीताम्बरहालदार ओ सूर्यवेश्रोया ओ गौरह--आषामी--
धनि व्यक्तिकर पौनिर स्वामी एवं आसनार पक्षेर कन्या आछे-
इहार मध्ये उत्तराधिकारि के इहवेक, ताहार
व्यवस्था ॥ ४६८-४७०

१५७--मोक्षमार्त लक्ष्मीप्रिया

आपिलायट

भैरवचन्द्रनीधुरि ओ बयचन्द्रनीधुरि रेग्गाडस्टान
मृतः कुण्डलचन्द्रेर आदाधिकारि एवं घनाधिकारि पितृदौहित्र
इहवेक, कि वैमात्रेय आतार पुत्र इहवेक, इत्यादिर
व्यवस्था ॥ ४७१-४७६

१५८--सामरामदास

वनाम वेहालचन्द्र मोतओकार ओ राधा-

चरण नावालगेर माता मुन्दरीदासी मोक्षलेय--
यद्यपि दुइ भ्राता, एक मासव्यवहार एक अप्रमासव्यवहार,

एकान्ने याकिया ब्येष्ट भ्राता दोकान करे । ए प्रकारे कनिष्ठ
भ्राता ऐ दोकानेर किन्तु हिस्सार हकदार हरते पारे कि ना,
ताहार व्यवस्था ॥ ४७६-४८०

१५६—गोशान्निचन्द्रकविराज

आपिलायट

मोक्षर्मात जयमणि जीवतमान ओ कुण्ठमणि मोतप्रोफात
रेष्ठादयदान

कोन व्यक्ति मिलकियतेर दावि एवं दानेर दुइ बुनियादे दरपेष्ट
करे । दुइ मतेह दिगिरि हय । तवपरे दोशराके देवा करिया
मृत्यु हय । एमत देवा सिद्ध हरते पारे कि ना, ताहार
व्यवस्था ॥ ४८०-४८२

१६०—लक्ष्मीप्रिया

आपिलायट

भैरवचन्द्रचौपुरि ओ गैरह—

रेष्ठादयदान

उत्तयधिकारिर एवं श्वेत कुष्ठ याकिने उत्तयधिकारित्व हरते पारे
कि ना, इत्यादिर व्यवस्था ॥ ४८२-४८६

१६१—दुलागसिंह ओ गैरह

आपिलायदान

राणो पद्मावती ओ गैरह

रेष्ठादयदान

रत्नलालेर पुत्रावधि प्रवितामह पुत्र अर्थात् गरिवदासेर पुत्र
वर्ष्मन्त ना थाकिने रत्नलालेर प्रवितामह गरिवदासेर पोत्र
दुलारसिंह मन्त्रतेर उत्तयधिकारिर व्यवस्था ॥ ४८६-४९०

१६२—मल्लर्मात लक्ष्मीप्रिया

आपिलायट

भैरवचन्द्रचौपुरि ओ गैरह

रेष्ठादयदान

उत्तयधिकारिर व्यवस्था

४९१-४९३

१६३—गोपालस्यहायेर अलि नओआवराय आपिलाएट
मोशम्माति मगववीकोडर ओ बैरह रेष्वाडस्टान
कलियुगे निःसन्तान व्यक्ति आपन सहोदर भ्रातार कन्याके
सन्तानत्वे अओन यथार्थ हय कि ना—इत्यादि पाँच सओयालेर
जयाव व्यवस्था ॥ ४६३-४६६

१६४—कोन अपीरा छो पितामातार स्थावर अस्थावर पाइया
भोगवाना भाकिया मृत्यु हय—ताहार उत्तराधिकारि
व्यवस्था ॥ ४६६-५००

१६५—वैद्यनाथेर उत्तराधिकारि पुत्रसम्भाविता कन्या इहवेक कि पितृशौ-
चिन् हइवेक—इहार व्यवस्था ॥ ५०१-५०३

१६६—कोन व्यक्ति पुत्रसम्भाविता भग्नीके साधारण स्थावरास्थावर
वस्तु दान करे, ताहा विद्व हय कि ना—इत्यादिर
व्यवस्था ॥ ५०३-५०५

१६७—कोन व्यक्ति दुइ पुत्र : ज्येष्ठ पुत्र एक कन्या राखिया पितृ
वर्त्तमाने मृत्यु हय; कनिष्ठ पुत्र पितार मरणोत्तर एक पुत्र
राखिया मृत्यु हय; इहार के धनाधिकारि इहवेक—ताहार
व्यवस्था ॥ ५०५-५०७

१६८—राजाहरकुमारदत्त दुइ विवाहितार छोरे गर्भजात दुइ पुत्र :
ज्येष्ठ पुत्र राजातेजप्रताप समुदय अवष्टक जमिदारि कुलाचार
मते वैमात्रेय आवा याकिते आपन तीनि छोरे मध्ये महाराणी
तिलोत्तमाके दान करे, से दान विद्व हइते पारे कि ना—ताहार
व्यवस्था ॥ ५०७-५१०

१६६—कृष्णकान्तपोद्धार

छायेल

देवसेवार खरच ओ सेवाहतेर खरच मिनाइ वादे वाकि
उपस्वत्व डिगरि टाका, बाहा सेवाहतेर नामे हइयाछे, ताहा
आदाय हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५१०-५१२

१७०—कालोकिशोरशयचौधुरि

छायेल

दानपत्रानुसारे बसदोरबरी अधिकारिणी हइया ये श्रृंग करिया
मरे, सइ श्रृंग परिशोधेर निमित्तै ताहार पुत्रेर स्वत्वास्पदीभूत
अंश बिक्रय हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५१२-५१५

१७१—मोक्षमूर्ति भवानीदेव्या

छायेला

मोक्षमूर्ति ब्रह्ममयी आपन स्वामीके ओछीकरयेर लमता राखे
कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५१५-५१६

१७२—सन १८३४ साल

लोकनाथदत्त ओ जगन्नाथदत्त—धनाम कुविरभाएझरि
दातेर विषय सदर आमिन आला बाहा करियाछेन ताहा वथार्थ
बटे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५१६-५१८

१७३—अनुदित व्यक्तिर मृत्यु अवधारित कोन पर्यन्त गणना जाइवेक—
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ५१८-५२१

१७४—रामदासशर्मा मफलेल

मुदाइ

यथाचरसुशर्मा ओ गवरह

मुदाआलेदे

नान्दिमुख भाइ स्वामि ओ खीर पत्तेना हइया याके—ए प्रकार
विवाह सत्य हइते पारे कि ना—इत्यादि सत्य समोयातेर
व्यवस्था ॥ ५२३-५२८

१७५—रतनचन्द्र ओ किरतचन्द्र
 छायेलान्
 पैतृक कर्जोंर दिगिरि टाका पितार मृत्युर गर पुत्रेदिगेर अंश
 निरण्य व्यतिरेक पितार लय्य वस्तु हइते उमुल हइवेक कि ना—
 ताहार व्यवस्था ॥ ५२८-५३०

१७६—राधापटनीमन ओ रायवनशीघन
 आय मनीहरलाख ओ गैरह
 रेणाडेएटान
 वारानशेर पाठशालार व्यवस्था ओ सुप्रीमकोट ओ अन्य २
 परिहतेर व्यवस्था भोपुत अलियम वेराडीन साहेवेर हुजुरे दाखिल
 हइवाङ्गिल, सेइसकल व्यवस्था परस्पर विरोध आछे कि ना—
 ताहार जवाब व्यवस्था ॥ ५३०-५३५

१७७—कन्या ओ दौहित्र थाकिते भ्रातृपुत्रके रोमावस्थाय दान करे, से
 दान सिद्ध हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५३६-५३८

१७८—रामगोपालदेओ वनाम गकुलचन्द्र वडिलदार ओ गैरह
 दासख विषयेर जेला मयमनसिहेर सदर आमीनेर फयसला
 सकल बाङ्गला देश बलित राज मते यथार्थ कि अयथार्थ—
 ताहार जवाब व्यवस्था ॥ ५३८-५४०

१७९—राधानाथचौधुरि
 श्रीमतीकृष्णमनीदास्या कृष्णनाथ मोतओफार कन्या ओ परान
 चन्द्रनेउगी ओ राधाचन्द्रनेउगी नाबालमदिगेर
 माता
 रेणाडेएट
 पितृदौहित्र थाकिते पैतृक विषय पितृ-सहोदरके देवा करे, से
 देवा सिद्ध हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५४०-५४२

१८०—लक्ष्मीकान्तकालिया

आपिलाष्ट

रघुनाथरायेर मृत्यु ओ बानाराओ लक्ष्मीराओ गैरह ॥

रेषादण्टान

अवयटक विषयेर तुमलिक ओ देवा बारानथ देशेर चलित
शास्त्र मते सिद्ध हइते पारे कि ना—ताहार जवाव व्यवस्था ॥

५५३-५५२

१८१—रामगोपालदेओ वनाम गोकुलचन्द्र तहविलदार ओ गैरह
दास खरिद करिले ताहार पुत्रपौत्रादिर दासत्व सिद्ध हओन विषये
ये कयसला हइयाछे, ताहा शास्त्र सम्मत पथार्थ बटे कि ना—
ताहार जवाव व्यवस्था ॥

५५२-५५४

१८२—महम्मद विश्वेश्वरीबेग्या मफलछा

आपिलाष्ट

ताराचौदचहोपाध्याय ओ गैरह

रेषादण्टान

उत्तराधिकारि व्यवस्था ॥

५५४-५५८

१८३—शुभानदत्तराय ओ भोलादत्तराय ओ गणेशदत्तराय मुहंरदान
मृत चण्डीदत्तेर वनिता महम्मद छोलछन श्रीपुराय ओ
परमेश्वरिदत्त मुहाभालेहे
चण्डीदत्त माझगवाति आपन भगीर सन्तान परमेश्वरीदत्तके
फर्चा पुत्र करिपाछे, ताहा सिद्ध बटे कि ना—इत्यादिर
व्यवस्था ॥

५५८-५६३

१८४—कोन व्यक्ति दुह सन्तान । ज्येष्ठ सन्तान पितु वर्त्तमाने एकाद-
वर्षिने कोन स्थावर वस्तु आपन छमताय ठगवर्जन करे । परे
रितार मृत्युर पर ये वस्तु अंग कनिष्ठ भ्राता किरित पाइते पारे
कि ना—ताहार व्यवस्था ॥

५६३-५६४

१८५—शूद्रादिर दत्तक पुत्र ग्रहण कालीन कि कि कर्म कर्त्तव्य उचित—
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ५६४-५६६

१८६—चेतराम तेओरि सावेक मुशद
आशानाय तेओरि सावेक मुहाआलोहे
सापिरादेर उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥ ५६६-५७४

१८७—काशीचन्द्रमुस्तफि
आप्राप्त-व्यवहार अवीरा विषवा कन्या शामुडी शत्रुतार निमित्त
स्वामीर नाटोते जाहते सम्मत ना हय, तवे शास्त्र सम्मत
जाओया उचित वटे कि ना—ताहार बनाव व्यवस्था ॥ ५७४-५७७

१८८—आर केह ना थाके, आपन भग्नीर पुत्रवती कन्या उत्तराधिकारिणी
हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५७७-५७८

१८९—प्रथमा स्त्रीर सन्तान ना हओयाते सन्तान प्रार्थनाय अन्य स्त्रीके
विवाह करिया आपन भग्नोर पुत्रदिगेके समुदय वस्तु दान करे,
पुनराय द्वितीया स्त्रीर सन्तान हय, एमत दान अविद्ध हइते
पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ५७८

१९०—कोन व्यक्ति टाका कर्ज रूपे किम्बा अन्य प्रकारे घारे, सुदेर
विषय निर्दार्थ्य ना हइया थाके, तवे कि प्रकारे, कि परिमान ऐ
टाकार मुद मकरर कर आइवेक—इत्यादिर व्यवस्था ॥ ५७९-५८१

१९१—सन १८३५ साल इ०
राधाचरखर्षिक
लक्ष्मीसदर ओ मयरह
भातृपुत्रेर दीहिनेर उत्तराधिकारिर व्यवस्था ॥ ५८१-५८३

१६२—वज्रविक्रान्तचौधुरि वनाम कृष्णप्रियाचौधुराणी ओ नवक्रान्तचौधुरि
कोन व्यक्ति मुमुषु व्यक्ति के कहिले तुम पोष्यपुत्र ग्रहण करह ।
ऐ व्यक्ति हुँ वलि उत्तर दिलोक । एमत पोष्यपुत्र सिद्ध हय—ये
परिद्धत लिखियाछैन, ताहा बटे, कि ना—ताहार ब्वाव
व्यवस्था ॥ ५८४-५८८

१६३—एक व्यक्ति मन्नीर जन्मान्ध पुत्र एवं पितृव्यगणके राखिया
निःसन्तान मृत्यु हय—ताहार उत्तराधिकारि व्यवस्था ॥
५८८-५९१

१६४—बनाइलालमफलेछु आपिलाष्ट
गोश ओ दुषु ओ गोरह रेणाडएदान
कोन व्यक्ति स्त्री दुह पुषवधू ओ पतिर भ्रातृपुत्रके राखिया
मृत्यु हय, ताहार पश्चिम देश चलित शास्त्र मते उत्तराधिकारि
व्यवस्था ॥ ५९२-५९३

१६५—विमलामयी देव्या आपिलाष्ट
भीमवीरप्रपूर्णा ओ दिनासपुरेर कलेकटर साहेब रेणाडएदान
शम्भुचन्द्रेर मोलाहेगय ताहार तीन पुत्रेर अचिनार इहया दुह
पुत्रेर मृत्यु हय, ऐ दुह पुत्रेर मोलाहेगार अश शम्भुचन्द्रेर पुत्र
पाइवेक, कि शम्भुचन्द्रेर कन्यागण पाइवेक—ताहार व्यवस्था ॥
५९३-५९६

१६६—मृत हेमबलसिहेर स्त्री चौराशी वादी
मृत दयालसिहेर पुत्र नारायणसिंह प्रतिवादी
पश्चिमदेशीय क्षत्रिय पञ्चम पुरुष पर्यन्त एतद्देशे वास करिया पुत्र
ओ अवीर कन्या ओ द्वितीया स्त्री ओ ताहार अदत्ता कन्या
वर्चमान राखिया मृत्यु हय, तत परे ऐ पुत्रेर मृत्यु हय—इहार

उत्तराधिकारि अदत्ता भग्नि हइवेक, कि पितृव्यपुत्र हइवेक-
हत्यादिर व्यवस्था ॥ ५६६-५०३

२६७—विलासमण्डिदेव्या केलेमदार, मधुसनाथभिंद मोताब्बर
कोन-विचवा खोर जीनि पुत्रेर मध्ये दुइ पुत्रेर मृत्यु हय । ताहार
उत्तराधिकारि दुइ व्यवस्था ये पण्डितेर दियाछैन, ताहार
मध्ये कोन पण्डितेर व्यवस्था सत्य-ताहार प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥
६०३-६०७

२६८—पानप्रस्थ व्यक्तिर उत्तराधिकारि सखारामराजी ये व्यवस्था दिया
छैन ताहा चर्मशास्त्र सम्मत बटे कि ना-ताहार व्यवस्था ॥
६०७-६०९

२६९—रामनाथराय ओ गयरह आपिलायटगन
मधुसनाथ खोरफे आकान्तराय रेखादष्ट
सविद्याधिकारि विषयेर लक्ष्मीनाथरायपण्डितेर व्यवस्था
यथार्थ बटे कि ना, ताहार व्यवस्था ॥ ६०९-६१२

२७०—एक जन मुनशीर निमित्ते सबरे दरखास्तेर नकल
६१३

२७१—इतिनारायण हत्यादिर सहित मैत्रोदास्यार कि प्रकार अंश
निर्णय हय-ताहार व्यवस्था ॥ ६१३-६१८

२७२—अविरा खोजीक आपन पति योग्यांश स्थावर वस्तु प्राप्तार्थे कोन
एक जन आतिके एकरार लिखिया देन, ताहा प्राद्व कि ना—
ताहार व्यवस्था ॥ ६१८-६२१

१६२—बल्लविकान्तचौधुरि वनाम कृष्णप्रियाचौधुरासी ओ नवमान्तचौधुरि
कोन व्यक्ति मुमुर्षु व्यक्ति के कहिले तुमि पोष्यपुत्र प्रदण करइ ।
ऐ व्यक्ति हुँ बलि उत्तर दिलोक । एमत पोष्यपुत्र विद्व दय—ये
परिद्वत लिखियाछैन, ताहार बटे, कि ना—ताहार बराब
व्यवस्था ॥ ५८४-५८८

१६३—एक व्यक्ति भग्नीर जन्मान्ध पुत्र एवं पितृभ्यगणके राखिया
निःसन्तान मृत्यु दय—ताहार उत्तराधिकारि व्यवस्था ॥
५८८-५९१

१६४—फनाइलालमफलेछु आपिलाएठ
गोवा ओ दुखु ओ गौरह रेणाडपटान
कोन व्यक्ति स्त्री दुइ पुत्रवधू ओ पतिर आतपुत्रके राखिया
मृत्यु दय, ताहार पश्चिम देश चलित शास्त्र मते उत्तराधिकारि
व्यवस्था ॥ ५९२-५९३

१६५—विमलामयी देव्या आपिलाएठ
भीमतीअन्नपूर्णा ओ दिनाजपुरेर फलेकठर साहेव रेणाडपटान
शम्भुचन्द्रेर मोसाहेराय ताहार तीन पुत्रेर अधिकार हइया दुइ-
पुत्रेर मृत्यु दय, ऐ दुइ पुत्रेर मोसाहेरार अथ शम्भुचन्द्रेर पुत्र
पाइवेक, कि शम्भुचन्द्रेर कन्यागण पाइवेक—ताहार व्यवस्था ॥
५९३-५९६

१६६—मृत हेमञ्जलसिंहेर स्त्री चौराशी वादी
मृत दयालसिंहेर पुत्र नारायणसिंह प्रतिवादी
पश्चिमदेशीय छत्रि पञ्चम पुरुष पर्यन्त एतद्देशे वास करिया पुत्र
ओ अधीन कन्या ओ द्वितीया स्त्री ओ ताहार, अदत्ता कन्या
वर्तमान राखिया मृत्यु दय, तत परे ऐ पुत्रेर मृत्यु दय—इहार

उत्तराधिकारि अदत्ता भग्नि इहवेक, कि पितृव्यपुत्र इहवेक—
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ५६६-६०३

१६७—विलासमहिदेव्या केलेमदार, मथुरानाथतिह मोताज्वर
कोन विषवा खोर तीन पुत्रेर मध्ये दुइ पुत्रेर मृत्यु हय । ताहार
उत्तराधिकारि दुइ व्यवस्था ये पण्डितेर दियाछेन, ताहार
मध्ये कोन पण्डितेर व्यवस्था सखे—ताहार प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥
६०३-६०७

१६८—वानप्रस्थ व्यक्तिर उत्तराधिकारि सखारामशास्त्री ये व्यवस्था दिया
छेन ताहा चर्मशास्त्र सम्मत बटे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥
६०७-६०९

१६९—रामनाथराय ओ गयरह
मथुरानाथ ओरफे भाकान्तराय
सविश्वधिकारि विषयेर लक्ष्मीनारायणपण्डितेर व्यवस्था
पर्यार्थ बटे कि ना, ताहार व्यवस्था ॥ ६०९-६१२

२००—एक जन मुनशीर निमित्ते सदरे दरखास्तेर नकल
६१३

२०१—हरिनारायण इत्यादिर सहित मैत्रोदास्यार कि प्रकार अंश
निर्णय हय—ताहार व्यवस्था ॥ ६१३-६१८

२०२—अविध खीलोक आपन पति योग्यंश स्थावर वस्तु प्राप्तार्थे कोन
एक जन शक्तिके एकरार लिखिया देय, ताहा ग्राह्य कि ना—
ताहार व्यवस्था ॥ ६१८-६२१

२०३—राजीवलोचन सतपति

आपिलाएट

वेचानरामराय

रेभाडयट

नावालक पुत्रसत्वे भरखार्थ दत्त भूमि विक्रय विषयेर कमला-
कान्तविद्यालङ्कार ये दुइ व्यवस्था दियाछेन, ताहा वल्लदेश ओ
उड्डिस्थादेशेर चलित शास्त्र मत सिद्ध बढे कि ना-ताहार
व्यवस्था ॥ ६२२-६२६

२०४—मल्लालकल्याणसिंह

आपिलाएट

प्रबलाल ओ शोताराम ओ गयरह

रेभाडयटान

शुभे बेहारदेशेर चलित शास्त्र मते पिता ओ पितामहेर पैतृक-
स्थावर वस्तु पुत्र ओ बिना अनुमतिरे हस्तान्तर करिते पारे कि
ना-इत्यादि चारि सझोयालेर प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥ ६२६-६२८

२०५—भोलानाथदास

आपिलाएट

भीमती सविप्र ओ गोपालकृष्ण ओ गयरह रेभाडयटान
आपन बिमाताके व्यभिचारिणी इत्यादि मिथ्या कहिले से पुत्रेर
वल्लदेश चलित शास्त्र मते प्रायश्चित्त कि प्रकार-इत्यादिर प्रत्युत्तर
व्यवस्था ॥ ६२८-६३१

२०६—रतनाकरविमुह ओ गुरिबिमुह

आपिलाएटान

साधुचरणविदिगञ्जन ओ गयरह

रेभाडयटान

पुर्व पुरपेर अमिदारि तीन चारि पुरुष परे कटकेर चलित शास्त्र
मते बयटक कहते पारे कि ना-ताहार व्यवस्था ॥ ६३२-६३४

२०७—मधुसूदनसिंह

आपिलाएट

प्रायकृष्ण ओ कृष्णलाल बेहारिलालेर पुत्र रेभाडयटान

पत्नी ओ पुत्रेर पत्नी विद्यमाने आनन दोहिर विहारिलासके
दान विषयेर हीरानन्दमिथ ये व्यवस्था दिया छेन-इत्यादिर
प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥ ६३४-६४१

२०८—रामकृष्णराय

छायेल

नारायणीदेवी ओ बगदीश्वरीदेवीर अंश जीवतमान पर्यन्त-
भोगवान थाकिते विचार कर्त्तार जयपत्र दियाछेन । ऐ जयपत्र
लिखित ऋण परिशोधेर निमित्ते विक्रय हइते पारे कि ना-
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ६४२-६४६

२०९—वीरेन्द्रनारायणचौधुरी ओ गायक

आपिलाएतन

श्रीमती सत्यभामादेव्या

रेखाइयत

कोन श्री स्वामीर विषये उत्तराधिकारित्व रूपे अधिकारिणी हइया
पञ्चम पुरुषोय छाति सत्वे आपन कन्या ओ नामाताके देवा
करे-शास्त्रानुसारे सिद्ध बटे कि ना-इत्यादिर व्यवस्था ॥

६४६-६५०

२१०—गुरुप्रसादबसु

आपिलाएत

महेन्द्रनारायणबसु

रेखाइयत

एक व्यक्तिर तीन पुत्रेर मध्ये एक पुत्रेर विवाह समय दानपत्र ऐ
व्यक्तिर पितार नामे लिखित हइलो । ऐ पितार मृत्यु पर ऐ दान-
पत्र लब्ध भूमि तीन पुत्र समान अंश करिया लइवेक कि ना-
ताहार व्यवस्था ॥ ६५०-६५१

२११—गोकुलचन्द्रमिश्र डिगिरिदार मतर्फ

बादी

कासिकमण्डल देयेनदार

प्रतिवादी

दयाकुमारो ओ मुन्दरकुमारी

ओजोरदार

कोन व्यक्ति आ वर्तमान आसन माताके दान करिया मृत्यु हय
ए प्रकार दान विद्ध बटे कि ना, एवं यशोपवीत हइले दश धारो
वतसरेर^१ एक मात्र पुत्रके दत्तक ग्रहण करिते पारे कि ना—
ताहार व्यवस्था ॥ ६५२-६५५

२१२—कोन व्यक्ति प्रथमा-स्त्री-जात मृत-पुत्र-वधू एवं द्वितीया स्त्री जात

६५५-६५७

खोर विषय दहते ऐ तारिखोर उत्तराधिकारि परिशोध कर
उचित ॥ कि ना—द्वार कैफियतेर व्यवस्था ॥

—भीमती तारिखोदेव्यार पुनर्वार ऐ विषयेर अवस्था

—भीमती तारिखोदेव्यार ऐ विषयेर कैफियत व्यवस्था ॥ ६८१-६८४

२२६—कय आ विकय प्रभृति शास्त्रेर आशा सकल बाजला ओ उडिस्था
ओ येहर ओ तैलज ओ महाराष्ट्र देशेर एक प्रकार, कि पृथक
पृथक । एवं केता ओ विक्रेतार स्वीकार करते कय-विकय सिद्ध
हय कि ना—हत्यादि तीन सधोपालरे अवस्था ॥

६८४-६८६

२२७—काशीचन्द्र मुस्तोकि

छायेल

अग्राम-व्यवहारा भीमतीकमलकुमारो स्वामीर गृहे आपन
शाशुडिर् निकट ना थाकिया ताहार पितार निकट थाकिते पारे
कि ना—ताहार व्यवस्था ॥

६८६-६९०

२२८—वगतचन्द्रअधिकारि

छायेल

मालखबाजीर ठाकुर-ठाकुराणो बिउर शुद्ध सेवकेर बाटीते गमन
करिते पूर्वो रीत्यनुसारे पुनरागमने देवतेर किछु हानि हय कि
ना—ताहार व्यवस्था ॥

६९०-६९२

२२९—मिथिला देशेर चलित शास्त्रानुसारे एवं नदियार चलित शास्त्रा
नुसारे विभागेर अर्थ कि, एवं आचार्य कयेक प्रकार—हत्यादि
छय सधोपालेर प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥

६९२-६९६

२३०—भीमतीगर्भतीदासो

दियारिहार

भीमतीठाकुराणोदासी ओ रामनाथसुमित्र देनदा(रा)न
कालोप्रसादमिय ओ गैरह
कोन व्यक्ति स्त्री ओ नर कन्या राखिया मृत्यु हय, परे ऐ ओर
दीदिय छत्ते ऐ दीहिने पिता मूल अनिर पैतृक अमि वन्धक दिया
याके, तरे ऐ देनार निमित्ते विकय दहते पारे कि ना—हत्यादि
व्यवस्था ॥

६९६-६९८

२३१—राखीजयदुर्गा

राखीकृष्णमनी

आपिलाष्ट

रेष्ठाडष्ट

कोन अवीरा स्त्री स्वहस्ते विषय उपावर्जन करे । से विषय ऐ
छोर हस्तान्तर करणेर जमता राखे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥

६६८-७००

२३२—कोन अवीरा स्त्री पितामहेर सधवा कन्या एवं ऐ कन्यार दत्तक
पुत्र एवं स्वामीर प्रपितामहेर भ्रातार पौत्र एवं स्वामिर प्रपितामहेर
भ्रातार पुत्रवधू एवं ऐ पुत्रवधूर दत्तक पुत्र वर्त्तमान रालिया
मृत्यु हय । शास्त्रानुसारे ऐ व्यक्तिर घनाधिकारि के हस्तेक—
ताहार व्यवस्था ॥

७००-७०१

२३३—गम्भिरराय, ताहार मृत्युर पर विचरराय ओ गयरह

आपिलाष्टान,

मोछुम्मात घनेश्वरी ओ गयरह

रेष्ठाडष्टान

स्त्री उत्तराधिकारिणी हइया आपिगब विद्यमाने हस्तान्तर करिते
पारे कि ना—ऐ विषयेर परिहतेरा ये दुह व्यवस्था दियाछेन,
त्रिहुत बिलार चलित शास्त्र मते यथार्थ बडे कि ना—ताहार
व्यवस्था ॥

७०२-७०४

२३४—रामनाथसिंह

राजलूपसिंह ओ राघेकृष्ण

आपिलाष्ट

रेष्ठाडष्टान

हक सफा विषयेर व्यवस्था ॥

७०४-७०७

२३५—कालीकान्तबल

पार्वतीदास्या

आपिलाष्ट

रेष्ठाडष्ट

यदि कोन व्यक्तिरा पितृ अवर्त्तमाने मातार सहित अनेक्य हय,
तवे माता पुत्रेदिगेर समानांश पाइते पारे कि ना—ताहार
व्यवस्था ॥

७०७-७०८

२३६—शिवनारायणचौधुरि

राधाप्यारीदासी ओ गयरह

आपिलाष्ट

रेष्ठाडष्टान

राधामोहनमित्र

जेतार मोझाहेम

मधुसूदनदास

एह आदालतेर छायेल,

उत्तराधिकारि अनुमति ब्यतिरेक स्वामीर त्याग्य वस्तु, स्वामीर

श्रृण याकुं वा ना याकुं, विक्रय करिते पारे कि ना—

इत्यादिर व्यवस्था ॥

७०६-७१४

२३७—झीर पतिर त्यक्त रथावयदि धन दान विषयेर वे व्यवस्था त्रिहुत

जेलार पण्डित दियाछेन, मिथिलादेशेर चलित शास्त्रानुसारिणी

बटे कि ना—इत्यादिर व्यवस्था ॥

७१४-७१५

मोक्षमार्ति रूढमन

सायेला

२३८—क्षित व्यक्तार शरीर एव विषय रक्षा करखेर सत्त्व विमाताके इहवेक

कि पत्नी (के) इहवेक—इहारे व्यवस्था ॥

७१५-७१६

२३९—कोन व्यक्ति पुत्रगण्योरी बीना अनुमतिरे आपन कन्याके एक

वागान दान करिया पाये, एमत दान सिद्ध हय कि ना—ताहार

व्यवस्था ॥

७१७-७१८

२४०—यदि कोन व्यक्तिआ चारि भ्रातार मध्ये एक प्राप्तव्यवहार इहया

एकप्रभुक्त थाकिया पैतृक विषय जमिदार लोक आटक करे,

ताहा आपन परिभमेर द्वाराय खालाय करे, तवे ऐ भमिर कि

रूप अय इहवेक—इत्यादि चारि सस्योपाक्षेर व्यवस्था ॥

सन १८३७ साल—

७१८-७२१

२४० क-बी नामक द्वितीय भ्राता रूढो ओ कन्यागण्य ओ भ्रातपुत्र विध-

मान राखिया परलोक प्राप्त हय, इहारे वारानश देशेर चलित

शास्त्रानुसारे उत्तराधिकारि के इहवेक—ताहार व्यवस्था ॥

७२१-७२२

२४१—मोक्षमार्ति सत्यकुण्डर

आपिलाष्ट

कासिह ओ गयरह

रेष्मादएदान

त्रिहुत बिला निवासी एक व्यक्ति दुर रूढो राखिया मृत्यु हय, ऐ

दुर रूढो एक २ कन्या राखिया मृत्यु हय, परे ऐ दुर कन्यार

मध्ये एक कन्या एक पुत्र राखिया मृत्यु हय । एक कन्या उपुत्रा

वर्तमान आछे । एवं तिन किम्बा चारि पुरुषेर जाति आछे । इहार के उत्तराधिकारि इहवेक—ताहार व्यवस्था ॥ ७२२-७२६

२४२—कोन व्यक्ति पितृधनोपघात व्यतिरेक धनोपार्जन करिया स्त्री ओ कन्यागण ओ आतपुत्र राखिया मृत्यु हय, से घने वारानस देशेर चलित शास्त्र मते काहार अविकार इहवेक—ताहार व्यवस्था ॥ ७२६-७२७

२४३—भेकनागपणसिंह बनाम तिलकधारिसिंह ओ भेकधारिसिंह ओ गयरह

मोतिलाल ओ गयरहेर मकईमार प्रश्नसकलैर मर्म ओ अभिप्राय एक बैररीत्य व्यवस्था देखोनेर कारण कि—ताहार प्रत्युत्तर व्यवस्था ॥ ७२७-७३१

२४४—एक व्यक्ति मानुज एवं पञ्चम पुरुषीय जाति राखिया मृत्यु हय । इहार उत्तराधिकारिमानुज इहवेक कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७३१-७३२

२४५—कोन अवीरा स्त्री आपन स्वामोर पितृदोहित्र विद्यमाने स्वामोर श्रृंग परिशोधार्थे विक्रय करे । ताहा सिद्ध हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७३२-७३४

२४६—भीमतिनओकूलकुडर आपिलाएठ
भीमतिनन्दकुडर ओ गैरह रेष्पाडएठान
भोलासिंह नामक एक व्यक्ति आपन छीर सन्मति क्रमे कन्यार विगेर ओ जामातादिगेर नामे देवा करे । ताहा मैथिल देशेर चलित शास्त्रानुगारे (सिद्ध हइते) पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७३४-७३६

२४७—कोन व्यक्ति कुलचारे एमत्त रित थाके ये अजोरा स्त्री ओ कन्या ओ दोहित्रे नाम समिदारिते चारि इहवेक ना । एमत्त एकरार थाके, तवे पुनपय शास्त्रानुस्र आवश्यक हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७३६-७३७

२४८—पद्माननदास वनाम राधाचन्द्र बाछु

कोन व्यक्ति तीर्थवासि इहया बिलु मिलकियत खरिद करिया
भोगवान थाकिया स्त्रीके गलिया मृत्यु इय । शास्त्रानुसारे उत्तम-
धिकारि ग्रन्थधर्म्मर आत्मबन्धु इहवेक, कि ऐ स्त्री दललिकार
इहया दान बिक्री करिते पारिवेक-ताहार व्यवस्था ॥ ७३८-७४०

२४९—प्रतापनारायणचक्रवर्त्ति

द्विगतिदार

परमानन्दचक्रवर्त्ति ओ गैरह

तरफसुनियान

निजामपुरे आदण वहेगदिगेर अयन पूजन विषये बिलार पण्डित
ये व्यवस्था दियाछेन ताहा यथार्थ बटे कि ना—इत्यादिर
व्यवस्था ॥

७४०-७४६

२५०—सिउद्धदाय ओ कुञ्जवेहारिलाल वनाम मोक्षमार्गान मन्त्रविधि
ओ गैरह

कोन व्यक्ति अविवाहिता स्त्रीर सन्तान इहयाथाके ।
ऐ सन्तानेर पिता बलिया आदालते अलि दर्शाइया नालिय
करिया थाके, तबे उहार उत्तराधिकारि ऐ सन्तान इहवेक कि
आतम्पुत्र इहवेक-इहार उत्तराधिकारि व्यवस्था ॥ ७४७-७४९

२५१—नरकुसिह मुदाआलेह

आपिलाएट

वनाम

मेघासिह ओ अक्षरसिह

रण्याडएटान

एक व्यक्ति पुत्र ओ आतम्पुत्र विद्यमाने मोरशी धन इहते किञ्चित
भगिनीर पुत्रके ओ पितृवस्त-पुत्रके दान, एवं अशी करिया
दियाथाके, ए प्रकार दस्तावेज यथार्थ बटे कि ना—इत्यादिर
व्यवस्था ॥

७५०-७५१

२५२—दुर्गादासधरेर पिता ओ अलि ओ अलि आलम—

चन्द्रधर

आपिलाएट

विजयगोविन्दबडाल ओ गयरह

रण्याडएटान

पितृ-दोहिनेर अधिकारि इहया विभाग करिया लइले पुनराय

पितृ-दौहित्र चन्माइले, से ऐ घनेर विभाग पाइते पारे कि ना—
इत्यादिर व्यवस्था ॥ ७५१-७५६

२५३—मृत दुर्लभरामेर स्त्री स्वामीर योग्यांशे चारि आना बमिदारि
अंश पाओनेर व्यवस्था ॥ ७५६-७५८

२५४ कोन स्त्री स्वामी ओ पुत्रेर मृत्युर पर स्वामीर विषय हइते किञ्चित
भूमि आपन मगिनीर कन्यार विवाहेर समय कुलमर्यादार निमित्त
पुत्रयधूर असन्मतीते दान करिते पारे कि ना ताहार व्यवस्था ॥
७५८-७६०

२५५—यदि कोन अशनामाव जीवतमान व्यक्तिर अवर्तमान व्यक्तिर
सहित अंश हथोयार कया लेला याके, से अशनामा शास्त्रानुसारे
प्राह्य हइते पारे कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७६०-७६१

२५६—सिउसहायसिह ओ गैरह आपीलाएटान
बयाकुडर ओ उमेदकुडर रेष्वाडएटान
शानकोमरेर सक्रान्त केहरसिह त्यकांशे शानकोमरेर मृत्युर पर
ताहार कन्यार स्थल हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७६२-७६४

२५७—वल्लभिक्रान्तचौधुरि आपिलाएट
नवक्रान्तचौधुरि रेष्वाडएट
मुमुर्षु व्यक्तिर दत्तक पुत्र विषये मुख हइते हौं इति शब्द निर्गत
हइले दत्तक पुत्र सिद्ध हय कि ना—ताहार व्यवस्था ॥ ७६४-७६६

२५८—मोमर्मांत लल्लुमना ओ ठाकुर आपिलाएटान
वेचनलालेर मृत्युर पर ताहार पुत्र मुकुन्दलाल रषादयट
कोन व्यक्ति वामुलि जातिर स्त्री स्वामीर घने अधिकारिणी हइया
द्वितीय पति करे, ताहा सिद्ध हइते पारे कि ना—इत्यादिर व्यवस्था
७६६-७७०

२५९—गङ्गापुत्रदिगेर ओ यमुनापुत्रदिगेर वृत्ति क्रमागत घन वटे, कि
यज्ञमानदिगेर एमव चमता आछे, ये आपन २ इच्छा मते
याहाके नुष्ट हइया दिते चाहेन ताहाके दिते पारेण—इहार
व्यवस्था ॥ ७७०-७७१

२६०—सिद्धस्वहायसाहुर मृत्युर पर ताहार पुत्र गोगनवालेर शोषालि
चदानुकुलर आभिलाष्ट
बुनियादिनिह रेग्नाष्ट
रुद्रनामायखेर लिखित तमगुक्त ओ गवरदेर टाका नावालक पुत्र
स्वत्वे उदार खोर निवृत्त इहते तलव् करा उचित खिन, कि
ना—इत्यादिर व्यवस्था ॥ ७७१-७७४

२६१—गुदप्रनादगय ओ इन्द्रनामायख
भोगनीगुणमयोदासी दिमरिदायान्
गुणमयोदासी कमाप्तव्यवहार पुत्र प्रतिपालनार्थे ये श्राव करिया
थाके, ताहार निमित्ते ये नावालक पुत्रेर गितु-विपर विक्रय इहते
पारे कि ना-ताहार व्यवस्था ॥ ७७४-७७६

२६२—यदि केन हिन्दु धर्मात् स्वभातीय धर्म त्याग करिया अन्य धर्मात्
लब्धो हय, ताहार खो स्वभातीय धर्म त्याग ना करिया पितृ-कि
भानु-भालये थाकिते पारे कि ना-इत्यादिर व्यवस्था ॥

७७७-७७८

२६३—बलविक्रान्तधौपुरि आभिलाष्ट
नवबान्तधौपुरि रेग्नाष्ट
पोष पुत्र विपये लावेक ओ शालेर ओ जेलार व्यवस्था । इहार
मध्ये मयार्थे कोन व्यवस्था ताहार—रेक्रियतेर व्यवस्था ॥

७७८-७७९

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
४	१०	मनुवचनञ्चेति	मनुवचनञ्चेति
५	१५	दालिल	दलिल
६	५	घन	घनं
६	६	देवोयानि	देवोयानि
६	११	अदालतेर	आदालतेर
६	२०	दरखास्त	दरखास्त
११	८	पटी	पट्टी
११	८	शतरञ्जी	सतरञ्जी
११	२२	जो	जे
१४	१८	आपीलाएडेर	आपीलाबडेर
१५	१	शास्त्रमते	शास्त्र मत
१५	१५	एतद्वर्माधि०	एतद्वर्माधि०
१६	५	प्रभारोशा०	प्रभोरशा०
१६	८	शताम्	शतम्
२५	२२	निबन्धनुमु०	निबन्धनमु०
२५	२२	मुक्तावल्या	मुक्तावल्यां
२६	११	संस्काराणामभ्यन्ततः	संस्काराणामन्तरतः
२६	१५	मुदत	मुदत
३२	२	उर्ध्व	ऊर्ध्व
४६	४	भोवाक	भोजक
५४	६	भ्रातृपर्यान्ता०	भ्रातृपर्यान्ता०
६१	६	माहार	माहार लिखित
६४	१३	गर्भजातिस्त्वेन	गर्भजातत्वेन
६७	द्वितीयोऽ	रक्षेवस्तन्तु०	रक्षेत् तत्तद्०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
७१	८	राधाबन्धव	राधाबल्लभ
७१	१८	१७२२	१७३१२
७१	२५	सलवाह	सरवराह
७२	४	पादा	पादा
७२	७	से	से व्यक्ति
७२	८	सले ना	सले कि ना
७२	१६	भूम्युत्सर्ज०	भूम्युत्सर्ज०
७२	२०	देवत्वभूम्यादे०	० भूम्यादे०
७६	१६	दालिलकार	दखिलकार
८०	२१	व्यवस्था	व्यवस्था
१०१	१०	भोज०	भोज०
१०४	८	साहेबेर	साहेबेर हुजुर
१०४	१३	द	देन
१०४	१४	यदि	यः
१०४	१६	मेकनटन	मेकनाटन
१२१	१४	व्यवस्थार	व्यवहार
१२१	२१	करायाय	करायय
१२१	२२	याखेर	याखेर आशी
१२२	२१	वाप्युपधि	वाप्युपाधि
१२६	२२	ततरकन्याया	ततरकन्याया
१३०	२२	लिखित्वात्	लिखितत्वात्
१३३	१०	प्रतिष्ठितानां	अप्रतिष्ठितानां
१४०	१४	भातणों	भातूणों
१४१	१४	दाखिले	दाखिल
१४१	२२	घन	घन इहते
१४३	१४	रामकभिर	रामकालोर
१४३	१५	दबसालि	दबसालि

पृष्ठे	श्लोकी	अशुद्धम्	शुद्धम्
१४३	२१	सठ टाकार	सत्रो टाकार
१४४	१४	कारिण्यामिती०	करिण्यामीति०
१४४	१२	राष०	रज०
१४८	२	इइ	डुइ
१५०	१७	कुमार्यभावे	कुमार्यभावे
१५४	१६	व्यक्त	व्यक्ति
१५७	१५	१८१८	१८२८
१५६	११	स्वत्वाब्जे	स्वत्वं वाकी
१६२	८	१८१८	१८२८
१६६	१३	अच्छादनेर	आच्छादनेर
१७०	१२	यावज्जीव	यावज्जीवं
१७२	१३	अभिमावादेर	आभिमावादेर
१७४	१६	०स्यशांहरणे	०स्यांशाहरणे
१८८	२०	मान्च	मान्च
१८६	६	चौधरिरी	चौधरि
२०३	१७	कोठ	कोटे
२२०	२२	सराजका	सराजकरा
२२२	३	कारिया	करिया
२२३	२४	समानजातीययोः	समानजातीययोः
२२५	१४	करप्रहरण०	करप्रहरण०
२२७	२३	० व्ययाथ	० व्ययार्थ
२३७	१०	पितुर्युपरते	पितुर्युपरते
२३८	३	०तर्कालङ्कार०	०तर्कालङ्कार०
२३८	१६	प्रश्नेर	प्रश्नेर
२४४	१०	व्यवहारिके०	व्यावहारिके०
२५२	३	सद्गन्धे	सम्पन्धे
२५५	३	सर्व०	सर्व०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
२५५	१६	८७	८३
२६२	४	नेनामन्त्रिनेर	नेनामद्भिनेर
२७८	२	व्यतिरिक्तो उत्तरा०	व्यतिरिक्तोत्तरा०
२८७	६	एत्ते	एते
२८७	१८	याश्ववल्ग्यः	याश्ववल्ग्यः
३०२	५	०प्रत्योय०	०प्रत्ययि०
३०४	३	मन्यकारैर्वा	मन्यकारैर्वा
३०४	२६	पितुरन्ध्रयैव	पितुरिन्ध्रयैव
३०५	२	काङ्क्षन्ति	काङ्क्षन्ति
३०५	१६	निरुदो	निरुदो
३०५	२५	मरणपातित्पादि	मरणपातीत्पादि
३०६	६	लिखितैतद्वदीय	लिखितैतद्वदीय
३१६	४	त्रिशत्सहस्रो०	त्रिशत्सहस्रो०
३२४	७	०धिकारः	०धिकारः
३२६	१६	०प्रपौत्रपर्यन्त०	०प्रपौत्रपर्यन्त०
३२७	२४	०द्वदीय०	०द्वदीय०
३३७	६	आपत्ति०	आपत्ति०
३६५	७	यदेतद्वदीय	यदेतद्वदीय०
३६५	१५	भ्राता भ्रा०	भ्रात्रा भ्रातृ०
३६८	१	७हादि०	७प्रहादि०
३७५	६	तद्व्याहकायां	तद्व्याहकायां
३७६	५	शब्दस्वचनस्यैक०	शब्दस्वचनस्यैक०
३७६	१५	दशः	दशुः
३७७	८	वचनेभ्यो	वचनेभ्यो
३७८	३	निनादशादित्वांशं	निनादशादित्वांशं
३७८	१६	वैयर्थ्याः	वैयर्थ्याः
३७९	१	विषयपञ्चस्था०	विषयपञ्चस्था०

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
३८१	१३	पितर्युपरते	पितर्युपरते
३८२	६	०योग०	०योग०
३८६	१८	वर्षसहस्रै०	वर्षसहस्रै
३८१	१०	०याग्ये	०याग्ये
४१८	६	एतद्वर्माधिकरणा०	एतद्वर्माधिकरणा०
४५२	२४	निवारयिष्यन्तीति	निवारयिष्यन्तीति
४५५	६	ग्रन्थ०	ग्रन्थ०
४६६	२३	सद्युप०	सद्युप०
५४६	२१	दानकथादेः	दानकथादेः
५५३	२५	तच्छ्रुतसम्मतं	तच्छ्रुतसम्मतं
५५७	७	दीपचन्द्रभागिनी	दीपचन्द्रभागिनी
५५७	१४	"	"
५६०	१७	साक्ष्यै०	साक्ष्यै०
५६०	२५	प्रावत्येण	प्रावत्येण
५६६	१६	दायभागादि०	दायभागादि०
६१२	१५	लिखितेशब्द	लिखितेशवीर्यब्द०
६६८	१२	भर्त्तु०	भर्त्तु०
७१३	१६	भर्त्त्रा	भर्त्त्रा
७१३	२६	भर्त्त्रा	भर्त्त्रा
७२४	२६	धनाहकाः	धनाहकाः
७३४	४	भर्त्त्रा	भर्त्त्रा
७७४	८	श्रृण्या०	श्रृण्या०
७७४	१८	०प्रतिवाच०	०प्रतिवाच०